मङ्गलकोष की भूमिका ॥

वन्दि प्रथम परमात्मा कारण करना जोय । ग्रन्थकारके अर्थमांझ करै अनुग्रह सोय ॥ १ ॥
सिधिदाता गुणगण विमल सुमति बढ़ावनहार । करता हरता पालका तासुचरण आधार ॥ २ ॥
गुरुज्ञाता वाणी विशद सुमति समृद्धि सदाहिं । करिप्रणामतनमनवचनकरौं कोषचितचाहिं ॥३॥
ईशासन विधु मुनि नयन धरा फरवरीमास । संवतविक्रमर्कोपचंपनभमहिनपसविलास॥४॥
आलँद महल सदद्मन पैंतेपुर चटशाल । कोषरच्योलखिग्रन्थबहुशामनशब्दजंजाल॥५॥

जानना चाहिये कि यह आधीन मतिमन्द मङ्गलीलाल कायस्थ श्रीवास्तव सरहीग्राम ज़िलअ शाहजहांपुर का निवासी १५ मई सन् १८५४ ई० संरिश्तहतालीम में कि २३ वर्षके अनुमान हुये नौकर है और अब मुख्य पाठक अर्थात् अफ़्सर मुदर्रिस मदर्सह पैंतेपुर प्रदेश सीतापुर का है कुछकालसे हिन्दीभाषा के कोष के खोज में यत्न करताथा और बहुधा कोष फ़ारसीभाषा आदि मिलित दृष्टिआये जिनसे कुछ प्रयोजन हिन्दीभाषा के विद्यार्थियों का नहीं निकलसक्ता कोई ग्रन्थ हिन्दीभाषा का ऐसा दृष्टिगोचर न हुआ जिसकी सहायता से हिन्दी भाषानुरागी विद्यार्थी रामायण आदि ग्रन्थों में संस्कृत भाषादि शब्दों का अर्थ शिक्षककी कृपा बिना विचार करलेते, यद्यपि बहुतेरे ग्रन्थ नाममाला आदि भाषापद्य में पायेगये तथापि वे सब निरनुप्रास अर्थात् बेरदीफ़ हैं उनमें भी शब्दार्थ शीघ्रता से नहीं मिलता है जबतक समस्त पुस्तक मुखाग्र न हो, इसलिये आधीन ने निम्न लिखित पुस्तकों और बहुत अन्य भाषाग्रन्थों के शब्द जो देखे और स्मृत थे इकट्ठा करना आरम्भकिया कि जिसमें सामान्य भाषा विद्यार्थियों को लाभ हो और जब बहुत से शब्द सार्थ इकट्ठा

होगये तब श्रीमन्निखिलसुखसंमान विराजमान विमल धार्मिकानेकसुरसमाज समाम सामन्तोपहारीकृत कनकमय गजाश्व शब्दायित द्वारदेश प्रोद्दण्ड प्रचण्डाखण्ड विपक्षबल प्रोद्भटभटसमूहसंकर्त्तन निर्द्दयातिशय तीक्ष्णधार सहायीकृत खड्ग दिग्विजयी विनोदानन्दित महाभूताधिप शिव श्रीयुत कालिन् ब्रौनिंग साहब एम.ए. अवधदेशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेशकी आज्ञानुकूल वर्णमाला के अक्षरानुहारि निज शिष्य सीताराम और हरदेवबख्श की सहायता पाकर सानुप्रास करके मंगलकोप नाम रख-उक्त साहब वीरेश साहसी की प्रतिष्ठित प्रति[illegible] में निवेदन किया, तब साहब सुजान गुणखानने दृष्टिगोचरकर आज्ञादी कि यह पुस्तक और अधिक कीजावे और सहायता के निमित्त हिन्दीकोप कृपा किया और एक ग्रन्थ तसलीसुल्लुगात द्वितीयभाग जिसमें भाषा शब्दोंकी फ़ारसीभाषा लिखी है हस्तामलक हुआ फिर सन् १८७२ ईसवी में यह कोप और अधिक कियागया परन्तु इसी अवसर में उक्त पाठशालाध्यक्ष वीरेश की नागपुर प्रदेश यात्रा से ग्रन्थकार के मनोरथ हृदय के हृदयमेंही रहगये थे कि दैवयोग से हमलोगों के आनन्ददायी स्वस्ति श्रीमदुद्दाम गुणगणग्राम विस्फुरत्कमल मुख भरत विशदीकृतानेक संगीत प्रकारास्मदीय विद्याप्रचाराग्रणीय गुणिजनजेगीयमान यशोदानन्दकन्दकर्म्म पराक्रम श्रवण रसास्वादानन्दार्थि मनोभिलषित विविध पदार्थ दानसंसक्त मानस श्रीयुत जान. सी. न्यस्फ़ील्ड साहब एम. ए. पूर्व्वोक्त, नागपुरगामी के स्थानपर अवधदेशीय पाठशालाओं के डैरेक्टर पब्लिक इन्स्ट्रक्शन् वीरेश नियत होय ब्रह्मलोक से सुशोभित हुये और ग्रन्थ को कृपाकटाक्ष से अवलोकन करतेही आधीन के

परिश्रम सफल करनेके हेतु सकलकलाध्यक्ष मुन्शी नवलकिशोर वर्म्म के मुद्रालय में सीसाक्षरों से मुद्रित होने के लिये आज्ञादी अब यह ग्रन्थ अतिसावधानता से छपकर श्रीमहाशय की अनुमति से तय्यार हुआ इस कारण सम्पूर्ण विद्वानों की उत्तम सेवा में निवेदन है कि जिस शब्दकी लिपि वा अर्थ आदि में रंचक विभेद वा अशुद्धता पावें उसको कृपादृष्टि से शुद्ध करलेवें मेरी मूर्खतापर ध्यान न देवें क्योंकि इस अज्ञानमूर्त्तिने पूर्व्वोक्त साहब वीरेश पराक्रमी की अभिज्ञता देख अपनी मूढ़ता विदित की॥

यथा सोरठा॥

साहब पाय प्रवीन सब जनावत विज्ञता। पन्नी कर्माधीन मब पावन संसार मह॥ १॥
जापर गुणगण चक्र लखि भागन भयमूढ़ता। यथा लेखि शशिबिम्ब तम नहिं आवत निरदही॥ २॥

दोहा॥

अतिप्रवीण साहब चतुर नितप्रति करत समोद। श्रीउविर विज्ञानमय छपरा छर्यो चहुँकोद॥ ३॥

सवैया छन्द॥

कीरति सोहत देशविदेश प्रसिद्ध महागुण ज्ञान बड़ाई।
साहब कालिन मौलिंगयो रवि देखिगई बुधि रेनि पराई॥
मूढ़स्तगापि अबूझ निशाकर मन्द रहे मन ठाम छिपाई।
ज्ञान गुणादि सरोज प्रफुल्लित वक्त सरोवर देत दिखाई॥ ४॥

दोहा॥

विद्यमान कीरति विमल करि पण्डित मनुहारि। धन्यवाद भाषत सबै आदरदानि विचारि॥ ५॥
सुनि अभिज्ञता स्वामिकी चितउछाह अधिकान। रच्योकोषमगलसुरुचि निजमलललिसमान॥ ६॥
श्रीकालिन्मौलिंग जू गमन राजपुरहि कीन। कोष छपनकी आस तब मनसा में तजिदीन॥ ७॥
ग्रन्थ रचत जो श्रम कियो जायहु भा बेकाम। दैवयोग मे तुरतही सगी तासु पुनि साम॥ ८॥
करुणालय ताही समय विद्याश्रय गुणराशि। नैसफान्डसाहब यहां आये सुयशप्रकाशि॥ ९॥
भे डैरेक्टर अवर पै विद्याकेरि प्रचारि। पानवीचजनु उन्निसा सबकहँ लीन उबारि॥ १०॥
गुणगाहक धनदायकहि रंके में निज वेश। जायदिखायहुनिजप्रमुहि तासुशरणहरिपेश॥ ११॥

ताहु कवीन्द्रहि साध्यहि यन्त्र सहज दीन । यथेष्ट अब यह भया जामें गिरिन गीन ॥ १२ ॥
निजदासी सों विनय यह करत अहैं मनलाइ । कराइ प्रकट यदि कहा को देखहु वक्रिताइ ॥ १३ ॥
और परिश्रम में बहुत करत ताहि निमित्त । सदर्दुपाध्यायोतिकर्मिक यहदीप्यमानप्रमाण ॥ १४ ॥
गुणी पावहिं श्रम अधिक चतुर पावहिं भूल । देवप्रसाद दुजन का कहिं हुन्य न शूल ॥ १५ ॥

ग्रन्थनामानि ।

(१) श्रीरामायण भाषा तुलसीदासकृत ॥
(२) रामचन्द्रिका केशवदासकृत ॥
(३) ब्रजविलास ब्रजवासीदासकृत ॥
(४) नाममाला नन्ददासकृत ॥
(५) अनेकार्थ नन्ददासकृत ।
(६) रसराज चन्दनकविकृत ॥
(७) सतसतिका विहारीलालकृत ॥
(८) वैद्यविनोद मदनसिंहकृत ॥
(९) अध्यात्मप्रकाश सुखदेवकृत ॥
(१०) हिन्दीकोष माधवप्रसादकृत ।
(११) अन्य भाषा ग्रन्थ ॥

चिह्न ॥

नाम पुंलिङ्ग=ना० पु० । नाम स्त्रीलिङ्ग=ना० स्त्री० । गुणवाचक=गु० । सकर्मक क्रिया=स० क्रि० । अकर्मक क्रिया=अ० क्रि० । अव्यय=अव्य० । सर्वनाम=सर्व ॥

प्रकट होवे कि बहुत से शब्द अप्रचलित इस ग्रन्थ में लिखे गये उनके उदाहरण अमरकोशादि संस्कृत और भाषा ग्रन्थों में से दिये हैं और जहां २ आवश्यक हुए वहां २ कविताएं और उदाहरण देखें ॥

इस पुस्तक से विद्यानुरागियों को बहुत लाभ हुआ और उनकी ग्राहकता से प्रथमबार निकल हाथों हाथ अब पँचवारा छपता है आशा है इसको गुणग्राहक अङ्गीकार करें ॥

अ० अव्य० देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर जिस शब्द के प्रथम में इसका सम्बन्ध होता है उसका अर्थ उलटा होजाता है यथा अकारण अर्थात् कारणरहित अरु स्वरादि शब्द के पहिले जब आवे तब अन् होजाता है यथा अनन्त अर्थात् अन्त ।

अंकवार० ना० स्त्री० गोदी, कौला ।

अंगरखा० ना० पु० पहिरने का वस्त्रविशेष ।

अंगिया० ना० स्त्री० चोली, वस्त्रविशेष ।

अंगीठी० ना० स्त्री० पात्र, जिसमें आग रखते हैं ।

अंगूठी० ना० स्त्री० जो आभूषण अंगुली में पहिनते हैं ।

अंगोछा० ना० पु० देह पोछने का वस्त्र, रूमाल ।

अंत० ना० पु० अन्त, समाप्ति, पूरा ।

अंतर० ना० पु० अन्तर, फरक ।

अंतर्गति० ना० स्त्री० भीतरी चाल ।

अंतरिक्ष० } ना० पु० अन्न ।
अंतरीक्ष० } ऊपर की जगह ।

अंतर्यामी० गु० अन्तर्यामी, जो दिलमें रहे यह शब्द ईश्वरके लिये है ।

अन्तर्धान० गु० अन्तर्धान, छिपजाना, गुप्तहोना ।

अंत पट० ना० पु० भीतर का वस्त्र ।

अंधाकुँआ० } ना० पु० कुआ, जो कूड़ाआदि
अंधकूप० } से भरगया हो ।

अन्धेर० ना० पु० अन्याय, उपद्रव ।

अन्धकार० गु० अंधेरा ।

अम्ब० ना० पु० आम ।

अम्बर० ना० पु० आकाश, कपड़ा ।

अंबारी० ना० स्त्री० हौदा जो हाथीपर रखते हैं ।

अंश० ना० पु० भाग, हिस्सा दर्जा जो ६९ 1/2 मील का होता है ।

अंशी० गु० भागी अर्थात् हिस्सेदार ।

अंशु० ना० पु० किरण ।

अंशुमती० ना० स्त्री० शालपर्णी ।

अंशुमान्० ना० पु० सूर्य, सूर्यवंशी राजा वि० ।

अंशुमाली० ना० पु० सूर्य, चन्द्रमा ।

अंस० ना० पु० कंधा ।

अऊत० ना० पु० निर्वंशी, बिन ब्याहा ।

अनृण० गु० उद्धार, बेबाक ।

अकच्छ० गु० नंगा, मेहरा, वस्त्ररहित ।

अकधड़क० गु० बेलटके, बेधड़क ।

अकथ० } गु० जो कहनेके योग्य न हो
अकथनीय० } जो वर्णनरहित होवे ।
अकथ्य० }

अकनि० अ० क्रि० सुनिके, रामायणे यथा (सुनत नचावहिं कुँवर वर अकनि मृदंग निशान)।

अकम्पन० ना० पु० राक्षसविशेष, कम्परहित ।

अकर्कश० गु० कामल, नरम ।

अकर्म० ना० पु० अपराध, कुकर्म ।

अकर्मक० गु० कर्मरहित धातु ना० क्रिया अर्थात् जो कर्त्ता की राशि में होवे ।

अकर्मण्य० गु० निकम्मा, बेकाम ।

अकलंक० } गु० निर्दोष, बेदाग ।
अकलंकित० }

अकल्याण० गु० कल्याणरहित, अमंगल ।

अकवार० ना० स्त्री० अकवार ।

अकस० ना० स्त्री० वैर, अदावत ।

अकस्मात्० अव्य० अचानक, निमित्तहीन ।

अकाज० ना० पु० कामका विनाश, खराबी ।

अकाम० ना० पु० व्यर्थ, निष्फल, कामहीन ।

अकारण० ना० पु० निमित्तहीन, बेमतलब, बेसबब ।

अकारथ० गु० व्यर्थ, निष्फल ।

अकारान्त० गु० जिसशब्दके अन्तमें अकार होवे ।

अकाल० ना० पु० दुर्भिक्ष, कुसमय, कहत ।

अकालफल० ना० पु० कुसमय के फल, बेमौसिम की वस्तु, दुर्भिक्ष की वस्तु वा फल ।

अकालमृत्यु० ना० पु० कुसमय में मरना, थोड़े में मरना, बे मौत मरना ।

अकाश० ना० पु० आकाश, प्रकाशहीन।
अकिञ्चन० गु० कंगाल, कछ पास नहीं, केवल भगवान् भरोसे।
अक्रिय० गु० कुछ नहीं करता, करनेके योग्य न होवे।
अकुण्ठ० गु० तीक्ष्ण, तेज, निनाशरहित।
अकुताना० अ० क्रि० उबना, घबड़ाना।
अकुताही० गु० उबै, घबरावै।
अकुल० गु० कछ जाति नहीं, नीचघराना, ना० पु० विशेष ईश्वर।
अकुलाना० अ० क्रि० व्याकुल होना, घबड़ाना।
अकुलीन० } अकुलीना० } गु० पामर, कुलहीन, नीच।
अकेल० } अकेलो० } गु० दुखी, एकही।
अक्रूर० ना० पु० श्रीकृष्णके दनी के चचा, गु० जिसका अन्त करण कोमल हो।
अखण्ड० गु० समस्त, सम्पूर्ण, खण्डहीन।
अखर्व० गु० समस्त, बहुत।
अखल० गु० अखिल, ना० पु० देवता, सुर।
अखाड़ा० } अखारा० } ना० पु० जहां मल्लयुद्ध होताहै, अथाई।
अखिल० गु० समस्त, सम्पूर्ण, बिल्कुल।
अखेट० ना० स्त्री० मृगया, शिकार।
अखयवट } अखयवृक्ष } ना० पु० अक्षयवृक्ष।
अख्याति० ना० स्त्री० अपयश, अयश, बदनामी।
अग० ना० पु० पर्वत, अगम्य, जहां जा न सके।
अगम० } अगम्य० } गु० जहां जाय न सके, जो बूझने के योग्य नहीं।
अगर० ना० पु० सुगन्धिप्रसिद्ध।
अगस्त० ना० पु० वृक्षविशेष।
अगस्ति० } अगस्त्य० } ना० पु० मुनिविशेष जिन्होंने समुद्र को सुखा दिया था।
अगणित० गु० बहुत, जो गिना न जावे, बेहिसाब।

अगवानी० ना० स्त्री० आगे जाकर लेना, पेशवाई।
अगहन० ना० पु० नवयें महीना का नाम।
अगाऊ० अव्य० पहिले से, आगे।
अगाध० गु० अथाह, अत्यन्त गम्भीर।
अगार० ना० पु० घर, आगे।
अगास० ना० पु० अपराध, दोष, नाममालाया, अथ अगास हेलन अहित औगुण जो कछु पीग।
अगुवा० ना० पु० मार्ग दिखानेवाला, सन्देशी, आगे चलनेहारा, प्रधान, चौधरी।
अगुण० गु० अवगुण, गुणहीन, ना० पु० ईश्वर।
अगुरु० ना० पु० जिसका गुरु नहीं, नीच, ह्रस्व।
अगूढ़० गु० सुगम, जो गूढ़ नहीं।
अगूढ़गन्धा० ना० स्त्री० हींग।
अगोचर० गु० अदृश्य, अलख, अव्यय।
अगोटना० } अगारना० } स० क्रि० घेरलेना, रखना।
अगौनी० ना० स्त्री० अगवानी।
अग्नि० ना० पु० आगि, अगुआ।
अग्निका० ना० स्त्री० कठिहारी।
अग्निजिह्वा० ना० पु० देवता।
अग्निपाली० ना० स्त्री० सीता, दुर्गा।
अग्निमन्थ० ना० पु० अरणी।
अग्निमुखी० } अग्निवक्त्र० } ना० पु० भिलवा वृक्ष।
अग्निवल्लभ० ना० पु० शाल, राल।
अग्निशिखा० ना० स्त्री० केसर, जाफरान।
अग्निसंस्कार० ना० पु० दाह देना, मृतक को जलाना या उसके हेतु क्रियाविशेष।
अग्निहोत्री० ना० पु० अग्नि पूजनेहारा, ब्राह्मण जातिविशेष।
अग्र० ना० पु० मध्य, आगे, प्रथमभाग।
अग्रगण्य० गु० जो पहिले होवे, या गिनाजावे।

अग्रगामी० गु० आगे चलनेहारा, पेशरा।

अग्रज० गु० जो पहिले प्रकट हुआ होवे, बड़ा।

अग्रता० } **अग्रत्व०** } ना० स्त्री० पु० अगुआपन, ना० पु० पेशवाई।

अग्रशोची० ना० पु० गु० पहिले सोचनेवाला, प्रथमही समझनेहारा, दूर अंदेश।

अग्रसर० गु० वा० पु० मुखिया, प्रधान, पेशरा, आगे चलनेहारा, सरदार।

अग्रहायण० ना० पु० अगहन।

अघ० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह, अघासुर दैत्य।

अघटित० गु० अयोग्य, जो पूरा न पड़े।

अघाई० गु० पूरी, भरी।

अघाना० अ० क्रि० अफरना, आसूदह होना गु० सन्तुष्ट, धनवान्।

अघारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।

अघासुर० ना० पु० दैत्यविशेष, जिसको श्री कृष्णचन्द्रने वध किया था।

अघी० गु० पापी, दोषी।

अघोर० ना० पु० मैनाक, अपूर्व, शिवकृत मन्त्र, धर्मविशेष, श्रीमहादेवजी।

अघोरपन्थ० ना० पु० धर्मविशेष।

अघोरपन्थी० } **अघोरी०** } ना० पु० जो अघोरपथका सेवन करे, मलादिसंयुक्त, सर्वभक्षी।

अघ्न० गु० मारनेहारा, ना० पु० मारण, हनन।

अंक० ना० पु० अक्षर, गोदी, कनिया, चिह्न, सङ्ख्या, गिनती के नव अक्षर, निशानी।

अंकदुन० ना० पु० दुःख, पीड़ा, ग्मनाला, (बिछुरन्द्रे न अरु अन्कदुन गहन वृजिनं अघनाउ)।

अङ्कना० अ० क्रि० मोल ठहरना, परीक्षित होना।

अङ्काना० स० क्रि० मोल ठहराना, सौंपना।

अङ्कित० गु० चिह्न किया गया, लिखित, परीक्षित।

अंकुर० ना० पु० बीज बोने से जो अँखुआ पहिले निकलता है।

अङ्कुश० ना० पु० आंकुसी जिस से महावत हाथी को मारता है।

अङ्कोल० ना० पु० आंकप्रसिद्ध।

अङ्ग० ना० पु० अवयव, शरीर, देह।

अगद० ना० पु० बालिका पुत्र, भूषण, बाजूबन्द।

अगदा० ना० स्त्री० नाम चन्द्रमा की एक कला का, वा शरीर की दाता।

अगन० ना० पु० आगन, सहन।

अगना० ना० स्त्री० पत्नी, जोरू, स्त्री, आगन।

अगवना० उ० क्रि० सहना, गँवारा करना।

अंगराग० ना० पु० उबटन, केसर चन्दनादि का शरीर विषे मर्दन।

अंगारक० ना० पु० मङ्गल, अङ्गारा, पोदा।

अंगाङ्गिभाव० ना० पु० शरीर के अवयवों का सम्बन्ध।

अंगिरा० ना० पु० मुनिविशेष, बृहस्पति जी के पिता।

अंगीकार० ना० पु० स्वीकार, कबूल, मञ्जूर।

अगुल० ना० पु० आगुल।

अगुली० ना० स्त्री० हाथ का अवयव।

अंगुष्ठ० } **अगुष्ठा०** } ना० पु० अंगूठा।

अगूठा० ना० पु० अंगुष्ठ।

अंगूठी० ना० स्त्री० अंगूठी, मुंदरी।

अंगेठी० ना० स्त्री० अंगीठी।

अचगरी० ना० स्त्री० अनुचित, अकरकर्म, अगनिलासे, यथा—सुनि मदरि निज सुतकी करनी। करत अचगरी जात न बरनी॥

अचम्भा० } **अचम्भव०** } **अचरज०** } ना० पु० आश्चर्य, तअज्जुब।

अचल० गु० जो चल नहीं सक्ता ना० पु० पर्वतादि।

अचला० ना० स्त्री० पृथ्वी धर्ती।

अचानक० अव्य० अकस्मात् एकाएक ना० पु० कलकत्ता के निकट नगरविशेष।

अचानचक० अव्य० अकस्मात्, नागहान।

अचाना० स० क्रि० भोजन करके मुखधोना।

अचार० ना० पु० आम इत्यादि का जो बनता है और आचार।

अचिन्त० गु० चिन्तारहित, निधड़क।

अचूक० गु० जो न चूके ठीक।

अचेत० गु० संज्ञारहित बेहोश, मूर्छित।

अच्छत० ना० पु० अक्षत धानरहित।

अच्छा० गु० भला सुडौल सुन्दर।

अच्युत० गु० स्थिर, अचलविशेष ईश्वर।

अच्युताग्रज० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

अछेह० गु० बहुत, बिहारीलालप्रमाणतिकाया धरे रूप गुणको गरब फिरै अछेह उछाह।

अज० अव्य० आज, अब, ना० पु० ब्रह्म बकरा ईश्वर, शिव, यौवन और आभरण गु० जो पैदा न होवे वा उपजा किसीसे न हो।

अजगर० ना० पु० बड़ा सांप, अजदहा सांप।

अजगुत० गु० अद्भुत अनायत।

अजगन्धा० ना० स्त्री० बबरीपौधा।

अजन्म० गु० जिसका जन्म न होय।

अजय० गु० जयरहित जो जीता न जावे ना० स्त्री० वीरभूमि ज़िले की नदीविशेष।

अजया० ना० स्त्री० अजा।

अजर० गु० जरारहित अर्थात् जो बूढ़ा न हो ना० पु० देवता।

अजलोक० ना० पु० ब्रह्मलोक अजलोक।

अजवीथी० ना० स्त्री० रुपहरी जो रातमें घने तारागणा की आकाशमें दीखपड़ती है।

अजहु० अव्य० अबभी अभी।

अजा० ना० स्त्री० बकरी माया।

अजात० गु० जन्मरहित, जो न उपजा।

अजातअरि०
अजातरिपु० } ना० पु० राजा युधिष्ठिर।

अजान० गु० अज्ञान, मूर्ख, नादान।

अजामिल०
अजामाल० } ना० पु० नाम एक मनुष्य का जिसका जी नारायण कहके मरा और मुक्ति पाई।

अजित०
अजीत० } गु० जो जीता न जासके, ईश्वर।

अजिन० ना० पु० सिंहइत्यादि का चर्म जो ब्रह्मचारीलोग बिछाते हैं।

अजिर० ना० पु० आंगन सहन।

अजीर्ण० ना० पु० कुपच, बाई बादी।

अजौं० अव्य० अबतक, अभी।

अज्झल० ना० पु० अच् और हल अर्थात् स्वर और व्यञ्जन।

अञ्चल० ना० पु० आंचल अचला वस्त्रका अन्त।

अञ्जन० ना० पु० काजल, सुरमा।

अञ्जलि०
अञ्जली० } ना० स्त्री० दोनों हाथका संपुट।

अञ्जि० नि० अंजन लगाकर।

अञ्जित० गु० अंजन अर्थात् सुरमा लगाये।

अटक० ना० स्त्री० रोक, प्रतिबन्ध सिन्धुनदी।

अटकना० अ० क्रि० रुकना, लगना।

अटकल० ना० स्त्री० अनुमान, प्रमाण अन्दाज।

अटकलना० स० क्रि० ताकना बूझना जाचना।

अटका० ना० पु० जगन्नाथ जीमें प्रसाद पकाने का पात्र वा प्रसाद।

अटकाना० स० क्रि० रोकना ठहराना।

अटकाव० ना० पु० रोक, प्रतिबन्ध।

अटखेल० गु० खिलाड़ चंचल।

अटखेली० ना० स्त्री० खिलाड़पन, चंचलाहट।

अटन० म० क्रि० फिरना, घूमना, ना० पु०ऊपर की कोठरी।
अटना० अ० क्रि० समाना, भरजाना, फिरना।
अटपट० गु० उलट, पुलट० गोल बात।
अटपटी० गु० अशोच, अनरीति।
अटल० गु० पूरा, दृढ़, अचल, जो न टरै।
अटवी० ना० पु० वन, जंगल।
अटा० } ना० स्त्री० ऊपरकी कोठरी,
अटारी० } कोठा।
अटाला० ना० पु० ढेर, सामग्री।
अटूट० गु० जो टूट न सके।
अटेक० गु० जो टेकरहित हो, सहाराबिना।
अटेरन० ना० पु० फेंटी, चरखी, घोड़े को चक्कर देनेका स्थान।
अटेरना० स० क्रि० फेंटी बनाना, घोड़े को चक्कर देना।
अटेरि० ना० पु० नगरविशेष।
अटोक० गु० टोक बिन, अबेड़।
अट्टहास० ना० पु० ठट्ठा मार के हँसना।
अट्टालिका० ना० स्त्री० अटारी।
अठतालीस० गु० चालीस और आठ ४८।
अठतीस० गु० तीस और आठ ३८।
अठवारा० ना० पु० आठवाँ दिन, सप्ताह।
अठसठ० गु० साठि और आठ ६८।
अठहत्तर० गु० सत्तर और आठ ७८।
अठाईस० गु० बीस और आठ २८।
अठानवे० गु० नव्वे और आठ ९८।
अठारह० गु० दश और आठ १८।
अठासी० गु० अस्सी और आठ ८८।
अठेल० गु० जो ठेला न जावे।
अड० ना० स्त्री० झगड़ा, विरोध, हट।
अडंग० ना० पु० मंडी अर्थात् दिसावरकी वस्तु का उतार, गु० झगड़ालू, टरो।
अड़ना० अ० क्रि० रुकना, हठकरना।
अडूसा० ना० पु० वांसा अर्थात् औषधवि०।
अडोल० गु० जो न डुले, अटल।
अणि० ना० स्त्री० मोनी, अनी, नोक।
अणिमा० ना० स्त्री० अन्तर्द्धान होने की शक्ति सिद्धिविशेष।
अणु० ना० अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु।
अण्ड० ना० पु० अंडा, आंडा।
अण्डकोष० ना० पु० अण्डकटाह।
अण्डज० ना० पु० गु० जो अण्ड से उपजे।
अण्डा० ना० पु० अण्ड० रेण्ड।
अण्डाकार० } गु० अण्डे के डौल।
अण्डाकृति० }
अतनु० ना० पु० कामदेव, शरीररहित।
अतर्क० गु० जो तर्करहित है, बेदलील।
अतर्क्य० गु० जो लखा न जावे, बेदलील।
अतल० ना० पु० सात पातालों में से एक।
अतलस्पर्श० गु० अथाह, अगाध।
अतसी० ना० स्त्री० अलसी, जिसका तेल निकालते हैं।
अति० अव्य० जिस शब्द के प्रथम इसका मेल होताहै उसका अर्थ अधिक लिया जाता है यथा, अतिसुन्दर अर्थात् अधिकसुन्दर।
अतिकण्टक० ना० पु० जवासा।
अतिकाल० ना० पु० अबेर।
अतिकाय० ना० पु० रावणका पुत्र।
अतिकुचै० अ० क्रि० समिटै, सकुचै, भूलै, रामचन्द्रिकायां, यथा कंपै वर वाणी डगै उर डीठि त्वचा तिकुचै सकुचै मतिवेली।
अतिगुहा० ना० स्त्री० शालपर्णी औषध।
अतिचंचुल० ना० पु० लाल अरण्ड।
अतिजिह्वा० ना० स्त्री० कलिहारी।
अतिथ० } ना० पु० यात्री, पाहुन, संन्यासी।
अतिथि० }
अतिपराक्रम० ना० पु० बड़ा प्रताप।
अतिपान० ना० पु० अधिक मदिराका पीना।
अतिपार्श्व० गु० बहुत निकट।

अतिरंडिका॰ ना॰ स्त्री॰ ऊंधाहोली, औषध।

अतिरसा॰ ना॰ स्त्री॰ रास्ना, औषध।

अतिरिक्त॰ गु॰ अतिशय, अधिक।

अतिवक्ता॰ गु॰ बहुवादी, जो बहुत बके।

अतिबला॰ स्त्री बलका औषध।

अतिविकट॰ गु॰ बहुत दुर्गम, जिस हाथी में अवगुण हो।

अतिवृष्टि॰ ना॰ स्त्री॰ बहुत वर्षा।

अतिव्ययक गु॰ उड़ाऊ, बहुत खर्च कर्त्ता।

अतिव्याप्ति॰ गु॰ स्त्री॰ अलक्ष्य में लक्षण का गमन।

अतिशय॰ गु॰ बहुत, अधिक।

अतिशात गु॰ बहुत शीत।

अतिसार॰ ना॰ पु॰ पेचीसा, संग्रहणी।

अतिस्थूल॰ गु॰ बहुत भारी।

अतीत॰ गु॰ होचुका, व्यतीत, रहित।

अतीस॰ ना॰ पु॰ औषधविशेष।

अतीसार॰ ना॰ पु॰ अतिसार।

अतुल॰ } गु॰ जो तोला नहीं गया, जो
अतुलित॰ } तोलने के योग्य नहीं, बहुत।
अतोल॰ }

अत्यंशु॰ ना॰ पु॰ सूरज।

अत्यन्त॰ गु॰ अतिशय, बहुत।

अत्यन्तसुन्दर॰ गु॰ बहुत सुन्दर।

अत्यल्पतर॰ गु॰ बहुतही थोड़ा।

अत्यावश्यक॰ गु॰ बहुत आवश्यक, बहुतजरूरी, जिसके बिना निबाह न होसके।

अत्युग्र॰ गु॰ बहुत कठिन ना॰ पु॰ हींग।

अत्युत्तम॰ गु॰ बहुत अच्छा।

अत्युत्तमा॰ ना॰ स्त्री॰ मुल्यअसरा।

अथ॰ अव्य॰ अनन्तर, आरम्भ, उपरान्त।

अथर्वण॰ ना॰ पु॰ नाम चतुर्थवेदका।

अथवा॰ अव्य॰ वा, या, प्रकारान्तर, किंवा।

अथाई॰ ना॰ स्त्री॰ बैठकका स्थान, समूह, चौपाई।

अथान॰ गु॰ अचार, खटाई, बेठिकाने।

अथाह॰ गु॰ गम्भीर, अपार, गहरा, ना॰ पु॰ लोह।

अदत्त॰ गु॰ जो नहीं दिया गया, देनेके योग्य नहीं है।

अदत्ता॰ गु॰ स्त्री॰ अविवाहिता।

अदर्शन॰ ना॰ पु॰ दर्शनाभाव गु॰ लुप्त, अगोचर।

अदवायन॰ ना॰ स्त्री॰ पांइती की रस्सी।

अदाता॰ } गु॰ लीचड़, अनदेना।
अदानी॰ }

अदिति॰ ना॰ स्त्री॰ कश्यप की स्त्री, देवमाता

अदिष्ट॰ ना॰ पु॰ विपत्ति, भाग्य, कर्म।

अदृश्य॰ गु॰ जो देखा न जावे, अगोचर।

अदेय॰ गु॰ जो देने के योग्य नहीं।

अदेय॰ गु॰ देय जो देने के योग्य न होवे।

अद्धी॰ ना॰ स्त्री॰ दमड़ी का आधा, कपड़ाविशेष।

अद्भुत॰ गु॰ अनोखा, अजायब।

अद्य॰ अव्य॰ आज।

अद्यापि॰ अव्य॰ अबतक।

अद्रक॰ ना॰ स्त्री॰ अदरक, कन्दविशेष।

अद्रि॰ ना॰ पु॰ पर्वत।

अद्वितीय॰ } गु॰ जिसके समान दूसरा नहीं,
अद्वैत॰ } गु॰ एकता-लासानी, भेदरहित

अध॰ अव्य॰ नीचे ना॰ स्त्री॰ ऊगा औषध

अधकपाली॰ ना॰ स्त्री॰ आधासीसी अर्थात् आधेशिर की पीड़ा।

अधगो॰ ना॰ स्त्री॰ गुदा, शंका करने की इन्द्रि

अधन॰ } गु॰ कंगाल, गरीब।
अधनी॰ }

अधवर॰ अव्य, आधी दूर अर्थात् मध्य।

अधम॰ गु॰ नीच, कुत्सित, धर्मरहित।

अधमाधम॰ गु॰ अतिनीच।

अधर॰ ना॰ पु॰ नीचे का होंठ, ओष्ठ, अन्तर गु॰ मध्य।

अधरबुद्धि० गु० नासमझ नादान।
अधरामृत० ना० पु० होठोंमें की मिठास।
अधर्म० ना० पु० पाप, अधेर, अन्याय, अन्याय, धर्मरहित।
अधर्मी० गु० अन्यायी, पापी।
अधि० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में इसका संयोग होताहै उसका अर्थ साहिब या मालिक या हाकिम का होता है यथा नगराधि अर्थात् नगर का मालिक।
अधिक० गु० बहुत।
अधिकता० ना० स्त्री० } ना० पु० बहुतात।
अधिकत्व० ना० पु० }
अधिकरण० ना० पु० सातवां कारकविशेष।
अधिककोण० ना० पु० कोन जो समकोण से अधिक हो।
अधिकाई० ना० स्त्री० बढ़ती, सरसाई, बहुतात।
अधिकाना० स० क्रि० अधिकतरना, बढ़ाना।
अधिकार० ना० पु० पदवी, ओहदा, योग्यता, स्वामित्व, राज्य, बर्षांती।
अधिकारी० गु० पाने योग्य स्वामी, पुजारी, परखा।
अधिकार्द्धि० गु० बहुत सम्पदा।
अधिकृत० ना० पु० नियुक्त, देखनेवाला। जाचनेवाला, पदाधिकार।
अधिप० ना० पु० नायक, मालिक, राजनीति प्रतिपालक, या प्रजापालक।
अधिपति० ना० पु० अधिप।
अधिवास० ना० पु० निवास, सुगन्ध।
अधिभू० ना० पु० नायक, स्वामी, मालिक।
अधिमास० ना० पु० लोंद, मलमास।
अधियाना० स० क्रि० आधाकरना।
अधिराज० ना० पु० महाराज, राजाधिराज।
अधिरूढ० ना० पु० सवार, असवार।
अधीन० गु० वशीभूत, आज्ञाकारी।
अधीनता० ना० स्त्री० आधीनता, पराय, दूसरे के इख्तियार में रहना।

अधीर० गु० उतावल, धीरजरहित, व्याकुल, चचल।
अधीरता० ना० स्त्री० उतावली, व्याकुलता।
अधीश० ना० पु० स्वामी, मालिक।
अधूरा० गु० अधरा, अधबना।
अधेड़० गु० आधा आयुर्दाय व्यतीत भई।
अधेला० ना० पु० पैसेका आधा।
अधेली० ना० स्त्री० रुपया या मुहरका आधा।
अधो० ना० पु० नरक, नीचे।
अधोबन्धन० ना० पु० जेरबन्द नीचेका बन्धनविशेष।
अधोमुख० गु० शिर झुकाये वा शिर नीचे और पाव ऊपर किये हुए।
अधोयोनि० गु० नीचयोनि।
अधोलोक० ना० पु० पाताल, नरक।
अध्ययन० ना० पु० पाठ पढ़ना, सीखना।
अध्यक्ष० ना० पु० स्वामी, प्रधान, मालिक।
अध्यात्म० ना० पु० आत्मज्ञान, ईश्वरविचार।
अध्यापक० ना० पु० पाठपढ़ानेहारा, शिक्षक।
अध्यापन० ना० पु० पाठ पढ़ाना।
अध्याय० ना० पु० पाठ, पर्व, प्रकरण, काण्ड, बाब, हिस्सा।
अध्याहार० ना० पु० वाक्य को पूरा करने के निमित्त बाहर से शब्द लेआना।
अध्याहृत० गु० अध्याहार कियागया शब्द।
अध्वग० } गु० बटोही, राही, मुसाफिर।
अध्वनी० }
अध्वा० ना० स्त्री० राह, मार्ग, बाट।
अन० अव्य० निषेधार्थ शब्द, नहीं।
अनख० ना० पु० दुःख।
अनखाई० गु० क्रोध भरा झगड़ालू।
अनखाना० अ० क्रि० क्रोधित होना, उदास होना।
अनगढ़० गु० अनघड़, अनमिला, जो वस्तु बनाई न गई हो।
अनगढ़ा० गु० अनघड़।

अनगढ़ी० ना० स्त्री० अनगढ़।
अनगणित० गु० जो गिना नहीं वा गिना न जासके वा हिसाब में न आवे।
अनघ० गु० निष्पाप, निर्दोष, बेगुनाह।
अनंग० ना० पु० कामदेव, रामाजनर, गु० देहरहित जो तन में न होवे।
अनजाना० गु० बिना पहिचाना।
अनट० ना० स्त्री० गांठ।
अनत० अव्य० अन्यत्र, और स्थान में।
अनधन० ना० पु० सम्पत्ति वा लक्ष्मी अर्थात् अनधनामा लक्ष्मी।
अनंत० गु० जिसका अन्त नहीं वा भाद्र शुक्ल चतुर्दशी को जो सूत में १४ ग्रंथि देकर पूजते हैं और बाहुपर बांधते हैं बहुत० ना० पु० ब्रह्मा, आकाश, विष्णु जी, शेष जी, लक्ष्मण जी।
अनंतकाल० गु० बहुत दिन।
अनंतर० ना० पु० अव्यय, समीप, पीछे, दूसरा, अन्तररहित।
अनन्ता० ना० स्त्री० धरती, अनन्ता।
अनन्य० गु० एक मात्र, एक भरोसे।
अनपढ़ा० गु० मूर्ख, अनपढ़ा, अज्ञानी।
अनपायन० गु० अचल, दृढ़।
अनबूझ० गु० जो समझा न जावे।
अनमन० }
अनमना० } गु० बावरा, उदास, बेदिल।
अनमिल० गु० मैलरहित, नादुरुस्त।
अनमिष० गु० समय, बिना मिस, बेउज्र।
अनमेल० गु० अनमिल।
अनमैल० गु० मैलरहित, उज्ज्वल, साफ़।
अनमोल० गु० जिसका मोल नहीं अर्थात् जो बहुत अपूर्व है।
अनायास० गु० बिना परिश्रम, बेमिहनत।
अनरस० ना० पु० रसरहित, झगड़ा, फीका, मित्रों में अनबनाव।
अनरीति० ना० स्त्री० कुचालि, असन्मान, अनादर।
अनर्गल० गु० निर्दोष, स्वेच्छक।
अनर्घ० गु० अपूर्व, अमूल्य।
अनर्थ० गु० अर्थहीन, अनुचित, बेमतलब।
अनर्थक० गु० निष्प्रयोजन, निष्कारण, झूठा।
अनल० ना० पु० पावक, अग्नि, आग।
अनलपक्ष० ना० पु० पक्षी विशेष जो सर्वदा आकाश में उड़ा करता है और जब ईश्वरेच्छा से उस के अंडे होते हैं तो अण्डे को आकाश से छोड़ देता है और वह अण्डा पृथ्वी पर पहुँचने के पहिलेही मार्ग में फूटकर बच्चा बन जाता है और उड़ने लगता है और अपने माता पिता का स्मरण कर ऊपर लौट जाता है, (यथा विचारमालायाम्) अनल पक्ष को बेटुवा निरेउ धरणि परराय। बहु मलीन यह लीन है मिल्यो तासु को धाय।
अनवकाश० ना० पु० अवकाशरहित।
अनवट० ना० पु० भूषणविशेष जो स्त्रिया पाउं के अंगूठे में पहनती हैं।
अनवस्थित० गु० बेठिकाने, रग रग की।
अनशन० ना पु० उपवास, लंघन।
अनश्वर० गु० जिसका नाश न हो, जो न मिटे।
अनसीखा० गु० अनपढ़ा, अज्ञानी।
अनसुनीकरना० अ० क्रि० अनाकानी करना।
अनसूया० ना० स्त्री० अत्रिमुनि की पत्नी।
अनहित० गु० स्नेहरहित, शत्रु, बैर, बुराई।
अनहोना० गु० असम्भव, जो होनहार नहीं।
अनाकुट० ना० पु० वृक्ष, पेड़।
अनाचार० ना० पु० कुचाल, आचाररहित।
अनाज० ना० पु० अन्न, गल्ला।
अनाजक० ना० पु० कालाअगर।
अनाड़ी० गु० अदेमल, निर्गुणी, नातसिमा।
अनाथ० गु० दुःखी, जिसका कोई रक्षक न हो, यथा विधवा, पिताहीन पुत्र।

अनादर० ना० पु० अपमान, तिरस्कार।
अनादि० गु० जिसकी आदि न हो, यथा ईश्वर।
अनामय० गु० रोगरहित, निर्दोष।
अनामिका० ना० स्त्री० तीसरी अंगुली।
अनायास० ना० पु० सहजबिना, निरुपाय।
अनावृष्टि० ना० स्त्री० सूखा, पानी न बरसे।
अनाश्रम० गु० बिनघरका, बिना ठिकाने और चारों आश्रमरहित।
अनाहत० गु० वह शब्द जो ब्रह्माण्ड में अखण्ड होता है, ना० पु० वस्त्रविशेष।
अनिरुद्ध० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का पोता।
अनिर्वचनीय० } गु० जो कहने के योग्य
अनिर्वाच्य० } नहीं है।
अनिल० ना० पु० पवन, वायु, हवा।
अनिश्चित० पु० जो निश्चय नहीं कियागया।
अनिश्चितता० ना० स्त्री० जिसका निश्चय नहीं है उसकी स्थिति।
अनिष्ट० गु० अप्रिय, अरुचि।
अनी० ना० स्त्री० सेना, बरछी तीर बाण आदि की नोक।
अनीक० ना० पु० झण्डा, ना०स्त्री० सेन, समूह।
अनीकिनी० ना० स्त्री० सेना, फौज।
अनीति० ना० स्त्री० कुचाल, अन्याय।
अनीश० ना० पु० ईशरहित, जीव।
अनीह० गु० चेष्टारहित, तृष्णारहित।
अनु० अव्य० यह जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ, कभी पुनः कभी सादृश्य, कभी निषेध, कभी संग, कभी पीछे, कभी समीप का होता है।
अनुकम्पा० ना० स्त्री० कृपा, दया, रहम, मेहरबानी।
अनुकरण० ना० पु० किसी के पीछे काम करना, किसीकी प्रति वा नकल करना।
अनुक्त० गु० जो उक्त नहीं, ना० पु० दृष्टान्त।
अनुक्रम० ना० पु० क्रमसे, परिपाटी, रीति।
अनुक्रोश० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहम।
अनुकारी० ना० पु० नौकर, सेवक।
अनुकूल० गु० प्रसन्न, सहायक, व्याधिहीन।
अनुख० ना० पु० आलस, बुराई।
अनुखाल० ना० पु० किसी नदी का एक भाग किसी देश में प्रविष्ट हो थोड़ी दूर और भेद न करे उसका नाम अर्थात् छोटाखाल।
अनुग० गु० सेवक वा सेवकिन, पीछे चलैया।
अनुगत० ना० पु० आश्रित।
अनुग्रह० ना० पु० कृपा, दया, मेहरबानी।
अनुगामी० गु० सेवक, पीछे चलनेहारा।
अनुचर० ना० पु० साथी, सहचर, दास, सेवक।
अनुचरी० ना० स्त्री० दासी, सेवकिन।
अनुचित० गु० अयोग्य, जो वाजिब न हो।
अनुज० ना० पु० छोटाभाई।
अनुजा० ना० स्त्री० छोटीबहिन।
अनुत्तर० गु० उत्तरहीन, महाजन, श्रेष्ठ।
अनुताप० ना० पु० पश्चात्ताप, शोच।
अनुतारा० ना० पु० तारे के पीछेका तारा
अनुदिन० ना० पु० प्रतिदिन, नित्यप्रति।
अनुनासिक० ना० पु० जो नासिकासे निकले।
अनुपल० ना० पु० पलका साठिवां भाग।
अनुपस्थित० गु० जो उपस्थित न होवे।
अनुपान० ना० पु० औषध आदि के साथ और जो कुछ मिलाय के पीते हैं।
अनुप्रास० ना० पु० समान जाति के वर्णों से रचितपद, समूह, रदीफ़।
अनुभव० ना० पु० मानसज्ञान, अटकल, विचार, ध्यान।
अनुभूति० ना० व्याकरण के आचार्य का नाम है जिन्होंने सारस्वत बनाई और अपने चित्त के स्थिर निश्चय को भी कहते हैं, जिसका पर्याय अनुभव है।
अनुभाव० ना० पु० महिमा, बड़ाई।
अनुभूत० गु० चीन्हा, जो मनमें जानागया है।
अनुमति० ना० स्त्री० अनुज्ञा, आज्ञा, सम्मति, सलाह।

अनुमरण० ना० पु० एक चिता में निजपुरुष शरीर का दहन सती होना।
अनुमान० ना० पु० अटकल युक्ति से जो निश्चय होवे।
अनुमति० गु० विचारा गया।
अनुमोदन० ना० पु० प्रशंसा या बड़ाई करना।
अनुयायी० गु० पीछे आनेवाला सेवक।
अनुरक्त० गु० मग्न रत मस्त।
अनुराग० ना० पु० स्नेह प्रीति थोड़ा लोहा।
अनुरागी० गु० प्रियतम प्रेमी।
अनुराधा० ना० स्त्री० सत्रहवां नक्षत्र।
अनुरूप० गु० सदृश समान तुल्य।
अनुरूपक० गु० समान देखनेवाला प्रतिमा।
अनुरोध० गु० अपेक्षा उपरोध रोक मनोभिलाष अनुरूप होना।
अनुरोधी० गु० विरोधी।
अनुलाप० ना० पु० दुःखित बार्त्ता।
अनुग्रह० ना० पु० कृपाप्रदान।
अनुवाद० ना० पु० पन कथन, वाक्य पद करना हठ करना।
अनुशयना० ना० स्त्री० नायिकाविशेष।
अनुशाखा० ना० स्त्री० शाखा की शाखा प्रशाखा।
अनुशासन० ना० पु० आज्ञा हुक्म।
अनुसंधान० ना० पु० कामना पीछे लगाना।
अनुसरना० अ० क्रि० पीछे चलना या आना।
अनुसार० ना० पु० सदृश तुल्य अनुरूप होना अथवा अनुरूप मुताबिक।
अनुस्वार० ना० पु० बिन्दु जो अक्षर के मस्तक पर रहते हैं।
अनुहर० ना० पु० तुल्य अनुहार।
अनुहरण० ना० पु० उठाना उठालना।
अनुहार } गु० तुल्य सदृश समान,
अनुहारि० } गम्य।
अनुपम० }
अनुपमा० } गु० उपमारहित अर्थात् सब से भला एकता बानीर।
अनूप० }

अनूठा० गु० अपूर्व निराला, नया अनोखा
अनूठा० गु० मन विलक्षण।
अनृत० ना० पु० झूठ मिथ्या।
अनेक० गु० बहुत एक से अधिक।
अनेकवर्णात्मक० गु० जिस शब्द में एकसे अधिक वर्ण हों।
अनैसी० ना० स्त्री० अनुचित कुदृष्टि।
अनैसे० गु० कुदृष्टि मन्दुदृष्टि रामायणे यथा (अजहुँ अनुज तव चितव अनैस)
अनौपधि० गु० जिसकी औषधि नहीं साध्य
अन्त० ना० पु० समाप्ति शेषभाग सीमा दूसरा जाड़ा अ०य० निदान।
अन्तक० ना० पु० काल, यमराज।
अन्तकाल० ना० पु० मरने का समय।
अन्तःकरण० ना० पु० मन बुद्धि चित्त और अहंकार।
अन्तःकोण० ना० पु० भीतर का कोना।
अन्तःपाती० गु० अन्तर्गत भीतर।
अन्तःपुर० ना० पु० घर जिसमें रानी आदि स्त्रियां रहती हैं।
अन्तःसम्पात० ना० पु० भीतर छूना।
अन्तड़ी० ना० स्त्री० आंत।
अन्तर० अव्य० बीच पक्ष ना० पु० भीतर, समय भेद हृदय।
अन्तरंग० ना० पु० आत्मीय अपना।
अन्तर्हित० गु० छिपजाना गायब होना।
अन्तरा० ना० पु० गीत के पहिले पदका छोड़के जो पद हैं अथवा मध्य बाहिर।
अन्तरापत्ति० ना० पु० गर्भ।
अन्तरित० गु० छिपना गायब होना।
अन्तरिया० ना० पु० तिजारी ज्वरविशेष।
अन्तरीप० ना० स्त्री० टापू धरती की नोक जो समुद्र में चलागई हो।
अन्तर्वेद० ना० पु० देश जो गंगा यमुना के मध्य में है।
अन्तस्थ० गु० बीच में रहनेवाला अक्षर।

अतावली० ना० स्त्री० अंत।
अंतिम० गु० अन्तका।
अंतेवासी० ना० पु० पीछे रहनेवाला, दूररहने वाला शिष्य।
अन्त्य० गु० अन्तका, पिछला।
अन्त्यज० ना० पु० धोबी, चमार, नट, बरट, किरात, मेद, भिल्ल, पीछे उपजा, नीचजाति।
अंत्याक्षर० ना० पु० अन्तका अक्षर।
अंध० गु० अंधा।
अंधक० ना० पु० दैत्यविशेष जो सदाशिव से लडा था और मारागया।
अंधकरन्ध०ना० पु० दैत्यविशेष।
अंधकरिपु० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
अंधकार० ना० पु० अंधेरा।
अंधकारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
अंधला० गु० अंधा।
अंधसुत० ना० पु० दुर्योधनादि सो १००।
अंधा० गु० नेत्रहीन।
अन्न० ना० पु० पक्व ओदनादि, अनाज।
अन्नकूट० } ना० पु० अन्नका ढेर लगाना।
अन्नपर्वत० } हिन्दुओंमें त्योहार दीवालीके दूसरे दिन होता है।
अन्नप्राशन० ना० पु० बालक को पांचवें या छठेमास खीर चटाना, माड चाटना।
अन्ना० } ना० स्त्री० दाया, दाई, धाय।
अन्नी० }
अन्य० गु० दूसरा, भिन्न, कोई और।
अन्यच्च० गु० अन्य भी, और भी।
अन्यथा० अव्य० और प्रकार, प्रकारान्तर, अशुद्ध, मूठ।
अन्यथाचरण० ना० पु० उलटा व्यवहार।
अन्यथासिद्धि० ना० स्त्री० और प्रकार से ठहराना।
अन्यदेश० ना० पु० और देश, गैरमुल्क।
अन्यदेशीय० गु० परदेशी, विदेशी।
अन्यपुरुष० गु० जो परोक्ष में है, आननर।
अन्यरक्त० ना० पु० सालूआ।
यथा, (अन्यरक्त वृत्तरक्तासिर काषपिप्पली) इति निघण्टे।
अन्याय० ना० पु० अनीति, उपद्रव।
अन्याय० } गु० अयोग्य, अधर्मी, जालिम।
अन्यायी० }
अन्यत्र० अव्य० और कहीं।
अन्योन्य० गु० परस्पर।
अन्वय० ना० पु० एकका एकके साथ सम्बन्ध, कुल।
अन्वहं० गु० निरंतर, सबदिन।
अन्वित० गु० संयुक्त, मिलित।
अन्वेषण० ना० पु० अनुसन्धान, खोज।
अन्वेषिणी० ना० स्त्री० खोजनेवाली, ढूंढन वाली।
अप० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ, गु० निषिद्धता, विरुद्धता, भिन्नता, आसन्नता इत्यादि होताहै सर्व० आप।
अपकर्म० ना० पु० कुकर्म, बुराकाम।
अपकार० ना० पु० अनिष्ट, बिगाड, द्वेष, अधर्म।
अपकारी० गु० द्वेषी, कुकर्मी।
अपकृष्ट० गु० अधम, न्यून, क्षीण।
अपक्व० गु० जो पका न होय।
अपघात० ना० पु० निज करसों आप को मारना।
अपचय० ना० पु० टोटा, घाटा, हानि।
अपजस० ना० पु० कलंक, अपमान, अपयश।
अपटु० गु० जो काम करने में प्रवीण नहीं, निर्बुद्धि।
अपडर० ना० पु० मूठडर, निजओर से डर
अपत० गु० पापी, बेइज्जत।
अपति० ना० स्त्री० अनादर, अपमान।
अपत्य० ना० पु० सन्तान, औलाद।
अपथ० ना० पु० कुमार्ग, मार्गरहित।

अपथ्य० गु० जिसके खानेसे रोग अधिक होवे। अर्थात् जठरानल जिसे न पचा सके।

अपना० सर्व० निजका, स्वकीय।

अपनाहत० ना० स्त्री० घराना, कुटुम्ब, सम्बन्ध।

अपवस० गु० स्वाधीन, अपनेवश में।

अपभय० ना० पु० भूडडू, अपडर।

अपभाषा० ना० स्त्री० गँवारीबोली, वा यवनादिकों की बोली, फारसीयादि।

अपभ्रंश० ना० पु० अपशब्द, अशुद्धशब्द।

अपमान० ना० पु० अनादर, इज्जत घटाना।

अपमानी० गु० जो अपमान के योग्य है।

अपमृत्यु० ना० स्त्री० अकस्मात, रोगहान, मरना, अकालमृत्यु।

अपर० ना० पु० तगर भाग, गु० दूसरा, अन्य, विरुद्ध।

अपरम्पार० गु० जिसका पार नहीं है, अनन्त।

अपरा० ना० स्त्री० जूही।

अपराजय० ना० पु० पराभव, हारना, हारि।

अपराजित० गु० जो जीता न जावे ना० पु०, श्रीसदाशिवजी, श्रीविष्णुनारायण।

अपराजिता० ना० स्त्री देवीविशेष, पुष्पविशेष, जिसको विष्णुकान्ता वा कौवा गोडी कहते हैं।

अपराध० ना० पु० दोष, पाप, घात, अधर्म।

अपराधी० गु० पापी, दोषी, अधर्मी।

अपराह्ण० ना० पु० तीसरापहर।

अपरिचित० गु० जातिवाचकशब्द, जिससे परिचय न हो, जिसमे पहिचान न हो।

अपरिमित० गु० जो नापा नहीं गया, बहुत।

अपर्णा० ना० स्त्री० पार्वती।

अपलक्षण० ना० पु० असगुन, बुरे चिह्न।

अपलोक० ना० पु० अपयश, बदनामी।

अपवर्ग० ना० पु० मुक्ति, मोक्ष, निजात।

अपवाद० ना० पु० निन्दा, अपयश, उलहना, बुरीबातें यानको कहना, अनियमशब्द।

अपवादी० गु० अधर्मी, जो अपवाद करे।

अपवित्र० गु० अशुद्ध, मुतइरा, नापाक।

अपवित्रता० ना० स्त्री० अशुद्धता, छूत, नापाकी।

अपशकुन० ना० पु० बुरासगुन।

अपशब्द ना पु० शब्द जो अशुद्ध है।

अपश्य० गु० जो देखा न जावे।

अपसव्य० गु० दाहिना भाग अथवा वा दाहिना हाथ या बाधा वा जलदान में अँगौछ, दाहिने कांधेपर रखना, विरुद्ध।

अपस्मार० ना० पु० रोगविशेष, जिसको मिरगी कहते हैं।

अप्सरा० ना० स्त्री० स्वर्गेश्या, परी।

अपहरण० ना० पु० हरलेना, लूटलेना, लूटना।

अपहर्त्ता०
अपहरता०
अपहारी० } गु० चोर, डाकू, लुटेरा।

अपह्नव० ना० पु० छिपाव, मकर।

अपक्ष० गु० पक्षरहित।

अपाक० गु० जो पका नहीं है।

अपांग० ना० पु० नेत्रका अन्त भाग, कटाक्ष।

अपादान० ना० पु० पांचवाकारक।

अपान० ना० पु० गुदा, नीचेकी वायु, पादप्राणविशेष, सर्व, अपना।

अपाप० गु० पापरहित।

अपामार्ग० ना० पु० ऊंगा।

अपार० गु० जिसका पारावार नहीं है, अनन्त।

अपावन० गु० अशुद्ध, नापाक।

अपूत० गु० निर्वंश, कुपुत्र, कपूत।

अपूर्ण० गु० जो अभी पूरा नहीं भया है।

अपूर्णभूत० गु० अभी व्यतीत नहीं भया।

अपूरब०
अपूर्व० } गु० जो पहिले कभी नहीं देखा अनूठा।

अपि० अव्य० निश्चय, ठीक, भी।

अपिधान० ना० पु० पोशाक, वस्त्र।

अपीड० ना० पु० शिखा, भूषण।

अपेय० गु० जो पीने के योग्य नहीं है।
अपेल० गु० अचल, जो टल न सके।
अपेक्षक० गु० अपेक्षा करनेहारा, निमन्त्रतरनेहारा, अनुरोधक।
अपेक्षा० ना० स्त्री० अनुराग, आशा, भरोसा, रिश्तह, निस्बत।
अपेक्षित० गु० चाहित, अपक्षा कियागया।
अपौरुष० गु० जिसके सामर्थ्य नहीं है, नाताकत।
अप्रकाश० ना० पु० अंधेरा, जो प्रगट नहीं है।
अप्रतिहत० गु० जिसकी रोक नहीं है।
अप्रतीत० गु० प्रतीतिरहित अर्थात् जो विश्वास के योग्य नहीं है।
अप्रत्यय० ना० पु० अविश्वास।
अप्रत्यक्ष० गु० जो देखा न जाय।
अप्रधान० गु० मुख्यनहीं है, जो सरदार नहीं है।
अप्रबन्ध० ना० पु० बेबन्दोबस्त, प्रबन्धहीन।
अप्रमाण० गु० बहुत, प्रमाणरहित, असत्य।
अप्रसन्न० गु० जो प्रसन्न नहीं है, मदला, नाखुश।
अप्रसिद्ध० गु० जिसको कोई नहीं जानता है, गुप्त।
अप्राकृत० गु० जो प्राकृत नहीं है।
अप्राप्तयौवन० ना० पु० लड़का, नाबालिग।
अप्रिय० गु० अहित, जो प्रिय नहीं है।
अफरना० अ० क्रि० अधिकभोजन से पेट फूलना, अधिक धनवान् होना।
अफराना० स० क्रि० अधिक भोजन कराना।
अफल० गु० निष्फल, व्यर्थ, बेफायदह।
अब० अव्य० इससमय, इस्तानी, ना० पु० पानी।
अबतक०
अबतलक० } अव्य० अभीतक, इससमयतक।
अब्भरण० ना० पु० पानीभरना।
अबल० गु० निर्बल, पौरुषरहित।
अबला० ना० स्त्री० नारी, स्त्री० गु० बलहीना।
अबस० गु० निर्बल, वशरहित।
अबार० ना० स्त्री० विलम्ब, देर, कुसमय।
अबुध० गु० मूर्ख, मूढ़, अहमक, दंग।
अबूझ० गु० नासमझ, नादान।
अबूझा० गु० बिना समझा, अनजाना।
अबूझित० गु० जो बूझा नहीं गया।
अबेर० ना० स्त्री० अबार।
अबै० अव्य० अभी० गु० अनिश्चित।
अब्ज० ना० पु० कमल, अर्ब, चन्द्रमा, देववैद्य, शंख, हिज्जलवृक्ष।
अब्द० ना० पु० वर्ष, साल, सम्वत्।
अब्धि० ना० स्त्री० समुद्र, सीपी, समुद्र।
अभक्त० गु० जो भक्त नहीं, भक्तिहीन, जो हिस्सह नहीं हुआ है।
अभंग० गु० जिसका नाश न हो।
अभय० गु० निर्भय, निडर।
अभया० ना० स्त्री० हर्र।
अभरण० ना० पु० गहना, आभूषण, जेवर।
अभरम० गु० पतिहीन, निडर।
अभाग०
अभाग्य० } ना० पु० दुर्गति, विपत्ति।
अभागा० ना० पु०
अभागी० ना० स्त्री० } गु० भाग्यहीन, निपट।
अभाय० ना० पु० अनहोना।
अभार० गु० हलका।
अभाव० ना० पु० अविद्यमान, नाश, मृत्यु, अनहोना।
अभास० ना० पु० छाया, प्रतिबिम्ब।
अभि० अव्य० सब दिशिमें, यह जिस शब्दके प्रथममें संयुक्त होवाई उसका अर्थ यथा, आगे, अनेक इत्यादि होताहै।
अभिगम्य० अ० क्रि० आपुजाएगा।
अभिचार० ना० पु० मन्त्र जिससे वधकिया जाता है।
अभिजित्० ना० पु० मुहूर्त्त विशेष, इक्कीसवाँ नक्षत्र।

अभिधान० ना० पु० नाम, कोश।
अभिनव० गु० नया, नूतन, नवीन।
अभिनन्दन० ना० पु० सराहै, सम्मति, सलाह।
अभिप्राय० ना० पु० मतलब, सारार्थ, अर्थ, आशय, कारण।
अभिभूत० गु० पराजित, बलहीन।
अभिमत० गु० वाञ्छित, इच्छानुसार, सम्मत।
अभिमान० ना० पु० अहंकार, घमण्ड, गरूर।
अभिमानी० } गु० अहंकारी, मगरूर।
अभिमान्य० }
अभिमुख० गु० सन्मुख, सामने, वर्त्तमान।
अभियुक्त० गु० संयुक्त, मिलित।
अभिराम० गु० सुन्दर, सुखद, रम्य।
अभिरामी० गु० रमनेवाला।
अभिलाप० } ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथ, तमन्ना।
अभिलाषा० }
अभिवन्दन० ना० पु० नमस्कार करना।
अभिवाद० ना० पु० दुर्वचन, बुराचार और बुरा व्यवहार।
अभिवादन० ना० पु० चरण स्पर्शपूर्वक नमस्कार।
अभिषिक्त० गु० जिसका अभिषेक भयाहो।
अभिषेक० ना० पु० जल छिड़कना, शान्ति स्नान, पदकी प्राप्ति के लिये पहिली क्रिया जिसा राज्यतिलक।
अभिसार० ना० पु० नायक, रति।
अभिसारिका० ना० स्त्री० नायिका, वेश्या।
अभिसारिणी० ना० स्त्री० नायिका।
अभिज्ञ० गु० प्रवीण, बहुदर्शी, गुणग्राहक।
अभी० अव्य० इसीसमय।
अभीत० गु० निडर, अभय।
अभीप्सित० गु० वियवाञ्छित, मनभावित।
अभीशु० ना० पु० जीव, प्राण।
अभीष्ट० गु० प्रियवाञ्छित, मनभावित।
अभूत० गु० जो उत्पन्न नहीं भया, अपात।
अभूतरिपु० गु० शत्रुरहित।

अभेद० } गु० ऐक्य, परस्पर सम्बन्ध, प्रकट।
अभेद्य० }
अभ्यन्तर० ना० पु० भीतर, भीतरका।
अभ्यास० ना० पु० साधन, चिन्तन, कर्त्तव्य।
अभ्र० ना० पु० आकाश, मेघ।
अभ्रक० ना० पु० अबरक, धातुविशेष।
अमंगल० गु० मङ्गलरहित, अशोभा।
अमत्त० गु० सीधा, सावधान, होशमें।
अमर० गु० जो न मरे, ना० पु० देवता, निरंकार, अविनाशी।
अमरपुर० ना० पु० ब्रह्मदेशका नगरविशेष, इन्द्र, विष्णु शिव, लोक, स्वर्ग।
अमररस० ना० स्त्री० आमका रस।
अमरावती० ना० स्त्री० इन्द्रपुरी।
अमरीहत० ना० पु० कचनार वृक्ष।
अमर्याद० } ना० स्त्री० अनीति, अवज्ञा, असम्मान।
अमर्यादा० }
अमल० गु० निर्मल, उजला, मादकवस्तु, राज्य।
अमलतास० ना० पु० बन्दर, लाठी, औषध विशेष।
अमात्य० ना० पु० मन्त्री, दीवान।
अमान० गु० सीधेस्वभाव, मानरहित।
अमाना० अ० क्रि० समाना, भरना, खपना।
अमान्य० गु० जो मानने के योग्य नहीं है।
अमानुष० गु० मनुष्यतारहित, विना मनुष्य।
अमावस० } ना० स्त्री० कृष्णपक्षकी समाप्ति की तिथि बदी १५।
अमावस्या० }
अमावास्या० }
अमर्ष० } गु० ईर्षारहित, अक्रोध।
अमार्ष० }
अमिट० गु० जो मिट न जावे या मेटा न जासके।
अमित० गु० जो नापा नहीं गया, बहुत।
अमिय० ना० पु० अमृत, आबदार।
अमियमूरि० ना० स्त्री० सञ्जीवन बूटी।
अमिल० गु० सदा, जो न मिले।

अमी० ना० पु० अमृत।
अमुक० सर्व० कोई, वह, अमुका, फलाना।
अमूल० गु० जिसकी जड़ नहीं है।
अमृत० ना० पु० पीयूष, सुधा, जिव, पानी, देवता, गु० जो न मरे।
अमृतफल० ना० पु० आमला।
अमृतवल्लरी० ना० स्त्री० गुरच, गिलोय।
अमृता० ना० स्त्री० हर्र, गुरच, कचरी, नाम चन्द्रमा की एक कला का।
अमृताङ्ग० ना० पु० प्रदयुम्न, यथा (अमृताङ्गी दशाङ्गुली) इति निघण्टु।
अमृतांशु० ना० पु० देवता, इन्द्र।
अमेध्य० ना० पु० विष्ठा, मल।
अमेय० गु० अप्रमाण, यथा श्रीभगवान् जिसका प्रमाण कोई न जानसके।
अमोघ० गु० जो व्यर्थ नहीं, सफल, अचूक, फलदाता, ना० स्त्री० नाभिरोग।
अमोघा० ना० स्त्री० हर्र।
अमोल० गु० मोलरहित, अपूर्ववस्तु, बेदाम।
अम्बत० गु० खट्टा।
अम्बक० ना० पु० नेत्र, बाल, यथा त्र्यम्बक, अर्थात् शिव।
अम्बर० ना० पु० अादर, आकाश, वस्त्र।
अम्बरमणि० ना० पु० सूर्य।
अम्बरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
अम्बरीष० ना० पु० राजाविशेष।
अम्बष्टकी० ना० स्त्री० माई औषध।
अम्बा० ना० स्त्री० माता, महतारी।
अम्बारी० ना० स्त्री० हाथी परका आसन विशेष।
अम्बिका० ना० स्त्री० माई औषध, माता, देवी, पार्वती।
अम्बिष्ठा० ना० स्त्री० रायलता।
अम्बु० ना० पु० जल, पानी।
अम्बुज० ना० पु० कमल।
अम्बुद० ना० पु० मेघ।
अम्बुधि० ना० पु० समुद्र।
अम्बुपति० ना० पु० वरुणदेव।
अम्बुवल्लरी० ना० स्त्री० जलपिप्पल।
अम्बुवह० ना० पु० मेघ।
अम्बुवासिनी० ना० स्त्री० कदली, कुम्भी।
अम्बुभृत्० ना० पु० मेघ।
अम्भ्य० ना० पु० कमल।
अम्भफल० ना० पु० आमलिच, यथा (अम्भ फल चाप) इति निघण्टु।
अम्भोज० } ना० पु० कमल।
अम्भोरुह० }
अम्मा० ना० स्त्री० माता, मा, चची, यह शब्द यवनी भाषा है
अम्र० ना० पु० अम्र, आम।
अम्ल० गु० खट्टा, खटाई।
अम्लान० गु० निर्मल।
अम्लिका० ना० स्त्री० इमिलीवृक्ष।
अम्लिवेतस० ना० पु० अमलवेत।
अय० ना० पु० लोहा, शुभावह यथा (अयमय सकल उरगमय अजहुँ कुफल अनूप)।
अयं० अव्य० सर्व, यह।
अयन० ना० पु० वर्षका आधा अर्थात् उत्तरायण वा दक्षिणायन, मार्ग, घर।
अयथार्थ० ना० पु० अन्याय, असत्य।
अयमामा० ना० पु० यह जन्म।
अयान० } गु० भोला, नादान, दूर।
अयाना० }
अयुक्त० गु० अनुचित, अनमिल।
अयुत० ना० पु० दश हजार १००००।
अयोग्य० गु० अनुचित, असमर्थ, बेजा।
अयोध्या० ना० स्त्री० अवध की राजधानी जहां श्रीरामावतार भया था।
अयोनि० ना० पु० ब्रह्मा।
अरगट० ना० पु० कुआं, कूप।
अरगा० गु० अलग, भिन्न।

अरगाना स० क्रि० अलगाना, अ० क्रि० अलग होना, ना० पु० पुरगाना।
अरगानी० ना० स्त्री० धुर, घुघरी।
अरगो० अ० क्रि० हठ किया।
अरझना० अ० क्रि० उलझना, फसना।
अरणना० ना० पु० देशविशेष।
अरणी० ना० स्त्री० अग्निप्रचारक काष्ठविशेष।
अरण्ड० ना० पु० रेंडी का वृक्ष अरण्डवृक्ष।
अरण्य० ना० पु० जंगल, वन।
अरना० ना० पु० जंगली भैंसा।
अरनी० ना० स्त्री० जंगली भैंस।
अरबराना० अ० क्रि० मधुराना हड़बड़ाना।
अररानाः अ० क्रि० गिरनेके गिरनेका शब्द।
अरराय० गु० बिगाड़ बिनासहारा।
अरलू० ना० पु० स्योनाक वृक्ष।
अरविन्द० ना० प० कमल।
अराजक० गु० राजा बिना देश।
अरि० ना० पु० वैरी शत्रु, दुश्मन।
अरिल० ना० पु० छन्दविशेष।
अरिष्ट० ना० पु० अशुभ, मृत्युदायक, रोग चिह्न।
अरिष्टक० ना० पु० रीठा।
अरिहा० ना० पु० शत्रुनाशक, शत्रुघ्न।
अरी० अव्य० स्त्रीका सम्बोधन।
अरु० अ० प० और, तु ना० पु० कुम्हड़ा।
अरुचि० ना० स्त्री० मनस्, अनिच्छा।
अरुण० ना० पु० लालरङ्ग, सूर्य, लालअरण्ड, सूर्य का सारथी।
अरुणचूड० } ना० पु० मुर्गा।
अरुणशिखा० }
अरुण ० ना० स्त्री० जपापुष्प गुड़हलका फूल।
अरुणाई० ना० स्त्री० लाली।
अरुणारे० गु० लाल।
अरुणोदय० ना० पु० सूर्योदय के पहिले दो मुहूर्त, सूर्योदय।
अरूष्क० ना० पु० भिलावा।
अरे० अव्य० नीच नर का सम्बोधन, गु० अड़ा, हटा।
अरेच० ना० पु० घसारा।
अरोग० गु० भलाचंगा, रोगरहित।
अरोग्यशिवी० ना० स्त्री० टरपाली।
अर्क० ना० पु० सूर्य, मदारवृक्ष, स्फटिक।
अर्कपुष्पी० ना० स्त्री० अधाहोली।
अर्कविवाह० ना० स्त्री० रवी ब्याई।
अर्गजा० ना० प० सुगन्धि द्रव्यविशेष।
अर्गल० गु० जो अर्गल से रोका गया।
अर्घ० ना० पु० पूजा करने की एक रीति, थाड़ वस्तु को मिलायके ईश्वर हेतु अर्पण, सूर्य की पूजा करके जल देना मात्र।
अर्घा० ना० पु० पात्रविशेष जिसमें देवता को स्नान कराते हैं वा जल देते हैं।
अर्चक० गु० पुजारी।
अर्चन० } स० क्रि० आराधना, पूजाकरना।
अर्चना० }
अर्चा० ना० स्त्री० पूजा।
अर्चि० ना० पु० च च, देम यानि चमक।
अर्चित० गु० पूजित।
अर्जन० ना० पु० उपार्जन, कमाई, प्राप्ति।
अर्जना० स० क्रि० कमाना, उपार्जन करना।
अर्जुन० ना० पु० वृक्षविशेष, इन्द्र, सुवर्ण, सहस्रबाहु, पाण्डुका तीसरा पुत्र, ककुभवृक्ष धवल।
अर्णव० ना० पु० सागर, समुद्र।
अर्थ० ना० पु० अभिप्राय, निमित्त, तात्पर्य, धन, दौलत मा , मतलब।
अर्थशास्त्र० ना० पु० धन के उपार्जन करने का शास्त्र, नीतिशास्त्र।
अर्थसाधन० ना० पु० रीति, अर्थ का ठीक करना।
अर्थात्० अव्य० जाना अर्थ, यह, यानी।

अर्थानुरोध० ना० पु० नाम के अनुरूप होना, अर्थ के अनुरूप।

अर्थान्तर० ना० पु० दूसराअर्थ।

अर्थी० गु० धनी, वादी, अभिलाषी, प्रयोजनयुक्त, ना० पु० याचक, अर्थी, ना० स्त्री० खाट, ताबूत, टिकठी।

अर्दावा० ना० पु० मांसाविशेष।

अर्द्ध० गु० आधा।

अर्द्धचन्द्र० ना० पु० आधाचन्द्रमा।

अर्द्धचन्द्रिका० गु० बालानिसोत, आधीचांदनी।

अर्द्धजल० गु० आधापानी, मरणकाल।

अर्द्धरात्रि० ना० स्त्री० आधीरात।

अर्द्धाङ्ग० ना० पु० आधाशरीर, शीताङ्ग।

अर्द्धांगी० गु० शीतांगी ना० स्त्री० पत्नी।

अर्पण० ना० पु० दान, देवता को भेटदेना।

अर्पना० स० क्रि० अर्पणकरना।

अर्ब० ना० पु० सौ किरोड़ १०००००००००।

अर्बुद० ना० पु० दशकिरोड़, पर्वतविशेष।

अर्भक० ना० पु० पुत्र, शिशुगर्भ।

अर्यमा० ना० पु० सूर्य।

अर्वाक्० गु० नीचे, अव्य० पहिली।

अर्हापर्श० ना० पु० शुद्ध करने के लिये जल छिड़कना, छूना।

अर्हन्त० ना० पु० जैनी।

अल० अ य० अनर्थ, समर्थ, पूर्ण, ना० पु० आभरण, आलस, बहुतायत।

अलक० ना० स्त्री० बालों की लट, घूंघर।

अलक्त० ना० पु० कुसुम्भ, महावरयुत।

अलकावली० ना० स्त्री० एकओर के बालों की लट।

अलख० गु० अगोचर, अनदेखा, जोन पहिचाना जावे, यथा ईश्वर।

अलग० गु० भिन्न, जुदा, लगाव नहीं।

अलगनी० ना० स्त्री० रस्सी जिसपर कपड़े धरते हैं।

अलगर्द० ना० पु० पनिहासांप, यथा-अलगर्दो जलव्याल इत्यमरः।

अलगा० गु० भिन्न, निर्बंध।

अलगाना० स० क्रि० जुदाकरना, अ० क्रि० जुदा होना, अलग होना।

अलंकृत० गु० अलङ्कारयुत, आभूषित।

अलङ्कार० ना० पु० भूषण, गहना और शास्त्रविशेष।

अलंग० ना० स्त्री० ओर, पार।

अलभ्य० गु० जो मिलने के योग्य न हो।

अलम्० अव्य० बहुत, ढेर।

अलम्बुषा० ना० स्त्री० रेखा जो मुख से निकलती है, लज्जालुलतिका यथा-(मुखपथि अलम्बुषा विभाति, ऊर्ध्वलिङ्ग, के देश विरचित)।

अलवाई० गु० थोड़ेदिनकी ब्यानी, रामचन्द्रिका या यथा-(ज्यों सुनबो सुरभी अलवाई)।

अलसेया० गु० बहुतायत, अतिशय आलस्य अभिमान।

अलस० ना० पु० आलस्य।

अलसाना० अ० क्रि० अंघाना।

अलसी० ना० स्त्री० तीसी, अतसी।

अलसग० ना० पु० दुग्धपेड़।

अलात० ना० स्त्री० बनैठी।

अलान० ना० स्त्री० हाथीबांधने की जंजीर जिसको सांकड़ कहते हैं।

अलाप० ना० पु० आलाप, उच्चारण।

अलापना० स० क्रि० आलापना।

अलार० ना० पु० धूनी, पुरा।

अलि० ना० पु० बिच्छू, भ्रमर, वृश्चिक लग्न, स्त्री० सखी।

अलिक० ना० पु० माथा, मूड़।

अलिन० ना० पु० भ्रमर, ना० स्त्री० प्रिया।

अलिनी० ना० स्त्री० भ्रमरी, भौंरी।

अली० ना० स्त्री० सखी, दूती, सखी।

अलीक० ना० पु० मूड़, मिथ्या

अलीन० गु० अयोग्य, अनुचित, बेमेल।
अलीढ़० गु० अखाद्य, मूढ़।
अलेख० गु० अयत्न, अगणित, बहुत।
अलैयाबलैया० ना० स्त्री० निछावर और दीवाली में पूला जलायके नचाना।
अलोन० } गु० लोनरहित, फीका।
अलोना० }
अलोप० गु० छुपा, बिगाड़ा, नष्ट, अदृश्य।
अलोपना० स० क्रि० छुपाना, गुमकरना।
अलोल० गु० अचल, थिर, ना० स्त्री० रतलबूद।
अलौकिक० गु० जो लौकिक नहीं है अर्थात् परलोक या लोकातीत।
अल्प० गु० थोड़ा, किंचन्।
अल्पतर० गु० बहुतथोड़ा।
अल्पज्ञ० गु० लड़ाका, नासमझ।
अल्पनिद्रा० गु० स्त्री० थोड़ासोना।
अल्पप्रज्ञ० गु० कमसमझ, थोड़ाजाननहार।
अल्लुक० ना० पु० आलूतरकारी।
अव० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह लगता होता है उसका अर्थ कभी मिलना, कभी फैलाव या होना है कभी नास्ति, कभी अनादर।
अवकाश० ना० पु० औसर, शून्यता।
अवकेशी० गु० बांझ।
अवगति० ना० स्त्री० ज्ञान, वा नरीदशा।
अवगाह० ना० पु० अथाह।
अवगाहन० ना० पु० स्नान, तैरना, थाह लगाना।
अवगाहि० अ० क्रि० थाहलगाके।
अवगीत० गु० निंदित, दुष्ट, ना० पु० निन्दा, दोष।
अवगुण० ना० पु० खोट, दोष।
अवघट० गु० कुघाट।
अवचट० गु० एकाएकि, एकाएक।
अवडेरि० अ० क्रि० बहकाय, धोखा देकर, रामायणे यथा (पच करहिं गिरि सती निवाही पुनि अवडेरि मरायनि ताही)।
अवतंस० ना० पु० फतोरा, शिरोमणि।
अवतरना० अ० क्रि० उतरना, प्रकट होना।
अवतार० ना० पु० ईश्वर का मनुष्यादि के रूपसे पृथ्वीतलपर प्रकाशित होना, जन्म।
अवतारिक० } गु० परमात्मा, ईश्वरअवतार
अवतारी० } लेनेहारा, यथा राम, कृष्ण।
अवदात० गु० उज्वल, उत्तम, सुन्दर।
अवदीच० ना० पु० गुजराती ब्राह्मणोंकी जाति।
अवध० } ना० स्त्री० अवधन, मर्याद, सीमा,
अवधि० } समय या श्रीअयोध्याजी या उस के आस पासका देश प्रसिद्ध।
अवधान० गु० चौकस, सावधान, ना० पु० चौकसाई, वचन।
अवध्य० गु० जो बधकरने के योग्य नहीं है।
अवधूत० गु० पु० यागी, शिवपूजक।
अवधूतनी० ना० स्त्री० योगिन।
अवनी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन।
अवनीश० ना० पु० राजा, बादशाह।
अवन्तिका० } ना० स्त्री० उज्जैननगरी,
अवन्ती० } नदीविशेष।
अवम० ना० पु० तिथिक्षय, गु० नीच।
अवयव० ना० पु० अंग वा शरीर का भाग।
अवराधक० गु० सेवक, ध्यानी।
अवराधित० गु० सेवित, ध्यान कियेगय।
अवराधना० स० क्रि० सेवाकरना।
अवरुद्ध० बँधाहुआ।
अवरेखना० स० क्रि० लिखना, लकीरकरना।
अवरेखी० स० क्रि० लिखी, लकीर की।
अवरोध० ना० पु० बंध, रोक, अन्त।
अवलम्ब० ना० पु० आश्रय, आसरा, सहारा।
अवि० ना० पु० पर्वत, मेष, सूर्य, रक्षक।
अविलम्बित० } गु० आश्रित, लटकन,
अविलम्बी० } पक्षी।
अविरलि० ना० स्त्री० पांति, पंक्ति, कतार।

अवलोकन॰ ना॰ पु॰ दर्शन, दृष्टि, देखाव।
अवलोकना॰ स॰ क्रि॰ देखना, ताकना।
अवश॰ गु॰ पराधीन, असमर्थ।
अवशिष्ट॰ गु॰ शेष, उच्छिष्ट, बाकी।
अवशेष॰ ना॰ पु॰ शेषवचा, बाकीरहा।
अवशेषित॰ गु॰ जो बाकी रहगया।
अवश्य॰ अव्य॰ चाहिये, निश्चय, कर्त्तव्य, जरूर।
अवसर॰ ना॰ पु॰ सावकाश, घात, समय, मौका, इत्तिफाक।
अवसान॰ ना॰ पु॰ अन्त, समाप्ति, आखिर।
अवसेरि॰ ना॰ स्त्री॰ देर, राहदेखना, बाट हेरना।
अवस्था॰ ना॰ स्त्री॰ दशा, उमर, हालत और दुर्दशा।
अवज्ञा॰ ना॰ स्त्री॰ अपमान, निन्दा, अनादर तुच्छकरना, प्रबन्ध उतारना।
अवाई॰ ना॰ स्त्री॰ नगिचाई, आमद।
अवाक॰ ना॰ पु॰ गूंगा, मूक, मौनी।
अवाच्य॰ गु॰ अकथ्य, मौनी, निरर्थ, पुराण।
अवाधी॰ गु॰ स्व॰ दुलमुनी, बाधारहित।
अवाध्य॰ गु॰ विना बाध, अतर्क्य।
अवाध्योपकर्म॰ गु॰ बाधारहितकर्म, अतर्क कर्म।
अवारी॰ ना॰ स्त्री॰ दुआर, पंक्ति, रामायणे यथा (चारु बजार विचित्र अवारी, मणिमय विधि जनु स्वकर सँवारी) अम्बारी।
अवास॰ ना॰ पु॰ घर, मकान।
अविकल॰ } गु॰ निश्चित, व्याकुल।
अविकलित॰ }
अविकार॰ ना॰ पु॰ विकाररहित।
अविकारी॰ गु॰ जो मानविकाररहित।
अविगत॰ गु॰ व्यापक।
अविगति॰ ना॰ स्त्री॰ ज्ञान।
अविचल॰ गु॰ अचल, थिर, कायम।
अविचार॰ ना॰ पु॰ भूल, अन्याय, नादानी।

अविचारी॰ गु॰ विचाररहित, अन्यायी।
अविदूरि॰ गु॰ पास, निकट।
अविद्या॰ ना॰ स्त्री॰ भूल, अज्ञानता, माया विद्याहीन।
अविनय॰ गु॰ ढिठाई, चञ्चलाहट, गुस्ताखी।
अविनाश॰ ना॰ पु॰ नाशरहित, कुशल।
अविनाशी॰ गु॰ कुशल, जिसका नाश न होवे।
अविनीति॰ गु॰ चञ्चल, ढीठ।
अविन्दु॰ गु॰ विन्दुरहित।
अविरल॰ गु॰ निरन्तर, अभेद।
अविरोध॰ ना॰ पु॰ चैन, सुख आनन्द, गु॰ विरोधरहित।
अविरोधनी॰ ना॰ स्त्री॰ } गु॰ सुखी, वैल-
अविरोधी॰ ना॰ पु॰ } ट्ट।
अविलम्ब॰ ना॰ पु॰ शीघ्रता, जल्दी, यत्न।
अविलम्बित॰ गु॰ शीघ्र, जल्द।
अविवादी॰ गु॰ जो विवाद न करे, शान्त।
अविवेक॰ ना॰ पु॰ अविचार, अज्ञानता, गु॰ जो विवेकरहित हो।
अविवेकी॰ गु॰ विचाररहित, अज्ञानी।
अविशेष॰ समान जो विशेष नहीं।
अविश्वास॰ गु॰ ना॰ पु॰ अप्रतीत, बेएतबार।
अविश्वासी॰ गु॰ जिसकी प्रतीति नहीं वा जो किसीकी प्रतीति न माने।
अविक्षीण॰ गु॰ निरन्तर, अखण्ड, पूरा।
अवेगी॰ ना॰ पु॰ विधाताभी गु॰ जो वेगता रहितहो।
अवेर॰ ना॰ स्त्री॰ ढील, विलम्ब, कुसमय।
अवेला॰ ना॰ स्त्री॰ कुसमय, बेवक्त।
अव्यक्त॰ गु॰ जो व्यक्त नहीं अर्थात् मालूम नहीं।
अव्यय॰ ना॰ पु॰ स्वर्ग, अमर, गु॰ जो व्यय न हो, जिस शब्दको कारक न हो, कृपण।
अव्यवस्था॰ ना॰ स्त्री॰ जो शास्त्र से सम्मत नहीं है।
अव्यवस्थित॰ गु॰ जो ठौर नहीं है।

अव्यवहारित० गु० त्यागित, छोड़ाहुआ।
अव्यवहित० गु० मिला, व्यवधानरहित।
अव्याप्ति० ना० स्त्री० लक्ष्य में लक्षण का जो नहीं जाना, अक्ष्य में अवृत्तितारहित।
अव्याहत० गु० विनरोक, माय़ाजित, रामायणे यथा –(अव्याहत मनि शम्भु प्रसादा)।
अशकुन० ना० पु० अपशकुन, बुराशकुन।
अशकुनी० गु० अपशकुनी, बुरे शकुनवाला।
अशक्त० गु० निर्बल, लाचार, असमर्थ।
अशक्ति० गु० निर्बल, असमर्थता, शक्तिरहित देव।
अशाक्य० गु० असाध्य, शक्यतारहित।
अशंक० } अशंका० } गु० निर्भय, निडर, बेशंक।
अशन० ना० पु० भोजन, खाना।
अशनि० ना० पु० वज्र।
अशरण० गु० रक्षारहित, पनाहनहीं।
अशास्त्र० गु० जो शास्त्र से बाहर है।
अशास्त्रीय० गु० जो शास्त्र में उक्त नहीं है।
अशिव० गु० मङ्गलरहित, अशुभ।
अशिष्ट० गु० जिसका व्यवहार निंदित है।
अशुक० गु० शरीर, अदृष्ट।
अशुचि० गु० अपवित्र, अशुद्ध, नापाक।
अशुद्ध० गु० अपवित्र, जो ठीक नहीं है, गलती।
अशुद्धता० ना० स्त्री० अपवित्रता, चूक, भूल।
अशुभ० गु० अमङ्गल, जो अच्छा न हो, ना० पु० पाप, दोष।
अशेष० गु० सम्पूर्ण, सारा, समस्त, सब।
अशोक० ना० पु० वृक्षविशेष, सुख, चैन।
अशोभा० गु० अनगढ़, कुरूप, ना० स्त्री० सुन्दरतारहित, शोभाहीन।
अशौच० गु० नापाक, अशुद्ध।
अश्म० ना० पु० पत्थर।
अश्मरी० ना० स्त्री० पथरी या मूत्रकृच्छ्ररोग।
अश्मभेद० ना० पु० पाषाणभेद।

अश्रद्धा० ना० स्त्री० घिन, चिढ़, अविश्वास।
अश्रु० ना० पु० आंसू।
अश्रुपात० ना० पु० आंसुओं का गिरना।
अश्लेषा० ना० स्त्री० श्लेषा, नक्षत्र।
अश्व० ना० पु० घोड़ा।
अश्वगन्धा० ना० स्त्री० असगन्ध औषधि।
अश्वतर० ना० पु० खच्चर।
अश्वत्थ० ना० पु० पीपलवृक्ष।
अश्वपति० ना० पु० वह राजा जिसके पास घोड़े या घुड़चढ़े हों।
अश्वमेध० ना० पु० यज्ञविशेष वह यज्ञ राजाधिराज करसक्ता है, जो जगत् जीतहो।
अश्वयुज० ना० पु० कुआरमास।
अश्वरक्षक० ना० पु० साईस।
अश्ववार० ना० पु० असवार, सवार, घुड़च
अश्वशाला० ना० स्त्री० तबेला, घोड़साल।
अश्ववक्त्रा० ना० स्त्री० कनेरवृक्ष।
अश्व.० ना० स्त्री० असगन्ध।
अश्वारूढ़० ना० पु० असवार, सवार, घुड़चढ़ा।
अश्विनी० ना० स्त्री० प्रथमनक्षत्र।
अषण्ण० गु० जिसका क्षय नहीं, अनिष्ट।
अषयवट० ना० पु० वह बरगद जो ० में है।
अषाढ़० ना० पु० चतुर्थमास, असाढ़, असा
अष्ट० ना० पु० आठ ८।
अष्टकुलसर्प० ना० पु० आठकुली सर्प अर्थात् अनन्त १ वासुकि २ तक्षक ३ कर्कोट राक्ष ५ कुलिक ६ पद्मक ७ महापद्मक ८।
अष्टकोण० ना० पु० आठकोने।
अष्टचत्वारिंशत्० गु० अठतालीस ४८।
अष्टदिशाग्रह० ना० पु० आठो दिशाके अर्थात् सूर्य, शुक्र, मङ्गल, राहु, शनि चन्द्रमा, बुध, गुरु।
अष्टधातु० ना० पु० आठधातु अर्थात् सोना

रूपा, तांबा, पीतल, रांगा, कांसा, सीसा, लोहा।
अष्टपञ्चाशत्० गु० अट्ठावन ५८।
अष्टप्रहर० गु० आठपहर, दिनराति।
अष्टभैरव० ना० पु० आठ-भैरव अर्थात् असिताग रुरु, चण्ड, उन्मत्त, क्रोध, कपाली, भीषण, काल।
अष्टम० गु० आठवां।
अष्टमांश० ना० पु० आठवाभाग है।
अष्टमी० ना० स्त्री० आठवींतिथि, आठैं।
अष्टवसु० ना० पु० आठवसु अर्थात् आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास।
अष्टविंशकुलक्षण० ना० पु० अट्ठाईसकुलक्षण अर्थात् काम १ क्रोध २ क्रियाहत ३ दुबाद ४ लोभ ५ लम्पटता ६ अप जा ७ अविद्या ८ अशोभा ९ आलस्य १० अतिलिप्सा ११ दुष्टता १२ मदपा १३ कृपणता १४ दरिद्रता १५ राग १६ मलिनता १७ कुपात्रदान १८ अप्रकृता १९ भोगता २० अयाह्या २१ अहङ्कार २२ पारदता २३ कुदारा २४ दुर्भागता २५ अपनीति २६ मोह २७ अन्यवादकता २८।
अष्टविंशति० गु० अट्ठाईस २८।
अष्टसिद्धि० ना० स्त्री० आठसिद्धि अर्थात् अणिमा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ वशीकरण ७ ईशता ८।
अष्टाङ्गप्रणाम० } ना० पु० स्त्री० आठ अङ्ग से
अष्टाङ्गदण्डवत्० } प्रणाम अर्थात् उर, शिर, दृष्टि, मन, वचन, पद, कर, जानु से नमस्कार करना।
अष्टाङ्गयोग० ना० पु० योगके आठअङ्ग अर्थात् यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८।
अष्टादश० ना० पु० अठारह १८।
अष्टादशपुराण० ना० पु० अठारह पुराण अर्थात् भागवत १ भविष्य २ मार्कण्डेय ३ मत्स्य ४ ब्रह्माण्ड ५ ब्रह्म ६ ब्रह्मवैवर्त ७ विष्णु ८ वायु ९ वामन १० वराह ११ अग्नि १२ स्कन्द १३ पद्म १४ कूर्म १५ गरुड़ १६ लिंग १७ नारद १८।
अष्टादशस्मृति० ना० स्त्री० अठारह स्मृति। अर्थात् मनु १ अत्रि २ विष्णु ३ याज्ञवल्क्य ४ हारीत ५ उशना ६ अंगिरा ७ आपस्तम्ब ८ संवर्त ९ यम १० कात्यायन ११ बृहस्पति १२ पाराशर १३ व्यास १४ शङ्खलिखित १५ गौतम १६ वशिष्ठ १७ दक्ष १८।
अष्टापद० ना० पु० कचनार, सुवर्ण, पशु।
अष्टाशीति० गु० अट्ठासी ८८।
असंख्य० } गु० अगणित, बहुसार, बहुत।
असंख्यात० }
असंशय० ना० पु० निश्चय, निस्सन्देह।
असकृति० ना० स्त्री० आलस्य।
असकृती० गु० आलसी।
असगन्ध० ना० पु० औषधविशेष।
असगत० गु० मिथ्या, अनुचित, व्यर्थ।
असज्जन० गु० कुपात्र, नीच, दुष्ट।
असत्० गु० असाधु, अधम।
असन० ना० पु० आहार, खाना, वृक्षविशेष।
असनि० ना० पु० वज्र।
असन्तान० गु० पुत्रहीन, निर्वंश।
असन्तुष्ट० गु० अप्रसन्न, धैर्यरहित।
असन्तोष० गु० अधीरजता।
असभ्य० गु० जो सभाके योग्य नहीं, दुष्ट, गँवार।
असभ्यता० ना० स्त्री० दुष्टता, कुचलना, गँवारपन, बदचाल।
असम० गु० जो बराबर न हो, भिन्न।
असमञ्जस० ना० पु० दुविधा, सन्देह, भिन्न, लगाव।
असमय० गु० कुसमय, विनाकाल।
असमर्थ० गु० जो समर्थ न हो, निर्बल।
असमशर० ना० पु० कामदेव।
असम्पूर्ण० गु० जो पूरा न हो।
असम्बन्ध० गु० सम्बन्धहीन, व्यर्थ।
असम्भव० गु० अनहोना, जो न होसके।

असम्मत० गु० विरुद्ध, बसलाह ।
असह० } गु० जा सही न जाए, कठिन ।
असह्य० }
असमाधि० गु० जा दूर न होसके रामायण यथा (दर्शाप्याधि असाधे वाढ़ि)।
असाधु०गु० अधर्मी, दुष्मनि, कमीना।
असाध्य० गु० जा कामसिद्धि न हासके, रागी जो जीवे नहीं ।
असामर्थ० } ना० पु० कुछ सामर्थ्य नहीं,लाचार
असामर्थ्य० } गु० कुछ सामर्थ्य नहीं रखना ।
असार गु० छूछा पाणरहित, यथा काठ, विनापौरुष, निर्बल ।
असि० ना० स्त्री० तलवार, अव्य० है, एस ।
असिद्ध० गु० अनपका, अनपरा,जा सिद्ध नहीं ।
असिधेनुक० ना० स्त्री० छुरी ।
असिनि० ना० स्त्री० तलवार
असिपत्री० ना० स्त्री० सतुह ।
असिपुत्री० ना० स्त्री० छुरी कटारी ।
असिदन्त० ना० पु० मगर, मच्छ ।
असीम० गु० सीमारहित अर्थात् अपार ।
असीरा० गु० शिररहित ।
असीस० ना० पु आशीर्वाद दुआ।
असु० ना० पु० पञ्चप्राण जीव, राव ।
असुग० ना० पु० किरण, वाण ।
असुर० ना० पु० दैत्य, राक्षस ।
असुरविनाशक० ना० पु० वासुदेव ।
असुरारि० ना० पु० देवता, श्रीरामकृष्णादि ।
असुहर० गु० भयहर, मारनवाला ।
असूक्ष्म० गु० अन्यत्र निरुप ।
असूया० ना० स्त्री० कलङ्क दाग ।
असौ० अव्य० यह वस, इस वर्ष ।
असोक० ना० पु० अशोक ।
असोची० गु० चतुर, जा चिन्ता वा विचार सके न हैसके, जा पछिताना न याग्य नहीं ।
असोच्य० गु० निर्मोह अमादी ।
असोस० ना० स्त्री० सूखी नदी ।
असौ० अव्य० यह ।
असोध० न ० स्त्री० कुवास, बदबू ।
अस्त० ना० पु० छिपाव, छुपाना ।
अस्तव्यस्त० गु० भिन्न भिन्न, उलट पुलट नमेल ।
अस्ताचल० ना० पु० वह पर्वत जिसे ज सूर्यनारायण अस्त होते हैं ।
अस्तित्व० ना० पु० मौजूदगी ।
अस्थि० ना० पु० हाड़, हड्डी ।
अस्थिमात्र० गु० हड्डीभर ।
अस्थिर० गु० चपल, चलायमान ।
अस्थिरता० ना० स्त्री० चपलता स्थिरताहीन
अस्थिरशृङ्खला० } ना० स्त्री० हरसिंगार ।
अस्थिसंहार० }
अस्थूल० ना० पु सूक्ष्म, न्यून ।
अस्थूलभद्रा० ना० स्त्री० मदीकरण ।
अस्मसार० ना० पु० लोहा ।
अस्वच्छन्द० } गु० अधीन, पराधीन जो अप
अस्वतन्त्र० } बस म नहीं है ।
अस्वत्थामा० ना० पु० द्रोणाचार्य का पुत्र ।
अस्वीकार० ना० पु० नामंजूर, अङ्गीकार नहीं ।
अस्सी० गु० संख्या ८० ।
अस्त्र० ना० पु० जिससे फेंककर मारते हैं यथा बाण आदि ।
अह० ना० पु० दिन, अहवार, काम ।
अहं० सर्व० मैं, हम, निजबोधक ।
अहङ्कार० ना० पु० गर्व, मद घमण्ड ।
अहङ्कारी० } गु० अभिमानी दम्भी, मगरूर ।
अहङ्कृत० }
अहमित० गु० अहङ्कारयुक्त, मगरूर ।
अहरेणुका० ना० स्त्री० रणुका, बालू ।
अहर्निश० ना० पु० रातदिन ।
अहलाद० ना० पु० प्रेम, अनुराग ।
अहल्या० ना० स्त्री० गौतमऋषि की स्त्री ।
अहह० अव्य० आर्त शब्द यथा हाय हाय ।
अहार० ना० पु० आहार, कलुऊ, लुई ।

हारना० स० क्रि० मढ़ियाना, चिपकाना, कोई लगाना, जमाना।
हारी० गु० लोगाला, आगिर्दई लकड़ी, कोई वस्तु जो मढ़ियाई गई ना० स्त्री० केवल पर्ण।
हि० ना० पु० रार, शरीर, देशविशेष।
हिंसक० गु० भाला, साधु जो हिंसा न करे।
हित० ना० पु० शत्रु, बैर, शत्रुता।
हिफेन० ना० स्त्री० अफ़यून, अफीम।
अहिमाली० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
अहिर० ना० पु० मारवर्द, जातिविशेष।
अहिवल्लरी० ना० स्त्री० नागवेलि, पानआदि।
अहिवान० ना० पु० सहायकारी।
अहिवेलि० ना० स्त्री० नागवलि, पानआदि।
अहीर० ना० पु० ग्वाला, आमीर।
अहीरणी० ना० स्त्री० ग्वालिन।
अहीला० गु० साहसी, निडर, बहादुर।
अहीश० ना० पु० शेषादि, सर्पादि।
अहे० अव्य० सम्बोधन, हे।
अहेर० ना० स्त्री० आखेट, शिकार।
अहेरिया० } गु० आखेटी, शिकारी।
अहेरी० }
अहो० अव्य० सम्बोधन वा आश्चर्य वा हर्ष में बोला जाता है, यथा अहोभाग्य।
अहोरात्र० ना० पु० दिनराति।
अहो० अव्य० यही।
अक्ष० ना० पु० नेत्र, बहेरावृक्ष, पासा।
अक्षत० ना० पु० चावल, जो पूजाआदिमें गु० घावरहित, फोड़ारहित।
अक्षर० ना० पु० ककारादि वर्ण, गु० सूक्ष्म, अविनाशी।
अक्षविद्या० ना० स्त्री० रमल।
अक्षविद्वान्० गु० रम्माल, पासावाला।
अक्षांस० ना० पु० रेखा, भूमिके उत्तर वा दक्षिण के डताव नब्बे २ अंश।
अक्षि० ना० पु० नेत्र, आंखि।
अक्षिसंकेत० ना० पु० आंखिसे इशारह करना कटाक्ष, हावभाव।
अक्षुब्ध० गु० स्थिर, शान्त।
अक्षौहिणी० ना० स्त्री० सैन्य प्रमाण, इसका कथन कई प्रकार का है। यथा (“गजनाससह रथिनी नाभे शा रथा, रथे रथे शतवाजना अश्वेऽश्वे शतनरा) अथवा दश वाहनी अथवा १०९३५० पैदल, ६५६१० सवार, २१८७० रथ, २१८७० हाथी।
अत्र० अव्य० यहां, इस जगह।
अत्रि० ना० पु० चन्द्रमा के पिता, मुनिविशेष।
अत्रिज० ना० पु० चन्द्रमा, दुर्वासा, दत्तात्रेय
अज्ञ० गु० मूर्ख, अजान, नादान।
अज्ञता० ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी।
अज्ञात० गु० अजान, नामालूम।
अज्ञाता० गु० मूर्ख, भोला, नादान।
अज्ञान० गु० मूर्ख, मूर्खता।
अज्ञानता० ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी।

(आ)

आ० अव्य० जिस० शब्द के प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ न्यून वा उलटा होजाता है और कभी क्रिया० के अवधि का ज्ञापक होताहै।
आं० अव्य० स्वीकारका सूचक शब्द।
आंक० ना० पु० अङ्क, चिह्न, मदार।
आंकना० स० क्रि० लखना, अंकाना।
आंख० ना० स्त्री० चक्षु, नेत्र।
आंग० ना० पु० अंग।
आंगन० } ना० पु० अंगना, सहन।
आंगना० }
आंच० स्त्री० अग्निकी ताप।
आंचर० } ना० पु० अचला।
आंचल० }
आंसू० ना० पु० अश्रु।
आंट० ना० स्त्री० गांठि, विरुद्धता, ताक।
आंटना० अ० क्रि० समाना, पहुँचना।

आंटी० ना० स्त्री० फेंटी, अंटिया।
आंड० ना० पु० वृषण, अण्ड।
आंत० ना० स्त्री० अंतड़ी।
आंधी० ना० स्त्री० झक्कड़, झंझावायु।
आंब० ना० पु० आम्र।
आम्र० } ना० पु० पेट में रोग विशेष, आम,
आंय० } आमाशय।
आंवला० ना० पु० वृक्ष वा फल विशेष।
आंसू० ना० पु० आंखों का पानी।
आक० ना० पु० अर्क, मदार।
आकर० ना० स्त्री० खानि अर्थात् धातु वा रत्नादि के उत्पन्न होनेका स्थान।
आकरीय० गु० जो खान से उत्पन्न हो।
आकर्षण० ना० पु० खैंच के लाना।
आकर्षित० गु० जो खैंचा गया।
आकांक्षा० ना० स्त्री० वांछा, इच्छा, चाह।
आकांक्षित० गु० वांछित, चाहिता।
आकांक्षी० गु० इच्छाकरनेवाला चाहक।
आकार० ना० पु० स्वरूप डौल, ढंग, सूरति।
आकारान्त० गु० जिसके अन्त में आकारहोवे।
आकाश० ना० पु० गगन, आसमान, अम्बर।
आकाशपवन० ना० पु० तमाशेबाज, आकाश बल वा आकाशका पवन।
आकाशवाणी० ना० स्त्री० वाणी जो आकाश से होती है।
आकाशविलासी० ना० पु० देवता, नक्षत्र, गु० जो आकाशमें विलासकरे यथा पक्षी।
आकाशबेलि० ना० स्त्री० अमरबेल।
आकाशी० गु० आसमानी, स्वर्गीय।
आकुल० गु० व्याकुल, कातर।
आकृति० ना० स्त्री० रूप, आकार, सूरति, डौल।
आकृष्ट० गु० खींचाहुआ।

आक्रम० ना० पु० बलका प्रकाश करके किसी स्थान में दूसरे से आगे होना, चढ़ाव।
आखण्डल० ना० पु० इन्द्र।
आखण्डलपुर० ना० पु० इन्द्रलोक, स्वर्ग।
आखत० ना० पु० अक्षत।
आखा० ना० पु० बोरा, गठिया, चलनी।
आखात० ना० पु० खलाव।
आखु० } ना० पु० मूसा, चूहा।
आखुक० }
आखेट० ना० पु० अहेर, शिकार, मृगया।
आखेटकी० गु० शिकारी, अहेरी।
आख्या० ना० स्त्री० संज्ञा, नाम।
आग० ना० पु० अग्नि।
आगत० गु० उपस्थित।
आगम० ना० पु० वेद व शिवोक्तशास्त्र विशेष भविष्यत् वा ह अवाई।
आगमन० ना० पु० अवाई, आव।
आगमवक्ता० ना० पु० शिव, गु० जो आगमकी बात कहे वा आगम का पाठकहार।
आगमविद्या० ना० स्त्री० आगम कहने की विद्या।
आगमज्ञानी० ना० पु० तान्त्रिक जो आगमके जानता हार।
आगर० ना० पु० अधिक बाहर।
आगरा० ना० पु० नगर विशेष।
आगरी० ना० स्त्री० कोठरी।
आगलान्त० अव्य० पललग।
आगा० ना० पु० सामना अगवाड़ा।
आगामी० गु० आनेहारा, अवैया।
आगार० ना० पु० घर, मकान।
आगिल० गु० पहिला।
आगू० } अव्य० सामने, अधिक, अग्र।
आगे० }
आगोट० ना० स्त्री० चौकसी, कैद।
आग्रह० ना० पु० उपकार, निहालत, ग्रहण।
आघात० ना० पु० चोट मारपीट।

आघार० ना० पु० घृत, घी, छिड़काव।

आघ्राण० ना० पु० मोल, मर्य्याद, यथा विहारीलाल सतसईनिनाया। दोहा (जन्म जलधि पानिप विमल भाजग आगु अपार, रहै गुणा है गरपर भला न मुक्ताहार)।

आंगिरस० ना० पु० बृहस्पति।

आचमन० ना० पु० आचमन अर्थात् भोजन वा पूजा करने के पहिले भाजनमल हथली में लेकर पानी का कुल्लीकरना।

आचरण० ना० पु० करतूत, चाल, व्यवहार, अभ्यास, शास्त्रोक्त क्रिया।

आचार० ना० पु० विचारकरना, पालगड,परहेज सगर्इ, व्यवहार।

आचारी० गु० जो मनुष्य शास्त्रोक्त क्रिया पर समत पर।

आचार्य्य० ना० पु० वेदका उपदेशक, गुरु।

आच्छादन० ना० पु० वस्त्र, ढकना, ओढ़नी, पर्दा।

आच्छादित० गु० वस्त्रयुत, ढकाभया।

आढ्य० गु० अच्छा बहुतसा।

आज० अव्य० अद्य, इमरोज।

आजनेय० ना० पु० घोड़ा यथा (आजनेया कुली न स्युरनीता साधुनाहिन उत्तमर)।

आजा० ना० पु० दादा, पिताका पिता।

आज्ञाना० अ० क्रि० अचानकआना, पड़ना।

आजि० ना० पु० युद्ध, समर, लड़ाई।

आजीव० ना० पु०
आजीविका० स्त्री० } जीविकानिर्वाह, भरोसा।

आटना० स० क्रि० भरना।

आटा० ना० पु० चोकर, चूना, पिसान।

आठर्फो० ना० पु० दिन जिनमें स तल नि लता है।

आड़० ना० स्त्री० आड़, पर्दा।

आड़ना० स० क्रि० आगेकरना, आड़देना।

आडम्बर० ना० पु० उद्योग, अभिमान, हर्ष।

आड़ा० गु० तिरछा, टेढ़ा।

आड़ी० ना० पु० रखन, ना० स्त्री० गान में स्वर विशेष टेढ़ा तिरछा, बेड़ी।

आडेआना० अ० क्रि० रक्षा करना, बचावहोना।

आढ्य० गु० धनाढ्य, धनी, स्वामी।

आतङ्क० ना० पु० भयभान, दुःख देने का डर, मनका दहशत।

आततायी० गु० उद्धत, हत्यारा, परद्रोहरत।

आतप० ना० पु० घाम, धूप।

आतपत्र० ना० पु० छत्र।

आतपी० गु० धूप से विरुद्ध।

आता० ना० पु० सीताफल।

आतिथेय० } गु० अतिथिका सत्कार करना,
आतिथ्य० } अतिथिपालना, महमानी।

आतुर० गु० दुःखी रोगी, व्याकुल, घबरा।

आतृ० ना० स्त्री० गुरुपत्नि।

आत्मघात० ना० पु० अपनीहत्या, निजघात।

आत्मघाती० गु० निज जीवहन्ता, अधर्मी, जाव का दुःखदाता।

आत्मज० ना० पु० पुत्र, लड़का।

आत्मनामी० गु० जो आपसे प्रसिद्ध है।

आत्मपालक० गु० आपस्वार्थी, अपकाजी।

आत्मभू० ना० पु० ब्रह्मा।

आत्ममात्र० ना० पु० समस्तजीव, जीवभर।

आत्मरक्षा० ना० स्त्री० निजजीवकी रक्षा, इन्द्रायणी आयाध।

आत्मरक्षक० गु० निजजीवपालक।

आत्मश्लाघा० ना० स्त्री० निज मुख से अपनी बड़ाई।

आत्महा० गु० निजजीवघाती, धर्महीन।

आत्मा० ना० पु० स्त्री० जीव, मन, बुद्धि, देह, स्वभाव, धी, अन्तर, अहङ्कार, आप।

आत्मिक० गु० मनका, अपना।

आत्मिकता० ना० स्त्री० अपनाहट।

आत्मीय० गु० खातिर, अपना।

आदर० ना० पु० सत्कार, सन्मान, ममता करना।

आदरार्थ० गु० जिसमें आदर पाया जाता है।

आदर्श० } ना० पु० दर्पण, शीशा।
आदर्शन० }
आद्रक० ना० स्त्री० अदरक।
आदान० ना० पु० लेना।
आदि० गु० पहिला, जड़ वगैरह, शुरूअ।
आद्यन्त० गु० आरम्भ से समाप्ति पर्यन्त या आदि और अन्त, आद्यन्त।
आदिक० अव्य० इत्यादि और सब।
आदित० } ना० पु० सूर्य।
आदित्य० }
आदित्यवार० ना० पु० प्रथमदिन इतवार।
आदित्यहृदय० ना० पु० ग्रन्थ विशेष।
आदितेय० ना० पु० देवता, अदितिजात।
आदेश० ना० पु० आज्ञा, अनुमति, योगीलोगों का प्रणाम, व्याकरण में एक अक्षर को दूसरे अक्षर से बदलने को कहते हैं।
आदौ० अव्य० प्रथम, पहिले।
आद्य० गु० पहिला, प्रथमका।
आद्योपान्त० गु० पूरा, सब, समस्त।
आधुनिक० गु० इसकालका।
आधर्ष० ना० पु० भय, डर, कठिन।
आधा० गु० अर्द्ध, है।
आधान० ना० पु० गर्भ, गर्भका धारण।
आधार० ना० पु० प्रतिपालक, अधिकरण, सहारा, थालमें एक थमका नाम।
आधारी० गु० सहारा वालेवाला।
आधासीसी० ना० स्त्री० अर्द्धकपाली।
आधि० ना० स्त्री० मनकी पीड़ा, उदासी।
आधिक्य०, ना० पु० बढ़ती, अतिशयता।
आधिपत्य० ना० पु० ऐश्वर्य, स्वामित्व।
आधीन० [illegible], अधिकारी, तावेदार।
आधी [illegible]
आधे [illegible] आज्ञा
आन० [illegible] और, अन्य, न०, स्त्री० आज्ञा; मर्यादा सौगन्द।
आनक० ना० पु० दुन्दुभी, ढका।
आनदेय० न०, पु० और देना।
आनन० ना० पु० मुख, अन्य, और नहीं।
आनना० स० क्रि० लाना।
आनन्द० ना०पु० } हर्ष, सुख, खुशी।
आनन्दना० स्त्री० }
आनन्दित० गु० सुखी, हर्षित, निहाल।
आनन्दी० गु० सुखी, खुश।
आनयन० } क्रि० लाउगा।
आनिहौं० }
आनुकूल्य० ना० पु० सहायता।
आनुपूर्वी० ना० स्त्री० सूलावलि, क्रम।
आनुमानिक० गु० युक्ति, सिद्ध।
आन्ध्र० ना० पु० तैलङ्गदेश।
आप० ना० पु० पानी, सर्व० स्वकीय, निज।
आपकाज० ना० पु० अपनाकाम।
आपकाजी० गु० जो अपने काम में लगा रहता है।
आपण० ना० स्त्री० पण्य, हाट।
आपत्ति० ना० स्त्री० विपत्ति, प्राप्त दोष।
आपद० } ना० स्त्री० विपत्ति, अभाग, कठिनता।
आपदा० }
आपन्न० गु० प्राप्त, शरण्य, मरन, अभागा।
आपपरिचित्त० ना० पु० वक्ता देवता।
आपरूप० गु० आप, विशेष ईश्वर।
आपस० सर्व० अपने, भाईबन्द।
आपस्तम्ब० ना० स्त्री० स्मृति विशेष।
आपाधापन० ना० पु० युद्ध, समर।
आप्त० गु० जो विश्वास के योग्य है, प्राप्त, सच्चा
आप्लुत० गु० जो नहायाहुआ।
आफ्रियो० स० क्रि० दिया, बख्शा, यह शब्द अर्बी का है।
आफू० } ना० स्त्री० अफ्यून, अफीम।
आफूक० }

आबाल० ना० पु० लड़कापन, बालकता।
आभरण० ना० पु० भूषण, गहना, जेवर।
आभा० ना० स्त्री० भड़क, शोभा, चमक।
आभार० ना० पु० बोझ।
आभास० ना० पु० अभिप्राय, थोड़ासा, चेत्र विशेष।
आभीर० ना० पु० भीलादि, गोप, अहीर।
आभूषण० ना० पु० अलंकार, गहना।
आम० ना० पु० कच्चा, आम्रफल।
आमय० ना० पु० रोग।
आमर्ष० ना० पु० क्रोध, गुस्सा, दाह।
आमर्षण० ना० पु० क्रोध करना।
आमर्षि० अ० क्रि०क्रोधयुक्तहोकर।
आमलक० } ना० पु० आमलाफलविशेष।
आमला० }
आमान्न० ना० पु० कोरा अनाज, सीधा।
आमाशय० ना० स्त्री० पेटकी थैली जिसमें खाना रहता है वा इकट्ठा होकर पचता है।
आमिष० ना० पु० मांस, गोश्त।
आमिषाहार० ना० पु० मांसखाना।
आमिषाहारी० गु० मांसखानेवाला।
आमोद० ना० पु० आनन्द, हर्ष, सुगन्ध, सुवास।
आंम्घर० ना० स्त्री० वस्तु विशेष अर्थात् व हुस्या।
आम्र० ना० पु० आमका फल वा वृक्षविशेष।
आय० ना० पु० लाभ, धनागम।
आयत० गु० लंबा, दीर्घ, घर, चौड़ा, ना० पु० घाम, धूप।
आयतन० ना० पु० घर, मकान।
आयत्त० गु० नम्र, अधीन, साज।
आयसु० ना० पु० आज्ञा, हुकम।
आया० ना० स्त्री० लड़कों को खिलानेवाली।
आयास० ना० पु० परिश्रम, मिहनत।
आयु० ना० स्त्री० जीवन, काल, उमर।
आयुध० ना० पु० हथियार, अस्त्रास्त्र।
आयुर्दा० }
आयुर्दाय० }
आयुर्बल० } ना० स्त्री० जीवन, काल, उमर, हयात।
आयुष्० }
आयुस्० }
आरक्त० गु० लाल, सुर्ख।
आरग्वध० ना० स्त्री० खिरवाली।
आरज० ना० पु० मर्यादक, मानी, उत्तम जन, श्रेष्ठ, आर्य।
आरण्ड० ना० पु० रेंड, अरण्डी का वृक्ष।
आरति० ना० स्त्री० दुःख, अतिप्रेम, इश्क वा पूजा प्रसिद्ध।
आरती० ना० स्त्री० दीपक जलाय के देवता को दिखाना।
आरम्भ० ना० पु० प्रारम्भ, उपक्रम, उठाना, शुरूअ, लगा लगाना।
आरा० ना० पु० शस्त्र, आला, लकड़ी चीरने का अस्त्रविशेष।
आराति० } ना० पु० शत्रु, वैरी।
अराति० }
आराधक० गु० सेवक, भजन करनेहारा।
आराधन० ना० पु० पूजा, भजन, सेवा।
आराधना० स० क्रि० पूजा करना, अर्चना।
आराम० ना० पु० उपवन, बगीचह, चैन।
आरि० ना० स्त्री० झगड़ा, जिद, हठ, प्रमविलासे यथा (देखत रहो खिलोना चंदा, आरि न कीजिये बालगोविंदा)।
आरण्य० } ना० पु० जंगल, वन, पुस्तकविशेष।
अरण्य० }
आरिष्ट० } गु० कठिन, दुःखद, बुरा।
अरिष्ट० }
आरुक० ना० पु० आड़ूका फल वा वृक्ष।
आरुष्क० ना० पु० भिलावावृक्ष।
आरूढ़० ना० पु० सवार, गु० जो,चढ़ाहोवे।
आरे० ना० पु० आराका बहुवचन।
आरोग्य० ना० पु० क्षेम, कुशल, नीरोग।

आरोपित० गु० कल्पना कियागया, बनाया गया, सौंपागया।

आरोप० ना० पु० कल्पना, बनावट।

आरोह० ना० स्त्री० } ऊपर चढना, सीढ़ी,
आरोहण० ना० पु० } ज़ीना।

आर्त्त० }
आरत० } गु० पीडित, दुःखित, व्याकुल।

आर्द्र० गु० गीला, सीला।

आर्द्रा० ना० स्त्री० नक्षत्र।

आर्य्य० गु० उत्तमकुलोत्पन्न, कुलीन, उत्तम, श्रेष्ठ।

आर्य्यावर्त्त० ना० पु० वह पवित्रदेश जो पूर्व समुद्रतट से पश्चिम सिन्धुतट तक और हिमालय से विन्ध्याचल तक है।

आर्सी० ना० स्त्री० भूषणविशेष जो स्त्रियां अंगुठे में पहिनती हैं, दर्पण।

आल० ना० पु० वृक्ष या उसका फलविशेष, पीला, हरताल।

आलम्ब० ना० पु० सहारा, मदद।

आलम्बन० ना० पु० आश्रय, अवलम्ब।

आलय० ना० पु० घर, मकान।

आलवाल० ना० पु० थाला, थावला।

आलस० ना० पु० ढील, सुस्ती, शिथिलता।

आलसी० गु० ढीला, सुस्त, शिथिल।

आलस्य० ना० पु० आलस।

आला० ना० गु० थारा, ताक, ताख जिसमें चिराग आदि रखते हैं।

आलान० ना० पु० खूंटा जिसमें हाथी बाधा जाताहै, बेड़ी, जंजीर।

आलाप० ना० पु० बातचीत करना, स्वरमिलाप।

आलि० ना० स्त्री० सखी, पंक्ति।

आलिंगन० ना० पु० परस्पर गलेलगाना।

आलिंगित० गु० प्रसंगित, भेंटीहुई।

आली० ना० स्त्री० सखी।

आलु० }
आलू० } ना० पु० विलायती कन्दविशेष।

आलोक० ना० पु० ज्योति, दृष्टि, चासलोती।

आलोकन० ना० पु० दृष्टि देकर देखना।

आवक० ना० पु० बाजाविशेष।

आवरण० ना० पु० ढाल, आच्छादन, विस्तृप, भँवर, घेरा।

आवर्त्त० ना० पु० भँवर जो पानीमें होता है।

आवर्दा० ना० स्त्री० आयुर्दाय, उमर।

आवनो० अ० क्रि० आना।

आवभक्ति० }
आवभगत० } ना० स्त्री० मान, सम्मान, आदर।
आवभगति० }

आवलि० ना० स्त्री० पांति, पंक्ति।

आवश्यक० गु० निश्चय कर्तव्य, ज़रूरीकाम।

आवश्यकता० ना० स्त्री० ज़रूरत।

आवा० ना० पु० अवध देशकी राजधानी। कुम्हार जिसमें बर्तन पकाताहै, अ० क्रि० आया।

आवाई० ना० स्त्री० चर्चा, समाचार।

आवागमन० }
आवागवन० } ना० पु० आनाजाना।

आवाजाई० ना० स्त्री० फेरापड़ना, आना जाना।

आवाती० ना० स्त्री० अथाई।

आवाधा० ना० स्त्री० भूमिखण्ड।

आवास० ना० पु० घर।

आवाहन० ना० पु० सादर बुलाना, बुलाना।

आविर्भाव० ना० पु० प्रकटहोना।

आविर्भूत० गु० प्रकटवस्तु।

आविष्ट० गु० जो भूतादिक करके मस्त है।

आवृत० गु० घिराहुआ, वेष्टित।

आवृत्ति० ना० स्त्री० उद्धरणी, पढाहुआ, दुहराना, दफ़ा।

आसक्त० गु० मोहित, गरगर, लीन और अविरत।

आशक्ति० नाः पु० चाह, प्यार।
आशंका० नाः स्त्री० भय, डर, सन्देह, शक।
आशय० नाः पु० अभिप्राय, आश्रय, मतलब, मजमून।
आशर० नाः पु० निशाचर, दैत्य।
आशा० नाः स्त्री० आसरा, भरोसा।
आशावन्त० गु० आसरिका, उम्मेदवार।
आशावसन० गु० नगा, तृष्णा रहित।
आशावान्० गु० आशावन्त।
आशिष० नाः पु०, आशिषा० स्त्री०, आशीर्वाद० पु० — दुआ, भला मनाना, अच्छा चाहना।
आश्चर्य० गु० अद्भुत, नाः पु० अचम्भा, विस्मय।
आश्चर्यवन्त० गु० तअज्जुब म, अचम्भित।
आश्नक० नाः पु० रुधिर, लोहू, खून।
आश्रम० नाः पु० हिन्दू लोगों म चारि आश्रम अर्थात् ब्रह्मचारी १ गृहस्थ २ वानप्रस्थ ३ सन्यासी ४ और ऋषियोंर रहनेका स्थान, घर।
आश्रमी० गु० आश्रम धरनेवाला।
आश्रय० नाः पु० आसरा, समीपता, गु० अधीन, शरण, छल।
आश्रित० गु० आधीन, याने परवश।
आश्वास० नाः पु० भरोसा, समाप्ति, अध्याय।
आश्विन० नाः पु० कुवार सातवामास।
आषत० नाः पु० अक्षत चावलादि।
आषर० नाः पु० अक्षर वर्ण।
आषाढ़० नाः पु० आषाढ चौथामहीना।
आस० नाः स्त्री० आशा, भरोसा।
आशंसार्थ० गु० जिससे इच्छा का बोध होता है।
आसक्त० गु० आशक्त, फरेफ्तह।
आसक्ति० नाः स्त्री० आशक्ति, प्रीति प्रेम।
आसन० नाः पु० बिस्तर, सेज, योगासन, बैठने के लिये कुशा वा काठ वा ऊनकी वस्तु बैठक, जाघ के भीतरी ओर।
आसनगत० गु० बैठाहुआ।
आसनी० नाः स्त्री० ऊन वस्त्रादि बिछौना।
आसन्न० गु० निकट, पास।
आसन्नकोण० नाः पु० पास का कोना।
आसन्नभूत० नाः पु० निकटही व्यतीतभया।
आसपास० गु० लगभग।
आसमुद्र० नाः पु० समुद्रपर्यन्त।
आसय० नाः पु० आशय।
आसर० नाः पु० आशर, दैत्य।
आसव० नाः स्त्री० मदिरा विशेष, शराब।
आसा० नाः स्त्री० आशा।
आसाम० नाः पु० देशविशेष।
आसावरी० नाः स्त्री० रागिनी विशेष, कपोत विशेष, कपड़ा विशेष।
आसिष० नाः स्त्री० आशिष।
आसीन० गु० बैठाहुआ।
आसीविष० नाः पु० साँप।
आसीस० नाः स्त्री० आशीर्वाद।
आसु० गु० शीघ्र, शिताबी।
आसुग० गु० बाण, वायु, सूर्य्य।
आसुतोष० गु० शीघ्र प्रसन्न होनेवाला।
आसुर० नाः पु० असुर या कोई असुर।
आसुरी० नाः स्त्री० राक्षसीमाया, निशाचरी।
आस्कत० नाः स्त्री० आलस्य।
आस्कती० गु० आलसी।
आस्ति० नाः पु० वेदधर्मोंकाफल, साधुता, धर्मशक्ति, हस्ती।
आस्तिक० नाः पु० वेद के धर्मों के फलक, विश्वासी, साधु।
आस्था० नाः स्त्री० टब, सभा, परिश्रम।
आस्पद० नाः पु० स्थान, पद, खिताब।
आस्फोत० नाः पु० कचनारवृक्ष।
आस्रप० नाः पु० असुर, दैत्य।
आस्वाद० नाः पु० रसका अनुभव।
आह० नाः स्त्री० साहस, वीरता, धीरज।
आहट० नाः पु० पग, शब्द, आवाज।

आहा० अव्य० खेदका सूचक शब्द।
आहार० ना० पु० भोजन, खाना।
आहारी० गु० भोजन करनेवाला, भोजन के योग्य।
आहि० अव्य० है।
आहुत० } ना० स्त्री० देवताओं के लिये होमने
आहुति० } के लिये जो वस्तु घृतादि।
आहवनीय० ना० पु० अग्निविशेष।
आहुक० ना० पु० उग्रसेन राजाका पिता।
आहुतदान० ना० पु० ब्राह्मणको बुलाकर घर पर दानदेना इसको मध्यम दान कहते हैं।
आह्निक० ना० पु० प्रतिदिन धर्मका कार्य।
आह्निकगति० ना० स्त्री० एक दिनकी चाल, प्रतिएकग्रह का नियमचक्र।
आह्रा० ना० पु० जलार्णव।
आह्लाद० ना० पु० हर्ष, आनन्द।
आह्लादित० गु० हर्षित, आनन्दित।
आह्वान० ना० पु० आवाहन, पुकारना।
आक्षेप० ना० पु० दुर्वचन, निन्दा।
आक्षोदन० ना० पु० आखेट।
आत्रेय० ना० पु० अत्रिका पुत्र।
आत्रेयी० ना० स्त्री० नदी विशेष जो बंगालेमें है।
आज्ञा० ना० स्त्री० आदेश, हुक्म।
आज्ञाकार० } गु० जो आज्ञापर चले, सेवक,
आज्ञाकारी० } ताबेदार।
आज्ञाद० ना० पु० जो आज्ञा देवे, हाकिम।
आज्ञानुयायी० गु० आज्ञावत् वर्त्तनेहारा।
आज्ञानुसार० ना० पु० हुक्म के मुताबिक।
आज्ञानुवर्ति० गु० ताबेदार, सेवक।
आज्ञाभिलाषी० गु० आज्ञाचाहनेवाला।
आज्ञार्थ० गु० आज्ञा का बोध जिससे होता है।
आज्ञालंघन० ना० पु० उदूलहुक्मी, हुक्म न मानना।

(इ)

इक० गु० एक १।
इकटक० ना० पु० एक ताक से देखना।
इकट्ठा० }
इकट्ठी० } गु० जो एक जगह में जमाहोवे।
इकठौरा० }
इकठौरी० }
इकसार० गु० सरीखा, सदृश, समान।
इकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्तमें इकार है।
इका० गु० अकेला, अद्वितीय, एका।
इंगलण्ड० ना० पु० देशविदेश, जिसमें लण्डन नगर प्रसिद्ध है।
इंगलण्डीय० गु० जो इंगलण्डका है।
इंगितज्ञ० पु० इच्छा, समान, चलनेवाला।
इंगित० ना० पु० सैन, संकेत, आगमन, खोज।
इच्छा० ना० स्त्री० मनोरथ, चाह।
इच्छाचारी गु० मनोवत्गामी, बन्धरहित।
इच्छित० गु० इच्छा समाना, चाहा हुआ।
इच्छितफल० ना० पु० चाहाहुआ फल वा अर्थ।
इच्छानुसार० ना० पु० इच्छावत्, चाहना।
इछन० ना० पु० नेत्र, दृष्टि।
इडा० ना० स्त्री० धरती, देवी, बाई श्वास।
इत० } अव्य० यहां, इधर।
इतो० }
इतना० गु० यह शब्द परिमाण या अवधि का ज्ञापक है।
इतनी० ना० स्त्री० सैन्य, गु० इस प्रमाण।
इतर० गु० अन्य, रहित नीच।
इतरलोग० ना० पु० छोटीजाति, लोकान्तर।
इति० अव्य० समाप्तिका बोधक है, अधिक, इसप्रकार।
इत्याल० ना० पु० मिलान, सामाना, मुक़ाबिलह।
इत्यादि० ना० पु० आदिक, वगैरह।
इतिहास० ना० स्त्री० वृत्तान्त, प्राचीन कथा, पुराणादिकी वार्त्ता, तारीख़।

इतो० } गु० इतना।
इतौ० }
इदम्० सर्व० यह।
इदानीम्० अव्य० यहां,इसजगह।
इधर० अव्य० यहां, इसठौर।
इन्दारा० ना० स्त्री० बड़ापक्का कूआ।
इन्दिरा० ना० स्त्री० लक्ष्मी।
इन्दीवर० ना० पु० नील कमल, पौधा विशेष।
इन्दु० ना० पु० चन्द्रमा।
इन्दुर० ना० पु० उंदुर, चूहा।
इन्दौर० ना० पु० नगरविशेष।
इन्द्र० ना० पु० देवताओं का राजा, श्रेष्ठ।
इन्द्रगोप० ना० पु० वीरबहूटी।
इन्द्रजित्० ना० पु० मेघनाद, गु० जो इन्द्रको जीते।
इन्द्रपुरी० ना० स्त्री इन्द्रका नगर।
इन्द्रप्रस्थ० ना० पु० दिल्लीनगर।
इन्द्रवधू० } ना० स्त्री० वीरबहूटी कीड़ा,
इन्द्रवधूटी० } लाल रंगका वर्षा में होताहै, इन्द्र की पत्नी।
इन्द्रयव० ना० पु० कुरज का फल, इन्द्र जौ, औषधि विशेष।
इन्द्रवारु० ना० पु० }
इन्द्रवारुणी० स्त्री० } औषधिविशेष।
इन्द्रविपादिनी० }
इन्द्राणी० } ना० स्त्री० शची, इन्द्रकी पत्नी
इन्द्रायणी० }
इन्द्रायन० ना० पु० वृक्षविशेष या उसकाफल जो अतिसुन्दर और कड़वा होताहै।
इन्द्रासन० ना० पु० इन्द्रका सिंहासन।
इन्द्रिय० } ना० स्त्री० जिनसे रूप रसादिका
इन्द्रीय } ज्ञान होताहै वह दोप्रकार की दश हैं पांच कर्मेन्द्रिय अर्थात् हाथ, पांव, गुदा लिंग, मुख और पांच ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा।
इन्धन० ना० पु० जलानेकी लकड़ी आदि [illegible]

इभ० ना० पु० हाथी।
इभपालक० गु० महावत पीलवान।
इभ्य० ना० पु० स्वामी।
इमम्० सर्व० यह गु० ऐसा, इसप्रकार।
इमि० गु० इसप्रकार।
इला० ना० स्त्री० धरती, नारी, भवानी, देवी, बुद्धि, सरस्वती।
इलायची० ना० स्त्री० फलविशेष, एला।
इलावृत० ना० पु० पृथ्वी के नवखण्डों में से एक।
इल्ली० ना० पु० मसा।
इव० अव्य० तरह, प्रकार, जैसे।
इष्ट० गु० पूजित, प्यारा, वाञ्छित ना० पु० देवता, मनुष्य, चहीता, वस्तुचहीती।
इष्टदेव० ना० पु० पूजित देवता, जिस देवकी सेवाकरै या ध्यावै।
इष्टा० ना० स्त्री० प्रिय, प्यारा।
इष्टित० गु० विचारित, जो माना गया।
इष्वासन० ना० पु० धनुष, रमठा, कमान।
इषु० ना० पु० बाण, तीर, आश्विनमास, और गणित में ५।
इषुधी० ना० स्त्री० पु० धनुष, कमान, कदंग।
इषुधीपति० ना० पु० धनुर्द्धर धर्नुधारी।
इष्वी० ना० पु० लोहे का यन्त्र जिससे घोड़े को कीड़े समालता है।
इस्पात० ना० पु० फौलाद।
इह० सर्व० यह।
इहलोक० ना० पु० [illegible]
इक्षु० ना० [illegible]
इक्षुगन्धा० } [illegible]
इक्षुवल्लरी० }
इक्षुसार० [illegible]
इक्ष्वाकु० [illegible]
[ई]
[illegible]

ईंडुवा० ना० पु० शिरपर बोझ रखने का टेका जो कपड़ा या सन मूजआदिक होता है।
ईकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्तमें ईकार है।
ईख० ना० स्त्री० ऊख, उखारी, इक्षु।
ईठ० गु० इष्ट, प्रिय, मित्र, ना० पु० गमन, देखना।
ईठि० ना० स्त्री० दोस्ती, प्रीति, सखी।
ईढ़ि० ना० स्त्री० अपनेको अधिकजानना, हठ।
ईति० ना० स्त्री० बाधा, दुःख।
ईद० ना० स्त्री० मुसलमानों और यहूदियों में एक पर्व्वहोता है रमजान के पीछे, अरबी शब्द है।
ईदृश० गु० ऐसा।
ईर्षा० ना० स्त्री० हिसद, डेष, डाह, हसद।
ईश० ना०पु० ईश्वर, प्रभु, स्वामीविशेष, शिवजी, विष्णु, नारायण।
ईशता० ना० स्त्री० प्रभुता, महत्त्व, माया, सिद्धिविशेष।
ईश्वर० ना० पु० प्रभु स्वामीविशेष, परमात्मा, शिवजी, विष्णु, नारायण।
ईश्वरता० ना० स्त्री० } मायायोगमाया, ई-
ईश्वरत्व० ना० पु० } श्वरत।
ईश्वराराधन० ना० पु० परमेश्वरका भजन।
ईशान० ना० पु० सदाशिव, ईशानकोण।
ईशानकोण० ना० पु० पूर्व उत्तर का कोना।
ईषत्० } गु० थोड़ा, २-, स्वल्प।
ईषद्० }
ईस० ना० पु० ईश, मालिक।
ईह० } ना० स्त्री० चेष्टा, इच्छा, उत्पन्न।
ईहा० }
ईक्षण० ना० पु० चक्षु, आंखि, दृष्टि।

(उ)

उचाई० ना० स्त्री० } उचाटा, उद्याति, बलदी।
उचान० ना० पु० }
उचाव० ना० पु० }
उचाहट० स्त्री० }

उचाना० स० क्रि० ऊँचाकरना, उठाना।
उडेलना० स० क्रि० धक्कादेकर गिराना, ढालना।
उकठा० गु० सखावाप या वृक्ष।
उकत० ना० स्त्री० उक्ति, कहना।
उकताना० अ० क्रि० घबराना, थकना, ऊबना।
उकतारू० ना० पु० उकताऊ पक्षी।
उकतारना० स० क्रि० सँभालना, पकड़ना।
उकसना० अ० क्रि० उठना, ऊपरको चढ़ना, या बढ़ना।
उकसाना० } स० क्रि० उठाना, चढ़ाना।
उकासना० }
उक्त० गु० कथित, कहाहुआ।
उक्ति० ना० स्त्री० कथन, भाषा, चतुराई, कहना।
उखड़ाना० अ० क्रि० उजड़ना, निजस्थान से हटना।
उखड़हा० गु० उखड़ामया।
उखड़ना० } स० क्रि० उजाड़ना, निजस्थान से
उखाड़ना० } हिलाना।
उगना० अ० क्रि० उत्पन्नहोना, जमना, बढ़ना।
उगलना० स० क्रि० मुख में धाई वस्तु डाल कर फिर निकालना।
उगाल० ना० पु० जो चबाय के मुख में से फेंका।
उगाहना० स० क्रि० जमाकरना, तहसीलना।
उगाही० ना० स्त्री० ब्याजलेना या वह रुपया जो महाजन आठके नव या नव के दश दशके ग्यारह प्रतिमास एक २ रुपया भर लेता है।
उग्र० गु० क्रोधी, कठोर, भयङ्कर, तेज, ना० पु० शिवजी।

उग्रगन्धा० ना० स्त्री० अजवायन, वच और लहसुन० गु० जिसकी गन्ध कठिन है।
उग्रसेन० ना० पु० राजा कंस का पिता।
उघटना० स० क्रि० किसी पर उपकार करके कहना या बात मारना, ताना देना।
उघड़ना० अ० क्रि० नंगा होना, खुलना।
उघरे० गु० खुले, प्रगटे।
उघाड़ना० } स० क्रि० नंगाकरना, खोलना।
उघारना० }
उघारी० गु० नंगी, खुली।
उचकना० अ० क्रि० कूदके उठाना, उछलना।
उचकाना० स० क्रि० ऊपर को उठाना वा चढ़ाना।
उचक्का० गु० चोर, उठाईगीर।
उचटना० अ० क्रि० अलगर होना, बिछुड़ना, न लगना, उखड़ना, फिसलना।
उचरङ्ग० ना० पु० पतंगा।
उचरना० अ० क्रि० बात निकलना, उखड़ना।
उचाट० गु० उदासी, जी न लगना।
उचाटना० स० क्रि० उदासकरना, उखाड़ना।
उचारना० स० क्रि० उच्चारणकरना, निकलना।
उचित० गु० योग्य, ठीक, मुनासिब।
उचिलना० अ० क्रि० फटना, छुटिजाना।
उचेलना० स० क्रि० मिलीहुई वस्तु को अलग २ करना, उधेड़ना।
उच्च० गु० ऊंचा।
उच्चाटन० ना० पु० जी उखड़ना, जी का न लगना।
उच्चार० ना० पु० पुरीष, मल, पाखाना।
उच्चारण० ना० पु० शब्दकहना वा निकलना।
उच्चारना० स० क्रि० उचारना, बात कहना।
उच्चैःश्रवा० ना० पु० सूर्य का घोड़ा।
उच्छिन्न० गु० निर्मूल, उखड़ा, खराब।
उच्छलित० गु० उछलता भया।
उच्छिष्ट० ना० पु० जूठनि वा जूठा, भोजन अवशेष।
उच्छ्वास० ना० पु० श्वास, आशा।
उछंग० ना० स्त्री० गोद, कनिया।
उछरना० } अ० क्रि० कूदना, उठाना।
उछलना० }
उछालना० स० क्रि० कुदाना, ऊपर को फेंकना।
उछाह० ना० स्त्री० आनन्द, खुशी।
उजड़ना० अ० क्रि० नाश होना, मिटना, भगना, वीरान होना।
उजला० गु० उज्ज्वल, सफेद, निर्मल।
उजागर० गु० यशस्वी, चटकीला, सुन्दर।
उजाड़० गु० सूना, बनखण्ड, वीरान।
उजाड़ना० स० क्रि० सूनाकरना, नाशकरना, वीरान करना।
उजालना० स० क्रि० उजाला करना।
उजाला० ना० पु० ज्योति, तेज, प्रकाश।
उजाली० ना० स्त्री० चांदनी।
उजास० ना० पु० उजेला।
उज्जल० } गु० निर्मल, चोखा, चमकीला,
उज्ज्वल० } साफ़, सुंदर।
उझकति० गु० झांकति, ताकत।
उझकना० अ० क्रि० देखना, स० क्रि० निकालना।
उटंगन० ना० स्त्री० पौधा विशेष, और नदी जो ग्वालियर के पास है।
उठंगन० ना० पु० टेकन।
उठना० अ० क्रि० खड़ाहोना।
उठबैठ० ना० स्त्री० घबराहट, साधन विशेष।
उठवैया० ना० पु० उठानेवाला।
उठान० ना० पु० उत्थान, दिखाई।
उठाना० स० क्रि० खड़ाकरना, ऊपर लेजाना।
उड़ना० अ० क्रि० भागना।
उड़ान० ना० स्त्री० उड़ने की चाल।
उड़ाना० स० क्रि० उड़ादेना, भगादेना।
उड़ाऊ० ना० पु० लुटेरा, बहुत खर्च करवैया।
उडु० ना० पु० पक्षी, नक्षत्र, मेघ, मह।

उडुगण० ना० पु० तारागण।
उडुप० ना० पु० घरनई, बेड़ा।
उड़िया० ना० स्त्री० उड़ीसादेश की भाषा।
उड़ी० ना० स्त्री० नाव।
उड़ैसा० ना० पु० देशविशेष जहां श्रीजगन्नाथ पुरुषोत्तम विराजमान हैं।
उड्डान० ना० स्त्री० उड़ान, संस्कृत में नपुंसक।
उढ़ना० स० क्रि० ओढ़ना, ना० पु० ओढ़ने का वस्त्र।
उढ़ाना स० क्रि० ओढ़ाना, ढांपना।
उत० अव्य० उधर, उधर, जिस शब्द के प्रथम में यह युक्त हो उसका अर्थ अधिक लिया जाता है।
उतंग० } गु० ऊंचा, धामायणे यथा (ध्वनि
उत्तुंग० } उतंग जलनिधि चहुंपासा)।
उतरना० अ० क्रि० नीचे आना।
उतला० गु० उतावला।
उतान० गु० उलटा, ऊपर को पाव किये।
उतार० ना० पु० नीचे आना, नीचला।
उतारना० स० क्रि० नीचे लाना, दूर करना।
उतारा० ना० पु० ढालू, अपमान, सुडोती, पारजाना।
उतावल० ना० स्त्री० शीघ्रता, जल्दी।
उतावला० गु० वेगी, शीघ्र, फुर्तीला।
उतावली० ना० स्त्री० शीघ्रता, फुर्ती, गु० फुर्तीली।
उताहिल० गु० शीघ्र, जल्द।
उत्कट० गु० बरजस्त, उसी समय, तेजअधिक।
उत्कण्ठा० ना० स्त्री० अभिलाषा, चाहना।
उत्कर्ष० ना० स्त्री० बड़ाई।
उत्कल० ना० पु० उड़ेसा देश, उड़ेसा के वासी।
उत्क्रम० ना० पु० उपर चढ़ना।
उत्कृष्ट० गु० अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम।
उत्तमगन्धा० ना० स्त्री० मालती।
उत्तमांग० ना० पु० सिर, शीश।
उत्तमाशा० ना० स्त्री० अफ्रिका के दक्षिण की अन्तरीप, केपगुडहोप।
उत्तर० ना० पु० प्रश्न का फेरक जवाब दक्षिण के सम्मुख की दिशा, राजाविराट् का पुत्र।
उत्तरकेन्द्र० ना० पु० जिस को भास्कराचार्य शास्त्री ने निज प्रकृति में सुमेरु लिखा है, यह स्थान अत्यन्त शीत के कारण अगम्य है।
उत्तरकोशल० } ना० पु० अवधदेश।
उत्तरकोशला० }
उत्तरखण्ड० ना० पु० उत्तर का देश।
उत्तरा२ ना० स्त्री० राजाविराट् की कन्या जो अभिमन्यु को विवाही थी।
उत्तराधिकारी० ना० पु० मरने के पीछे जो धनाधिकारी।
उत्तराफाल्गुनी० ना० स्त्री० बारहवानक्षत्र।
उत्तराभाद्रपद० ना० पु० छब्बीसवां नक्षत्र।
उत्तरायण० ना० पु० माघादि छ मास।
उत्तरार्द्ध० गु० पिछला आधा।
उत्तराषाढ़० ना० स्त्री० इक्कीसवां नक्षत्र।
उत्तराहा० गु० जो उत्तर दिशा का है।
उत्तरी० गु० उत्तर का।
उत्तरीय० ना० स्त्री० ओढ़नी, रामचन्द्रिकाया यथा (पदपद्म की शुभ घूघरी, मणि नीलहाटक सा जरी, पुन उत्तरीय विचारिकैं, भुवडारि दी पग टारिकै) गु० उत्तर देश का पदार्थ वा मनुष्यादि।
उत्तरोत्तर० अव्य० आगे आगे।
उत्तानपत्र० ना० पु० दोना अरण्ड।
उत्तानपाद० ना० पु० राजा विशेष, ध्रुव का पिता।
उत्ताल० गु० शीघ्र, जल्दी, वेग।
उत्तीर्ण० गु० पार पहुंचा, निर्मुक्त।
उत्तू० ना० पु० चुन्नटें, चुनाई वस्त्रादि की।
उत्थान० ना० पु० उठान, उद्योग।

उत्थापन० ना० पु० उठाना, न थपना।
उत्थित० गु० उठा हुआ।
उत्पत्ति० ना० स्त्री० जन्म, पैदायश।
उत्पन्न० गु० जन्मा, प्रकटा।
उत्पल० ना० पु० कमल, कोईं।
उत्पाटन० ना० पु० जड़समेत उखाड़ना।
उत्पात० ना० पु० अशुभ का सूचक, उपद्रव।
उत्पादन० ना० पु० जन्मावना, पैदाकरना।
उत्प्रेक्षा० ना० स्त्री० ढील, सदृशता।
उत्सर्ग० ना० पु० देवतादि के लिये द्रव्य का त्याग, वितरण, किसी प्रकार की आज्ञा।
उत्सव० ना० पु० आनन्द, यज्ञ, अर्धोज्ज।
उत्साह० ना० पु० उद्योग, आनन्द।
उथपन० ना० पु० उखाड़ना, उठाना।
उथपना० स० क्रि० उठादेना, उखाड़ डालना।
उथपित० गु० उठाया गया।
उथलना० अ० क्रि० उलग्ना।
उथलपुथल० गु० उलट पुलट।
उथला० गु० छिछला, थोड़ा गहिरा।
उदक० ना० पु० जल, पानी।
उदघाटी० ना० स्त्री० उदयता, उदयाचलकी घाटी।
उदधि० ना० पु० समुद्र।
उदधिनन्द० ना० पु० चन्द्रमा।
उदनपाक्य० ना० पु० पियावासा, पाथा।
उदन्वान्० ना० पु० समुद्र, सागर।
उदमाते० गु० मत्त, मस्त, मतमूर।
उदय० ना० पु० प्रकटना, रोशन, ज्योति।
उदयगिरि० } ना० पु० पर्वत विशेष जहां
उदयाचल० } सूर्योदय होता है।
उदयास्त० ना० पु० सूर्योदय से सूर्यास्ततक, उदयाचलसे अस्ताचलतक।
उदर० ना० पु० पेट।
उदरनि० ना० पु० पेटका बहुवचन भाषा में।
उदरवृद्धि० ना० पु० जलधर रोग विशेष।
उदरे० गु० पेट।
उदात्त० ना० पु० ऊंचा स्वर।
उदान० ना० पु० पञ्च प्राणमेंसे एक।
उदार० गु० पु० दाता, सखी।
उदारता० ना० स्त्री० दातापन, दातव्यता।
उदास० ना० पु० एकान्त, गु० निराला, निर्मोह, दु:खसुखसमानजाता, मनमलिन।
उदासी० ना० पु० एकान्ती, ना० स्त्री० मलिनता, गु० मनमलिन, एक प्रकार के सन्तों का धर्म यथा नानकपथी, जो मनुष्य शत्रुमित्र रहित संसार में विचरै।
उदासीन० गु० जिसका कुल शील नहीं जाना अर्थात् पाहुन, समानवर्ती, गृहस्थाश्रमरहित।
उदाहरण० ना० पु० दृष्टान्त, मिसाल।
उदित० आविर्भूत, प्रकाशित, रोशन।
उदीची० ना० स्त्री० उत्तर दिशा।
उदीच्य० ना० पु० ऐरावती नदी के उत्तर और पश्चिम का देश।
उदुम्बर० ना० पु० गूलरवृक्ष, तांबाधातु।
उदूखल० ना० पु० गूगल।
उद्गार० ना० पु० डकार, वमन, छर्दि।
उद्गारग्राही० गु० हरी दूब लानि और वमन हारा।
उद्घाटन० ना० पु० कूप से पानी निकालने के लिये डाल रस्सी, चर्म्म घुर्नेदा।
उद्दाल० ना० पु० कचनार।
उद्दालक० ना० पु० एक मुनिका नाम है।
उद्दिष्टलोहित० ना० पु० लालचन्दन।
उद्दीत० गु० प्रज्वलित, अग्निप्रकाशित।
उद्देश० } ना० पु० अन्वेषण, प्रीतिकी कामना
उद्देश्य० } निमित्त, व्याकरण में जिसका समाचार कहाजावे।
उद्धत० गु० कठोर, अभिमानी, ना० पु० राजाका मल्ल।
उद्धार० ना० पु० अकम्प, त्राण, रक्षा, छुट्टी।

उद्धारण० ना० पु० छोड़ना, छुटना।
उद्धारना० स० क्रि० छुड़ाना, प्राण देना।
उद्भव० ना० पु० जन्म, पैदायश।
उद्भिज० } ना० पु० वृक्षतृणादि जो पृथ्वी पर
उद्भिद० } उगते हैं।
उद्यत० ना० पु० गु० परिश्रमी, तैयार।
उद्यम० ना० पु० उद्योग, उपाय रोजगार।
उद्यान० ना० पु० राजाका उपवन, खास निमित्त।
उद्योग० ना० पु० उद्यम, उत्थान।
उद्योत० ना० पु० प्रकाश, चमक।
उद्वाह० ना० पु० विवाह।
उद्विग्न० गु० अधीरज, व्याकुल।
उद्वेग० ना० पु० व्याकुलता, घबराहट, गड़बड़, दुःख।
उद्बोध० ना० पु० स्मरण।
उधर० अव्य० वहां।
उधार० ना० पु० करज।
उधारन० ना० पु० छुड़ाने हारा।
उधारना० स० क्रि० छुड़ाना, मुक्तिदेना।
उधेड़ना० स० क्रि० सुलझाना, खोलना।
उनचास० गु० चालीस और नौ ४९।
उनतालीस० गु० तीस और नौ। ३९
उनतीस० गु० बीस और नौ २९।
उनये० गु० घटा दखिवाने।
उनसठ० गु० पचास और नौ ५९।
उनासी० गु० सत्तर और नौ ७९।
उनींदे० गु० नींदभरे।
उनीस० गु० दश और नौ १९।
उन्दुर० ना० पु० चूहा, मूस।
उन्नत० गु० ऊंचा, बलन्द।
उन्नति० ना० स्त्री० उचाई, बढ़ती।
उन्मत्त० } गु० मतवाला, विक्षिप्त, सिड़ी और
उन्मद० } धतूरेरस में एक उन्मत्तनामी है।
उन्माद० ना० पु० चित्तभ्रम, सिड़पन।
उन्मादन० ना० पु० रोगविशेष जिसमें चित्त भ्रम होकर सिड़पन होजाता है।
उन्मुख० ना० पु० ऊर्ध्वमुख, ऊपर देखना।
उन्मेष० ना० पु० पलक, झपक।
उन्हार० ना० स्त्री० ढाल, गु० रूप, समान, सदृश।
उप० अव्य० समीप, यह जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी अधिकाई कभी समीपता कभी न्यूनता अधिक हो जाता है।
उपकण्ठ० ना० पु० किनारा, तट।
उपकरण० ना० पु० सामग्री, सामान।
उपकानन० ना० पु० कृत्रिमवन, बाग।
उपकार० ना० पु० कृपा, सहायता, अहसान।
उपकारी० गु० कृपावन्त, सहायक, सुमित्र, लाभ युत, फायदे मन्द।
उपकालिका० } ना० स्त्री० कलौंजी।
उपकुञ्चिका० }
उपक्रम० ना० पु० प्रारम्भ, धोखा।
उपगति० गु० मिलनेकू के लिये बांधोदिया।
उपग्रह० ना० पु० बंधुवा, कृपा, सहायता, अप्रधानभी तारा।
उपचार० ना० पु० उपाय, सेवा, वैद्यकाई, व्यवहार, घूस।
उपज० ना० स्त्री० जो तत्काल में कहाजावे अथवा पायाजावे।
उपजाना० अ० क्रि० उगना, बढ़ना, जन्मना
उपजा० गु० जन्मा, उगा, पैदाहुआ।
उपजाऊ० गु० उपजनेहारा।
उपजाना० स० क्रि० उपजकरना, सिरजना।
उपजित० गु० जो उत्पन्न भया, जन्मित।
उपजीविका० ना० स्त्री० जीविका, वृत्ति।
उपड़ना० अ० क्रि० उखड़ना।
उपताप० ना० पु० रोग, दुःख, उष्णता, पीड़ा।
उपदेश० ना० पु० सवाद, सुझाव।

उपदा॰ ना॰ स्त्री॰ भेंट।
उपदेश॰ ना॰ पु॰ शिक्षा, मन्त्र, दान।
उपदेशक॰ } पु॰ जो उपदेश देवे, गुरु।
उपदेशी॰ }
उपद्रव॰ ना॰ पु॰ उत्पात, अन्याय और विग्रह, क्लेश।
उपद्रवी॰ गु॰ क्लेशिया, उत्पाती।
उपद्वीप॰ ना॰ पु॰ द्वीप समीप, छोटाटापू।
उपधान॰ ना॰ स्त्री॰ तकिया, रजाई।
उपधि॰ गु॰ साथी राहका, धोखा।
उपनन्द॰ ना॰ पु॰ नन्दकी संतान वा उनके सम्बंधी।
उपनयन॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मणादि तीन वर्णों का यज्ञोपवीत अर्थात् जनऊ धरणके हेतु संस्कार।
उपनाम॰ ना॰ पु॰ पदवी, खिताब वा एकही मनुष्य का द्वितीयनाम अथवा कुटुम्बी यथा लाला, साह, तिवारी।
उपनिषद्॰ ना॰ स्त्री॰ वेदका रहस्यभाग।
उपनेत्र॰ ना॰ पु॰ चश्मह, ऐनक।
उपपति॰ ना॰ पु॰ जार, द्वितीय कन्त स्त्रीका।
उपपत्ति॰ ना॰ स्त्री॰ मुम्यता, सबूत।
उपपातक॰ ना॰ पु॰ महापाप, यथा गोवधादि।
उपमा॰ ना॰ स्त्री॰ समानता, दृष्टान्त, नजीर।
उपमान॰ ना॰ पु॰ सादृश्य, जिसस उपमा दीजावे यथा कमलनयन यहां कमल उपमान और नयन उपमेय है।
उपमेय॰ ना॰ पु॰ जिसकी उपमादीजाती है।
उपयुक्त॰ गु॰ योग्य।
उपयोगी॰ गु॰ अनुकूल, लाभकारी, मुफ़ीद।
उपराग॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा सूर्य का ग्रहण वा विषयभोग।
उपराजा॰ ना॰ पु॰ युवराज, राजा का नायब।
उपरान्त॰ अव्य॰ पीछे, पश्चात्।
उपराम॰ ना॰ पु॰ संसारी सुख की निवृत्ति, वैराग्य, उदासी।
उपराला॰ ना॰ पु॰ सहायता, मदद, अरिक।
उपरि॰ अव्य॰ ऊपर।
उपरोध॰ ना॰ पु॰ संकोच, सहायता, बड़ाई, गौरव।
उपर्ना॰ ना॰ पु॰ अंगौछा, एकपट्टा, ओढ़नी।
उपल॰ ना॰ पु॰ पत्थर।
उपलक्षण॰ ना॰ पु॰ थोड़ा जिससे बहुत समझाजावे, गु॰ जिससे गुणी जानाजावे।
उपला॰ ना॰ पु॰ कण्डा।
उपवन॰ ना॰ पु॰ कृत्रिम वन, आराम, बाग।
उपवर्ह॰ } ना॰ पु॰ तकिया, सिरहाना।
उपवर्हण॰ }
उपवास॰ ना॰ पु॰ व्रत, लंघन, रोज़ह।
उपवीत॰ ना॰ पु॰ यज्ञोपवीत, जनेऊ।
उपवेद॰ ना॰ पु॰ जो विद्या वेदों से निकली है और चारि उपवेद हैं अर्थात् आयुष्, गन्धर्व, धनुष्, धर्मशास्त्र।
उपशम॰ ना॰ पु॰ शांति, समाई।
उपशास्त्र॰ ना॰ पु॰ विद्या जो शास्त्रसे निकलीहै।
उपसा॰ ना॰ स्त्री॰ दुर्गंधि, सड़ाहिंद।
उपसना॰ अ॰ क्रि॰ उपसना, सड़ना।
उपसर्ग॰ ना॰ पु॰ क्रिया के साथ संयुक्त जो प्र, परा, अप, सम् इत्यादि।
उपस्थ॰ ना॰ पु॰ स्त्री॰ लिंग, योनि।
उपस्थित॰ गु॰ समुपागत, प्राप्त, तैयार।
उपसागर॰ ना॰ पु॰ छोटा समुद्र, समुद्रका भाग।
उपहार॰ ना॰ पु॰ भेंट, नजर, पूजा।
उपहास॰ ना॰ पु॰ ठट्ठा, हँसी।
उपाख्यान॰ ना॰ पु॰ पुराण की कथा।
उपाटना॰ स॰ क्रि॰ उखाड़ना।
उपादान॰ ना॰ पु॰ भिन्नद्रव्य, निमित्त कारण।
उपाधि॰ ना॰ स्त्री॰ उपद्रव, अन्याय, समीप, प्राप्त, माया, बाधा, ना॰ पु॰ स्वामी, मालिक, धर्मकी चिन्ता, गु॰ छल, कपट।

उपाधी० गु० अधर्मी, उपद्रवी, अन्यायी।
उपाध्या० ना० पु० ब्राह्मणजाति विशेष।
उपाध्याय० ना० पु० अध्यापक, पढ़ानेहारा।
उपाना० स० क्रि० सिरजना, उत्पन्न करना, उपार्जन करना।
उपानत्० ना० पु० जूता।
उपान्त्य० ना० पु० अन्त्य अक्षर का पूर्ववर्णादि।
उपाय० ना० पु० उद्योग, यत्न, रीति तदबीर।
उपायी० गु० उद्योगी, यत्नी।
उपार्जन० ना० पु० विद्या वा धनादिका संग्रह, कमाई, प्राप्त।
उपार्जित० गु० जो प्राप्त भया, कमाया।
उपालम्भ० ना० पु० उलाहना।
उपास० ना० पु० व्रत, उपवास।
उपासक० / उपासी० } गु० जो उपासना करै, सेवक।
उपासना० ना० स्त्री० सेवा, टहल, अनुवृत्ति देवादि विषय भावना विशेष।
उपास्य० गु० उपासना के योग्य, आराध्य।
उपेक्षा० ना० स्त्री० धोखा, त्याग।
उफना० / उफनाना० } अ० क्रि० उबलना, जोशखाना।
उफाल० ना० पु० कूर्दन, कूदनि, कूदना।
उबकना० अ० क्रि० वमन होना, जीमतलकनाही।
उबकाई० ना० स्त्री० वमन जीकी मतलब।
उबकाई० अ० क्रि० वमन, करना, उछालकरना।
उबटन० ना० पु० वस्तु आटा वा बेसन वा सरसों जिससे देहका मैल छुड़ाते हैं।
उबटना० स० क्रि० उबटन लगाना।
उबरना० अ० क्रि० बचना।
उबरा० गु० बचा।
उबलना० अ० क्रि० खलबलाना, खौलना।
उबाल० ना० पु० खलबलाहट के पीछे उफनाना।
उबसना० अ० क्रि० सड़ना, दुर्गन्धि करना।
उबसाना० स० क्रि० सड़ना।
उबारना० स० क्रि० बचाना, छुड़ाना।
उबार० ना० पु० बचाव, छुटकारा।
उबलाना० स० क्रि० पकाना, उसींजना।
उभक० ना० पु० रीछ, भालू।
उभय० सर्व० गु० दो।
उभरना० अ० क्रि० उठना, निकला, उमड़ना।
उभार० ना० पु० उठान, फुलावट, गुमड़ा।
उभारना० स० क्रि० फूलाना० उठाना।
उभौ० ना० पु० दोनों।
उमगा० गु० फूला, उठा।
उमगाना० स० क्रि० फुलाना, उठाना, मन बढ़ाना।
उमंग० ना० स्त्री० मग्नता, धुन, तृष्णा, चाह।
उमंगना० अ० क्रि० उमगते आगेजाना।
उमंगी० गु० धुनी, अभिलाषी।
उमड़न्नु० / उमड़ना० } अ० क्रि० उभरना, घिरना।
उमरी० ना० स्त्री० गूलरवृक्ष
उमहाना० अ० क्रि० उमड़ना।
उमा० ना० स्त्री० पार्वती, भवानी।
उमानाथ० ना० पु० श्रीमहादेव जी।
उर० ना० पु० छाती, हीदी, हृदय।
उरग० ना० पु० साप, सर्प।
उरगना० स० क्रि० सहना, जोगवना, रामचन्द्रिकायां यथा (धार भरत्थ कहा धौं करै जिय भाय गुनौ जो दुख देय तौ लै उरगौ बातहुनौ)।
उरभ्र० ना० स्त्री० भेड़ी।
उरगाद० / उरगारि० } ना० पु० गरुड़, मयूर और न्यौला।
उरझना० अ० क्रि० अटकना, लगना।
उरला० गु० इधरका।
उरु० ना० स्त्री० जंघका ऊपरीभाग, गु० बहुत।
उर्णा० ना० स्त्री० भेड़ी।

र्मि० ना० स्त्री० लहरी, वीची।
र्द० ना० पु० माष, अन्नविशेष।
र्वरा० ना० स्त्री० उपजाऊ धरती, खेती के योग्य।
र्विज० ना० पु० जो धरतीमें उपजा है, मंगल।
र्विजा० ना० स्त्री० श्रीजानकीजी।
उर्वशी० ना० स्त्री० मुख्यअप्सरा, मनवसी, पुरुभुकी, आभरण।
उर्वी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
उरमण्डन० ना० पु० कुच, स्तन, चूंची।
उरहन० ना० पु० गिला, शिकायत।
उरोज० ना० पु० कुच, स्तन।
उलझनि० ना० स्त्री० फँसाव, अटकाव।
उलझना० अ० क्रि० फँसना, लपटना, स० क्रि० झगड़ना।
उलझाना० स० क्रि० फँसाना, अटकाना, मिलाना, लपटाना।
उलझेड़ा० ना० पु० उलझन, फँसाव।
उलटना० स० क्रि० पलटना, फेरना, अ० क्रि० औंधा होना, उलटिजाना।
उलटा० गु० औंधा, पलटा।
उलटाना० स० क्रि० औंधाना, पलटना।
उलटापुलटा० गु० गटपट, नीचेऊपर।
उलथना० अ० क्रि० लहराना।
उलथा० ना० पु० उल्था, तर्जुमा, रागिनी विशेष, नृत्यभेद।
उलहना० ना० पु० दोष, निन्दा, गिला, अ० क्रि० उगना, लहलहाना।
उलाहना० ना० पु० गिला, शिकायत।
उलूक० ना० पु० उल्लू, दिवान्ध, घूघूपक्षी।
उलूखल० ना० पु० ओखरी।
उलूपी० ना० स्त्री० मछली, बभ्रुवाहनकी माता।
उल्का० ना० पुं० लूका, अग्नि या तारा जो आकाश से गिरता है वा दीपक का फूल।
उल्कापात० ना० पु० तारा टूटना, लूकागिरना, उपद्रवीय कारण होना, आश्चर्य।
उल्था० ना० पु० उलथा, तर्जुमा, नृत्यविशेष।
उल्मुक० ना० पुं० लूका, कोयल, जलीलकड़ी।
उल्लंघन० ना० पु० अन्यथा, वा भंग करना या न मानना, लांघिजाना।
उल्लाला० ना० पु० छन्दविशेष।
उल्लास० ना० पु० मेल, लेश।
उल्लू० ना० पु० पक्षीविशेष, मूर्ख, अहमक।
उल्लूपन० ना० पु० मूर्खता, अहमकी।
उशीर० ना० पु० तृणविशेष की जड़ जिस में गन्धि होती है खस।
उशना० ना० पु० शुक्राचार्य, स्मृतिविशेष।
उष्ट्र० ना० पु० ऊंट।
उष्ण० ना० पु० गर्म, तैप, तपन, गरमी।
उष्णकटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी का मध्यस्थान अर्थात् मध्यरेखा के उत्तर २३½ अंश और दक्षिण २३½ अंशतक।
उष्मज० ना० पु० वनस्पति जो पृथ्वी पर उगते हैं।
उष्णीष० ना० पु० पगड़ी, मुकुट।
उसकना० अ० क्रि० उबलना, पकना
उसरना० अ० क्रि० टलना, पीठदेना।
उसाना० स० क्रि० उबालना, धुरकाना।
उसारा० ना० पु० ओसारा, डेयढ़ी।
उसास० ना० पु० श्वास, दम।
उसासी० ना० स्त्री० फुरसत, कल।
उसाहि० गु० कुसमय, बेमौसम।
उसीजना० स० क्रि० उबलना।
उसीसा० ना० पु० सिरहाना, तकिया।
उस्तर० गु० सेंत बिनमोल।
उहरना० क्रि० बैठना, दबना।

(ऊ)

ऊंघ० ना० स्त्री० सोवना, झपकी, नींद।
ऊंघना० अ० क्रि० नींदआना, झपकी आना।
ऊंघाई० ना० स्त्री० ऊंघ।
ऊंचा० गु० उच्च, बलन्द।
ऊंट० ना० पु० पशुविशेष।

(ऊटक्टारा॰ ना॰ पु॰ भरभौंड़ा।
(ऊटक्टीरा॰ ना॰ पु॰ पोधा विशेष।
ऊकारान्त॰ गु॰ जिस शब्द के अंत में ऊ-कार है।
ऊख॰ ना॰ स्त्री॰ गन्ना वा गन्नेका खेत।
ऊखल॰ ना॰ पु॰ बड़ीऊखली।
ऊखाड़ी॰ ना॰ पु॰ गन्ना या खेत।
ऊत॰ ना॰ पु॰ मनुष्य जो संतानहीन मरे, विरोध, अविवाहित, अतिदुष्ट वा मूर्ख।
ऊतर॰ ना॰ पु॰ उत्तर, जवाब।
ऊत्क्रम॰ गु॰ विपरीत क्रम, बिना मिलाव, बेमिलसिल।
ऊदबिलाव॰ ना॰ पु॰ जलजन्तु विशेष।
ऊदा॰ गु॰ भूरा।
ऊदाई॰ } ना॰ स्त्री॰ कपिल भूरापन।
ऊदाहट॰
ऊधौ॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्ण का एक सखा।
ऊन॰ ना॰ स्त्री॰ भेड़ी आदि के बाल, थोड़ा, न्यून।
ऊनविंश॰ } ना॰ पु॰ उन्नीस।
ऊनविंशति॰
ऊना॰ ना॰ पु॰ सहविहीन, थोरा।
ऊनी॰ गु॰ जो ऊनसे बना है।
ऊपर॰ ना॰ पु॰ उपरि।
ऊपरिस्थ॰ गु॰ ऊपर ठहरा भया।
ऊबट॰ गु॰ औघट, अगम्य, कुमार्ग।
ऊमरि॰ ना॰ स्त्री॰ गूलरिका वृक्ष।
ऊर्ज॰ ना॰ पु॰ कार्तिकमास।
ऊर्ण॰ ना॰ पु॰ मेषादि के लोम, ऊन।
ऊर्णनाभि॰ ना॰ स्त्री॰ मकड़ी।
ऊर्णायु॰ ना॰ स्त्री॰ भेड़ी।
ऊर्ध्व॰ गु॰ ऊपर।
ऊर्ध्वकण्डा॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ी सतावरि।
ऊर्ध्वतिक्त॰ ना॰ पु॰ चिरायता।
ऊर्ध्वपुण्ड॰ ना॰ पु॰ वैष्णवतिलक।
ऊर्ध्वरेता॰ ना॰ पु॰ सन्यासी, ऋषि और जितेंद्रिय, जिसका वीर्यस्तम्भ में काम पतन न हो।
ऊर्ध्वश्वास॰ } ना॰ पु॰ ऊपरकी श्वासा।
ऊर्ध्वसास॰
ऊर्ध्वं॰ अव्य॰ ऊपर।
ऊर्मिला॰ ना॰ स्त्री॰ सखा विशेष।
ऊलूख॰ ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष।
ऊषण॰ ना॰ पु॰ कालीमिरच और पीपरामूल।
ऊष्मा॰ ना॰ स्त्री॰ गर्मी, क्रोध, रोष।
ऊषर॰ ना॰ पु॰ ऊसर।
ऊषरपा॰ ना॰ पु॰ स्वरीलोन।
ऊषा॰ ना॰ स्त्री॰ बाणासुर की कन्या।
ऊषाकाल॰ ना॰ पु॰ प्रात काल, तड़का।
ऊसर॰ ना॰ पु॰ वह धरती जिसमें अन्न आदि उत्पन्न नहीं होता है।
ऊह॰ ना॰ पु॰ तर्क।

(ऋ)

ऋक्॰ } ना॰ पु॰ प्रथम वेद।
ऋग्॰
ऋकारान्त॰ गु॰ जिस शब्द के अंत में ऋ-कार हो।
ऋचा॰ ना॰ स्त्री॰ वेदके मंत्र।
ऋजु॰ गु॰ सरल, सीधा।
ऋजुभुज॰ गु॰ सीधीरेखा वा भुजा मेंढ़।
ऋजुभुजक्षेत्र॰ ना॰ पु॰ वह क्षेत्र जो कई सूधी रेखाओं से घिराहो।
ऋण॰ ना॰ पु॰ उधार, कर्ज।
ऋणक॰ गु॰ कर्जदार।
ऋणिया॰ गु॰ धरता, करजा।
ऋणी॰ पु॰ करजदार।
ऋतु॰ ना॰ स्त्री॰ वसंतादि ६, अर्थात् वसन्त १, ग्रीष्म २, वर्षा ३, शरद ४, हेमन्त ५, शिशिर ६, और रज, समय, मौसम।
ऋतुमती॰ ना॰ स्त्री॰ रजस्वला, कपड़ों से।
ऋतुराज॰ ना॰ पु॰ वसंत बहार।

ऋद्धि० } ना० स्त्री० पार्वतीजी, औषधि, पो
ऋधि० } धा विशेष, धन, सम्पदा।
ऋषि० ना० पु० वेदज्ञ, मुनि और तपस्वी।
ऋषिपति० ना० पु० ऋषियों में जो प्रधान, बहु विद्यानिधान, भागवतधर्मी।
ऋषिमित्र० ना० पु० शातमित्र, ऋकारों का दास, रामचन्द्रिका में विश्वामित्र बाचक।

ऋषिराज० }
ऋषीश० } ना० पु० ऋषिपति।
ऋषीश्वर० }

ऋषभ० ना० पु० राग, स्वर, विशेष, श्रेष्ठ।
ऋक्ष० ना० पु० भालु, रीछ, तारा।

ऋक्षपति० }
ऋक्षराज० } ना० पु० जाम्बवन्त और चन्द्रमा।
ऋक्षेश० }

[ए]

ए० अव्य० ग्यारहवां अक्षर, सम्बोधनका सूचक।
एक० गु० गिनती का प्रथम अङ्क, अद्वितीय १।
एककाल० गु० समान समय, और एकसमय।
एककालीन० गु० समानकाल में उत्पन्न भया, हम उमर।
एकटक० ना० पु० एक तावसे देखना।
एकट्ठा० गु० जो एक स्थान में जमाकिया वा भया है।
एकतराज्वर० ना० पु० एकतरिया, तिजरा वा तिजारी।
एकतहीं० ना० पु० एक जगह, ना० स्त्री० मिरजाई।
एकता० ना० स्त्री० एकाई, मेल, समानता।
एकतान० गु० एकमति, द्वविधारहित।
एकदा० अव्य० एकसमय।
एकरस० गु० षट्भाव विकाररहित।
एकरूप० ना० समभार।
एकलौटा० } गु० जो लड़का अपने मातापिता
एकलौता० } का अकेलाहोवे।
एकवचन० गु० बात एक मुख्य नर।
एकवर्णात्मक० गु० जिस शब्दमें एक अक्षरहै।
एकसर० गु० एकमति, दुविधारहित।
एकसा० गु० समान, बराबर।
एकसार० समान, एकरस।
एकछत्र० ना० पु० विनाझगड़ेके, एकहीराज्य।
एकत्र० अव्य० एकठौर, एकस्थान।
एकत्रता० ना० स्त्री० एकठौर होना।
एकाई० ना० स्त्री० एकता।
एकाएकी० अव्य० अचानक, एकबार में।
एकाकार० गु० समान रूप, कलिधर्म, एकजाति, एकाचार, ब्राह्मणादि का विशेष वर्ण धर्मको त्यागिके पश्वादि समान रहना।
एकाकी० गु० अकेला।
एकाग्र० गु० एकमन, एकमति, द्विविधारहित।
एकांक० गु० निश्चयकरि, सत्य।
एकादशी० ना० स्त्री० पक्षकी ग्यारहवींतिथि।
एकाधिपति० ना० पु० अनेकदेशोंका एकराजा।
एकान्त० गु० निराला, निपट, निर्जनस्थान।
एकान्तर० ना० पु० एकबार।
एकान्तरकोण० ना० पु० एकबारका कोना।
एकायन० गु० एकमति, एकमार्ग।
एकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्तमें एकारहो।
एकाक्ष० ना० पु० काग, काना।
एकैकांक० अव्य० निश्चयकरि, सत्य।
एकैक० गु० प्रत्येक, हरएक।
एड़० ना० स्त्री० घोड़ेको दौड़ाने वा चलाने के निमित्त पांवके पिछले भागसे ठोकरमारना।
एड़ी० ना० स्त्री० पांवका पिछलाभाग।
एण० ना० पु० पाप, हानि, मृग, हरिण, कपट।
एणी० ना० स्त्री० हरिणी।
एणीन० ना० स्त्री० एणीका बहुवाक्य।
एणमद० ना० पु० कस्तूरी, मुश्क।
एतदर्थ० अव्य० इसालिये।
एतना० गु० इतना, इसकदर।
एतान० गु० इतने, इसकदर, इसप्रकार।

एतादृश० गु० ऐसे, इसप्रकार।
एतावता० अव्य० इसकरके, इसकारण।
एतावन्मात्र० गु० इतनाही, यही केवल।
एरण्ड० ना० पु० अरण्ड, रेंड।

एलवा० } ना० पु० औषधि विशेष
एलवालुक० } अर्थात् मुसब्बर।
एलवालु० }

एला० ना० स्त्री० इलायची।
एलोई० ना० पु० हे हमारे ईश्वर।

एव० }
एवं० } अव्य० इसप्रकार, और।
एवम्० }

एवमस्तु० अव्य० ऐसाही हो।

[ऐ]

ऐंच० ना० पु० सकोच, खैंच।
ऐंचना० स० क्रि० खैंचना।
ऐंठ० ना० स्त्री० बल, मरोड़।
ऐंठना० स० क्रि० मरोड़ना, बलदेना, अ० क्रि० बलखाना, मरोड़ाजाना।
ऐकाधिपत्य० ना० पु० अद्वितीय देशाधिपत्य, पदवी।
ऐकाहिक० ना० पु० अंतरिया।
ऐक्य० ना० पु० एकता, समानता।
ऐगुन० गु० औगुण।
ऐनमैन० गु० ज्योंकात्यों।
ऐन्द्रजालिक० ना० पु० नटवर, दिठबंध।
ऐरावत० ना० पु० इन्द्रका हाथी।
ऐरावती० ना० स्त्री० नदी विशेष।
ऐपक्षा० ना० स्त्री० कक्करासिंगी।
ऐश्वर्य्य० ना० पु० विभव, माहात्म्य, सम्पत्ति, प्रताप, बड़ती।

ऐश्वर्यवान्० } गु० सम्पत्ति करके युक्त
ऐश्वर्यशाली० } मित।

ऐसा० गु० इसप्रकार, इसके समान।
ऐहिक० गु० इसलोक के भोग, जो इहा हीं पै।

[ओ]

ओ० अव्य० सम्बोधन, करुणा, स्मृति।
ओंठ० ना० पु० ओष्ठ, होंठ।
ओंडा० गु० गम्भीर।
ओंघा० गु० औंधा, रस्सी जो छप्पर में बांधते हैं।
ओक० ना० पु० घर, आश्रय ठिकाना, ना० स्त्री० उबकाई।
ओकना० अ० क्रि० वमन करना, उछाल करना।
ओकारान्त० गु० जिसके अंतमें ओकार है।
ओखली० ना० स्त्री० गारनी, उलूखल।
ओघ० ना० पु० समूह, बहुतायत।
ओछा० गु० छिछोरा, हलका, छोटा।
ओज० ना० पु० प्रताप, बल, तेज।
ओझ० ना० पु० पचौनी, झाझ, पेट।
ओझड़० ना० स्त्री० झोंक, धक्का।
ओझड़ी० ना० स्त्री० पचौनी, घात।
ओझल० ना० स्त्री० ओट, छुपाव, गु० जो छुपा है।
ओझा० ना० पु० ओझा, टोनहा, यती या शाक्तधर्मी।
ओट० ना० स्त्री० आड़, पक्ष।
ओटना० स० क्रि० आड़ करना, बचाना, रेतनी, रूईसे बिनोला निकालना, रोकना।
ओटा० ना० पु० आड़, घेरन।
ओड़न० ना० स्त्री० ढाल, फरी।
ओडना० स० क्रि० सहना रोकना।
ओड़ा० ना० पु० खाचा, बड़ा टोकरा।
ओढ़ना० स० क्रि० पहिरना, ना० पु० रजाई, पटट्, लोई आदि।
ओढ़नी० ना० स्त्री० स्त्रियों का ओढ़ना।
ओत० ना० स्त्री० बढ़ोतरी, बचती, हीनता
ओतप्रोत० ना० पु० तानाबाना, चौड़ाई, लम्बाई में अधिन, पलटे पर विवाह।
ओदन० ना० पु० भात, चावल पके।

ओदा० गु० गीला, भीगा।
ओधे० गु० अधिकारी, लाग।
ओप० ना० स्त्री० सुंदरता, चमचमाहट, घोट।
ओपना० स० क्रि० धाड़ना, साफकरना।
ओपनी० ना० स्त्री० वह जिससे जिस पर जिला करते हैं।
ओपी० अव्य० उधर, वि, गु० साफ की।
ओर० ना० स्त्री० कगर, मार्ग, अलँग।
ओरी० गु० पक्ष, पक्षा, मदद, ना० स्त्री० ओलती।
ओल० ना० पु० शरण, निर्भयचिन्ह, मनाती, बदले।
ओलती० ना० स्त्री० ओरौनी, ओरी।
ओला० ना० पु० जलमय पत्थर और चीनी शक्कर का जो बनता है।
ओषधि० ना० स्त्री० जो पोधा फल भरजाने के पीछे फिर से उत्पन्नहो।
ओष्ठ० ना० पु० दांतों का ढकना, होंठ।
ओस० ना० स्त्री० जो रात्रि समय छोटी २ फुहार पड़ती है, शात।
ओसर० ना० स्त्री० कलोर भैंस।
ओसरा० ना० पु०
ओसरी० ना० स्त्री० } पारी, बारी, पती
ओसीसा० ना० पु० उसीसा, सिरहानी।
ओहो० अव्य० वाहवाह, आहा।

[औ]

औ० अव्य० और।
औंगी० ना० स्त्री० चुप्पी, अजापन, उपड़ीहई गाड़ी।
औंघाना० अ० क्रि० झपकी आना।
औंड० ना० पु० बेलदार।
औंडा० गु० गम्भीर।
औंधना० अ० क्रि० उलटना, उमण्डना।
औंधा० गु० उलटा।
औंधाना० स० क्रि० उलटाना।
औकारान्त० गु० जिसके अंतमें औकारहै।
औघट० गु० अगम्य, जहां जाय न सके।
औचक०
औचट० } अव्य० अचानक, नागहान।
औछ० ना० पु० जड़विशेष।
औटन० ना० पु० जलाव।
औटना० स० क्रि० जलाना, सुलाना।
औत्तानपादि० ना० पु० ध्रुव, भक्त प्रसिद्ध।
औत्कर्ष्य० ना० पु० श्रेष्ठता, उत्तमता।
औत्सुक्य० ना० पु० चिंता, व्याकुलता, चलितता।
औथरो० गु० उथला कम गहरा।
औदात० गु० अवदात, श्वेत।
औदार्य० ना० पु० दातापन, उदारता।
औदासीन्य० ना० पु० विषयों म वैराग्य।
और० अव्य० पुन, फिर, गु० अधिक, दूसरा।
औरस० ना० पु० व्याहितारा पुत्र।
और्ध्वदैहिक० ना० पु० मृतकका क्रिया।
औषध०
औषधि० } ना० स्त्री० रोगनाशक द्रव्य, दवा, इलाज।
औषधिपति०
औषधीश० } ना० पु० चन्द्रमा।

[क]

क० अव्य० ना० पु० जल, सुख, अग्नि, शिर, काम, सूर्य।
ककड़ी० ना० स्त्री० फल वा तरकारी विशेष।
ककरहा०
ककहरा० } ना० पु० बारहखड़ा वर्ण।
ककार० ना० पु० क।
ककुभा० ना० स्त्री० दिशा और छन्दविशेष।
ककुद० ना० पु० नौवृष।
ककुस्त० ना० पु० धनिया मसाला कशनीज।
ककोरना० स० क्रि० खोदना, खरोचना।
कखरी० ना० स्त्री० काख, बगल।
कखवारी०
कखौरी० } ना० स्त्री० काखका पीड़ा।

कगर० ना० स्त्री० छोर, पंत, किनारा।
कक० ना० पु० कुर्रापक्षी।
कंकण० ना० पु० हाथका भूषणविशेष।
कंकर० ना० पु० जिस से चूना बनताहै, बहुत
कड़ी मिट्टी, नींव।
कंकाली० ना० स्त्री० डाकिनी।
कंगनी० ना० स्त्री० चौरी विशेष, मालकगुनी।
कंगरोड़० ना० पु० रीड़, पक्षीविशेष।
कंगाल० गु० अधनी, भिखारी, दरिद्री।
कंगालता० ना० स्त्री० दरिद्रता, निर्धनता।
कंगालिन० ना० स्त्री० डाकिनी, डायन, दरि-
द्रिनि।
कंगनी० ना० स्त्री० कगनी।
कंगरा० ना० पु० गुम्मद, मठादिक, कारकारः।
कंघा० ना० पु० } बाल झाड़ने के लिये काष्ठादि
कंघी० ना० स्त्री० } की वस्तु।
कच० ना० पु० बाल, केश।
कचकना० अ० क्रि० मुरकना, पिराना।
कचकचाना० अ० क्रि० किचकिचाना, भिनभि-
नाना।
कचकाना० स० क्रि० मुरकाना।
कचनार० ना० स्त्री० वृक्षविशेष।
कचपचिया० ना० पु० गुच्छा तारोंका, कृत्तिका।
कचरा० ना० पु० } फल विशेष।
कचरी० ना० स्त्री० }
कचहरी० ना० स्त्री० सभा, समाज, मजलिस।
कचाई० ना० स्त्री० कचाई, कच्चापन।
कचालू० ना० पु० कन्दविशेष।
कचियाहट० ना० स्त्री० घिनघिनाना।
कचूर० ना० पु० औषध विशेष।
कचौरी० ना० स्त्री० पूरी पीठी वा पीठ भरी।
कच्चा० गु० आम, कचाई, अनपका।
कच्छु० ना० पु० कछुवा व द्वितीय विष्णुजी का
अवतार, देश जो गुजरातके पासहै कच्छी।
कच्छप० ना० पु० कूर्म, कछुआ।

कच्छी० गु० जो कच्छदेश का घोड़ा आदिहो।
कछ० ना० स्त्री० काछ।
कछना० स० क्रि० धोना, पोंछना, ना० पु०
काछ।
कछनी० ना० स्त्री० काछबाधना।
कछलम्पट० गु० कुकर्मी व्यभिचारी, अजि-
तेन्द्रिय।
कछवाहा० ना० पु० राजपुत का वंश जो श्री
रामचन्द्र के पुत्र कुशनामी से उत्पन्न भया।
कछार० ना० स्त्री० नदी की तराई वा किनारा।
कछारना० स० क्रि० झाड़ना, धोना।
कछु० सर्व० कुछ, किंचित्।
कछुरा० ना० पु० जवासा।
कछू० सर्व० कुछ किंचित्।
कज० ना० पु० कज, कमल।
कजरा० ना० पु० काजल, गु० काजललगाये।
कजरारे० गु० काजललगाये हुये।
कजला० गु० काला, काजल लगाये।
कज्जल० ना० पु० काजल, अञ्जन, सुरमा।
कज्जलगिरि० ना० पु० काजलका पर्वत।
कञ्चन० ना० पु० सुवर्ण, कनक, जातिविशेष।
कञ्चनक० ना० पु० कचनार, मैनफल।
कञ्चनी० ना० स्त्री० कंचन जातिकी स्त्री, नौची,
पतुरिया, सोनेकी पुतली।
कञ्चु० } ना० स्त्री० चोली, अंगिया।
कञ्चुकी० }
कञ्ज० ना० पु० कमल।
कञ्जर० ना० पु० जातिविशेष जो रस्सी वा
सिरकी बेचते हैं।
कञ्जा० गु० जिसकी आंखकी पुतली नीली पीली
है ना० पु० वृक्ष वा उसका फल।
कञ्जिया० ना० स्त्री० आंखकी पुड़िया, छोटी
पुड़िया।
कञ्जूस० गु० सूम, कृपण, लालची।
कञ्जूसी० ना० स्त्री० कृपणता।

कटक० ना० पु० सैन, फौज, दल, नगर विशेष जो उड़ैसादेश में है।
कटकट० ना० पु० झगड़ा, दांतों से दांतलड़ाना।
कटकटाना० स० क्रि० चबाना किसी वस्तु का।
कटकटेरि० ना० स्री० दारुहल्दी।
कटकना० ना० पु० मांगना, उपाय, ठेका।
कटकाया० ना० स्री० सेमरवृक्ष।
कटघरा० ना० पु० कटहरा।
कटंकटी० ना० स्री० दारुहल्दी।
कटना० अ० क्रि० कटिजाना, लज्जितहोना, घायल होना, मोहित होना।
कटनी० ना० स्री० कटाई, अनाज काटने का समय वा काटने की वस्तु यथा कैंची।
कटफल० ना० पु० कायफल।
कटम्भरी० ना० स्री० स्यौना वृक्ष।
कटरा० ना० पु० हाट, चौक।
कटहरा० ना० पु० कटहरा, बड़ापिंजड़ा।
कटहा० गु० काटनेवाला।
कटा० ना० स्री० माराजाना बहुत लोगोंका।
कटाक० ना० स्री० जो दरन दर्दहोकर चले।
कटाना० स० क्रि० किसी पदार्थ के टुकड़ेकराना।
कटार० ना० पु० खंजर।
कटारा० ना० पु० औषधि, पौधा विशेष।
कटारी० ना० स्री० खंजर, छुरी।
कटाह० ना० पु० कड़ाह, कड़ाही।
कटाक्ष० ना० पु० वानरविशेष, ना० स्री० तिरछी चितवन।
कटि० ना० स्री० लङ्क, कमर।
कटित० गु० सपत।
कटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी के सगुमम करने के लिये उसके पांच कटिबन्ध नियत किये गये हैं शीत कटिबन्ध दो, घोर सम कटिबन्ध दो र, उष्ण १॥
कटीला० ना० पु० पौधाविशेष, गु० काँटेदार सजीला, सारन्त।

कटु० } कटुक० } गु० कड़वा, कड़ा, बुरा।
कटुकी० ना० स्री० कटुकी औषधि।
कटुग्रन्थ० ना० स्री० पिपरामूल।
कटुफल० } कटुभद्र० } ना० स्री० सोंठि।
कटुमी० ना० स्री० मालकंगुनी।
कटुरोहिणी० ना० स्री० कुटकी औषधि।
कटैया० ना० स्री० पौधा काँटेवाला विशेष।
कटोरा० ना० पु० } कटोरी० ना० स्री० } भोजन करने का पात्र विशेष।
कट्ठा० ना० पु० काठका जिसपर कपड़ा धोतेहैं।
कठ्यानी० गु० रोमांचित, रोमखड़ेहुये।
कठन्दर० ना० पु० काष्ठोदर, रोगविशेष।
कठड़ा० ना० पु० } कठड़ी० ना० स्री० } कठरा० ना० पु० } कठरी० ना० स्री० } काठकी थाली वा पात्र विशेष।
कठघरा० ना० स्री० काठका बर्तन विशेष।
कठारी० ना० स्री० काठका बर्त्तन, कमण्डलु।
कठिन० गु० निष्ठुर, कठोर, कड़ा, दुर्दिन्ध।
कठिनता० ना० स्री० } कठिनत्व० ना० पु० } कठोरता, निठुरता, कड़ापन, कड़ाई।
कठिया० ना० स्री० गदही, घोड़ियाई, काठका छोटासा पात्र।
कठिल्ल० ना० पु० करेला तरकारी।
कठेठी० ना० स्री० कड़ी, कठिन।
कठोर० गु० निठुर, कड़ा, अशठ, ना० पु० मेंढ़ वृक्ष वा टसका रुख।
कठोरता० ना० स्री० निठुरता, निठुराई।
कठौतिया० ना० स्री० काठका छोटासा पात्र।
कठौता० ना० पु० } कठौती० ना० स्री० } काठका बड़ापात्र।
कड़क० ना० स्री० धमाका, चटक, गर्जनि, रुद्र।
कड़कना० अ० क्रि० चटकना, भड़कना गरजना।

कड़खा० ना० पु० युद्धमें बढ़ावा देनेकी गान गहना।

कड़खेत० गु० भाट जो बढ़ाव देता है।

कड़ुआ० गु० तीता, तीक्ष्ण, निठुर, थोड़ा।

कड़ुवाहट० ना० स्त्री० तीक्ष्णता।

कड़ा० गु० कठोर, दृढ़, मगरा, ढीठ, निठुर, ना० पु० लोहेका वा चांदीआदि का भूषण जो हाथमें पहिरते हैं।

कड़ाड़ा० ना० पु० नदीका ऊंचा किनारा।

कड़ाह० ना० पु० दुग्धादि औटने के लिये लोहे का पात्र, गुरुनानक का भोग।

कड़ाही० ना० स्त्री० छोटा कड़ाह।

कढ़ी० ना० स्त्री० फाड़ी, धरनी, धनी।

कड्डु० ना० स्त्री० खुजली, खारिश्त।

कढ़ाना० अ० क्रि० निकलना, उठना, खिचना।

कठिल्लक० ना० पु० लालपुनर्नवा।

कढ़ी० ना० स्त्री० भोजन विशेष जो बेसन औ दही से बनता है।

कढ़ुआ० ना० पु० उधार, कर्ज।

कण० ना० पु० धान्य, अनाज, रायमात्रअन्य, जर्रे।

कणा० ना० स्त्री० पीपरी।

कणामूल० ना० पु० पीपरामूल।

कणालुफल० ना० पु० अकोल औषधि।

कणिका० ना० स्त्री० सोनजुही, अणु, लेश, टुकड़ा, जर्रे।

कणी० ना० स्त्री० किनक, टुकड़ा, जर्रे।

कण्टक० ना० पु० कांटा, गोखुरू, शत्रु, कृपण, चित्तपापड़ा।

कण्टकलता० ना० स्त्री० खीरा फलविशेष।

कण्टकारि० } ना० स्त्री० छोटीकटाई, सफेद
कण्टकिनी० } भटकटाई।

कण्टकिफल० ना० पु० कटहल।

कण्टकी० ना० पु० बिल्व, बेलु।

कण्टफल० ना० पु० गोखुरू।

कण्टार० गु० कटीला।

कण्टारिका० ना० स्त्री० छोटी सफेद कटाई।

कण्टिया० ना० स्त्री० आरसी।

कण्ठ० ना० पु० गला, घांटी, उपस्थित, सुवाम।

कण्ठगत० गु० गल में जान या सब।

कण्ठमाल० } ना० स्त्री० गलेकीमाला, मुख्य
कण्ठमाला० } रोग जिसमें गला सड़जाता है।

कण्ठला० ना० पु० माला जो लड़कों के लिये बघनख गुन बनाते हैं।

कण्ठस्थ० ना० पु० मुखाग्र।

कण्ठा० ना० पु० बड़ी गुरियों का माला।

कण्ठाग्र० गु० मुखाग्र, जबानी।

कण्ठाभरण० ना० पु० गलेका भूषण।

कण्ठी० ना० स्त्री० छोटीमाला तुलसीआदि की।

कण्ठीरव० ना० पु० सिंह, व्याघ्र, शेर।

कण्ठ्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण कंठ से होवे।

कण्डा० ना० पु० उपला।

कण्डी० ना० स्त्री० छोटाउपला।

कण्डुपुष्पी० ना० स्त्री० शलाहूला।

कण्डू० ना० पु० रोगविशेष, स्त्री० जमुहाई।

कण्डूघ्न० ना० स्त्री० पवांर, औषधि।

कण्डेरा० ना० पु० धुनिया, जाति विशेष जो तीर धूंगाते हैं, कमानगर।

कण्व० ना० पु० मुनिविशेष।

कत० अव्य० कहा, क्योंकर, किसलिये।

कतना० अ० क्रि० काताजाना।

कतरन० } ना० पु० काटना।
कतरा० }

कतरना० स० क्रि० काटना।

कतरनी० ना० स्त्री० कटनी, कैंची।

कतराना० स० क्रि० कटवाना।

कतहु० अव्य० कभी।

कताई० ना० स्त्री० कातने का काम, कातने का पैसा।

कतीरा० ना० पु० गोंदविशेष।

कत्त० अव्य० कहा क्योंकर।

कत्था० ना० पु० खदिर, खैर।
कत्सायल०ना० पु० कालाहरिण।
कथक० गु० पौराणिक, पवांरिया, कथिक।
कथन० ना० पु० कहना, वार्त्ता का प्रयोग कहना।
कथना० अ० क्रि० कहना।
कथनीय० गु० कहने के योग्य।
कथा० ना० स्त्री० कहानी, वृत्तांत, पवांरा।
कथित० गु० कहाहुआ।
कथोपकथन० ना० पु० आलाप, परस्पर बात चीत।
कथ्य० ना० स्त्री० हरें, गु० कहने योग्य।
कद० अव्य० कब।
कदध्वा० ना० स्त्री० अतिमार्ग, कठिनमार्ग।
कदन० ना० पु० नाशक, घातक।
कदम्ब०ना० पु० समूह, वृक्षविशेष, कदम।
कदम्बक० ना० पु० समूह, गिरोह।
कदर्य्य० गु० लोभी, कंजूस।
कदली० ना० पु० केलावृक्ष।
कदक्षर० ना० पु० कुत्सित वर्ण।
कदा० अव्य० कब।
कदाचार० गु० शास्त्र से विपरीत व्यवहार।
कदाचित्० } अव्य० जो कभी होना हो,

कनागत० ना० पु० आश्विनकृष्णपक्ष में पितरों का श्राद्ध।
कनिक० ना० पु० चून, पिसान, आटा।
कनियाना० स० क्रि० संकोच से कतरायजाना, आंख छुपाना।
कनियाहट० ना० स्त्री० खींच, संकोच।
कनिष्ठ० गु० छोटा।
कनिष्ठा० ना० स्त्री० पांचवीं अंगुली, नीचली।
कनिष्ठिका० ना० स्त्री० पांचवीं अंगुली।
कनिहा० गु० धूना।
कने० अव्य० पास, साथ।
कनेर० } ना० पु० करवीरवृक्ष जिसका फूल
कनैल० } देवतों को चढ़ता है।
कनैया० ना० पु० कर्णवेधन, ना० स्त्री० दासी
कनौज० ना० पु० प्राचीन नगर, विशेषदेश।
कनौजिया० गु० कनौज देश का वासी।
कन्त० ना० पु० स्वामी, भर्त्तार, निर्धन मालिक।
कन्था० ना० स्त्री० कथड़ी, गुदड़ी, [illegible]
(शनैःकन्था शनैःपन्था शनैः[illegible] शनैर्विद्या शनैर्वित्तमेते पंचशनैःशनैः)।
कन्द० ना० पु० जड़ विशेष का [illegible] लता है यथा, मुस्त, [illegible]

कन्धेली० ना० स्त्री० खोगीर, जो घोड़ों को उढ़ाते हैं।

कन्यका० ना० स्त्री० कुमारी,कन्या।

कन्या० ना० स्त्री० बेटी, छठी राशि, दश वर्षतक की लड़की।

कंस० ना० पु० श्रीकृष्णका मामू।

कन्हाई० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजीका एक
कन्हैया० } नाम।

कपना० अ० क्रि० थरथराना।

कपकपी० ना० स्त्री० थरथराहट, फुरफुरी।

कपट० ना० पु० छल, फरेब, खोटाई और भगल।

कपटभू० ना० स्त्री० मायाभूमि, तिलस्माती जमान।

कपटी० गु० छली, खोटा, बहुरूपिया।

कपड़ा० ना० पु० वस्त्र।

कपड़ोंसेहोना० अ० क्रि० रजोधर्म होना, ऋतुमती होना।

कपर्दी० ना० पु० श्रीमहादेवजी, वरगद।

कपाट० ना० पु० किवाड़,पट।

कपार० } ना० पु० माथा, ललाट, भाग्य।
कपाल० }

कपालभृत्० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

कपाली० ना० पु० श्रीमहादेवजी और श्रीभैरवजी।

कपास० ना० स्त्री० रुईका वृक्ष, कपास।

कपि० ना० पु० वानर, बन्दर।

कपिकुञ्जर० ना० पु० श्रेष्ठ वानर।

कपितन० ना० पु० पारस, पीपल।

कपित्थ० ना० पु० कैथाका वृक्ष।

कपिध्वज० ना० पु० अर्जुन, पाण्डुपुत्र।

कपिन्द्र० } ना० पु० सुग्रीव वानर और श्रेष्ठ
कपीन्द्र० } वानर।

कपिपति० ना० पु० सुग्रीव, गु० जो वानरों का राजा होवे।

कपिपिप्पली० ना० स्त्री० सालउमा।

कपिभूत० ना० पु० पारस, पीपल।

कपिल० ना० पु० मुनि विशेष, सांख्यशास्त्र के वक्ता, पीतलधातु।

कपिला० ना० स्त्री० पिंगलवर्णकीगाय, रेणुका।

कपिलदेव० ना० पु० आदित्यवतार।

कपिल्य० ना० स्त्री० कपाला औषधि।

कपीश० ना० पु० सुग्रीव वानरोंका राजा।

कपूर० ना० पु० सुगन्धि विशेष, कापूर।

कपोत० ना० पु० कबूतर परेवा।

कपोतवर्णा० ना० स्त्री० छोटीइलायची।

कपोताक्ष० ना० पु० नद विशेष।

कपोतिका० ना० स्त्री० मूली तरकारी।

कपोल० ना० पु० गाल।

कफ० ना० पु० खखार, श्लेष्मा, बलगम।

कफोब्धिज० ना० पु० समुद्रफेन।

कब० अव्य० कहा, कदा।

कबड्डी० ना० स्त्री० गबड्डी खेल विशेष।

कबन्ध० ना० पु० बिनामस्तक की देह और पानी, मेघ, राहु, (उभेपूर्वोवरेसवे नित्य पश्यामिभारत, उद्यास्तमयेघूर्य कबन्धै:परिवारित) इतिमहाभारते।

कबरा० गु० कर्बुर, चितला, अवलक।

कबाड़० ना० पु० काम, उद्यम, तरकारी।

कभी० } ना० पु० अव्य० कभी, कदापि
कभू० } कधी।

कमठ० ना० पु० कछुवा।

कमठा० ना० पु० धनुष, कमान।

कमठी० ना० स्त्री० कछुई, धतुही।

कमण्डलु० ना० पु० दण्डियों का करवा।

कमनीय० गु० सुन्दर, मनोहर।

कमन्दर० ना० स्त्री० सीपी यथा (शुक्ता स्वोगाभि महती शक्ते मौक्तिक मन्दरः) इति निघंटे।

कमरख० ना० पु० फल विशेष और वृक्ष विशेष।

कमल० ना० पु० पद्म ।
कमलज० } ना० पु० ब्रह्मा ।
कमलभव० }
कमलवायु० ना० पु० कामर, रोगविशेष जिसमें देह और आंखें पीली होजाती हैं ।
कमला० ना० स्त्री० लक्ष्मी, श्री ।
कमलाकर० ना० पु० तालाव ।
कमलासन० ना० पु० ब्रह्मा ।
कमलासिनी० ना० स्त्री० सरस्वती ।
कमलाक्ष० ना० पु० कमलनयन ।
कमलिनी० ना० स्त्री० पद्मिनी ।
कमाई० ना० स्त्री० उपार्जन, प्राप्ति, पैदायश ।
कमाऊ० गु० उद्यमी, धनी, देशविशेष पु० ।
कमाना० स० क्रि० उपार्जन करना, पैदा करना ।
कमेरा० गु० परिश्रमी, मेहनती ।
कमोदिनी० ना० स्त्री० कमलविशेष जो रातको खिलता है अर्थात् फूल ।
कमोरी० ना० स्त्री० मटकी, हंडी, दुग्धादि ।
कम्प० ना० पु० कपकपी, थरथराहट ।
कम्पना० अ० क्रि० कांपना, थरथराना ।
कम्पवायु० ना० पु० रोगविशेष जिसमें सारा शरीर कम्पा करता है ।
कम्पाहा० गु० थरथराहा ।
कम्पित० गु० कांपता भया ।
कम्पनी० ना० स्त्री० साहिब लोगों के बहुतों का मेल वा साझा, अंगरेजी शब्द ।
कम्बल० ना० पु० ऊनका वस्त्र ।
कम्बु० ना० पु० शंख, हाथी, कम्बाक्षर ।
कम्बुज० ना० स्त्री० हरसिंगार ।
कम्बुमालिनी० ना० स्त्री० शंखहोली ।
कम्बोज० ना० पु० घोड़ा, राजाविशेष ।
कम्भारी० ना० स्त्री० औषधि विशेष ।
कम्बल० ना० पु० रोम वस्त्र, कम्बल ।
कर० ना० पु० हाथ, राजधन, महसूल, किरण, पुष्कर, विषया ।
करक० ना० स्त्री० पीड़ा, दर्द ।
करकस० गु० कर्कश, लड़ाकू ।
करका० ना० पु० पाला, हिमोपल ।
कर्कशा० ना० स्त्री० लड़ाकी ।
करज० ना० स्त्री० अंगुली, नख ।
करट० ना० पु० कौआ ।
करटी० ना० पु० हाथी, ना० स्त्री० कायफली ।
करण० ना० पु० साधन, करणविशेष ।
करणी० ना० स्त्री० कर्म, क्रिया, धनई वा एक हथियार करना सम्बन्धी ।
करणीय० गु० अवश्य कर्तव्य ।
करतल० ना० पु० हथेली ।
करतलगत० गु० हाथमें ।
करताल० } ना० स्त्री० बाजा विशेष अथवा
करताली० } हथेली की ताल ।
करतूति० ना० स्त्री० कर्तव्य, चाल, करणी ।
करतोया० ना० स्त्री० नदी विशेष जो बंगाले में है ।
करना० स० क्रि० बनाना, रचना ।
करनी० ना० स्त्री० करणी, कर्तव्य ।
करपल्लव० ना० पु० अंगुली वा उसका छोर ।
करपृष्ठ० ना० स्त्री० हाथकी पीठ ।
करबी० ना० स्त्री० ज्वारका पौधा ।
करभ० ना० पु० हाथी ।
करभप्रिय० ना० पु० धतूरा ।
करभूषण० ना० पु० कङ्कणादि आभरण ।
करम० ना० पु० कर्म ।
करमर्द० ना० पु० करौंदा ।
करमूल० ना० पु० कलाई ।
करार० गु० कलावादि भिन्न भरोसावाले जैसा, मन्द प्रतीत भाग कौरी, दुनहीं बराबर था करी ।
करवाल० ना० पु० तलवार ।
करवीर० ना० पु० कनेरवृक्ष विशेष ।
करवीरक० ना० पु० कनेरवृक्ष ।
करवह० ना० पु० नख, नाखून ।

करसम्पुट० ना० पु० हाथजोड़ना।
करहाट० ना० पु० सिफाकन्द, मैनफल।
करहाटक० ना० पु० सिफाकन्द।
करान्त० ना० पु० आरा।
करान्ती० गु० आरेसे चीरनेहारे।
करानाा० स० क्रि० बनाना, रचना।
करायल० ना० पु० आञ्जनविशेष जस।
करार० ना० पु० किनारा, गु० भयङ्कर, कराल।
करारा० ना० कड़ारा, किनारा।
कराल० गु० भयङ्कर, टेढ़ा, ना० स्त्री० विरूप औषधि।
कराली० ना० स्त्री० भयङ्कर, कठिन।
करावलि० ना० स्त्री० किरणों का समूह।
कराहना० अ० क्रि० सासभरना, दुःखकरना।
करिया० ना० पु० केवट, मल्लाह।
करिल० ना० पु० कठोर जिसका शिर टूटाहो, बासका नया पौधा।
करी० ना० पु० हाथी।
करीर०, करीरक०, करील० } ना० पु० वृक्ष विशेष जो कांटों वाला होता है।
करीष० ना० पु० गोबर की मांदि या सुखेगोवा और कोई २ कोयला बनाते हैं।
करुणा० ना० स्त्री० दया, करुणा।
करुणाकर० गु० दयाकर, दयाकी राशि, की मलता की खानि।
करुणाकरना० स० क्रि० गुण कहिकर रोना, दया करना।
करेरा० गु० दृढ़, कड़ा, बलवान्।
करेरी० ना० स्त्री० दृढ़, कड़ी।
करेला० ना० पु० तरकारी विशेष।
करेत० ना० पु० साप विशेष।
करोड़० गु० संख्या १००००००० ।
करोड़ा० ना० पु० उगाहनेवाला, प्रधान।
करौंदा० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष।
कर्क०, कर्कट० } ना० पु० चौथीराशि विशेष केकड़ा, गंगरा।
कर्कटशृङ्गिका० ना० स्त्री० ककरासिंगी।
कर्कटा० ना० पु० बेरफलविशेष।
कर्कटाख्या० ना० स्त्री० ककरासिंगी।
कर्कटी० ना० स्त्री० ककड़ी, पिंडखजूर।
कर्कन्धु० ना० पु० बेरका वृक्ष वा फल।
कर्कल० ना० पु० अजमोद, सूक्ष्मवायु।
कर्कश० गु० कड़ा, कठोर, लड़ाका, असह।
कर्कशछदा० ना० स्त्री० केतकी।
कर्कार० ना० पु० कुम्हड़ा, लभड़ा।
कर्कोज० ना० पु० सीसा।
कर्कोटक० ना० पु० मुख्य सर्प।
कर्कोटिका० ना० स्त्री० ककोड़ी औषधि।
कर्चूर० ना० पु० कचूर।
कर्चूरिका० ना० स्त्री० हाथकी मुठी, कचूरी।
कर्छा० ना० पु० कफगीर, चमचा।
कर्छी० ना० स्त्री० छोटी कर्छी।
कर्ण० ना० पु० कान, पतवार, सूर्यसुत, कमान का रोदा, बतर।
कर्णधार० ना० पु० माझी, चढ़नदार।
कर्णफूल० ना० पु० कानका भूषणविशेष।
कर्णवेधन० ना० पु० कानका छेदना, कनछेदन।
कर्णवेष्टभि० ना० पु० कुंडल जो कानमें पहिनते हैं।
कर्णाट०, कर्णाटक० } ना० पु० दक्षिण भारतवर्षका एक भाग विख्यात।
कर्णालस्थित० गु० कानतक खींचना।
कर्णिकार० ना० पु० सिदवाली औषधि।
करणी० ना० स्त्री० क्रिया, धर्म, करण, जोत।
कर्त्तव्य० ना० पु० करतूति, करने के योग्य।
कर्त्तव्यता० गु० स्त्री० चाल, करतूति।
कर्त्ता०, कर्त्तार० } ना० पु० क्रिया में प्रधान होता है, करनेवाला, सिरजनहार, प्रभु, भर्त्ता विशेष ब्रह्मा।
कर्तृकर्मभाव० ना० पु० कर्त्ता और कर्म का सम्बन्ध।

कर्तृत्व० ना० पु० कर्ताका धर्म।
कर्तृप्रधान० ना० पु० गु० जिस अर्थमें कर्ता प्रधान है।
कर्तृवाचक० गु० जिस पदमें कर्ता पायाजावे।
कर्दम० ना० पु० कीचड़, कादा, लप और ऋषि विशेष।
कर्दमक० ना० पु० कीचड़।
कर्धनी० ना० पु० कटिबन्धन, सूत जो कमर में बांधते हैं।
कपर्दी० ना० स्त्री० कौड़ी, यथा कपर्दी स्य वरा टि इति निघण्ट।
कर्पास० ना० स्त्री० कपास, कपासका वृक्ष।
कर्पूर० ना० पु० कपूर, काफूर।
कर्म० ना० पु० द्वितीयकारक, काम, भाग्य, प्रारब्ध शास्त्रविहित जप यज्ञादि।
कर्मकर० गु० सेवक, नौकर।
कर्मकाण्ड० ना० पु० जप यज्ञादि।
कर्मकारक० ना० पु० कारक विशेष।
कर्मच्युत० गु० काम से भ्रष्ट, क्रियाभ्रष्ट।
कर्मनाशा० ना० स्त्री० नदीविशेष जो काशी और गया के मध्य में है।
कर्मप्रधान० गु० कर्म मुख्य, विदित कर्ता।
कर्मभोग० ना० पु० प्रारब्ध का भाग और तपस्या, पक्षी विशेष।
कर्मरङ्ग० ना० पु० कमरख।
कर्मवाच्य० गु० जिस क्रिया पदका कर्म उद्देश्य हो।
कर्मवाचक० गु० कर्मसूचक।
कर्मविपाक० ना० पु० कर्मों का फल, ग्रन्थ विशेष।
कर्मसाक्षी० ना० पु० सूर्य।
कर्माधर्मी० गु० जपरपैया, भाग्यवान, दैवागत।
कर्मार० ना० पु० बांस।
कर्मिणी० ना० स्त्री० कामना, जपा।
कर्मी० गु० कर्मोंका करनेवाला।
कर्मेन्द्रिय० ना० स्त्री० इन्द्रिया जिनसे कर्म करते हैं, वह पांच हैं अर्थात् गुदा, लिंग, हाथ, पांव, मुख।
कर्षाना० अ० क्रि० कड़ापड़ना।
कर्बुक०
कर्व्याद० } ना० पु० निशाचर, क्रव्याद।
कर्बुर० ना० पु० सुवर्ण, राक्षस।
कर्ष० ना० पु० प्रमाण, बीं, पैर।
कर्षण० ना० पु० खैंच।
कर्षफल० ना० पु० बहेड़ा।
कर्षा० ना० स्त्री० ईर्षा, उत्साह।
कर्षित० गु० खींचागया।
कल० ना० स्त्री० चैन, सुख, यन्त्र गु० अव्यक्त सुंदर, मीठा, मधुरशब्द, आजका पहिला वा पिछला दिन।
कलकण्ठ० ना० स्त्री० कोयल पक्षी।
कलकत्ता० ना० पु० नगर विशेष।
कलकल० ना० पु० कोलाहल, शोर, झगड़ा।
कलकाची० ना० स्त्री० नगर विशेष।
कलङ्क० ना० पु० अपवाद, चिह्न, दाग।
कलङ्की० गु० दागी, पापी।
कलङ्किनी० ना० स्त्री० दूषिता, अपवादिनी, जिसको कलङ्क लगा।
कलधौत० ना० पु० सोना, चांदी।
कलप० ना० पु० रंग, जिसमें बाल रंगाते हैं, चरमा मांड़ी।
कलपना० अ० क्रि० कुढ़ना, दुखित होना, कल पकरना, मांड़ी लगाना।
कलपाना० स० क्रि० कुढ़ाना दु खीकरना कल पकराना, मांड़ीलगाना।
कलभ० ना० पु० हाथी, कलुर, उत्तालवर्ष सार।
कलम० ना० स्त्री० लेखनी यह अरबी शब्द है।
कलमलाना० अ० क्रि० कुलबुलाना।
कलरव० ना० पु० कबूतर, कोकिला।
कलवल० ना० पु० कलकल, तोतरी बात।
कलविंक० ना० पु० गौरैया पक्षी।

कलश० ना० पु० घट जो विवाह आदिमें स्थापित करते हैं, घड़ा, गगरा।
कलस० ना० पु० शूल, कलशी।
कलसी० ना० पु० छोटाकलश, गगरी।
कलह० ना० पु० विरोध, लड़ाई, झगड़ा।
कलहंस० ना० पु० राजहंस, मैलाहंस।
कलहा० } गु० लड़का, झगड़ालू।
कलहारा० }
कलही० ना० स्त्री० कर्कशा, लड़ाकी।
कलत्र० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री विवाहिता।
कला० ना० स्त्री० सोलहवां भाग, बाट।
कलाई० ना० स्त्री० पहुंचा, रंगासूत।
कलावंत० ना० पु० गवैया, गायक।
कलाद० ना० पु० सुनारजाति, यथा नाडीधम स्वर्णकार कलादोरुक्मकारक इत्यमरः।
कलाधर० ना० पु० चन्द्रमा, नृत्यक, बहुरूपी।
कलाना० स० क्रि० भुनाना।
कलानिधि० ना० पु० चन्द्रमा।
कलाप० ना० पु० समूह, व्याकरण विशेष, तूण, तर्कश, आभरण, चन्द्रमा, दुःख, हरिद्रु भवन, मोरों का समूह, ग्राम विशेष।
कलापी० ना० पु० मयूर, मोर।
कलापशाक० ना० पु० मडुवा साग।
कलार० } ना० पु० कलवार, सूंडी।
कलाल० }
कलि० ना० पु० चौथायुगजो ४६४००० वर्ष का होता है वेदोक्त समय का नाशक, समय कलियुग, युद्ध, पाप, क्लेश, शूर, तर्कश।
कलिकवि० ना० पु० कालिदासादि।
कलिका० ना० स्त्री० शल्पोका, कली, बिना फूला फूल।
कलिकारी० ना० स्त्री० कलिहारी।
कलिंग० ना० पु० इन्द्रयव, तरबूज, कटकरंजका पौधा, देश विशेष, राजा विशेष।
कलित० गु० बदतामया, सुन्दर।
कलिद्रुम० ना० पु० बहेरा।
कलिन्द० ना० पु० तरवृक्ष पर्वत विशेष।
कलिमल० ना० पु० पाप, दोष।
कलिमलसरि० ना० स्त्री० कर्मनाशानदी।
कलियाना० अ० क्रि० कली निकलना, फूलना।
कलिल० ना० पु० क्लेश, सकट, दुःख।
कली० ना० स्त्री० कलिका, बरी।
कलुष० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह।
कलेऊ० ना० पु० बासी रसोई, प्रातःकाल में थोड़ाभोजन।
कलेजा० ना० पु० अंग विशेष, शूर्मोपन, साहस।
कलेवर० ना० पु० देह, तन।
कलेवा० ना० पु० कलेऊ वह जो विवाह में दूलह को खिलाते हैं।
कलेश० ना० पु० क्लेश।
कलोर० ना० पु० चौमर, नई गाय।
कलोल० ना० स्त्री० खेल, मगनता।
कल्की० ना० पु० दशवां अवतार, म्लेच्छान्तक जो कलि के अन्त में सम्भल में होगा।
कल्प० ना० पु० ब्रह्माका दिन रात, प्रलय, कल्पवृक्ष, सामर्थ्य, विचार, रचना, बदलना, शास्त्र विशेष।
कल्पतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष।
कल्पना० अ० क्रि० खेदित होना, मान लेना, फर्ज करना, तर्क, लालसा, कष्ट।
कल्पान्त० ना० पु० कल्पका अन्त, कयामत।
कल्पित० गु० रचित, विचारित, मानाहुआ।
कल्याण० ना० पु० कुशल, मंगल, भद्री।
कल्लर० गु० ऊसर।
कल्लाना० अ० क्रि० जलनि पड़ना, पिराना।
कल्लोलिनी० ना० स्त्री० तरंगयुत।
कवच० ना० पु० झिलम, बक्तर, रक्षक, मन्त्र विशेष।
कव्य० ना० पु० छन्द विशेष।
कवर्ग० ना० पु० ककारादि पंच अक्षर।
कवरी० ना० स्त्री० केशपाश, वेणी, चौरी।

कथ०८ ना० पु० ग्राम सुषमा।
कवि० ना० पु० भाट, श्लोक व छन्दकर्त्ता, शायर।
कवित० ना० पु० छन्द, पद्य।
कविता०
कवितार्ई० } ना० स्त्री० पद्य, श्लोक, छन्द।
कविमाता० ना० स्त्री० शुक्राचार्यकी माता।
कविपुंगव० ना० पु० बड़ा कवि, श्रेष्ठकवि।
कविराज०
कवीश्वर० } ना० पु० महाकवि, उत्तमकवि।
कशर० ना० पु० कचनार।
कशेरू०
कशेरुरू० } ना० पु० कसेरु।
कश्मीर० ना० पु० काश्मीर।
कश्यप० ना० पु० मुनि, मरीचि, प्रजापति का पुत्र।
कश्यपी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन जो कश्यपसे सम्बन्ध रखते।
कषाय० गु० कसैला रस।
कष्ट० ना० पु० दुःख, पीड़ा, दर्द।
कष्टनाश० ना० पु० नीलकण्ठ पक्षी जिस को कष्टनाश कहते हैं।
कष्टित०
कष्टी० } गु० दुःखित, पीड़ित, रुजार्त।
कस० अव्य० कैसा, किसप्रकार।
कसक० ना० पु० पीड़ा, दुःख।
कसकना० अ० क्रि० दुःखभोगना, दुःखहोना।
कसकसा० गु० बालू मिलाहुआ पदार्थ।
कसन० ना० पु० दशा, यन्त्रणा।
कसना० स० क्रि० खेंचना, जाचना, घीमेंभूनना, तलना, आक्रमणकरना।
कसा० गु० खेंचाहुआ।
कसाई० ना० स्त्री० खिंचावट।
कसाना० स० क्रि० खिंचाना, जचाना, घी में भुनवाना, तलना।
कसान० ना० पु० वह पदार्थ जिससे कसाजावे।
कसुभिक्ष० ना० पु० नीमवृक्ष।
कसेरू० ना० पु० जलका कन्द विशेष।
कसेरुक० ना० पु० कसेरु।
कसेरुका० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी।
कसेरा० ना० पु० कांसकारक, कासगर, जाति विशेष, बर्त्तन बनानेवाला।
कसैला०
कसेला० } गु० कषाय, कसेला।
कसैया० गु० कसनेवाला।
कसौटी० ना० स्त्री० स्वर्णादिपरीक्षकपाषाण।
कस्तूरी० ना० स्त्री० मृगमद, मुश्क।
कस्मल० ना० पु० पाप, मूर्च्छा।
कस्मर्या० ना० स्त्री० कम्भार।
कस्मिन्० सर्व० कौन।
कस्य० सर्व० किसको।
कस्यप० ना० पु० कश्यपमुनि विशेष।
कहतूति० ना० स्त्री० कहावत, मसल।
कहना० स० क्रि० बोलना, जताना, आज्ञा करना, वर्णन करना।
कक्ष० ना० स्त्री० काख, बगल।
कक्षा० ना० स्त्री० ग्रहों की चालका मण्डलाकार पन्थ।
कहलाना० स० क्रि० कहलाना, जतलाना, सुनाना।
कहा० सर्व० क्या० ना० पु० आज्ञा।
कहानी० ना० स्त्री० कथा, किस्सा, वृत्तान्त।
कहार० ना० पु० जातिविशेष धीमर।
कहावत० ना० स्त्री० बात, दृष्टान्त, मसल।
का० सर्व० किसी, क्या, संबन्धार्थी।
कांकर० ना० पु० कङ्कर।
कांख० ना० स्त्री० कक्ष, बगल, कराह।
कांखना० अ० क्रि० कराहना, घुरनाना, स० क्रि० छेदना, दबाना।
कांगनी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, बीज उसका।

कांच० गु० कचा, ना० पु० गुदा में रोग विशेष ना० स्त्री० शीशा।

कांजी० ना० पु० जल विशेष, मान की सड़ाय के बनता है।

कांटा० ना० पु० कण्टक, स्वर्णादिक तौलनेका यन्त्र तुला, जलमें गिरेहुई वस्तु निकालने का यन्त्र।

कांठा० गु० किनारा, अन्त, ओर, समीप।

कांड० ना० पु० खण्ड, तीर विशेष।

कांड़ी० ना० स्त्री० चड़ी, धरन।

कांदू० ना० पु० चीनी पकानेका कड़ाह, भूजाजाति विशेष, भुर्जी।

कांदो० ना० स्त्री० कीच, कीचड़, कादो।

कांधना० अ० क्रि० मलना, स्वीकारकरना।

कांधा० ना० पु० कन्धा।

कांपना० अ० क्रि० दलदलाना, थरथराना।

कांस० ना० पु० तृण विशेष।

कांसा० } ना० पु० धातुविशेष।
कांस्य० }

कांक्षा० ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथ।

काई० ना० स्त्री० हरी वस्तु जो तालादि में लगती है।

काऊ० सर्व० जिसको, किसी को।

काक० ना० पु० कौआ, पक्षी विशेष।

काकजंघा० ना० स्त्री० पौधा विशेष।

काकटम्बपुष्पी० ना० स्त्री० महामुख्यी।

काकतिक्रा० } ना० स्त्री० कागजंघा।
काकपदी० }

काकपक्ष० ना० पु० जुल्फ, बानरी, काकुल, कौआ के पंख।

काकमुशुण्डि० ना० पु० प्रसिद्ध पक्षी श्रीरामा यण वक्ता।

काकर० सर्व० किसका।

काका० ना० पु० पिताका भाई, चचा।

काकिणी० ना० स्त्री० २० कौड़ी को कहते हैं, लीलावत्या यथा वराटिकानांदशकद्वयं यत्साका किणीताश्चपणश्चतस्रः, तेषोडशद्रम्मइहावगम्यो द्रम्मैस्तथाषोडशभिश्चनिष्कः।

काकी० ना० स्त्री० काका की पत्नी, चाची।

काकु० ना० पु० व्यङ्ग्यवचन, वक्रोक्ति।

काकोदर० ना० पु० सर्प, कोवाका पेट।

काकोल० ना० पु० विष, हलाहल।

काख० ना० स्त्री० काख, कक्ष।

काखसलाई० ना० स्त्री० कखौरी।

काग० ना० पु० काक, कौआ।

कागासुर० ना० पु० काकरूपी दैत्य जिसकी आंख श्रीकृष्णचन्द्रजीने तोड़दीथी।

काच० ना० पु० काच, गु० कच्चा।

काचक० ना० पु० बारा।

काचा० गु० कचा, अजानी।

काछ० ना० स्त्री० धोतीका दूसरा सिरा जो पीछे को खोंचते हैं, कमर, जंघाका ऊपरभाग।

काछना० स० क्रि० कछमारना, चढ़ाना, पोछना, बंगरना।

काछनी० ना० स्त्री० काछ विशेष।

काछी० ना० पु० खराऊ जाति विशेष।

काज० ना० पु० कार्य्य, काम।

काजल० ना० पु० कज्जल, अञ्जन, सुरमा।

काजी० गु० कार्य्य कर्त्ता, कामी।

कांचन० ना० पु० सुवर्ण, सोनाधातु।

कांचनपुष्पिका० ना० स्त्री० मूसली।

कांचनार० ना० पु० कचनार वृक्ष।

कांचनी० ना० स्त्री० हल्दी, सोनेकी पुतली पतली वेश्या।

कांची० ना० स्त्री० पुरीविशेष, जिसके दो भाग हैं एक विष्णुकांची दूसरी शिवकांची।

काट० ना० स्त्री० चीरा, मैल, तीक्ष्णता, तेजी

काटना० स० क्रि० कतरना, टुकड़ेकरना, काटमाना, लवना, अर्थात् छौनी, धाराकरना, रहना, बिताना, रोकना, लज्जित होना, छीलना, लज्जितकरना।

काठमाण्डु० ना० पु० नेपालदेशकीराजधानी।
काठ० ना० पु० काष्ठ, सूखीलकड़ी।
काठिन्य० ना० पु० कठिनता, कठोरपन।
काठियावाड़० ना० पु० देशविशेष।
काठी० ना० स्त्री० घोड़े के उपरका काष्ठ का आसन, मियान जिसमें तलवार रखते हैं, शरीर, देह, डौल, लकड़ी।
काढ़ना० स० क्रि० निकालना, चमड़ा उभेड़ना, कपड़े में फूल बूटा बनाना, चालमिलाना।
काढ़ा० ना० पु० क्वाथ।
काण०
काणा० } गु० एकाक्ष, एकनयन।
काणी० ना० स्त्री० एक आंखवाली।
काण्ड० ना० पु० खण्ड, प्रकरण।
काण्डरुहा० ना० स्त्री० कुटकी।
कातना० स० क्रि० सूत रुई से बनाना रहँटा के द्वारा।
कातर० गु० डरपोकना, व्याकुल, ना० पु० जगल दुर्भिक्ष, कोल्हू की पाटि।
कातिक० ना० पु० आठवां महीना।
कातिकी० ना० स्त्री० कातिक की वस्तुआदि, कातिककी पूर्णमासी।
काती० ना० स्त्री० छोटी तलवार, कत्री।
कात्यायन० ना० पु० मुनिविशेष, स्मृतिविशेष।
कात्यायनी० ना० स्त्री० देवीविशेष, स्मृति विशेष, कात्यायन वंशी।
कादम्बिनी० ना० स्त्री० मेघमाला।
कादर० गु० डरपोकना, व्याकुल।
कादरता० } ना० स्त्री० भय, डर, डरपोकना
कादराई० } पन।
काधना० स० क्रि० कांधना, कांधे धरना।
कान० ना० पु० कर्ण, श्रवण, लाज, अदब।
कानन० ना० पु० बन, जगल, महावाटिका।
कानि० ना० स्त्री० मर्याद, सकोच, अदब, लाज।
काना० ना० पु० अक्षर की खड़ी लकीर, काणा, कड़ाही आदि का गड्ढा।
कानी० ना० स्त्री० जो एक आंख की होवे।
कानीन० गु० नीच, क्षुद्र, स्त्री० लड़की, रामचन्द्रिकायां यद्यपि आनी नरे कदिकानीन।
कान्त० ना० पु० पति, स्वामी, सुन्दर।
कान्ता० ना० स्त्री० पत्नी, प्यारी।
कान्ताह्वा० ना० स्त्री० प्रियगु औषधि।
कान्ति० ना० स्त्री० शोभा, चमक और नाम चन्द्रमा की एक कला का।
कान्तिपाषाण० ना० पु० चुम्बक।
कान्दा० ना० पु० जलका कन्द, कलकदरा।
कान्यकुब्ज० ना० पु० देश विशेष, ब्राह्मण
कान्ह०
कान्हर० } ना० पु० श्रीकृष्ण जी का एकनाम।
कापट्य० गु० शठता, कपट।
कापथ० ना० पु० अतिमार्ग, कठिनमार्ग।
कापुरुष० गु० कुत्सित, मनुष्य, बुरा आदमी कुजन, कुकर्मी, नर।
काम० ना० पु० भोगकार्य्य, अभिलाष, कामदेव, लाज, विषय, मथाना, सुन्दर।
कामक० ना० पु० मेघ।
कामकेलि० ना० स्त्री० दुलार, प्यार, सगम, प्रसग।
कामकञ्चुका० ना० स्त्री० घुघची।
कामतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष।
कामद० गु० कामना दाता।
कामदुघो० ना० स्त्री० इन्द्रकी गाय।
कामदूती० ना० स्त्री० वसन्तऋतु, कुम्मी।
कामदेव० ना० पु० मदन, मन्मथ।
कामधेनु० ना० स्त्री० इन्द्रकी गो, देवगो।
कामना० ना० स्त्री० इच्छा, सम्माभिलाष, मदन।

कामपाल॰ ना॰ पु॰ बलदेवजी।

कामवन॰ ना॰ पु॰ जिस वनमें श्री सदाशिव ने कामदेव को जलाया था।

कामरी॰ ना॰ स्त्री॰ कम्मल।

कामरूप॰ ना॰ पु॰ इच्छाचारी, सुन्दर, देश विशेष।

कामरूपी॰ गु॰ बहुरूपिया, सुन्दर, कामरूप वासी।

कामसखा॰ ना॰ पु॰ इन्द्र, वसन्तऋतु।

कामांग॰ ना॰ पु॰ आमवृक्ष।

कामातुर॰ } गु॰ मदनमत्त, कामी, पुस-
कामार्त्त॰ } हारा।

कामिनी॰ ना॰ स्त्री॰ उत्तम, सुन्दरी, ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष, कामातुर स्त्री।

कामी॰ गु॰ कामातुर, बहुधन्धी, मनलबी माधवी वृक्ष।

कामुक॰ ना॰ पु॰ स्त्री के सुख में आसक्त, कामातुर।

कामोद॰ ना॰ स्त्री॰ रागिनी विशेष।

काम्बोज॰ ना॰ पु॰ देश जो बंगाले के दक्षिण पूर्व है।

काम्य॰ गु॰ सुन्दर, अच्छा।

काम्यकर्म॰ ना॰ पु॰ स्वर्गादि फला के लिये जो कर्म करना।

काय॰ ना॰ स्त्री॰ देह, मन।

कायक॰ गु॰ देरी।

कायफल॰ ना॰ पु॰ औषध विशेष।

कायर॰ गु॰ भयमान, डरपोक, हेठा।

कायस्थ॰ ना॰ पु॰ जातिविशेष, गु॰ जो निज काया में स्थित हो अर्थात् सन्तुष्ट।

कायस्था॰ ना॰ स्त्री॰ हर्रे, काकोली।

काया॰ ना॰ स्त्री॰ देह, तन।

कायाकल्प॰ ना॰ पु॰ देहका बदलना।

कारक॰ ना॰ पु॰ क्रियाका साक्षात् निमित्त।

कारज॰ ना॰ पु॰ कार्य, काम।

कारण॰ ना॰ पु॰ निमित्त, लिये, सबब, प्रकृति।

कारणी॰ गु॰ कारण, कर्त्ता।

कारवल्ली॰ } ना॰ पु॰ करेला, तरकारी।
कारवेल्ल॰ }

कारवी॰ ना॰ स्त्री॰ अजमोद, कलौंजी।

कारागार॰ } ना॰ पु॰ बन्दीघर, जेहलखाना।
कारागृह॰ }

कारु॰ } ना॰ पु॰ शिल्पकार, बढ़ई
कारुकर॰ }

कारुणिक॰ गु॰ दयालु, कृपालु।

कार्त्तस्वर॰ ना॰ पु॰ सुवर्ण, कांचन।

कार्त्तिक॰ ना॰ पु॰ कातिक।

कार्त्तिकेय॰ ना॰ पु॰ स्वामिकार्तिक।

कार्पण्य॰ ना॰ पु॰ दरिद्रता, दीनता।

कार्पास॰ ना॰ स्त्री॰ कपास।

कार्मुक॰ ना॰ पु॰ धनुष, महानींब वृक्ष।

कार्य॰ ना॰ पु॰ प्रयोजन, काम।

कार्षापण॰ ना॰ पु॰ चाँदी के सोलहपण का मान अथवा तोल।

काल॰ ना॰ पु॰ मृत्यु, दुर्भिक्ष, समय, कला काला, धर्मराज, सर्प, सुन्दर, यमराज ३।

कालक॰ ना॰ पु॰ कूपृष्ठ, बीजगणित में प्रमाण का बोधक।

कालकूट॰ ना॰ पु॰ विष, हलाहल।

कालपर्णुक॰ ना॰ पु॰ तेंदुआवृक्ष।

कालपर्णी॰ ना॰ स्त्री॰ कालानिसोत।

कालमेषिका॰ ना॰ स्त्री॰ मजीठ, बाकुची।

कालमेषी॰ ना॰ स्त्री॰ कालानिसोत।

कालयवन॰ ना॰ पु॰ नाम एक म्लेच्छ का जिसका श्रीकृष्णचन्द्र ने भस्म किया था।

कालरात्रि॰ } ना॰ स्त्री॰ प्रलयकाल की रात्रि,
कालरात्रि॰ } अर्धरात्रि, देवी विशेष।

कालवाहन॰ ना॰ पु॰ भैंसा।

कालवृत्तिका॰ ना॰ स्त्री॰ कुम्भी जो पानी होती है।

कालदारुक॰ ना॰ पु॰ सरपोंखा।

कालसार॰ ना॰ पु॰ तेंदुआ वृक्ष।

कालसूत्र० ना० पु० नरक भेद।
कालस्कन्ध० ना० पु० तमालवृक्ष।
कालक्षेप० ना० पु० समय करना, दुःख भोग करना, गुजरान करना।
कालज्ञ० गु० ज्योतिषी, पण्डित, मार्गीश्वर, ज्ञाता, मुर्गापक्षी, शृगाल।
काला० गु० कृष्णवर्ण, श्यामरंग।
कालिका० ना० स्त्री० धनिया, मसाला, काला जीरा, नदीविशेष।
कालिन्दपाल० ना० स्त्री० किन्दवाली।
कालिन्दी० } ना० स्त्री० यमुनानदी विशेष।
कालिन्द्री० }
कालियक्क० ना० पु० मलय, चन्दन।
कालिया० ना० पु० कालीनाग, गु० काला।
काली० ना० स्त्री० मसी, देवीविशेष, मिसर देशकी नदी ना० पु० कालीनाग जो यमुना में रहा करता था।
कालीदह० ना० पु० यमुनाजी में विशेषस्थान।
काल्पनिक० गु० आरोपित, कल्पना कियागया, ना० स्त्री० नदी विशेष जो दक्षिण में है।
कावेरी० ना० स्त्री० नदी विशेष।
काव्य० ना० पु० पद, श्लोक, छन्द, पुस्तक, जिसमें कविताई हो, शुक्र।
कास० ना० पु० खांसी, खोम्सा।
कासघ्नी० ना० स्त्री० भारगी औषधि।
कासमर्द० ना० पु० कलौंजी का सार्ग।
काश्मीर० ना० पु० देश० विशेष जो पंजाब के उत्तर है, पुष्करमूल।
काश्मीरी० ना० स्त्री० केसर, कम्भारी, काश्मीरदेशवासी।
काश्यप० ना० पु० कश्यपकी सन्तान।
काश्यपी० गु० मरन का स्थान।
काशी० ना० पु० नगर विशेष।
काष्ठ० ना० पु० काठ, लकड़ी।
काष्ठकीला० ना० पु० मेख।
काष्ठपाटला० ना० स्त्री० कुम्भी।
काष्ठान्तर० ना० पु० काठके भीतर।
काष्ठी० ना० स्त्री० कक्करी।
कासार० ना० पु० तालाब, भैंसा।
कासु० सर्व० किसको।
काहन० ना० पु० कार्षापन।
काहे० सर्व० क्यों।
काक्षी० ना० स्त्री० कक्करी।
किं० अव्य० प्रथमवाक्य का द्वितीयवाक्य से सम्बन्धकारक।
किंशुक० ना० पु० पलाश, ढाक, टेसू।
किंकर० ना० पु० टहलुआ।
किंकरी० ना० स्त्री० दासी, टहलुइन।
किंकिणी० ना० स्त्री० अधिक घण समेत, यावदूक।
किंक्यान० ना० पु० घोड़ा।
किचकिचाना० अ० कि० दांतपीसना।
किचलाना० अ० कि० आंखों में कीचड़ आना।
किचपिचाना० अ० कि० गड़बड़ाना।
किंचित्० अव्य० थोड़ा, अल्प, कुछ।
किंचिन्मात्र० गु० कुछ, अतिअल्प।
किंशुक० ना० पु० वृक्षविशेष।
किंशुकी० ना० स्त्री० चाली थनिया।
किंजल्क० ना० पु० शिवानन्द।
किटि० ना० पु० शूकर, सूकर, यथा, वराह-सूकरो घृष्टि कालपोत्री किरिकिटि स्तब्धर।
किड़किड़ाना० अ० कि० क्रोधसे दांतपीसना।
किदहा० ना० पु० कुत्ता, गु० घुना।
कित० अव्य० कहां, किधर।
कितना० }
कितनी० } गु० प्रमाण का प्रश्नकारक।
किती० }
कितेक० गु० बहुत।
किते० अव्य० किधर।
किर्ति० ना० स्त्री० कीर्ति, यश, रामचन्द्रिकायां यथा, अखण्ड कीर्ति लेय भूमि देयमान देखिये

किधर० अव्य० कहां।
किनारा० ना० पु० तट, कूल।
किनारी० ना० स्त्री० गोटा, मगजी।
किन्० ना० पु० घाव, अव्य० क्योंनहीं।
किन्तय० ना० पु० धतूरा।
किन्तु० अव्य० परन्तु निश्चयार्थी।
किन्नर० ना० पु० यक्षदेवता।
किन्नरी० ना० स्त्री० सारंगी, यक्षिणी।
किंपलता० ना० पु० पैसा का वृक्ष।
किम्० सर्व० क्यों किसप्रकार।
किमपि० सर्व० क्योंभी, किसप्रकार।
किमर्थ० अव्य० किसलिये।
किमाख्य० ना० पु० खड़हा, खोंच।
किमि० सर्व० क्यों किसप्रकार।
किम्पुरुष० ना० पु० नवखण्ड धरातल में से एक नामहै, कुबेर पौरुषी।
किंवा० अव्य० अथवा।
किरकिरी० ना० स्त्री० हानि लकड़ी।
किरकिरा० गु० रेतीला बालुआ।
किरकिराना० अ० क्रि० विचविचाना, कम खाना।
किरण० ना० स्त्री० रश्मि, शुआ।
किरात० ना० पु० भील जातिविशेष, चिरायता।
किरातक० ना० पु० चिरायता।
किराना० स० क्रि० साफ करना, ना० पु० मसाला, औषधि वगैरह।
किरि० ना० पु० किरि शूकर।
किरिच० ना० स्त्री० तलवार टुकड़ा।
किरिया० ना० स्त्री० शपथ, सौगन्द, सौंह क्रिया।
किरीट० ना० पु० मुकुट, ताज।
किरीटी० ना० पु० अर्जुन ना० स्त्री० खासा दूसी औषधि, गु० मुकुटधारी।
किल० अव्य० निश्चित।
किलनी० ना० स्त्री० कीटविशेष।
किलकिल० ना० पु० वानरों का शब्द।
किलिम० ना० स्त्री० देवदारु।
किलकारी० ना० स्त्री प्रसन्नता से हँसना।
किलकारीमारना० अ० क्रि० प्रसन्नहोके जय जयकार करना, खूब हँसना।
किलकिलाना० अ० क्रि० चिल्चिलाहाना।
किल्ली० ना० स्त्री० गली कीला।
किल्विष० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह।
किसलय० ना० पु० नवीनपत्ता।
किशोर० ना० पु० तरुणअवस्था अर्थात् १६ वरषका लड़का।
किसनई० ना० स्त्री० खेताका काम।
किसान० ना० पु० चाकर, खेत करनेहारा, जाति विशेष।
कीचड़० ना० पु० कर्दम।
कीच० कीचड़० } ना० पु० कादा, चहला।
कीट० ना० पु० कीड़ा।
कीटमारी० कीटसारी० } ना० स्त्री० इसपादी पौधा।
कीड़ा० ना० पु० कीट, कृमि, किरम।
कीलनक० ना० पु० मुलहठी।
कीमा० स० क्रि० करना।
कीर० ना० पु० तोतापक्षी यथा कीरशुकी सर्वत्र्यमर।
कीरत० कीरति० } ना० स्त्री० कीर्ति, बड़ाई, तारीफ
कीर्तन० ना० पु० गाना, कीर्तन, कहना।
कीर्ति० ना० स्त्री० यश, स्तुति, नेकनामी।
कील० ना० स्त्री० लोहेका काग।
कीलना० स० क्रि० मन्त्र फूककर रोकना।
कीलो० ना० पु० लोहका काग।
कीलाल० ना० पु० जल, पानी।
कीश० ना० पु० वानर, बन्दर।
कु० अव्य० यह अक्षर जिस शब्द के प्रथम संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी बुरा, निंदित, कभी न्यून होताहै, पृथ्वी,

कुंवर० } नां० पु० कुमार।
कुंवारा० }
कुंवारी० ना० स्त्री० कुमारी।
कुआरा० ना० पु० बिनाब्याहा लड़का।
कुआरी० ना० स्त्री० कन्या, बिना बिवाही।
कुकन्या० ना० स्त्री० पृथ्वीकी कन्या विशेष श्री सीताजू, गु० दुष्ट कन्या।
कुकर्म० ना० पु० बुराकाम।
कुकर्मी० गु० कुकर्म करनेहारा।
कुक्कुट० ना० पु० मुरगा।
कुक्कुटाण्ड० ना० पु० सफेदमांदा, कुक्कुटका अण्डा।
कुक्कुटी० ना० स्त्री० मुरगियां, मुरगी।
कुकुरन्द० ना० पु० जंगली करोंदा।
कुक्रिया० ना० स्त्री० निन्दिताचरण, तुच्छकर्म।
कुगृह० ना० पु० खराघर, बुराघर।
कुघाट० ना० पु० बेडौल, बदसूरत, कुत्सितघाट, जहां घाट न हो।
कुघात० ना० स्त्री० कुसमय मारना, बुरीघात।
कुंकुम० ना० पु० केसर, जाफरान।
कुंकुमा० ना० पु० गुलाल भरने के लिये जो लाखका बनता है।
कुच० ना० पु० स्तन, चूचीं, उरोज।
कुचन्दन० ना० पु० पतंग जिससे कपड़ा रंगतेहैं।
कुचलना० स० क्रि० चूरकरना, मसलना।
कुचला० ना० पु० औषधि विशेष।
कुचिया० ना० स्त्री० तोलकी, कानका अग्रभाग।
कुचैला० गु० मैला।
कुचैना० गु० दुःख, अप्रसन्नता।
कुछ० सर्व० थोड़ा, रंचक।
कुज० ना० पु० मंगल, वृक्षादि, भौमासुर।
कुजाति० गु० नीचजाति, या नीच।
कुञ्चित० गु० छल्लेदारबाले, गमुवारेबाले।
कुञ्चिका० ना० स्त्री० कुंजी, ताली।

कुञ्ची० ना० स्त्री० कलौंजी।
कुञ्ज० ना० पु० वृक्ष लतादि रचित रमणीय स्थान, तंगगली, पक्षीविशेष।
कुञ्जर० ना० पु० हाथी, मुख्यप्रधान, रामायणे यथा, कपि कुंजरहि बोलिलेआये।
कुञ्जिका० } ना० स्त्री० ताली, चाभी।
कुञ्जी० }
कुटकी० ना० स्त्री० औषधि विशेष, कीटविशेष।
कुटज० ना० पु० इन्द्रयव।
कुटना० ना० पु० भडुआ, अ० क्रि० पिटना।
कुटनाना० स० क्रि० फुसलाना।
कुटनी० ना० स्त्री० दूती, नायिका।
कुटाना० स० क्रि० पिटाना।
कुटिल० गु० टेढ़ा, क्रूर।
कुटिलता० } ना० स्त्री० टेढ़ापन, क्रूरता।
कुटिलाई० }
कुटी० } ना० स्त्री० मढ़ी, झोपड़ी, एकान्त
कुटीर० } स्थान, छपिया।
कुटीरा० }
कुटुम० ना० पु० कुटुम्ब।
कुटुमी० ना० कुटुम्बी।
कुटुम्ब० ना० पु० कुनबा, घराना।
कुटुम्बी० ना० पु० गृहस्थ, घरवाला।
कुटेव० ना० स्त्री० कुभाव, कुचालि, बुरी रीत।
कुट्टनी० ना० स्त्री० कुटनी।
कुठार० ना० पु० फरसा, कुल्हाड़ा, तबर।
कुठारी० ना० स्त्री० कुल्हाड़ी, टांकी।
कुठाहर० ना० पु० कुसमय, बेमौका।
कुड़कना० } अ० क्रि० क्रोधयुक्त होकर के-
कुड़कुड़ाना० } हना, रिसाय के बोलना।
कुढ़ना० अ० क्रि० विलापकरना, कलपना, डाह करना, हसदकरना।
कुढ़ाना० स० क्रि० सताना, छेड़ना।
कुण्टन० ना० पु० स्योनावृक्ष।
कुण्ठित० गु० लज्जित, ठंढा, भोंथर।

कुण्ड० ना० पु० अग्निरक्षनेके लिये कृत्रिमकुण्ड, जलका विशेष स्थान, पति विद्यमान होते जार-ज पुत्र, गड्हा, तालाब।

कुण्डल० ना० पु० कर्णभूषण, घेरा, मण्डला मोती।

कुण्डलिया० ना० स्त्री० गोलाई, छन्दविशेष।

कुण्डलित० गु० गोलाकार, कुण्डलयुत।

कुण्डली० ना० पु० कचनार, गुरच।

कुण्डी० ना० स्त्री० कोंढ़ी।

कुतुप० ना० पु० दिनका आठवां मुहूर्त।

कुतर्क० ना० स्त्री० नीचविचार, बुरीदलील।

कुतर्की० गु० कुतर्क करनेहारा।

कुतर्ना० स० क्रि० दांतों से काटना।

कुत्तल० ना० पु० धरातल, रूपजमीन।

कुतिया० ना० स्त्री० कुत्तेकी स्त्री गु० कूतनेहारा।

कुतुक० ना० पु० कौतुक।

कुतूहल० ना० पु० कौतुक, चोप, उतावली, खेल, हँसी।

कुत्ता० ना० पु० कूकुर।

कुत्सा० ना० स्त्री० निन्दा, अवज्ञा।

कुत्सित० गु० निन्दित, नीच, बुरा, खराब, निषेधित।

कुदकना० अ० क्रि० उछलना, कूदना।

कुदरा० ना० पु० अस्त्र विशेष, जिससे लकड़ी चीरते हैं।

कुदराना० अ० क्रि० उछलना, कूदना।

कुदाना० स० क्रि० उछलाना, फँदाना।

कुदारि० } ना० स्त्री० मिट्टी खोदने का अस्त्र
कुदाला० } विशेष।

कुदृष्टि० ना० स्त्री० पापदृष्टि, बदनज़र।

कुदाल० ना० पु० कचनार।

कुधातु० ना० पु० लोहा रामयशे यथा, पारस परस कुधातु सोहाई।

कुधि० } गु० निर्बुद्धि, बुरीमति, बेसमझ।
कुधी० }

कुनटी० ना० पु० मनसिल।

कुनबा० ना० पु० कुटुम्ब, घराना, खानदान।

कुनीति० ना० स्त्री० कुचाल, कुरीति, अन्याय।

कुन्त० ना० पु० पानी, पवन, कमल, भाला, कराल, राजा विशेष।

कुन्तल० ना० पु० बाल, केश, सुनधार, बर्छी, हल, खेतजोतने का, राजा विशेष, वानर विशेष, कपटी।

कुन्तली० ना० पु० चिरपोटा।

कुन्तिज० ना० पु० युधिष्ठिरादि पाँडव।

कुन्ती० ना० स्त्री० पाण्डवोंकी माता।

कुन्द० ना० पु० श्वेतवर्ण, पुष्प विशेष, उज्ज्वल।

कुन्दन० ना० पु० उत्तमस्वर्ण, अच्छासोना।

कुपति० गु० दुष्टपति, दुष्टस्वामी, बुरामालिक।

कुपथ० ना० पु० कुमार्ग, कुराह, बुरीराह।

कुपथ्य० गु० जो पदार्थ पाचक न हो वा रोगी का उपकारी न होवे, बदहज़म।

कुपरामर्श० ना० पु० कुमन्त्रणा।

कुपात्र० गु० अयोग्य, नालायक।

कुपुरुष० गु० पुरुषार्थ रहित, बुरा।

कुपूत० ना० पु० कपूत, नालायक लड़का।

कुप्य० ना० पु० धातौ, रूपा।

कुप्पा० ना० पु० चर्मपात्र, बड़ापात्र चमड़े का जिसमें घी आदि रखते हैं।

कुप्पी० ना० स्त्री० छोटाकुप्पा।

कुब० ना० पु० कुबड़ा।

कुबजा० ना० पु० कुब्ज।

कुबड़० ना० पु० टेढ़ा।

कुबड़ा० गु० कुब्जा।

कुब्ज० गु० कुबड़ा, वक्रपृष्ठ।

कुब्जा० ना० स्त्री० कुबड़ा, टेढ़ी, कूबरी प्रसिद्ध।

कुबात० ना० स्त्री० निकृष्टवार्ता, बुरीबात।

कुमण्डल० ना० पु० धरामण्डल, राज्य।

कुमति० ना० स्त्री० मूर्खता, बदमती गु० उन्मत्त, मूर्ख।

कुमद० ना० पु० कुमुद।
कुमदिन ना० पु० फूल।
कुमार० ना० पु० बालक, राजपुत्र, स्वामि कार्तिक, यामरहित।
कुमारिका० } ना० स्त्री० कन्या, जिसको रजो
कुमारी० } धर्म नहीं भया, साधारण सुता, घीकुआरिपौधा।
कुमार्ग० ना० पु० कुपथ, बुरीराह।
कुमुद० ना० पु० फूल जो रात्रि को खिलता है और दिनको सम्पुटित होताहै उसको श्वेत कमलभी कहते हैं और रामदल में वानर विशेष था, चांदनी, मुदरहित।
कुमुदबन्धु० ना० पु० चन्द्रमा।
कुमुद्विनी० ना० स्त्री० कमलिनी।
कुम्भ० ना० पु० घड़ा, कलश, कलशा।
कुम्भक० ना० पु० कुम्हार, योगक्रियामें पवन पेट वा ब्रह्माण्डमें रोकनेको कहते हैं।
कुम्भकर्ण० ना० पु० रावणका छोटाभाई।
कुम्भकार० ना० पु० कुम्हार, कुलाल।
कुम्भज० } ना० पु० अगस्त्यमुनि।
कुम्भजात० }
कुम्भयोनिका० ना० स्त्री० गोमापौधा।
कुम्भधीर्य्य० ना० पु० रीठा।
कुम्भा० ना० पु० छोटाकुम्भ।
कुम्भिका० ना० स्त्री० कुम्भी।
कुम्भिनी० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी।
कुम्भी० ना० स्त्री० पौधा जो तालावों में पानी पर जमताहै, ना० पु० हाथी, कायफल, अगस्त्यमुनि।
कुम्भीनस० ना० पु० सांप।
कुम्भीपाक० ना० पु० नरकविशेष।
कुम्भीर० ना० पु० मगरमच्छ।
कुम्भीरणा० ना० स्त्री० निसोत।
कुम्हलाना० क० क्रि० मुरझाना,सूखना।
कुम्हार० ना० पु० जो मिट्टी के बर्तन बनाताहै।
कुम्हारी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष जो अपना घर माटीसे बनाता है।
कुयोग० ना० पु० दुष्टयोग, दुःखदायक ग्रह पड़ जाना, बुरासंयोग, बुराउपाय।
कुयोगी० गु० विषय मार्गी रामायणे यथा कुरूप कुयोगी ज्यों उरगारी, मोहविटप नहिं सकत उपारी।
कुरङ्ग० ना० पु० हरिण, मृग।
कुरण्टक० } ना० पु० पियाबासा।
कुरबक० }
कुरमा० ना० पु० कुनबा, घराना।
कुरारि० ना० स्त्री० सारसपक्षी।
कुरी० ना० स्त्री० समूह, घराना।
कुरीति० ना० स्त्री० कुचालि।
कुरीर० ना० स्त्री० बुरी, भद्दा।
कुरु० ना० पु० राजा विशेष जिसकी सन्तान में कौरव और पाण्डव थे, नवखण्ड पृथ्वी में से एक।
कुरुकेतु० ना० पु० दुर्योधन, युधिष्ठिर, राजा परीक्षित।
कुरुचि० ना० स्त्री० नीचवासना, बदहज़मी।
कुरुपति० } ना० पु० दुर्योधन, युधिष्ठिर,
कुरुराय० } परीक्षित।
कुरुवक० ना० पु० फूलविशेष।
कुरुवंश० ना० पु० राजाकुरुकी सन्तान।
कुरुक्षेत्र० ना० पु० पुण्यक्षेत्र जहांमहाभारतभयाथा।
कुरूप० गु० भोंडा, बदसूरत।
कुर्कुट० ना० पु० सेमर वृक्ष।
कुर्च्चा० ना० पु० कुञ्ज।
कुर्यालि० ना० स्त्री० पक्षी जब आनन्द में आकर पर भाड़ताहै।
कुल० ना० पु० वंश, घर, घराना।
कुलटा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, जो स्त्री परपति रमण करे अर्थात् पतिव्रता नहो।
कुलच्छा० ना० पु० वह सम्पदा जो कोई घरवालों से चुराके इकट्ठाकरे, पूंजी, धन।

कुलतारण० ना० पु० पुत्र जो कुलकी लाज रखता वा उद्धार करके पुत्रा का तारे।

कुलतिय० ना० स्त्री० पतिव्रत, स्त्री, यथा तिसरीला समशानवासा, दाहा, रहत न द्वार की कुरत कुलतिय आदि उपाय, जिनह हिग भ जाराति कुलकी सुजान जाय।

कुलद्रोही० गु० ना० मनुष्य कुकर्म करके वंश का अपमान करे या जो कुलका द्रोहक।

कुलधर्म० ना० पु० वंशव्यवहार, कुलदाधर्म।

कुलपूज्य० } ना० पु० कुलका देवता या पूज्य
कुलपूजक० } या पुरोहित।

कुलपत्नी० ना० स्त्री० कुलकी स्त्री, सुतिय।

कुलबुलाना० क्रि० अ० कुलमलाना, कुलकुलाना, कुलमलाना।

कुलवती० ना० स्त्री० कुलवन्ती, पतिव्रता।

कुलवन्त० } गु० जो अच्छे वंश उत्पन्न हुआ।
कुलवान्० }

कुलक्षण० ना० पु० कुचिह्न, कुस्वभाव।

कुलक्षणा० स्त्री० } जिसके लक्षण बुरे हों या है।
कुलक्षणी० गु० }

कुला० ना० स्त्री० मनसिल।

कुलांच० ना० स्त्री० कूद, फादनि, जस्त।

कुलांगना० ना० स्त्री० कुलवान् स्त्री कुलका गोरी।

कुलाचार० ना० पु० वंशकी धर्म, अपने कुल की रीति।

कुलाल० ना० पु० कुम्हार।

कुलाहल० ना० पु० कोलाहल।

कुलिश० ना० पु० वज्र, हीरा।

कुली० ना० स्त्री० कहीरबाई।

कुलीन० ना० पु० अच्छेघर का वंश में जो उत्पन्न भया।

कुलीनता० } ना० स्त्री० भलमंसी, आचार
कुलीनाई० } या अवस्था का उत्पत्ति, धर्म।

कुलीरशृंगी ना० स्त्री० ककरासिंगी।

कुल्ला० ना० पु० } मुख में जलको सिरांय के
कुल्ली० ना० स्त्री० } फेंकना।

कुल्हाड़ी० ना० स्त्री० कुठारी जिससे लकड़ी आदि काटते हैं।

कुल्हिया० ना० स्त्री० माटी का छोटा पात्र, कुल्ही।

कुवलय० ना० पु० कमल।

कुवादी० गु० कुत्सित, कुवाच्यवक्ता।

कुविन्दु० ना० पु० नीचजाति, बड़नतका।

कुविहंग० ना० पु० जुर्रा, श्येन, बाज।

कुवेर० ना० पु० यक्षराज, धनपति।

कुश० ना० पु० तृणविशेष जो अति पवित्र गिना जाता है, भरतजी का पुत्र, द्वीपविशेष, पानी, पृथ्वी के सात द्वीपों में से एक।

कुशमुद्रिका० ना० स्त्री० कुशकी मुंदरी अर्थात् पैंती जो यज्ञादमें पहिनते हैं।

कुशल० ना० पु० भलाई, कल्याण, चतुर।

कुशलता० ना० स्त्री० भलाई।

कुशलत्व० पु० कल्याण।

कुशलक्षेम० स्त्री० } खैरआफियत।
कुशलात०

कुशली० गु० सुखी, प्रसन्न, निपुण।

कुशासन० ना० पु० कुशका आसन।

कुशील० गु० शील रहित, बेमुरव्वत।

कुशेशय० ना० पु० कमल।

कुष्ठ० ना० पु० श्वेत कोढ़।

कुष्ठहन्तन० ना० पु० पँवार, चूर्ण।

कुषेय० ना० पु० लट्ठ, तलवार।

कुष्ठसूदन० ना० पु० सिरवाली।

कुष्ठी० कोढ़ी।

कुसङ्ग० ना० पु० बुरे लोगों का साथ।

कुसमय० ना० पु० कठिन समय, बुरे दिन आपत्त।

कुसरात० ना० स्त्री० कुशलात।

कुसीद० ना० पु० लाभके लिये ऋण देना।

कुसुदा० ना० पु० कायफल।

कुसुम० ना० पु० कुसुम फूल, कुसुम।

कुसुमशर० ना० पु० कामदेव।

कृतज्ञता० ना० स्त्री० गुणवाद, उपकार मानना, अहसान मानना।
कृतान्त० ना० पु० यमराज, सिद्धान्त।
कृतार्थ० गु० कृतकार्य, निहाल, अपराधी, मुक्त।
कृति० ना० स्त्री० काम करना।
कृत्तिका० ना० स्त्री० तीसरा नक्षत्र।
कृतिमरक० ना० पु० पाथ।
कृतिभंतार्ले० ना० पु० रसोन।
कृतिवासा०
कृत्तिवासा० } ना० पु० श्रीमहादेवजी।
कृत्या० ना० स्त्री० देवी, विशेष राक्षसी।
कृत्स्न० गु० अशेष।
कृदन्त० ना० पु० जो शब्द धातु से बना है।
कृपण० गु० सूम, कञ्जूस, अदाता।
कृपणता० ना० स्त्री० सूमी, कञ्जूसी, अदानृत्व।
कृपा० ना० स्त्री० दया, मेहरबानी, रहम।
कृपाण० ना० पु० खड्ग, तलवार।
कृपालु० गु० दया शील, दयावन्त, रहीम।
कृमि० ना० पु० कीड़ा।
कृमिघ्न० ना० पु० विडङ्ग ओषधि।
कृमिजग्धा० ना० पु० काला अगुरु।
कृश० गु० दुर्बल, क्षीण, लटा।
कृशता० ना० स्त्री० दुर्बलता, क्षीणता।
कृशाङ्गी० गु० जिसके अङ्ग सिखेहुये हैं।
कृशानु० ना० पु० अग्नि, आगि।
कृषाण०
कृषिक० } ना० पु० किसान खेतीवाला।
कृषिकर्म० ना० पु० हलजोतना, खेती करना।
कृषी० ना० स्त्री० खेती, किसनई।
कृषीबल० ना० पु० किसान, कृषाण।
कृष्ण० ना० पु० श्रीकृष्ण, श्यामसुन्दरजी, काला, जीरा, कालानीलर, कालाहरिण, गु० श्याम, कालारंग।
कृष्णगन्धा० ना० पु० सहिंजन वृक्ष।
कृष्णता० ना० स्त्री० घुघची, श्यामता।
कृष्णपक्ष० ना० पु० बदी, अँधेरा पाख।
कृष्णफला० ना० स्त्री० बाकुची, बकावरीदा।
कृष्णभद्रा० ना० स्त्री० कुटकी।
कृष्णवीर्य्य० ना० पु० तरबूज।
कृष्णवृत्तिका० ना० स्त्री० कम्भारी।
कृष्णसार० ना० पु० कालाहरिण।
कृष्णा० ना० स्त्री० नदी विशेष, जो दक्षिण भरतखण्ड में है, पीपरी, यमुनाजी।
कृष्णाग्रज० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
कृष्णागरु० ना० पु० काला अगुरु।
कृष्णाफल० ना० पु० स्याहमिर्चे।
कृष्णार्पण० गु० भगवान्हेत।
कृष्णोपकुल्या० ना० स्त्री० पीपरी।
कृसमरी० ना० स्त्री० कम्भारी।
कृत्रिम० गु० बनायाहुआ, रचित।
कें० अव्य० सम्बन्धबोधक।
केकयी० ना० स्त्री० भरतजी की माता।
केकड़ा० ना० पु० कर्कट, गेंगटा।
केकय० ना० पु० राजा वा देश विशेष।
केकरा० ना० पु० केकड़ा।
केका० ना० स्त्री० मोरध्वनि, मोरोंका शब्द।
केकी० ना० पु० मोर, मयूर।
केतकी० ना० स्त्री० केवड़ा वृक्ष वा पुष्प विशेष।
केतिक० गु० थोड़े, दोचार, कितना।
केतु० ना० पु० नवमग्रह, पुच्छलतारा, पताका झण्डा वा भण्डी।
केतुकि० ना० पु० आकाश, पुष्पविशेष, सूर्य, चन्द्रमा, कामदेव, इन्द्र।
केतुमाल० ना० पु० पृथ्वी नवखण्डों में से एक का नाम।
केन्द्र० ना० पु० मरकज, गोलाकार वा वृत्त-रेखका वह मध्यस्थान जहा से परिधि तक जितनी रेखा खींची जावें वह सब परस्पर तुल्यहों।
केयूर० ना० पु० आभूषण जेवर।
केरि० ना० पु० केला वृक्ष, ना० स्त्री० केलि।

केलि० } नाο स्त्री० क्रीड़ा, विहार, ऐश
केली० } आराम।
केवट० नाο पुο मल्लाह, खेवक।
केवड़ा० नाο पुο पुष्प वा वृक्षविशेष।
केवल० अव्य० मात्र, फक़त गुο एकही।
केवली० नाο स्त्री० जमपत्री।
केवा० सर्व० कोई।
केश० नाο स्त्री० बाल।
केशफला० नाο स्त्री० बेरी वृक्ष वा उसका फल यथा स्निग्धच्छदा केशफला सौवीरिका, इति निघण्ट।
केशर० नाο पुο केसर, नागकेसर।
केशरञ्जन० नाο पुο भंगरा पौधा।
केशरी० नाο पुο हनुमान्‌जी के पिता, सिंह।
केशव० नाο पुο श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम।
केशवेणी० नाο स्त्री० बालोंकी लट।
केशाकेशी० नाο पुο परस्पर बालों को पकड़ के लड़ना वा लड़ाना।
केशी० नाο पुο दैत्यविशेष जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने वध कियाथा गुο बालोंवाला।
केशरिया० गुο केशरसे रंगाभया, पीला।
केहरि० } नाο पुο सिंह, शेर, व्याघ्र।
केहरी० }
कै० सर्व० कितना, अनेक।
कैंचली० नाο स्त्री०सांपकी खोल।
कैटभ० नाο पुο दैत्यविशेष।
कैत० नाο पुο कैथाका वृक्ष।
कैतव० नाο पुο छिपावना, छल।
कैथ० } नाο पुο वृक्षविशेष।
कैथा० }
कैथी० नाο स्त्री० नागरीका एक प्रकारका लेख जो कायस्थों ने कल्पना किया है।
कैरव० नाο पुο कमल, श्वेतकमल।
कैल० नाο स्त्री० अङ्कुर, गाभा।
कैलाश० } नाο पुο पर्वतविशेष, जहां शिवजी
कैलास० } और कुबेरआदि यक्षगण रहते हैं।
कैव० नाο पुο कदम वृक्ष।
कैवर्त्त० नाο पुο मल्लाह, कहार, धीमर, केवट।
कैवल्य० नाο पुο मोक्ष, मुक्ति।
कैशिक० नाο स्त्री० बालों की लट।
कैसा० सर्व० किस प्रकार।
कैहाँ० भवि० क्रि०कहूंगा वा कहुंगा।
को० अव्य० कर्मविभक्ति द्वितीयाका, सर्व० कौन।
कोई० सर्व० अनिश्चय, एक, नाο पुο कमल विशेष।
कोऊ० सर्व० कोई कोइ।
कोचना०सο क्रि० कोंचना, चुभाना।
कोंपल० नाο पुο नयेपत्ते, गुच्छा।
कोक० नाο पुο ग्रन्थ विशेष जिस में स्त्री प्रसंग की प्रतिपादकता का वर्णन है, फरूल।
कोकनद० नाο पुο लाल कमल।
कोकर्ण० नाο पुο असगन्ध।
कोका० नाο पुο चकई चकवा, दूधभाई, फरूल पियहलजद।
कोकिल० } नाο स्त्री० पक्षीविशेष कोयल।
कोकिला० }
कोकी० नाο स्त्री० चकई।
कोख० } नाο स्त्री० कुक्षि।
कोखा० }
कोखबन्ध० गुο बांझ, बन्ध्या।
कोख० नाο स्त्री० पोल, कुक्षि।
कोछा० } नाο स्त्री० गोदी, ओढ़नेकी झोली।
कोछी० }
कोट० नाο पुο गढ़, क़िलअ, नगर।
कोटर० नाο पुο वृक्षकी खोह।
कोटवी० गुο नंगी स्त्री०, नाο स्त्री० बाणासुरकी महतारी।
कोटा० नाο पुο राजपूताने का नगर विशेष।
कोटि० नाο स्त्री० एक ओरकी भुज, पहिला पक्ष, क्रोड़, सौ लाख।
कोठरी० नाο स्त्री० छोटा कोठा।
कोठा० नाο पुο पटाहुआ एक बड़ा घर।

कोठि० ना० स्त्री० वस्तु।

कोठी० ना० स्त्री० महाजनों का रुपया जमा रखने और हुण्डी के लेन देन का स्थान।

कोढ़ना० स० क्रि० खोदना।

कोड़ा० ना० पु० चाबुक।

कोट० ना० पु० कोट, रँगमहल।

कोड़ाना० अ० क्रि० दुड़काना।

कोढ़ा० ना० पु० कदा।

कोण० ना० पु० कोना, दिन दुखा।

कोद० ना० स्त्री० ओर तरफ।

कोदण्ड० ना० पु० धनुष, धनु।

कोद्रव० ना० पु० धान्य, अन्न विशेष।

कोना० ना० पु० जो कि दो दिशा के मिलने से बनता है परन्तु वह स्थान एक दूसरे से न हो

कोप० ना० पु० क्रोध, गुस्सा।

कोपना० अ० क्रि० क्रोधित होना, गुस्सा करना, ना० स्त्री० रु।

कोपर०
कोपल० } ना० पु० पत्र विशेष।

कोपान्वित० गु० क्रोध, गुस्से भरा।

कोपी० गु० क्रोधी, कोपी।

कोपाल० ना० स्त्री० कोपल, सं ।

कोमल० गु० नम्र, नर्म भोला, नरम।

कोमलता० ना० स्त्री० नरमी, मुलायम।

कोयल० ना० स्त्री० पक्षी, विशेष, पुष्प विशेष।

कोयला० ना० पु० अंगार बुझा हुआ।

कोर० ना० स्त्री० किनार, छोर धार।

कोरन० ना० पु० कोर्ना।

कोरडी० ना० स्त्री० छोटा टोकरा।

कोरा० गु० जिसमें कुछ न लिखा हो, जिस किसी काम में न आया हो, मिट्टी का नया पात्र जो काम में न लाया गया हो।

कोर० ना० स्त्री० कोर, किनारा।

कोरी० ना० स्त्री० नई, ना० पु० जाति विशेष।

कोर्थ० सर्व० किस हेतु, किस लिये।

कोल० ना० पु० शूकर, जाति विशेष, लकड़ी का लम्बी लकड़ा।

कोलवल्लिका० ना० स्त्री० पैदा वृक्ष।

कोला० ना० स्त्री० गगरी।

कोलाफल० ना० पु० मदुआ वृक्ष।

कोलाहल० ना० पु० कलकल, शोर, शोर।

कोलिन्द० ना० स्त्री० कार्तिकेय।

कोलियाना० स० क्रि० गली में जाना।

कोल्हू० ना० पु० जिससे तेल निकालते हैं या ऊख पेरते हैं।

कोविद० गु० पण्डित बुद्धि।

कोश० ना० पु० कमल, म्यान।

कोशल० ना० पु० कुशल देश।

कोशलपति० ना० पु० दशरथ, श्रीरामचन्द्र, अवध भूप

कोशलपुर० ना० पु०
कोशलपुरी० ना० स्त्री० } श्री अयोध्याजी।

कोशलाधीश०
कोशलेश० } ना० पु० कोशलपति श्री रामचन्द्रजी।

कोष० ना० पु० खजाना, भण्डार, अण्ड, शब्दों की खान, शब्दार्थ बताने वाला ग्रन्थ।

कोष्ठ० ना० पु० स्थान, घर का कमरा।

कोष्ठक० ना० पु० कोठा।

कोस० ना० पु० २ मील या २००० दण्ड।

कोसना० स० क्रि० शाप देना, अपमानित।

कोह० ना० पु० क्रोध दुःख दाह, पर्व में आग लगना, दिल जलना।

कोहनी० ना० स्त्री० बाहु के बीच की गांठ।

कोहबर० ना० पु० जाहरखाना।

कोही० गु० क्रोधी क्रोध युक्त यथा, कर कुठार मैं अकरुण कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही॥

कौ० अव्य० का।

कौं० अव्य० को।

कौआ० ना० पु० काक।

कौच० ना० पु० मकड़ा, मकड़।

क्रूर० गु० कठोर, निठुर, कपटी, टेढ़ा।
क्रूरकर्मा० ना० स्त्री० ऊधाहोली।
क्रूरवार० ना० पु० शनैश्चर, मंगल, आदित्यवार।
क्रोध० ना० पु० कोप, गुस्सह, भैरवविशेष।
क्रोधातुर० } गु० कोपी, क्रोधमें अन्ध, क्रोधमें
क्रोधान्ध० } मस्त।
क्रोधा० गु० कोपी, गुस्सा भरामया।
क्रोश० ना० पु० कोस, दामील, दो हजार द ण्डकी माप।
क्रोष्टा० ना० पु० गीदड़, शृगाल।
क्लिशित० } गु० दु खित, पीड़ित, रमद।
क्लिष्ट० }
क्लीब० ना० पु० नपुंसक, हिजड़ा।
क्लेद० ना० पु० गीलापन।
क्लेदित० गु० भीगाभया, तर।
क्लेश० ना० पु० दु ख, पीड़ा, रंज।
क्लेशित० गु० दु खित, पीड़ित।
क्वचित्० अव्य० कहीं।
क्वटि० ना० स्त्री० पिण्डलज्वर।
क्वाण० ना० पु० वीणा।
क्वाथ० ना० पु० काढ़ाजोरोगीकोपिलायाजाता है।

[ख]

खं० } ना० पु० आकाश, स्वर्ग, घर, शून्य, रज
ख० } इंद्रिय।
खंखारना० अ० क्रि० खासना।
खगना० अ० क्रि० चमड़ाना, घटना।
खगालना० } स० क्रि० धोना, अनवासना।
खघारना० }
खग० ना० पु० पक्षी, मह, सूर्यादि, मेघ, पवन, देवता और तारागण।
खगकेतु०
खगनाथ०
खगनायक० } ना० पु० सूर्य, चद्रमा, गरुड़।
खगनाह
खगपति०
खगमाला० ना० पु० पक्षियों का समूह, तारागण।
खगहा० ना० पु० गैंड़ा, बाज़, जर्रा।
खगेन्द्र० } ना० पु० गरुड़, चन्द्रमा।
खगेश० }
खगोल० ना० पु० आकाशमण्डल।
खग्ग० ना० पु० वीर, बहादुर।
खचना० स० क्रि० रेखा करना, जड़ना।
खचर० ना० पु० खच्चर, पशुविशेष, मेघ, महादि।
खचा० } गु० जड़ाऊ, खिंचाहुआ।
खचित० }
खजुरिया० }
खजूर० } ना० स्त्री० वृक्षविशेष।
खजूरि० }
खञ्ज० गु० लगड़ा, ना० पु० खजन।
खञ्जन० ना० पु० पक्षीविशेष जिसे खड़ैचा वा खिंखिदा भी कहते हैं।
खञ्जनक० ना० पु० ममोला, खजन।
खञ्जरिट० } ना० पु० खजन।
खञ्जरीट० }
खट० ना० स्त्री० खाट।
खटक० ना० पु० खटका।
खटकना० अ० क्रि० शब्द होना, झगड़ना, लगना, शकाकरना।
खटका० ना० पु० सन्देह, शका, पावकीआहट।
खटकाना० स० क्रि० आहटदेना, शब्दकरना।
खटखटाना० अ० क्रि० ठकठकाना।
खटछपर० ना० पु० छपरखट।
खटपट० ना० पु० झगड़ा, लड़ाई।
खटमल० ना० पु० खाटमेंका कीड़ा।
खटाई० ना० स्त्री० अम्ल, खट्टापन, अचार।
खटाका० ना० पु० शब्द, पटाका।
खटास० ना० पु० खट्टापन, जन्तु विशेष।
खटिका० ना० स्त्री० सेलखड़ी।
खटिया० ना० स्त्री० छोटी खाट।

खटीक० ना० पु० जाति विशेष।
खट्टा० गु० अम्ल, अम्लन्।
खटिक० ना० पु० खटीक, आखेटकी।
खट्टू० ना० पु० बनिहार।
खट्वा० ना० स्त्री० खाट।
खड़क० ना० स्त्री० गोशाला।
खड़कना० अ० क्रि० झनझनाना।
खड़खड़ाना० स० क्रि० ठकठकाना, खरोंटा, मारना, झनझनाना।
खड़बड़ाहट० ना० पु० शब्द होना, आहट।
खड़सान० ना० स्त्री० सिलान जिसपर चाकू बनाते हैं।
खड़ा० गु० उठा, सीधा, अड़ा, ऊंचा, ठाढ़ा।
खड़ाऊँ० ना० पु० पादुका, कठनई।
खड़िया० ना० स्त्री० छुहीमिट्टी, दूधिय मिट्टी।
खड्ग० ना० पु० तलवार, गैंडा, अमरे यथा। गयडके खड्गखड्गिनी।
खण्ड० ना० पु० टुकड़ा, खांड, अध्याय, दिशा।
खण्डन० ना० पु० दूषण, मिटाना, काटना।
खण्डना० स० क्रि० दूषणदेना, तोड़ना, काटना।
खण्डनार्थ० गु० काटने के लिये।
खण्डिनी० ना० स्त्री० काटनेवाली।
खण्डपरशु० ना० पु० श्रीमहादेव।
खण्डर० ना० पु० ऊजड़, वीराना।
खण्डरना० स० क्रि० काटना, टुकड़े करना।
खण्डहल० ना० पु० ऊजड़ मकान, वीराना।
खण्डित० गु० काटागया, कमी, अपूर्ण।
खण्डितकरना० स० क्रि० बातकाटना, खण्डना।
खतिल० ना० पु० पोस्त या उसका छिल्का।
खत्ता० ना० पु० }
खत्ती० ना० स्त्री० } गड़हा जिसमेंअन्न भरते हैं।
खदिर० ना० पु० खैर, कत्था।
खदेड़० ना० स्त्री० खदेड़, अहेर।
खदेड़ना० स० क्रि० खदेड़ना, भगाना।
खद्योत० ना० पु० सूर्य, तारागण और जुगनू। कीट विशेष।
खन० ना० पु० खण्ड।
खनक० ना० पु० मूसा, चूहा।
खनकना० अ० क्रि० बजना, शब्दहोना।
खनन० ना० पु० खोदना।
खनना० स० क्रि० खोदना।
खपत० गु० जो बिकगया, स्त्री० बिकार।
खपना० अ० क्रि० बिकना, सूखना, ठहरना पैठना, समाना।
खपरा० ना० पु० घरछावने के लिये जो मिट्टी के बनते हैं।
खपरी० ना० स्त्री० शिरका ऊपरी भाग।
खपरैल० ना० स्त्री० घर जो खपरों से छायाहो।
खपाच० ना० स्त्री० बांसका टुकड़ा।
खपाना० स० क्रि० बिकवाना, पैठाना, भराना।
खपित० गु० जो बिकगया, स्त्री० बिकार।
खपुर० ना० पु० स्वर्ग, आकाश।
खप्पर० ना० पु० खोपड़ी, माटी का पात्र जिसमें योगी जलादि पीते हैं, अमेठी।
खब्बा० ना० पु० बाया हाथ।
खभारू० ना० पु० पेटमें आगि पड़ना, घबराहट
खम्बा० }
खम्भ० } ना० पु० स्तम्भ, थूनी।
खम्भा० ना० पु० स्तम्भ, थूनी।
खर० ना० पु० राक्षस, गधा, घास, कुत्ता अच्छा, तीक्ष्ण।
खरक० ना० पु० खड़क, गोशाला।
खरखरा० ना० पु० खरहरा।
खरपत्र० ना० पु० मरुवा, सुगन्धित पौधा।
खरबर० }
खरभर० } ना० स्त्री० घोड़े के दौड़नेका शब्द खलबली, शोरगुल, हुल्लड़, क्षोभ।
खरमञ्जरी० ना० स्त्री० ऊग।
खरयष्टिका० ना० स्त्री० खिरहटी।
खरल० ना० पु० औषध घिसने का पात्र।
खरहरा० ना० पु० घोड़ाआदि मलनेकी वस्तु विशेष।
खरहार० ना० स० क्रि० झारना, बुहारना।

खरा० गु० चोखा, श्रेष्ठ, अच्छा।
खराई० ना० स्त्री० सचाई, उत्तमता, सुख।
खरारि० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।
खरिक० ना० स्त्री० खड़क, गोशाला।
खरी० ना० स्त्री० सरसोंका पीना, गर्मी, अच्छी, खड़ा।
खरे० गु० खड़, डांड़, अच्छे।
खरोंट० ना० स्त्री० खरोंट, खतोट।
खरोचना०
खरोटना० } स० क्रि० नोचना, खसोटना।
खर्ज० ना० पु० रागोच्चारणका विशेष स्थान।
खर्जूर० ना० स्त्री० चांदी खजूरवृक्ष।
खर्जूरिका० ना० स्त्री० पिण्ड, खजूर।
खर्जूरी० ना० स्त्री० मसौली।
खर्पर० ना० पु० पीठ, शिर।
खर्व० ना० पु० तुच्छ, छोटा, वामन, भाषा में सौ अर्बको कहते हैं १००००००००००००।
खर्रा० ना० पु० मसौदा, टट्टर, खसरा, चिट्ठा, खसरा।
खर्राटा० ना० पु० सोनेमें घुर्राना।
खल० गु० दुष्ट, नीच, तुच्छ।
खलता० ना० स्त्री० दुष्टता।
खलबल० ना० स्त्री० हलचल।
खलबलाना० अ० क्रि० उबलना।
खलभली० ना० स्त्री० खलभर, हलड़।
खला० ना० स्त्री० पतुरिया, दुष्टिनि।
खलान० गु० खलोंका बहुवचन है।
खलारि० ना० पु० श्रीनारायण।
खलाऊ० ना० पु० निचान, पर्ती।
खलियार० ना० पु० खलिहान, खली।
खलियाना० स० क्रि० छीलना, उधेड़ना।
खलिहान० ना० पु० अन्न माड़ने वा गूंदने का स्थान विशेष पैरू।
खली० ना० स्त्री० तिलादि की गूद।
खलीता० ना० पु० जेब, फारसी शब्द है।
खल्वाट० ना० पु० कथा।
खस० ना० पु० घासविशेष।
खसकना० अ० क्रि० खिसकना, सरकना, हटना।
खसकाना० स० क्रि० सरकाना, हटाना।
खसखस० ना० स्त्री० सुगन्धित तृणविशेष।
खसना० अ० क्रि० धसना, गिरपड़ना, निकल पड़ना।
खसरा० ना० पु० बही, खरी, मुसर्ना।
खसाना० स० क्रि० गिराना, बिगाड़ना।
खसीमाल० ना० पु० पत्थर विशेष, गिलिमाला।
खांचा० ना० पु० टोकरा, पिंजरा विशेष।
खांड़० ना० स्त्री० शर्करा, शकर।
खांड़ना० स० क्रि० काटना, धुनना।
खांडा० ना० पु० खड्गविशेष।
खांसना० अ० क्रि० खखारना, ठांठा करना।
खांसी० ना० स्त्री० रोग।
खाजा० ना० पु० गैंडेका साग।
खाजु० ना० स्त्री० खुजली।
खाजा० ना० पु० मिठाई विशेष।
खाद० ना० स्त्री० मुख्पई।
खात० ना० पु० गर्त्त, गड्ढा, कूप, कुंआ।
खात० ना० पु० होजखाना, लेसडुबी, गड्ढा, रत्तैली खत्ता।
खाती० ना० पु० बढ़ई, खरादी।
खाद० ना० पु० गोबरादि, घूरा।
खाद्य० गु० खाने के योग्य जो वस्तु।
खाना० स० क्रि० भोजन करना, अ० क्रि० समाना, उपार्जन वा भोगकरना, ना० पु० भोजन।
खानि० ना० स्त्री० आकर, अर्थात, उत्पत्ति स्थान।
खानिज० गु० खानों की जो वस्तु।
खारक० ना० पु० छुहारा।
खारा० गु० लोना।
खारी० गु० छड़का नमक, सोडीला।
खाल० ना० स्त्री० चमड़ा, धौंकनी।

खेटक० ना० पु० अहेर, शिकार और अस्त्रविशेष।

खेटिक० ना० पु० वधिक, शिकारी।

खेत० ना० पु० क्षेत्र, समरभूमि, पुण्यक्षेत्र, वह भूमि जहां अन्नादि उपजता है।

खेचल० ना० पु० आकाशमण्डल।

खेती० ना० स्त्री० किसनई, गु० जोताऊ।

खेद० ना० पु० शोक, दु:ख, पश्चात्ताप।

खेदना० स० क्रि० खदेड़ना, सताना और पीड़ा करना।

खेदित० गु० दु:खित, पीड़ित, सतायागया।

खेरा० ना० पु० ऊजड़पुर, डीह।

खेरी० ना० स्त्री० लोहाविशेष, हल।

खेल० ना० पु० क्रीड़ा, जीवहलाव।

खेलना० स० क्रि० क्रीड़ाकरना, जीवहलाना।

खेवक० } ना० पु० नाविक, डाँड़ी और मल्लाह।
खेवट० }

खेवना० स० क्रि० डाँड़मारना, नावचलाना।

खेवा० ना० पु० उतराई, भाड़ा, पाठीन्दना, उतारा।

खेह० ना० स्त्री० राख, धूलि, खाक।

खैंच० ना० स्त्री० उत्ताड़।

खैंचना० स० क्रि० ऐंचना, कसना, तानना।

खैंचाखैंच० } ना० स्त्री० ऐंचा ऐंची, खैंचा खैंची।
खैंचाखैंची० }

खैर० ना० पु० कत्था।

खैला० ना० पु० दोहान, नयाबैल वा बछड़ा।

खोआ० ना० पु० खेड़, खरसी, दूध जो उबालके गाढ़ा कियाजाता है।

खोंसना० स० क्रि० खोंसना।

खोंखी० ना० स्त्री० खांसी।

खोंच० ना० स्त्री० चीर।

खोंचना० स० क्रि० घुसेड़ना।

खोंचा० ना० पु० मचान, झोंक।

खोंड़कल० ना० पु० गड़हा।

खोंता० ना० पु० घोंसला।

खोसना० स० क्रि० ठासना, घुसेड़ना।

खोखला० गु० चोंगला, खाली।

खोखली० ना० स्त्री० ऊपरका मकान, जो ठोस नहीं है।

खोज० ना० पु० ढूंढ़, यत्न, चिह्न, पहिचान।

खोजना० स० क्रि० ढूंढ़ना।

खोट० ना० स्त्री० दोष, अवगुण।

खोटा० गु० भगली, दोषी, झूठा, अधर्मी।

खोटाई० ना० स्त्री० भगलपन दोष।

खोदना० स० क्रि० गोड़ना, करकोलना।

खोना० स० क्रि० गँवाना, उड़ाना।

खोपड़ा० ना० पु० ललाट के ऊपर का अंग नारियल की गूदी।

खोपड़ी० ना० स्त्री० मस्तकके ऊपरका भाग छिलका।

खोपर० ना० पु० शिर।

खोपरा० ना० पु० खोपड़ा।

खोपरी० ना० स्त्री० खोपड़ी।

खोपा० ना० पु० नारियल का गोला, जूड़ा।

खोरि० ना० स्त्री० दोष, ग्लानि।

खोरी० ना० स्त्री० गली, मार्ग, दोष, ग्लानि।

खोल० ना० स्त्री० कोठी, ढकना, दोहर, गढ़ा।

खोलना० स० क्रि० प्रकट करना, बिछाना, उधेड़ना, लंगर उठाना।

खोह० ना० पु० गुफा, गड़हा, कन्दरा।

खौढ़० } ना० स्त्री० तिलक।
खौरि० }

खौलना० अ० क्रि० उबलना।

ख्यात० गु० प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, मशहूर।

ख्याति० ना० स्त्री० यश, धाक, शुहरत।

ख्यात्मापन्न० गु० कीर्त्तिमान्, नामी।

ख्याल० ना० पु० क्रीड़ा खेल।

(ग)

गँवाना० स० क्रि० खोना, उड़ाना, बहाना।

गंवार० ना० पु० गांवकावासी, कुपढ़।

गगन० ना० पु० आकाश, आसमान।

गगनचर० ना० पु० पक्षी, देवता, ग्रहादि।
गगरी० ना० स्त्री० कलशी, घड़ा।
गंगा० ना० स्त्री० भागीरथी नदी प्रसिद्ध।
गंगायमुनी० ना० स्त्री० कर्णभूषण विशेष।
गंगाद्वार० ना० पु० गंगोत्तरी, हरद्वार।
गंगाधर० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
गंगासागर० ना० पु० गंगा और समुद्र का संगम जहां कपिलदेव का स्थान है।
गंगेरुकी० ना० स्त्री० गंगेरुआ।
गंगोत्तरी० ना० स्त्री० गंगाजी के प्रकाश का स्थान जो बद्रीनाथ के आसन्न है।
गंगोदक० ना० पु० गंगाजल।
गच० ना० स्त्री० चूना, लेट।
गचपच० ना० स्त्री० उलट पलट।
गच्छ० ना० पु० मुकाम, चाल।
गज० ना० पु० हाथी, दो हाथ की माप।
गजकेसर० ना० स्त्री० नागकेसर।
गजकृष्णा० ना० स्त्री० गजपीपरि।
गजगामिनी० गु० जिसकी हाथीकीसी चाल हो।
गजगाह० ना० पु० झब्बेसहित हाथीका भूषण।
गजगौनी० गु० गजगमनी।
गजचिर्भटी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
गजही० अ० क्रि० गरजता है।
गजदन्त० ना० पु० हाथी को दांत।
गजपति० ना० पु० हाथियों का स्वामी अर्थात् राजा वा जिसके हाथी हों।
गजपाटल० ना० पु० कज्जल।
गजपाल० ना० पु० महावत, फीलवान्।
गजपिप्पली० ना० स्त्री० गजपीपरि।
गजभिषक्० ना० पु० सोंठि।
गजमुख० ना० पु० गणेशजी, हाथी का मुँह।
गजमोती० ना० पु० मोती जो हाथी के मस्तक में होता है।
गजरा० ना० पु० गाजरकापत्ता, फूलोंकी माला।
गजवदन० ना० पु० गणेशजी।
गजवुसा० ना० पु० केलावृक्ष।
गजानन० ना० पु० गणेशजी, हाथी का मुख।
गजाशन० ना० पु० पीपल, पीपरि।
गञ्ज० ना० पु० रोगविशेष जो शिरमें होता है।
गञ्जा० गु० जिसके शिरमें गञ्ज रोग होवे, ना० पु० गाजा, भाग, रोगविशेष।
गञ्जित० गु० नशायागिया।
गटपट० ना० स्त्री० उलट, पुलट, मिलित।
गटी० ना० स्त्री० समूह, रामचन्द्रिकाया यथा सब जात फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी, निघटी रुचि मीच घटीहू घटी जगजीव यतीन की छूटी तटी, अघ ओघ कि बैरी कटी विकटी निकटी प्रकटी गुण ज्ञान गटी, चहुँ ओर न नाचत मुक्ति नटी गुण धूर जटी जटि पंचवटी।
गट्टा० ना० पु० बताशे, मिठाई प्रसिद्ध।
गट्ठा० ना० पु० बड़ीगठरी।
गठना० अ० क्रि० जुड़ना, मिलना।
गठरी० ना० स्त्री० मोठ, मोटरी, फ़ुरुट।
गठाना० स० क्रि० सिलवाना, पैबंदलगवाना।
गठिया० ना० पु० गोन, गु० गाँठवाला।
गठीला० } गु० गाठोंवाला, गठाहुआ।
गठिहा० }
गड़क० } ना० स्त्री० मछली वा मछली वि-
गड़का० } शेष।
गड़गड़ाना० स० क्रि० गरजना।
गड़रिया० ना० पु० जाति विशेष जो भेंड़ पालते हैं।
गड़न० ना० स्त्री० धसन, दलदल।
गड़ना० अ० क्रि० धसना, पैठना, छिदना।
गड़बड़० ना० पु० गटपट, उलट पलट, हल चल।
गड़बड़ा० ना० पु० खलबली, मरोड़, गु० खड़-बड़ा, घबराया भया।
गड़बड़ाना० अ० क्रि० घबराना, खलबलाना।
गड़बड़ाहट० ना० स्त्री० हृदबड़ाहट, भय।

गद्देला० ना० पु० मोटा बिछौना वा जिसमें बहुत रूई भरकर पहिनते हैं।
गद्गद० गु० हर्षनाद, शोक वा आनन्दमें मग्न।
गद्दर० गु० अधपका।
गद्दी० ना० स्त्री० तकिया वा बिछौना वा आसन या राजा का सिंहासन, जातिविशेष।
गद्य० ना० पु० छन्दबिना वाक्य, वार्तिक।
गधा० ना० पु० गदहा।
गन० ना० पु० गण।
गनना० स० क्रि० गिनना, शुमारकरना।
गन्ध० ना० पु० पदमवृक्ष, स्त्री० बास, बूय।
गन्धक० ना० पु० औषधविशेष।
गन्धगर्भ० ना० पु० बेलवृक्ष।
गन्धमादन० ना० पु० पर्वतविशेष।
गन्धमूलक० ना० पु० कचूर।
गन्धमूलिनी० ना० स्त्री० कचूरभेद।
गन्धमूली० ना० स्त्री० रासना।
गन्धराज० ना० पु० चन्दन सुगन्धित, विशिष्ट पुष्प।
गन्धर्व० ना० पु० देवता, स्वर्ग के गायक।
गन्धर्वनगर० ना० पु० सामाय गन्धर्वलोक विशेष मुख्य आकाशमें जो चित्र विचित्र की मूर्ति दृष्टि आती हैं जब देरलक देखने से आख तिरमिरा जाती है।
गन्धर्वहस्तक० ना० पु० बेलवृक्ष।
गन्धवह० ना० पु० वायु, पवन, हवा।
गन्धसार० ना० पु० चन्दन।
गन्धा० ना० पु० नागदौन, पदमवृक्ष।
गन्धान० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
गन्धाग्रमा० ना० पु० गन्धक।
गन्धार० ना० पु० रागका स्वरविशेष।
गन्धारी० ना० स्त्री० दुर्योधनकी माता, श्वास जो वामाङ्ग में प्रकाशित होती है ज्ञानतरगे यथा, गन्धारी वामाक्षि नियासी, हस्त जिह्वा दक्षिण दिगनासी।
गन्ध्र० ना० स्त्री० बास, बूय, गमक।
गन्धिका० ना० स्त्री० आदृवेर।
गान्धकारिणी० ना० स्त्री० लजाल्।
गन्धिलुब्ध० गु० जो सुगन्धि के लालच में हो।
गन्धी० ना० पु० अत्तार, सुगन्धित तेल बेचने हारा।
गन्ना० ना० पु० ऊख, गाड़ा, खड़।
गप०
गपशप० } ना० स्त्री० बक, बकबक।
गप्पी० गु० बकवादी।
गभस्ति० ना० स्त्री० किरण, ज्योति।
गभीर० गु० गम्भीर।
गभुआरे० गु० छलेदार बाल, पेदायशीबाल।
गमन० ना० पु० चलन।
गमनागमन० ना० पु० जाना आना।
गमनी० ना० स्त्री० चलनेवाली।
गमनीय० गु० चलने के योग्य, चलनेवाला।
गम्भीर० गु० गहिरा, अरगाह।
गम्भीरता० ना० स्त्री० गहराई।
गम्य० गु० जानेके योग्य, मिलनहार।
गय०
गयन्द० } ना० पु० हाथी।
गया० ना० स्त्री० नगर वा तीर्थविशेष जहा हिन्दूलोग पुरुषों को पिण्ड देते हैं।
गयाली० ना० पु० गयावाल, गयाके ब्राह्मण।
ग्यारस० ना० स्त्री० एकादशी।
ग्यारह० गु० दश और एक ११।
गर० ना० पु० रोग, विष, गला।
गरगराना० अ० क्रि० कड़ीकरना, गरजना।
गरजना० अ० क्रि० घड़घड़ाना, शब्दकरना।
गरल० ना० पु० विष, हलाहल।
गरह० ना० पु० गठियावायु।
गरागरी० ना० स्त्री० देवदाली।
गरारी० ना० स्त्री० रस्सी वा सूत बटनेकायन्त्र, कूपसे जल निकालनेकी गोल काठकी वस्तु।
गरिमा० ना० स्त्री० गुरुता, गरुवई, अहङ्कार आठ सिद्धि में से एकका नाम।

गरी० ना० स्त्री० नारियलका गूदा, गरी।
गरु० ना० पु० गला।
गरुड़० ना० पु० पक्षी जो श्रीविष्णुका वाहन है।
गरुडाग्रज० ना० पु० सूर्य का रथवान्।
गरुता० ना० स्त्री० गुरुता, बड़प्पन।
गरुत्मान्० ना० पु० गरुड़, सफेद हंस।
गरुय० गु० भारी, बोझिल।
गर्ग० ना० पु० मुनिविशेष जो यदुवंशियों के पुरोहित थे।
गर्गज० ना० पु० दीवा, मढ़।
गर्ज० } ना० पु० उत्कट शब्द, गड़गड़ाहट।
गर्जन० }
गर्त्त० ना० पु० गढ़ा।
गर्द्दभ० ना० पु० गदहा।
गर्भ० ना० पु० पेट, आधार, हमल।
गर्भकण्टक० ना० पु० कटहल।
गर्भकर० ना० पु० पतिजिया यथा पुत्रजीव गर्भकर इतिनिघण्टु गु० गर्भकारक।
गर्भदास० ना० पु० मोलका दासी वा चेरा।
गर्भपात० गु० पेटका गिरना, हमलगिरना।
गर्भपाता० ना० पु० रीठा।
गर्भवता० ना० स्त्री० पेटसे गर्भिणी, गाभिन।
गर्भस्राव० ना० पु० गर्भपात।
गर्भित० गु० गर्भ अर्थात् पेट म रहनेवाला।
गर्व० ना० पु० अहङ्कार, दम्भ, गरूर।
गर्ववती० गु० स्त्री० अहङ्कारिन।
गर्वित० गु० अहङ्कारी, मगरूरी।
गर्हित० गु० निन्दित।
गल० ना० पु० गला, फांसी।
गलकना० अ० क्रि० गलना।
गलका० ना० स्त्री० फोड़ा विशेष, सगविशेष।
गलगण्ड० ना० पु० गण्डमाला।
गलगल० ना० पु० चकोतरा, पक्षीविशेष।
गलना० अ० क्रि० पिघलना, घुलना।
गलफटाकी० ना० स्त्री० बड़ाई, घमण्ड।
गलफड़० } ना० पु० गाल वा गालोंकामास।
गलफड़ा० }
गलग्राह० ना० स्त्री० गोदी।
गलसुई० ना० स्त्री० तकिया, सिराहना।
गलस्तनी० ना० स्त्री० बकरी।
गला० ना० पु० कंठ, शब्द।
गलाघोटना० स० क्रि० नटी दबाना, कठ तोड़ना।
गलाना० स० क्रि० पिघलाना।
गलाव० ना० पु० पिघलाव।
गलित० गु० पतित, द्रवाभूत, मग्न।
गलियाना० स० क्रि० बुराकहना, गालीदेना, बरबस भोजन कराना वा औषध धूमना।
गली० ना० स्त्री० छोटामार्ग।
गव० ना० स्त्री० दाव, घात, मौका, लाभ।
गवन० ना० पु० गमन।
गवरि० } ना० स्त्री० पार्वती।
गवरी० }
गवलद० ना० पु० भैंसा।
गवादिनी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
गवाश० ना० पु० कसाई, म्लेच्छ।
गवाक्ष० ना० पु० झरोखा, मुख्य बानर।
गवेधुका० ना० स्त्री० गंगेरुया।
गवैया० ना० पु० गायक, गानेवाला।
गव्य० गु० जो गाय से सम्बन्ध रखता हो यथा दुग्ध आदि।
गसना० अ० क्रि० बंधना, घिरना, रुकना।
गहगह० गु० घना, जोरसे।
गहन० ना० पु० झाड़ी, मह्य, पकड़ना, दुःख निष्फल, वन।
गहना० स० क्रि० पकड़ना, ग्रहणकरना, ना० पु० जेवर, गिरवा, भूषण।
गहनी० ना० स्त्री० सनपरास वालीपत्ती।
गहरा० ना० पु० गम्भीर।
गहरु० ना० पु० ढील, देर।

खर० } गु० घाबरा, रोकासा, घना, कठिन।
खर०

० अव्य० गया।

ंजा० } ना० पु० वृक्षविशेष की पत्ती या रस
ंझा० } आदि।

ांठना० स० क्रि० बांधना, वशमें लाना, सीयना।

ांठि० ना० स्त्री० ग्रंथि, गिरह।

ांड़ै० ना० स्त्री० गुदा, मूल, पुष्टी मिट्टी की जो वृक्ष म लगाते हैं।

गांडर० ना० स्त्री० तृणविशेष।

गाड़ा० ना० पु० इक्षु, गन्ना, ऊख।

गाडू० ना० पु० मनेसिया, लतिया, थैली।

गांव० ना० पु० ग्राम, पुर।

गावना० स० क्रि० गाना।

गांसना० स० क्रि० विरमाना, घेरना, बरमाना, पिरोना।

गांसी० ना० पु० तीरका फल, लोहा जो तीर म लगाते हैं।

गागर० ना० स्त्री० गगरी, कलशा, घड़ा।

गांगेय० ना० पु० भीष्म, सुवर्ण।

गाछ० ना० पु० वृक्ष।

गाज० ना० स्त्री० झाग, फेना, बिजुली, वज्र।

गाजना० अ० क्रि० हर्षितहोना, गरजना।

गाजर० ना० स्त्री० मूल, विशेष।

गाजाबाजा० ना० पु० नानाप्रकार से बाजा का शब्द।

गाड़० ना० पु० गड्ढा, गड्ढा, गर्त्त।

गाड़ना० स० क्रि० तोपना, समाधि देना, मिट्टी देना, लगाना।

गाड़ा० ना० पु० घात, गड्ढा, गीदा।

गाड़ी० ना० स्त्री० छकड़ा, लढ़ी, रथ।

गाढ़० ना० स्त्री० जंजाल, विपत्ति।

गाढ़ा० गु० मोटा, चतुर, कठिन, ना० पु० कपड़ा विशेष।

गाण्डीव० ना० पु० नाम उसधनुषका है जो अग्निदेव ने अर्जुनको दियाहै।

गाण्डीवधर० ना० पु० अर्जुन, पाण्डुपुत्र।

गात० ना० पु० शरीर, तनु, देह।

गाता० ना० पु० कागज जिससे पुस्तककी जिल्द बनाते हैं।

गाती० ना० स्त्री० एकप्रकारकी चादरका बांधना, पट्ट, ऊर्ध्ववस्त्र।

गात्र० ना० पु० शरीर, देह।

गाथक० ना० पु० गायक।

गाथना० स० क्रि० गूथना, गाना।

गाथा० ना० स्त्री० कथा, समाचार।

गाद० ना० स्त्री० तरछट, गोंद।

गादी० ना० स्त्री० गद्दी।

गाधि० ना० पु० विश्वामित्र के पिता।

गाधिनन्द० ना० पु० विश्वामित्रमुनि।

गाधिसुत० } ना० पु० विश्वामित्र मुनि।
गाधेय० }

गान० ना० पु० गीत, राग, भजन।

गाना० स० क्रि० अलापना, तानभरना।

गान्धार० ना० पु० राजाविशेष, रागका स्वर विशेष।

गाभ० ना० पु० गर्भ।

गाभा० ना० पु० केल के वृक्षका नयापत्र, नया, पत्ता।

गाभिन० ना० स्त्री० गर्भिणी।

गाम० ना० पु० गांव।

गामी० गु० चलनेवाला, रमनेवाला।

गाम्भीर्य० ना० पु० गम्भीरता।

गाय० ना० स्त्री० गौ।

गायक० ना० पु० गवैया, गानेवाला।

गायत्री० ना० स्त्री० मन्त्र विशेष, छन्द, कथा, महासिद्धि।

गायन० ना० पु० गवैया, गानेवाला।

गार० ना० स्त्री० गाली।

गारना० स० क्रि० निचोड़ना, धोना।

गार्हपत्य० ना० पु० अग्निभद्।

गारा० ना० पु० भीति बनाने के लिये बनाई हुई मिट्टी।

गारी० ना० स्त्री० गाली।

गारुड़ि० सांप, सांपका विष झाड़नेवाला, सूर काव्य यथा, हार भरि गारुडी पुकारतै आवत लहरि न जात फहीरी॥

गायरमत० ना० पु० पक्षी।

गाल० ना० पु० कपोल, रुखसार, बात।

गालव० ना० पु० मुनि विशेष।

गाला० ना० पु० रूई का फाहा, धुनी हुई रुई का गाला।

गाली० ना० स्त्री० अपमान का बोधक वाक्य, उबली।

गाह० ना० पु० ग्राह।

गाहक० ना० पु० खरीदार।

गाहना० स० क्रि० ढूढ़ना, दाबना, थाह लगाना, माड़ना।

गाहा० गु० गाथा, अवगाह, कथा ना० पु० छन्दविशेष।

गाहिगाहि० गु० ढूंढि ढूंढके।

गाही० ना० स्त्री० पांच, माडी, थाहा हुई।

गिजाई० ना० स्त्री० कीटविशेष।

गिचपिचिया० ना० पु० कचपिचिया।

गिटगिड़ाना० स० क्रि० गिड़गिड़ाना, खुशामद करना।

गिद्ध० ना० पु० पक्षी विशेष, करगिस।

गिनती० } ना० स्त्री० गणित,
गिन्ती० } गिनी, शुमार।

गिन्दुक० ना० पु० गेंद।

गिनना० स० क्रि० गणन, गिन्तीकरना।

गिरगिट० ना० पु० सरट, कृकलास।

गिरना० अ० क्रि० पड़ना।

गिरपड़ना० अ० क्रि० कूदपड़ना, झुकपड़ना।

गिरा० ना० स्त्री० सरस्वती, वाग्देवता, वाणी।

गिराना० स० क्रि० झोंकाना, पटकना, ढलकाना।

गिरि० ना० पु० अद्रि, पर्वत, पहाड़।

गिरिकद्रुक० ना० पु० महा नींब।

गिरिज० ना० पु० शिलाजित।

गिरिजा० ना० स्त्री० पार्वती।

गिरिजानन्द० ना० पु० गणेशजी।

गिरिधर० } गु० पर्वत उठानेवाला ना० पु०
गिरिधारी० } श्रीकृष्णचन्द्रजी, श्रीहनुमान्।

गिरिनाथ० ना० पु० श्रीशिवजी, सुमेरु, हिमाचल, हिमालय।

गिरिर० ना० पु० लक्ष्मा।

गिरिराज० ना० पु० श्रीशिवजी, हिमालय। गोवर्द्धन, सुमेरु, श्रीकृष्णजी।

गिरिवर० ना० पु० पर्वत, पहाड़।

गिरिसृष्ट० ना० स्त्री० गेरू।

गिरिसाह्वय० ना० पु० शिलाजीत।

गिरीश० ना० पु० श्रीसदाशिव, सुमेरु, हिमालय।

गिलट० ना० स्त्री० नसों की गांठ।

गिलहरी० ना० स्त्री० जीव विशेष जो वृक्षोंपर, रहता है।

गिलोय० ना० स्त्री० गुरुच।

गीजना० स० क्रि० मलना।

गीत० ना० पु० राग, गान।

गीता० ना० पु० कथा, अध्यात्मज्ञान, वा जिस पुस्तक में अध्यात्मज्ञान होवे, यथा भगवद्गीता, रामगीता।

गीदड़० ना० पु० शृगाल, सियार।

गीर्वाण० ना० पु० अमर, देवता।

गीला० गु० ओदा।

गीष्पति० ना० पु० बृहस्पति।

गुग्गुल० ना० पु० गूगुल।

गुंग० }
गुंगा० } गु० गूंगा, न बोला।

गुच्छा० ना० पु० घौर, घोचा, बाल, पो।

गुजरात० ना० पु० देशविशेष।

गुह्य० गु० छिपा, पोशीदः।
गुह्यक० ना० पु० यक्ष, कुबेर के दूत।
गुह्यकपति० ना० पु० कुबेर।
गुह्यस्थल० ना० पु० एकान्तस्थान वा छिपा अंग, यथा, भग।
गुंज० ना० स्त्री० गुंजा, घुंघची।
गुंजरना० अ० क्रि० दहाड़ना, गूजना।
गुंजान० गु० गाढ़ा, मोटा, घना, फारसी का शब्द है।
गुंजार० ना० पु० शब्द, दहाड़, गूंज।
गुंजारना० अ० क्रि० हुंकना, गूंजना, शब्द करना।
गुटकना० अ० क्रि० कू कू करना, कपोत का बोलना, निगलना।
गुटका० ना० पु० पुस्तक विशेष, वस्तुविशेष जिसको योगी मुख में रखकर लोप होजाते हैं मिठाईविशेष, चांदी की वस्तुविशेष जो मृतक की क्रिया में लगताहै, छोटी पोथी।
गुटकाना० स० क्रि० कपोतको बुलाना।
गुटकी० ना० स्त्री० हाथ पांव समेटना।
गुटिका० ना० स्त्री० गोली।
गुठली० ना० स्त्री० फलका बीज।
गुड़० ना० पु० ईखका जमाहुआ रस, मिष्टान्न।
गुड़गुड़ाना० अ० क्रि० गड़गड़ाना।
गुड़गुड़ी० ना० स्त्री० छोटा हुक्का।
गुड़पुत्रक० ना० पु० ऊख, गन्ना।
गुड़पुष्प० } ना० पु० महुआ।
गुड़फूल० }
गुड़ा० ना० पु० अंगूर, दाख।
गुड़ाकेश० ना० पु० अर्जुन, सदाशिवजी।
गुड़ाना० स० क्रि० खुदाना, खुदवाना।
गुड़िया० ना० स्त्री० खिलोना, कपड़ोंकी पुतली।
गुडूची० ना० स्त्री० गुरच।
गुड्डी० ना० स्त्री० कनकौआ।
गुद्दी० ना० पु० छिपनेका स्थान।
गुण० ना० स्त्री० विशेषण, स्वभाव, प्रवीणता, विद्या, डौल, क्षमा, रस्सी, धनुषकी पंचचरित्र यहसान।
गुणक० ना० पु० जिस अंक से गुणन करें।
गुणद० गु० गुणदाता, लाभकारी।
गुणन० ना० पु० गुणाकरना, जरब।
गुणना० स० क्रि० विचारना, गुणन करना।
गुणवती० गु० मादा० गुणवान्।
गुणवाचक० गु० गुण बतानेवाला।
गुणवान्० गु० प्रवीण, पुण्यवान्।
गुणज्ञ० गु० गुणी, ज्ञाता, चतुर।
गुणी० गु० प्रवीण, पुण्यवान्, विद्वान्, विचारी: ना० पु० सपेरा।
गुण्य० ना० पु० जिस अंक को गुणा करें।
गुथना० अ० क्रि० पिरोना।
गुथवां० गुथाहुआ।
गुद० ना० स्त्री० मलस्थान, गांड, गुदा।
गुदगुदाना० स० क्रि० सहलाना, गुदगुदाना।
गुदगुदाई० } ना० स्त्री० सहलाहट सुरसुरी।
गुदगुदाहट० }
गुदगुदी० }
गुदड़ी० ना० स्त्री० लागाहुआ वस्त्र, गुजरी, चौक, बाजार।
गुदा० ना० स्त्री० मलस्थान, गाड़।
गुदभंजन० } ना० पु० गांड़ मारना, इग- लाम।
गुदमर्दन० }
गुन० ना० पु० गुण।
गुनगाहक० ना० पु० गुनका चाहने वा जानने वाला, विद्याका प्रतिपालक।
गुनगुनाना० अ० क्रि० थोड़ा गरमहोना, और नाकसे बोलना।
गुनवन्त० } गु० गुणवान्।
गुनवान्० }
गुनह० ना० पु० दोष, पाप, कसूर, रामायणे यथा, गुनह लषणवर हमपर रोषू, कतहुँ सुधाई ते बड़ दोषू।

गुनाति० ना० स्त्री० मनमें कल्पना करना।
गुनो० गु० गुणी।
गुन्धनि० ना० स्त्री० गूंथनी, पोहावट।
गुप्त० गु० लुका, छिपा।
गुप्तार० ना० पु० छिपनी, लुकना, लुकाव।
गुप्तारघाट० ना० पु० अयोध्याजी में स्थान विशेष।
गुप्ती० ना० स्त्री० शस्त्रविशेष जो सोंटे में रखते हैं।
गुफा० ना० स्त्री० खोह, कन्दरा।
गुमाना० स० क्रि० घुमाना, गाड़ना।
गुमटी० ना० स्त्री० कपड़ा विशेष, कलश।
गुराई० ना० स्त्री० बड़प्पन, गोरापन।
गुरु० ना० पु० आचार्य्य, शिक्षक, बृहस्पति, पुरोहित, द्विमात्रिक अक्षर, गु० भारी, बड़ापनवाला।
गुरुतर० गु० अत्यंतभारी, अत्यन्तमान्य।
गुरुता० ना० स्त्री० बड़प्पन, आचार्य्यता।
गुरुपाक० ना० पु० जो वस्तु बहुत देरमें पचे।
गुरुमुख० ना० पु० जिसने गुरु किया है, शिक्षा या इष्टदेवता मन्त्र गुरुसे लिया, चेला।
गुरुमुखहोना० अ० क्रि० चेलाहोना, गुरु से इष्टदेवता का मन्त्र पाना।
गुरुयाइन० ना० स्त्री० गुरुकी पत्नी।
गुरुवार० ना० पु० बृहस्पतिवार जुमेरात।
गुर्जर० ना० पु० गुजराती या गुजरातदेश विशेष।
गुर्वादित्य० ना० पु० जब सूर्य और बृहस्पति एक राशि के होजाते हैं वह समय।
गुर्विणी० ना० स्त्री० गर्भवती, हामिल।
गुल० बुझाना, दीपकका ठंढाहोजाना।
गुलगुला० ना० पु० पकवान विशेष।
गुलाई० ना० स्त्री० गोलता, गोलाई।
गुलाब० ना० पु० वृक्ष वा उसके फूलोंका रस, तरह।
गुलाल० ना० पु० अबीर बुक्का जो शिशिरमें ऊपर डालते हैं।

गुलिक० ना० पु० मोती।
गुलिया० ना० स्त्री० शिरके पीछे का गड्ढा।
गुलेल० ना० स्त्री० धनुष जिसमें गुल्ला चलाते हैं।
गुल्याल० ना० पु० गलेल।
गुल्फ० ना० स्त्री० घींटी, एड़ीके ऊपरका भाग।
गुल्म० ना० पु० रोग विशेष, गुलाब, झाड़।
गुल्ला० ना० पु० गुलेला, माटीका छोटागोला।
गुल्लाला० ना० पु० पुष्पविशेष यह शब्द फारसी का है।
गुवाक० ना० पु० सुपारी का वृक्ष।
गुवालियर० ना० पु० देश या नगरविशेष।
गुष्टि० ना० स्त्री० सम्मति, सलाह, मित्रता।
गुह० ना० पु० रामिकासेवक, निषाद, मल।
गुहना० स० क्रि० गूथना।
गुहा० ना० स्त्री० गुफा, कन्दरा।
गुहाना० स० क्रि० गुथवाना।
गुहारि० ना० पु० ताड़कासुर, ना० स्त्री० सहायता, सहाय, मदद।
गू० ना० पु० गूह, विष्ठा।
गूंगा० गु० मूक, जो बात न करसके, ना० पु० तृणादि या साग, मिठाई विशेष।
गूंज० ना० स्त्री० शब्द, भिनभिनाहट।
गूंजना० अ० क्रि० गूंजरहना, भिनभिनाना।
गूंथना० } स० क्रि० पिरोना, लड़ियाना।
गूंदना० }
गूंदनी० ना० स्त्री० वृक्षविशेष या फल जो पश्चिम में ग्रीष्मकाल में होता है।
गूंधना० स० क्रि० सानना, गूथना, बिनना।
गूजर० ना० पु० नीचजाति विशेष।
गूजरी० ना० स्त्री० गूजरकी स्त्री, गहना विशेष जो पाव में पहिनाजाता है।
गूढ़० गु० सूक्ष्म, कठिन, गुप्त, भीतर।
गूढ़गिरा० ना० स्त्री० गुप्तवाणी गोलबातें, कठिन वचन।
गूढ़ता० ना० स्त्री० सूक्ष्मता, कठिनता, छिपाव।

गूढ़पत्र० ना० पु० करील, नागफली।

गूढ़पा० } ना० पु० साप, यथा, कुडलीगूढपा, चक्षु श्रवा काकोदर फणी इत्यमर।
गूढ़पात्० }

गूढ़ार्थ० गु० गुप्तअर्थ, कठिनअर्थ।

गूदड़० ना० पु० पुराना कपड़ा।

गूदा० ना० पु० भेजा, फलका साराश।

गूप० गु० गुप्त, छिपा।

गूमड़ी० ना० स्त्री० } गाठि।
गूमड़ा० ना० पु० }

गृञ्जन० ना० पु० प्याज, लहसुन, गाजा, गाजर वा गाजरका साग यथा, लशुनगृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनक इत्यमर पलाडुस्विड्वराहश्चचनाकश्रामकुक्कुटलशुनगृञ्जनचैवभुक्त्वाचान्द्रायणचरेत्, इति गर्गीजसुंदरे।

गृध्र० ना० पु० गिद्ध।

गृष्टि० ना० स्त्री० वाराहीकन्द।

गृह० ना० पु० घर।

गृहकन्या० ना० स्त्री० घीकुआरि।

गृहगोधिका० ना० स्त्री० विसुइया, छिपकली।

गृहस्थ० ना० पु० दूसरा आश्रम, घरवाला।

गृहस्थाश्रम० ना० पु० गृहस्थका व्यवहार।

गृहस्थी० ना० स्त्री० गृहस्थ का धर्म।

गृहिणी० ना० स्त्री० घरणी, भार्या, जोरू, चौलट।

गृही० ना० पु० गृहस्थ।

गृह्य० गु० जो ग्रहणकरने के योग्य है।

गेंदक० ना० पु० गेंदा।

गेंद० ना० स्त्री० खेलनेके लिये कपड़े वा सन आदि का गोला।

गेंगरा० ना० पु० केकड़ा, सरतार।

गेगली० ना० स्त्री० बोदली।

गेडुआ० ना० पु०, तकिया, सिरहाना, और टेंटी दारसोला।

गेरू० ना० स्त्री० गैरिक, लाल मिट्टी।

गेरुआ० गु० गेरूका रंगामया।

गेरुई० ना० स्त्री० जो गेहुओं में सरदीके कारण गेरूरग का रोग होजाता है गु० गेरूवा रग।

गेह० ना० पु० घर, तलाश, चाह।

गेहू० ना० पु० अन्नविशेष।

गेंहुआ० गु० गेहूके रग, ना० पु० घास विशेष।

गेंडा० ना० पु० जन्तु विशेष जिसकी हड्डी अति पवित्र होती है उसकी अगूठी, छल्ले, और तर्पण करने के पवित्र अर्घे का पात्र बनता है।

गया० ना० स्त्री० गाय।

गैरिक० ना० स्त्री० गेरू, पीतरा लालमिट्टी।

गैरेय० ना० पु० शिलाजीत।

गैल० ना० स्त्री० बाट, मार्ग।

गो० ना० पु० पद, सूर्य, जल, वज्र, स्वर्ग, खग, छन्द, ना० स्त्री० गाय, किरण, इन्द्रिया दृग

गोंडली० ना० स्त्री० वृक्ष विशेष।

गोंद० ना० पु० लासा, चप।

गोंदनी० ना० स्त्री० नरकट विशेष।

गोंदा० ना० पु० मिट्टी का गिलावा, चिड़िया के बुलानेके लिए लोई वा पेड़ा।

गोई० स० क्रि० भू, छिपाई, छिपी, ना० स्त्री० दो बैलादि के जोड़ को कहते हैं।

गोकण्डी० ना० स्त्री० बेरीवृक्ष का फल।

गोकर्ण० ना० पु० वितस्ति, मृगविशेष, खच्चर, गो का कान, साप श्रार शिवजीका स्थान प्रसिद्ध।

गोकर्णनाथ० ना० पु० श्रीशिवजीका तीर्थ विशेष।

गोकुल० ना० पु० नगरीविशेष, गोसमूह।

गोकुलेश० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र।

गोखुरु० ना० पु० गोखुर, भूषण विशेष।

गोचना० स० क्रि० पकड़लेना, गेहू चना।

गोचर० ना० पु० समक्ष, इन्द्रियज्ञान, गु० समर्थी।

गोचरी० ना० स्त्री० दशा, प्रकट।
गोजर० ना० पु० कनखजूरा।
गोजिका० } ना० स्त्री० गाभी।
गोजिहा० }
गोठ० ना० स्त्री० चौपड़ेयादि खेलनेका गुटिका अमलपत्ती, किनारी।
गोटा० ना० पु० किनारी।
गोटी० ना० स्त्री० शीतला, माता चेचक।
गोड़० ना० पु० पाद पिंडली, गु० सुदार।
गोड़ना० स० कि० खोदना, खुरचना।
गोड़िया० ना० पु० कहार, जाति विशेष।
गोड़ी० ना० स्त्री० चोरी।
गोण० ना० पु० खोपा, झाला, बोरा।
गोत० } ना० पु० गोत।
गोता० }
गोती० ना० पु० गोत्र, गोमल, गु० गोतवाला।
गोद० ना० स्त्री० कनिया, गोदी, खोरी।
गोदना० स० कि० चोंथना, चिह्नना।
गोदा० ना० पु० निशान, चिह्न, दबका।
गोदावरी० ना० स्त्री० नदीविशेष जो दक्षिण में है।
गोदी० ना० स्त्री० अकवार, कौंला, कनिया।
गोदोहनी० ना० स्त्री० दोहनी।
गोधम० ना० पु० गोवर, गायका धन, गोमल की प्रतिमा जो दीवाली को बनाते हैं।
गोधूम० ना० पु० गेहू, गोहू।
गोधूलि० } ना० स्त्री० सायङ्काल, सन्ध्या।
गोधारा० }
गोन० } ना० स्त्री० रज्जु।
गोनी० }
गोप० ना० पु० ग्वाल, कण्ठका भूषण, छिपा।
गोपग्वाल० ना० पु० अहीर।
गोपद० ना० पु० गायका खुर।
गोपन० ना० पु० छिपाव, दुराव।
गोपनीय० } गु० छिपाने के योग्य।
गोप्य० }
गोपाचल० ना० पु० ग्वालियर।
गोपाल० ना० पु० ग्वाल, अहीर, श्रीकृष्णचन्द।
गोपालपुर० ना० पु० मथुराजी वा जहां गंगा जी और गोमती का सगम भया है।
गोपिका० } ना० स्त्री० ग्वालों की स्त्रियां।
गोपी० }
गोपीनाथ० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
गोबर० ना० पु० गायकी विष्ठा, गोमल।
गोबरगनेश० गु० मोटा, भद्दा, भोंड़ा।
गोबरी० ना० स्त्री० मिट्टी और गोबर मिला हुआ लीपने के लिये बनाते हैं।
गोभी० ना० पु० वर्षा, नरसाला।
गोभी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, तरकारी विशेष।
गोमक्ता० ना० पु० गुमस्ता, यथा, पुनरुक्ता महाफक्ता गोमक्ता रामवर्णके इति निषद्ध्ये।
गोमती० ना० स्त्री० नदीविशेष।
गोमय० } ना० पु० गोबर।
गोमल० }
गोरटी० ना० स्त्री० गोरीस्त्री, सुन्दरी।
गोरमदायन० ना० पु० इन्द्रधनुष जो वर्षा में निकला करता है और सूर्य के सम्मुख होता है, रामचन्द्रिकायाम्, धनु है यह गोरमदायन नाहीं। शरधार वहै जलधार वृथाहीं।
गोरस० ना० पु० इन्द्रियोंका स्वाद, दूध, दही, मठा, आदि।
गोरसदायन० ना० पु० गोरमदायन।
गोरसी० ना० स्त्री० दोहनी।
गोरख० ना० पु० नारंगी।
गोरा० गु० गौर, उज्ज्वल।
गोरी० ना० स्त्री० उत्तम स्त्री, सुन्दरी।
गोरू० ना० पु० गाय बैल।
गोरोचन० ना० पु० गाय के मूत्र से उत्पन्न पीत वस्तु, गाय के शिर में से उत्पन्न औषध विशेष।
गोल० गु० गोल, चकरीला, ना० पु० भीड़।

गोलक० ना० पु० पति के मरने के उपरान्त जारजात, पुत्र, श्रांखका घर।
गोलकुण्डा० ना० पु० नगर विशेष दक्षिण में है।
गोलता० ना० स्त्री० गोलाई।
गोलरूप० गु० गोलाकार।
गोला० ना० पु० गोल वस्तु, खाता, घरन, लोहे का पिण्डा, जंगली कबूतर और नारियलका गूदा।
गोलाई० ना० स्त्री० परिधि, घेरा, गोलापन।
गोलाकार० गु० गोलरूप।
गोलाध्याय० ना० पु० सिद्धान्तशिरोमणि का एक प्रकरण।
गोलिका० ना० स्त्री० पति के मरने के उपरान्त जारजात कन्यका, गोली।
गोली० ना० स्त्री० छोटागोला।
गोलोक० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका विशेष स्थान।
गोलोमा० ना० स्त्री० बच औषध।
गोवना० स० क्रि० छिपाना, भूत, क्रिया, गोई।
गोवर्द्धन० ना० पु० पर्वत विशेष जो ब्रज में है।
गोविन्द० ना० पु० कृष्णचन्द्र, वेदलभ्य।
गोविन्दचन्द्रिका० ना० स्त्री० पुस्तक विशेष।
गोशाला० ना० स्त्री० गाय बैल रहनेका घर।
गोष्ठ० } ना० स्त्री० बांधनू, मेल, सम्मति,
गोष्ठी० } सलाह।
गोष्पद० ना० पु० गायका खुर।
गोसाईं० ना० पु० ईश्वर, तपी, सन्तोंका मार्ग।
गोसैयां० ना० पु० ईश्वर, परमात्मा।
गोहतनी० ना० स्त्री० दाख, अंगूर।
गोह० ना० स्त्री० बिसखपरा के डौलका जीव।
गोहरा० ना० पु० उपला।
गोहार० ना० स्त्री० हुल्लड़, रौला, सहायता, मदद।
गोहूं० ना० पु० गेहूं, गोधूम, अन्न विशेष।
गोहुअन० ना० पु० सर्प विशेष।
गोखुर० ना० पु० गोखुरू, पौधा विशेष।
गोत्र० ना० पु० वंश, घराना संज्ञा, पर्वत।
गोत्रघात० } ना० पु० निजकुल का मनुष्य
गोत्रवध० } मारना।
गोत्रज० ना० पु० गोती, सम्बन्धी, अपने घराने का।
गोत्रा० ना० स्त्री० धरती।
गोत्री० ना० स्त्री० गोतज।
गौ० ना० स्त्री० गाय।
गौं० ना० स्त्री० दांव, घात, औसर, लाभ।
गौंगीर० गु० घाती, दाव खेलनेहारा।
गौंगोह० ना० पु० जब गाय ब्यानी दूध नहीं देती है तब ग्वाल उसकी योनि में हाथ डालकर खड़ी करते हैं।
गौड़० ना० पु० देशविशेष, ब्राह्मण विशेष, कायस्थ जाति विशेष।
गौड़िया० ना० पु० गौड़देशवासी, चैतन्य का शिष्य।
गौड़ी० ना० स्त्री० गुड़की मदिरा, जहां गायें खड़ी होती हों।
गौण० गु० जो मुख्य नहीं, अर्थात् अप्रधान।
गौतम० ना० पु० मुनि विशेष, पर्वत विशेष।
गौथन० ना० पु० गायका स्तन।
गौदन्ती० ना० पु० हरताल या औषध विशेष।
गौदान० ना० पु० गायका दान।
गौना० ना० पु० बिवाह करके थोड़े दिनों में, स्त्री० को अपने घर लाना।
गौनहा० } ना० पु० गौने में दूलह के साथी।
गौनहार० }
गौमली० ना० पु० गोरोचन।
गौर० ना० पु० धववृक्ष, जाति विशेष, चिट्टा, शुक्लवर्ण।
गौरक० ना० पु० तीतरपक्षी, गेरू।
गौरण्ड० ना० पु० गोरा।
गौर्य्या० ना० स्त्री० भवानी, पार्वती।

गौरव० ना० पु० बड़प्पन, गुरुताई।
गौरा० ना० पु० चटक, चिड़ा, स्त्री० पार्वती।
गौरिया० ना० स्त्री० चिड़िया।
गौरिला० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
गौरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, हल्दी, रात, पार्वती, तुलसी, गोरोचन।
गौशाला० ना० स्त्री० गाइयों का स्थान।
ग्रथित० गु० बधाहुआ, पिरोयाहुआ।
ग्रन्थ० ना० पु० पुस्तक, पोथी, शास्त्र।
ग्रन्थकार० ना० पु० ग्रन्थकर्त्ता, कवि।
ग्रन्थनि० ना० पु० महासुगन्धी, केलाइस।
ग्रन्थि० ना० स्त्री० गाँठि।
ग्रन्थिक० ना० पु० पीपरामूल।
ग्रन्थिमान्० ना० पु० हरशिधार।
ग्रन्थिल० ना० पु० कारवृक्ष, करील।
ग्रस्त० गु० शब्द जो चबाय के कहा गया, खाया गया, धिराहुआ।
ग्रह० ना० पु० सूर्य्यादि नवग्रह, घर।
ग्रहण० ना० पु० हाथ में लेना, धर्मीकार, चन्द्रमा, सूर्य्य का ग्रहन।
ग्रहस्थापन० ना० पु० नवग्रहों को बैठाय के उनको आवाहन करना।
ग्रहीता० गु० ग्रहण करनेहारा।
ग्राम० ना० पु० गाव, पुर, स्वीकार, समूह, रामचन्द्रिकायां, गिरिग्राम ले लै हरिग्राम भरैं, मनोपथिनी पनदती निदौरैं।
ग्रामनर० ना० पु० गँवार गाववासी।
ग्राम्य० गु० गाव में जो उत्पन्नभया।
ग्रामीण० ना० पु० गाव में बसनहारा, गवार।
ग्राव० ना० पु० पत्थर, पर्वत।
ग्रास० ना० पु० कौर, लुक्मा।
ग्रासक० गु० घेरनवाला, रोकनेहार।
ग्रासना० स० क्रि० घेरना, रोकना।
ग्रासित० गु० घेरागया, नाशा।
ग्राह० ना० पु० मगर।
ग्राहक० गु० ग्रहणकरनेहार, धर्मीकारकर्त्ता।
ग्राही० गु० ग्राहक, लेनेवाला, स्त्री० नाकिन।
ग्राह्य० गु० जो ग्रहण करने के योग्य है।
ग्रीवा० ना० स्त्री० गला, गर्दन, गलेका पृष्ठभाग।
ग्रीष्म० ना० स्त्री० तपन, गरमी।
ग्रैवेय० ना० पु० गलके गहना, हमेल, माला आदि।
ग्लानि० ना० स्त्री० घृणा, लाज, थकाई।
ग्वाल० } ना० पु० पशुपालक, अहीर।
ग्वाला० }
ग्वालिनि० ना० स्त्री० अहीरिनि।
गवँड़् अव्य० समीप, पास।
गवँड़ा० ना० पु० नगर व गावका आसपास।

(घ)

घँघोरना० } स० क्रि० मथना, मिलाना, धोना
घघोलना० }
घँघरी० ना० स्त्री० लहगा।
घट० ना० पु० देह, मन।
घटक० ना० पु० मध्यस्थ, बिचवैया, सदृशी।
घटज० ना० पु० अगस्त्यमुनि।
घटना० अ० क्रि० मन्दाहोना, कमहोना, योग्यहोना।
घटनीय० गु० जो घटने के योग्य है।
घटयोनि० ना० पु० अगस्त्य मुनि।
घटा० ना० स्त्री० मेघोंका उमड़ना, मेघ, भीड़, दाग, भुकुरकुड़ी।
घटाटोप० ना० पु० पालकी वा रथका आच्छादन, गिलाफ, चारों ओर से घिरना।
घटाना० स० क्रि० कम करना।
घटाव० ना० पु० कमती।
घटावना० स० क्रि० घटाना।
घटिका० ना० स्त्री० घड़ी, मुहूर्त, एँड़ी के ऊपर का भाग।
घटित० गु० योग्य, गम्य।
घटिया० गु० थोड़े मोलका, सस्ता, घाटिदेनेहारा, धोखा देनेहारा, कृपणी।
घटी० ना० स्त्री० न्यूनि, हानि, कमी, घड़ी।

घट्यादि० ना० स्त्री० घड़ा आदि।
घड़घड़ाना० अ० क्रि० गरजना।
घड़ा० ना० पु० कुम्भ, घट, कलश मिट्टी का।
घड़िया० ना० स्त्री० कुल्हिया, मधुमक्खी का छत्ता, कोसा, घियाली।
घड़ियाल० ना० पु० मगर, ग्राह, घण्टा।
घड़ियाली० गु० घण्टा बजानेहारा।
घड़ी० ना० स्त्री० साठिपल, समय मापने का यन्त्रविशेष।

घड़ौंच० ना० पु० घड़ौंची० स्त्री०	तिकठी, तिपाई, पानी का घड़ा रखने के लिये काठ रचित वस्तु।

घणा० गु० घना।
घण्टा० ना० स्त्री० बाजा विशेष, अढ़ाईदण्ड।
घण्टालिक० ना० स्त्री० मधुवक्त्र पक्षी।
घण्टाली० ना० स्त्री० छोटा घण्टा।
घन० ना० पु० घना, मेघ, गु० घना, दृढ़, विस्तार, मूर्त्ति ना० पु० लोहार का बड़ा हथौड़ा।
घनक० ना० पु० तमालू पौधा।
घनगरज० ना० पु० गर्जन, गु० ऊंचा शब्द।
घनघनाना० अ० क्रि० झनझनाना, भहराना।
घनघोर० ना० पु० घटा, घेरा, घन गर्जन।
घनतनवर्ण० गु० जिसका वर्ण मेघ के समान हो, ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
घनरस० ना० पु० जल, पानी।
घनश्याम० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी, गु० काली घटा।
घनस० ना० पु० पक्षी विशेष।
घनसार० ना० पु० कपूर, जल, चन्दन।
घना० गु० घिचपिच, बहुत।
घनासन० ना० पु० भैंसा।
घनाह्व० ना० पु० नागरमोथा।
घनेरा० गु० बहुत, अधिक।
घबराना० अ० क्रि० व्याकुल होना, हड़बड़ाना।
घबराहट० ना० स्त्री० व्याकुलता, हड़बड़ी।
घमण्ड० ना० पु० गर्व्व, अहङ्कार, गरूर।
घमण्डी० गु० अहङ्कारी, मगरूर।
घमरौल० ना० स्त्री० रोला भीड़।
घमसान० ना० पु० युद्ध, लड़ाई।
घमाघम० गु० कचाकच।
घमाना० स० क्रि० धूप खिलाना, धूप में खड़ा होना।
घमासान० ना० पु० घमसान।
घमोई० ना० पु० तृणविशेष।
घर० ना० पु० गृह, मकान।
घरजई० ना० स्त्री० घाघरा, बेड़ा।
घरना० स० क्रि० गढ़ना।
घरनी० ना० स्त्री० स्त्री।
घरबार० ना० पु० घराना।
घरबारी० ना० स्त्री० गृहस्थ।
घराना० ना० पु० कुटुम्ब, घर के लोग।
घरामी० ना० पु० छवैया।
घरी० ना० स्त्री० लपेटे हुए कपड़ा की गठरी, तह लगे हुये कपड़े, घड़ी।
घरैला० गु० घर का पालतू।

घरौंदा० घरौर० घरौआ०	ना० पु० छोटा घर जो लड़के खेलने के लिये बनाते हैं वा जिस में खिलौना रखते हैं।

घर्घर० ना० पु० चक्की आदि का शब्द।
घर्घरा० ना० स्त्री० घाघरा।
घर्म० ना० पु० प्रस्वेद, जलन, धूप, घाम, घाल।
घर्षण० ना० पु० घिसना, रगड़ना।
घलुआ० ना० पु० रूख वा घाता जो तौल से अधिक लिया जाता है।
घवरि० ना० स्त्री० गुच्छ, गुच्छा।
घसन० ना० पु० घर्षण।
घसना० स० क्रि० घिसना, रगड़ना।
घसियारा० ना० पु० घास काटनहारा।
घसियारिन० ना० स्त्री० घसियारे की नारी।

घसीटना० स० क्रि० खींचना, ढकेलना।
घसीटा० स० क्रि० जो ढकेला गया।
घसीला० गु० तृणस्थान, जहां घास हो।
घहराना० अ० क्रि० गरजना।
घाई० ना० स्त्री० घात, अंगुली का मध्यस्थान
 ठठ वा ठाठ का धोखा।
घाईं० ना० स्त्री० ओर, पक्ष।
घाघ० ना० पु० प्राचीन, चतुर, गु० बाजीगर, इन्द्रजालिक।
घाघरा० ना० पु० लहंगा, पौधाविशेष, नद विशेष।
घाट० ना० पु० नदी या तालाब में उतरने वा स्नान करनेका स्थान, पर्णोपदेशका पर्वत, ढील, घगी, गु० न्यून।
घाटा० ना० पु० घटाव, घगी।
घटिया० ना० पु० घाट परका ब्राह्मण, जो स्नान करनेवाले के कपड़े बचाते हैं।
घाटी० ना० स्त्री० पर्वतों में संकेत मार्ग।
घात० ना० स्त्री० दया, मार, दाव, हला, ओर।
घातक० गु० हत्यारा, शत्रु, मारनेवाला।
घाता० ना० पु० रूख, मोल वा तोल से अधिक लेना।
घातिनी० ना० स्त्री० हत्यारिन, मारनेवाली।
घाती० गु० दाव लेनेवाला, मारनेवाला।
घातुक० गु० अपकारी, निठुर, हत्यारा।
घान० ना० पु० उखली वा चक्की आदि में जितना एक बार डालते हैं, विवाह में कर्म विशेष।
घानी० ना० स्त्री० तिल आदि, कोल्हू, चर्बी।
घायड़ा० } घायरा० } गु० व्याकुल, हैरान।
घाम० ना० पु० धूप।
घामड़० गु० भोला, उल्लू, अहमक।
घायल० गु० हथियार लगने से जिसके घाव भया।
घाल० ना० स्त्री० बुराई, बिगाड़।
घालक० गु० बधिक, हन्तक, मारनेवाला।
घालन० ना० पु० हनन, बधन, मारण।
घालना० स० क्रि० बिगाड़ना, उजाड़ना घुसेड़ना, मारना, पटकना।
घालित० गु० माराहुआ, उजाड़ाहुआ।
घाव० ना० पु० चीरा, जख्म।
घास० ना० स्त्री० तृण, खर।
घासी० } घासू० } गु० घासवाला।
घिघियाना० अ० क्रि० आधीना करना, लड़खड़ाना, मिनमिनी करना।
घिचपिच० गु० घना, आसपास।
घिन० ना० स्त्री० घृणा, असह, तबाखुन।
घिनाना० अ० क्रि० कुढ़ना, असह, देख के ऊबना।
घिनौना० गु० जिस को देखकर घिन आवे।
घिया० ना० स्त्री० तुरई, तरकारी विशेष।
घिरना० अ० क्रि० घेरे में पड़ना, उमड़ना।
घिरनी० } घिरणी० } ना० स्त्री० गरारी, गिर्री, कमीन विशेष, चरखी।
घिराना० स० क्रि० घेरा करवाना।
घिसना० स० क्रि० रगड़ना, खियाना, स० क्रि० मलना।
घिसाना० स० क्रि० रगड़ना, मलाना।
घिसाव० ना० पु० } घिसावट० स्त्री० } रगड़, रगड़ावट।
घिसियाना० स० क्रि० घसीटना।
घीकुवार० ना० स्त्री० औषध पौधा विशेष।
घुंघुची० ना० स्त्री० वेलिविशेषफल की बीज।
घुंघुरू० ना० पु० चौरासी, पैजा।
घुटुआ० ना० पु० जानु गांठि पांव की।
घुण्डी० ना० स्त्री० वस्त्र आदि की गोल वस्तु यथा अंगरखे में होती है।
घुटना० ना० पु० ठेहुना, जानु, अ० क्रि० पिसना, सांस रुकजाना।

घुटाना॰ स॰ क्रि॰ मुड़ाना, चिकना करना।
घुड़॰ ना॰ पु॰ घोड़ा।
घुड़कना॰ ग्र॰ क्रि॰ दबकाना, धमकाना, झिड़कना।
घुड़की॰ ना॰ स्त्री॰ धमकी, झिड़की।
घुड़चढ़ा॰ ना॰ पु॰ असवार, सवार।
घुड़बहल॰ ना॰ स्त्री॰ चौपहिया गाड़ी जिस में घोड़े मचते हैं।
घुन॰ ना॰ पु॰ कीट विशेष, ढोला।
घुना॰ गु॰ जिस में घुन लग गया।
घुनाक्षर॰ ना॰ पु॰ घुन कृत अक्षर।
घुनिया॰ गु॰ घना, कपटी।
घुमरी॰ ना॰ स्त्री॰ तिमिरी।
घुमाना॰ स॰ क्रि॰ फिराना, फेरना, बहकाना।
घुरकना॰ स॰ क्रि॰ घुड़कना।
घुरूका॰ ना॰ पु॰ भीमसेन का पुत्र जो हिडम्बी से उत्पन्न था जिस को घटोत्कच भी कहते हैं।
घुलना॰ ग्र॰ क्रि॰ गलना, पिघलना, नम्र हो जाना, दुर्बल होना।
घुलाना॰ स॰ क्रि॰ पिघलाना, गलाना।
घुलावट॰ ना॰ स्त्री॰ पिघलावट।
घुसना॰ ग्र॰ क्रि॰ पैठना।
घुसपैठ॰ ना॰ स्त्री॰ पहुंच।
घुसाना॰ स॰ क्रि॰ पिलाना, पैठाना।
घुसेड़ना॰ स॰ क्रि॰ ठासना, खोंसना।
घूगनी॰ ना॰ स्त्री॰ उसना, चना, गेहूं।
घूंगर॰ ना॰ पु॰ लहराये हुये बाल।
घूंगी॰ ना॰ स्त्री॰ घोंघी, छोटा घोंघा।
घूंघट॰ ना॰ पु॰ ओढ़ना, नक़ाब।
घूंघर॰ ना॰ पु॰ घूंगर।
घूंघरू॰ ना॰ पु॰ नूपुर।
घूंटना॰ स॰ क्रि॰ निगलना, खोलना।
घूंस॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ा चूहा।
घूंसा॰ ना॰ पु॰ घुसा, थप्पड़, मुका।

घूघू॰ ना॰ पु॰ पक्षीविशेष, पाण्डुर।
घूट॰ ना॰ पु॰ पानी की खिलावट।
घूटना॰ स॰ क्रि॰ घूरना।
घून॰ ना॰ पु॰ द्वेष, कपट, द्रोह, लाग।
घूना॰ गु॰ कपटी, द्रोही।
घूमना॰ ग्र॰ क्रि॰ फिरना, चक्करदेना, लौटना।
घूर॰ ना॰ पु॰ खाद, कूड़ा, ताक।
घूरची॰ ना॰ स्त्री॰ उलझेन्न।
घूरना॰ स॰ क्रि॰ ताकना, कोप से देखना।
घूस॰ ना॰ स्त्री॰ घूस, उत्कोच, रिशवत।
घूसत॰ ना॰ पु॰ उल्लू का बच्चा।
घूसा॰ ना॰ पु॰ थप्पड़, मुका, मुक्की।
घृणा॰ ना॰ स्त्री॰ घिन, ग्लानि।
घृणि॰ ना॰ स्त्री॰ किरण।
घृत॰ ना॰ पु॰ घी।
घृताची॰ ना॰ स्त्री॰ मुख्य अप्सरा।
घृताक्त॰ गु॰ चिकना।
घृष्टि॰ ना॰ पु॰ शूकर, वाराह।
घेंटा॰ ना॰ पु॰ } शूकर का बच्चा।
घेंटी॰ स्त्री॰ }
घेगा॰ } ना॰ पु॰ गले में रोगविशेष।
घेघा॰ }
घेतला॰ ना॰ पु॰ जूती विशेष।
घेर॰ गु॰ रूखा, घुमघुमाव, गोलाकार, ना॰ पु॰ फेर।
घेरना॰ स॰ क्रि॰ रूधना, गासना।
घेरा॰ गु॰ जो रोंका गया, ना॰ पु॰ कुण्डल, मण्डल, दावा।
घेवर॰ ना॰ पु॰ मिठाई विशेष।
घोंघा॰ ना॰ पु॰ शङ्ख वा घोंघा जन्तु नि॰ जन्तु का घर विशेष।
घोंसला॰ ना॰ पु॰ पक्षी का घर, खोंता।
घोकना॰ } स॰ क्रि॰ रटना, याद करना।
घोखना॰ }
घोघी॰ ना॰ स्त्री॰ वस्त्र विशेष जो कम्बल आदि से बनाते हैं।

घोणा० ना० स्त्री० नाक, नासिका, यथा (घोणे घ्राणगन्धवहा घाणा नासा च नासिका) इत्यमर।

घोट० ना० स्त्री० चिकनाहट, आप।

घोटक० ना० पु० घोड़ा, यथा (घोटके वीति तुरगतुरगाश्वतुरङ्गमा) इत्यमर।

घोटना० स० क्रि० मलकर चिकना करना, घु टना ना० पु० पाषाणआदिका वस्तु जिस से चिकनाते हैं।

घोटा० ना० पु० काष्ठादिका वस्तु जिससे घोटते हैं ना० स्त्री० सुपारी।

घोड़ा० ना० पु० अश्व तुरग।

घोर० ना० पु० शब्द, भय धड़का गु० भयानक, कठिन, कड़ा।

घोरनिद्रा० ना० स्त्री० सुखनाद, बड़ानाद।

घोरफन्ना० ना० स्त्री० गोह।

घोल० ना० पु० मट्ठा, छाछ।

घोलना० स० क्रि० मिलाना।

घोष० ना० पु० अहीरों का गाव, गाय, ग्वाल।

घोषणा० स० क्रि० अभ्यास करना, याद करना, प्रसिद्ध रूप से जनाना।

घोषा० ना० स्त्री० सौंफ, विडङ्ग।

घोस० ना० पु० घास।

घोसी० ना० पु० ग्वाल अहीर।

घौड़ि०
घौरि० } ना० स्त्री० गुच्छा, घवरि।

घ्राण० ना० पु० नाक गन्धका ग्रहण।

घ्राणेन्द्रिय० ना० स्त्री० नासिका, नाक।

[च]

चँवर० ना० पु० चमर।

चक० ना० पु० चकवा पक्षी, जिस भूमि पर अपना अधिकार हो।

चकचका० गु० स्वच्छ निर्मल, तेजोमय।

चकडुआ० ना० पु० चकडुल, आनन्द।

चकता० ना० पु० चिह्न, निशान।

चकती० ना० स्त्री० फाक थगली, पैबंद।

चकनाचूर० ना० पु० चकरन, छीला, चूर, चूर्ण।

चकल्लस० ना० स्त्री० चकल्लसा, मगनता, तमाशा।

चकल्लसी० गु० चकल्लसवाला, मग्न।

चकला० ना० पु० वेश्या का घर, वस्त्रविशेष जो पाट और सूत से बनता है, देश का खण्ड जिसमें कई परगना होते हैं, गु० चौड़ा।

चकलाई० ना० स्त्री० चौड़ाई।

चकवा० ना० पु० राजहंस जाति के पक्षी विशेष।

चकवी० ना० स्त्री० चकवा की स्त्री।

चका० ना० पु० पहिया, चक्र, कुलाल जिसपर बर्तन बनाता है।

चकाचौंध० ना० स्त्री० दृष्टिका तिरमिराना।

चकाबू०
चकाव्यूह० } ना० पु० चक्रव्यूह।

चकित०
चक्ृत० } गु० अचम्भित, भूलामया वा भयकरके।

चकोतरा० ना० पु० गलगल फलविशेष।

चकोर० ना० पु० पक्षी विशेष।

चकवै० ना० पु० राजा चक्रवर्त्ती।

चक्कर० ना० पु० दही, गाड़ी का पहिया।

चक्कान० गु० गाढ़ा जमाहुआ।

चक्कास० ना० पु० मुनियों का घर।

चक्की० ना० स्त्री० दलनी, जिससे आटा पीसते हैं।

चक्कू० ना० पु० छुरी चाकू।

चक्र० ना० पु० अस्त्रविशेष, पहिया, गोल भ्रमण, सुदर्शन, कुम्हार का चाक।

चक्राङ्ग० ना० पु० तगर औषध।

चक्रधर०
चक्रपाणि० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी, गु० जो चक्र बांधता हो।

चक्रवर्ती० ना० पु० चारोंमण्डल का राजा, सार्वभौमराजा।

चक्रवाक० ना० पु० चकवा।

चक्रमदन० ना० पु० पवार, कौंच, बीज।
चक्रव्यूह० ना० पु० चक्राकार सेना गढ़ बनाकर समर करना।
चक्रलक्षणा० ना० स्त्री० गुरच।
चक्रा० ना० स्त्री० समूह, गिरोह, टाकी।
चक्राकार० गु० पहिया के डौल।
चकित० गु० चकित, भ्रमित।
चक्री० ना० स्त्री० चकला, गाथरी की मञ्ली ना० पु० सांप, कुम्हार।
चक्षु० ना० पु० चक्षु, नेत्र।
चखना० स० क्रि० जाचना, स्वादलेना, खाना।
चखाचखी० ना० स्त्री० बिगाड़, लड़ाई, रार।
चखा० ना० स्त्री० गुड्डी, बाजा, पतंग।
चंगा० गु० भला, अच्छा, सुखी।
चंगेर० ना० स्त्री० फूल रखने का पात्र, कठरी।
चंगेरा० ना० पु० } खाचा, खाची, कठरा,
चंगेरी० ना० स्त्री० } कठरी।
चचा० ना० पु० पिता का भाई, चाचा।
चची० ना० स्त्री० चचाकी स्त्री।
चचुलाईं० ना० पु० चचेंडा, तरकारी।
चचोरना० स० क्रि० सूखी वस्तुका चूसना।
चचनाना० स० क्रि० टीसना, क्रोधित होना, झुंझलाना।
चचनाहट० ना० स्त्री० टीस, झुंझलाहट।
चंचरीक० ना० पु० भौंरा।
चंचल० गु० अस्थिर, चपल, कम्पाहा, खिलाड़, नाशा।
चंचलता० ना० स्त्री० अस्थिरता, चपलता।
चंचला० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा, लक्ष्मी।
चचलाई० ना० स्त्री० ढिठाई।
चंचलाहट० ना० स्त्री० अस्थिरता, ढिठाई।
चंचु० ना० पु० चोंच, शुक पक्षी।
चट० अव्य० तुरंत, उसी समय।
चटक० ना० स्त्री० चमक, धड़ाका, चिड़ा, गु० बुद्धिमान् चालाक बली।
चटकना० ना० पु० धक्का, अ० क्रि० फूटना, धड़कना, तड़कना।
चटका० ना० पु० भौंरा, गरगौंआ पक्षी, चनी टपा, चट्टा, दरका।
चटकाना० स० क्रि० चुटकी बजाना, फटकारना, फाड़ना, चीरना।
चटकारना० स० क्रि० पशुआदि के चराने में मुखसे चिक चिक करना।
चटकाहट० ना० स्त्री० चमक, भड़क, ना० पु० चिड़ियों का शब्द।
चटकीला० ना० पु० } चमकीला, भड़काला,
चटकीली० ना० स्त्री० } चमकार।
चटगांव० ना० पु० नगर जो बगाले के पूरब है।
चटनी० ना० स्त्री० खाने के लिये खट्टी बनाई हुई वस्तु, चाटने की वस्तु।
चटपट० अव्य० तुरंत, उसी समय।
चटपटाना० अ० क्रि० व्याकुलहोना, फड़फड़ाना, किसी वस्तु के लिए जी चलाना।
चटपटाहट० ना० स्त्री० व्याकुलता।
चटपटिया० गु० फुर्तीला, चालाक।
चटपटी० ना० स्त्री० उतावली, हड़बड़ी।
चटवाना० स० क्रि० चटाके खिलाना।
चटसार० } ना० स्त्री० पाठशाला, मदरसा।
चटसाल० }
चटाई० ना० स्त्री० बिछाना विशेष।
चटाक० ना० पु० धमाक, भड़ाका, एकाएक।
चटाका० ना० पु० धमाका, घूमा लगेका शब्द।
चटाचट० गु० दोहराय तिहराय के जो शब्द।
चटाना० स० क्रि० चटवाना।
चटिया० ना० पु० शिष्य, चेला, गु० चाटने वाला।
चटी० ना० स्त्री० ध्यान, स्थिरता, गताड़ी, रामचन्द्रिकाका यथा *(सब जात फटी दुख की दुपटी कपटी न रहे जह एक घटी । निघटी रुचि मीचु घटीहु घटी जगजीव यतीन कि छूटी चटी)।*

चट्टोरा० गु० रसिया, पेटू, अधीरज।
चट्टा० ना० पु० चटसाली बालक।
चट्टान० ना० पु० पत्थरका छोटाभाग वा टुकड़ा।
चट्टाबट्टा० ना० पु० खिलौना विशेष।
चड़० ना० पु० वृक्षकी डाली तोड़ने का शब्द।
चड़बड़० गु० बकबक, बिकी।
चड़चड़ाना० अ० क्रि० फटना, तड़कना।
चड़बड़िया० ना० पु० बकी।
चड़ई० ना० स्त्री० परिश्रम में तैयारी को कहते हैं और अपन में कूप गहिराने को।
चढ़ता० ना० पु० लाभ, बढ़ती।
चढ़ताहोना० अ० क्रि० निकलना होना, सरस होना।
चढ़ना० स० क्रि० आरोहण करना, बिलँगना, उठना, धावा करना, सवारहोना।
चढ़वैया० गु० चढ़नेवाला, यथा घुरचढ़ा।
चढ़ाई० ना० स्त्री० चढ़ाव, धावा।
चढ़ाना० स० क्रि० आरोहण करना, बलिदान करना, उठाना, ढोल या धनुष का तानना या कसना।
चढ़ाव० ना० पु० चढ़ाई, भाटा।
चढ़ैत० } ना० पु० चढ़वैया।
चढ़ैता० }
चढ़ौवा० ना० पु० जूता जो एंड़ी से चढ़ा रहता है।
चणक० } ना० पु० चना, अन्नविशेष।
चणा० }
चण्ड० गु० प्रबल, प्रचण्ड, भैरव विशेष।
चण्डांशु० ना० पु० सूर्य।
चण्डागुप्त० ना० स्त्री० कोंच नीम।
चण्डाल० ना० पु० चांडाल, अतिनीच, कुकर्मी।
चण्डालिन० } ना० स्त्री० चांडालकी स्त्री।
चण्डाली० }
चण्डिका० } ना० स्त्री० दुर्गादेवी।
चण्डी० }

चण्डोल० ना० पु० पालकीविशेष, पक्षीविशेष, खिलौना विशेष।
चतु० गु० चारि।
चतुर० गु० निपुण, सयाना, प्रवीण, स्याना, धूर्त, ना० पु० कौवा।
चतुरई० } ना० स्त्री० बुद्धिमानी, स्यानपन,
चतुरता० } धूर्तता।
चतुरंग० ना० पु० चारिअंग की।
चतुरंगसैन्य० ना० स्त्री० चारिप्रकारकी फौज अर्थात् हाथी १ घोड़ा २ रथ ३ पदाति ४।
चतुरंगुल० गु० चारिअंगुल, स्त्री० किराती।
चतुरस्र० गु० चौखूंट।
चतुरा० गु० चतुर।
चतुराई० ना० स्त्री० चतुरता।
चतुरानन० ना० पु० ब्रह्मा।
चतुरवस्था० ना० स्त्री० चारिअवस्था, यथा जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, अथवा बाल्य प्रौढ़, युवा, वृद्ध।
चतुराश्रम० ना० पु० चारि आश्रम, यथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी।
चतुरास० ना० स्त्री० चारों ओर।
चतुरासी गु० असी और चार ८४।
चतुरासीयोनि० गु० चौरासी योनि यथा (दोहा) नव ९ जलचर दश १० व्योमचर रु ग्यारह ११ वनबीस २०, ये चौरासी ८४ मानि मनुज चारि ४ पशु तीस ३०)।
चतुरुपवेद० ना० पु० चारि उपवेद, यथा धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, आयुर्वेद और धर्मशास्त्र।
चतुर्थ० गु० चौथा।
चतुर्थावस्था० ना० स्त्री० बुढ़ापा, मृत्युकाल
चतुर्थी० ना० स्त्री० चौथ, चौथी तिथि।
चतुर्दश० गु० चौदह १४।
चतुर्दशविद्या० ना० स्त्री० चौदहविद्या, ब्रह्मज्ञान १ रसायन, २ वैदक ३ ज्योतिष ४ करण ५ धनुर्विद्या ६ कोक ७

नाड़ज्ञान ६ वाहन फेरन १० गन्धर्व ११ जुए १२ तस्करी १३ स्वरज्ञान १४।

चतुर्दशरत्न॰ ना॰ पु॰ चोदहरन, अर्थात् अमृत १ चन्द्रमा २ लक्ष्मी ३ धनुष् ४ धन्वन्तरि ५ एरावत् ६ कौस्तुभमणि ७ उच्चैःश्रवा ८ शङ्ख ९ अप्सरा १० कामधेनु ११ कल्पद्रुम १२ मदिरा १३ विष १४।

चतुर्दशमनु॰ ना॰ पु॰ चौदहमनु, अर्थात् स्वायम्भुव १ स्वारोचिष २ उत्तम ३ तामस ४ रेवन ५ चाक्षुष ६ वैवस्वत ७ सावर्णि ८ दक्षसावर्णि ९ ब्रह्मसावर्णि १० धर्म्मसावर्णि ११ रुद्रसावर्णि १२ देवसावर्णि १३ इन्द्रसावर्णि १४।

चतुर्दशलोक॰ ना॰ पु॰ चौदह लोक, अर्थात् सप्तस्वर्ग और सप्त पाताल, भू १ भुव २ स्व ३ मह ४ जन ५ तप ६ सत्य ७ अतल ८ वितल ९ सुतल १० रसातल ११ तलातल १२ महातल १३ पाताल १४।

चतुर्दशी॰ ना॰ स्त्री॰ चोदहवी तिथि, चादस।

चतुर्भुज॰ ना॰ पु॰ विष्णु, नारायण, गु॰ चारिभुजावाला, वा चारिभुजों का क्षेत्र।

चतुर्भुजक्षेत्र॰ ना॰ पु॰ चामेड़ा खेत।

चतुर्भुजी॰ ना॰ स्त्री॰ देवाविशेष।

चतुर्भोजन॰ ना॰ पु॰ चारिप्रकारका भोजन, अर्थात् भोज्य १ भक्ष्य २ लेह्य ३ चोष्य ४।

चतुर्मुख॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

चतुर्मुक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ चारिमुक्ति, अर्थात् सालोक्य १ सामीप्य २ सारूप्य ३ सायुज्य ४।

चतुर्योनि॰ ना॰ स्त्री॰ चारियोनि, अर्थात् स्वेदज १ अण्डज २ उद्भिज ३ जरायुज ४।

चतुर्वेद॰ ना॰ पु॰ चारिवेद, अर्थात् ऋक् १ यजु २ साम ३ अथर्वण ४।

चतुर्वेदी॰ ना॰ पु॰ चौबे, चारिवेदवक्ता।

चतुर्वर्ग॰ ना॰ पु॰ चारिवर्ग अर्थात् चारिफल।

चतुर्वर्ण॰ ना॰ पु॰ चारिवर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

चतुर्वाद्य॰ ना॰ पु॰ चारिप्रकार का बाजा, अर्थात् तत १ वितत २ घन ३ शिखर ४।

चतुर्बाहु॰ ना॰ पु॰ चतुर्भुज।

चतुर्विंश॰ गु॰ चोवीसवा।

चतुर्विंशति॰ गु॰ चाबीस २४।

चतुर्विवाह॰ ना॰ पु॰ चारिप्रकार के विवाह, अर्थात् प्राजापत्य १ आर्ष २ गान्धर्व ३ राक्षसी ४।

चतुष्कोण॰ गु॰ चोकोन, चोकोना।

चतुष्पदधर्म॰ ना॰ पु॰ चारिपद धर्म्म के, अर्थात् विद्या १ सत्य २ तपस्या ३ दान ४।

चतुष्फल॰ ना॰ पु॰ चारिफल, अर्थात् अर्थ १ धर्म २ काम ३ मोक्ष ४।

चतुष्पाद॰ ना॰ पु॰ पशु चारिपदवाला।

चतुस्सहस्र॰ गु॰ चारिहजार ४०००।

चतुस्संहिता॰ ना॰ स्त्री॰ चारिसंहिता, अर्थात् ब्राह्मी १ माहेश्वरी २ वैष्णवी ३ सौरि ४।

चना॰ ना॰ पु॰ अन्नविशेष।

चन्द॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा।

चन्दन॰ ना॰ पु॰ गन्धसार, मलयज, मलयज।

चन्दघा॰ ना॰ पु॰ मधन्ज्वर।

चन्दा॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा भजनविलास यथा (दम्पति रही विलोना चन्दा, धारि र शीजिय बालगोविन्दा)।

चन्द्रिया॰ ना॰ स्त्री॰ टरी, चादि, छोटी रस्सी।

चन्द्र॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा, चाद।

चन्द्रक॰ ना॰ पु॰ कपूर, मयूर, नख म ला॥ वस्तु।

चन्द्रकला॰ ना॰ स्त्री॰ चन्द्रमा का सोलहवा भाग, स्त्रियों की धोती विशेष।

चन्द्रकान्त॰ ना॰ स्त्री॰ मणिविशेष।

चन्द्रग्रहण॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा का गहन।

चन्द्रघण्टा॰ ना॰ स्त्री॰ देवीविशेष।

चन्द्रचूड़॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी।

चन्द्रभागा० ना० स्त्री० चिनाबनदी जा पंजाब में है।

चन्द्रभाल० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणराजा।

चन्द्रमल्लिका० ना० स्त्री० इलायची।

चन्द्रमा० ना० पु० चांद, मुनिविशेष।

चन्द्रमुखी० गु० जिसका मुख चन्द्रमा सरीखा है अर्थात् अतिसुन्दरी।

चन्द्रमौलि० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गये राजा।

चन्द्रवधू० } ना० स्त्री० बीरबहूटी कीड़ा जो
चन्द्रवधूटी० } लालमकरीसा होता है, राहिणी।

चन्द्रवंशी० गु० जो चन्द्रमा से उत्पन्न भये क्षत्रियकी जातिविशेष अर्थात् सोमवंशी।

चन्द्रवाला० ना० स्त्री० बड़ी कपूरी, बड़ी इला यची।

चन्द्रसिता० ना० स्त्री० कपूर।

चन्द्रशेखर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, पर्वत।

चन्द्रहार० ना० पु० गलका गहना विशेष।

चन्द्रहास० ना० पु० खड्ग तलवार, राजाविशेष।

चन्द्रहासा० ना० स्त्री० गुरच।

चन्द्रहासी० ना० स्त्री० छोटी कन्या।

चन्द्रा० गु० सुघड़ला, गुना, बुद्धिमान्।

चन्द्रातप० ना० पु० चांदनी, चन्द्रिका।

चन्द्राना० अ० क्रि० सुलना मुरझाना।

चन्द्रायण० ना० पु० व्रत चान्द्रायण जो एक महीने १ एक ग्रास भोजन में शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष में बढ़ाने घटाने की रीति से होता है।

चन्द्रिका० ना० स्त्री० चांदनी, बाकुची औषध, पुरुतकीरोग, चकोर।

चन्द्रोदय० ना० पु० चन्द्रमा का उदय, औषध विशेष।

चपकन० ना० स्त्री० अंगरखा विशेष, फारसी शब्द।

चपकना० अ० क्रि० मिलजाना, चिपकजाना, लगना चिपटजाना, समिलाना।

चपकाना० स० क्रि० मिलाना, बेगना, चिप टाना।

चपटना० अ० क्रि० चपटा होना, लपटना।

चपटा० गु० बैठना, सपाट।

चपटाना० स० क्रि० बेगना, मिलाना।

चपटी० ना० स्त्री० दो स्त्रियां परस्पर प्रसङ्गिन, मिलाहुई वस्तु।

चपचपड़० ना० पु० खाने समय मुख में का शब्द।

चपड़ा० ना० पु० लाखविशेष।

चपड़ाऊ० गु० निर्लज्ज, ढीठ, ना० पु० जूते पीछे दुव।

चपड़ाव० स० क्रि० लाग करना, ढीठकरना।

चपना० अ० क्रि० लज्जित होना, आधीन होना, मसलजाना, दबजाना।

चपनी० ना० स्त्री० ढकना, ढपना, बाग।

चपरास० ना० स्त्री० पैदल के लिये स्वामीका चिह्न।

चपरासी० ना० पु० चपरास बांधनेहारा, दूत।

चपल० गु० चञ्चल, उतावला, सुन्दर, ना० पु० पारा।

चपला० ना० स्त्री० बीजा, बिजली।

चपाती० ना० स्त्री० फुलका, यह शब्द का रसा है।

चपाना० अ० क्रि० चापना, लज्जित करना।

चपेट० ना० स्त्री० } धप्पा, थप्पड़, धालेसे जो
चपेटा० ना० पु० } विपत्ति आनाव।

चप्पा० गु० चारि अंगुली का प्रमाण।

चप्पी० ना० स्त्री० देहका दबाना वा मलना।

चबाई० ना० स्त्री० कुचलाई, चर्वण, गु० निन्दक, दूषक, झूठक, नकली।

चबाउ० ना० पु० बतरहाउ, चहापुनी।

चबाना० स० क्रि० कुचिलना, चाबना।

चबायिन० ना० स्त्री० निन्दापुत, निंदक।

चविक० ना० स्त्री० चाब औषध।

चचेना॰ ना॰ पु॰ } भूनाहुआ अन्न।
चचेनी॰ ना॰ स्त्री॰ }

चव्य॰ } ना॰ स्त्री॰ चाव, औषध।
चव्यन॰ }

चमक॰ ना॰ पु॰ डक।

चमक॰ ना॰ स्त्री॰ चमक, झलक, भड़क।

चमकता॰ गु॰ उजागर, उजला।

चमकना॰ अ॰ क्रि॰ झलकना, लारना, भाग्य उदयहोना, क्रोधितहोना।

चमकाना॰ स॰ क्रि॰ झलकाना, लुराना, घुमाना, नचाना, फैलाना।

चमकाव॰ ना॰ पु॰ } चमक, भड़क।
चमकाहट॰ ना॰ स्त्री॰ }

चमकीला॰ गु॰ चमकन हारा, चमकदार।

चमकौना॰ ना॰ पु॰ चमकाने वाला।

चमगादड़॰ ना॰ पु॰ }
चमगीदड़॰ ना॰ पु॰ }
चमगुदड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ } रात्रि का उड़नेवाला पक्षी विशेष जो वृक्षों में उलटा टँगता है।
चमगुदरी॰ ना॰ स्त्री॰ }
चमगोदड़॰ ना॰ पु॰ }
चमगोदरी॰ ना॰ स्त्री॰ }

चमचमात॰ ना॰ पु॰ चमचेत।

चमचमाना॰ अ॰ क्रि॰ चमकना, झुनझुनाना।

चमचमाहट॰ ना॰ स्त्री॰ चमचाहट।

चमड़ा॰ ना॰ पु॰ चर्म, खाल।

चमत्कार॰ ना॰ पु॰ अचम्भा, भड़क, बड़ाई, ऐश्वर्य।

चमत्कारी॰ गु॰ भड़कीला, आश्चर्याजी।

चमर॰ ना॰ पु॰ चवर, सुरभि गायकी पूँछ।

चमरई॰ ना॰ स्त्री॰ चमारपन, चमार का काम।

चमरी॰ ना॰ स्त्री॰ सुरभि।

चमार॰ ना॰ पु॰ चर्मकार, नीचजाति विशेष।

चमारिन॰ } ना॰ स्त्री॰ चमार की स्त्री।
चमारी॰ }

चमू॰ ना॰ स्त्री॰ सैन्य, फौज।

चमूप॰ }
चमूपति॰ } ना॰ पु॰ सेनापति, सिपहदर।
चमूपाल॰ }

चमेटा॰ ना॰ पु॰ चपेटा।

चमोटा॰ ना॰ पु॰ } चमड़ा जिसपर नाई छुरा
चमोटी॰ ना॰ स्त्री॰ } फिराते हैं।

चम्पई॰ गु॰ नारंजी रंग।

चम्पक॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष जिसका फूल पीला सुगन्धित होता है।

चम्पत॰ ना॰ पु॰ भागना।

चम्पतहोना॰ अ॰ क्रि॰ भागजाना, छुपना।

चम्पा॰ ना॰ पु॰ चम्पक।

चम्पावली॰ ना॰ स्त्री॰ चम्पाकी कली के समान गहना विशेष गले में पहिनते हैं।

चम्बू॰ ना॰ पु॰ जलपात्र विशेष जिससे देवता को जल चढ़ाते हैं।

चम्बेली॰ ना॰ स्त्री॰ वृक्ष या उसका फूल।

चय॰ ना॰ पु॰ समूह, ढेर, भरा।

चयन॰ ना॰ पु॰ आनन्द, कुशल, क्षेम।

चर॰ ना॰ पु॰ चारा, खाह, दूत, गु॰ जिस को चलने की शक्ति हो, या जो चलने व उठने के योग्य हो यथा नर नारि पशु पक्षी आदि, चारा।

चरक॰ ना॰ पु॰ वैद्य विद्या का ग्रन्थ विशेष, खाद।

चरकटा॰ ना॰ पु॰ चारा काटनेवाला।

चरका॰ ना॰ पु॰ श्वेतकुष्ठ विशेष, सफेद कोढ़।

चरखा॰ गु॰ चौड़ी।

चरचना॰ स॰ क्रि॰ देह में चन्दन लगाना, चर्चना।

चरचर॰ ना॰ पु॰ घाव, व्रण।

चरचराना॰ अ॰ क्रि॰ चटकना, मरमराना।

चरचेला॰ गु॰ बकी, बकवादी।

चरण॰ ना॰ पु॰ पाद, श्लोक आदिका एकदश

चरणपीठ० ना० पु० खड़ाऊ ।
चरणामृत० / चरणोदक० } ना० पु० जल, जिससे देवता वा गुरु वा ब्राह्मणादि के पांव धोयेगये हों ।
चरती० गु० जो व्रत नहीं करता, व्रती नहीं ।
चरन० ना० पु० चरण ।
चरना० अ० क्रि० चुगना, फिरना ।
चरनी० ना० स्त्री० थान या कठरा जिस में बैल भूसा खाते हैं ।
चरसी० ना० स्त्री० चौथणी ।
चरपरा० गु० तीता, चटुवा, तारुण, फुर्तीला ।
चरपराना० अ० क्रि० परपराना ।
चरपराहट० ना० स्त्री० परपराहट ।
चरपरिया० गु० मनचला, सुघड़ ।
चमर० गु० पिछला ।
चरपाई० ना० स्त्री० चराई ।
चरवाहा० ना० स्त्री० रखवारा, चरानेहारा ।
चरस० ना० पु० मादक वस्तु, मोट, पुरवट ।
चरसा० ना० पु० अधौड़ी, खाल ।
चराई० ना० स्त्री० चराने के दाम, चराने का काम ।
चराक० गु० चरनेहारा, पशु ।
चराचर० ना० पु० चल अचल सजीव निर्जीव जन्तु ।
चरान० ना० पु० तराई ।
चराना० स० क्रि० चुगाना ।
चराव० ना० पु० खेत वा भरती जो चरने के योग्य ।
चरावना० स० क्रि० चराना ।
चरित० ना० पु० चरित्र ।
चरितार्थ० ना० पु० कृतार्थ ।
चरित्र० ना० पु० स्वभाव, शील, वृत्तान्त ।
चरुआ० ना० पु० माठा ।
चर्चक० गु० चर्चा करनेहारा, वादी ।
चर्चना० स० क्रि० विचारना, समझना, पूजना, पहिचानना ।
चर्चरी० ना० स्त्री० छन्दविशेष, ढडी, बिन्दी ।
चर्चा० ना० स्त्री० पसारा, बतकहाव ।
चर्चित० गु० लगाया हुआ, कहा हुआ ।
चर्म० ना० पु० चमड़ा ।
चर्मकार० ना० पु० चमार ।
चर्मपात्र० ना० पु० चमड़ा का बर्तन, मसीरे ।
चर्मवस्त्र० ना० पु० चमड़ा का वस्त्र अर्थात् ओढ़ना ।
चर्य्या० ना० स्त्री० तपस्या करने में धुनि अथवा रहनि ।
चर्वण० ना० पु० दांतों से पीसना, चबेना ।
चर्स० ना० पु० चरसा ।
चल० गु० जो स्थिर न हो ।
चलत० गु० चलनि ।
चलदल० ना० पु० पीपल ।
चलन० ना० पु० चालि, व्यवहार ।
चलनहारा० ना० स्त्री० चिकनहार, सरपर्दा ।
चलना० अ० क्रि० जाना, विदाहोना, बहना ।
चलनी० ना० स्त्री० छानी, गु० चलनी ।
चलविचल० ना० पु० चूक, भूल, भ्रम ।
चलविचरा० गु० अड़ियल, मचला ।
चलयौवन० ना० पु० चलायमान यौवन ।
चलसुगन्धा० ना० स्त्री० शीतल सोन ।
चलाचल० ना० पु० / चलाचली० ना० स्त्री० } दौड़ धूप ।
चलान० ना० स्त्री० भेजाव ।
चलाना० स० क्रि० दौड़ाना, भगाना, छोड़ना, बढ़ाना, अभ्यास डालना, सिखलाना ।
चलायमान० गु० जो स्थिर न हो, लोल ।
चलाव० ना० पु० चलन ।
चलित० गु० जो चलता है ।
चलित्री० गु० खिलाड़ी, चपल ।
चलू० ना० पु० आचमन ।
चप० ना० पु० नेम, आदि
चपक० ना० पु० पियाला, जिसमें जलादि पीते हैं ।

चसक० ना० स्त्री० पीड़ा, टीस।
चसकना० अ० क्रि० टीसना, गड़ना।
चसका० ना० पु० लालसा, प्रेम, चाट।
चसना० अ० क्रि० मसकना, चसकना, गड़ना।
चहकना० अ० क्रि० चहचहाना।
चहकार० ना० स्त्री० चहचहाहट।
चहकारना० अ० क्रि० चहचहाना।
चहचहाना० अ० क्रि० पक्षियों का बोलना।
चहचहाहट० ना० स्त्री० पक्षियों का शब्द।
चहटी० ना० स्त्री० दो लत्ता से दबाना अर्थात् चुम्मी काटना।
चहला० ना० पु० कीचड़।
चहिये० अव्य० चाहिये।
चहु० गु० चारि, ८ अव्य० चाहा।
चहुधा० ना० पु० चारोंओर।
चहुचक०
चहुदिश० } गु० चारोओर लग भग।
चहुयुग० ना० पु० चारोंयुग।
चक्षु० ना० पु० नेत्र, आंखि।
चक्षु श्रवा० ना० पु० साप, नाग
चक्षुष० ना० पु० मरवविशेष।
चा० ना० स्त्री० पोधाविशेष।
चाउ० ना० पु० आनन्द, मंगल खुशी।
चाऊ० गु० आनन्द म लाभयुत।
चांड़० ना० स्त्री० टेक, थम्भ।
चांद० ना० पु० चन्द्रमा।
चांदनी० ना० पु० उजाला, राति।
चांदना० ना० स्त्री० चादनी राति, शब्द बिछौना।
चांदनीचौक० ना० पु० चौड़ा मार्ग।
चांदा० ना० पु० निहरी, पनी, धब्बा०
चांदी० ना० स्त्री० रूपा, रजत।
चांप० ना० स्त्री० बन्दूक की कल, काट।
चापना० स० क्रि० ठासना, गोन्दा।
चाक०
चाका० } ना० पु० चक्र जिसपर कुम्हार बर्तन बनाता है, पहिया।
चाकी० ना० स्त्री० चक्की।
चाखना० स० क्रि० स्वादलेना मजालेना।
चाचा० ना० पु० पिताकाभाई, चाचा।
चाची० ना० स्त्री० चाचा की स्त्री।
चाञ्चल्य० ना० पु० अस्थिरता।
चाट० ना० स्त्री० चसका, लालच, पदार्थ।
चाटक० ना० पु० भगरी मिया, तिलस्म, इन्द्रजाली।
चाटकी० गु० चाटक जाननेहारा।
चाटना० स० क्रि० जीभसे रसखींचना, चभड़ चभड़ करना।
चाटी० ना० स्त्री० मथनिया।
चाणक० ना० पु० दरैता, भड़राव, माथनारक बार्त्ता।
चाणक्य० ना० पु० राजाविशेष का मंत्री नीतिमंथ।
चाणूड़०
चाणूर० } ना० पु० राजाकसका मल्ल।
चाण्डाल० गु० निर्दयी, अतिनीचजाति।
चाण्डूल०
चाण्डोल० } ना० पु० पक्षी विशेष।
चातक० ना० पु० पपाहा पक्षी।
चातर० ना० पु० महाजाल।
चातुर० गु० चतुर, चारि, बुद्धिमान्।
चातुरी० ना० स्त्री० धूर्तता, चालाकी, अभिमानी।
चातुर्य्य० ना० पु० चतुराई।
चातुर्वर्ण्यदेश० ना० पु० देश, जहां चारोवर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र रहते हैं।
चातृक० ना० पु० पसीहा।
चान्द्रमास० ना० पु० कृष्णपक्ष प्रतिपदा से पूर्णमापर्य्यंत।
चान्द्रायण० ना० पु० व्रत नियम भोजन प्रतिदिन एकग्रास घटते हैं यथा चन्द्रमा प्रतिदिन घटता है।
चाप० ना० धनुष्, कमान, आर्धवृत्त।

चापकर्ण० ना० पु० रादा, धनुष कमान की।
चापन० ना० पु० दावन, रामायण यथा—
(मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई, लगे चरण चापन दोउ भाई)।
चापक्षेत्र० ना० पु० धनुषाकार क्षेत्र।
चाप्य० ना० पु० वृद्ध।
चाबना० स० क्रि० दांतसे कुचलना, कुचलना।
चाबी० ना० स्त्री० कुंजी।
चाम० ना० पु० चर्म।
चामर० ना० पु० चमर, छन्दोविशेष।
चामीकर० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
चामुण्डा० ना० स्त्री० योगिनीभेद, दुर्गा विशेष।
चाम्पेय० ना० पु० चम्पावृक्ष।
चाय० ना० पु० चाव, हर्ष, स्वाद।
चार० गु० गिनती ४ ना० पु० दूत, पदाति।
चारिखानि० ना० स्त्री० स्वेदजादि।
चारण० } ना० पु० गवैया भट्ट, भाट, चारन० } प्रभ्य।
चारा० ना० पु० घासपात, पशुभोजन, फारसी शब्द है।
चारी० गु० चलनेवाला ना० स्त्री० चुगली, चार, चारि।
चारु० गु० सुन्दर, अच्छा, ना० पु० पद्माक।
चारुपर्णी० ना० स्त्री० गंधप्रसारन।
चारुफल० ना० पु० अंगूर, दाख।
चार्वाक० गु० वक्ता, नास्तिक विशेष।
चाल० ना० स्त्री० गति, चलन, रीति।
चालना० स० क्रि० छानना, आटा छनना।
चालनी० ना० स्त्री० आटा छानने का पात्र।
चाला० ना० पु० गौना, सफ़र, सायत।
चाली० ना० पु० भितरघरी, छलावा।
चाव० ना० पु० चाव, चारियुक्त की माप वस्त्र विशेष।
चावल० ना० पु० तण्डुल, निर्जन।
चाष० ना० पु० नीलकण्ठ पक्षी, सस्यभक्ष, यथा (सादपुष्पतु फल स्पादन चाष किरादि दिशि दयपर) रामायणे (चारा चाष बाम दिशि लेई, मना सकल मंगल कहि देई)।
चास० ना० स्त्री० हलचलाना।
चासना० स० क्रि० हलचलाना।
चासा० ना० स्त्री० हलवाहा।
चाह० ना० स्त्री० इच्छा, प्रेम, रीझ, छोह।
चाहक० ना० पु० स्त्री० चाही, हितकारी।
चाहत० ना० स्त्री० चाह।
चाहना० स० क्रि० प्रेम करना, इच्छा करना, प्रार्थना करना, मांगना।
चाहिये० अव्य० अवश्य।
चाहिता० गु० प्यारा, मन भावित।
चाहिती० ना० स्त्री० प्यारी।
चाहो० अव्य० अथवा।
चिक० ना० स्त्री० पाशविशेष, परदह।
चिकटा० ना० पु० टसर का कपड़ा विशेष।
चिकठा० गु० चिकट।
चिकना० ना० पु० तेल वा घृत गु० उजला सुन्दर, तिलहा, अमितहित, चपला, और चिकनिया।
चिकनाई० ना० स्त्री० चर्बी, भा० वा० चपलाहट खोप, स्नेह।
चिकनाना० स० क्रि० उज्वल करना धोना।
चिकनाहट० ना० स्त्री० उज्वलता, और सुन्दरता।
चिकवा० ना० पु० जाति विशेष जो मांस बेचता है।
चिकार० ना० पु० शोर, चिल्लाहट, चैंचैं।
चिकारना० स० क्रि० चैंचैं करना, नाकादम शोर करना, चिल्लाना।
चिकारा० ना० पु० मृग विशेष, छोटी सारंगी।
चिकित्सक० ना० पु० वैद्य, तबीब।
चिकित्सा० ना० स्त्री० वैदई, तिबाबत।
चिकुर० ना० पु० बाल, केश।
चिकोरना० स० क्रि० चिकोरना, चोंचियाना

चिकोरा० गु० तरल, चञ्चल।
चिक० ना० स्त्री० बकरी, अजा, काव्ये यथा (पाही खेती चिक धा घर बिटियन बढ़वारि, येते पर जो नहिं नशे जाइ करै अधवारि)॥
चिक्कट० गु० चिकटा, मलिन।
चिक्कण० गु० चिकना।
चिक्कद्दा० ना० पु० चिकना, सुमनरसाव।
चिक्कार० ना० पु० शोर, चिल्लाहट।
चिंगड़ा० ना० पु० } झींगा।
चिंगड़ी० ना० स्त्री० }
चिंगनी० ना० स्त्री० } मुरगी का बच्चा।
चिंगा० ना० पु० }
चिंघाड़० ना० स्त्री० किलकार, कूक।
चिंघाड़ना० अ० क्रि० किलकारना।
चिंघाड़ा० ना० पु० चिंघाड़।
चिंचड़ी० ना० स्त्री० किलनी।
चिचियाना० अ० क्रि० चिल्लाना, मिमियाना।
चिञ्चा० ना० स्त्री० अमिलावृक्ष।
चिट० ना० स्त्री० चीर, धज्जी।
चिटकारा० ना० पु० छींटा, चिह्न।
चिट्टा० गु० गोरा, सफ़ेद, ना० पु० एक रुपया।
चिट्ठा० ना० पु० दिन दिनका लेखा वा कमाई वा रोजनामा।
चिट्ठी० ना० स्त्री० पत्र, पाती।
चिड़० ना० स्त्री० ग्लानि, खिजाहट।
चिड़चिड़ा० गु० खुसाहा, भनभना, ना० पु० पौधाविशेष।
चिड़ना० अ० क्रि० झुँझलाना, खिजना, चिढ़ जाना।
चिड़पड़ा० गु० चरपरा, तीता, तीक्ष्ण, कड़ुआ।
चिड़ा० ना० पु० चटक।
चिड़ाना० स० क्रि० खिजाना, सताना, दे ढ़ना।
चिड़िया० ना० स्त्री० गौरिया, पक्षी।
चिड़ीमार० ना० पु० बहेलिया, वधिक।
चिरिंड० ना० स्त्री० नृत्य विशेष।
चित० ना० पु० चित्त, चैतन्य, गु० सूधालेटना।
चितकबरा० गु० चितला, कबरा, अबलक।
चितना० अ० क्रि० रंगा जाना।
चितला० गु० कबरा, चितकबरा।
चितवन० ना० स्त्री० दृष्टि, दीठि।
चितवना० अ० क्रि० देखना।
चितहट० ना० स्त्री० खींच, चित्त हट जाना।
चिता० } ना० स्त्री० सरा, मृतक के दाह
चिताखा० } देने का स्थान।
चिताना० स० क्रि० जताना, सुचेत करना।
चिताभस्म० ना० स्त्री० चिता की राख।
चितायना० स० क्रि० जताना, सचेत करना।
चितावनी० ना० स्त्री० जतावनी, चिह्न।
चितेरा० ना० पु० चित्रकार, मुसव्विर।
चितौना० स० क्रि० देखना, विलोकना।
चित्त० ना० पु० मन, हृदय, बुद्धि।
चित्ता० ना० पु० औषध, पावाविशेष।
चित्ती० ना० स्त्री० चिह्न, लहसन, सर्पविशेष, कौड़ी जो रगड़ के चिकनी होगई।
चित्र० ना० पु० मूर्ति, रूप, अग्नि, मिर्च, दोनों बरण्ड, कुष, कर पड़ी।
चित्रक० ना० पु० चीता, पशु विशेष।
चित्रकन्दक० ना० पु० विर्मीकन्द।
चित्रकर० ना० पु० मसव्विर, चितेरा।
चित्रकारी० ना० स्त्री० चित्रकार का काम, मुसव्विरी।
चित्रकाय० ना० पु० बघ, शेर, गुलबघा।
चित्रकूट० ना० पु० पर्वत विशेष।
चित्रकेतु० ना० पु० राजा विशेष।
चित्रगुप्त० ना० पु० यमराज भेद, यम के यहां के भलेबुरे लेखक।
चित्रदेवी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
चित्रपक्ष० ना० पु० तीतर पक्षी।
चित्रभानु० ना० पु० सूर्य, अग्नि।
चित्रभेषज० ना० पु० कठूमरि।

चित्रविचित्र० गु० अनेक रंग का है।

चित्रशाला० चित्रसारी० } ना० स्त्री० जिस स्थान में बहुत चित्र होवें, नगाड़खाना, नक्कारखाना।

चित्रा० ना० स्त्री० चौदहवां नक्षत्र, इन्द्रवारुणी।

चित्रांगद० ना० पु० राजा विशेष।

चित्राफल० ना० पु० इंद्रवारुणी।

चित्रित० गु० चित्रयुत, चित्र कियाहुवा।

चित्रिणी० ना० स्त्री० चित्रविचित्र, भगवती का नाम है।

चित्री० ना० स्त्री० चित्रसारी ना० पु० नानापशु।

चिथड़ा० ना० पु० गुदड़ा, लत्ता।

चिथड़िया० गु० गुदड़िया।

चिथाड़० ना० पु० फाड़ चीर, लथाड़।

चिथाड़ना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना, लथाड़ना

चिदाकाश० ना० पु० परमात्मा चैतन्य आकाश में।

चिनग० ना० स्त्री० मूत्रन में जलन पड़ना।

चिनगाना० अ० क्रि० टासना, चिल्लाना।

चिनगारी० चिनगी० } ना० स्त्री० लूका, आगि का आग सा फूल।

चिनचिनाना० अ० क्रि० चिल्लाना, गारकरना।

चिन्त० ना० स्त्री० चिन्ता।

चिन्तन० ना० पु० अभ्यास, चिन्तवन।

चिन्तना० अ० क्रि० अभ्यास करना।

चिन्ता० ना० स्त्री० सोच, डर, जोखिम, संदेह, भावना।

चिन्ताना० स० क्रि० अभ्यास कराना।

चिन्तामणि० ना० स्त्री० मणि विशेष।

चिन्तित० गु० सोचा, मानित, विचारित।

चिह्न० ना० पु० लक्षण पहिचान।

चिन्हार० ना० पु० चिन्हारी० ना० स्त्री० } चीन्हा, पहिचान।

चिह्नित० गु० जो पहिचाना गया, चिह्नयुत।

चिपकना० अ० क्रि० लगना, सटना।

चिपकाना० स० क्रि० लगाना सटाना चिपटाना।

चिपचिपा० गु० लसलसा, लिजलिजा।

चिपचिपाना० अ० क्रि० लसलसाना।

चिपटना० अ० क्रि० चिपकना, लिपटना।

चिपटा० गु० लगाहुआ, चिपचिपा।

चिपटाना० स० क्रि० चपकाना, चिप्पी लगाना, लपटाना।

चिपड़ी० ना० स्त्री० गोहरी।

चिप्पक० गु० लिपटनेवाला, ना० पु० पक्षीविशेष।

चिप्पा० ना० पु० चीर।

चिप्पी० ना० स्त्री० जहां कागज आदि फटा होता है वहां लगाई जाती है, छोटी चीर।

चिबुक० ना० स्त्री० ठोढ़ी।

चिमटना० अ० क्रि० चिपटना, लपटना।

चिमटा० ना० पु० सणसा, लोहे की वस्तु जो सुनार और लोहार आदि रखते हैं।

चिमटाना० स० क्रि० लिपटाना।

चिमठा० चिमड़ा० } गु० लचीला कड़ा।

चिमड़ाई० ना० स्त्री० कड़ापन, ऐंठ।

चिमड़ाना० स० क्रि० कड़ा करना, अ० क्रि० कड़ाहोना, ऐंठजाना।

चिमड़ाहट० ना० स्त्री० चिमड़ाई, कड़ाई।

चिमड़ी० ना० स्त्री० चिमटा।

चिमसा० ना० पु० सरेस पानी का।

चिर० अव्य० बहुत, बहुत काल।

चिरंजी० चिरंजीव० } ना० पु० आशीर्वाद विशेष अर्थात् बहुत जीवन होवे।

चिरजीवी० गु० बहुतदिनी, ना० पु० कौआ।

चिरकाल० अव्य० नित्य, सदा।

चिरकुट० ना० पु० चिर।

चिरकुटिया० गु० गुदड़िया।

चिरचिरा० ना० पु० औषध व पौधाविशेष।

चिरचिराना० अ० क्रि० चरचराना।

चिरचिराहट० ना० स्त्री० झनझनाहट।

चिरना० अ० क्रि० फटना।
चिरन्तन० गु० पुराना, प्राचीन।
चिरवाना० स० क्रि० फड़वाना, चिराना।
चिराँद० ना० स्त्री० जलतहुए चमड़े की बुरी सना।
चिराना० स० क्रि० फड़वाना।
चिरायु० गु० बहुत जीवन।
चिर० गु० बहुत।
चिरकाल० गु० बहुत दिन, चिरकाल।
चिरकालीन० गु० बहुतदिनी।
चिरौंजी० ना० स्त्री० शुष्कफल विशेष।
चिरौरी० ना० स्त्री० विनती, खुशामद।
चिलक० ना० स्त्री० चमक, भड़क, दर्द।
चिलकना० अ० क्रि० चमकना, झलकना और फाड़ा आदिका पिराना।
चिलचिम० ना० पु० मछली।
चिलबिलाना० अ० क्रि० चीखना, चिल्लाना।
चिलम० ना० स्त्री० तमाकू आग भरने का पात्र।
चिलमची० ना० स्त्री० पात्र विशेष जिस में मुंह हाथ धोने का पानी रहता है, चिलम के नाच रखनेका वस्तु।
चिलचन० ना० स्त्री० चिक, झझरा।
चिलचल० ना० पु० वृक्षविशेष।
चिल्लड़० ना० पु० चीलड, चिलुआ।
चिल्लाना० अ० क्रि० पुकारना, चिंघाड़ना।
चिल्लाहट० ना० स्त्री० पुकार, चिंघार।
चिल्ली० ना० स्त्री० भोजनविशेष जो अण्डे से बनाते हैं, उल्लू।
चिहटना० अ० क्रि० चिपटना, लगना।
चिहुर० ना० पु० बाल, केश।
चींटी० ना० स्त्री० चावंटी, कीटविशेष।
चींक० ना० स्त्री० कीच।
चीलुर० ना० पु० गिलहरी।
चीतना० स० क्रि० चाहना।
चीतल० ना० पु० जंगली जंतुविशेष, गु० चितला।
चीता० ना० पु० तेंदुआ, व्याघ्र, चाह, बुद्धि।
चीथना० स० क्रि० चिथाड़ना, फाड़ना।
चीन० ना० पु० देश विशेष जो उत्तर पूर्व में है।
चीनी० ना० स्त्री० खांड़विशेष गु० चीनदेशी।
चीनीय० गु० चीनके मनुष्यादि।
चीन्ह० ना० स्त्री० पहिचान, चिह्न।
चीन्हना० स० क्रि० पहिचानना।
चीन्हा० ना० पु० पहिचान, चिन्हार।
चीर० ना० स्त्री० वस्त्र टुकड़ा सारा, साड़ी, फाड़ना।
चीरना० स० क्रि० फाड़ना।
चीरम० ना० स्त्री० चिरौंजी।
चीरा० ना० पु० फाड़, चार सुथापन, पगड़ी।
चीरी० ना० स्त्री० भाजुर।
चील० ना० स्त्री० चील्ह, पक्षी जिसका मकान पर बैठके चिल्लाना अशुभ है।
चीलड़० **चीलर०** **चीलहर०** ना० पु० ढील, वस्त्रादुआ, चील्ह।
चुआन० ना० स्त्री० जल के निकलनेकी भूमि।
चुआना० स० क्रि० टपकना कूप में जल निकालना।
चुकती० ना० स्त्री० निपटारा।
चुकना० अ० क्रि० समाप्तहोना, निपटना, ठहरना।
चुकाई० ना० स्त्री० चुकौना।
चुकाना० स० क्रि० निपटाना, ठहराना।
चुकौता० ना० पु० निपटारा, ठहराव।
चुक्रिका० ना० स्त्री० अम्लिलोकूल।
चुगना० अ० क्रि० दाना, चुग्ना।
चुगी० ना० स्त्री० अन्नका कर, महसूल।
चुचकारना० स० क्रि० चोंचलाकरना और पुचकारना।
चुचकारी० ना० स्त्री० चुमकारी।

चुश्च० ना० पु० सुनानशप।
चुश्चक०ना०स्त्री०भेड़ी चुचर, ऊखायूहातनिघट्ट।
चुश्चड० ना० पु० चूचा, बड़ी चूची।
चुटकी० ना० स्त्री० नीच, चुमटी, मुट्ठीभर अन्न, पावश। अगुलाका मदेना।
चुटकुला० ना० पु० ठठोली मजाक।
चुटला० ना० स्त्री० चर्गी।
चुटाना० } स० क्रि० पावकरना दूध विवाना
चुटालना० } गाय इत्यादिरा।
चुटावना० }
चुड्डा० ना० पु० चूड़ा जो धान कूटके बनाते हैं।
चुडैल० } ना० स्त्री० प्रेतिनी फू
चुडैलिया० } हड़।
चुनत० } ना० स्त्री० परत, तह ताडू।
चुनन० }
चुनना० स० क्रि० कपड़ोंरा ताडना वा इकट्ठा करना, छाटना, टूगना बानना।
चुनरी० ना० स्त्री० लालरंगीहुई ओढ़नी।
चुनवाना० } स० क्रि० हगाना, बिनवाना, छट
चुनाना० } वाना कपड़का तह लगवाना।
चुनावट० ना० स्त्री० चुनत।
चुनी० ना० स्त्री० चूनी।
चुनौटा० ना० पु० } पान जिसम पान तम्बाकू
चुनौटी० ना० स्त्री० } खनिक लिय चूनारखतहैं
पुढमें १ मकी धादसत्ना, प्रोनम से मलवानों को धावा क लिये छाटना, जेठसुगी एकादशी को पैरके पारजाना जा काशीजीमें प्रचलितरीति है।
चुनौनिया० गु० पश्चिम में बैंगनिरंग को कहते हैं।
चुनौती ना० स्त्री० तलाव सान मदनकी बात निशानी, निहारी, स्मारकवस्तु।
चुन्धला० गु० च्याना, नयनरोगी।
चुन्धलाना० अ० क्रि० अन्धाहोना।
चुन्धा० गु० चौंधा, चिमचा।
चुप्पा० स० क्रि० चुनना।
चुप्पी० ना० स्त्री० छोटामाचिड़।

चुप० }
चुपका० } गु० मौनी, अबोल।
चुपचाप० }
चुपचुपाना० अ० क्रि० चुपचाप रहना।
चुपड़ना० स० क्रि० चिकनाना, मलना।
चुपड़ी० गु० चिकना, चिकना।
चुप्प० ना० पु० } मौनता खामशी।
चुप्पी० ना० स्त्री० }
चुप्पा० गु० मौन, गुपचुप, अबोल।
चुमकी० ना० स्त्री० डुबकी, गोतामारना।
चुभना० अ० क्रि० गड़ना, घुसना, बिधना, बिंधना, पैंठना।
चुभाना० स० क्रि० चुभेड़ना धसना, पैठना।
चुमाना० स० क्रि० चूमादेना वा दिलवाना।
चुम्कार० ना० पु० } चुमकारी।
चुम्कारी० ना० स्त्री० }
चुम्कारना० स० क्रि० पुचकारना।
चुम्बक० ना० पु० सा० वा आकर्षक पथर।
चुम्बन० ना० पु० चूमा राहबरा हारुर अग में आठ रखा करना।
चुरकुट० ना० पु० चुरनी चूण।
चुरगना० अ० क्रि० चैं च करना।
चुराना० स० क्रि० चोरी करना।
चुरराना० अ० क्रि० बकना बकबकाना।
चुल० ना० स्त्री० खुजलान की इच्छा।
चुलचुल० ना० पु० चचलाहट।
चुलचुलाना० स० क्रि० खुजलाना गुदगुदाना।
चुलचुली० ना० स्त्री० चचलाहट।
चुलबुला० गु० चचल रंगीला।
चुलबुलाना० अ० क्रि० चचल होना।
चुलबुलाहट० ना० स्त्री० उलबुलापन।
चुलबुलिया० गु० चुलबुला।
चुलहाई० ना० स्त्री० कामातुरी।
चुलहारा० ना० पु० कामातुर।
चुल्लू० ना० पु० एकहाथ का सम्पुट, मुट्ठीभर।
चुसकर० ना० पु० पिवकर।
चुसनी० ना० स्त्री० चूचनी।

चुहचुहा० गु० जो गहिरा रँगागया।
चुहचुहाना० अ० क्रि० गहिरा रँगाजाना, मैं
 लियों का शब्द जो प्रात काल होता है।
चुहल० ना० स्त्री० चर्चा, चहलपहल।
चुहला० गु० ठटोल, हँसोड़ा।
चूँगी० ना० स्त्री० चुंगी।
चूँची० ना० स्त्री० कुच, भिटनी, थन।
चूँटा० ना० पु० पृथ्वीमें रहनेहारा जन्तु विशेष।
चूँटी० ना० स्त्री० छोटा चूटा वा उसकी स्त्री।
चूक० ना० स्त्री० भूल, भ्रम, पौधा विशेष गु०
 खट्टाविशेष ना० पु० औषध विशेष।
चूकना० अ० क्रि० भूलना, धोखा देना।
चूका० ना० पु० खट्टा साग।
चूची० ना० स्त्री० चूची।
चूड़० ना० स्त्री० सोने वा चांदी की वस्तु जो
 स्त्रियां पहिनती हैं, ना० पु० कड़ा विशेष जो
 हाथी के दांतों में पहिनाते हैं, खट की पट्टी
 वा सिरा वा नोक।
चूड़ा० ना० पु० संस्कार की रीति से प्रथम मु
 ण्डन, लाल का चूड़ी, ललाट के ऊपर बँधेहुए
 केश, कंगन विशेष।
चूड़ाकरण० } ना० पु० मुण्डन।
चूड़ाकर्म० }
चूड़ामणि० ना० स्त्री० कलश की मणि।
चूड़ी० ना० स्त्री० स्त्रियोंके हाथमें पहिननेके लिये
 जो कांच वा लाह वा कांचकी बनती है।
चूत० ना० स्त्री० योनि, आम्र।
चूतड़०ना०पु०नितम्ब,जघाका उपरिभाग, पुट्ठा।
चूतिया० ना० पु० उल्लू, अहमक।
चून० ना० पु० आटा, पिसान।
चूना० ना० पु० चूर्ण, जो पान में लगाते हैं,
 मिट्टी वा पत्थर या कंकर या सीप जली हुई
 अ० क्रि० टपकना, रसियाना, छनना।
चूनी० ना० स्त्री० दलाहुआ उड़दादि, चुन्नी।
चूमकपत्थर० ना० पु० चुम्बक।
चूमना० स० क्रि० चुम्मालेना, मच्छी लेना।
चूमा० ना० पु० मीठी, मच्छी।
चूर० ना० स्त्री० बुकनी, चूर्ण।
चूरन० ना० पु० चूर्ण।
चूरना० स० क्रि० चूर्ण करना।
चूरा० ना० पु० रेतन, बूरा, चूड़ा।
चूरी० ना० स्त्री० बहुत घी पड़ीहुई रोटी, चूड़ी।
चूर्ण० ना० पु० रेणु, बुकनी।
चूल० ना० स्त्री० एक लकड़ी का सिरा जो दूसरी
 लकड़ीमें डालते हैं, किवाड़केखूंट नीचे ऊपरके।
चूल्हा०ना० पु० } आग रखने या रोटी पकाने
चूल्ही०ना० स्त्री० } की वस्तु।
चूसना० स० क्रि० पीलेना, सुड़कना।
चूहड़ा० पु० ना० मेहतर, भंगी।
चूहड़ी० ना० स्त्री० भंगिनि।
चूहा० ना० पु० मूसा, मूषक।
चूहीं० ना० स्त्री० छोटा मूसा, उसकी स्त्री।
चेंचरी० ना० स्त्री० वस्तु जिसमें सुर्मा रखते हैं।
चेंचकरना० अ० क्रि० उड़कना।
चेंड़ा० ना० पु० यौवन, छोरा।
चेंप० ना० पु० वृक्षका फल वा लासा।
चेटक० ना० पु० सेवक, नौकर, नगरविद्या।
चेटकी० ना० पु० इन्द्रजाल, ख्याल दिखानेहारा,
 ना० स्त्री० दासी, सेवकिन।
चेटी० ना० स्त्री० दासी, लौंडी।
चेत० ना० पु० स्मरण, होश, याद, दृष्टि।
चेतक० गु० चेत करनेहारा, चेत में हो।
चेतका० ना० स्त्री० रसा, चिता, रामचन्द्रिकाया,
 मनो चेतका में सती सत्त धारी।
चेतकी० ना० स्त्री० हर्रे।
चेतना० स० क्रि० स्मरण करना, ध्यानलगाना,
 निहारना, दृष्टि में आना ना० स्त्री० बुद्धि।
चेता० गु० चेत करनेहारा।
चेरा० ना० पु० चेला, चाकर, सेवक।
चेराई० ना० स्त्री० दासत्व, सेवकाई।
चेरी० ना० स्त्री० चेली, दासी।
चेरो० ना० पु० चेराका बहुवचन।

चौबे० ना० पु० चतुर्वेदी, जातिविशेष, मथुरा तीर्थ के पुरोहित।
चौमासा० ना० पु० बरसात, पावस।
चौमुख० ना० पु० मशाल, चौमुखा दीवट, चारोंओर।
चौमुखा० ना० पु० दीपविशेष, चारमुखकी दीवट।
चौमुखी० ना० स्त्री० रुद्राक्ष का फल।
चौर० ना० पु० चोर।
चौरकर्म० ना० पु० चोरी।
चौरंग० ना० पु० दावविशेष, बैलआदि के चारों पाव एक चोट में काटना।
चौरभय० ना० पु० चोरोंका डर।
चौरस० गु० समान, एकसा।
चौरसाना० स० क्रि० समान करना।
चौरसाई० ना० स्त्री० सफाई, समानता।
चौरा० ना० पु० चबूतरा, चोतरा।
चौरानवे गु० नब्बे और चार ९४।
चौरासी० गु० अस्सी और चार ८४।
चौराहा० ना० पु० मार्ग चारों ओर जानेका।
चौरी० ना० पु० चौसार घेरेहुए लाल।
चौलड़ा० ना० पु० } चारि लड़की माला वा
चौलड़ी० ना० स्त्री० } कोई वस्तु।
चौला० ना० पु० अन्नविशेष।
चौलाई० ना० स्त्री० शाकविशेष।
चौवा ना० पु० पशु चतुष्पाद।
चौवाई० ना० स्त्री० आंधी, भकड़।
चौसठ० गु० साठि और चार ६४।
चौसर० ना० पु० चार लड़काहार, चौपड़।
चौहट० } ना० पु० चौराहा, चौसरका वा
चौहट्टा० } जार।
चौहत्तर० गु० सत्तर और चार ७४।
चौहान० ना० पु० रजपूत जातिविशेष।
च्युत० गु० पतित, भ्रष्ट, बदला।
च्युतता० ना० स्त्री० पतन, बदल।
च्युति० ना० स्त्री० योनि, गुदा।

छ

छ० गु० षट् ६।
छकड़ा० ना० पु० गाड़ी, शकट।
छकड़ाना० स० क्रि० चौंधियाना, घबराना।
छकना० अ० क्रि० सन्तुष्ट होना, भरना तृप्तहोना, दुखित, व्याकुल।
छकाई० ना० स्त्री० तृप्ति, सन्तुष्टता।
छकाना० स० क्रि० सन्तुष्ट करना, तृप्तकरना, पेटभर भोजन कराना।
छकाड़० ना० स्त्री० थप्पड़, गु० छ दान का पशु आदि।
छक्क० ना० पु० छ का समूह, खेल विशेष, जाल सहित पिंजरा।
छगरी० ना० स्त्री० बकरी।
छगल० ना० पु० बकरी।
छँगुली० ना० स्त्री० कनिष्ठिका, पांचवीं अंगुली।
छछुन्दर० } ना० स्त्री० मूसा जो रातिको निक
छछूदर० } सत है और दुर्वासित होताहै।
छजा० गु० झाड़खण्ड।
छज्जा० ना० पु० बरामदह।
छजी० ना० स्त्री० सज्जी।
छज्जन० ना० पु० दारुविशेष।
छछुनाना० अ० क्रि० सनसनाना, सरसेदेना, चरपराना।
छटना० ना० पु० चलनाविशेष, अ० क्रि० घटना, बिछुड़ना, भिन्नभिन्न होना।
छटा० ना० स्त्री० उजाला, चमचमाहट, बिजली सीधा गु० उतराहुआ, छाँटहुआ।
छटांक० ना० स्त्री० सेरका सोलहवांभाग।
छटाना० स० क्रि० चुनवाना।
छटे० ना० पु० उजेले का बहुवाक्य गु० बनेहुये, चुनेहुये अलगभये।
छट्ठ० ना० स्त्री० षष्ठी, छठ।
छट्ठी० ना० स्त्री० छठुई, षष्ठी, जन्मन के पीछे छठे दिनका व्यवहार।
छठ० ना० स्त्री० षष्ठी, छट्ठी।
छठी० ना० स्त्री० छट्ठी।
छड़० ना० पु० मालेकी लकड़ी, उड़ा, डाढी और

छर, आंख में सफेद दाग।
छड़ना० स० क्रि० चावलों का छांटना।
छड़ा० गु० अकेला ना० पु० कान वा पांव में पहिरने का भूषण।
छड़ाना० स० क्रि० चावल साफकरना।
छड़िया० ना० पु० छोड़ीवाल, आसावरदार ना० स्त्री० छोटीगली, फोलिया।
छड़ियाना० स० क्रि० छड़ीसे मारना।
छड़ी० ना० स्त्री० बेन, बांसकी सूखी लकड़ी, छिकुनी।
छड़ीला० ना० स्त्री० जटामांसी।
छण० ना० पु० क्षण।
छण्टना० अ० क्रि० दुर्बलहोना, [illegible]।
छण्टवाना० स० क्रि० छिलका उतारना।
छण्टाई० ना० स्त्री० छांटने का काम।
छण्टाव० ना० पु० [illegible]।
छण्डना० स० क्रि० [illegible], बखेरना।
छण्डना० स० क्रि० छुड़ाना,
छण्डित० गु० छोड़ागया।
छण्डुआ० ना० पु० छूट छंद।
छण्डौती० ना० स्त्री० छुट्टी, छुटकारा।
छत० ना० स्त्री० घरके ऊपरकी छत का पाटन।
छतकुम्भक० ना० स्त्री० [illegible], यथा करवीरा श्वेतपुष्पा, [illegible] इति

छनना० अ० क्रि० छलना, निछरना, साफहोना।
छनाक० ना० पु० छन, [illegible] का शब्द।
छनाका० ना० पु० तुरन्त जलजाना पानी का आगमें।
छनिक० ना० पु० क्षणिक।
छन्द० ना० पु० पद्य, रचना, गायत्र्यादि।
छन्दगति० ना० स्त्री० छन्दों की चाल।
छन्दना० अ० क्रि० कटना, बंधना।
छन्दबन्द० ना० पु० छलबल, छल।
छन्दी० गु० छली, कपटी।
छन्ना० ना० पु० कपड़ा दूध आदि छाननेका।
छन्नी० ना० स्त्री० छोटा छन्ना, भूमिविशेष।
छन्नू० गु० छाननेवाला।
छप० ना० पु० जलमें वस्तु गिरनेका शब्द।
छपई० ना० स्त्री० छः पदका छन्द।
छपकली० ना० स्त्री० जन्तुविशेष।
छपकाना० स० क्रि० पानी डालना।
छपकी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष।
छपना० अ० क्रि० छापाहोना, छुपना।
छपरा० ना० पु० छप्पर।
छपरिया० ना० स्त्री० छोटा छप्पर।
छपरी० ना० स्त्री० छपरा।
छपाई० ना० स्त्री० छापने का काम वा पैसा।

छमछमाना० अ० क्रि० चमकना, झलकना, जगना।
छय० ना० पु० क्षय।
छयरोग० ना० पु० क्षयरोग।
छर० ना० स्त्री० जगमगी, चमक, लपक, जल्दी, शिताबी।
छरछोबी० ना० स्त्री० झाड़ गिरने का स्थान।
छरस० ना० पु० पंगरस।
छरी० ना० स्त्री० छड़ी।
छर्दायन० ना० पु० लोग।
छर्दि० ना० स्त्री० वमन, ओकना।
छर्रा० ना० पु० लोहेआदिकी छोटी छोटी गोली।
छल० ना० पु० कपट, ठगाई, धोखा, धोखा, मिस
छलकना० अ० क्रि० निकलजाना, हलकना।
छलकाना० स० क्रि० गिरादेना।
छलकारी० गु० कपटी, ठग दगाबाज।
छलांगना० अ० क्रि० कूदना।
छलछिद्र० ना० पु० कपट, छल।
छलछिद्री० गु० कपटी, छली।
छलना० स० क्रि० छलकरना, ठगना, भटकाना।
छलनी० ना० स्त्री० चलनी।
छलांग० ना० स्त्री० कूदना, फलांग।
छलावा० ना० पु० लूका, भाग रोनानी।
छलिया० }
छली० } गु० कपटी, ठग, प्रपंची।
छल्ला० ना० पु० अंगुली म पहिरने का गहना।
छवा० ना० स्त्री० एंड़ी पासकी।
छवि० ना० स्त्री० शोभा, चमक, सुन्दरता।
छविभीर० ना० पु० श्वान।
छवीला० गु० सुन्दर, शोभायमान।
छवैया० ना० पु० छानेहारा।
छांई० ना० स्त्री० झौंर।
छां० ना० स्त्री० छाया।
छांट० ना० स्त्री० गूद, मांदी छीलन।
छांटन० ना० स्त्री० टुकड़ा, धज्जी।
छांटना० स० क्रि० वमन करना, कतरना, अलग करना।
छांड़० ना० स्त्री० किनारा, नदी का अगाड़, नदी का सोता।
छांड़ना० स० क्रि० छोड़ना।
छांद ना० स्त्री० पगहा, पैकड़ा।
छांदना० स० क्रि० बांधना।
छांदा० ना० पु० भाग, अंश, हिस्सा।
छांव० }
छांह० } ना० स्त्री० छाया, परछाईं।
छांहदार० गु० छायावान।
छाइ० ना० स्त्री० कलवा।
छाकना० स० क्रि० तृपत होना, पचाना, पेटभर भोजन वा कोई वस्तुखाना।
छाग० ना० स्त्री० बकरा।
छागल० ना० पु० कुप्पी, बकरी का चमड़ेकीमशक
छागी० ना० स्त्री० बकरी।
छागलांडी० ना० स्त्री० मिघारा।
छाछ० }
छाछी० } ना० पु० मट्ठा, मथा दही।
छाज० ना० पु० सूप।
छाजना० अ० क्रि० छाना, फबना, सजना।
छाजित० गु० शोभित, लाभकारी।
छात० ना० स्त्री० छत।
छाता० ना० पु० छत्र, छतुरी।
छाती० ना० स्त्री० छातीछाना, उर, कूची।
छात्र० ना० पु० विद्यार्थी, शिष्य, चेला।
छादन० ना० पु० कपास।
छान० ना० स्त्री० छप्परी, ठाट, छप्पर, विचार
छानना० स० क्रि० निखोरना, स्वच्छ करना, ढूंढ़ना, विचारना।
छानबीन० ना० स्त्री० विचार, जांच।
छानवे० गु० नब्बे और छ ९६।
छानस० ना० पु० चोकर, भूसी, चूरा।
छाना० स० क्रि० छाजना, छायाकरना, पाटना, छप्पर बनाना, ठहराना।
छानी० ना० स्त्री० छप्पर।
छाप० ना० स्त्री० मुद्रा, मुहर अथवा चिह्न

छापना० स० क्रि० छापाकरना, चिह्नना।
छापा० ना० पु० वैष्णवोंका तिलक, मुद्रा।
छापाविद्या० ना० स्त्री० जिसके द्वारा अनेक पुस्तक छापी जाती हैं, सब वस्तु जानी जाती हैं।
छाम० गु० दुबला, हलका।
छाया० ना० स्त्री० परछाईं, छाह, पिशाच भूत।
छायानट० ना० पु० रागिनीविशेष।
छायाधर० ना० पु० वृक्षादि।
छायापाद० ना० पु० छाया के परिमाण से समयका स्थिरकरना।
छार० ना० स्त्री० क्षार, ढेला जो बड़ा है।
छारछबीला० ना० पु० सुगन्धितवस्तु विशेष।
छारी० ना० पु० क्षारी, श्रीमहादेवजी।
छारू० ना० पु० निनावा।
छाल० ना० स्त्री० बकला, छिलका।
छाला० ना० पु० फफोला, चमड़ा खाल, पुरा।
छालियां० ना० स्त्री० सुपारीविशेष।
छावना० स० क्रि० छाना।
छावनी० ना० स्त्री० पलटनके रहनेका स्थान, छत छानेका काम।
छाह० ना० स्त्री० छाहँ।
छिउनी० ना० स्त्री० छड़ी, कमची।
छिका० ना० स्त्री० छींक।
छिकिका० ना० स्त्री० नकछिकनी, पोमा।
छिगुनी० } ना० स्त्री० कनिष्ठिका, कनगुरिया।
छिगुली० }
छिचड़ा० ना० पु० पावरा नया चमड़ा।
छिचड़ेला० ना० पु० दुबला, चमचिचड़।
छिछड़ा० ना० पु० खलड़ी, छवर।
छिछला० गु० उथला।
छिछलाई० ना० स्त्री० उथलाई।
छिछली० ना० स्त्री० खेलविशेष, थाड़ीगहरा।
छिछोड़ा० गु० ओछा, हलका, नीच।
छिटकना० अ० क्रि० फैलाना, बिथरना।
छिटकनी० ना० स्त्री० बिल्ली जो किवाड़ों में लगती है।
छिटकाना० स० क्रि० फैलाना, बिथराना।
छिटकी० ना० स्त्री० छर्रा, छाट।
छिड़कना० स० क्रि० छींटना बिथराना।
छिड़काना० स० क्रि० छिड़वाना, सिंचाना।
छिड़काव० ना० पु० सींच, सिंचाव।
छिड़ना० अ० क्रि० चिढ़ना, दुःखी होना।
छिड़ाना० स० क्रि० चिढाना, चिढ़वाना, दुखाना।
छितनिया० } ना० स्त्री० डलिया।
छितनी० }
छितरना० अ० क्रि० बिथरना, फलना।
छितराना० स० क्रि० बिथराना, फैलाना।
छिति० } ना० स्त्री० क्षिति, धरती, जमीन।
छिती० }
छिदना० अ० क्रि० बिधना, गड़ना, स० क्रि० राकना, रोधन का काम करना।
छिदनी० ना० स्त्री० छदने की वस्तु।
छिदाना० स० क्रि० छदकराना, रावाना।
छिद्र० ना० पु० छेद।
छिन० ना० पु० क्षण, लहमा।
छिनकना० स० क्रि० नाक स्वच्छकरना।
छिनला० ना० पु० व्यभिचारी, परस्त्रीगामी।
छिनवाना० स० क्रि० और किसी स छिनवाना।
छिनाल० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा।
छिनाला० ना० पु० व्यभिचार, कुलटापन।
छिनेक० ना० पु० क्षणैक।
छिन्न० गु० खण्डित, क्षाण, दुर्बल।
छिन्नभिन्न० गु० अलग २, तित्तर बित्तर।
छिन्ना० ना० स्त्री० गुरच, महापुंडी।
छिपकली० ना० स्त्री० गृहगोधिका, बिछिटी।
छिपका० ना० पु० छिड़काव।
छिपना० अ० क्रि० लुकना, गुप्तहोना।
छिपा० गु० लुका, गुप्त, अप्रकट।
छिपाना० स० क्रि० गुप्तकरना, लुकाना।

छिपाव० ना० पु० लुकाव, लुकाव, गोपन।
छिप्र० ना० स्त्री० शीघ्र, झटपट।
छिप्रोद्भवा० ना० स्त्री० गर्दै।
छिमा० ना० स्त्री० क्षमा।
छिमाजोग० गु० क्षमायोग्य।
छियालीस० गु० चालीस और छ ४६।
छियासठ० गु० साठ और छ ६६।
छियासी० गु० अस्सी और छ ८६।
छिलका० ना० पु० बकला, फलादिक ऊपरकी त्वचाविशष।
छिलना० अ० क्रि० रगड़जाना, उधड़जाना।
छिलाना० स० क्रि० बकलाना, रगड़ाना।
छिलैया० ना० पु० छीलनेहारा।
छिलौरा० ना० स्त्री० अग्नीकी शरीरपै फुड़िया फिनही।
छी० अव्य० तु करने का वाक्य।
छींट० ना० स्त्री० मिनत, प्रसिद्ध, अनम।
छींकना० अ० क्रि० नासिकासे पवन उतरना।
छींका० ना० पु० रस्सी का जाल जिसमें वस्तु रखके लटका देते हैं।
छीछड़ा० ना० पु० चमड़े के समान अमहण मांस।
छीजना० अ० क्रि० घटना, गिरना।
छीट० ना० स्त्री० छिटकी, दाग।
छींटना० स० क्रि० बिथराना, पानी छिड़कना।
छीनना० स० क्रि० झपटलेना, खसोटना।
छीप० ना० स्त्री० धारी, लहसुन, जिस लकड़ीमें बहेलिया मुख लगाते हैं, साग स हकेलना।
छीपना० स० क्रि० पानी छिड़क देना, छीप निकालना, वस्त्र छापना।
छीपी० ना० पु० बरन, छापनेहारा।
छीमी० ना० स्त्री० फली, छिलका।
छीलन० ना० पु० खाजना, कतरना।
छीलना० स० क्रि० खाजना, कतरना, छिलका उतारना, छीलना।
छुगनिया० ना० स्त्री० छगुनी।

छुछकारना० स० क्रि० तुच्छ करके निकालना, दुलराना।
छुछवाना० स० क्रि० गाड़ना, पूजना।
छुटकारा० ना० पु० छुड़ाव, उद्धार।
छुटखेलना० अ० क्रि० लुचापन करना।
छुटखेला० गु० लुचा, बदमाश।
छुटना० अ० क्रि० उद्धारहोना, निकलना।
छुगन० } ना० स्त्री० घुंघरू, छुद्री।
छुटानी० }
छुटापा० ना० पु० छुटाई, छोटापन।
छुट्टी० ना० स्त्री० छुटकारा, उद्धार, फुरसत।
छुड़वाना० स० क्रि० छुटकारा कराना।
छुतहरा० गु० जा अपवित्र होगया, पापी।
छुद्र० गु० क्षुद्र नीच, हलका, नकछिकनी।
छुद्रघण्टिका० } ना० स्त्री० क्षुद्रघण्टिका, तागड़ी करधनी।
छुद्रमेखला० }
छुद्रा० ना० स्त्री० पतुरिया, छाहाग, धवई, कनई पाथा, नीच स्त्री, नग्न।
छुधा० ना० स्त्री० भूख।
छुपना० अ० क्रि० लुकना, गतहोना।
छुपाना० स० क्रि० लुकाना, छिपाना।
छुरा० गु० छुरा, ग्रस, छिपा, अप्रगट।
छुरा० ना० पु० बड़ाछुरी बालमूड़नेका अस्त्र।
छुरिका० ना० स्त्री० पालक का साग छुरी।
छुरी० ना० स्त्री० चाकू, छोटा चाकू।
छुलकना० } अ० क्रि० थोड़ा थोड़ा मूतना।
छुलछुलाना० }
छुलाना० स० क्रि० छुवाना छिलाना।
छुहाना० स० क्रि० उजलाना।
छुहारा० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष।
छुहावट० ना० स्त्री० लगावट।
छूआना० स० क्रि० स्पर्श कराना छुलाना।
छूई० ना० स्त्री० दूधिया मट्टी, खड़ियामट्टी।
छूकी० ना० स्त्री० मच्छर।
छूछला० गु० बौरहा, बावला।
छूछा० गु० शून्य, खोखला, खाली।

छूछी॰ ना॰ स्त्री॰ कुत्सित, अपमानी, नीच, खाली।
छूट॰ ना॰ स्त्री॰ बट्टा, छुड़ाव, भूषणकी चमक।
छूटना॰ अ॰ क्रि॰ छुटना, निकलना।
छूत॰ ना॰ स्त्री॰ अपवित्रता, चोपाली।
छूना॰ स॰ क्रि॰ स्पर्श करना।
छेंक॰ ना॰ स्त्री॰ रोक।
छेंकना॰ स॰ क्रि॰ रोकना।
छेंकवैया॰ ना॰ पु॰ रोकवैया।
छेंकाव॰ ना॰ पु॰ रुकाव।
छेंड़॰ ना॰ स्त्री॰ खिजाव, दुखाव।
छेड़ना॰ स॰ क्रि॰ खिजाना, दुखाना।
छेद॰ ना॰ पु॰ छिद्र, सुरुख, सूराख।
छेदक॰ ना॰ पु॰ छेदकर्ता, बधक।
छेदन॰ ना॰ पु॰ छेद, वेधन।
छेदना॰ स॰ क्रि॰ वेधना, बरमाना।
छेना॰ ना॰ पु॰ खिरसा, छेनना।
छेनी॰ ना॰ स्त्री॰ छेवनी, छेदनी।
छेम॰ ना॰ स्त्री॰ क्षेम, कुशल।
छेमङ्करी॰ ना॰ स्त्री॰ क्षेमङ्करी, भला चाहने वाला।
छेरी॰ ना॰ स्त्री॰ बकरी।
छेल॰ } ना॰ पु॰ बकरा।
छेलरू॰ }
छेव॰ ना॰ पु॰ घाव, कमाव, विराव।
छेवना॰ स॰ क्रि॰ छेदना, काटना, फाड़ना।
छेवनी॰ ना॰ स्त्री॰ काटनी, टाँकी।
छेवा॰ ना॰ पु॰ पुस्तकोंमें ठहरावके स्थानका चिह्न।
छेत्र॰ ना॰ पु॰ क्षेत्र, खेत।
छेत्रफल॰ ना॰ पु॰ क्षेत्रफल।
छैया॰ ना॰ पु॰ छोकरा।
छैल॰ } गु॰ बांका, चिकनिया, अकड़ैत।
छैलचिकनिया॰ }
छैला॰ }
छोआ॰ ना॰ पु॰ जूसी।
छोकड़ा॰ } ना॰ पु॰ लड़का।
छोकरा॰ }
छोछो॰ ना॰ स्त्री॰ अगनी, गादा।
छोटा॰ गु॰ कनिष्ठ, लघु, अल्प।
छोटाई॰ ना॰ स्त्री॰ थोड़ाई, छोटापा।
छोड़ना॰ स॰ क्रि॰ त्यागना, क्षमाकरना।
छोड़ा॰ }
छोड़ाव॰ } ना॰ पु॰ छुटकारा, छुट्टी, उद्धार।
छोड़ावा॰ }
छोड़ावना॰ स॰ क्रि॰ छुटकारा कराना, उद्धार कराना।
छोड़ौती॰ ना॰ स्त्री॰ छुट्टा, छूट।
छोनी॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती, क्षोणि।
छोप॰ ना॰ पु॰ एकबार, रङ्गभरन, मिरन।
छोपना॰ स॰ क्रि॰ भैरदना, रंगदेना।
छोर॰ ना॰ पु॰ किनारा, कगर, सिरा।
छोरना॰ स॰ क्रि॰ छोड़ना।
छोरा॰ ना॰ पु॰ लड़का।
छोराछोरी॰ ना॰ पु॰ लड़का, लड़की।
छोरी॰ ना॰ स्त्री॰ लड़की, पुत्री।
छोलना॰ स॰ क्रि॰ छीलना।
छोलनी॰ ना॰ स्त्री॰ छीलनेका अस्त्र, खुर्पी।
छोह॰ ना॰ पु॰ स्नेह, प्रेम, दया।
छोहरा॰ ना॰ पु॰ लड़का।
छोहा॰ गु॰ स्नेही, प्रेमी, चाहक।
छौकन॰ ना॰ पु॰ बघार।
छौकना॰ स॰ क्रि॰ बैघारना।
छौंकन॰ ना॰ पु॰ क्षुधा लगनी करछाला।
छौंकना॰ स॰ क्रि॰ क्षुधा मारनी करना।
छौना॰ ना॰ पु॰ जन्तुका बच्चा, बच्चा।
छौनी॰ ना॰ स्त्री॰ छावनी, छप्परबंदी करना।
छौर॰ ना॰ पु॰ मुण्डन।
छौरक॰ ना॰ पु॰ नाई, नाऊ।
छौरकर्म॰ ना॰ पु॰ मुण्डना, बालमुण्डना, हजामत बनवाना।

(ज)

ज॰ अव्य॰ शब्द के अन्तमें समुन होकर, उत्पत्ति का बोधक होताहै।

जकड़ना० स० क्रि० कसना बांधना।
जकड़बन्द० ना० पु० भकड़वाई।
जग०ना०पु०जगत्,ससार,यश,गीर्ति जहां जासके।
जगचक्षु० ना० पु० सूर्य।
जगजगा० ना० पु० पुतलकी पक्षी।
जगजगाहट० ना० स्त्री० चमचमाहट।
जगजीवन० ना० पु० पानी, ईश्वर।
जगण० ना० पु० गणविशेष।
जगत्० ना० पु० ससार, दुनिया, टर।
जगता० गु० जो सोता नहीं, अनींदा।
जगती० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, लोग।
जगत्प्राण० ना० पु० पवन, ईश्वर।
जगदम्बा० ना० स्त्री० आदिशक्ति,देवी, भवानी, जगत्की माता।
जगदादि० ना० पु० पृथ्वीका आरम्भ।
जगदाधार०ना०पु०शेष,दिग्गज,गौआदि,ईश्वर।
जगदीश० ना० पु० परमात्मा, विष्णु, शिव राजाधिराज।
जगधर० ना० पु० शेषजी।
जगना० अ० क्रि० नींदसे उठना, चेतना।
जगन्नाथ० ना० पु० पुरुषोत्तम, उड़ेसा देश में श्रीकृष्णचन्द्रजी।
जगन्मित्र० गु० सबका दोस्त, सबका मित्र।
जगन्मित्रता० ना० स्त्री० सबकी मित्रतारखना।
जगमगा० गु० चमकीला।
जगमगाना० अ० क्रि० चमकना, झमकना।
जगयोनि० ना० पु० ब्रह्मा।
जगवल्लभा० ना० स्त्री० वरयां, पतुरिया।
जगह० ना० स्त्री० ठौर, धरती, समाई,प्रजायश।
जगाजोति० ना० स्त्री० चमक, भड़क।
जगाना० स० क्रि० सोनेसे उठाना।
जगेसर० ना० पु० जगेश्वर।
जघन० ना० पु० उरस्थल।
जघन्य० गु० नीच।
जङ्गम० ना० पु० चलनेवाला, वेषधारी, गु० जो चलने की सामर्थ्य रखता है, वैरागी।
जंगल० ना० पु० वन, अरण्य।
जंगला० ना० पु० रागिनीविशेष।
जंगली० ना० पु० बनैला, वनवासी।
जंघ० ना० पु० जांघ, रान।
जंघा० ना० स्त्री० जांघ, जानु।
जचना० अ० क्रि० परखलाजाना, परीक्षाहोना।
जचाना० स० क्रि० परखलवाना, कसवाना, परीक्षा कराना।
जचायट० ना० स्त्री० परीक्षा, जांच।
जंजाल० ना० पु० उलझेड़ा, दुःख, झगड़ा।
जंजाली० गु० झगड़ी, दुःखदाता।
जट० ना० स्त्री० जटा।
जटना० स० क्रि० चिपट्जाना, मूड़ना।
जटा० ना० स्त्री० बिगड़ेहुये बाल, भूसींटा।
जटाधारी० गु० जटा रखनेवाला।
जटामांसी० ना० स्त्री० ओषधीविशेष।
जटायु० ना० पु० गृध्रविशेष।
जटित० गु० जड़ाहुआ, जड़ाऊ।
जटिल० गु० पुराना, जटाधारी।
जटी० ना० पु० बरगद वृक्ष, शिवजी।
जठर० ना० पु० पेट, उदर।
जठरानल० ना० पु० पेटकी अग्नि।
जेठरा० गु० बड़ा, जेठा।
जठेरी० ना० स्त्री० बड़ी, बूढ़ी।
जड़० ना० स्त्री० मूल, गु० मूर्ख, स्थावर, निर्जीव, दुष्ट, निशाचर।
जड़न० ना० स्त्री० जड़ने का काम।
जड़ना० स० क्रि० लगाना, जोड़ना।
जड़पेड़० ना० स्त्री० समूचापेड़, अर्थात् सब।
जड़वट० ना० स्त्री० स्तम्भ।
जड़हन० ना० पु० धान जो कातिक अगहन में काटा जाता है।
जड़ाई० ना० स्त्री० जड़ने का काम वा जड़ने का पैसा।
जड़ाऊ० मणिप्रभादि से जड़ाभया, जड़ाहुआ।

जड़ाना० स० क्रि० जड़वाना, जाड़ा खाना।
जड़ाव० ना० पु० जड़नेका काम।
जड़ावर० ना० स्त्री० जाड़े के कपड़े।
जड़ित० गु० जटित, जड़ाहुआ।
जड़िनी० गु० स्त्री० जड़ स्त्री, दुष्टिनी।
जड़िया० ना० पु० जड़नेवाला, जौहरी, सुनार।
जड़ी० ना० स्त्री० औषधि, पौधेकी जड़।
जतन० ना० स्त्री० रीति, डौल।
जतन० ना० स्त्री० यत्न, तदबीर।
जतनी० ना० स्त्री० यत्नी, तदबीर करनेवाला।
जताना० स० क्रि० सुझाना, चिताना, बताना।
जतारा० ना० पु० वंश, घराना, पीढ़ी।
जती० ना० गु० यती, संन्यासी, शान्त।
जतु० ना० स्त्री० लाख।
जतुआ० ना० पु० लंडीका खूंटा।
जथा० अव्य० यथा, ना० पु० समूह।
जथार्थ० अव्य० यथार्थ, सच ठीक।
जद० अव्य० यदा, जब।
जदु० ना० पु० यदु।
जदुनाथ० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
जदुनायक०
जदुपति०
जदुवंशी० गु० यदुवंशी।
जद्यपि० अव्य० यद्यपि।
जन० ना० पु० मनुष्यलोग, नौकर।
जनक० ना० पु० पिता, श्रीसीताजी के पिता।
जनकपुर० ना० पु० पिताका गांव या नगर, तिरहुत नगर।
जनता० ना० स्त्री० लोग या लोगोंका समूह, मनुष्यता, आदमीयत।
जनन० ना० पु० जन्म, उत्पत्ति।
जनना० स० क्रि० जन्मदेना।
जननी० ना० स्त्री० माता, महतारी।
जनरव० ना० पु० लोगोंका शब्द।
जनलोक० ना० पु० लोक विशेष, जिसमें साधु लोग मरने के पीछे वास करते हैं।
जनयित्री० ना० स्त्री० माता, जननी।
जनवासा० ना० पु० जहां बरात ठहरती है।
जनश्रुति० ना० स्त्री० सन्देशा, समाचार।
जनहाई० } अव्य० मनुष्य, मनुष्यसहित, प्रत्येक, हरएक।
जनहार०
जना० ना० पु० लोग, मनुष्य, गु० पुत्र उत्पन्न हुआ, भया।
जनाई० ना० स्त्री० जो स्त्री लड़का जन्मातीहै, दिखाई।
जनाजात० अव्य० जनहाई।
जनाती० गु० कन्याके ओरके बराती, बराती लोग।
जनाना० स० क्रि० उत्पन्न कराना, जताना, चिताना, दिखाना।
जनार्दन० ना० पु० श्रीकृष्णजी।
जनाव० ना० पु० जताव, लखाव।
जनिका० ना० पु० द्व्यर्थ जिसका दोप्रकारअर्थहोते।
जनित० गु० उत्पन्न भया, उपजा।
जनी० ना० स्त्री० दासी, बहू, ब्यानी।
जनु० ना० पु० जन्म, उत्पत्ति, अव्य० मानो।
जनक० अव्य० मानों।
जनेऊ० ना० पु० यज्ञोपवीत।
जनेत० ना० पु० बरात।
जनेवा० ना० स्त्री० तृणविशेष, कांसाघोड़ी।
जनेश० ना० पु० राजा।
जनो० ना० पु० जनेऊ।
जन्ता० ना० पु० तारखींचने का यन्त्र।
जन्ताना० स० क्रि० दबाना, निचोड़ना।
जन्तार० ना० पु० यन्त्र।
जन्तु० ना० पु० जीवधारी, क्षुद्रजीव।
जन्तुक० ना० पु० हींग।
जन्तुदनन० ना० पु० विड़ंग औषधि।
जन्म० ना० पु० उत्पत्ति, पैदायश।
जन्मदाता० ना० पु० पिता।
जन्मदिन० ना० पु० वर्षबन्धन, वर्षगांठ।
जन्मना० स० क्रि० उपजना, पैदाहोना।
जन्मपत्री० ना० स्त्री० जन्मकुण्डली, सम्मकुण्डली, जायचह।

जन्मभूमि० ना० स्त्री० } उत्पत्तिका घर वा
जन्मस्थान० ना० पु० } स्थान।
जन्माना० स० क्रि० उपजाना, पैदाकराना।
जन्मान्तर० ना० पु० और जन्म।
जन्मान्तरीय० गु० अगले जन्मका उपार्जित।
जन्मान्ध० गु० जन्मका अन्धा।
जन्मोत्सव० ना० पु० जन्मदिन का आनन्द, कृष्णजन्मोत्सव।
जन्यजनकभाव० ना० पु० उत्पन्न कियाहुआ और उत्पन्न करनेवाले वस्तु इनका सम्बन्ध।
जप० ना० पु० पाठ मन्त्रादिका उच्चारण।
जपन० ना० पु० मन्त्रउच्चारण पाठ।
जपना० स० क्रि० मन्त्रादिका उच्चारण।
जपन्ता० गु० जापक।
जपमाला० ना० स्त्री० जपनेकी माला।
जपा० ना० पु० गुड़हड़ का फूल।
जपी० गु० जापक
जगीतपी० ना० पु० अवक भजनीक।
जब० अव्य० यदा।
जबड़ा० ना० पु० जभा।
जबरा० गु० अकड़ा, बलवान्।
जबड़िया० गु० कुरूप।
जभा० ना० पु० जबड़ा।
जम० ना० पु० यम मृत्युपति।
जमअनुजा० ना० स्त्री० यमुनानदी।
जमक० ना० पु० यमक पढ़िता शब्द छन्दका।
जमकना० अ० क्रि० जमना निमना ठहरना।
जमकाना० स० क्रि० जमाना ठहराना बैठाना।
जमघट० ना० पु० मण्डल्या भीड़।
जमजम० अव्य० निरन्तर मन।
जमदग्नि० ना० पु० परशुराम के पिता।
जमदूत० ना० पु० यमदूत।
जमधर० ना० पु० कटार।
जमना० अ० क्रि० उगना, ठहरना, जमजाना।
जमराज० ना० पु० यमराज।
जमल० गु० ना २।

जमहाई० ना० स्त्री० आलस्यउत्पन्न होकर मुखका पसारना।
जमहाना० अ० क्रि० जमहाई लेना।
जमाई० ना० स्त्री० जामाता, दामाद।
जमाना० स० क्रि० उगाना, बाधना, इकट्ठा करना, अगरना, बैठाना।
जमालगोटा० ना० पु० औषधि विशेष।
जमाव० ना० पु० भीड़, बहुताता
जमावट० ना० स्त्री० बँधाव।
जमी० ना० स्त्री० रात यमी यमुनानदी।
जमोगना० स० क्रि० सहजाना।
जमोघ० } ना० पु० जमविशेष जो लड़कोंको
जमोघा० } लगता है।
जमना० अ० क्रि० बढ़ना, पनपना।
जम्बाल० ना० पु० सियाल, बालू।
जम्बीर० } ना० पु० नींबू।
जम्बारक० }
जम्बु० ना० पु० जादड़, शृगाल यमुनाकूल।
जम्बुक० ना० पु० गीदड़ शृगाल।
जम्बुमाली० ना० पु० प्रहस्तकापुत्र राक्षसविशेष।
जम्बूद्वीप० ना० पु० पृथ्वीके सात द्वीपमें से एकका नाम।
जम्भभेदी० ना० पु० इन्द्र।
जम्भल० } ना० पु० जम्भारी नींबू।
जम्भार० }
जय० ना० स्त्री० पराभव करना, उन्नति, गु० जिता जयति आशिष।
जयजयकार० ना० पु० पराभव होना, शत्रुका वर्णाद का वा जीतका बाधक।
जयजयवन्ती० ना० स्त्री० रागनी विशेष।
जयढाक० ना० पु० ढालविशेष।
जयत० ना० पु० वृक्षविशेष।
जयात० क्रि० जीतो।
जयनगर० ना० पु० राजपूताने का राजधानी।
जयन्त० ना० पु० इन्द्रका पुत्र।
जयन्ती० ना० स्त्री० दुर्गादेवी, वृक्षविशेष।

जयन्तीपुर० ना० पु० शिलहट से दश कोसपर का देश जिसको जयन्ती कहते हैं।
जयवेर० गु० जितने बार।
जयमान०
जयवन्त० } गु० जयकरनेहारा, जीतनेवाला।
जयवान्०
जयवती० ना० स्त्री० अग्नि की जिह्वाविशेष गु० जीतनेहारी।
जया० ना० स्त्री० हर्रे, विष्णुकान्ता, भांग, देवीविशेष।
जयी० गु० जय करनेहारा।
जर० ना० पु० जड़ ज्वर विशेष।
जरण० ना० पु० जीरा सुफ़ेद, जलन।
जरन० अ० क्रि० जलन।
जरना० अ० क्रि० जलना।
जरा० ना० स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धावस्था।
जरांस० ना० पु० ज्वरांश।
जराना० स० क्रि० जलाना।
जरायजरी० गु० स्त्री० जड़ाऊ।
जरायु० ना० स्त्री० कोख, पेट, कुक्षि।
जरायुज० ना० पु० जो कोख में उत्पन्नहो, जो झिल्ली में उत्पन्नहो अर्थात् मनुष्यादि।
जरासन्ध० ना० पु० मगधका राजा जरानाम राक्षसी ने जोड़ागया।
जर्जर० गु० निर्बल, जांजर, जीर्ण।
जर्जरी० ना० पु० लहसुन।
जल० ना० पु० पानी।
जलअलि० ना० पु० पानीका भँवर।
जलकन्द० ना० पु० सिंघाड़ा।
जलकामा० ना० स्त्री० ठंढाहोली।
जलक्रीड़ा० ना० स्त्री० पानी में का खेल।
जलकुक्कड़० } ना० पु० पनडुब्बी, मुर्गाबी।
जलकुक्कुट०
जलखानि० ना० पु० मेघ, समुद्र, नदी।
जलगोजर० ना० पु० चिलगोजा।
जलचर० गु० जलजन्तु, पनिहा, जल के बसने हारे जन्तु।
जलचरेश० ना० पु० मगर, मच्छ, ग्राह।
जलज० ना० पु० कमल, गु० जो कुछ जलमें उपजे
जलजन्तु० ना० पु० जल में रहनेहारे जीव।
जलजन्त्र० ना० पु० बम्बा, फव्वारह, जलयन्त्र।
जलजला० गु० महाक्रोधी।
जलजलाना० अ० क्रि० आग हो जाना, झुंझलाना।
जलजलाहट० ना० स्त्री० कोप, क्रोध, झुंझलाहट।
जलजात० ना० पु० कमलादि।
जलजान० ना० पु० नाव, जहाज़।
जलमधु० ना० स्त्री० मुलहटी।
जलतरंग ना० पु० बाजाविशेष जलकीलहरि।
जलतरंगी० ना० स्त्री० बाजाविशेष बजानेवाला।
जलतरण० ना० पु० तैरना, नाव या जहाज चलाने की क्रिया।
जलथल० ना० पु० जल और स्थल।
जलद० ना० पु० मेघ।
जलधर० ना० पु० मेघ, समुद्र।
जलधार० } ना० स्त्री० पानी की धारा।
जलधारा०
जलधि० ना० पु० समुद्र।
जलन० ना० पु० ज्वलन, ताप, क्रोध।
जलना० अ० क्रि० बरना, दहकना।
जलनिधि० ना० पु० समुद्र।
जलनीम० ना० पु० औषधि विशेष।
जलन्धर० ना० पु० रोगविशेष जिसमें रोगी पानी बहुत पीता है, राजा विशेष।
जलपाई० ना० स्त्री० वृक्षविशेष।
जलपान० ना० पु० पानी पीना, कलेवा।
जलपुट० ना० पु० पानी का बर्तन।
जलबल० गु० जो जलने से नाशहोगया ना० पु० पान, केवल।
जलमय० ना० पु० चन्द्रमा, प्रलय।
जलमानुष० ना० पु० मनुष्यरूपी जलजन्तु।
जलमार० ना० पु० तीर, नहर।
जलमाल० ना० स्त्री० नदी।
जलराशि० ना० पु० समुद्र।

जलरुह० ना० पु० कमल।
जलवैया० ना० पु० जलनिद्दा।
जलशायी० ना० पु० विष्णु, नारायण।
जलशयनी० ना० स्त्री० जल में सोना, जल में रहना, तरस्याविशेष मत्स्य।
जलसुत० ना० पु० नहरुआ।
जला० ना० स्त्री० ज्वाल।
जलाकार० ना० पु० जलका आकार।
जलाना० स० क्रि० बालना, दाहना।
जलथला० } जलाभुमा० } गु० चिपिड़ा, कार्यी।
जलार्णव० ना० जल प्रलय, जलका समुद्र।
जलावन० ना० पु० ईंधन।
जलाशय० } जलाश्रम० } ना० पु० तालाव, पोखर।
जलाश्रय० ना० पु० जल के भरोते।
जलिया० ना० पु० कहार, धीमर, मछुआ।
जलेबी० ना० स्त्री० मिठाई विशेष।
जलेश० ना० पु० वरुणदेव, समुद्र।
जलोद० ना० पु० क्षीरोद, मेघ।
जलोदर० ना० पु० जलधर।
जलौका० ना० स्त्री० जोंक।
जल्पना० अ० क्रि० बकना, निज बड़ाई करना। मत्यार्थ बात कहना।
जल्पाक० गु० बकवादी, निजबड़ाई करनेहारा।
जव० ना० पु० यव, जौ, जल्दी।
जवन० ना० पु० यवन, घोड़ा।
जवरुया० ना० स्त्री० हर्र।
जवनष्ट० ना० पु० लहसुन।
जवा० ना० पु० अंगुली की गांठ में चिह्न पुष्प विशेष।
जवाहा० ना० स्त्री० अजवायन्।
जवाद० ना० स्त्री० केसर।
जवाधिक० ना० पु० घोड़ा।
जवानी० ना० स्त्री० अजवायन्, खुरासानी।

जवानिक० } जवासाहा० } ना० पु० अजवायन्।
जवाखार० ना० पु० क्षारादि, तणविशेष।
जवासा० ना० पु० कांटीलाविशेष।
जस० ना० पु० यश।
जसत० } जसता० } ना० पु० धातु विशेष।
जसवत० } जसवन्ति० } जसवन्त० } जसस्वी० } जसी० } गु० कीर्तिमान्,प्रतिष्ठित, यशी, यशस्वी।
जसुमति० } जसोदा० } जसोमति० } ना० स्त्री० नन्दरानी, यशोदा
जहर्पमी० ना० स्त्री० बीच बीज।
जव० अव्य० जहां, यत्र।
जह्नु० ना० पु० मुनि विशेष।
जह्नुसुता० ना० गंगा भागीरथी।
जहां० अव्य० जब, यत्र, जिसस्थान में जिधर।
जहीं० अव्य० जिसकी जगह।
जा० सर्व० जिस।
जाई० गु० जनी, ना० स्त्री० बेटी।
जांगर० सं० पु० पिण्डली समेत जांघ, घुटना।
जांघ० ना० स्त्री० जंघा, जानु।
जांघिया० ना० पु० कछना।
जांच ना० स्त्री० अटकल, परख, कस।
जांचना० स० क्रि० कसना, परखना, देखना, दुहराना, ठीककरना, परीक्षाकरना।
जांता० ना० पु० पाषाणका यन्त्र जिसमें गेहूं पीसते हैं, चक्की।
जाकड़० ना० पु० जाकर, बधक, रहना।
जाकर० ना० पु० जिसहाथ में सर्व जिसका।
जाग० ना० पु० निद्राका त्याग, यज्ञ।
जागत० ना० स्त्री० चौकसाई।
जागतज्योति० गु० अद्भुत पराक्रमी।
जागना० स० क्रि० नींदसे उठना, चेतना।

जागरण० ना० पु० नींदत्याग, रातिको व्रतादि में जागना।
जागल० ना० पु० श्याम, अगर।
जागा० ना० पु० जातिविशेष।
जागू० ना० पु० जागने हारा।
जाग्रत० ना० स्त्री० स्वप्न और सुषुप्ति से भिन्न अवस्था।
जांगली० ना० पु० गिधारा।
जाचक० ना० पु० याचक, मांगनहारा।
जाचना० स० क्रि० मांगना चाहना।
जाचा० गु० मांगा, चाहा।
जाच्यमान० गु० मांगा वा चाहागया, अधमदान।
जाजरू० ना० पु० स्वाक वा ढालकनजानहारा।
जाजा० ना० स्त्री० कलौजी।
जाजामन्ती० ना० स्त्री० जयजयवन्ती।
जाट० ना० पु० राजपूतों में जातिविशेष।
जाठ० ना० स्त्री० कोल्हूकी धुरी।
जाडू० ना० स्त्री० मदुका।
जाडा० ना० पु० शीत, ठंढ, शीतकाल।
जादी० ना० स्त्री० दाढ़ीकी पाति।
जाड्य० ना० पु० जड़ता, शीतलता, मूढ़ता।
जात० ना० स्त्री० जाति, यात्रा, मेला, गु० जना।
जातक० गु० पुत्र, बचा।
जातकर्म० ना० पु० जन्म संस्कारविशेष यथा छठी आदि।
जातना० ना० स्त्री० पीड़ा, दुःख दण्ड, वेदना।
जातपांत० ना० स्त्री० पीढ़ी, वंशावली।
जातरूप० ना० पु० सुवर्ण, धतूरा।
जातवेद० ना० पु० अग्निदेव।
जाति० ना० स्त्री० वर्ण, क़ौम, एक रूपसे बहुत से पिण्डों में समानधर्म्म, यथा पशुत्व, मनुष्यत्व, उत्पत्ति।
जातिकोष० ना० स्त्री० जावित्री।
जातिपत्री० ना० स्त्री० जावित्री बिरादरी की चिट्ठी।
जातिभ्रष्ट० गु० पापादि के कारण जो जाति से निकालागया वा निकलगया।
जातिवाचक० गु० जिस सञ्ज्ञा से जातिमात्रका बोधहोय यथा पशु, पक्षी।
जातिसूज० ना० पु० जायफल।
जाती० ना० स्त्री० मालती, जावित्री, पुष्पविशेष।
जात्यायत० गु० जिस क्षेत्रकी आमनेसामनेकी भुजा तुल्य और चारों कोण सम हैं।
जात्यत्रिभुज० ना० पु० त्रिकोण जिसका एक कोण समकोण हो।
जात्रा० ना० स्त्री० यात्रा, चलना।
जात्री० ना० पु० यात्री, जानेवाला।
जान० ना० पु० विमान, सवारी, वाहनादि डीठ, बुद्ध, ज्ञान, सब गु० ज्ञानी।
जानकी० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।
जानपहिचान० ना० पु० चिन्हार, मुलाकात।
जाना० अ० क्रि० चलना।
जानु० ना० पु० घुटना, गांठ।
जानो० अव्य० समझो, अ० क्रि० जाना।
जाननाः स० क्रि० पहिचानना, समझना।
जाप० ना० पु० जप, पाठ।
जापक०
जापी० } गु० जप करनेहारा।
जाब० ना० पु० दासी।
जायी० ना० स्त्री० धाती दासी।
जाम० ना० पु० पहर।
जामदग्न्य० ना० पु० परशुराम, जमदग्निपुत्र।
जामन० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष, जाइन, जमावा।
जामवन्त० ना० पु० ऋक्षोंका प्रधानविशेष।
जामवन्ती० ना० स्त्री० कृष्णचन्द्रकी स्त्री।
जामा० ना० पु० एकप्रकार पहिरनेका वस्त्र विशेष।
जामाता०
जामातु० } ना० पु० बेटी का पति।
जामिनी० ना० स्त्री० रात्रि, यामिनी, जमन देशकी भाषा वा वस्तु।

जायपत्री० ना० स्त्री० जावित्री ।
जायफल० ना० पु० फलविशेष ।
जाया० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री, भार्या, गु० जनी ।
जार० ना० पु० उपपति, यार, दूसरापति ।
जारज० } ना० पु० विगमा, सकरवर्णा ।
जारजात० } उपपतिजात, यारकाजनमाया ।
जारन० ना० पु० जलावन ।
जारना० स० क्रि० जलाना, फूकना, दाहना ।
जारल० ना० पु० काष्ठविशेष ।
जाल० ना० पु० जिसम मछलीआदि पकड़ते हैं फन्दा, माया, पावरण, भरम, दाम्भा ।
जालगि० अव्य० जिस लिए, सर्व० जिसके लिए ।
जालरन्ध्र० ना० पु० झरोखा, जाली का
जाला० ना० पु० जिसको मकड़ी बनाता है, घर, मोतियाबिन्दु ।
जालिका० ना० स्त्री० झर्झरी ।
जालिनी ना० स्त्री० तुरई, दवदाला ।
जालिया० ना० पु० छलिया, जालसाज
जाली० ना० स्त्री० बहुत छिद्रों की खिड़की वा कपड़ा आदि ।
जालीन० ना० पु० चन्दनवृक्षका नामविशेष ।
जावक० ना० पु० आलता, महावर, मदूर ।
जावदा० ना० पु० स्त्री० लोग ।
जावनी० ना० स्त्री० यवनवाला
जावा० ना० पु० उपजातविशेष ।
जावा० ना० पु० दावुद जो एकहीसाथ उत्पन्न ।
जावालि० ना० पु० मुनिविशेष ।
जावित्री० ना० स्त्री० वृक्षविशेष की छाल ।
जासु० सर्व० जिसका, जिसको ।
जाह्नवी० ना० स्त्री० गङ्गाजी
जाहि० सर्व० जिसको ।
जाही० ना० स्त्री० जूही जाती ।
जिगजिगिया० गु० चापलूसी करनेवाला ।
जिगजिगी० ना० स्त्री० लाग, लपट, चापलूसी ।
जिगना० ना० पु० कृमिविशेष ।
जिगीषा० ना० स्त्री० इच्छा, जयकी इच्छा ।
जिगणी० ना० पु० जिगना ।
जिजिया० ना० स्त्री० दनहरा, बूची ।
जिठनिया० } ना० स्त्री० जेठकी स्त्री ।
जिठानी० }
जितना० ना० पु० } परिमाण वा अवधि वा
जितनी० स्त्री० } संख्या का बाधक ।
जितयोनि० ना० पु० हरिण ।
जिता० } गु० परिमाण वा अवधि वा संख्या
जितइ० } बाधक ।
जितेन्द्रिय० } ना० पु० जिसने इन्द्रियों को
जितेन्द्री० } वश किया है ।
जिधर० अव्य० यथ जहां ।
जिन० ना० पु० अग्गानराज ।
जिभारा० गु० पशु जो बटार बाद रहता है ।
जिम० अव्य० जिमि, यथा, जैसा ।
जिमाना० स० क्रि० खिलाना ।
जिमि० अव्य० यथा० जैस ।
जिय० } ना० पु० आत्मा, प्राण, जान ।
जियरा० }
जियाना० स० क्रि० जिलाना प्राणदान देना ।
जियावना० स० क्रि० जियाना ।
जियौ० गु० स्त्री० शूरता, शूर, योद्धा ।
जिलाना० स० क्रि० प्राणदान देना जीता करना ।
जिवाना० स० क्रि० जिमाना जिलाना ।
जिष्णु० ना० पु० अर्जुन, इन्द्र ।
जिस० सर्व० सम्बन्ध म आता है ।
जिहि० सर्व० जिस ।
जिह्म० ना० पु० कपट, मूढ़ता ।
जिह्मकर० गु० कपटी, छली ।
जिह्मग० ना० पु० वाण, शर ।
जिह्मग० ना० पु० सर्प, साप ।
जिह्मता० ना० स्त्री० अरिस्त्र यातो की राशि ।

जिह्वा० ना० स्त्री० रसना, जीभ।
जिह्वाग्र० ना० पु० मुखाग्र, जबानी।
जिज्ञासा० ना० स्त्री० जानने की इच्छा।
जिज्ञासी० } गु० अभिलाषी, जानने की इच्छा
जिज्ञासु० } रखनेहारा।
जिज्ञास्य० गु० जानने के योग्य है।
जी० ना० पु० जीव, प्राण, मर्यादा का सूचक।
जीका० ना० स्त्री० जीविका।
जीगुराना० स० क्रि० सिकोड़ना।
जीत० ना० स्त्री० जय, फतह।
जीतना० स० क्रि० जय करना, हराना।
जीतव० ना० पु० आत्मा, हिया, जिन्दगी।
जीतवन्त० } ना० पु० जिसकी जय हुई
जीतवैया० } जयमान।
जीता० गु० प्राणधारी अर्थात् मरा नहीं।
जीति० ना० स्त्री० जय, जीत।
जीतिया० ना० स्त्री० लड़कों के जीने के लिये स्त्रियों का व्रतविशेष।
जीतू० ना० पु० जयवन्त, जीतवैया।
जीना० अ० क्रि० जीता रहना।
जीभ० ना० स्त्री० जिह्वा, रसना, जबान।
जीभारा० गु० गप्पी, बकी।
जीभी० ना० स्त्री० जीभ का मैल उतारने की वस्तु।
जीमना० स० क्रि० खाना, भोजन करना।
जीमार० गु० जो हनने के योग्य है, निज इच्छा मारनेहारा।
जीमूत० ना० पु० मेघ, देवदाली।
जीरक० ना० पु० जीरा सफेद।
जीरन० गु० जीर्ण, पुराना।
जीरा० ना० पु० औषधि विशेष का बीज।
जीर्ण० गु० बुड्ढा, पुराना, रद्दा, जाजर।
[illegible] ना० स्त्री० गाने में अति तीव्रस्वर।
जीव० ना० पु० प्राण, शरीरादि का धारक, बृहस्पति, चन्द्रमा सदाजियो।
जीवखानि० ना० पु० ईश्वर, अनादि पुरुष।
जीवंगर० } गु० सूमी, योद्धा,
जीवट० } दृढ़ता।
जीवड़ा० ना० पु० प्राण, प्रियतम।
जीवत० गु० जीते।
जीवदान० ना० पु० रक्षाकरना, प्राण बचाना।
जीवधारी० ना० पु० प्राणी, हैवान।
जीवन० ना० पु० जीविका, जन्म से मृत्युतक का काल, जल।
जीवनमूल० ना० स्त्री० जीविका मूल, हयात की जड़।
जीवना० अ० क्रि० जीतारहना।
जीवनि० ना० स्त्री० } सञ्जी-
जीवनिया० ना० स्त्री० } वनबूटी।
जीवन्त० गु० जीता।
जीवन्ती० ना० स्त्री० सञ्जीवनबूटी, गुरच।
जीवमञ्जा० } ना० स्त्री० सञ्जीवन
जीववर्द्धिनी० } बूटी।
जीवा० ना० स्त्री० जीवन्ती, जो चापके एकाग्रमें द्वितीयाग्रतक।
जीविका० ना० स्त्री० वृत्ति, निर्वाह का उपाय
जीह० ना० स्त्री० जीभ, रसना।
जीहारना० अ० क्रि० निराश होना, डर में दब रहना।
जुआ० ना० पु० छलकर्म, कीड़ाविशेष, माची।
जुआरि० ना० स्त्री० अन्न विशेष।
जुआरी० ना० पु० द्यूतकर्मी, छलकारी, दुष्ट।
जुग० ना० पु० युग।
जुगति० ना० स्त्री० युक्ति, श्लेषद्व्यर्थ।
जुगती० गु० छली, चतुर, ढठोल, द्व्यार्थ बोलनेहारा, उपायी।
जुगनी० ना० स्त्री० } मक्खी जो रातको चमके-
जुगनू० ना० पु० } लीहे, गलेका भूषण विशेष।
जुगवना० स० क्रि० रक्षाकरना, बचाना।
जुगवैया० ना० पु० जुगवनेहारा।

जुगाना० स० क्रि० यत्न करना, किसी के उपकार हेतु उपकार करना।
जुगालना० स० क्रि० पागुराना, पागुरकरना।
जुगाली० ना० स्त्री० पागुर।
जुगुप्सा० ना० स्त्री० निंदा, कुत्सा।
जुगुप्सित० गु० निंदित, कुत्सित।
जुझावट० ना० पु० युद्ध वा समरभार।
जुझावना० स० क्रि० युद्धमें मरवाडालना।
जुटना० अ० क्रि० भिड़ना, मिलना, सटना।
जुटाना० स० क्रि० भिड़ाना, मिलाना।
जुटैया० ना० पु० भिड़ैया, लड़ाका।
जुठारना० स० क्रि० जूठा, करना।
जुड़ना० अ० क्रि० मिलजाना, सम्मिजाना।
जुड़ाई० ना० स्त्री० जोड़ने का पैसा, जोड़ने का काम और जुकाम, श्लेष्मा, ठंढ।
जुड़ाना० स० क्रि० मिलाना, मिलवाना, अ० क्रि० ठंढाना, सुस्ताना, दम लेना।
जुड़िया० } ना० पु० दो लड़के जो एक
जुड़िहा० } साथ उपजें।
जुताई० ना० स्त्री० खेत जोतने का काम वा जोतने का पैसा।
जुताना० स० क्रि० हल चला के खेत दुरुस्त कराना।
जुतियाना० स० क्रि० जूतों से मारना।
जुद्ध० ना० पु० युद्ध।
जुधिष्ठिर० ना० पु० युधिष्ठिर।
जुन्हरी० ना० स्त्री० जुआर।
जुन्हाई० ना० पु० चन्द्रमा, स्त्री० चांदनी।
जुन्हार० ना० स्त्री० अन्न विशेष जुआर।
जुन्हैया० ना० स्त्री० चांदनी, चन्द्रमा।
जुरादेना० स० क्रि० पाना।
जुराना० अ० क्रि० धीरज होना, स० क्रि० एकठ्ठा होना, पाना।
जुरायना० गु० जो पाने के योग्यहै, मिलनहार।
जुरुआ० ना० स्त्री० जोरू, पत्नी।

जुरना० अ० क्रि० मिलना, प्राप्तहोना, सटना, भिड़ना, एकठ्ठा होना।
जुल० ना० पु० छल।
जुवती० ना० स्त्री० युवती, जवान औरत।
जुवराज० ना० पु० युवराज, वलीअहद।
जुवा० गु० युवा० ना० पु० जूआ, जुआं।
जुवार० ना० पु० अन्न विशेष।
जुवारी० ना० पु० जुआरी, जूपी।
जुहार० ना० पु० सलाम, प्रणाम।
जू० अव्य० जी।
जूआ० ना० पु० गाड़ी वा हलका काठ जिसमें बैल मचते हैं, मार्चा, धूत, जूप।
जूआट० ना० पु० जूआ।
जूआरी० ना० पु० जुआ खेलने में चतुर।
जूं० ना० स्त्री० चीलर।
जूझ० ना० पु० युद्ध, समर।
जूझना० अ० क्रि० लड़ना, लड़ाई में कट अर्थात् लड़मरना।
जूट० ना० पु० जूड़ा।
जूठ० ना० पु० खायाभया।
जूठन० ना० स्त्री० भोजन के पीछे रोन रहता
जूठा० गु० जूठ, खायाहुआ।
जूड़० गु० ठंढा, शीतल, ना० पु० शीत।
जूड़ा० ना० पु० ठंढा, शीत, शिरके पाछे गांठ दियेहुये बाल।
जूड़ी० ना० स्त्री० अन्तरिया, जाड़ का रोग।
जूता० } पनही, चमड़े की पादुका।
जूती० }
जून० ना० पु० समय, काल, वक्त।
जूना० ना० पु० तृणकी, रस्सी, ऐंठीहुई घास
जूप० ना० पु० जूआ।
जूपी० गु० जुआरी।
जूरा० ना० पु० बालों की गांठि, चोटी।
जूरी० ना० स्त्री० समूह, जुरी।
जूस० ना० पु० परेह, रोगी का पथ्य,
जूह० ना० पु० समूह, जूथ।

ही० ना० स्त्री० पुष्प का वृक्ष विशेष।
० सर्व० जो, सब।
ठ० ना० स्त्री० देर।
ठ० ना० पु० पतिका बड़ाभाई, ज्येष्ठ।
ठरा० गु० पहिलौठा, पतिका बड़ाभाई।
ठा० गु० पहिलौठा, बड़ा, कुसुम का पहिलारंग।
ठानी० ना० स्त्री० जेठकी स्त्री।
ठी० गु० बड़ी।
जेठीमधु० ना० पु० मुलहठी।
जेठौत० ना० पु० जेठका पुत्र।
जेता० } गु० जितना।
जेतिक० }
जेब० ना० पु० खलीता, पाकट, फ़ारसी शब्द है।
जेयमान० गु० जीतनेवाला, जयमान।
जेर० ना० पु० खेरी।
जेवड़ा० ना० पु० रस्सा, डोर।
जेवना० स० क्रि० खाना, भोजन करना।
जेवनार० ना० स्त्री० खाना, भोजन, यज्ञ।
जेवरी० ना० स्त्री० रस्सी, डोरि।
जेहर० ना० पु० स्त्रियों का भूषण विशेष।
जैत० ना० पु० वृक्ष विशेष, रागिनीविशेष।
जैन० ना० पु० नास्तिकों का मत विशेष।
जैनी० गु० जैन मतवाला, सरावक, सरोगी।
जैमाल० ना० स्त्री० जयमाला, जीति की माला।
जैमिनि० ना० पु० मुनि विशेष।
जैमिनी० गु० ब्रह्मवादी।
जैसा० अव्य० यथा।
जैहैं० अ० क्रि० जायेंगे।
जो० सर्व० यह शब्द सम्बन्ध का बोधक है अव्य० यथा, यदि।
जोआरभाटा० ना० पु० समुद्र के जलका चढ़ाव उतार।
जोइ० ना० स्त्री० जोरू, दुलहन।
जो० अव्य० जो, यदि, जैसा, ज्यों।
जोंक० ना० स्त्री० जलौका, रक्तपा, जलजंतु।
जोंकर० अव्य० जिसप्रकार।
जोंहीं० अव्य० जिससमय।
जोख० ना० स्त्री० तौल।
जोखना० स० क्रि० तोलना।
जोखिम० ना० स्त्री० चिन्ता, शंका, धरी।
जोखिमी० ना० पु० जोखिम-उठानेहारा।
जोखों० ना० स्त्री० जोखिम।
जोग० ना० पु० योग।
जोगमाया० ना० स्त्री० मायारूपीशक्ति जो योगियों में है जिसकरके वे कहते हैं कि हम अपना स्वरूप अपने वश रखें।
जोगवत० क्रि० परखत, राखत, रखत।
जोगा० गु० योग्य।
जोगाभ्यास० ना० पु० जोग का अभ्यास।
जोगिन० ना० स्त्री० जोगन, जोगी की स्त्री।
जोगिनी० ना० स्त्री० देवी की सहचरी।
जोगिया० ना० पु० जोगी० गु० रंग विशेष ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
जोगी० ना० पु० योगी, शान्त।
जोगेश्वर० ना० पु० योगेश्वर, तपस्वी, पुजारी विशेष श्री महादेवजी, श्रीविष्णुनारायण।
जोग्य० गु० योग्य, उत्तम, अच्छा।
जोजन० ना० पु० योजन, चारकोस।
जोट० ना० पु० साथ, जोड़ी गु० सम।
जोटा० ना० पु० जोड़ा।
जोड़० ना० पु० मेल, गांठ, पेगली, मीज़ान।
जोड़ती० ना० स्त्री० लेखा, गिनती।
जोड़न० ना० पु० सोहागा, सांठन, जामन।
जोड़ना० स० क्रि० मिलाना, एकट्ठा करना, लगाना, संकलन करना, धन बटोरना, बनाना, गांठना।
जोड़ा० ना० पु० युग्म, दूसरा, जूता, धोती, एक बार पहिनने के कपड़े।
जोड़ाई० ना० स्त्री० जोड़ने का काम या पैसा

जोड़ी० ना० स्त्री० युग्म, दूसरा।
जोत० ना० स्त्री० उजाला, प्रकाश, ज्योति, हल प्रवाह, रिश्म, दृष्ट, दृष्टि।
जोतना० स० क्रि० नाधना जुये में लगाना, हलाई करना, खेत बनाना।
जोतमान्० गु० ज्योतिष्मान, चमकदार।
जोतार० ना० पु० हलवाहा, किसान।
जोति० ना० स्त्री० ज्ञान, प्रकाश, तारा, मुनि, आदित्यादि की ईश्वर।
जोतिष० ना० पु० ज्योतिष, नक्षत्र।
जोतिषी० गु० ज्योतिषी, नजुमी।
जोति स्वरूप० गु० तेजस्वी एक नाम भगवान् का है।
जोती० ना० स्त्री० तराजू के पल्ल की रस्सी, झाड़ू की रस्सी।
जोत्स्ना० ना० स्त्री० चन्द्रिका, चन्द्रकला।
जोत्स्नी० ना० स्त्री० रात्रि, रैन, निशा।
जोधन० ना० पु० लड़ाई, समर।
जोधा० ना० पु० योद्धा।
जोन० } ना० स्त्री० योनि।
जोनि०
जोन्हु० ना० पु० चन्द्रमा, चान्दनी।
जोबन० ना० पु० यौवन, ज्वानी स्तन।
जोबनवती० गु० यौवनवती।
जोबनमा० } ना० पु० जोबन, यौवन।
जोबना०
जोय० ना० स्त्री० पत्नी, भार्य्या, जोरू।
जायसी० गु० योनिजी।
जोरू० ना० स्त्री० पत्नी, भार्य्या बीबी।
जोला० ना० पु० छल, धोखा।
जोवत० क्रि० चाहत, देखत।
जोवना० स० क्रि० देखना ताकना।
जासी० ना० पु० ज्योतिषी, जाति विशेष।
जोहना० स० क्रि० बाट देखना, ढूढना।
जौ० ना० पु० अन्नविशेष, यव, अव्य० जब, यदि।
जौतुक० ना० पु० यौतुक, दायजा।
जौन० सर्व० जो।
जौलौ० अव्य० जबतक।
ज्या० ना० स्त्री० माता, पृथ्वी, धमानकारादह।
ज्याना० स० क्रि० पालना, जिलाना।
ज्येष्ठ० ना० पु० जेठा महीना, बड़भाई, गु० श्रेष्ठ उत्तम।
ज्येष्ठा० ना० स्त्री० अठारहवा नक्षत्र।
ज्योति० ना० स्त्री० जोति, लालचन्दन।
ज्योतिर्गण० ना० पु० तारागण।
ज्योतिष० ना० पु० विद्या विशेष, इल्मनजूम।
ज्योतिषी० ना० पु० ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता, नजूमी, पण्डित।
ज्योतिष्मती०।ना० स्त्री० मालकगनी।
ज्योतिष्मान्० गु० प्रकाशी, तेजस्वी।
ज्योत्स्ना० ना० स्त्री० चान्दनी।
ज्योनार० ना० स्त्री० खाना पाक, भोजन।
ज्वर० ना० पु० तप, ताप, बुखार।
ज्वरविनाशिनी० ना० स्त्री० ग्रस्थ, मजीठ।
ज्वरा० ना० स्त्री० मृत्यु, मौत।
ज्वरान्तक० ना० पु० चिरायता।
ज्वलन० ना० स्त्री० जलन, आगकी जीभविशेष।
ज्वार० ना० पु० अन्न विशेष।
ज्वारी० ना० पु० जुआरी।
ज्वाला० ना० स्त्री० आंच, लौ, लपट, आग।
ज्वालामुखी० ना० स्त्री० स्थान विशेष जिस में अग्नि सदैव प्रज्वलित रहती है।

[झ]

झखाड़० ना० पु० बिना पत्त के वृक्ष।
झगड़० ना० पु० झगडा, घबराहट।
झगड़ी० गु० कठिन, झगड़ालू।
झंझना० गु० चिड़चिड़ा।
झंझनाना० स० क्रि० टनटनाना, बजना और फड़फड़ाना।

झंझनाहट० ना० स्त्री० चिड़चिड़ाहट, झनकार।
झंझावायु० ना० पु० प्रचण्डपवन, आंधी।
झंवाना० अ० क्रि० धूपसे कृष्णवर्ण होना, स० क्रि० झामे से पांवधोना, सुलाना।
झक० ना० पु० क्रोध।
झकझोरि० ना० स्त्री० झोंनाझानी।
झकना० अ० क्रि० बकना, बकबककरना, हाय हाय करना।
झकरी० ना० स्त्री० दोहनी।
झकाझक० गु० झलाझल।
झकोर० ना० स्त्री० टोटा, विपत्ति, झौंछार।
झकोरना० स० क्रि० चलाना, जैसे आंधीमें झड़ी।
झकोरा० ना० पु० झपास, वायुसमेत झड़ी, झौंछार।
झकोलना० स० क्रि० डुलाना।
झक्कड़० ना० पु० आंधी, चौवायी।
झक्की० ना० पु० विना प्रयोजन बकवादी।
झखना० अ० क्रि० झखना।
झगड़ना० अ० क्रि० लड़ना, भिरना।
झगड़ा० ना० पु० लड़ाई, रगड़ा।
झगड़ाना० स० क्रि० झगड़ा करना, लड़ाना।
झगड़ालिन्० गु० लड़ाकारी।
झगड़ालू० ना० पु० लड़ाका।
झगा० ना० पु० झंगा।
झंगुला० ना० पु० कुर्त्ता।
झझ० ना० पु० लम्बीदाढ़ी।
झझकारना० स० क्रि० दबकाना, दबाना।
झझला० ना० पु० मिठाईविशेष।
झज्झर० ना० पु० झज्झर।
झज्झरी० ना० स्त्री० झरोखा।
झज्झा० ना० स्त्री० झड़ीसमेत आंधी।
झट० गु० उतावली, अव्य० शीघ्र।
झटक० ना० स्त्री० ससीट, झटका।
झटकना० स० क्रि० ससीटना, खिंचना, अ० क्रि० दुबला होजाना।
झटका० गु० जो झटकेसे मारागया, फाड़ागया, ना० पु० खींच, ससीट।
झटकाना० स० क्रि० झटका लगाना।
झटपट० अव्य० तुरंत, शीघ्र।
झटास० ना० पु० झड़ाक, बौछार।
झटिति० अव्य० तुरन्त, शीघ्र।
झड़० ना० स्त्री० झड़ी, तालाविशेष, तालेकी कल।
झड़न्० ना० स्त्री० टपकन, जैसे फल पककर गिरते हैं, वर्त्ताकी टेम का फूल।
झड़ना० अ० क्रि० टपकना, गिरना, पतनहोना, निकलना, छनना, नौबतबजना।
झड़प० ना० स्त्री० कड़ुआहट, हमला।
झड़पना० अ० क्रि० लड़ना, हमलाकरना।
झड़पाझड़पी० ना० स्त्री० लड़ाई, दुष्टाईं।
झड़पाना० स० क्रि० लड़ाना।
झड़बेर० ना० पु० } [illegible]
झड़बेरी० ना० स्त्री० }
झड़वाना० स० क्रि० [illegible]
झड़ाक० } ना० पु० [illegible]
झड़ाका० } वही।
झड़ाझड़० अव्य० [illegible]
झड़ाना० स० क्रि० [illegible] कराना।
झड़ी० ना० स्त्री० [illegible]
झड़ोत० ना० पु० [illegible]
झण्ड० ना० पु० [illegible]
[illegible] पु० [illegible] हुए, [illegible] करना।
[illegible] ना० पु० [illegible] [illegible] का [illegible]।
झनकना० अ० क्रि० [illegible]।
झनकार० ना० स्त्री० [illegible], टनटनाहट।
झनकारना० स० क्रि० बजाना।
झनवां० ना० पु० धानविशेष।
झप० अव्य० झट, तुरन्त, शीघ्र।

झपकना० स० क्रि० झलना, पत्ता हिलाना, अ० क्रि० लपकना, झपलेना, पलकमारना।
झपकाना० स० क्रि० पलकमारना, मटकाना।
झपकी० ना० स्त्री० लपक, झपकी, नींद।
झपट० ना० स्त्री० लपक, चढ़ाई, दाग।
झपटना० अ० क्रि० लपकना, चढ़ि दौड़ना।
झपट्टा० ना० पु० धावा, दौड़, लपट।
झपट्टामारना० स० क्रि० झपटलेना।
झपलाना० स० क्रि० लगालना, धाना।
झपाझपी० ना० स्त्री० उतावली, हड़बड़ी।
झपाल० ना० स्त्री० स्फूर्ति, जल्दी।
झपाना० अ० क्रि० झपकीलना, लजाना।
झपास० ना० स्त्री० झड़ी, झाली।
झपासिया० गु० छली, अधर्मी।
झबकाना० स० क्रि० घबरा करना।
झबिया० ना० पु० भूषणविशेष।
झबुआ० गु० जिस कुत्ते वा बकरे के बाल बड़े बड़े हों, झुकाहुआ।
झब्बा० ना० पु० लटकना।
झमक० ना० स्त्री० चमक।
झमकड़ा० ना० पु० चमकीला, भड़क।
झमकना० अ० क्रि० चमकना, नाचना।
झमका० ना० पु० प्रताप, शान।
झमकी० ना० स्त्री० झमक, झलक, चमक।
झमझम० अव्य० लगातार।
झमझमाना० अ० क्रि० चमकना।
झमरझमर० अव्य० बूंद बूंद से।
झमाका० ना० पु० झड़ी, वेगना।
झमाझम० अव्य० झमझम।
झम्पा० गु० झगाहुआ, ढकामया, ना०पु० चगुल।
झर० ना० पु० सोता, झरना, झड़ी, जलन।
झरना० ना० पु० सोता, झरना, झारनेवाला।
झरोखा० ना० पु० झंझरी, खिड़की।
झझर० ना० पु० झझर।
झर्रा० ना० पु० सोता झाड़नेका कपड़ा, चहुत छेदका सूप विशेष, अ० क्रि० झड़ना, गिरना।
झल० ना० स्त्री० क्रोध, जलजलाहट, भारी उष्णता।
झलक० ना० स्त्री० चमक, उजाला।
झलकना० अ० क्रि० चमकना।
झलका० ना० पु० फफोला, छाला।
झलकाना० स० क्रि० चमकाना, उज्ज्वल करना।
झलकी० ना० स्त्री० दृष्टि।
झलझल० ना० पु० चमक, लहक।
झलझलाना० अ० क्रि० चमकना, व्याकुल होना।
झलझलाहट० ना० स्त्री० चमक, परपराहट।
झलना० स० क्रि० झाड़ना, अ० क्रि० सुधरना।
झलमल० ना० पु० चमक।
झलहाया० गु० वसनाती, ज्वलित।
झलाझल० गु० ज्योतिष्मान्, स्त्री० झलक।
झलावोर० गु० चमकीला, भड़कीला, ना०पु० चमकाहु।
झलाना० स० क्रि० सुधारना, जोड़ना।
झलार० ना० पु० झाड़ी।
झष० ना० पु० मछली, मत्स्य।
झषकेतु० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।
झाईं० ना० स्त्री० परछाईं, लहसुन, मुखपर श्यामिता होजाना।
झाक० ना० पु० ताकना, हिरण वा मक्खियों का झुण्ड।
झांकड़० ना० पु० झाड़ी।
झांकना० स० क्रि० झपकेदेखना, ताकना।
झाकाझांकी० ना० स्त्री० देखादाखी, ताका ताकी।
झांख० ना० पु० हिरणविशेष।
झांझ० ना० स्त्री० बड़ा मजीरा, झगड़ा।
झांझट० ना० पु० झगड़ा, रगड़ा।
झांझा० ना० पु० कीटविशेष, झगड़ा।
झांझिया० गु० क्रोधी, चखड़िया।

झांझी० ना० स्त्री० खेल विशेष।
झांपना० स० क्रि० ढापना, छुपाना।
झांवरा० गु० काला।
झांवली० ना० स्त्री० चोचला, हावभाव।
झांवा० ना० पु० अयत पकी ईंट।
झांसना० स० क्रि० उभारना।
झांसा० ना० पु० फुसलाना, धोखा।
झांसी० ना० पु० बुन्देलखण्ड में नगर विशेष।
झांसू० ना० पु० फुसलाऊ, धोखाबाज।
झाऊ० ना० पु० छोटा वृक्ष विशेष।
झाग० ना० पु० फेना।
झाझा० ना० पु० मादक वस्तु।
झाड़० ना० पु० झाड़ वृक्ष जो पीतलआदि का बनता है।
झाड़खण्ड० ना० पु० वन, वजनाथ के पास का वन विशेष, गु० झण्डूला, घन।
झाड़न० ना० पु० बहारन, कचरा, कर्कट, बुहारा, पोंछन।
झाड़ना० स० क्रि० बुहारना, फटकारना, पटकना, निकालना।
झाड़न्त० अव्य० सभी।
झाड़ा० ना० पु० गुह, मलत्याग, हगना।
झाड़ी० ना० स्त्री० भखना, वन, जंगल।
झाडू० ना० स्त्री० बढ़नी, बुहारी।
झापा० ना० पु० टोकरी विशेष।
झाबा० ना० पु० चमड़ का पात्र, तेल, घी मापने के लिये।
झामा० ना० पु० झावा।
झार० ना० पु० आगकी लव, ज्वाला, सब, अव्य० कड़ुआहट।
झारि० अव्य० सब, तमाम, कमाल।
झारी० ना० स्त्री० थाली, झारी, दो मुंहका जलपात्र विशेष।
झाल० ना० पु० कड़ुआहट, बड़ी टोकरी, धातुका सुझाना।
झालना० स० क्रि० चिकनाना, फेरना, जोड़ना।
झालर० ना० स्त्री० आंचल, गुच्छे।
झालरा० ना० पु० सोता, गु० बढ़ाहुआ।
झिझक० ना० स्त्री० चौंक, भड़क, डर भय।
झिझकना० अ० क्रि० चौंकना, भड़कना, डरना।
झिझका० गु० चौंकाहुआ, भयवान्।
झिझकाना० स० क्रि० भड़काना, डराना, चौंकाना, भवराना।
झिझकी० ना० स्त्री० भड़की, चौंक, डर।
झिञ्झा० ना० पु० जिगनावृक्ष, पुरायोड़ी।
झिञ्झाणी० ना० स्त्री० जिगनावृक्ष।
झिन्झा० ना० स्त्री० पुरीरोड़ी।
झिड़क० ना० स्त्री० धमकी, भबकी, गटकी।
झिड़कना० स० क्रि० घुड़कना, दबकाना, धमकाना, झटकारना।
झिड़काझिड़की० ना० स्त्री० झगड़ा, भिगड़ी।
झिड़की० ना० स्त्री० घुड़की।
झिनहटा० } गु० सुलग।
झिनहड़ा० }
झिरझिर० गु० जो पतलाधार से बहता, पतला।
झिरझिरा० गु० तबड़ पतला।
झिरझिराना० अ० क्रि० बहना, निरतिराना।
झिलगा० ना० पु० खाटकी पुरानी और टूटी रस्सा की बिनावट, गु० पुरानीखाट।
झिलंगा० ना० पु० पदाति विशेष।
झिलम० ना० स्त्री० युद्धमें पहिरने के लिये लोहे की कुर्ती, टोपपर लोहेका बगैरा, बख्तर।
झिलमिल० ना० पु० द्वार विशेष।
झिलमिलाना० अ० क्रि० लहराना, चिनगी निकलना।
झिल्लिका० ना० स्त्री० झींगुर।
झिल्ली० ना० स्त्री० झींगुर, अति सूक्ष्म चमड़ा, सेड़ी।
झींकना० अ० क्रि० पछिताना, शोकित होना, पीनक में आना।
झींगट० ना० पु० मार्जा, पटनी।
झींगा० ना० पु० जलकीट प्रसिद्ध।

झींगुर० ना० पु० कीट विशेष, घुरघुरा।

झीण०
झीन०
झीना० } गु० सूक्ष्म, पतला, बारीक।

झीहका० ना० स्त्री० झींगुर कीट।

झील० ना० स्त्री० बहुत बड़ा जलाशय, बड़ा ताल।

झींसी० ना० स्त्री० फूही, फुहार, छोटी २ बूंदें।

झुकना० अ० क्रि० निहुरना, लचना, क्रोधित होना, व्याकुल होना।

झुकाना० स० क्रि० निहुराना, लचाना, क्रोधित करना, अ० क्रि० क्रोधित होना।

झुकावट० ना० स्त्री० चलावट, निहुराई।

झुंझलाना० अ० क्रि० चिड़चिड़ाना, जल जलाना।

झुठलाना०
झुठालना० } स० क्रि० झूठा करना, मिथ्या बतलाना, अशुद्ध करना।

झुण्ड० ना० पु० मण्डल, समूह, थंलावा।

झुण्डा० ना० पु० पताका, झंडा।

झुण्डी० ना० स्त्री० झाड़ी, वृक्षोंका समूह।

झुन० ना० पु० थोड़ी समानता।

झुनझुनाना० ना० पु० खिलौना विशेष।

झुनझुनी० ना० स्त्री० पैजनी।

झुमका० ना० पु० कानका भूषण विशेष, फूल वा फलका गुच्छा, फूल विशेष।

झुरमुट० ना० पु० झाड़, मण्डला, झूमक।

झुराना० अ० क्रि० सूखना स० क्रि० सुखाना।

झुराने० गु० सूखे।

झुरियाना० स० क्रि० छिलाना, खोदना पोंछना, उज्ज्वल करना।

झुरी० ना० स्त्री० शरीरके मासका सिकोड़।

झुर्ना० अ० क्रि० कुम्हलाना, सूखना।

झुलकाना० स० क्रि० जलादेना, झुलसाना।

झुलना० अ० क्रि० लटकना, झूलना।

झुलझुली० ना० स्त्री० कानकेपान।

झुलसना० अ० क्रि० झुलसना, जलजाना।

झुलसाना० स० क्रि० झुलसाना, जलादेना।

झुल्ला० ना० पु० पहिरने का वस्त्र विशेष।

झूंझल० ना० पु० क्रोध का आवेश।

झूंटर० ना० स्त्री० भूमि जिस में वर्षा में दो बार अन्न बोते हैं।

झूंठनझांठन० ना० पु० झूठा, बचा।

झूठ० गु० मिथ्या, अशुद्ध।

झूठा० गु० मिथ्यावादी, झूठबुल्ला, ना० पु० उच्छिष्ट खाना खायके रहगया।

झूना० ना० पु० पक्वानादिपात्र, महीन वस्त्र, चूल्हे में ईंधन और आग रखना।

झूमक० ना० स्त्री० झुमट।

झूमझूम० ना० पु० घन, खटक लटक।

झूमना० अ० क्रि० लहरना, हिलाना, ऊंघना, उमड़ना, घिरना।

झूरना० स० क्रि० सूखना, पेड़से फल झड़ना, सूखना।

झूरा० गु० सूखा, मुरझाया हुआ।

झूल० ना० स्त्री० बैलादि पशुओं का ओढ़ना।

झूलना० अ० क्रि० डोलना, हिलना, लटकना, ना० पु० छन्द विशेष।

झूला० ना० पु० हिंडोला, डाल वृक्ष।

झोंक० ना० स्त्री० ढकेल, धक्का, झकोड़।

झोंकना० स० क्रि० ढकेलना, फेरना, ईंधन भाड़ में डालना।

झोंटा० ना० पु०
झोंटी० ना० स्त्री० } सिरके पाछे के बाल भूले का हिलाना।

झोंपड़ा० ना० पु०
झोंपड़ी० ना० स्त्री० } मढ़ी छप्परका छोटा घर।

झोंपा० ना० पु० फलका गुच्छा, बाल, घिराव।

झोंरा० ना० पु० गुच्छा।

झोंक० ना० स्त्री० झोंक।

झोंका० ना० पु० झाक, टोकर, टेस, झकोरा।

झोझ० ना० पु० खाता, ओझ, बड़ापेट।

झोझा० ना० पु० ओझा, बड़पेग, बड़ापेट।

झोटिंग० ना० पु० प्रतभद।
झोटी० ना० स्त्री० चोर्गी।
झोल० ना० स्त्री० कपड़े की सकोड़ वा चुचत, बचे।
झोला० ना० पु० थेला, अर्द्धांग।
झोली० ना० स्त्री० थला।
झौरा० गु० साँवला, पीला।
झौंसना० अ० क्रि० बहुत जलजाना।
झौंसा० गु० जो बहुत जलगया।
झौड़० ना० पु० झगड़ा।
झौरी० ना० स्त्री० सेवथा घास।

[ट]

टक० ना० स्त्री० स्वभाव ताक, दृष्टि।
टकटकी० ना० स्त्री० घूर, ताक।
टकना० अ० क्रि० सिलना सिलजाना।
टकराना० स० क्रि० टक्कर सिलवाना टक्कर मारना, अ० क्रि० टालना।
टकवाना० स० क्रि० सिलवाना, सिलाना।
टकसाल० ना० पु० स्थान, जहां रुपया आदि बनाया जाता है।
टकसालिया० } ना० पु० टकसाल का काम
टकसाली० } करनेहारा।
टका० ना० पु० दो पैसे।
टकाई० ना० स्त्री० सिलाई, दर।
टकी० ना० स्त्री० ताक, टुका।
टकुआ० ना० पु० तकला, तकुआ।
टकैत० } गु० धनवान् मालदार।
टकैता० }
टकोर० } ना० पु० पुचकारी, चुमकारी, अति
टकोरा० } छोग पका आब, ढोल बजाने की गति वा शब्द।
टकोरना० स० क्रि० सेंकना, ततारना।
टकौना० ना० पु० टका।
टक्कर० ना० स्त्री० ठोकर, ढलाढली, शिरसे शिर लड़ाना, जैसे मद्द लड़ाते हैं।
टखना० ना० पु० गुल्फ, घुन्ना।
टघलना० अ० क्रि० पिघलना।
टघलाना० स० क्रि० पिघलाना।
टङ्क० ना० पु० चार माशा की तौल, खड्ग।
टङ्कण० ना० पु० सोहागा।
टङ्कोर० ना० स्त्री० धनुष के नाद वा शब्द।
टङ्कोरना० स० क्रि० धनुष की पनच झाड़ना।
टङ्गना० अ० क्रि० लटकना।
टङ्गड़ी० ना० स्त्री० टांग, गोड़।
टञ्च० गु० सूम, कृपण।
टटका० गु० नया, नवीन ना० पु० उतारा पुतारा।
टटकी० ना० स्त्री० नई, नवीन, ताजा।
टटवानी० ना० स्त्री० छोटी घोड़ी।
टटिया० ना० स्त्री० टट्टा झांप द्वार बन्द करने का जो तृणादि की बनती है।
टटीहरी० } स्त्री० पक्षीविशेष।
टटीहरी० }
टटुआ० ना० पु० छोटा घोड़ा।
टटुई० ना० स्त्री० छोटी घोड़ी।
टटोलना० स० क्रि० टायाटोई करना, अंगुलि यों से दबाना।
टट्टी० ना० स्त्री० चादी बाड़।
टट्टर० } ना० पु० बड़ी टट्टी।
टट्टा० }
टट्टी० ना० स्त्री० टग्या, फरकिया।
टट्टू० ना० पु० छोटा घोड़ा।
टण्टा० ना० पु० बखेड़ा, लड़ाई, स्वांगी।
टप० ना० पु० बूंद फांद बूंद।
टपक० ना० स्त्री० पीड़ा टपकने का शब्द।
टपकना० अ० क्रि० टपकाना, चूना, छना, रिसना, टीसना।
टपका० ना० पु० पानी की बूंद, फल जो वृक्ष से पककर गिरता है यथा आब।
टपकाना० स० क्रि० चुआना, छनना रसना।
टपजाना० अ० क्रि० भूलजाना, कूदजाना।
टपपड़ना० स० क्रि० औरके कर्ममें हाथदेना।

टपना० अ० क्रि० मूलना, कूदना।
टपाना० स० क्रि० भुलाना, फदवाना, कुदवाना।
टप्पा० ना० पु० डाकघर, डाकघर, मैदान, जहाँ तक गोली जाती है, रागिनीविशेष।
टमकू० ना० स्त्री० जो शब्द पानी गिरने से किसी घड़े वा बर्तन में होता है।
टमकना० अ० क्रि० चूना, टमरहोना, गलना।
टर० ना० स्त्री० रोली, ऐंठ गु० मतवाला, अचेत।
टरटर० ना० स्त्री० बकबक।
टरटराना० स० क्रि० बकबक करना।
टरटरी० ना० स्त्री० बकवकी।
टरना० अ० क्रि० हुलना, टलना, हटना।
टराना० स० क्रि० टलवाना, हटाना।
टर्रा० गु० मगरा, दुष्ट, नकी, बलवान्।
टर्राना० स० क्रि० बकबक करना, मगराना, ऐंठके बात करना।

टलजाना० } अ० क्रि० हटजाना, जाता
टलना० } रहना।

टलप० ना० स्त्री० टुकड़ा, छाट।
टलमलाना० अ० क्रि० डगमगाना, ललचाना।
टलाटली० ना० स्त्री० मिष, हीलाहवाली।
टलाना० स० क्रि० हटाना, छिपाना।
टवर्ग० ना० पु० टकारादि पांचअक्षर।
टसक० ना० स्त्री० चमक, टीस।
टसकना० अ० क्रि० हिलना, चसकना, फटना।
टसकाना० स० क्रि० हिलाना, चसवाना।
टसना० अ० क्रि० मसकना, फटना।
टहक० ना० स्त्री० गांठकी पीड़ा।
टहकना० अ० क्रि० दुखना, पीड़ापाना।

टहटह० } ना० पु० सुन्दरता, नवीन।
टहटहा० }

टहना० ना० पु० शाखा, डाल।
टहनी० ना० स्त्री० शाखा डाली।
टहल० ना० स्त्री० गृहस्थी, सेवा, काम।
टहलना० स० क्रि० हवाखाना, बाहर फिरना।
टहलनी० ना० स्त्री० गृहस्थिनि, दासी, लौंडी।
टहलाना० स० क्रि० चलाना, फिराना, हवाखिलाना।
टहलुआ० ना० पु० सेवक, दास, परिश्रमी।
टहलुई० ना० स्त्री० दासी, लौंडी।
टहो० ना० पु० जन्मते पुत्रका शब्द।
टहोका० ना० पु० धक्का, चपेटा।
टांक० ना० पु० टक।
टांकना० स० क्रि० सीवना, लिखना।
टांका० ना० पु० लपटी, तेपची, साटन, जोड़न।
टांकी० ना० स्त्री० चट, खसरा, हुदरा, कुल्हाड़ी।
टांकू० गु० टांकनेहारा।
टांग० ना० स्त्री० ऐंडीसे घुटने तक का नाम, लटकाव।
टांगन० ना० पु० पहाड़ी घोड़ाविशेष।
टांगना० स० क्रि० लटकाना, हिलगाना।
टांगी० ना० स्त्री० टाकी।

टांच० } गु० हठीला, टेढ़, कुजाति, कजड़ा।
टांचड़ा० }

टांट० ना० स्त्री० चांदी।
टांठा० गु० पोढ़ा, कड़ा, ठोस, घन।
टांठाई० ना० स्त्री० पोढ़ाई, कड़ाई।
टांड़० ना० पु० मचान।
टांड़ा० ना० पु० खेप, बनिजार की वस्तु।
टाट० ना० पु० सनका बिनाहुआ बिछौना, बनाई।
टाटक० गु० टटका।
टाटा० ना० पु० टाटा, बड़ी टट्टी।
टाटी० ना० स्त्री० टट्टी।
टाड़ी० ना० स्त्री० छोटी कुल्हाड़ी।
टानना० स० क्रि० तानना, खेंचना।
टाप० ना० स्त्री० घोड़े के खुरका शब्द, घोड़े की अगले खुरोंकी मार।
टापना० अ० क्रि० टापमारना, ढूंढना।

टापा० ना० पु० खाचा।
टापू० ना० पु० द्वीप, जज़ीरह।
टायर० ना० पु० छापे माल।
टारना० स० क्रि० टालना।
टाल० ना० स्त्री० टालमटाल, छलकरके काल का टा, अथवा लकड़ी आदिका ढेर, टाल, मल्लयुद्ध करने म छल।
टालटोल० ना० पु० टालमटाल।
टालना० स० क्रि० छल करके बात फरना या बदलना वा उड़ाना, हटाना।
टालमटोल० ना० स्त्री० चक्करमक्कर, हीला बाजी।
टाला० ना० पु० टाल।
टिकटिकी० ना० स्त्री० तिपाई।
टिकठी० ना० स्त्री० काठकी तिपाई वा चापाई, अरथी।
टिकना० अ० क्रि० रहना ठहरना।
टिकली० } ना० स्त्री० बिन्दी जिसको स्त्रिया
टिकुली० } माथपर लगाती हैं।
टिकाऊ० गु० ठहराऊ, चलाऊ।
टिकाना० स० क्रि० रखना, ठहराना, अटकाना।
टिकाव० ना० पु० ठहराव, अटकाव।
टिकासरा० ना० पु० टिकनेकी जगह, ठिकाना।
टिकासा० गु० टिकेहारा, ठहरनेवाला।
टिकिया० ना० स्त्री० बत्ती, अगारवत्ती, अगारोनी, किसी वस्तुको आटा गोलाकार चपटी वस्तु बनाना।
टिकोरा० ना० पु० लासदा, खोपड़ी।
टिकड़० } ना० पु० अंगाकड़ा, कड़ी गोलगोल
टिकर० } टिकोर।
टिकली० ना० स्त्री० टिकली।
टिक्की० ना० स्त्री० टिकिया।
टिपलना० अ० क्रि० पिघलना, गलना।
टिघलाना० स० क्रि० पिघलाना, गलाना।
टिटकारना० स० क्रि० टिकटिक करके पशुको चलाना या हांकना।
टिटकारी० ना० स्त्री० टिकटिक करना।
टिटीहरी० } ना० स्त्री० पक्षविशेष।
टिटिभ० }
टिड्डा० ना० पु० } उड़ता कीड़ा।
टिड्डी० स्त्री० }
टिपका० ना० पु० रंगका चिह्न जो अंगुली से लगा है।
टिप्पन० ना० पु० टीका विवर्ण।
टिप्पस० ना० स्त्री० अभिमान, दाव।
टिमाना० स० क्रि० प्रतिदिन थोड़ीसा जीविका देना।
टिमाव० ना० पु० प्रतिदिन थोड़ी सी जीविका।
टिमटिम० ना० पु० सरोग, शब्द।
टिमटिमाना० अ० क्रि० झलझलाना, जगमगाना।
टिहरा० ना० पु० छोटागांव, पुरवा।
टिहरी० ना० स्त्री० छोटीसी बस्ती।
टींट० ना० स्त्री० करील का फल।
टीक० ना० स्त्री० शिर वा गलेका गहना।
टीका० ना० पु० तिलक, चन्दन, माथेका गहना निशान, अर्थ कहना वा लिखना, व्याह में कन्या की ओरसे सम्बन्धके लिए द्रव्य जो भेजा जाता है, राज्याभिषेक।
टीटली० ना० स्त्री० [illegible]।
टीड़ी० ना० स्त्री० टिड्डी।
टीप० ना० स्त्री० स्मरण, दस्तक, दाब का सेवना, सुर ऊंचा, दबाव।
टीपटाप० ना० स्त्री० बनाव, सजाव।
टीपना० स० क्रि० दबाना, उद्घेलना, निचोड़ना, सिदी टाकना, लिखना।
टीला० ना० पु० टापू, पहाड़ी।
टीस० ना० स्त्री० दर्द, टपक, धड़क।
टीसना० अ० क्रि० टीसमारना, धमकना, धड़कना।

टुक० गु० थोड़ा, अल्प, जरा।

टुकड़ा० ना० पु० एक खण्ड, चिट।

टुकसा० गु० थोड़ासा।

टुगा० ना० पु० छोग पुछ।

टुण्डा०
टुंचा० } ना० पु० लुला, गुण्डा, लंगरा, तुच्छ।

टुंडा० ना० पु० नहा।

टुण्टुक० ना० पु० स्योनावृक्ष।

टुण्टुनाना० अ० क्रि० गुनगुनाना, धीरज से अलापना, धीरे धीरे बजाना।

टुण्ड० ना० पु० हाथ कटा, डाली कटा वृक्ष।

टुण्डा० गु० हाथ कटा, लूला, अपाङ्ग।

टुण्डियाचढ़ाना० स० क्रि० हाथ पीछे बांधना।

टुण्डी० ना० स्त्री० नाभि, इ० जिस स्त्रीका हाथ कटा या टूटा हो।

टुसकना०
टुहुकना० } अ० क्रि० रोना, कुहना।

टूं० ना० पु० वायु सड़नेका शब्द अर्थात् पादने का शब्द।

टूंगना० स० क्रि० चींथियाना, चिचोरना, कुट करना।

टूंड़ी० ना० स्त्री० नाभि, ढूंढ।

टूक०
टूका० } ना० पु० टुकड़ा, टेलक का एक शब्द।

टूट० ना० स्त्री० खण्डन, फूटना, रोग, लिखने में जो भूलके ऊपर लिखादिया, त्रुटि।

टूटना० अ० क्रि० टूमकना, दौड़ना, चढ़ाई, करना, फूटना, फटना, अलगहोना, नदका छूटना, वस्तुका ऊपरसे नीचे उतरना।

टूटा० गु० फूटा, टुकड़े भया, ना० पु० टोटा, न्यूनता।

टूम० ना० स्त्री० थोड़ी बात, भूषणविशेष, छनरी।

टूमट म० ना० पु० कुछ थोड़ी बात।

टूसा० ना० पु० आकका फल, मदारका फल।

टूसी० ना० स्त्री० कोंपल, कली।

टेंगरा० ना० पु०
टेंगरी० स्त्री० } मछलीविशेष।

टेंट० ना० पु० करील वा कपास का पक्का फल, फुटी।

टेंटर० ना० पु० फलविशेष, आंखका ढेला बढ़ा हुआ अर्थात् आंखका निकास होजाना।

टेंटा० ना० पु०
टेंटी० स्त्री० } करीलका बड़ा पकाफल, स्वर्णभाण्ड, कांटोंका विशेष, कटि, बैलका कांधा।

टेंटुआ० ना० पु० नरी, घांटी, नरेटी गलेकी पोंगली, हड्डी।

टेंटें० ना० पु० चेंचें, किलकिलाहट।

टेई० ना० स्त्री० थाड़, थूनी क्रि० पैनी करी।

टेक० ना० स्त्री० थूनी, थाड़, टेकनी, प्रतिज्ञा।

टेकन० ना० स्त्री० थाड़, थाम।

टेकना० स० क्रि० थाड़ना, थामना, सहारा लगाना।

टेकनी० ना० स्त्री० टेकन, थूनी।

टेकर०
टेकरा० } ना० पु० टीला, ऊंचा।

टेढ़० ना० स्त्री० वक्रता, क्रम।

टेढ़ा० गु० वक्र जो सूधा नहीं है।

टेढ़ाई० ना० स्त्री० वक्रता, बांकपन, क्रम।

टेढ़ो० ना० स्त्री० गर्व, अहङ्कार, हट, बाकी।

टेनी० ना० स्त्री० छोग दण्डा जो अहीर रखते हैं।

टेम० ना० स्त्री० दीपक की जलन वा लव वा जोति।

टेर० ना० स्त्री० स्वर, लय, पुकार।

टेरना० अ० क्रि० पुकारना, ललकारना, अलापना।

टेलना० स० क्रि० पेलना, घुसेड़ना।

टेव० ना० स्त्री० चाल, चाट, स्वभाव।

टेवकिया० ना० स्त्री० छोटी टेवकी।

टेवकी० ना० स्त्री० थूनी, खम्भा थाम्भला।

टेवना० स० क्रि० चाढ़देना, बाढ़ रखना वा रखाना।

टेवा० ना० पु० जन्मपत्री का देखना वा लिखना, चार।
टेहरा० ना० पु० छोगागार, पुरवा।
टेहला० ना० पु० विवाह की रीति।
टोआई० ना० स्त्री० छुआई।
टोंटा० ना० पु० पगका, मुर्रा, पोड़, बारूद की पुड़िया, बासका पोर।
टोंटी० ना० स्त्री० पर्नाला, मारी।
टोक०, टोकटाक० ना० स्त्री० अन्धकार, कराव खड़खाड़।
टोकना० स० क्रि० पूछना, रोकना, टाहलगाना, बुरा दृष्टि से देखना।
टोकरा० ना० पु० डोरा, डलिया, झाबा।
टोकरी० ना० स्त्री० डारी, डलिया।
टोकाटोकी० ना० स्त्री० कपात, पूछपाछ, छेड़छाड़।
टोटका० ना० पु० मोहनी लगना, वशीकरण।
टोटरू० ना० पु० घुघू विशेष।
टोटा० ना० पु० घटी, हानि, न्यूनता।
टोडी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
टोना० ना० पु० जादू, वशीकरण, स० क्रि० टटालना।
टोनहा० ना० पु० जन्ता, श्याना, बरहा, जादूगर।
टोनहाई०, टोनही०, टोनहैया० ना० स्त्री० नटिनी जादूगरी।
टोप०, टोपा० ना० पु० सानक शिरढकने का वस्त्र विशेष।
टोपी० ना० स्त्री० शिर ढकने का वस्त्र विशेष, कुलाह।
टोरा० ना० पु० भीतिमें पानी के बचाव के लिये घाडलगाकर धाता अर्थात् छज्जा निकालने की वस्तु, टाटा।
टोल० ना० स्त्री० सभा, मण्डि।
टोला० ना० पु० गरण्ड, दर्जी का टुकड़ा।
टोली० ना० स्त्री० टोल, समूह।
टोहना० स० क्रि० ढूढ़ना, टटोलना।
टोना० ना० पु० टोनहा।

[ठ]

ठई० अ० क्रि० ठहराई, मुकर्रकी।
ठकठक० ना० पु० बहुत परिश्रम का शब्द, गढ़ता शब्द विशेष।
ठकठकाना० स० क्रि० टारना, खटखटाना।
ठकठकिया० ना० पु० बखेड़िया, झगडालू।
ठकठेला० ना० पु० धक्कापेली, झगड़ा बखेड़ा।
ठकठौआ० ना० स्त्री० पनसोई।
ठकुरसोहाती० पु० मुखदेखी बातकहना, श्रोता के मनभावित वार्त्ता करना।
ठकुराई० ना० स्त्री० ईश्वरता, प्रधानता, राज्य।
ठकुरायन० ना० स्त्री० ठाकुरकी स्त्री, रानी।
ठग० ना० पु० वञ्चक, चोर, प्रतारक, धोखा देनेहारा।
ठगई० ना० स्त्री० प्रतारण, चोरी ठगाई।
ठगना० स० क्रि० छलना, चोराना, धोखादेना।
ठगनी० ना० स्त्री० ठगकी स्त्री, चोटी।
ठगाई० ना० स्त्री० प्रतारण, चोरी, छल।
ठगाना० स० क्रि० छलाना, चोरीकरवाना।
ठगिन० ना० स्त्री० ठगिनी।
ठगिया० ना० पु० ठग, प्रतारक, चोर, छली।
ठगौरी० ना० स्त्री० ठगी।
ठचरा० ना० पु० बखेड़ा, झगड़ा।
ठठ० ना० पु० भीड़, मंडली।
ठठक० ना० स्त्री० रुकाव, अटकाव, दर निहार।
ठठकना० अ० क्रि० रुकना, अटकना, आश्चर्य्य में होजाना, ठिठकना।
ठठना० स० क्रि० बनाना, सजाना, दुरुस्तकरना, अ० क्रि० ठिगना, मारेजाना।
ठठरा० ना० पु० ढाड़, ठेरा।
ठठरी० ना० स्त्री० ढांचा, स्त्री, दुर्बल शरीर।

ठठाना॰ अ॰ क्रि॰ पीटना, मारना, कूटना, दुःख में अपना शिर पीटना, सताना।
ठठेरा॰ ना॰ पु॰ कसेरा, जातिविशेष।
ठठेरिन॰ } ना॰ स्त्री॰ ठठेरेकी स्त्री।
ठठेरी॰ }
ठठोर॰ } गु॰ हँसोड़, ठट्ठावाज।
ठठोल॰ }
ठठोली॰ ना॰ स्त्री॰ परिहास, हाँसी।
ठट्ठ॰ ना॰ पु॰ ठठ।
ठट्ठा॰ ना॰ पु॰ परिहास, सिल्ली।
ठट्ठा॰ ना॰ पु॰ सुई के चीवका बाघ, मुरदा।
ठण्ढ॰ ना॰ स्त्री॰ शीत, जाडा, हिम।
ठण्ढक॰ ना॰ स्त्री॰ शीतलता, सरदी।
ठण्ढा॰ गु॰ शीतल, सर्द।
ठण्ढाई॰ ना॰ स्त्री॰ शीतलता, ठण्ढी औषधि, ठुडाई, बनाईहुई भंग।
ठण्ढी॰ ना॰ स्त्री॰ शीतल।
ठण्ढा॰ गु॰ जाडा।
ठनकना॰ अ॰ क्रि॰ टीसना, टपकना, झनकना।
ठनठनाना॰ अ॰ क्रि॰ झनझनाना, झनकना।
ठनाक॰ ना॰ पु॰ झनक, झनकार।
ठन्ना॰ अ॰ क्रि॰ ठहरना, जमना।
ठपना॰ अ॰ क्रि॰ छपना, छपजाना, भरजाना।
ठप्पा॰ ना॰ पु॰ छापेनेका यन्त्र, साचा, सिक्का, ठस्सा।
ठमकना॰ अ॰ क्रि॰ मटकाकर चलना।
ठरन॰ ना॰ स्त्री॰ बहुतजाडा, बड़ी सर्दी।
ठरिया॰ ना॰ पु॰ माटीका हुक्काविशेष।
ठर्रा॰ ना॰ पु॰ मादक वस्तुविशेष, अ॰ क्रि॰ ठहरजाना।
ठवन॰ ना॰ स्त्री॰ चाल, उठनेकी रीति।
ठसक॰ ना॰ स्त्री॰ महत्व, पति, दमाल, समाज।
ठसकना॰ अ॰ क्रि॰ ठुसकना, स॰ क्रि॰ पटकना।
ठसका॰ ना॰ पु॰ खाँसी, अहंकार।
ठसनी॰ ना॰ स्त्री॰ ठाँसने की वस्तु।
ठसाठस॰ गु॰ कचाकच, भचाभच, गचागच।
ठस्सा॰ ना॰ पु॰ अहंकार, साचा, ढाचा।
ठहरठहर॰ गु॰ कसकना।
ठहरना॰ अ॰ क्रि॰ रुकना, रहना, ठौरहोना, निपटना।
ठहराव॰ ना॰ पु॰ करार, निपटारा।
ठहराना॰ स॰ क्रि॰ रखना, रोकना, निपटाना।
ठहाका॰ ना॰ पु॰ धमाका, भदाका, भड़ाका।
ठां॰ } ना॰ पु॰ स्थान, जगह।
ठांव }
ठांसना॰ स॰ क्रि॰ ठूसना, घुसेड़ना।
ठाई॰ ना॰ स्त्री॰ ठाव, ठौर।
ठाउ॰ ना॰ पु॰ ठांव ठौर।
ठाकुर॰ ना॰ पु॰ ईश्वर, देवता, शालग्राम, मूर्तिदेश, पति, राजा, नाई।
ठाकुरद्वारा॰ ना॰ पु॰ देवालय, चौहरा।
ठाठ॰ } ना॰ पु॰ ठठरी, सँवार, ढुकाला, भड़क, भीड़भाड़, समूह रचना।
ठाट॰ }
ठाढ़ा॰ गु॰ खड़ा, सीधा जो बेडा नहीं।
ठाढ़॰ गु॰ ऊंचा, सीधा, खड़ा।
ठाढ़ा॰ } गु॰ खड़ा, खड़ी।
ठाढ़ी॰ }
ठानना॰ स॰ क्रि॰ मन लगाना, ठहराना, निश्चय करना।
ठाला॰ गु॰ खाली, कार्य्यरहित समय।
ठाहर॰ ना॰ पु॰ ठिकाना, जगह।
ठिकरा॰ ना॰ पु॰ फूटे बर्तनका टुकड़ा, ठीकरा।
ठिकाना॰ ना॰ पु॰ स्थान, वास, छोर सिवाना।
ठिकानी॰ गु॰ ठिकानेवाला, ठिहारा।
ठिंगना॰ गु॰ नाटा, छोटा बावन बोंडा।
ठिठक॰ ना॰ स्त्री॰ आश्चर्य्य में होना, भयवश होना।
ठिठकना॰ अ॰ क्रि॰ भयवश होकर वा आश्चर्यित होकर खड़ा होना।

ठिठरना० अ० क्रि० जमना, ठढ होना, अकड़जाना।
ठिठरा० गु० अकड़ा, शून्य, जड़ाया हुआ।
ठिठराहट० } ना० स्त्री० ठण्ढक, अकड़ाहट।
ठिठुर० }
ठिठुरना० अ० क्रि० ठिठरना।
ठिठुरा० गु० ठिठरा।
ठिलिया० ना० स्त्री० घड़ा, गगरी।
ठीक० गु० शुद्ध, पूरा, योग्य, सत्य, उचित अदाता, लीचक, ना० पु० जोड़।
ठीकठाक० गु० शुद्ध, योग्य, दुरुस्त।
ठीकमठाक० अव्य० शुद्धता से।
ठीकरा० ना० पु० ठिकरा।
ठीकरी० ना० स्त्री० छोटा ठिकरा, गिदड़ी योनि में स्थानविशेष।
ठीका० ना० पु० भाड़ा, ठुकौता, इजारह।
ठुकराना० स० क्रि० ठोकर मारना।
ठुड्डी० ना० स्त्री० ठोढ़ी, जोन्हरी या मसाला जो भूनने से खिला नहीं अर्थात् लावा नहीं भया।
ठुनुक० ना० स्त्री० सिसक।
ठुनुकना० अ० क्रि० सिसकना।
ठुमक० ना० स्त्री० सुंदरचालसे चलन, मटक।
ठुमकना० अ० क्रि० सुडौल से चलना, अकड़ से चलना।
ठुमका० गु० छोटा, नाटा, बाठा।
ठुमकी० गु० आलसी, डिगनी, ना० स्त्री० पतग को उड़ाके हिलाना।
ठुसकना० अ० क्रि० हवा छोड़ना, पादना, धीमे धीमे रोना।
ठुसकी० ना० स्त्री० शब्दरहित वायुको छोड़ना।
ठुसाना० स० क्रि० ठसाना, ठासना।
ठूंठ० ना० पु० पत्ररहित तोड़ी हुई डाली वा डाल पातरहित वृक्ष, टुण्ड।
ठूंठा० } गु० टुण्डा वृक्ष जिसकी डालियां कटगई, सूखावृक्ष।
ठूठियां० }
ठूंठी० ना० स्त्री० गूठी, अनाजकी।
ठेंघुना० ना० पु० ठाना।
ठेंगा० ना० पु० लाठी, अंगुष्ठ, लिंग।
ठेंगायाजाना० स० क्रि० बिगाड़ना।
ठेंठ० गु० निपट, चोखा, केवल, निरा।
ठेंठी० ना० स्त्री० कानका मेल, डट्टा, धौंती।
ठेक० ना० स्त्री० टकनी, आड़, बड़ाबोरा जो अन्न से भरा है।
ठेका० ना० पु० टट्टा, ठीका, इजारह।
ठेकी० ना० स्त्री० शिरस बोझ उतारके सुस्तानेका स्थान, जहां अन्न वा लकड़ीका गज है।
ठेई० ना० स्त्री० टट्टा।
ठेलना० स० क्रि० ढकेलना, रेलना, झोंकना, हगना।
ठेला० ना० पु० धक्का।
ठेलाठेली० ना० स्त्री० धक्काधक्की।
ठेवना० ना० पु० घुटना, जानु।
ठेस० ना० स्त्री० ठोकर, चपेट, झोंक।
ठेसना० स० क्रि० खदना, ठाकरलगाना, ठासना
ठेसरा० ना० पु० नाकचढ़ी।
ठोकना० स० क्रि० मारना, गाड़ना, अंगुली स बजाना।
ठोंग० ना० स्त्री० चोंच वा अंगुली से मारना।
ठोंगना० } स० क्रि० चोंचियाना विदारना।
ठोंगाना० }
ठोंठ० ना० स्त्री० चोंच, ठोर।
ठोक० ना० स्त्री० मार कूट, ठोकने का शब्द।
ठोकर० ना० स्त्री० ठेस, ठेसलगनेकी वस्तु, पा वकी धूल।
ठोढ़ी० ना० स्त्री० ठुड्डा।
ठोल० ना० स्त्री० चोंच।
ठोला० ना० पु० शुकादिके, निमित्तपात्र जिसमें दानापानी रखते हैं अंगुलियों की गांठ।

ठोस० गु० ठाठा, जो खोखला नहीं है।
ठोसना० स० क्रि० ठासना।
ठोसाई० ना० स्त्री० ठाठाई, दृढ़ता।
ठौर० ना० स्त्री० स्थान, जगह।

[ड]

डकराना० अ० क्रि० डूकमार के रोना।
डकार० ना० स्त्री० उद्गार, आरोग्य।
डकारना० अ० क्रि० डिकारना, हुङ्कारना और पचाजाना।
डकैत० ना० पु० डाकू, चोर, बटमार।
डकैती० ना० स्त्री० चोरी, बटमारी, डाका।
डकौत० } ना० पु० पर्वतकरकी जातिविशेष जिसका बाप ब्राह्मण और महतारी ग्वालिनि थी।
डकौतिया० }
डग० ना० पु० पलाया, फाल, पद, डग।
डगडगाना० अ० क्रि० हिलना, चमचमाहट से चलना।
डगना० अ० क्रि० हिलना, डिगना।
डगमग० गु० चपल, चलायमान।
डगमगाना० अ० क्रि० लड़खड़ाना, हिलना।
डगर० ना० स्त्री० मार्ग, सड़क, पैंडा।
डगरना० अ० क्रि० हिलना, फिरना।
डगरा० ना० पु० बांसका बनायाहुआ पात्र विशेष।
डग्गा० ना० पु० दुर्बल घोड़ाविशेष।
डङ्क० ना० पु० चैमर, विच्छू, आदि का विषयुक्त कांटा।
डङ्का० ना० पु० डंका, धौंसा, नक्कारह।
डङ्किनी० ना० स्त्री० डाकिनी।
डङ्कियाना० स० क्रि० डङ्कमारना, चमकना।
डङ्कीला० गु० जिस जन्तुके डङ्क हो।
डटना० अ० क्रि० अड़ना भिड़ना, तकना, बनना।
डटैया० ना० पु० टकनेवाला।
डढ़ना० अ० क्रि० जलजाना, भुनजाना।
डढ़मुण्डा० गु० दाढ़ीरहित।
डढ़ियल० गु० दाढ़ीवाला।
डढ़ुआ० } गु० जलाहुआ, जलगया।
डढ़ोई० }
डण्ड० ना० पु० बाहु, भुजा, व्यायाम करना, साधनविशेष, दण्ड।
डण्डवत० ना० स्त्री० दण्डवत् प्रणाम विशेष, पायँलागी।
डण्डा० ना० पु० सोंटा, सीढ़ीका पाया, दण्डा।
डण्डिया० ना० पु० स्त्रियों के पहिरनेका वस्त्र विशेष और बाजारका कर उगाहनेहारा।
डण्डी० ना० स्त्री० बेंटी, बेंट, तराजूकेपलड़ोंमें लगानेका काठ, सन्यासी, हरसिंगार आदि की नली, डण्डी।
डण्डौर० ना० स्त्री० धारी, लकीर, सीता।
डपटना० अ० क्रि० पुकारना, डाटना, सरपट दौड़ना।
डफ० ना० पु० बाजा विशेष।
डफारना० अ० क्रि० डूकमारना, बिलखना।
डफाली० ना० पु० डफ बजानेहारा।
डय० ना० पु० बल, पराक्रम, जव, चमड़ा जिससे कुप्पा बनाते हैं।
डबका० ना० पु० टटका, कूपराजल, गु० मोटा।
डबडबाना० अ० क्रि० भरना, जैसे आंख आंसू से भरआती है।
डबरा० ना० पु० नीलाभूमि, लिवार, डपरा।
डबरिया० गु० लम्बा, बायाहाथ, बामहस्था।
डबोना० स० क्रि० डुबाना।
डब्बा० ना० पु० बड़ी डिबिया।
डब्बू० ना० पु० लोहेका कर्छा।
डमरुआ० ना० पु० घुटना की गाठि।
डमरु० ना० पु० बाजा विशेष।
डमरुमध्य० ना० पु० डमरुका मध्यभाग, सावनीय जो अपन से दो बड़े स्थलके भागों का मिलावे।
डर० ना० पु० भय, भीत, शङ्का।
डरना० } अ० क्रि० भयखाना।
डरपना० }

डरपोक० गु० डरनेवाला, भयवान्।
डरवैया० गु० भयवान्, हेठा, डरपाक।
डराऊ० गु० भयंकर।
डराक० गु० भयवान्।
डराना० } स० क्रि० भय दना, भय खि
डरावना० } लाना।
डरी० ना० स्त्री० मालकी बोरी, छोटाटुकड़ा, देला।
डरीला० गु० मांस वारियोंवाला।
डरौना० गु० डराऊ।
डलया० ना० पु० टोकरा।
डलवाना० स० क्रि० झोंकवाना गिरवाना। घुसड़ाना।
डला० ना० पु० बड़ा टुकड़ा या ढला टोकरा।
डलिया० ना० स्त्री० छोटी टोकरी।
डली ना० स्त्री० छोटा टुकड़ा वा ढला, सुपारी।
डस० ना० स्त्री० तराजूकी रस्सी दशा।
डसना० स० क्रि० काटना, चभकना डाक खाना।
डसौना० ना० पु० बिछौना।
डहक० ना० पु० गुफा, सोह चोरगड़हा, लालच, बिगाड़, डीर।
डहकना० अ० क्रि० डीकना लालच करना बिगड़ना।
डहकाना० स० क्रि० निराशकरना, ठगवाना, बिगाड़ना।
डहडहा० गु० प्रफुल्लित, खिलाहुआ, चैतन्य।
डहडहाना० अ० क्रि० खिलना, फूलना।
डाक० ना० पु० जगजगा, बिच्छूआदिकी डक।
डाग० ना० स्त्री० लाठी, पहाड़की चोटी।
डागर० गु० दुर्बल, ना० पु० दुर्बलपशु मुझा वा फूलाहुआ पत्ता।
डाटना० स० क्रि० ताड़ित करना घुड़कना।
डांठल० ना० पु० } डण्डी, बोंट।
डांठा० ना० स्त्री }
डांड० ना० पु० बदला, दंड, ताड़ना, नावखेवने का अस्त्र, चापू रीढ़ डरडीर।
डांड़ना० स० क्रि० बदला लेना, दण्डलेना।
डांड़ा० ना० पु० मेंड, सिवाना धूरा।
डांड़ी० ना० स्त्री० खेनेहारा, खेवया।
डामाडोल० ना० पु० इधर स उधर रखड़ना।
डांवरू० ना० पु० शरका बेटा।
डांस० ना० पु० डंस, मच्छड़।
डाक० ना० स्त्री० टप्पा, घ तररहितगमन, डाकिनी का पति, डाका, डाक।
डाकना० स० क्रि० वमनकरना, उछालकरना।
डाका० ना० पु० चोरोंका धावा।
डाकिन्० } ना० स्त्री० डायन, चुड़ैल, या
डाकिनी० } गिना भेद।
डाकिया० ना० पु० डाकू, डाक लानवाला।
डाकी० गु० लाऊ, पटु।
डाकू० ना० पु० डकेत, चोर, बटमार।
डाट० ना० स्त्री० घुड़क, धमक, ढट्टी।
डाटना० स० क्रि० टाटना, भारसे दबाना।
डाढ़० ना० स्त्री० पिछल दांत।
डाढ़ी० ना० स्त्री० ठुड्डीपर क बाल।
डाभ० ना० पु० पतला कच्चा नारियल, तृण विशेष।
डाबर० ना० पु० हाथ धानेका पात्र, गाल तालाब, भावर।
डाभ० ना० पु० कुशा, डाभ दर्भ।
डामर० ना० पु० धूना, राल।
डायन्० ना० स्त्री० डाकिनी।
डार० ना० स्त्री० डाली, डाल।
डारना० स० क्रि० डालना।
डारिम० ना० पु० दाड़िम, अनारफल।
डाल० ना० स्त्री० डाली, शाखा, टहनी।
डालना० स० क्रि० फेंकना, घुसड़ना, मोड़ना।
डाला० ना० पु० डोला, बड़ीडाली।
डाली० ना० स्त्री० टहनी, शाखा फलादिका भेद, पुष्पादि रखने के लिये बांसका पात्र।

ढाक० ना० पु० पलाशकावृक्ष, शुद्धरत छुपारा, सांप का विष उतारने में एक प्रकारका बाजा।
ढाका० ना० पु० बंगालेका नगर विशेष।
ढाटा० ना० पु० ठाढ़ीबन्धन, ठट्ठा।
ढाटी० ना० स्त्री० बसन, पत्थरा, फांदा जो घोड़े के सुमपर बांधते हैं।
ढाढ़स० ना० स्त्री० धीरज, सूरमापन, दिलासा शांति भरोसा।
ढाढ़िन० ना० स्त्री० ढाढ़ी का स्त्री।
ढाढ़ी० ना० पु० जातिविशेष जो बजाते और गाते हैं।
ढाना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना।
ढाबर० गु० मैला, गदला।
ढाबा० ना० पु० जाल, ओरी, ओलती।
ढार० ना० स्त्री० भांति, कानका गहना विशेष।
ढारना० स० क्रि० ढालना।
ढारी० गु० मरीहुई।
ढारू० गु० ढालू।
ढाल० ना० पु० उतारू, ना० स्त्री० फरी।
ढालना० स० क्रि० सांचे में उतारना, औंधाना, बिगाड़ना।
ढालवां० गु० उतरू, जो सांचे में उतारागया।
ढालू० गु० उतारू, भेड़ा, बिगाड़, सांचेका उतारा।
ढाहना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना।
ढाहा० ना० पु० नदीका कराड़ा।
ढिग० ना० स्त्री० पास, समीप।
ढिठाई० ना० स्त्री० चंचलता, गुस्ताखी।
ढिढ़िम० ना० पु० टटीहरी, पक्षी।
ढिपका० ना० पु० उभार, गुमड़ा।
ढिमढिमी० ना० स्त्री० खजरी विशेष।
ढिलड़० } गु० आलसी, सुस्त।
ढिलर० }
ढीठ० } गु० चंचल, निडर, बेअदब, धींगाल
ढीठा० } ममरा।
ढिठोंद० गु० धींगाली या चंचलता से।
ढील० ना० स्त्री० आलस्य, विलम्ब, दर, छूट।
ढीलाई० ना० स्त्री० शिथिलता, आलस्य।
ढींढा० ना० पु० ढेला।
ढुकना० अ० क्रि० झुकना, सिरझुकाना।
ढुकी० ना० स्त्री० ताक।
ढुरना० अ० क्रि० फिरना, लुढ़कना।
ढुलना० अ० क्रि० ढलना, ढरना मरना।
ढुलाई० ना० स्त्री० उठवाने का पैसा या काम।
ढुलवाना० } स० क्रि० उठवाना ढलकाना।
ढुलाना० }
ढूआ० ना० पु० तूदा, मेंड़, मिट्टीका पिण्ड।
ढूंढ़ढांढ़० ना० पु० खोज, झाड़ झूड़।
ढूंढ़न० ना० पु० खोज।
ढूंढ़ना० स० क्रि० खोजना, तलाशकरना।
ढूंढ़ार० ना० पु० देशविशेष।
ढूंढ़िया० ना० पु० जैनलोगों में भिखारी, गु० ढूंढ़नेवाला, टटोव।
ढूक० ना० स्त्री० ढूकी, ताक, घात।
ढूकना० अ० क्रि० बन्द करना, मूंधना, छिपके पास आना पैठना।
ढूसर० ना० पु० जातिविशेष।
ढेकली० ना० स्त्री० कूपसे जल निकालने का यन्त्र।
ढेंका० ना० पु० } कूटने का यन्त्र।
ढेंकी० ना० स्त्री }
ढेंड़स० ना० पु० तरकारी विशेष।
ढेंढ़ी० ना० स्त्री० पोस्ताकाफूल।
ढेंढ़ा० ना० पु० गर्भ, गर्भता, बखेरा, दानोंपैरों का बीच, गदरा।
ढेंक० ना० पु० पक्षीविशेष।
ढकुली० ना० स्त्री० ढेंगी, चरखी।
ढेढ़० ना० पु० चमारकीजातिविशेष, कौआ।
ढेढ़ी० ना० स्त्री० कानका गहनाविशेष।
ढेर० ना० पु० राश, टाल, बहुतात।
ढेरा० ना० पु० भैंसा, जिससे बाधी ऐंठते हैं।
ढेरी० ना० स्त्री० थोड़ाढेर।

ढेला० ना० पु० माटीका लोंदा।
ढेलाचौथ० ना० स्त्री० भादोंकी चौथ।
ढैया० ना० स्त्री० अढैया।
ढैयाटेकर० पु० जो उजड़गया।
ढोवा० ना० पु० पर्व या त्योहारमें फल या फूल जो छोटे लोग लाते हैं।
ढोक० ना० स्त्री० दण्डवत्, रिवाज।
ढोकना० स० क्रि० पीना, घूटना।
ढोका० ना० पु० पत्थर आदिका टुकड़ा, ढेर।
ढोटा० ना० पु० लड़का।
ढोना० स० क्रि० लेजाना, उठाना।
ढोर० ना० पु० गायगोरू।
ढोरा० ना० पु० ताजिया जो मुसलमान बनाते हैं।
ढोरी० ना० स्त्री० ढीठी चोप।
ढोल० ना० पु० बाजा विशेष।
ढोलक० ना० पु० छोटा ढोल।
ढोलकिया० ना० पु० ढोलबजानेहारा।
ढोलकी० ना० स्त्री० छोटीढोल।
ढोलन० ना० पु० प्यारा, रसिया।
ढोलना० ना० पु० ढोल के समानयन्त्र विशेष।
ढोला० ना० पु० छोकरा, रागविशेष।
ढोलिया० } ना० पु० ढोल बजानेहारा।
ढोलैत० }
ढोली० ना० स्त्री० दोसौ पानका परिमाण।
ढौंचा० पु० साढ़ेचार ४½।
ढौरी० ना० स्त्री० डोरी, टहल, चोप।

[त]

तई० अव्य० तलक, लग, ना० स्त्री० दृष्टि, ताव।
तऊ० अव्य० तौभी, तथापि, तदपि।
तक० अव्य० तलक, लग, ना० स्त्री० दृष्टि, ताव, तराजू, तखड़ी।
तकतक० ना० पु० पशु आदि चलाने का शब्द।
तकना० स० क्रि० ताक लगाना, अ० क्रि० दृष्टि देना।
तकला० ना० पु० तकुआ।
तकली० ना० स्त्री० अटेन, परेता।
तकवाहा० ना० पु० रक्षक, चौकीदार, पहरू।
तकाना० स० क्रि० टुकी लगाना, तकाना।
तकिया० ना० स्त्री० सिरहाने की वस्तु विशेष।
तकुआ० ना० पु० सूत कातने के लिये लोहेकी शलाका जो चरखे में लगती है।
तक्र० ना० पु० मट्ठा, छाछ।
तखड़ी० } ना० स्त्री० तुला तराजू।
तखरी० }
तखान० ना० स्त्री० बढ़ई।
तगण० ना० पु० जिसके अन्तका अक्षर लघुहोता है, गण विशेष।
तगना० स० क्रि० तागा डालना।
तगाई० ना० स्त्री० सिलाई, सिलाईका पैसा।
तगाना० स० क्रि० तागा डलाना, सिलाना।
तग्गा० ना० पु० सीने के लिये बनाया हुआ सूत।
तगड़ी० ना० स्त्री० करधनी।
तंगा० ना० पु० दो पैसा।
तचना० अ० क्रि० गर्म होना।
तचाना० स० क्रि० गर्म करना या कराना।
तच्छरीर० ना० पु० उसका शरीर।
तज० ना० पु० औषधि, वृक्ष विशेष।
तजन० ना० स्त्री० छोड़न, त्यागन।
तजना० स० क्रि० त्यागना, छोड़ना।
तजिय० अव्य० छोड़िय।
तज्जन० ना० पु० उसका मनुष्य।
तट० ना० पु० तीर, पास, किनारा।
तटस्थ० पु० तीरवासी।
तटिनी० ना० स्त्री० नदी।
तट्टीका० ना० पु० उसका टीका।
तड़० ना० पु० पक्ष।
तड़क० ना० स्त्री० तर्क, टेढ़, आड़।
तड़कना० अ० क्रि० फटना, फूटना।
तड़का० ना० पु० प्रात काल, भोर।

तड़के० अव्य० सवेरे।
तड़तड़ाना० अ० क्रि० रिसाना, भिरभिराना, पटने का शब्द।
तड़प० ना० स्त्री० चटक, भपट, उचर, उ तावली।
तड़पना० अ० क्रि० तलफाना, धड़कना, कुद कना, फरफराना, हाथ पांव पटकना।
तड़पाना० स० क्रि० तलपाना, धड़काना।
तड़पीला० गु० फुर्तीला, चरपटिया।
तड़फ० ना० स्त्री० व्याकुलता, धड़क।
तड़फड़ाना० अ० क्रि० धड़कना, घबराना।
तड़फड़ाहट० ना० स्त्री० व्याकुलता,घबराहट।
तड़फना० अ० क्रि० व्याकुल होना, फटफटाना।
तड़फाना० स० क्रि० तड़पाना।
तड़ा० ना० पु० टापू, द्वीप।
तड़ाक० गु० भड़कीला, चमकीला।
तड़ाका० ना० पु० मारेना का शब्द, चटाका।
तड़ाग० ना० पु० तालाब, पोखरा।
तड़ाड़ा० ना० पु० जलकी धारा, तरेड़ा।
तड़ाया०ना० पु० चटक, भड़क।
तड़ावा० ना० पु० ढूहा, मनार।
तड़ित्० ना० स्त्री० बिजली।
तड़ित्वान्० ना० पु० मेघ।
तण्डुल० ना० पु० तन्दुल, चावल।
तत्० अव्य० वह, सो, तीन, समह ना० पु० ईश्वर।
तताना० स० क्रि० गर्म करना।
ततेड़ा० ना० पु० पानी गर्म करने का पात्र विशेष।
तत्कन्द० ना० पु० अदरक, नाराइकिन्द।
तत्काल० अव्य० उसी समय।
तत्तत्कार्य० ना० पु० उसी उसी काम में।
तत्ता० गु० गर्म, ज्वलित, क्रोधी।
तत्पर० गु० आसक्त, चतुर, निपुण, समेत।
तत्फल० ना० पु० पीलू वृक्ष, गजपीपरि, जामुन वृक्ष, उसका फल।
तत्त्व० ना० पु० सार, प्रकृति, यथार्थ, मूल, सब भाव जो किसी से बना नहीं।
तत्त्ववल्का० ना० स्त्री० मुरहरी।
तत्त्वज्ञ० गु० मनुष्यादि जो बोलसकें, वानरें, तत्त्व वस्तु जाननेहारा, यथा मन्त्रवेत्ता।
तत्त्वज्ञान० ना० पु० ब्रह्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान।
तत्क्षण० अव्य० उसीसमय, तुरन्त, उसीदम।
तत्र० अव्य० तहां।
तथा० अव्य० किसी प्रकार, तैसा, वैसाही।
तथाच० अव्य० जैसे, पुनाचि।
तथापि० अव्य० तौभी।
तद्० अव्य० तब तिससमय।
तदनन्तर० अव्य० तिसके पीछे।
तदनु० अव्य० तेहि अनुसार, तिसपीछे।
तदा० अव्य० तब, तहां।
तदपि० अव्य० तौभी।
तद्गत० गु० उस में गयाहुआ।
तद्गति० ना० स्त्री० उसकी दशा, उसकी माया
तद्गुणविशिष्ट० गु० वहगुण जिसमें है।
तद्धवि० ना० पु० उसके यशका द्रव्य।
तद्भय० ना० पु० उसके डर।
तद्भावबोधक० गु० उसभावका बोधक।
तभी० अव्य० तिसी समय, तभी।
तन० ना० पु० शरीर, देह, पुत्र, और विस्तार।
तनक० गु० थोड़ा, अल्प।
तनय० ना० पु० पुत्र, लड़का, सुत।
तनया० ना० स्त्री० पुत्री, कन्या, सुता।
तनापा० ना० पु० जवानी, तरुणाई।
तनी० ना० स्त्री० अँगरखे का बन्धन, तनया।
तनु० ना० पु० शरीर, देह।
तनुक० गु० थोड़ा, अल्प।
तनुजा० ना० स्त्री० तनया, पुत्री।
तनुत्राण० ना० पु० बख्तर, कवच।
तनूदरी० ना० स्त्री० स्त्री, नारी, अबला।

तनूरुह० ना० पु० शरीर के बाल।
तनोति० अ० क्रि० विस्तारकर।
तन्त० ना० पु० तार, सुग सिद्धि, तुरत, सतान, औषधि, तदबीर।
तन्तनाना० अ० क्रि० पिनपिनाना, मञाना।
तन्तनाहट० ना० स्त्री० नमचाहट, जलन से जो पीड़ा।
तन्तु० ना० पु० सूत, तार।
तन्तुना० ना० पु० ततुना, तार।
तन्त्र० ना० पु० टोटका, लटका, शास्त्रोक्त मन्त्र शिवकृत ग्रन्थ विशेष, वीणा।
तन्त्री० गु० तन्त्रका करनेवाला, गानेवाला।
तन्त्रीनाद० ना० पु० वीणाका शब्द।
तन्द्रा० ना० स्त्री० थकाई, श्रम, मूर्च्छा।
तन्द्री० ना० स्त्री० भौंह, भृकुटी।
तन्दुल० ना० पु० चावल।
तन्ना० अ० क्रि० खिंचना, पेलना।
तन्नाना० अ०क्रि० पिनपिनाना, क्रोधितहोना।
तन्नेन० ना० पु० उसकी आंखि।
तन्मय० गु० उसमें भराहुआ।
तन्मात्र० अव्य० केवल, वह।
तप० ना० स्त्री० ताप, उष्ण, ना० पु० तपस्या माघका महीना।
तपत० ना० स्त्री० उष्ण, गु० गर्म, तत्ता।
तपन० ना० पु० उष्ण, ज्वाला, सूर्य्य, और भिलावावृक्ष।
तपना० अ० क्रि० ऐश्वर्य्यवान् होना, उष्णहोना, अतितेजयुतहोना।
तपनीय० ना० पु० सूर्य्य।
तपलोक० ना० पु० स्वर्गविशेष, लोक विशेष।
तपसी० ना० पु० तपस्वी।
तपस्य० ना० पु० फागुनमास, यथा मधुस्तथा माधव सज्ञक च शुक्रशुचिश्चाथनभो नभस्यौ तथेषु ऊर्जश्च सहस्सहस्यौ तपस्तपस्याविति तेक्रमेण १।
तपस्या० ना० स्त्री० तप, योग, ईश्वरभजन।
तपस्विनी० ना० स्त्री० तपस्या करनेहारी स्त्री।
तपस्वी० ना० पु० तपस्या करनेहारा योगी।
तपा० ना० पु० अचरु, योगी, जोगी।
तपाना० स० क्रि० गर्म करना तताना, अरपना।
तपास० ना० स्त्री० विरथ, धूप, परिश्रम दौड़ धूप।
तपिच्छ० ना० पु० तापिच्छ, तमाल वृक्ष।
तपी० ना० पु० तपा, मुनि।
तपेश्वर०
तपेश्वरी०
तपोधन० } ना० पु० तपी, मुनि।
तपोधना० ना० स्त्री० मुण्डी, और तपोधन की स्त्री, तपश्वरिन स्त्री।
तपोमय० गु० तपस्यायुक्त।
तप्त० गु० तत्ता, गरम, तपत।
तप्तांग० ना० पु० ज्वर विशेष, दहगरम।
तब० अव्य० तिससमय।
तबी०
तभी० } अव्य० तिसीसमय।
तम०
तम } ना० पु० अंधकारका गुण, अंधेरा तमो गुण, राहुग्रह, क्रोध, अज्ञान, अति, पदांत में बहुतताका बोधक।
तमक० ना० स्त्री० गर्व, घमण्ड, मुखका लाल होना, झुंझलाहट, दर्द।
तमकना० स० क्रि० मुखलाल होना, दहकना, दमदमाना, निष्कारणक्रोध।
तमका० ना० पु० धूपकीमार, बहुतगर्मी।
तमचुर० ना० पु० कुक्कुट, मुरगा।
तमतमाना० अ० क्रि० मुख में लाली होना, दमदमाना।
तमस० ना० पु० तम, मनु विशेष।
तमस्विनी० ना० स्त्री० राति, रैन।
तमारि० ना० पु० सूर्य्य।
तमाल ना० पु० वृक्ष विशेष, तिलक जो चन्दन से बनाते हैं।

तमालपत्र० ना० पु० तमाड़।
तमिस्र० ना० पु० तम, अन्धकार।
तमी० ना० स्त्री० रात, निशा।
तमीचर० ना० पु० निशाचर चोर, उल्लू, चमगीदड़।
तमोगुण० ना० पु० मनोवृत्ति विशेष वा दोष जिससे काम क्रोधादि उपजते हैं।
तमोल० ना० पु० ताम्बूल, पान।
तमोलिन्० ना० स्त्री० तमोली की स्त्री।
तमोली० ना० पु० जाति विशेष जो पान बेचते हैं।
तम्बू० ना० पु० रावटी, पाल, कपड़े का घेरा।
तम्बूल० ना० पु० ताम्बूल।
तम्बेरम० ना० पु० स्तम्बेरम, हाथी।
तर० अव्य० तल, पदान्त में अधिकता का चिह्न, बहुतात का सूचक।
तरई० ना० स्त्री० तारा, नक्षत्र।
तरकारी० ना० स्त्री० भाजी।
तरंग० ना० पु० लहर, उमंग, लहर।
तरंगिणि० } ना० स्त्री० नदी।
तरंगिनी० }
तरंगी० ना० पु० बहुरंगी, लहरी।
तरण० ना० पु० सुनिमय, पारहोना, उद्धार होना।
तरणि० ना० पु० सूरज, नाव।
तरणी० ना० स्त्री० नाव, तरनी।
तरन० ना० पु० तरण।
तरफना० अ० क्रि० तड़फड़ाना।
तरबूज़० ना० पु० हिन्दवाना, फल विशेष।
तरल० गु० चपल, तीक्ष्ण घोड़ा, ना० पु० धतूरा वृक्ष।
तरलता० ना० स्त्री० चपलता, तेजी।
तरला० ना० पु० नाम विशेष, गु० जो सब से नीचला वा दूसरे से नीचला।
तरलाई० ना० स्त्री० तरलता।
तरव० ना० पु० वृक्ष।
तरवर० ना० पु० बड़ा वृक्ष।
तरस० ना० पु० शीघ्र, जल्दी, लालच, दया कृपा, बल।
तरसना० अ० क्रि० जी लगाकर रहना, ललचना, दयालुहोना, पसीजना।
तराई० ना० स्त्री० दलदल, चराई, नीचान
तरान्० ना० पु० उमाही, प्राप्त।
तराना० स० क्रि० पारकराना, पैराना, बचाना
तरि० } ना० स्त्री० नाव, नौका।
तरी० }
तरीन० ना० स्त्री० तरीका बहुवचन, नावें।
तरु० ना० पु० वृक्ष।
तरुण० गु० युवा, जवान।
तरुणता० } ना० स्त्री०, यौवन, किशोर जवानी।
तरुणाई० }
तरुणी० ना० स्त्री० युवती, जवान स्त्री।
तरेड़ा० ना० पु० टोंटी से पानी का गिरना।
तरैया० ना० पु० तारागण, तारा, कवितार यथा (दोहा० यथा तरैया प्रात के सब सूरत उदास, लखिदिनमणि कर राम छवि सकुच चहुंपास)।
तरौंस० ना० पु० किनारा, बिहारीलाल स शतिकाया (श्यामसुरति करि राधिका तर तरणिजातीर, अंसुअनकरत तरौंस को छिनक छीनीर)।
तरौना० ना० पु० कर्ण भूषण विशेष बिहारील ससतशिकाया (सतत सेवत सारी दम्यो स तरौनाकान, पग्यो मनो सुरसरि सलिल रवि बिम्ब बिहान)।
तर्क० ना० स्त्री० बुद्धिसे विवेचना, अनुमान न्यायशास्त्र, दर्शन।
तर्कण० ना० पु० यूहन, नई बात बनाना, करना।
तर्कित० गु० शंकित, लक्षित, तर्क कियागया
तर्की० ना० स्त्री० तरपनिया, ताड़पत्र कानका भूषण विशेष।

तर्कुल० ना० पु० ताडका फल ।
तर्षा० गु० धारा जो बहुत शीघ्र बहती है ।
तर्जन० ना० पु० कोप ।
तर्जना० अ० क्रि० कोपकरना, कूदना ।
तर्जनी० ना० स्त्री० अंगुष्ठके पासकी अंगुली ।
तर्तराना० गु० जो बहुत चिकना गोलाई में जो टपकता है, अ० क्रि० सधारा भरना,गलफटा की करना ।
तर्तराहट० ना० स्त्री० सघाग, गीदड़भबकी, गलफटाकी ।
तर्पण० ना० पु० पितादिके निमित्त जलदानदना मगल, हुलास ।
तर्राना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, सुनसाना, कुछ बुड़ाना ।
तर्रारा० ना० पु० शीघ्रता ।
तर्वरिया० ना० पु० खड्ग, तलवार बांधने० हारा ।
तर्स० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहम् ।
तर्सों० अव्य० परसों के आगे का दिन ।
तल० ना० पु० अधोभाग, पाताल विशेष, दृष्टि ।
तलक० अव्य० तक,लग ।
तलछट० ना० स्त्री० निचोड़, मल, ग्वद ।
तलतलाना० स० क्रि० हिलाना ।
तलना० स० क्रि० घी या तेलमें भूनना ।
तलपट० गु० मलमेट, चौपार ।
तलफना० अ० क्रि० तरपना ।
तलमलाना० अ० क्रि० ललचाना ।
तलवरिया० ना० पु० तर्वरिया ।
तलवार० ना० पु० खड्ग, तरवार ।
तला० ना० पु० पेंदा, थाह, जूतीके नीचे का भाग, पत्र, देवता ।
तलातल० ना० पु० पाताल विशेष ।
तली० ना० स्त्री० तला, बुकनी, निसपर्शी ।
तलुआ० } तलूआ० } ना० पु० पाव के नीचे का भाग ।
तले० अव्य० नीचे ।
तलया० ना० स्त्री० छोटातालाव ।
तल्प० ना० स्त्री० शय्या, सज, बिस्तर ।
तल्लीला० ना० स्त्री० उसकी लीला ।
तवर्ग० ना० पु० तकारादि पाच अक्षर ।
तवक्षार० ना० पु० क्षार तराशिलाडुआ ।
तष्टना० स० क्रि० भुगतना, बाटना ।
तष्टित० गु० माजित, बागगया ।
तसला० ना० पु० खानापकानेकापात्र विशेष ।
तस्कर० ना० पु० चोर ।
तस्करता० ना० स्त्री० } तस्करत्व० ना० पु० } तस्करी० ना० स्त्री० } चोरी ।
तस्मिन्० सर्व० तासमें, उसमें ।
तस्य० सर्व० उसका ।
तस्सू० ना० पु० माप विशेष, फारसी शब्द है ।
तहा अव्य० तिसस्थान, उस जगह ।
तहियां० गु० पहिले ।
तहाँ० अव्य० तिसी या उस स्थान ।
तहलका० ना० पु० सुरयसाप ।
तज्ञ० गु० ज्ञाता, ज्ञानी, स्वरूप साजा ।
ता० सर्व० उससे ।
ताइत ना० पु० यन्त्र, गण्डा ।
ताई० ना० स्त्री० चाची ।
ताऊ० ना० पु० बड़ा चचा ।
तागा० ना० पु० गाड़ी विशेष जो सजी नहीं है ।
तांत० ना० स्त्री० चमड़ का रस्सी ।
तांतबांधना० स० क्रि० बक्षा को चुपाना ।
तांता० ना० पु० पांति, पंक्ति, तार ।
तांती० ना० पु० धुनिया, बिहना, पटकार ।
तांबड़ा० ना० पु० तांबेका वर्ण, माणिक्य के समान मूठापत्थर ।
तांबा० ना० पु० धातु विशेष ।
ताक० ना० पु० दृष्टि, दुका ।
ताकना० स० क्रि० देखना, झांकना, घूरना ।
ताकझाक० ना० स्त्री० ठीक समय, दृष्टिरखना ।

तागः॰ ना॰ पु॰ सूत, धागा।
तागना॰ स॰ क्रि॰ सीवना, सूत डाउना।
तागा॰ ना॰ पु॰ सूत, धागा।
ताजक॰ ना॰ पु॰ ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।
ताजन॰ ना॰ पु॰ कोड़ा।
ताटंक॰ ना॰ पु॰ कर्णभूषण विशेष।
ताड़॰ ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष, ना॰ स्त्री॰ परिचान।
ताड़क॰ ना॰ पु॰ ताड़क, ताड़ने हारा।
ताड़न॰ ना॰ पु॰ झिड़की, दंड, डांट।
ताड़ना॰ स॰ क्रि॰ पहिचानना, बूझना, खटकलना, दण्डदेना, मारना।
ताड़नीय॰ गु॰ ताड़ना करने के योग्य।
ताड़का॰ ना॰ स्त्री॰ सुबाहुकी माता, राक्षसी।
ताड़ित॰ गु॰ ताड़न दियागया, मारागया।
ताड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ ताड़कारस।
ताण्डव॰ ना॰ पु॰ तापञ्च, नृत्यविशेष।
तात॰ ना॰ पु॰ पिता, गुरु, मित्र, पुत्र, भाई, शत्रु, सेवकादिका बोधक, गु॰ तत्ता, गरम, उष्ण।
तातनी॰ } सर्व॰ उसकी, उसका।
तातनो॰ }
ताते॰ } सर्व॰ जिससे, उससे, तिसकारण।
ताते॰ }
तात्कालिक॰ गु॰ उसी समयका।
तात्पर्य॰ ना॰ पु॰ अभिप्राय, प्रयोजन, मतलब हासिल।
तादात्म्य॰ ना॰ स्त्री॰ तन्मयपना।
तादृश॰ गु॰ वैसाही।
तान॰ ना॰ स्त्री॰ रागका जो उच्चारण, स्वर।
तानसेन॰ ना॰ पु॰ रागी विशेष।
ताना॰ ना॰ पु॰ वस्त्रका लम्बासूत।
तानी॰ गु॰ रागी, गवैया, ना॰ स्त्री॰ तानी।
तांत्रिक॰ ना॰ पु॰ सिद्धान्तका जानने हारा। विद्वान्, तन्त्र शास्त्रज्ञ।
तान्ना॰ स॰ क्रि॰ कसना, खींचना, फैलाना।
ताप॰ ना॰ स्त्री॰ उष्णता, तप्त, ज्वर, मनका दुःख दण्ड।
तापती॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष।
तापना॰ स॰ क्रि॰ आंच लेना, घमाना।
तापस॰ ना॰ पु॰ तपस्वी, शान्त।
तापिच्छ॰ } ना॰ पु॰ तेंदुवा वृक्ष, तमाल।
तापिञ्ज॰ }
तापी॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष जो विन्ध्यके दक्षिण ओर है।
तापीय॰ ना॰ पु॰ सोनामक्खी।
ताबूल॰ ना॰ पु॰ तमालपत्र।
ताप्य॰ ना॰ पु॰ सोनामक्खी।
ताफता॰ ना॰ पु॰ रेशमी, कपड़ा जिसको धूपछांह कहते हैं।
तामचीनी॰ ना॰ स्त्री॰ तांबा जिसमें चोर ध भी जड़ाहोवे।
तामड़ा॰ ना॰ पु॰ तांबेके रंगकी मणि।
तामपुष्प॰ ना॰ पु॰ कुम्भी।
तामरस॰ ना॰ पु॰ कमल।
तामल॰ ना॰ पु॰ देशविशेष।
तामलकी॰ ना॰ स्त्री॰ भूधरा।
तामस॰ ना॰ पु॰ तमोगुणका कार्य, काम, क्रोध।
तामसिक॰ } गु॰ तमोगुण युक्त, क्रोधी।
तामसी॰ }
तामसी॰ ना॰ स्त्री॰ रात, क्रोधी।
तामह॰ सर्व॰ उसमें।
तामा॰ ना॰ पु॰ तांबा।
तामिली॰ ना॰ स्त्री॰ भाषा विशेष।
तामेश्वर॰ ना॰ पु॰ तांबेकी भस्म।
ताम्बूल॰ ना॰ पु॰ पान।
ताम्र॰ ना॰ पु॰ तांबा।
ताम्रचूड़॰ ना॰ पु॰ मुरगा, कराँदा।
ताम्रवर्ण॰ ना॰ पु॰ हरिन, तांबेकारंग।
ताम्रवल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ मँजीठ।
ताम्रसार॰ ना॰ पु॰ लालचन्दन।

ताम्राद्य० ना० पु० कोयल।
तार० ना० पु० वानर विशेष, मोतीमाला, निर्मल मोती, उच्चस्वर, ताड़।
तारक० ना० पु० मुक्तिदाता, तारा, गुरु, उद्धारकरनेहारा, जो पारलगावे, मन्त्र विशेष दैत्य विशेष।
तारकारि० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
तारकी० ना० स्त्री० देवदाली।
तारकूट० ना० पु० रूपा, पीतल।
तारकेश्वर० ना० पु० स्वामिशिवजी।
तारण० ना० पु० उद्धार करनेहारा, उद्धार का करना, मुक्तिदाता, तारनेहारा।
तारणीय० गु० तारनेहारा, योग्य, उद्धार करने लायक।
तारतम्य० ना० पु० न्यूनाधिक, थोड़ा बहुत।
तादर्थ० ना० पु० उसका अर्थ, उसके लिये।
तारना० स० क्रि० उतारना, पारकरना, मुक्ति देना।
तारा० ना० पु० नक्षत्र, ना० स्त्री० नेत्र पुतली, बृहस्पती महतारी।
तारागण० ना० पु० नक्षत्रों का समूह।
तारापथ० ना० पु० आकाश।
तारिका० ना० स्त्री० पुतली, नक्षत्र।
तारिणी० ना० स्त्री० उद्धार करनहारी।
तारुण्य० ना० स्त्री० तरुणता, जवान, युवा।
तालु० ना० पु० तालू।
तार्किक०ना०पु० नैयायिक न्यायशास्त्रजाननेहारा।
तार्क्ष्य० ना० पु० रसौत, गरुड़पक्षी (पक्षिनाङ्गयों गरुत्मान् तार्क्ष्योऽसमासपक्षिया इत्यमर)।
ताल० ना० पु० ताड़वृक्ष, तालाब, हरताल, ना० स्त्री० करताल, रागका परिमाण, मल्लयुद्ध में बाहुपर बाहु पटकना।
तालखजूरी० ना० स्त्री० दुपहरिया वृक्ष।
तालध्वज० ना० पु० श्रीबलरामजी।
तालपर्णी० } ना० स्त्री० मूसली औषधि।
तालमूलिका० }
तालवृन्त० ना० पु० ताड़का पत्ता।
तालव्य० ना० पु० जो अक्षर तालुसे उच्चारण किये जावैं यथा त, थ, द, ध, न, ल, श।
ताला० ना० पु० कुफल, द्वार बन्द करने का यन्त्र।
तालाङ्क० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
ताली० ना० स्त्री० कुंजी, चाबी, दोनों हाथों को आपस में मारने से जो शब्द होताहै।
तालीस० ना० पु० वृक्ष विशेष।
तालु० } ना० पु० मुखमें ऊपरका भाग।
तालू० }
ताव० ना० पु० ताप, आंच, मन चटक, ऐंठ, कागजका तखता, पत्र।
तावत्० अव्य० इतना, यहांतक, तबतक।
तावना० स० क्रि० गरमकरना, कसना, ऐंठना।
ताश० } ना० पु० जरीकपड़ा, तास, पारसीहै।
तास० }
तासु० } सर्व० उसको उसका।
तासुको० }
ताहि० सर्व० उसको।
ताहिरी० ना० स्त्री० भोजन विशेष।
तिकातिक० ना० पु० गाड़ी आदि के बैल चलाने में यह शब्द बोलाजाताहै।
तिदुरी० ना० स्त्री० तिदरी, तेंसरा।
तिकोनिया० गु० तीन कोनका पदार्थ।
तिक्का० ना० पु० मासका छोटा टुकड़ा।
तिक्त० गु० तीता चरपरा, ना० पु० चिरायता।
तिक्तका० ना० स्त्री० चिरपरा।
तिक्तचक्का० ना० स्त्री० कन्दरी।
तिक्ता० ना० स्त्री० कालीमिरच, तारा।
तिखरा० गु० तिवारा, तिहरा।
तिखराकरना० स० क्रि० तीनबार जोतना।
तिखारना० स० क्रि० ठहराना, सचकरना, वचन पूछना तीनबेर जोतना।
तिगुण० } गु० जिसमें तीनगुण हैं, तिह-
तिगुना० } रा।

तिग्म० ना० पु० पीरी ।
तिजरा० ना० पु० } अतरिकी तीसरे दिन जाडा आर विषमका आना ।
तिजरी० ना० स्त्री०
तिजारी० ना० स्त्री०
तिणुका० ना० पु० घास, घासका टुकड़ा ।
तित० अ० निधर, तत्र ।
तितना० ना० पु० } गु० प्रमाण वा अवधि वा निश्चय बोधक ।
तितनी० ना० स्त्री०
तितरबितर० गु० भिन्न भिन्न, मगरूरवाला ।
तितरी० } ना० स्त्री० कीट विशेष जो उड़ता है ।
तितली० }
तिथि० ना० स्त्री० चन्द्रकला की क्रिया से उपत्र गिनकाल, दिन, तारीख ।
तिथिपत्र० ना० पु० पत्रा, जन्त्री ।
तिथिक्षय० ना० पु० तिथिका अवम, हानि ।
तिदरा० ना० पु० } तीनद्वार का स्थान ।
तिदरी० ना० स्त्री० }
तिधारा० ना० पु० पौधा विशेष, तीन धारका नाम ।
तिनकना० अ० क्रि० अकड़ना, फड़फड़ाना, टीसना ।
तिनका० ना० पु० घास या टहनी का घासका छोटाटुकड़ा ।
तिन्तिणी० ना० स्त्री० अमिली वृक्ष ।
तिन्दुक० ना० पु० तेंदुआ, तमालवृक्ष ।
तिन्दुला० ना० स्त्री० धाारि ।
तिन्नी० ना० स्त्री० चावल या उसका पौधा विशेष ।
तिपारा० गु० तीनसिर ना० पु० तीन द्वारका ।
तिब्बत० ना० पु० देश विशेष जो हिमालय के उत्तर में है ।
तिमि० ना० स्त्री० मछली, अव्य० तैसे, उसी विधि ।
तिमिंगिल० ना० पु० मत्स्य, मछली ।
तिमिर० ना० पु० अन्धकार, अज्ञान ।
तिमिरहर० ना० पु० सूरज ।

तिय० } ना० स्त्री० योषिता, स्त्री, नारि ।
तिया० }
तिरकोना० गु० तीनकोनवाला पदार्थ ।
तिरखूंटी० ना० स्त्री० तीनकाने का अस्त्र विशेष ।
तिरछा० गु० टेढ़ा, आड़ा, हठीला ।
तिरछाना० स० क्रि० टेढ़ा करना, अ० क्रि० हठीला होना, हठकरना ।
तिरछी० गु० टेढ़ी, बांकी ।
तिरतिराना० अ० क्रि० रिसाना, झिरझिराना ।
तिरना० अ० क्रि० पैरना, तैरना ।
तिरपद० ना० पु० } तिपाई, तीनपद ।
तिरपदी० ना० स्त्री० }
तिरपन० गु० पचास और तीन, ५३ ।
तिरपौलिया० ना० पु० धनुषाकार के तीनद्वार का स्थान ।
तिरफला० ना० पु० त्रिफला, तीन फल का अर्थात् आंवला, हर्र, बहेड़ा ।
तिरभंगा० गु० तिरछा खड़ाहोना ।
तिरभंगी० ना० स्त्री० छन्द विशेष ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम ।
तिरस्कार० ना० पु० निन्दा, भजन, अनादर, अपमान ।
तिरसठ० गु० साठि और तीन, ६३ ।
तिरहुत० ना० पु० देश विशेष, नगर विशेष ।
तिरोधान० ना० पु० गोपाव, आच्छादन, परदा ।
तिरोहित० गु० छिपाहुआ, गुप्त; ना० पु० मिथिलादेश ।
तिर्मिरी० ना० पु० तेलकी बुंद जो पानीपर बहती है वा चमक ।
तिर्मिराना० अ० क्रि० फूलना, लहरना, थरथराना, चमकना यथा तेलकी बुंद पानीपर ।
तिर्मिराहट० ना० स्त्री० थरथराहट, फरफराहट ।
तिर्मिरी० ना० स्त्री० धुमरी ।

तिर्यक्पति० } नाम० पु० शार्दूल, सिंह।
तिर्यग्पति० }
तिल० नाम० पु० पोधा विशेष जिसके बीज से तेल निकालते हैं, शरीर में काला चिह्न विशेष, घृण।
तिलक० नाम० पु० ललाट में विहित चन्दनादि का टीका, पीता, लली, अर्थ करना, अर्थ, वृक्ष विशेष गु० शिरोमणि।
तिलकुट० नाम० पु० तिल और मिठाई विशेष।
तिलंगा० नाम० पु० तेलगा, सिपाही।
तिलगी० नाम० स्त्री० गुड्डा, पतंग।
तिलचट्टा० नाम० पु० कीटविशेष।
तिलचावली० नाम० स्त्री० तिल और चावलों की मिलौनी, काले और सफेद बालों की मिलावा।
तिलचूरी० नाम० स्त्री० मिठाई विशेष।
तिलड़ा०नाम० पु० } तीन लड़का, भूषण विशेष।
तिलड़ी०नाम० स्त्री० }
तिलपर्णी० नाम० स्त्री० चन्दन।
तिलपिष्टक० नाम० पु० पीना, तिलकी खली।
तिलयर० नाम० पु० पक्षी विशेष।
तिलभेद० नाम० पु० पोस्त का बिरवा।
तिलहा० गु० तेलिया।
तिलुआ० नाम० स्त्री० तिलई।
तिलोत्तमा० नाम० स्त्री० मुख्य अप्सरा।
तिष्ठना० अ० क्रि० ठहरना, स्थिरहोना, विरामना।
तिष्ठित० गु० ठहराहुआ।
तिष्य० नाम० स्त्री० आठवा नक्षत्र पुष्य।
तिसका० सर्व० उसका, जिसका।
तिसरायत० नाम० पु० मध्यवर्ती गोरयत, दूजागी, अपनायतरहित।
तिसूल० नाम० पु० औषध विशेष।
तिहत्तर० गु० सत्तर और तीन, ७३।
तिहरा० गु० तिगुणा, तिखड़ा।
तिहराना० स० क्रि० तिहरा करना।
तिहरावट० नाम० स्त्री० तिगुण करने का काम।
तिहरे० सर्व० तिहारे।
तिहाई० नाम० स्त्री० तीसरा भाग।
तिहायत० नाम० स्त्री० तिसरायत।
तिहारी० नाम० स्त्री० }
तिहारे० नाम० पु० } सर्व० तेरी, तेरे।
तिहारो० नाम० पु० }
तिहु० गु० तीनो, तीन।
तिहुपुर० } नाम० पु० तीनोंलोक
तिहुलोक० }
तीखा० गु० तीक्ष्ण, चरपरा।
तीखी० गु० मदमस्त, पैनी।
तीखुर० नाम० पु० श्वेत वस्तु, जिसका व्रत के दिन फलाहार करते हैं।
तीक्ष्ण० गु० तीक्ष्ण, तीव्र, तेज।
तीज० नाम० स्त्री० तृतीया।
तीजा० गु० तीसरा, मृतक के तीसरे दिन का काम व तीसरा दिन।
तीजिया० } नाम० स्त्री० श्रवण सुदी तीज का त्योहार।
तीजै }
तीत० गु० तीता।
तीतर० नाम० पु० पक्षीविशेष।
तीतरी० नाम० स्त्री० तितरी, पतंगविशेष।
तीता० गु० कड़ुआ, चरपरा, तीखा।
तीन० गु० त्रि, ३।
तीनतेरह० गु० तित्तर बित्तर।
तीय० नाम० स्त्री० अबला, स्त्री।
तीयल० नाम० स्त्री० स्त्री के पहिरने के तीनों वस्त्र।
तीर० नाम० समुद्र वा नदी का तट, अव्य० निकट, पास।
तीरथ० नाम० पु० पुण्यस्थान, यात्रा।
तीरथराज० नाम० पु० प्रयाग।
तीर्थ० नाम० पु० तीरथ।
तीली० नाम० स्त्री० पिंजड़ा की सलाई।
तीव्र० गु० अत्यन्त कड़ुवा, तीता, पैना।

तीसरा० गु० तृतीय।
तीसी० ना० स्त्री० अलसी, जिसका तेल निकालते हैं।
तीक्ष्ण० ना० पु० मरुआ, मिरच, गु० चरपरा, तत्ता, तीखा, भाल्लिया, पैना, तीता।
तुक० ना स्त्री० पद, सम्बन्ध।
तुक्खा० ना० पु०
तुकली० ना० स्त्री०
तुक्कल० ना० पु०
} छोटी पतंग विशेष।
तुक्का० ना० पु० वाण जिसकी नोक नहीं है, छोर पर्यन्त।
तुगाक्षीरी०
तुकाक्षीरी०
} ना० पु० बंसलोचन।
तुंग० गु० ऊंचा, लम्बा, समूह।
तुंगवृक्ष० ना० पु० नारियल।
तुच्छ० गु० स्वल्प, कुत्सित, अपमानी।
तुड़ाना० स० क्रि० तोड़ना।
तुण्ड० ना० पु० चोंच, मुख।
तुतरा० गु० जो तुतलाता हो।
तुतराना० अ० क्रि० अधूरा बोलना जैसे बालक बोलते हैं।
तुतला० गु० तुतरा।
तुतलाना० अ० क्रि० तुतराना।
तुत्थ०
तुत्थिक०
} ना० पु० नीलाथोथा।
तुनतुनाना० अ० क्रि० सरांग देना।
तुन० ना० पु० वृक्षविशेष।
तुन्दिल० गु० तोंदेल, बड़ी तोंदका।
तुन्न० ना० पु० तुन, टूटा।
तुपक० ना० पु० बन्दूक।
तुपकिया० ना० स्त्री० छोटी बन्दूक।
तुम० सर्व० मध्यमपुरुष का सूचक वा वाचक।
तुमतनौ० सर्व० तुम्हारा।
तुमाई० ना० स्त्री० तुमाने का पैसा।
तुमाना० स० क्रि० धुनवाना।
तुमुल० ना० पु० रौला, हुल्लड़।
तुम्बा० ना० पु० लौका, कद्दू।
तुम्बिका०
तुम्बी०
} ना० स्त्री० लौकी, कद्दू, बजाने की तोंबी जो मदारी लोग रखते हैं।
तुरई० ना० स्त्री० तरकारी विशेष।
तुरक० ना० पु० तुरक, देशविशेष।
तुरग०
तुरंग०
तुरंगम०
} ना० पु० घोड़ा।
तुरंगगन्धा० ना० स्त्री० असगन्ध।
तुरत०
तुरंत०
} अव्य० शीघ्र, अभी।
तुरपना० स० क्रि० सीना, टांकना विशेष।
तुरही० ना० स्त्री० बाजा विशेष नरसिंघा।
तुराई० ना० स्त्री० तोशक, रजाई।
तुराना० अ० क्रि० छुड़ाना, छुड़ाना, मर्यादा से बाहिर चलना, नहिंचलना।
तुराषाट्० ना० पु० इन्द्र।
तुरिय० ना० पु० घोड़ा।
तुरी० ना० पु० घोड़ा ना० स्त्री० तुरही।
तुरीय० ना० पु० मुक्तअवस्था, मुक्ति, मोक्ष चौथा
तुरुक०
तुरुष्क०
} ना० पु० यवन, देश विशेष।
तुर्त०
तुर्तफुर्त०
तुर्ताव०
तुर्तीफुर्ती०
} अव्य० तुरन्त, शीघ्र।
तुल० गु० तुल्य।
तुलना० अ० क्रि० तुलापरचढ़ना, तुल्यहोना।
तुलसा०
तुलसी०
} ना० स्त्री० छोटा वृक्ष जिसको प विष्णु वा शालग्राम को चढ़ाते हैं।
तुलसीदास० ना० पु० प्रसिद्ध भक्त श्रीरामा भाषा बनानेहारे।
तुला० ना० स्त्री० तराजू, अपनी देहके बरा दान देना, सातवीं राशि विशेष।
तुलाना० स० क्रि० तौलाना, तुलापर चढ़ाना

तकुया ठीक कराना।
तुलित० गु० तुलाहुआ, तुलापर चढ़ाया गया।
तुली० ना० स्त्री० मोगासींक, चित्र लिखने की कलम।
तुल्य० ना० पु० समान, बराबर, सदृश।
तुल्यता० ना० स्त्री० समानता, बराबरी।
तुवर० ना० पु० तिल।
तुवरी० ना० स्त्री० फटकरी।
तुष० ना० पु० धानादि का छिलका।
तुषार० ना० पु० शीत, पाला, हिम।
तुष्ट० गु० प्रसन्न, तृप्त, सन्तोषी।
तुष्टता० ना० स्त्री० प्रसन्नता, तुष्टि, सन्तोष।
तुष्टित० गु० प्रसन्नित, सन्तोषित।
तुसार० ना० पु० तुषार।
तुहिन० ना० पु० तुसार तुषार, हिम।
तुही० सर्व० तुमको।
तू० सर्व० मध्यमपुरुष का एक वचन।
तूताँकरना० स० क्रि० तुकारना।
तूकारना० स० क्रि० अप तें करना।
तूष्टा० गु० सन्तोषित।
तूण० } ना० पु० बाण रखने का घर,
तूणीर० } तरकश।
तूनई० ना० स्त्री० टोंटीदार मिट्टी का बर्तन।
तूतिया०ना० पु० नीलाथोथा।
तूंबरि० ना० स्त्री० तुम्बी।
तूमना० } स०क्रि० रुई का हाथ से बनाना।
तूम्मा० }
तूर० ना० पु० तूर्य, नक्कारह।
तूरक० ना० पु० जलपिप्पल।
तूरना० स० क्रि० तोड़ना।
तूरी० ना० पु० धतूरा।
तूर्ण० ना० पु० शीघ्र, जल्द।
तूर्य० ना० पु० नक्कारह, नगाड़ा।
तूल० ना० स्त्री० निर्बीज कपास अर्थात् रुई [illegible]।
तुलनीय० ना० पु० कदम वृक्ष।
तूलिनी० ना० पु० सेमर वृक्ष।

तूबर० ना० पु० राजपूतों में जातिविशेष।
तृण० ना० पु० घास।
तृणराज० ना० पु० नारियल, उख, ताड़वृक्ष।
तृणवत्० गु० घास के समान निकम्मा।
तृणावर्त्त० ना० पु० दैत्यविशेष, बौरा, घास का भवर।
तृणोदक० ना० पु० घास पानी।
तृतीय० गु० तीसरा।
तृतीया० ना० स्त्री० तीज, तीसरीतिथि, तीसरी।
तृतीयान्त० गु० जिस के अन्त में तृतीया का चिह्न है।
तृतीयांश० ना० पु० तीसरा भाग।
तृप्त० गु० सन्तुष्ट।
तृप्ति० ना० स्त्री० भोजनादि करके सन्तोष।
तृषृता० } ना० स्त्री० पियास।
तृष्णा० }
तृषा० ना० स्त्री० प्यास।
तृषार्त्त० गु० पिपासाकरके व्याकुल।
तृषान्त्त० } गु० पियासा, [illegible]
तृषित० }
तृष्णा० ना० स्त्री० प्यास, [illegible]
ते० अव्य० से, सों, के, [illegible]
ते० सर्व० तू, [illegible]
तैतालीस० गु० [illegible]
तैतीस० गु० [illegible]
तेंदुआ० ना० पु० [illegible]
तेंदू० ना० पु० वृक्ष [illegible]
तेंह० [illegible]
तेज० ना० पु० [illegible]
तेजपत्र० ना० पु० [illegible]
तेजवान्० ना० पु० [illegible]
तेजवन्त० } [illegible]
तेजस्व० }
तेजवन्त० ना० पु० [illegible]
तेजस्वी० } ना० स्त्री० [illegible]
तेजस्विनी० }

तेजस्कर० ना० पु० वीर्य्य बढ़ानेहारा, द्रव्य, पुरुई।

तेजस्वी० } गु० प्रतापी, दीप्तिमान्, तेज वा
तेजोमय० } प्रकाश से युक्त।

तेता० गु० तितना।

तेमन० गु० आर्द्रा, गीलाई, व्यञ्जन।

तेरस० ना० स्त्री० त्रयोदशी।

तेरह० गु० दश और तीन, १३।

तेरुस० ना० पु० तीसरा वर्ष, त्योरस।

तेल० ना० पु० चिकना, चिकनाहट, तिलादि का रस।

तेलिन्० ना० स्त्री० तेली की स्त्री।

तेलिया० ना० पु० तेलवाला रंगविशेष।

तेली० ना० पु० तेलकार जाति विशेष।

तेवर० ना० स्त्री० घुमनी, घुमड़ी गु० तीलता।

तेवराना० अ० क्रि० घुमड़ी में होना, गिर-पड़ना।

तेवरी० ना० स्त्री० घुमड़ी, घुमनी इति।

तेवहार० ना० पु० पर्व, त्योहार।

तेह० ना० पु० क्रोध, ताव, बहादुरी, साहस।

तेहर० ना० स्त्री० स्त्रीके पायका गहनाविशेष।

तेहा० ना० पु० तेह।

तेहीं० अव्य० अभी, सत्वं, उसही।

तैतिल० ना० पु० करणविशेष।

तैरना० स० क्रि० परना।

तैल० ना० पु० तेल।

तैलकार० ना० पु० तेली।

तैलंग० ना० पु० कर्णाटक देश वा उसके वासी।

तैलगा० ना० पु० तैलङ्गदेश के लोग, और अगरेजों के प्यादे।

तैसा० गु० तिसके समान, ■ य० त्योंकर।

तो० अव्य० तब, तदा, निस्सन्देह, सर्व्व, तुझ।

तों० अव्य० ताकर।

तोंद० ना० पु० बड़ा पेट।

तोंदी० ना० स्त्री० नाभि।

तोंदैल० } गु० जिसका पेट बड़ा है।
तोंदैला० }

तोंही० अव्य० तथा, उसी समय में।

तोकह० सर्व० तुझको।

तोड़० ना० पु० फूट, नदी की धारा का बल, दही का पानी।

तोड़जोड़० ना० स्त्री० बात बनाना।

तोड़ना० स० क्रि० फोड़ना, रुपया, भुनाना, टूकड़ा करना।

तोड़ल० ना० पु० कड़ा, सगौरा हाथ के।

तोड़वाना० स० क्रि० फोड़वाना, टुकड़े कराना, रुपया भुनवाना वा भुनाना।

तोड़ा० ना० पु० चटका, सहस्र रुपयों की थैली, रंजक में आगि लगानेकीरस्सी, खरची, गलेकी सांकर, धर्मीका टुकड़ा।

तोड़ाना० स० क्रि० तोड़वाना।

तोतला० गु० हकला।

तोतलाना० अ० क्रि० हकलाना।

तोता० ना० पु० शुक, सुगा।

तोपना० स० क्रि० ढपना, गाड़ना।

तोपाना० स० क्रि० गड़वाना।

तोबड़ा० ना० पु० थैली जिसमें घोड़े को दाना दिया जाता है।

तोमर० ना० पु० बाण तीर, छन्द विशेष।

तोय० ना० पु० जल, पानी।

तोयनिधि० ना० पु० समुद्र, जलधि।

तोयपिप्पली० ना० स्त्री० जलपीपल।

तोर० ना० पु० दल विशेष, सर्व० तेरा।

तोरण० ना० पु० फूलोंकी माला जो आनन्द वा त्योहारके दिन बांधते हैं।

तोरी० ना० स्त्री० ककरी विशेष।

तोल० ना० स्त्री० तौल।

तोलक० } ना० पु० बाट जो बारहमाशे भर
तोला० } ढाईं वा सोलह माशे भर।

तोष० ना० पु० हर्ष, तृप्ति, धीरज।

तोषक० गु० हर्षदाता, धीरजदाता।

तोषित० गु० हर्षित, धीरजवान।
तोहि० सर्व्व० तुझको।
तौ० अव्य० तब, तो।
तौंसना० अ० क्रि० धूपके कारण से शिथिल होना।
तौल० ना० पु० जाल, परिमाण की क्रिया।
तौलना० स० क्रि० जोखना, परिमाण करना।
तौलयाई० } ना० स्त्री० तोलने का काम या पैसा।
तौलाई० }
तौलाना० स० क्रि० जोखवाना।
तौलिया० } ना० स्त्री० पात्रविशेष।
तौली० }
तोहीं० अव्य० अभी।
तौहू० अव्य० तथापि।
त्यक्त० गु० जिसका त्यागदिया।
त्याग० ना० पु० छुड़ाव, वैराग्य।
त्यागन० ना० पु० तजन, विराग, छोड़न।
त्यागना० स० क्रि० छाड़ना, तजना।
त्यागी० गु० वैरागी, छाड़ेहुये।
त्याज्य० गु० जो त्यागने के योग्य है।
त्यों० अव्य० तैसे, इस प्रकार, एकही समय में।
त्योंधा० गु० धुंधला।
त्योनार० ना० स्त्री० चतुराई, चालाकी।
त्योनारी० ना० स्त्री० स्त्री जो अपना काम बड़ी चतुरता से स्वच्छ बनाती है।
त्योंदस० ना० पु० दो वर्ष पहिले।
त्योरी० ना० स्त्री० मथे की सकोड़, धुमनी।
त्योरीचढ़ाना० अ० क्रि० क्रोधित होना।
त्योहार० ना० पु० पर्व, पर्वणी, श्राद्धकादिन।
त्रपा० ना० स्त्री० लाज, हया।
त्रय० गु० ति, ३।
त्रयईषणा० ना० स्त्री० तीन ईषणा अर्थात् पुत्र, सम्पत्ति, पर्ण।
त्रयगंगा० ना० स्त्री० तीनगंगा अर्थात् मंदाकिनी, भगीरथी, प्रभावती।
त्रयताप० ना० स्त्री० तीनताप अर्थात् दैहिक, दैविक, भौतिक।
त्रयपावक० ना० पु० तीन अग्नि अर्थात् आहवनीय, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य अथवा जठरानल, दावानल, बड़वानल।
त्रयरेखा० ना० स्त्री० तीनरेखा अर्थात् त्रिपादि, तीन लकीर।
त्रयरोग० ना० पु० तीन रोग अर्थात् वात, पित्त, कफ।
त्रयीतनु० ना० पु० सूर्य।
त्रयोदशी० ना० स्त्री० तेरस।
त्र्यम्बक० ना० पु० श्रीशिवजी।
त्रसित० गु० डरता हुआ, भयवान्।
त्रस्त० गु० कायर, डरपोक, नामर्द।
त्राण० ना० पु० रक्षा, निस्तार, उद्धार।
त्राणकर्त्ता० गु० रक्षक।
त्राणी० गु० त्राणकर्त्ता रक्षक।
त्रात० गु० बचायागया, रक्षित।
त्राता० रक्षक, पालक।
त्रास० ना० पु० भय, दुःख।
त्रासक० गु० भयदायक, दुःखदाता।
त्रासा० } गु० भयवान, डराहुआ।
त्रासित० }
त्राह० } अव्य० दयाचाहने का शब्द, परना
त्राहि० } तार का शब्द।
त्रि० गु० तीन, ३ परन्तु यह शब्द विशेष के आगे योगहोता है यथा, त्रिभुवन, त्रिपुर।
त्रिश० गु० तीसरा ३ रा।
त्रिशति० गु० तीस, ३०।
त्रिक० } ना० पु० गोखुरू।
त्रिकटु० }
त्रिकाल० ना० पु० तीनकालअर्थात् भूत, भविष्य, वर्तमान अथवा प्रात काल, मध्याह्न, सन्ध्या।
त्रिकुट० ना० पु० सिंघाड़ा।
त्रिकुटा० ना० पु० सोंठ, मिरच, पीपर।
त्रिकूट० ना० पु० पर्वत विशेष जिसपर लङ्का है।

तेजस्कर० ना० पु० वीर्य्य बढ़ानेहारा, द्रव्य, पुष्टई।

तेजस्वी० } गु० प्रतापी, दीप्तिमान, तेज वा तेजोमय० } प्रकाश से युक्त।

तेता० गु० जितना।

तेमन० गु० श्रादा, गीलाई, व्यंजन।

तेरस० ना० स्त्री० त्रयोदशी।

तेरह० गु० दश और तीन, १३।

तेरस० ना० पु० तीसरा वर्ष, त्योरस।

तेल० ना० पु० चिकना, चिकनाहट, तिलादि का रस।

तेलिन० ना० स्त्री० तेली की स्त्री।

तेलिया० ना० पु० तेलकला रंगविशेष।

तेली० ना० पु० तेलकार जाति विशेष।

तेवर० ना० स्त्री० घुमनी, घुमड़ी गु० तीलड़ा।

तेवराना० अ० क्रि० घुमड़ी में होना, गिर-पड़ना।

तेवरी० ना० स्त्री० घुमड़ी, घुमनी दृष्टि।

तेवहार० ना० पु० पर्व्व, त्योहार।

तेह० ना० पु० क्रोध, भ्राक, बहादुरी, साहस।

तेहर० ना० स्त्री० स्त्रीके पांवका गहनाविशेष।

तेहा० ना० पु० तेह।

तेही० अव्य० वही, सर्व्व, उसी।

तैतिल० ना० पु० करणविशेष।

तैरना० स० क्रि० पैरना।

तैल० ना० पु० तेल।

तैलकार० ना० पु० तेली।

तैलंग० ना० पु० कर्णाटक देश वा उसके वासी।

तैलगा० ना० पु० तैलंगदेश के लोग, और अंगरेजों के प्यादे।

तैसा० गु० तिसके समान, अ-अ० ऐसे।

तो० अव्य० तब, तदा, निस्सन्देह, मध्ये, तुम्हे।

तौं० अव्य० तौभी।

तोंद० ना० पु० बड़ा पेट।

तोंदी० ना० स्त्री० नाभि।

तोंदैल० } गु० जिसका पेट बड़ा है।
तोंदैला० }

तोंही० अव्य० त्योंही, उसी समय में।

तोकहं० सर्व्व० तुमको।

तोड़० ना० पु० घूट, नदी की धारा का बल, दही का पानी।

तोड़जोड़० ना० स्त्री० बात बनाना।

तोड़ना० स० क्रि० फोड़ना, करना, भुनाना, टु-कड़ा करना।

तोड़ल० ना० पु० कड़ा, तगोरा हाथ के।

तोड़वाना० स० क्रि० फोड़वाना, टुकड़े कराना, रुपया भुनवाना वा भुनाना।

तोड़ा० ना० पु० चटका, सहस्र रुपयों की थैली, रंजक में आगि लगानेकीरस्सी, पलीती, गलेकी माकर, धनीका टुकड़ा।

तोड़ाना० स० क्रि० तोड़वाना।

तोतला० गु० हकला।

तोतलाना० अ० क्रि० हकलाना।

तोता० ना० पु० शुक, सुआ।

तोपना० स० क्रि० ढंपना, गाड़ना।

तोपाना० स० क्रि० गड़वाना।

तोबड़ा० ना० पु० थैली जिसमें घोड़े को दाना दिया जाता है।

तोमर० ना० पु० बाण, तीर, छन्द विशेष।

तोय० ना० पु० जल, पानी।

तोयनिधि० ना० पु० समुद्र, जलधि।

तोयपिप्पली० ना० स्त्री० जलपीपल।

तोर० ना० पु० दहल विशेष, सर्व्व० तेरा।

तोरण० ना० पु० फूलोंकी माला जो आनन्द वा त्योहारके दिन बांधते हैं।

तोरी० ना० स्त्री० तरकरी विशेष।

तोल० ना० स्त्री० तौल।

तोलक० } ना० पु० वह जो बारह मासे भर तोला० } होताहै वा सोलह मासे भर।

तोष० ना० पु० हर्ष, तृप्ति, धीरज।

तोषक० गु० हर्षदाता, धीरजदाता।

तोषित० गु० हर्षित, धीरजमान्।
तोहिं० सर्व० तुमको।
तौ० अव्य० तब, तो।
तौंसना० अ० क्रि० धूपके कारण से शिथिल होना।
तौल० ना० पु० जाल, परिमाण की क्रिया।
तौलना० स० क्रि० जोखना, परिमाण करना।
तौलवाई० } ना० स्त्री० तौलने का काम या
तौलाई० } पैसा।
तौलाना० स० क्रि० तौलवाना।
तौलिया० } ना० स्त्री० पात्रविशेष।
तौली० }
तोही० अव्य० अभी।
तौहू० अव्य० तथापि।
त्यक्त० गु० जिसको त्यागदिया।
त्याग० ना० पु० छुड़ाव, वैराग्य।
त्यागन० ना० पु० तजन, विराग, छोड़न।
त्यागना० स० क्रि० छोड़ना, तजना।
त्यागी० गु० वैरागी, छोड़ेहुये।
त्याज्य० गु० जो त्यागने के योग्य है।
त्यों० अव्य० तैसे, इस प्रकार, एसही समय में।
त्योंधा० गु० चुधला।
त्योनार० ना० स्त्री० चतुराई, चालाकी।
त्योनारी० ना० स्त्री० स्त्री जो अपना काम बड़ी चतुरता से स्वच्छ बनाती है।
त्योरस० ना० पु० दो वर्ष पहिले।
त्योरी० ना० स्त्री० माथे का सकोड़, भृकुटी।
त्योरीचढ़ाना० अ० क्रि० क्रोधित होना।
त्योहार० ना० पु० पर्व, परबी, आनन्दकादिन।
त्रपा० ना० स्त्री० लाज, हया।
त्रय० गु० ति, ३।
त्रयईर्षा० ना० स्त्री० तीन ईर्षा अर्थात् पुत्र, सम्पत्ति, पत्नी।
त्रयगंगा० ना० स्त्री० तीनगंगा अर्थात् मंदाकिनी, भागीरथी, प्रभावती।
त्रयताप० ना० स्त्री० तीनताप अर्थात् दैहिक, दैविक, भौतिक।
त्रयपावक० ना० पु० तीन अग्नि अर्थात् आह्वनीय, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य अथवा जठरानल, दावानल, बड़वानल।
त्रयरेखा० ना० स्त्री० तीनरेखा अर्थात् त्रिपुंड्रादि, तीन लकीर।
त्रयरोग० ना० पु० तीन रोग अर्थात् बात, पित्त, कफ।
त्रयीतनु० ना० पु० सूर्य।
त्रयोदशी० ना० स्त्री० तेरस।
त्र्यम्बक० ना० पु० श्रीशिवजी।
त्रसित० गु० डरता हुआ, भयवान्।
त्रस्त० गु० कायर, डरपोक, नामर्द।
त्राण० ना० पु० रक्षा, निस्तार, उद्धार।
त्राणकर्त्ता० गु० रक्षक।
त्राणी० गु० त्राणकर्त्ता, रक्षक।
त्रात० गु० बचायागया, रक्षित।
त्राता० रक्षक, पालक।
त्रास० ना० पु० भय, दुःख।
त्रासक० गु० भयदायक, दुःखदाता।
त्रासा० } गु० भयवान्, डराहुआ।
त्रासित० }
त्राह० } अव्य० दयाचाहना का शब्द, पश्चात्ताप का शब्द।
त्राहि० }
त्रि० गु० तीन, ३ परन्तु यह शब्द विशेष के आगे योगहोता है यथा, त्रिभुवन, त्रिपुर।
त्रिंश० गु० तीसवां ३०।
त्रिंशति० गु० तीस, ३०।
त्रिक० } ना० पु० गोखुरू।
त्रिकंटु० }
त्रिकाल० ना० पु० तीनकालअर्थात् भूत, भविष्य, वर्तमान अथवा प्रात काल, मध्याह्न, मध्या
त्रिकुट० ना० पु० सिंघाड़ा।
त्रिकुटा० ना० पु० सोंठ, मिरच, पीपर।
त्रिकूट० ना० पु० पर्वत विशेष जिसपर लंका है।

त्रिकोण० ना० पु० तीनकान, तीनकोनेवाला सिंघाड़ा।

त्रिगुण० ना० पु० तीनबेर, तीनगुण अर्थात् सात्विक, राजस, तामस।

त्रिजग० ना० पु० तीनलोक, तिर्य्यग्।

त्रिजगयोनि० ना० पु० पशु पक्षी आदि।

त्रिज्या० ना० स्त्री० व्यासार्द्ध, आधाविस्तार।

त्रिदन्ता० ना० पु० महामरी।

त्रिदश० ना० पु० देवता, गु० तेरह, १३।

त्रिदशकश्यपस्त्री० ना० स्त्री० तेरहकश्यप की स्त्री अर्थात् दिति, अदिति, कद्रू, विनता, आँधा मा भानुनागेश्वरी, आयातिलका, पक्षन्तिका, परागरता, मधावती, कतकदस्या, म्प्या व त्वमाता १३।

त्रिदोष० ना० पु० तीनदोष अर्थात् कफ, वात और पित्त।

त्रिदशालय० ना० पु० स्वर्ग।

त्रिदिव० ना० पु० स्वर्ग।

त्रिधा० गु० तीनठाम, तीनप्रकार।

त्रिध्वनि० ना० स्त्री० तीनध्वनि अर्थात् मधुर, मंद, गम्भीर।

त्रिनयन० } ना० पु० श्रीसदाशिव।
त्रिनेत्र० }

त्रिनेत्रा० ना० स्त्री० भवानी विशेष।

त्रिपथगा० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।

त्रिपद० ना० पु० } तिपाई।
त्रिपदी० ना० स्त्री० }

त्रिपर्णी० ना० स्त्री० शालपर्णी।

त्रिपादिका० ना० स्त्री० हंसपादी।

त्रिपु० ना० पु० सीसा, धातु विशेष।

त्रिपुरा० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।

त्रिपुटा० ना० स्त्री० हंसपादी।

त्रिपुटी० ना० स्त्री० निसोत।

त्रिपुण्ड्र० ना० पु० शैवमतका तिलक जो आड़ा होता है, वैष्णवमतका तिलक जो ठाढ़ा होताहै।

त्रिपुर० ना० पु० त्रिलोक, दैत्यविशेष।

त्रिपुरारि० ना० पु० श्रीमहादेव जी।

त्रिपुस० ना० पु० खीरा।

त्रिपौलिया० ना० पु० तीनि द्वारका मार्ग।

त्रिफला० ना० पु० तीनफल अर्थात् आंवला, हड़, बहेड़ा।

त्रिभगा० गु० तिरछा खड़ाहोना।

त्रिभंगी० ना० पु० छन्द विशेष श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम।

त्रिभुज० गु० तीन भुजाका, त्रिकोना।

त्रिभुवन० ना० पु० तीन लोक अर्थात् स्वर्ग, मर्त्य, पाताल।

त्रिमुहानी० ना० स्त्री० त्रिवेणी।

त्रिय० } ना० स्त्री० अबला, पत्नी नारी।
त्रिया० }

त्रिलोक० ना० पु० त्रिभुवन, और ऊर्द्ध मध्य अध वा उत्तम मध्यम और नीच।

त्रिलोकी० ना० पु० तीनलोकका सरदार।

त्रिलोह० ना० पु० पीतल।

त्रिशंकु० ना० पु० राजा विशेष।

त्रिशूल० ना० पु० महादेवका अस्त्र विशेष।

त्रिसन्ध्या० ना० स्त्री० तीन सन्ध्या अर्थात् प्रातःकाल, मध्याह्न, सन्ध्या।

त्रिसन्ध्यास्वरूप० ना० पु० रक्त,शुक्ल, श्याम

त्रिसोता० } ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
त्रिस्रोता० }

त्रुटि० ना० स्त्री० टूट, न्यूनता।

त्रेता० ना० पु० युग विशेष।

त्रैराशिक० गु० तीनराशि का गणित।

त्रोटक० ना० पु० छन्द विशेष।

त्रोण० ना० पु० तूण, तरकश।

त्व० सर्व० तू।

त्वक्० ना० स्त्री० खाल, स्पर्शेन्द्रिय, छाल।

त्वचा० ना० स्त्री० छिलका, वक्कला, छाल

त्वची० ना० पु० वास, गु० त्वचाधारी।

त्वदंघ्रि० ना० पु० तुम्हारे चरण।

त्वदीय० सर्व्व० तुम्हारी, रामायणे यथा (त्वदीयभक्तिसंयुतं)।
त्वरा० ना० स्त्री० उतावली।

[थ]

थई० ना० स्त्री० वस्त्रादि का ढेर।
थंब० } थंभा० } थंभ० } ना० पु० खम्भ, थूनी, स्तम्भ।
थंभना० अ० क्रि० ठहरना, रुकना, संभलना।
थक० ना० पु० थका।
थकथक० गु० लथपथ।
थकना० अ० क्रि० माँदा होना, हारना।
थका० गु० माँदा, हारा।
थकाना० स० क्रि० माँदा करना, हराना।
थकित० गु० थका, जो रुकगया, अचम्भित।
थक्का० ना० पु० थकान।
थन० ना० पु० गौ आदि का स्तन।
थनी० ना० स्त्री० घोड़े का दोष विशेष।
थनैला० ना० पु० थनका रोगविशेष।
थनेसरी० ना० पु० कुरुक्षेत्र के ब्राह्मण।
थपक० ना० पु० थाप।
थपड़ा० ना० पु० थप्पड़, चपेटा।
थपड़ी० गौ० स्त्री० ताली।
थपना० स० क्रि० स्थापना, बैठाना, अ० क्रि० स्थापित होना, बैठजाना।
थपा० गु० स्थापित, बैठायाहुआ।
थपाना० स० क्रि० स्थापित कराना, बैठाना।
थपेड़ा० } थप्पड़० } ना० पु० चपेटा।
थमना० अ० क्रि० रुकना।
थम्थना० } थंभना० } अ० क्रि० रुकना।
थर० ना० पु० सिंह, और शेरका खोह।
थरथर० गु० कम्पा।
थरथराना० अ० क्रि० कांपना, कम्पाना।
थरथराहट० } थरथरी० } ना० स्त्री० कपकपी, कम्पाहट।
थरहरना० } थरहराना० } थरोना० } अ० क्रि० कांपना, कम्पना, हलहलाना।
थल० ना० पु० भूमि, स्थल।
थलकना० अ० क्रि० धड़कना, तलपना।
थलथलकरना० } थलथलाना० } अ० क्रि० हिलना, यथा स्थूल मनुष्य का मांस हिलता है।
थलचर० } थलचारी० } गु० मनुष्यादि।
थलिया० ना० स्त्री० भोजन करनेका पीतलादि का पात्र।
थली० ना० स्त्री० घर, पांडर।
थवई० ना० पु० राज, मीमार, घरकारी।
थहराना० अ० क्रि० कांपना।
थांग० ना० स्त्री० चोरों की मांदि।
थांगी० ना० पु० चोर, धनिक।
थांभ० ना० पु० स्तम्भ।
थांमना० स० क्रि० टेकना, थाकना, अटकाना, रोकना, सहायता करना।
थांवला० ना० पु० वृक्ष आदि का थाला।
थाकना० अ० क्रि० थकना।
थाका० गु० थका।
थाती० } थायी० } ना० स्त्री० धरोहर, अमानत, सौंपा।
थान० ना० सारा कपड़ा, अश्वादि के रहने का स्थान, मुद्रा, कद, मकान, ठिकाना।
थाना० ना० पु० रक्षकों का स्थान, बांसों का ढेर।
थानी० ना० पु० स्थान का स्वामी, धांगी।
थाप० ना० स्त्री० धौल, थप्पड़, पशु को पांव, मर्याद, बैठक।
थापना० स० क्रि० थोपना, धौलियाना, ना० पु० व्यवहारविशेष स्थापन करना।

थापा० ना० पु० पशुके पावका चिह्न, थपा।
थापित० गु० बैठायागया, स्थापित, नियत भया, मुकर्रर हुआ।
थापी० न० स्त्री० थापने का शब्द, काठकी वस्तु विशेष जिससे छत पीटते हैं।
थाम० ना० पु० स्तम्भ, थूनी।
थामना० स० क्रि० रोकना, पकड़ना।
थार०, थाल० } ना० पु० बड़ी थाली।
थाला० ना० पु० थावला, थाल।
थाली० ना० स्त्री० भोजन करने का पात्रविशेष।
थावर० ना० पु० स्थावर, वृक्षादि, अचल।
थाह० ना० स्त्री० नदी की तली, नदी में वह स्थान जहां पैदल उतर जावें।
थाहा० ना० पु० नदीका स्थान जो गहिरा न हो।
थाही० ना० स्त्री० थाहपना गु० जो गहरी न हो।
थिति० ना० स्त्री० स्थिति, थिरता, पालन।
थिर० गु० स्थिर, अचल कायम।
थिरकना० अ० क्रि० चमत्कार करके नाचना।
थिरकाना० स० क्रि० चमत्कार से नचाना।
थिरकी० ना० स्त्री० चमत्कार, घुमाव।
थिरता० ना० स्त्री०, थिरत्व० ना० पु० } स्थिरता, अचलता।
थिरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
थिराना० स० क्रि० बैठाना, ठहराना, अ० क्रि० बैठना, ठहरना, पानी की मिट्टी का बैठजाना।
थीर० गु० सुस्थित, स्थिर, मन्दा।
थुकथुकाना० अ० क्रि० कुवासनादि घिनकी वस्तु देखकर थूकना या कुदृष्टि दूर करने के लिये थूकना।
थुकाना० स० क्रि० थूक गिरवाना और निन्दा कराना।
थुथुकारना० स० क्रि० तुच्छ करके किसको बाहर करना।
थुथुनी० ना० स्त्री० शूकरादि का मुख।
थुथाना० स० क्रि० भौंहें टेढ़ी करना।
थूक० ना० पु० मुखमें का पानी।
थूकना० स० क्रि० मुखमें से पानी फेंकना।
थूणी० ना० स्त्री० थूनी।
थूतड़ा० ना० पु०, थूथन० ना० पु०, थूथना० ना० पु०, थूथनी० ना० स्त्री० } शूकरादि का मुख।
थूनी० ना० स्त्री० थरन, टेकन।
थूहर० ना० पु० वृक्षविशेष।
थेईथेई० ना० स्त्री० चहलपहल।
थेगली० ना० स्त्री० कपड़े में जोड़, पैबन्द।
थेथा० ना० पु० नग।
थैला० ना० पु०, थैलिया० ना० स्त्री०, थैली० ना० स्त्री० } बटुआ, गुलथियान।
थोक० ना० पु० समूह, ढेर, परभाग, टोला, महल्ला।
थोड़० ना० पु० फले केले के गर्भा।
थोड़ा० गु० अल्प, कम।
थोथला० गु० मोना, मोण।
थोथा० ना० पु० औषधिविशेष, फलरहित, गु० छूछा, पोपला, मदमूरत, कुम्भड़ा।
थोप० ना० पु० पालकी के बास के अन्त व भूषण, आर।
थोपना० स० क्रि० टेकना, छोपना, गाजना, बटोरना।
थोपियाना० अ० क्रि० थुदियाना, झिरझिराना
थोपी० ना० स्त्री० थप्पा।
थोब०, थोम० } ना० स्त्री० खदी का टेकन
थोहर० ना० पु० थूहर।
थौना० ना० पु० गौने के पीछे स्त्री की विदा।

[द]

द० अव्य० यह अक्षर जब शब्द के अन्त में

आता है तब उसका अर्थ देनेहारा होजाता है यथा सुखद अर्थात् सुख देनेहारा।

दई० ना० पु० देव, भगवान्, ब्रह्मा, स्त्री, मिठाई विशेष।

दंश० ना० पु० वन की मक्खी, दांत।

दंशन० ना० पु० दांतों से काटन।

दंष्ट्री० ना० पु० शूकर, सर्प।

दंस० ना० पु० कुत्ता, सिंह, डास।

दखन० ना० पु० दक्षिण।

दगड़० ना० पु० धक्का, टका, उंदा, राह।

दगड़ा० ना० पु० पैंडा।

दगड़ाना० स० क्रि० भलाना, धोकाना, डग-राना।

दगदगा० गु० चमकीला।

दगदगाना० अ० क्रि० चमकना, चहकना, तम तमाना।

दगदगाहट० ना० स्त्री० चमक।

दगधना० स० क्रि० जलाना, छेड़ना, सताना, डागना, भुधकारना।

दगला० ना० पु० रुई भरा अंगरखा।

दग्ध० गु० जो जलगया।

दग्धा० गु० जला, तिथिविशेष, वारविशेष, मास युक्त तिथि।

दंगल० ना० पु० चोरीविशेष, बहुतात।

दंगा० ना० पु० बखेड़ा, रौला।

दंगैत० गु० रौला या बखेड़ा करनेहारा।

दटना० अ० क्रि० अड़ना, सामना करना।

दण्ड० ना० पु० लाठी, शासन, डाट, घड़ी, छु-मैती, जुर्माना।

दण्डक० ना० पु० राजाविशेष, गु० दण्डकर्ता।

दण्डधर०
दण्डधारी० } ना० पु० यमराज, गु० दण्ड बांधनेहारा।

दण्डमान० गु० दुःखदाता, दण्डदाता, ना० पु० यमराज।

दण्डवत्० ना० स्त्री० दण्ड के समान पड़के प्रणाम करना।

दण्डादण्डी० ना० पु० आपस में लाठीसे लड़ना।

दण्डायमान० गु० पु० दण्डाकी नाई खड़ा।

दण्डित० गु० दण्ड दियागया, सताया गया, पीड़ित, शिक्षा कियागया।

दण्डी० ना० पु० तपेश्वरी, गु० दुःखरूपी, डाड़ी।

दण्ड्य० गु० दण्ड देनेके योग्य।

दतवन०
दतून० } ना० पु० दन्तधावन, मिसवाक।

दतूना० ना० पु० मोगरीविशेष।

दतूली० ना० स्त्री० छोटे २ दांत।

दतौन० ना० पु० दतून।

दत्त० गु० जो दियागया।

दत्तात्रेय० ना० पु० हरि अवतार, मुनिविशेष।

ददरीक्षेत्र० ना० पु० भृगुमुनि का स्थान पटना के पास है।

ददियात०
ददियाला० } ना० पु० दादाकाघर, पुरखे।

ददोरा० ना० पु० मच्छड़ आदि के काटने की सूजन।

दद्रु० ना० पु० दादरोग।

दधि० ना० पु० दही, समुद्र।

दधिकांदो० ना० पु० जन्माष्टमी के दूसरे दिन का पर्व्वानन्द।

दधिमुख० ना० पु० लड़का बहुत कम उमर बाल्य, वानरविशेष जो रामदल में था।

दधिरिपु० ना० पु० अगस्त्यमुनि।

दधिबल० ना० पु० सुग्रीव का पुत्रविशेष।

दधिसुत० ना० पु० चन्द्रमा आदिक।

दधीचि० ना० पु० मुख्यराजा, मुनिविशेष।

दनुज० ना० पु० दैत्य, राक्षस।

दनुजपति०
दनुजराज०
दनुजाधिप० } ना० पु० दैत्योंका राजा।

दनुजारि० ना० पु० देवता, श्रीनारायण।

दनुजेश०
दनुजेश्वर० } ना० पु० दैत्यों का राजा।

दन्त॰ ना॰ पु॰ दांत, दशन ।
दन्तकाष्ठ॰ ना॰ पु॰ दतून करना, दतून ।
दन्तधावनी॰ ना॰ पु॰ धनिया ।
दन्तबीज॰ ना॰ पु॰ अनार ।
दन्तशठ॰ ना॰ पु॰ खट्टी औषधि, जम्बीरी ।
दन्तशूल॰ ना॰ पु॰ दांतोंकी पीड़ा ।
दन्तिका॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ी अजवायन ।
दन्ती॰ ना॰ पु॰ हाथी ।
दन्तीफल॰ ना॰ पु॰ पिस्ता ।
दन्तुर॰ } गु॰ जिसके दांत होठ से न ढपें वा
दन्तैना॰ } जिस जन्तु आदि के बड़े २ दांतहों
दन्तैल॰ } हबदा, हबिला ।
दन्त्य॰ गु॰ जिन अक्षरों का उच्चारण दाँतसे हो ता है यथा, त थ द ध न ल स ।
दन्दनाना॰ अ॰ क्रि॰ विराजना, निडर बैठना ।
दन्ना॰ ना॰ पु॰ इन्द्रिय, लिंग, गु॰ निडर ।
दन्नापेल॰ गु॰ व्यभिचारी, अतिनिरशंक ।
दपट॰ ना॰ स्त्री॰ दौड़, झपट, डाट ।
दपटना॰ अ॰ क्रि॰ दौड़ना, डाटना ।
दपटाना॰ स॰ क्रि॰ दौड़ाना, डाट दिखाना ।
दबकना॰ अ॰ क्रि॰ छिपना, घात में बैठना ।
दबकर॰ ना॰ स्त्री॰ कल ।
दबकाना॰ स॰ क्रि॰ धमकाना, डाटना, लुकाना ।
दबकी॰ ना॰ स्त्री॰ दाव, छिपकी ।
दबकीला॰ } गु॰ धुमड़, द्रवनेहारा ।
दबकैल॰ }
दबंग॰ } गु॰ सुशील, सुढंगा ।
दबंगा॰ }
दबना॰ अ॰ क्रि॰ नीचे होना, कुचिलना, कानि करना, मानना ।
दबा॰ ना॰ पु॰ दाव, घाव ।
दबाना॰ स॰ क्रि॰ दाबना, निचोड़ना, डाटना ।
दबाव॰ ना॰ पु॰ पराक्रम, आधीनता, भय, अदब ।
दबीला॰ ना॰ पु॰ औषधिविशेष, बैठा, चपू ।

दबेपांव॰ अव्य॰ हौले, धीमे ।
दबेल॰ ना॰ पु॰ प्रजा, आधीन ।
दबोचना॰ स॰ क्रि॰ दबायडालना ।
दम॰ ना॰ पु॰ मनको निज वशरखना अर्थात् इन्द्रियों को रोकना, दौना सुगन्धि ।
दमक॰ ना॰ स्त्री॰ चमक, दहक, झलक, दाह ।
दमकना॰ अ॰ क्रि॰ झलकना, चमकना ।
दमड़ा॰ ना॰ पु॰ सम्पत्ति, दौलत ।
दमड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ पैसे का आठवां भाग ।
दमदमाना॰ स॰ क्रि॰ हिलाना ।
दमन॰ ना॰ पु॰ सुरमा, नागदौन, पुष्प विशेष, अधीनता, नाशन, दमयन्ती ।
दमनीय॰ गु॰ दमन के योग्य, दमन कारक, दा बनेहारा, रामायणे, (कुँवरि मनोहरि विजय बड़ि कीरति अति कमनीय, पावनहार - विरंचि जनु रच्यो न धनु दमनीय) ।
दमयन्ती॰ ना॰ स्त्री॰ राजा नल की भार्या ।
दमाना॰ स॰ क्रि॰ लचकाना, सिकुराना, खुदवाना ।
दमामा॰ ना॰ पु॰ डंका, धौंसा ।
दम्पति॰ } ना॰ पु॰ स्त्री पुरुष ।
दम्पती॰ }
दम्भ॰ ना॰ पु॰ अहङ्कार, घमण्ड, पाखण्ड, छल, बखेर ।
दम्भी॰ गु॰ अहङ्कारी घमण्डी, पाखण्डी, छली ।
दम्य॰ गु॰ शास्य, ना॰ पु॰ बैला ।
दया॰ ना॰ स्त्री॰ कृपा, करुणा, दान, विनय ।
दयायुक्त॰ }
दयालु॰ }
दयावन्त॰ } गु॰ कृपावन्त, मिलनसार, दाता, मायावन्त, मेहरबान ।
दयावान्॰ }
दयाशील॰ }
दर॰ ना॰ पु॰ मोल, भाव, शाल, छेद, डर, पीड़ा ।
दरकना॰ अ॰ क्रि॰ चिरजाना, फटना ।
दरका॰ ना॰ पु॰ दरार, फटन ।
दरकाना॰ स॰ क्रि॰ फाड़ना, चीरना ।

दरकी० गु० स्त्री० फटी।
दरदर० ना० पु० ईंगुर, सिंदूर।
दरदरा० गु० अधकुटा, अधपिसा।
दरश० } ना० पु० दर्श, देखना।
दरस० }
दरही० ना० स्त्री० मछली विशेष।
दरांता० ना० स्त्री० हँसिया, कन्नी।
दरार० } ना० पु० दरज, चीर।
दरारा० }
दरि० ना० स्त्री० मोल भाव।
दरिद्र० ना० पु० } दीनता, कंगालता, निर्धनता।
दरिद्रता० स्त्री० }
दरिद्री० गु० दीन, कंगाल।
दरी० ना० स्त्री० खोह, गुफा, बिछौना विशेष।
दरीभृत्० ना० पु० पर्वत, पहाड़।
दरीन० ना० स्त्री० दरीका बहुवचन।
दर्दुर० ना० पु० मेंढक।
दर्प० ना० पु० अहङ्कार, अभिमान, मान।
दर्पक० ना० पु० कामदेव।
दर्पण० ना० पु० आदर्श, मुकुर, शीशा।
दर्पणी० ना० स्त्री० दर्पणी।
दर्पणीय० गु० सुन्दर, दिखनौट, सुथरा, अच्छा।
दर्पणोदर० ना० पु० चौरस दर्पण का पेट।
दर्पी० गु० अभिमानी, मानी।
दर्भ० ना० पु० कुश, घास।
दर्रा० ना० पु० दरारा।
दर्राना० अ० क्रि० निडर, आगे बढ़ना, बेधड़क आगे चलजाना।
दर्विका० ना० स्त्री० बोर्मी।
दर्वी० ना० स्त्री० कर्छी।
दर्वीकार० ना० पु० साप।
दर्श० ना० पु० दृष्टि, परिवा, प्रतिपदा।
दर्शक० गु० दिखनौट, देखनेवाला।
दर्शकता० ना० स्त्री० दर्शन, दिखाव।
दर्शन० ना० पु० दृष्टि, भेंट।
दर्शनधारी० गु० सुन्दर।

दर्शनी० ना० स्त्री० हुण्डी विशेष जिसको देखते ही रुपया दिया जावे।
दर्शी० गु० देखनेवाला।
दल० ना० पु० पत्ता, बड़ी फौज, ढेर, मोरपख।
दलक० ना० स्त्री० झलक।
दलकना० अ० क्रि० झलकना।
दलदल० ना० पु० धसान, पांक, कीचड़।
दलदलाना० अ० क्रि० कांपना, थरथराना।
दलदलाहट० ना० स्त्री० थरथराहट, कम्प।
दलन० ना० पु० नाशन, दो टूक करनेका काम विशेष।
दलना० स० क्रि० दो टूक करना।
दलबादल० ना० पु० मेघों का समूह।
दलवाना० स० क्रि० दो टूक कराना।
दलवैया० ना० पु० दलनेहारा।
दलाना० स० क्रि० दलवाना।
दलिद्र० ना० पु० } दरिद्र।
दलिद्रता० स्त्री० }
दलिद्री० गु० दरिद्री।
दलित० गु० दो टूक किया, [illegible]।
दलिया० ना० पु० अधकुटा, [illegible]।
दलिहन० ना० पु० जो अन्न दल के काम आता है यथा उर्द आदि।
दली० गु० दो टूक का [illegible], ना० पु० [illegible]।
दलैना० ना० पु० } [illegible]।
दलैनी० ना० स्त्री० }
दव० ना० पु० वन की आग, [illegible]।
दवाग्नि० }
दावाग्नि० } ना० पु० वन की अग्नि।
दवानल० }
दवारि० }
दश० गु० दस, १०।
दशकण्ठ० ना० पु० रावण।
दशगात्र० ना० पु० मृतक कर्म विशेष।
दशदिक्पाल० ना० पु० दश दिक्पाल अर्थात्

इन्द्र, १ अग्नि, २ यम, ३ नैर्ऋति, ४ वरुण, ५ वायु, ६ कुबेर, ७ ईशान, ८ ब्रह्मा, ९ अनन्त, १०।
दशदिशा० } दशदिशें० } ना० स्त्री० दशाओर अर्थात् पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, अध, ऊर्ध्व, १०।
दशन० ना० पु० दांत।
दशम० गु० दसवां।
दशमांश० ना० पु० दसवां भाग।
दशमी० स्त्री० दसवीं तिथि।
दशरथ० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी के पिता।
दशहरा० ना० पु० ज्येष्ठ वा आश्विन शुक्लपक्ष की दसवीं तिथि।
दशा० ना० स्त्री० अवस्था, व्यवस्था, गति।
दशांश० ना० पु० दसवांभाग, टुंड।
दशांगुल० ना० पु० फलविशेष अर्थात् खरबूजा।
दश० गु० दस, १०।
दसन० ना० पु० दशन, दांत।
दसम० गु० दशम, दसवां।
दसरथ० ना० पु० दशरथ।
दसहरा० ना० पु० दशहरा।
दसी० ना० स्त्री० सर्प, दशा, साड़ी की कर।
दसीला० गु० ग्रुलकी दशा में रहनेहारा।
दसोखा० ना० पु० पलका भाड़ना।
दसोंद्वार० ना० पु० शरीर के दशद्वार अर्थात् आंख, कान, नाक, मुख, लिंग, गुदा, आदि, परन्तु आदिरहित केवल नवद्वार ठीक हैं।
दसौंधी० ना० पु० भाट बरदेत।
दस्यु० ना० पु० वैर, चोर।
दस्युवृत्ति० ना० स्त्री० चोरी।
दह० ना० पु० गहराव।
दहक० ना० स्त्री० दाह, चमक।
दहकना० अ० क्रि० जलना, पछिताना, सत्यानाश होना।
दहकाना० स० क्रि० जलाना, बिगाड़ना, पश्चातापकरानी, गर्माना।
दहन० ना० पु० अग्नि।
दहन० } दहना० } दहनो० } अ० क्रि० जलना, बरना।
दहलना० अ० क्रि० दबना, कांपना।
दहलाना० स० क्रि० दबाना, कम्पाना।
दहसेरा० ना० पु० दससेर का तौल।
दहा० गु० जलगया वा जलाहुआ।
दहाड़ना० अ० क्रि० गर्जना, यथा शेरकाशब्द।
दहाना० स० क्रि० जलाना।
दहिना० गु० दक्षिण, सीधा, सहायक।
दही० ना० पु० गोरस, दधि, गु० जलगई।
दहेंड़ी० ना० स्त्री० दहीकी हांडी।
दहेड़० ना० पु० पक्षी विशेष।
दहेल० ना० पु० पक्षी विशेष।
दहो० ना० पु० दही, स० क्रि० जलाया।
दक्ष० ना० पु० निपुण, चतुर, ब्रह्मा का पुत्र जिसको ब्रह्माने दक्षिणांगुष्ठसे उत्पन्न किया था, स्मृति विशेष।
दक्षन० ना० पु० दक्षका बहुवचन भाषा में प्रचलित है यथा देव देवन और लोक लोकन आदि।
दक्षसुत० ना० पु० प्रचेता।
दक्षसुता० ना० स्त्री० दक्षकी कन्याविशेष, सती।
दक्षिण० गु० खरा, उचित, सूर्य्य का वामभाग दहिना, दखिन।
दक्षिणअक्षांश० ना० पु० रेखाभूमि के दक्षिण केन्द्रतक जो माप है।
दक्षिणकेंद्र० ना० पु० जिसके चारोंओर हिम समुद्र है वा जिसको हिन्दू शास्त्र बड़वानल कहते हैं।
दक्षिणखण्ड० ना० पु० विन्ध्याचल के दक्षिण का देश विशेष।
दक्षिणा० ना० स्त्री० कर्म करवाने के निमित्त ब्राह्मण को दान देना, पुरोहित का वेतन।

दक्षिणाग्नि० ना० पु० अग्नि विशेष।
दक्षिणायन० ना० पु० कर्कसंक्रान्ति से धनु संक्रान्ति तक का काल।
दक्षिणीय० गु० दक्षिण देशके मनुष्यादि।
दा० अव्य० पदान्त में दाताका अर्थ सूचक यथा सुखदा अर्थात् सुखदाता।
दाई० ना० स्त्री० दूध पिलाने हारी।
दाऊ० ना० पु० बड़ा चचा, श्रीबलदेवजी का एक नाम।
दांड़० ना० पु० दण्ड, चम्पू।
दांड़ा० ना० पु० रीति, धूरा, सिवाना।
दांड़ामेंड़ा० ना० पु० सिवाना, छोर, धूरा।
दांड़ी० ना० पु० नाविक, नाव चलाने हारा, ना० स्त्री० दण्डी तुलाआदि की।
दांत० ना० पु० दन्त, दशन।
दांतन० ना० पु० दंतधावन, काष्ठ, दतून।
दांतपीसना० स० क्रि० किचकिचाना।
दांताकिलकिल० ना० स्त्री० झगड़ा, बखेड़ा।
दांती० ना० स्त्री० आराके दांत।
दांव० ना० पु० घात, अवसर, होड़, बारी।
दाख० ना० पु० अंगूर, मुनैका।
दाग० ना० पु० चिह्न यह शब्द फारसीका है।
दागना० स० क्रि० चिह्नकरना, छोड़ना यह शब्द यामिनी भाषा का है।
दाड़िम० ना० पु० अनार।
दाढ़ी० ना० स्त्री० ठोढ़ीपरके बाल।
दातन० ना० पु० दतून।
दातव्य० गु० देनेकेयोग्य, दातापन।
दातव्यता० ना० स्त्री० दातापन, देनेहारी।
दाता० गु० पु० धर्मात्मा, देनेहारा, दयालु।
दातार० गु० दाता।
दात्र० ना० पु० दरांती विशेष।
दाद० ना० पु० रोग विशेष दद्रु।
दादमर्दन० ना० दद्रु मर्दन, औषधि विशेष।
दादा० ना० पु० पिताका पिता, बड़ा भाई।
दादी० ना० स्त्री० पिताकी माता।
दादु० ना० पु० दद्रुरोग विशेष दद्रु।
दादुर० ना० पु० मेंडक।
दादू० ना० पु० महापुरुष विशेष जिसने अपना पन्थ चलाया जो जातिका पिंजना था।
दाधना० स० क्रि० दग्धना।
दान० ना० पु० पुण्यार्थ धनका त्याग, भूर, खैरात।
दानपत्र० ना० पु० पुण्यार्थ धनादि का दानपत्र, माफीनामा।
दानव० ना० पु० दैत्य, असुर।
दानवारि० ना० पु० देवता, श्रीविष्णुजी।
दाना० ना० पु० अश्वादिके खाने का अन्न।
दानी० गु० दाता, सखी।
दाप० ना० पु० क्रोध, अभिमान।
दापक० गु० क्रोधी अभिमानी।
दापना० स० क्रि० दबाना।
दाम० ना० पु० रुपया, पैसा, ना० स्त्री० माला, रस्सी, गु० पैसे का चौबीसवां भाग, मोल।
दामवती० ना० स्त्री० माला।
दामासाही० ना० स्त्री० यथार्थ भाग की कर्तव्यता।
दामिनी० ना० स्त्री० बिजुली, कौंधा।
दामी० ना० स्त्री० यथार्थ बिहारी।
दामोदर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक नाम, बर्द्धमान देशका एक नद, गु० जिसके पेटतक माला हो।
दाम्भिक० गु० दम्भी, पाखण्डी, अभिमानी।
दाय० ना० पु० पैतृक धन।
दायक० ना० पु० देनेहारा।
दायजा० ना० पु० ब्याहका दान, यौतुक।
दाया० ना० स्त्री० दाया, कृपा।
दारु० ना० स्त्री० दारा, काष्ठ, दारू।
दारचीनी० ना० स्त्री० काष्ठ विशेष।
दारा० ना० स्त्री० स्त्री, पत्नी, जोरू।
दारिका० ना० स्त्री० लड़की, लड़की।

दीधिति० ना० स्त्री० किरण।
दीन० गु० कंगाल, पराधीन, दुखी।
दीनता० } ना० स्त्री० दरिद्रता आधीनता,
दीनताई० } गरीबी।
दीनदयालु० गु० दीनप्रतिपालक, गरीबपरवर, दीनोंपर दया करनेहारा।
दीनपाल० } गु० शरणदयालु, दीनों का
दीनप्रतिपालक० } पालन हारा।
दीनबन्धु० }
दीना० स० क्रि० दना दानमहा।
दीनानाथ० गु० दीनपाल दीनदयालु।
दीप० ना० पु० दिया, चिराग द्वीप।
दीपक० ना० पु० दीप दिया, राग विशेष, [redacted] जवारा।
दीपदान० ना० पु० दिया जलाना।
दीपनी० ना० स्त्री० वपनी।
दीपनीका० } ना० स्त्री० अजवाइन
दीप्य० }
दीपमाला० } ना० स्त्री० दिवाली।
दीपमालिका० }
दीपसुत० ना० पु० काजल।
दीपि० स० क्रि० दीप्त करना।
दीपिका० ना० स्त्री० दीपकका प्रकाश।
दीपित० गु० जलादिया गया।
दीप्त० गु० प्रज्वलित, प्रकाशित।
दीप्ति० ना० स्त्री० चमक, प्रकाश।
दीर्घ० गु० लम्बा गुरु द्विमात्रिक अक्षर।
दीर्घक० ना० पु० स्वतनीरा सफेदमारा।
दीर्घकालक० ना० पु० अकोल।
दीर्घजघ० ना० पु० ऊंट।
दीर्घजिह्वा० ना० स्त्री० राजा विरोचन की कन्या।
दीर्घदण्ड० ना० पु० अरण्ड एरण्ड, रण्ड।
दीर्घदर्शी० गु० अग्रसोची, दूरदर्शी।
दीर्घपत्रक० ना० पु० लहसुन पुनर्नवा।
दीर्घपत्रा० ना० स्त्री० शिरपान।
दीर्घपुष्पक० ना० पु० मदार, आक।
दीर्घपृष्ठ० ना० पु० सांप।
दीर्घमूल० ना० पु० जवासा शालपर्णी।
दीर्घमूलक० ना० पु० बिधारा।
दीर्घसूत्री० ना० पु० जो विलम्बसे कामकरै।
दीवट० ना० स्त्री० दीपक रखने का आधार।
दीवली० ना० स्त्री० छोटा दिया।
दीवा० ना० पु० दीपक दिया।
दीसना० स० क्रि० देखना।
दीखा० स० क्रि० भू० दखा देखना।
दीह० ना० पु० बड़ा, रामचन्द्रिकायांयथा (दीह दीह दिग्गजन के केशव मनहुंकुमार,दीन्हे राजा दशरथहि दिग्पालन उपहार)।
दीक्षा० ना० स्त्री० मन्त्र का ग्रहण उपदेश।
दीक्षित० गु० दीक्षा दियागया, ना० पु० ब्राह्मण जाति विशेष।
दु० गु० दो २।
दु अव्य० शब्दका आदि का सूचक।
दु कर्णी० ना० स्त्री० किर
दु ख० ना० पु० पीड़ा क
दु खड़ा० ना० पु० आप
दु खदाई० गु० दु खदा
दु खदायि० गु० दु ख द
दु खना० अ० क्रि० पीड़ा
दु खाना० स० क्रि० दु ख
दु खित० }
दु खिया० }
दु खियारा० } गु० पीड़ित, ह
दु खियारी० } कंगाल।
दु खी० }
दु शील० ~
दु प्रधर्ष०
दु समय० ना
दु स्पर्श० ना
दुकर० ना० पु



दुकान॰ ना॰ पु॰ दोनों कान, हाट।
दुकाल॰ ना॰ पु॰ विपत्तकाल, दुर्भिक्ष।
दुकूल॰ ना॰ पु॰ रेशमी वस्त्र विशेष, दोनों तट।
दुख॰ ना॰ पु॰ दुःख।
दुखद॰ | दुखदा॰ | दुखदाई॰ | दुखदाता॰ } गु॰ दुखदाई, कष्टदेनवाला।
दुखत्रय॰ ना॰ पु॰ तीन दुःख अर्थात् दैविक, दैहिक, भौतिक, अथवा कफ, पित्त और वात।
दुखारी॰ | दुखित॰ | दुखिया॰ | दुखियारा॰ | दुखियारी॰ | दुखी॰ } गु॰ दुखिया, पीड़ित।
दुखेन॰ ना॰ पु॰ दुःखपुन, दुःख करके।
दुगई॰ ना॰ स्त्री॰ चिपारा, कैंची जो छप्पर में लगाते हैं।
दुगन॰ | दुगना॰ } गु॰ द्विगुण, दोहरा, दूना।
दुग्ध॰ ना॰ पु॰ दूध।
दुग्धिका॰ ना॰ स्त्री॰ दूधिया, पौधा।
दुग्धिनी॰ ना॰ स्त्री॰ कड़ई तोंबी।
दुग्धी॰ ना॰ स्त्री॰ दूधिया पौधा, सेहुंड।
दुचित॰ | दुचिता॰ } गु॰ जिसका मन दो ओर लगा हो।
दुचिताई॰ ना॰ स्त्री॰ चिंता, दुबिधा, भ्रम।
दुचिता॰ गु॰ दुचित।
दुत॰ अव्य॰ दूर।
दुतकार॰ ना॰ पु॰ अनादर, झिड़क।
दुतकारना॰ स॰ क्रि॰ त्रासना, कुत्तेको दुरना।
दुतफारी॰ ना॰ स्त्री॰ मार, ताड़न।
दुताना॰ स॰ क्रि॰ दबाना, डाटना।
दुति॰ ना॰ स्त्री॰ चटक, भड़क, सुन्दरता।
दुतिवन्त॰ | दुतिवान्॰ } ना॰ गु॰ भड़कीला, चमकदार, सुन्दर, पुन चन्द्रादि यथाहि, राम चरित्रमानस यथा (दुतिवन्त को विपदा अति कीन्ही, धरणी कहु इन्द्र बधू नहि दीन्ही)।
दुदही॰ | दुद्धी॰ } ना॰ स्त्री॰ घास वे पौधा विशेष।
दुधा॰ ना॰ स्त्री॰ दोजगह, दोप्रकार।
दुधार॰ | दुधारा॰ } गु॰ दूध देनहार, दो धार का।
दुधैल॰ गु॰ दूध देनेहारी।
दुन्दुभि॰ ना॰ स्त्री॰ नकार, निशान, दैत्य विशेष जिसको बालि ने मारा था।
दुपट्टा॰ ना॰ पु॰ चादर का वस्त्र विशेष।
दुपद॰ ना॰ पु॰ दो पाँववाला अर्थात् मनुष्य
दुपहरिया॰ ना॰ स्त्री॰ पुष्प विशेष।
दुबधा॰ ना॰ स्त्री॰ सन्देह, अचक।
दुबला॰ गु॰ दुर्बल।
दुबलाई॰ | दुबलापा॰ } ना॰ स्त्री॰ दुर्बलता।
दुबिधा॰ ना॰ स्त्री॰ सन्देह, धमाचे, डर।
दुविधि॰ ना॰ स्त्री॰ दोतरह, दोप्रकार।
दुमुख॰ ना॰ पु॰ राक्षस विशेष, दोमुखवाला।
दुभाव॰ ना॰ पु॰ दुविधा।
दुभाषिया॰ | दुभाषी॰ } गु॰ दो भाषाओं का जाननेहारा
दुर॰ अव्य॰ शब्द के प्रथम में संयोगि अव्यय जिसका अर्थ दुः, कठिन, ना॰ स्त्री॰ बालक भूषण जो कानमें पहिराते हैं।
दुरतिक्रम॰ गु॰ कठिन, दुस्तर।
दुरद॰ ना॰ पु॰ हाथी।
दुरध्वा॰ ना॰ स्त्री॰ कुमार्ग, बुरा राह।
दुरना॰ अ॰ क्रि॰ छुपना, लुकना।
दुरदृष्ट॰ ना॰ पु॰ मन्दभाग्य।
दुरन्त॰ गु॰ अपार, कठिन, अन्तहीन।
दुराचार॰ गु॰ जिसका व्यवहार निंदित है

दुराचारी० गु० जिसका व्यवहार निन्दित है।
दुरात्मा० गु० पापी, दुष्ट।
दुराधर्ष० गु० निडर, अभय, अशक्य।
दुराना० स० क्रि० छुपाना, लुकाना।
दुराराध्य० गु० कष्टसे सेवन के योग्य।
दुरारोह०.ना० पु० ताड़वृक्ष।
दुरालभा० } ना० स्त्री० जवासा।
दुरालम्भा० }
दुराव० ना० पु० छुपाव, छल।
दुराशा० ना० स्त्री० दुर्भिलाषा, दुष्तृष्णा।
दुरित० ना० पु० पाप दोष।
दुरी० ना० स्त्री० खलमें दो पड़ना वा दूआ।
दुरुखा० गु० जिसकी दोनो ओर एकसा हो, यह शब्द फारसी का है।
दुरेफ० ना० पु० भौंरा।
दुर्ग० ना० पु० गढ़, पार, विलम्ब, अगम।
दुर्गति० ना० स्त्री० कुगति, दुरवस्था, नरक, दरिद्रता।
दुर्गन्ध० ना० स्त्री० } दुर्गंधि, नाव, कु
दुर्गन्धि० ना० स्त्री० } वास।
दुर्गन्धा० ना० स्त्री० पियाज, गु० कुवासित।
दुर्गम० गु० अपार, गम्भीर, अगम्य, कठिन।
दुर्गमता० ना० स्त्री० गम्भीरता अौघटता।
दुर्गा० ना० स्त्री० भगवती विशेष।
दुर्गामी० गु० कुगामी कुमार्गी, बदचलन।
दुर्घट० गु० जो कष्ट से होसके, कुघाट, औघट।
दुर्जन० ना० पु० शत्रु, गु० दुष्ट, अपकारी।
दुर्जनता० } ना० स्त्री० शत्रुता, द्रोह,
दुर्जनताई० } दुष्टता।
दुर्जय० गु० बलवान् शत्रु, जो पराजय न होसके।
दुर्दशा० ना० स्त्री० दुर्गति, विपत्ति।
दुर्नाम० ना० पु० बदनाम, अपयश।
दुर्नामी० गु० बदनाम अपयशी, अपकीर्ति।
दुर्नाद० ना० पु० रावस विशेष, कुत्सितनाद।
दुर्नीति० ना० स्त्री० कुचाल, अनीति, अन्याय।
दुर्बल० गु० दुर्बल, निर्बल, असमर्थ
दुर्बलता० ना० स्त्री० निर्बलता, असामर्थ्य
दुर्भगा० गु० अभागिनी स्त्री, जिसका स्वामी प्यार नहीं करता है।
दुर्भाग्य० गु० प्रारब्धहीन, अभागी।
दुर्भाव० ना० पु० बुरास्वभाव।
दुर्भिक्ष० ना० पु० अकाल, काल, कुसमय।
दुर्मति० ना० स्त्री० कुबुद्धि, मूर्खता।
दुर्मद० गु० मस्त, मदगलित मस्त, सिड़ी।
दुर्मनी० ना० स्त्री० दूबघास।
दुर्मुख० ना० पु० नागविशेष वानरों का एक राजा गु० कठोर भाषी।
दुर्मूल्य० गु० महँगा।
दुर्योग० ना० पु० बहुतर बाधकों का समूह कुग्रह गति।
दुर्योधन० ना० पु० राजा, धारवाधीश।
दुर्लभ० गु० जो दुःखसे मिले, अनोखा।
दुर्लक्षण० ना० पु० अशुभ चिह्न।
दुर्वचन० ना० पु० बुरीबात, गाली।
दुर्वर्ण० ना० पु० बुरारूप, कुवर्ण, चांदी।
दुर्वर्णता० ना० स्त्री० कुरूपता, चांदी।
दुर्वाक्य० } ना० पु० बुरीबात, गाली।
दुर्वाच्य० }
दुर्वाद० ना० पु० कुत्सितवार्त्ता, बुरीबातें।
दुर्वासा० ना० पु० मुनिविशेष।
दुर्बुद्धि० ना० स्त्री० मूर्खता, कुबुद्धि, नादानी।
दुर्बुद्धी० गु० नादान, कुबुद्धि, मूर्ख।
दुलकी० ना० स्त्री० कूकर चाल, घोड़ेकी एकप्रकारकी चाल रहवाल।
दुलड़ा ना० पु० } दोलड़ा, दूगुन।
दुलड़ी० ना० स्त्री० }
दुलत्ती० ना० स्त्री० पशुका पिछले पावोंसेमारना।
दुलहा० ना० पु० बर, भरता, दुलहा।
दुलहिन० ना० स्त्री० नईबहू, वधू, बना बनरी।

दुलाई० ना० स्त्री० ओढ़नेका वस्त्र विशेष।
दुलार० ना० पु० प्यार, स्नेह।
दुलारा० ना० पु० } गु०प्यारयुत, प्यारा,
दुलारी० स्त्री० } प्यारा लाडिला,लाडिली
दुवार० ना० पु० द्वार।
दुविद० ना० पु० वानर विशेष।
दुबे० ना० पु० ब्राह्मणजाति विशेष।
दुशाला० ना० पु० पाटवस्त्र विशेष।
दुष्कर० गु० जोकष्टसे कियाजाय।
दुष्कर्म्म० } ना० पु० कुकर्म, पाप।
दुष्कृत० }
दुष्कर्मी० गु० कुकर्मी, पापी।
दुष्ट० गु० बुरा, उत्पाती, नीच, कठिन।
दुष्टता० ना० स्त्री० नीचता, पाप, बुराई।
दुष्टजन्तु० ना० पु० सर्पादि, मूजी जानवर।
दुष्टा० ना० स्त्री० छिनाल, सापिन, पापिन।
दुस्तर० गु० जोतरने के योग्य न होवे, कठिन, अगम्य।
दुस्पर्शा० ना० स्त्री० छोटी कटाई।
दुसह० } गु० जो सहा न जावे, असह्य।
दुस्सह० }
दुहना० स० क्रि० दूधनिकालना, निचोड़ना।
दुहनी० ना० स्त्री० पात्र जिसमें दूधदुहते हैं।
दुहाई०ना० स्त्री० न्यायके लिये पुकार हाय हाय, शपथ, किरिया, कसम।
दुहाईतिहाई० ना० स्त्री० कईबार दुहाईकरना।
दुहाना० स० क्रि० दूध निकलवाना।
दुहार० ना० पु० दूध दाहने वाला।
दुहिता० ना० स्त्री० कन्या, पुत्री।
दुहेला० गु० कठिन, भारी।
दुआ० ना० पु० दोका अङ्क।
दूज० ना० स्त्री० द्वितीया तिथि।
दूजावर० ना० पु० जिसने दो विवाह किये।
दूजा० गु० दूसरा।
दूत० ना० पु० समाचार पहुँचानहारा, सदेसिया, हरकारह, शैतान, पैगम्बर।
दूतता० ना० स्त्री० चालाकी, तोड़फोड़ और दूतका काम।
दूती० ना० स्त्री० कुटनी।
दूध० ना० पु० दुग्ध, गोरस, क्षीर।
दूधिया० गु० दूधवाला, ना० पु० अनेक पौधों का नाम जिनका रस दूध वाला होता है।
दूधों० गु० दूधका, दूधैला, ना० पु० आहार, माडी, दुधिया पौधा।
दूना० गु० द्विगुण, दोहरा।
दूब० ना० स्त्री० दूर्वा, घास विशेष।
दूबर० गु० पतला दुर्बल।
दूबिया० ना० स्त्री० तृण की हरियाई।
दूर० ना० स्त्री० अन्तर, बीच, दूर, व्यवधान, अव्य० परे।
दूरगम० ना० पु० गदहा।
दूरतर० गु० बहुत दूर।
दूरदर्शक० ना० पु० दूरबीन, यन्त्र, गु० दूरका देखने वाला, अग्रसोची।
दूरदर्शी० ना० पु० विवेकी, दूरअंदेश।
दूरदव० ना० पु० गिद्ध।
दूरबीन० ना०स्त्री० दूरकी वस्तु देखने का यन्त्र, गु० दूरका देखन हारा शब्दफारसी का है।
दूरमूल० ना० पु० जवासा।
दूर्वा० ना० स्त्री० तृण, विशेष, दूबघास।
दूषक० गु० दोष लगानेहारा, दूषणकर्त्ता, टोकन वाला, विठोकनेहारा।
दूषण० ना० पु० निशाचर विशेष, दाग।
दूषित० गु० दोष लगायागया, दाग युत।
दूष्य० गु० निंदित, कुत्सित।
दूसरा० गु० दूजा, अन्य।
दृग० ना० पु० नयन, नेत्र, आंख।
दृगञ्चल० ना० पु० नयनकोर, पलककी चाल।
दृढ़० पोढ़ा, अचल, कड़ा, मज़बूत।
दृढ़ता० ना० स्त्री० } पोढ़ाई, पौरुष, पायदारी।
दृढ़त्व० ना० पु० }

दखाना० स० क्रि० पैदा करना।
दृश्य० गु० जो देखने के योग्यहै, जो देखाजाय।
दृष्ट० गु० जो देखागया, प्रकट।
दृष्टिकूट० ना० पु० पहेली।
दृष्टान्त० ना० पु० उपमा उदाहरण, मिसाल।
दृष्टि० ना० स्त्री० दर्शन नजर, दीठि, ख्याल।
दृष्टिगोचर० गु० जो आंख के सामने हो।
दृषद्भेद० ना० पु० पाषाण भेद।
दृषद्गर्भ० ना० पु० पन्ना रत्न।
दृग्गाह० ना० पु० शीशकका बनाहुआघर।
देखना० स० क्रि० नजर दृष्टिकरना निर्णय करना।
देखवैया० ना० पु० देखनहारा
देनलेन० ना० पु० व्यवहार
देना० स० क्रि० दडालना सौंपना।
दमारना० स० क्रि० धकना फकदना।
देय०
दयमान० } गु० देनेके योग्य।
देर०
देरी० } ना० स्त्री० विलम्ब ढील।
देव० ना० पु० देवता मेघ देना।
देवऋषि० ना० पु० देवर्षि नारदमुनि।
देवक० ना० पु० देवकी का पिता देवता गु० देनेहारा।
देवकाष्ठ० ना० पु० चन्दघर।
देवकी० ना० स्त्री० श्रीकृष्ण की माता।
देवकुसुम० ना० स्त्री० लौंग।
देवगरी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
देवगृह० ना० पु० देवालय चौहरा।
देवठान० ना० स्त्री० देवोत्थानी कार्तिकसुदी एकादशी का ये त्योहार होताहै।
देवतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष पारिजात।
देवता० ना० पु० देव सुर फरिश्ता।
देवताड़० ना० पु० देवदाली।
देवदत्त० ना० पु० शङ्खविशेष, गु० जो देवता का दिया हुआहै।

देवदारु० ना० पु० वृक्ष वा काठ विशेष।
देवधुनि० ना० स्त्री० आकाशगङ्गा।
देवनागरी० ना० स्त्री० हिन्दी के यथार्थ अक्षर
देवनारि० ना० स्त्री० देवता की स्त्री।
देवपूजक० ना० पु० देवता की पूजा करनेहारा, पौत्तलिक, मूर्तिपूजक।
देवपूजा० ना० स्त्री० देवता का पूजन।
देववधू० ना० स्त्री० देवता की पत्नी देवरानी रानाजी रामचन्द्रिराया देवबधू जबहीं हरिल्यायो क्यों तबहीं तजि ताहि न आया।
देवमुनि० ना० पु० नारदजी।
देवर० ना० पु० पतिका छोटाभाई।
देवराज्ञी०
देवरानी० } ना० स्त्री० देवर की स्त्री देवताओं की रानी अर्थात् इन्द्राणी, रामचन्द्रि काया। देवरानी देव देवरानी मनाइन संयुक्त भूलोक में सोहिया।
देवरिपु० ना० पु० दैत्य निशाचर।
देवर्षि० ना० पु० नारदमुनि।
देवृ० ना० पु० देवर।
देवल० ना० पु० मन्दिर, ठाकुरद्वारा चौहरा, यथा तुलसी देवल देवका लागे लाखकरोरि, काकअभागेहगिभयो महिमाभई न थोरि।
देववल्लभा० ना० स्त्री० केसर जाफरान।
देववाणी० ना० स्त्री० संस्कृत।
देववृक्ष० ना० पु० कल्पवृक्ष।
देवसर० ना० पु० मानसरोवर।
देवश्रेणी० ना० स्त्री० सुरहरी देवतों का समूह।
देवस्त्री० ना० स्त्री० देवता की पत्नी।
देवस्थान० ना० पु० देवालय देवता का घर।
देवस्व० ना० पु० देवता का धन।
देवा० ना० पु० देवता देनेहारा।
देवाङ्गना० ना० स्त्री० देवी देववामा।
देवारि० ना० पु० दैत्य, निशाचर।
देवाल० ना० पु० देनेहारा।

देवालय० ना० पु० देवस्थान, देवता का घर।
देवाला० ना० पु० दिवाला।
देवालिया० गु० जिसका दिवाला निकलगया।
देवाली० ना० स्त्री० दिवाली, दिवारी।
देवासेई० ना० स्त्री० देनलेन।
देवी० ना० स्त्री० देवता की स्त्री, भगवती, मुरहरी औषधि।
देवेन्द्र० ना० पु० देवाधिराज अर्थात् इन्द्र।
देवोत्थान० ना० स्त्री० कार्त्तिक शुक्लपक्ष की तिथि जिस में विष्णु नींद से उठते हैं या कार्त्तिक शुक्ल एकादशी।
देव्यालय० ना० पु० देवी का मन्दिर।
देव्याश्रय० ना० पु० देवी की सहायता।
देश० ना० पु० पृथ्वी का खण्ड विशेष, लोक रागिनी विशेष, मुल्क, विलायत।
देशपति० ना० पु० राजा, बादशाह।
देशभाषा० ना० स्त्री० देशकी बोली।
देशमात्र० गु० सर्वत्र, सब देश।
देशाचार० ना० पु० देशकी रीति।
देशाटन० ना० पु० देशों में फिरना।
देशाधि०
देशाधिप०
देशाधिपति० } ना० पु० राजा, बादशाह।
देशाधीश०
देशाध्यक्ष० } ना० पु० देशका रक्षक या राजा।
देशान्तर० ना० पु० दूसरा देश।
देशापर० ना० पु० परदेश, अन्यदेश।
देशी० गु० जो देशका है।
देह० ना० स्त्री० तन, शरीर।
देहरा० ना० पु० चौहरा, देवालय।
देहली० ना० स्त्री० चौखट, ड्योढ़ी।
देही० गु० शरीर, ना० पु० जीव, आत्मा।
दैजा० ना० पु० कन्यादान, यौतुक।
दैत्य० ना० पु० असुर, दितिजात।
दैत्यगुरु०
दैत्यपुरोधा०
दैत्यपुरोहित० } ना० पु० शुक्राचार्य।
दैत्यपूज्य०
दैत्याचार्य०
दैत्यारि० ना० पु० देवता, श्रीविष्णुजी।
दैदीप्य० गु० प्रकाशित, रोशन।
दैदीप्यमान० गु० प्रकाशित, चमकीला।
दैन्य० ना० पु० दीनता।
दैय० ना० पु० देव, ईश्वर।
दैया० ना० स्त्री० माता।
दैव० ना० पु० प्रारब्ध, ब्रह्मा, देवके आधीन।
दैवगति० ना० स्त्री० कर्मकीचाल, भाग्यकीगति।
दैवतामणि० महामेदा।
दैवयोग० ना० पु० कर्मप्रभाव, इत्तिफ़ाक़न।
दैववादी० गु० आलसी, भाग्याधीन।
दैवज्ञ० ना० पु० गणक, ज्योतिषी।
दैवात्०
दैवी० } अव्य० अकस्मात्, नागहान।
दैविक० गु० जो देवता करके होवे।
दो० गु० दूसरी संख्या २।
दोऊ० गु० दोनों।
दोक० ना० पु० बछेड़ा, दोवर्षका घोड़ा।
दोचर० गु० दुहरा, दूसरा।
दोजीवा० ना० स्त्री० गर्भिणी।
दोझा० ना० पु० द्विभवर।
दोदना० स० क्रि० मुकरना।
दोना० ना० पु० दौना, पत्तों का पात्र, पुष्प विशेष।
दोनाली० ना० स्त्री० बन्दूक दोनालकी।
दोवर० गु० दोलेर, दुहरा।
दोमुहा० ना० पु० दो मुखका सांप।
दोय० गु० दो २।
दोल० ना० पु० डोल।
दोष० ना० पु० निन्दा, पाप, चूक, अपराध,

काम क्रोधादि, कलव।
दोपक० गु० निन्दक, अपगुणी, पापी।
दोपना० सं० क्रि० दोपदेना या दोषलगाना।
दोपित० } गु० कलंकित, पापी, अपयशी, अ-
दोपी० } पराधी।
दोहत्तड़ ना० पु० दोनों हाथोंका देमारना।
दोहता० ना० पु० नाती।
दोहती० ना० स्त्री० नातिनी, नातिन।
दोहद० ना० पु० स्नेह, प्रीति, हित, गर्भ।
दोहन० ना० पु० रसका खावना।
दोहन० } स० क्रि० दूहना, गारना।
दोहना० }
दोहनी० ना० स्त्री० दूहने का पात्र।
दोहरा० गु० द्विगुण, दोलड़।
दोहराव० ना० पु० दोहराने का काम।
दोहा० ना० पु० छन्द विशेष।
दोहाई० ना० स्त्री० दुहाई।
दोहान० ना० पु० दो वर्ष का गोरू बचा, बैला।
दौड़० ना० स्त्री० बहुत शीघ्र चलने की चाल, धावा।
दौड़धूप० ना० स्त्री० जतन, परिश्रम।
दौड़ना० अ० क्रि० बहुत शीघ्रचलना, धावा।
दौड़ाक० ना० पु० दौड़नेहारा।
दौड़ादौड़ी० ना० स्त्री० वेगावेगी।
दौड़ाना० स० क्रि० शीघ्र चलाना।
दौड़ाहा० ना० पु० सदाशया, अगुआ।
दौहित्र० ना० पु० नाती, नवासा।
दौहित्री० ना० स्त्री० नातिनी, नवासी।
द्युमणि० ना० पु० सूर्य।
द्यूत० ना० पु० जूआ, जूए।
द्यौरानी० ना० स्त्री० देवरकी स्त्री।
द्रम्म० ना० पु० १६ पणका।
द्रव० गु० बहता हुआ, घुला।
द्रविड़० ना० पु० देश विशेष।
द्रवित० गु० बहताहुआ, कृपायुत, नम्रतामय।
द्रवौ० } अ० क्रि० दया करो।
द्रवहु० }
द्रव्यअन्यभाव० गु० वस्तु और वस्तु रहित पदार्थका सम्बन्ध।
द्रष्टा० ना० पु० देखनेवाला।
द्रावक गु० घुलाने हारा, कृपालु।
द्रावन० ना० पु० निर्मली।
द्राविड़० ना० पु० कपूर, द्रविड़ देशका ब्राह्मण या लोग।
द्राविड़ी० ना० स्त्री० छोटी इलायची, द्राविड़ देशकी भाषा या वासी या वस्तु।
द्रावी० ना० पु० सुहागा।
द्राक्षा० ना० स्त्री० अंगूर, दाख।
द्रुत० ना० पु० जल्द, शीघ्र।
द्रुपद० ना० पु० राजा विशेष।
द्रुपदी० ना० स्त्री० द्रौपदी, पाण्डवोंकी स्त्री।
द्रुम० ना० पु० वृक्ष, पेड़।
द्रुमलिक० ना० पु० राक्षस विशेष।
द्रुहिण० ना० पु० ब्रह्मा।
द्रोण० ना० पु० कालाकाग, धारिज, पर्वतविशेष, द्रोणाचार्य्य।
द्रोणपुष्पी० ना० स्त्री० गूमा, पौधा।
द्रोणाचार्य्य० ना० पु० कौरव और पाण्डवोंका गुरु।
द्रौपदी० ना० स्त्री० पाण्डवोंकीस्त्री, द्रुपदकन्या।
द्रोह० ना० पु० वैर, शत्रुता, अदावत।
द्रोहिया० } ना० पु० शत्रु, वैरी, मुद्दई।
द्रोही० }
द्वन्द्व० ना० पु० युगल, जोड़ा, रागदोषादि, कलह, दुरवाद।
द्वादश० गु० बारह १२।
द्वादशउपवन० ना० पु० बारह उपवन अर्थात् शान्तनुकुण्ड, राधाकुण्ड, गोवर्द्धन, परमन्दर बरसाना, संकेत, नन्दघाट, चीरघाट, बलरामस्थल, नन्दगाव, गोकुल, चन्दनवन १२।
द्वादशभानु० ना० पु० बारह सूर्यनाम।

अर्थात् विष्णु, शक, अर्यमा, धाता, पूषा, त्वष्टा, विवस्वान, सविता, मित्र, वरुण, अंशु, भग, तेजस्वि।

द्वादशभानुकला० ना० स्त्री० बारह सूर्य की कला अर्थात् तापिनि, तापिनी, धूम्र, मरीची, ज्वालिनी, रुचि, सुषुम्ना, भोगदा, विश्वावोधिनी, धारिणी, क्षमा।

द्वादशवन० ना० पु० बारहवन ब्रज के अर्थात् मधुवन, तालवन, वृन्दावन, कुमुदवन, कामवन, कोटवन, चन्दनवन, लोहवन, महावन, खदिरवन, बेलवन, भाण्डीर।

द्वापर० ना० पु० तीसरायुग जो ८६४००० वर्ष का होता है।

द्वार० ना० पु० दरवाजा, दरवाजा।

द्वारपाल० } गु० ड्योढ़ीवान, द्वारकार
द्वारपालक० } पक।

द्वारा० अव्य० कारण से वसीला, मारफत।

द्वारावती० ना० स्त्री० द्वारिका।

द्वारिका० ना० स्त्री० नगर प्रसिद्ध जो गुजरात में है।

द्वारिकाधीश० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
द्वारिकानाथ० }

द्वारी० ना० पु० द्वारपाल।

द्विगुण० गु० दूना, दोहरा।

द्विज० ना० पु० पक्षी, दांत, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य।

द्विजदोष० ना० पु० ब्रह्महत्या।

द्विजनायक० ना० पु० ब्राह्मण। गरुड़, चन्द्रमा, सिंह।

द्विजन्मा० ना० पु० ब्राह्मण।

द्विजपति० ना० पु० द्विजनायक।

द्विजपत्नी० ना० स्त्री० ब्राह्मणी।

द्विजप्रिया० ना० स्त्री० सोमवल्ली, ब्राह्मणी।

द्विजराज० ना० पु० द्विजनायक।

द्विजा० ना० स्त्री० ब्राह्मणी।

द्विजांगिका० ना० स्त्री० कुटकी।

द्विजाति० ना० पु० द्विज, ब्राह्मण।

द्वितीय० गु० दूसरा।

द्वितीया० ना० स्त्री० दूज, दूसरीतिथि, दूसरी।

द्वितीयान्त० गु० जिसके अन्त में द्वितीयाका प्रत्यय होवे।

द्वित्व० अव्य० दोहरा करना।

द्विधा० अव्य० दोप्रकार।

द्विपद० ना० पु० मनुष्य।

द्विरसन० ना० पु० सांप।

द्विरागमन० ना० पु० गौना, चलौआ।

द्विरुक्ति० ना० स्त्री० पुनरुक्ति, फेरफेरकहना।

द्विरेफ० ना० पु० भौंरा।

द्विवचन० ना० पु० द्वित्व सङ्ख्यायुक्त, जोशब्द, जिसका भाषा में प्रयोग नहीं है।

द्विविद० ना० पु० वानर विशेष।

द्विषट्० गु० द्वादश वा बारह।

द्विस्वभाव० ना० पु० दुविधा।

द्वित्रिंशल्लक्षण० ना० पु० बत्तीस लक्षण अर्थात् सुकृत स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, शुश्रूषा, अभ्यास, वरविद्या, सुमान, परमज्ञान, शास्त्रज्ञान, परस्त्रीत्याग, पूर्णता, लोकेश, दास विभाग, पुत्रविद्या, प्रियवाद, सत्सङ्ग, अकाम गुणपूर्ण, मातृभक्ति, पितृभक्ति, गुरुभक्ति, जितेन्द्रिय, दातृत्व, धर्मात्मा, देशपूजन, अल्पनिद्रा, स्वल्पाहार, स्वच्छता, पूज्यता, धीरज ३२।

द्वीप० ना० पु० टापू पृथ्वी का खण्ड जो जलसे घिराहुआ है, पृथ्वी के सातखण्डों में से एक।

द्वीपवती० ना० स्त्री० नदी।

द्वीपशत्रु० ना० पु० सतावर, सतावर।

द्वीपसम्भवा० ना० स्त्री० पिंड खजूर।

द्वीपिका० ना० स्त्री० सतावर, सतावर।

द्वीपी० ना० पु० सिंह, शेर।

द्वेष० ना० पु० वैर, द्रोह, हिंसा, ईर्षा।

द्वेषी० ना० पु० शत्रु, वैर, हिंसक।

द्वै० गु० दो, २।

द्वैत० ना० पु० सन्देह, भेद, दुबिधाहट।
द्वैतवादी० ना० पु० भेदवादी।
द्वैध० ना० पु० सन्देह, दोखण्ड।
द्वैधीकरण० ना० पु० छेदन।
द्वैमातुर० ना० पु० श्रीगणेशजी।
द्वैमधुक० ना० पु० मुलहटी।
द्वैप० ना० पु० द्वेष।
द्व्यर्थ० गु० जिस में दो प्रकारके अर्थहों।
द्व्यक्षर० गु० जिस में दो अक्षरहों।

[ध]

धधकाना० स० क्रि० दहलना, धोन्हादेना।
धंधक० गु० बहुचिन्तक, धंधवाला, धधक।
धधा० ना० पु० काम, धपा।
धधार० गु० उदास, एकान्ती।
धधारी० ना० स्त्री० उदासी, अकेलापन।
धंसना० अ० क्रि० धमना, गड़ना, बैठजाना।
धकधक० ना० पु० धड़क, भयसे कलेजा कांपना।
धक्का० ना० पु० ढकेल, झोंक, ठेला।
धक्काधक्की० ना० स्त्री० ठेलाठेली।
धगड़ा० }
धगड़० } ना० पु० यार, लगुआ।
धज्र० ना० पु० चाल, आसन, डौल, रूप, ठाट, सामान, सजधाज।
धजभंग० ना० पु० नपुसकी।
धजा० ना० स्त्री० पताका, ध्वजा।
धजीला० गु० धज से चलने वाला, सजीला।
धज्जी० ना० स्त्री० पुराने कपड़े का टुकड़ा।
धड़० ना० पु० देह, सिरसे नीचेका तन।
धड़क० ना० स्त्री० फड़क, भय, धड़धड़ाहट।
धड़कना० अ० क्रि० फड़कना, हिलना, धकधकाना।
धड़का० ना० पु० भय, सन्देह, दुबिधा, धड़क।
धड़काना० स० क्रि० डराना, धकधकाना, अ० क्रि० धड़कना।
धड़ा० ना० पु० बटा, पच, तौल, जोख।
धड़ाका० ना० पु० धायाधाय, दड़दड़ाहट शब्द होना।
धड़ी० ना० स्त्री० लकीर, पांचसेर की तौल वा जितना एकबार तोलाजावे।
धत० ना० पु० हाथी चलाने का शब्द।
धतूरा० ना० पु० पौधा विशेष।
धतूरिया० गु० छलिया, बहुरूपिया।
धधकना० अ० क्रि० भभकना, धांयधांय जलना।
धन० ना० पु० द्रव्य, अर्थ, सम्पत्ति, लक्ष्मी, शुक्र।
धनक० ना० स्त्री० गोटेसे पतीवस्तु जो टोपी आदि में लगाते हैं।
धनकटी० ना० स्त्री० कपड़ा विशेष, धान काटने का समय।
धनञ्जय० ना० पु० अग्नि, अर्जुन, पाण्डुपुत्र, पक्ष।
धनन्तर० ना० पु० धन्वन्तरि।
धनद० ना० पु० कुबेर, धनका दाता।
धनपति० ना० पु० कुबेर, गु० धनी।
धनवन्त० }
धनवान० } गु० द्रव्यवान्, लक्ष्मीवान्।
धना० ना० स्त्री० स्त्री, नारी, ना० पु० भजन विशेष।
धनातुला० ना० स्त्री० रासना।
धनाढ्य० गु० धनवान, मालदार।
धनाध्यक्ष० ना० पु० धनका स्वामी, कुबेर।
धनान्ध० गु० जो धनके कारण अन्धा अर्थात् अहङ्कारी होरहाहो।
धनार्जन० ना० पु० द्रव्य का उपार्जन।
धनाशा० ना० स्त्री० अर्थ की आशा।
धनासरी० }
धनासिरी० } ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
धनिक० ना० पु० महाजन, ब्याजवाला।
धनिया० ना० पु० बीज विशेष, ना० स्त्री० नारि।

धनिष्ठा० ना० स्त्री० तेईसवां नक्षत्र।

धनी० गु० लक्ष्मीवान्, मालदार, ना० पु० मालिक, स्वामी।

धनुः० ना० पु० धनुष और नवीं राशि, चारि हाथका प्रमाण, भिलावां।

धनुपट० ना० पु० चिरौंजी।

धनुर्द्धर० ना० पु० जिस मनुष्य के पास धनुष रहताहो, विशेष अर्जुन।

धनुर्विद्या० ना० स्त्री० युद्धविद्या और बाण ज्ञान, तीरन्दाजी।

धनुष० ना० पु० कमान, कमठा।

धनुषाकृति० } ना० पु० धनुष के डौल।
धनुषाकार० }

धनुषी० } ना० स्त्री० छोटा धनुष, धनु की
धनुही० } कमठी।

धनेश० ना० पु० पक्षी विशेष, कुबेर, गु० धनवान्।

धन्य० गु० प्रशंसाके योग्य, गुणी।

धन्ययासक० ना० पु० जवासा।

धन्यवाद० ना० पु० स्तुति, कृतज्ञता, गुण मानना।

धन्यवादी० गु० कृतज्ञ, सुत, गुणगायक।

धन्या० ना० स्त्री० नदी विशेष।

धन्याक० ना० पु० धनिया।

धन्वन्तरि० ना० पु० वैद्यविशेष जो स्वर्ग वासियों के वैद्य हैं।

धन्वायासा० ना० स्त्री० जवासा।

धन्वी० गु० धनुर्द्धर।

धप० } ना० पु० चपेटा, थप्पड़, झलावां।
धप्पा० }

धब्बा० ना० पु० कपड़े में जो सील, कपड़े का दाग।

धमक० ना० स्त्री० भयका सूचक शब्द, पैरों का शब्द विशेष।

धमकना० अ० क्रि० धंसना, धड़कना, जोगम-गाना, स० क्रि० पटकना।

धमका० ना० पु० बड़ीधूप, सांस, भारी वस्तु के गिरने का शब्द।

धमकाना० स० क्रि० भिड़कना, डांटना।

धमकाहट० } ना० स्त्री० घुड़की, डांट।
धमकी० }

धमधूसड़० गु० मोटा, स्थूल।

धमन० ना० पु० नड़कुल।

धमनी० ना० स्त्री० नाड़ी, नली।

धमाका० ना० पु० तोप विशेष जो हाथी पर रखते हैं भारी वस्तु गिरनेका शब्द।

धमाचौकड़ी० ना० स्त्री० रौला, बखेड़ा।

धमाधम० ना० पु० पांवपटकनेका शब्द, लगातार पीटना।

धमार० } ना० पु० तालविशेष या गीतविशेष
धमाल० } जो होली में गाते हैं।

धमिना० ना० पु० सांप विशेष।

धमोका० ना० पु० खंजरी विशेष।

धम्मिल्ल० ना० पु० केशपाश, बेणी।

धर० ना० स्त्री० धरती, ना० पु० धड़।

धरक० ना० स्त्री० धड़क।

धरका० ना० पु० धड़का।

धरणि० } ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन।
धरणी० }

धरणीधर० ना० पु० शेषादि, सांप।

धरती० ना० स्त्री० पृथ्वी, जमीन।

धरधरा० ना० पु० धड़ाका।

धरन० ना० स्त्री० धड़ी।

धरना० स० क्रि० रखना, सौंपना, पकड़लेना ना० पु० किसी के द्वारपर अड़ना।

धरनी० ना० स्त्री० धरणी, धरन।

धरनैत० ना० पु० धरना, देनेवाला।

धरपना० स० क्रि० दबाना, [illegible] करना।

धररुह० ना० पु० वृक्ष, पौधा[illegible], [illegible] उगे।

धरपना० स० क्रि० [illegible], [illegible]

धरहर० ना० स्त्री० [illegible], [illegible], सहजरोम

कृत प्रह्लाद चरित्रे यथा (यदि ससार असार महँ राम नाम श्रुतिसार, रहिमन पुर घरहरको नरहरि नाम उदार)।

धरा० ना०स्त्री० धरती, पृथ्वी, क्रि० मू० रक्खा, पकड़ा।

धरातल० ना० पु० पृथ्वीतल, रूप, जमीन।

धराधर० ना० पु० शेषादि।

धराना० अ० क्रि० ऋणी होना, स० क्रि० रख वाना, पकड़ना, सदाना।

धरासुर० ना० पु० ब्राह्मण।

धरित्री० ना० स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

धरोहर० ना० स्त्री० थाती, सौंप, अमानत।

धरौना० ना० पु० पुनर्विवाह।

धर्त्तव्य० गु० ग्राह्य।

धर्त्ता० ना० पु० ऋणी, धारणिक।

धर्तूर० ना० पु० धतूरा, जिस के फल में विष होताहै।

धर्म० ना० पु० न्याय, कीर्ति, पुण्य, व्यवहार, चाल, गुण, काम, मजहब।

धर्मकूप० ना० पु० काशीजी में स्थान विशेष।

धर्ममूल० ना० पु० वेद शास्त्र, ग्रन्थ।

धर्मराज० ना० पु० यमराज, नीतियुत राजा, राजा युधिष्ठिर।

धर्मशाला० ना० स्त्री० धर्म विचारने का स्थान।

धर्मशील० ना० गु० भक्तिमान्, कीर्तिमान्, साधु।

धर्माधिकार० ना० पु० पुण्यकर्म की पदवी सरकार का काम।

धर्माधिकारी० गु० जो पुण्यकर्म का सिरताज हो।

धर्मात्मा० गु० कीर्तिमान्, साधु, ना० पु० ईश्वर में जो तीसरा है उसका नाम।

धर्माध्यक्ष० गु० न्यायी, विचारकर्त्ता।

धर्मावतार० ना० पु० धर्मका अवतार।

धर्माज्ञा० ना० स्त्री० धर्मकी आज्ञा।

धर्मिष्ठ० } गु० धर्ममेंजिनकी निष्ठाहै,पुण्यवान्।
धर्मी०

धर्षण० ना० पु० धासन, रगड़ा।

धर्षना० स० क्रि० कोसना, रगड़ना।

धवल ना० पु० शुक्लवर्ण।

धवलास्य० ना० पु० पिशाच।

धवलागिरि० ना० पु० पर्वत विशेष।

धसकना० अ० क्रि० गड़ना, धसजाना।

धसन० ना० पु० धसान, धसने की अवस्था।

धसना० अ० क्रि० घुसड़ना, चुभना, बिंधना, पैठना।

धसान० ना० पु० दलदल,गढ़न, धमन।

धसाना० स० क्रि० घुसेड़ना, घुसेड़वाना, पैठावना, पैठवाना, बिंधाना।

धसाव ना० पु० धसान।

धांधल० ना० पु० नटखटी, करफन्द, झगड़ा।

धांधली० गु० झगड़ालू, नटखट।

धांगर० ना० पु० जाति विशेष।

धांयधांय० ना० स्त्री० तोपोंका शब्द धड़ाका।

धांसना० स० क्रि० खासना, खोंखना।

धांसी० ना० स्त्री० खांसी, खोंखी।

धाई० ना० स्त्री० दूध पिलाने हारी।

धाक० गु० स्त्री० ठाठ, प्रताप, कीर्ति, भय, डर, टीक।

धागा०ना० पु० सूत, डोरा।

धाता० ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य।

धातु० ना० पु० तांबा आदि, वीर्य्य, क्रियावाचक शब्द मसदर।

धातुमाक्षिक० ना० पु० सोनामक्खी।

धातुसाधित० गु० जो धातु से बनायागया

धातुविसर० गु० धातु से रहित।

धान० ना० पु० अन्न विशेष।

धाना० अ० क्रि० दौड़ना, टहलकरना, स० क्रि० पूजना, अर्चन।

धानी० ना० स्त्री० धान विशेष, धान के सदृश, रंग विशेष।

धानुक० ना० पु० धनुहार, कमान्दार और जातिविशेष।

धानेय० ना० पु० धनिया।

धान्य० ना० पु० धनिया, धान, धन, माल।

धान्यक० ना० पु० धनिया।

धाप० ना० स्त्री० हाथ से दो तिहाई का माप, जहांतक मनुष्य एक सांस में दौड़सके।

धाम० ना० पु० घर, स्थान, तेज, तन, किरण, ज्योति, बैकुण्ठ, ब्रह्म।

धामा० ना० पु० बेतका टोकरा।

धामिन्० ना० पु० सूर्य।

धाय० ना० स्त्री० धाई।

धायमारना० अ० क्रि० पुकार के रोना, दौड़के मारना।

धार० ना० स्त्री० लकीर, बहाव, अस्त्र की बाढ़।

धारक० ना० पु० ऋणी।

धारण० ना० पु० धारने की अवस्था, मानलेना, स० क्रि० धारना, मंज़ूर करना।

धारणा० स० क्रि० रखना, संभालना, धराना, ना० स्त्री० योगकर्मविशेष।

धारना० स० क्रि० धारणा।

धारस० ना० स्त्री० ढाढ़स, धीरज।

धारा० ना० स्त्री० प्रवाह, बहाव, रीति।

धारावाहिक० गु० विच्छेद बिनु।

धारि० ना० स्त्री० डाकूकी सेना।

धारित० गु० जो धारण कियागया।

धारी० ना० स्त्री० लकीर, पौधा विशेष।

धार्त्तराष्ट्र० ना० पु० कालाहंस, यथा—मृद्ग हंसास्तुतेचंचुचरणैर्लोहितैःसिताः। मलिनैश्च स्यास्तेधार्त्तराष्ट्राःसितेतरैः १-इत्यमरः, धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन।

धाव० ना० पु० पौधाविशेष, दौड़।

धावच्छ्रयः० ना० पु० [illegible]

धावन० ना० पु० सन्देशिक, दूत, [illegible]

धावना० अ० क्रि० दौड़ना, फिरकरना, चढ़ना, रगड़ना, अर्चना।

धावनी० ना० स्त्री० दूती, छोटी कटाई, श्वेत।

धावमान० गु० दौड़ताभया।

धावा० ना० पु० दौड़, चढ़ाई, वृक्षविशेष।

धाह० ना० स्त्री० शराब, कूक।

धात्री० ना० स्त्री० धरती, सरस्वती, धाई, ना० पु० आंवला।

धिक्० अव्य० निन्दा का बोधक शब्द छिः, लानत, कुछ न भये।

धिक्कार० ना० पु० धिक्कार, निन्दा, शाप, लानत।

धिक्कारना० स० क्रि० निन्दाकरना, धिक्कारना, लानत करना।

धिक्कारी० गु० शापित, निन्दित, धिक्कारी।

धिग्० अव्य० धिक्।

धिया० ना० स्त्री० बेटी, पुत्री।

धिरयो० क्रि० धमकाया, डांटा।

धिराना० स० क्रि० धमकाना, डांटना।

धिषण० ना० पु० ब्रह्मा, बृहस्पति।

धिषणा० ना० स्त्री० बुद्धि।

धी० ना० स्त्री० बुद्धि, बेटी।

धीति० ना० स्त्री० प्रतीति, विश्राम, [illegible] यथा—मोहिंभ्रमविटापन्नेति [illegible] धीतिलावण्येयोम्हा [illegible]।

धीम० ना० पु० [illegible]।

धीमर० ना० पु० [illegible]।

धीमा० गु० ढीला, [illegible], मन्द।

धीमाई० ना० स्त्री० ढील, [illegible]।

धीमत्० गु० बुद्धिमान्, चतुर।

[illegible] अव्य० [illegible]।

धीरा० ना० स्त्री० बुद्धि, [illegible]।

धीर० गु० [illegible], [illegible], ना० पु० [illegible]।

[illegible] ना० पु० [illegible]।

धीरजी० गु० दृढ़, सन्तोषी, स्थिर।
धीरता० ना० स्त्री० धैर्य्य, स्थिरता, साहस।
धीरा० गु० कोमल, सन्तोषी, साहसी, विचारशील।
धीरिया० ना० स्त्री० बेटी।
धीरी० ना० स्त्री० नत्र की पुतली।
धीर० गु० दृढ़, धीरजी, बहादुर।
धीवर० ना० पु० धीमर, कहार।
धुगार० ना० पु० छौंकन, बघार।
धुगारना० स० क्रि० बघारना, छौंकना।
धुंधरार० ना० पु० अंधेरा।
धुधकारना० अ० क्रि० धुआं समेत आग का जलना।
धुधारना० अ० क्रि० अंधा होना।
धुधला० गु० अंधा अंधला, ना० पु० अंधेरा।
धुधलाई० ना० स्त्री० अंधेरा, उजलाई।
धुधेला० गु० छली, ठग।
धुकड़ी० ना० स्त्री० छाग अथवा पैसा रखने की होती है।
धुकधुकी० ना० स्त्री० कंठका भूषणविशेष, धकधक शब्द, ध्यान।
धुत्ता० ना० पु० धूर्तता।
धुन० ना० स्त्री० चसका, लौ अभ्यास, परिश्रम, लहर, उमंग।
धुनकना० स० क्रि० तूमना, धुनना।
धुनना० स० क्रि० तूमना, पीटना, मारना।
धुनिया० ना० पु० बिहना तूमनेवाला।
धुन्ना० स० क्रि० धुनना।
धुमला० गु० उधा, अंधा अधरा।
धुमलाई० ना० स्त्री० अंधियारा।
धुर० ना० पु० आरम्भ, अरि पास, बोझ।
धुरपद० ना० पु० गीतविशेष।
धुरसांझ० ना० स्त्री० गोधूली, सायकाल।
धुरन्धर० गु० धुरी धरनेवाला, ना० पु० धव वृक्ष।
धुरवा० ना० पु० मेघ, वाक्यथा, धुधुवारे धुरवा चढ़ै पासा, सयुक्ति परै नहिं अवनि अकाशा।
धुरव्य० ना० पु० मेघ।
धुरियाना० स० क्रि० मटियाना, धूललगाना, धूल फेंकना।
धुरी० ना० स्त्री० काठ या लोहे की वस्तु जिसपर पहिया फिरता है।
धुलना० अ० क्रि० स्वच्छहोना, पाकहोना, धोजाना।
धुलवाना० स० क्रि० धुलाना।
धुलाई० ना० स्त्री० वस्त्र धोने का काम या पैसा।
धुलाना० स० क्रि० मल निकलाना, व वस्त्र को स्वच्छ करवाना।
धुलेंडी० ना० स्त्री० होलीका दूसरा दिन।
धुस्सा० ना० पु० लोई, ऊणवस्त्रविशेष।
धुआं०
धूआं० } ना० पु० धुआ, धूम।
धूवारा० ना० पु० धुआ निकलने का स्थान।
धुधरा० ना० पु० अंधेरा।
धूत० गु० धूर्त।
धूति० ना० स्त्री० ठग, छली यथा—तुलसी रघुवर सकरहि सकै न कलियुग धूति।
धूना० ना० पु० राल।
धूनी० ना० स्त्री० धुआं, आग जो साधु लोग तापते हैं गु० स्थिर।
धूप० ना० स्त्री० घाम, सुगन्धि, द्रव्य जो पूजा में जला के चढ़ाते हैं, वृक्षविशेष या उसका काष्ठविशेष।
धूपना० स० क्रि० रालसुलगाना, धूपजलाना।
धूपित० गु० धूप दियागया।
धूम० ना० पु० धुआं ना० स्त्री० रौला, बखेड़ा, उत्पात, भीड़।
धूमकेतु० ना० पु० अग्नि।
धूमधाम० ना० पु० धुआंका घर, हूहा, रौला, बनाव।

धूमपुष्पा० ना० स्त्री० अग्नि जिह्वा विशेष।
धूमयोनि० ना० पु० मेघ, बादल।

धूमर०
धूमरा०
धूमल०
धूमल०
} गु० भदमला, धमैला, धवा का रंग।

धूमशिखा० ना० पु० अग्नि।
धूमशीर्षा० ना० स्त्री० अग्निजिह्वा विशेष।
धूमा० गु० धूमला।
धूमी० गु० उत्पाती जिसकी धूम होरही।
धूम्र० ना० पु० धुवा, ऊंट।
धूम्रपान० ना० पु० धुवा का पाना।
धूम्रपानयंत्र० ना० पु० हुक्का।
धूम्रयोनि० ना० पु० मेघ, बादल।
धूम्राक्ष० ना० पु० राक्षस विशेष।
धूर० ना० स्त्री० धूल।
धूरा० ना० पु० जो रोगी के हाथ पाव आदि में रगड़ते है।
धूरि० ना० स्त्री० धूलि।
धूरी० ना० स्त्री० धुरी।
धूर्त्त० गु० नटखट, शठ, ठग, ना० पु धतूरा।
धूर्त्तता० ना० स्त्री० ठगई, शठता।

धूल०
धूलि०
} ना० स्त्री० रज, रेणु, खाक।

धूसना० स० क्रि० ठासना, भरना, दबाना।
धूसर० गु० मिट्टी लगाये हुये ना० पु० जाति विशेष।
धूसरि० ना० स्त्री० धूलि।
धूहा० ना० पु० धोखा, पक्षी आदि के डराने के लिये खेतमें गाड़ते हैं, दूहा।

धृक्०
धृग्०
} अव्य० धिक्।

धृत० गु० जो धारण कियाजाय, रक्खागया।
धृतराष्ट्र० ना० पु० दुर्योधन का पिता।
धृति० ना० स्त्री० दृढ़ता कामों में धीरज।
धृष्ट० गु० ढिठाइद, चतुर, परिपूर्ण, पण्डित, शाला।
धेंगामुष्टी० ना० स्त्री० घूसमघूसा।
धेनु० ना० स्त्री० गाय वा बछड़ासमेत गाय, दुधार गाय।
धेनुक० ना० पु० खरूपी दैत्य विशेष।
धेनुमति० ना० स्त्री० गोमती नदी।
धेला० ना० पु० अधेला।
धेली० ना० स्त्री० अधेली, आधा रुपया।
धैर्य० ना० पु० धीरता, धीरज।
धैर्य्यवान्० गु० धीरजी, सन्तोषी।
धैवत० ना० पु० रागका स्वर विशेष।
धोआ० ना० पु० फलकी भेंडाली।
धोई० ना० स्त्री० भिगोई हुई दाल।
धोंराखा० ना० पु० धुवानिकलने का मार्ग।
धोक० ना० स्त्री० देवता के आगे झुकना, आड़ तकिया।
धोकड़० गु० महाबली।
धोखा० ना० पु० भ्रम, छल, धाधल।
धोता० ना० पु० धूर्त्त, पाखण्डी।
धोती० ना० स्त्री० कटि में पहिरने का वस्त्र विशेष।
धोना० स० क्रि० पखारना, फींचना।
धोप० ना० स्त्री० खड्ग विशेष।
धोय० ना० स्त्री० पखालन, धोनेका काम।
धोबिन० ना० स्त्री० धोबीकी स्त्री।
धोबी० ना० पु० कपड़ा धोनेवाला।
धोरी० ना० स्त्री० धुरपबैल जो गाड़ी में सब से पहिले मचाया जाता है।
धौ० ना० पु० वृक्ष विशेष।
धौं० अव्य० अथवा, वा, मानो, या।
धौंक० ना० स्त्री० इच्छा, वारा, आशा।
धौंकना० स० क्रि० धौंकनी से आगिफूंकना।
धौंकनी० ना० स्त्री० धौंकी सलाई जिस से आगिको प्रचण्ड करते हैं, निगाली।
धौंका० ना० स्त्री० धौंकनी।

धौताल० गु० धनवान्, बलवान्, सरमा, दुर्जेर।
धौताली० ना० स्त्री० धन, बल, सरमापन, दुष्टता।
धौंन० ना० पु० चारि पसरी का परिमाण।
धौंस० ना० पु० दौड़, धपी।
धौंसा० ना० पु० नक्काड़ा।
धौंसिया० ना० पु० दौड़करनेहारों का प्रधान।
धौर० ना० पु० कपोत की जाति विशेष।
धौरा० गु० धौला।
धौल० ना० स्त्री० टीप, थप्पड़।
धौलधप्पा० ना० पु० धप्पाधप्पी।
धौला० गु० श्वेत, सफ़द।
धौलाई० ना० स्त्री० उज्ज्वलता, गोराई।
धौटाना० } स० क्रि० थप्पड़ मारना, धु
धौलियाना० } ठियाना।
ध्यान० ना० पु० विचार, सोच, चिन्ता।
ध्यानी० गु० विचारवान्, सोचा।
ध्याना० } स० क्रि० सोचना, विचारना, मा
ध्यावना० } नना, भजना, गाना बजाना।
ध्रुव० ना० पु० धुरी, योग राग विशेष, दैत्य विशेष, उत्तर दक्षिणके केन्द्र स्थान में प्रायस्थिर एक तारा उत्तानपादका पुत्र भक्त विशेष, गु० स्थिर, अचल, सनातन, निश्चय।
ध्रुवतारा० ना० पु० उत्तर दक्षिण केन्द्र में प्राय स्थिर एकतारा।
ध्रुवनन्दा० ना० स्त्री० श्रीगगानी।
ध्रुवपद० ना० पु० धुरपद गीत विशेष।
ध्रुवमत्स्यबंध० ना० पु० कुतुबनुमा।
ध्रुवा० ना० स्त्री० शालपर्णी, भील, लगाव।
ध्वंस० ना० पु० नाश।
ध्वङ्क्षोली० ना० स्त्री० काकोली।
ध्वज० ना० स्त्री० झण्डा, पताका, ध्वजा।
ध्वजिनी० ना० स्त्री० सेना, फौज।
ध्वजा० ना० स्त्री० पताका।
ध्वनि० ना० स्त्री० शब्द, बाजेका शब्द।

ध्वनित० गु० सङ्केप से कथित।
ध्वनी० ना० स्त्री० नदी, गु० शब्दय।
ध्वन्यात्मक० [illegible] शब्दविशेष, जिसमें वर्ण विवरण हो।
ध्वस्त० गु० भ्रष्ट, खराब।
ध्वान० ना० पु० शब्द।
ध्वान्त० ना० पु० अंधियारा, काव्ययथा, यथा ध्वान्त विध्वंस आदित्य मारा, तथा दैरि विध्वंस शौरप्रहारी।

(न)

न० अव्य० अ० नहीं।
नक० ना० स्त्री० नाक।
नकचढ़ा० गु० क्रोधी, चिड़चिड़ा।
नकछिकनी० ना० स्त्री० घास विशेष।
नकटा० गु० नाक कटा।
नकड़ा० ना० पु० नाकमें रोग विशेष।
नकतोड़ा० गु० हँसोड़, धूर्त्त।
नकसीर० ना० स्त्री० नाक की शिरा।
नकार० अव्य० ना० पु० अस्वीकार।
नकारना० स० क्रि० नकार करना, मुकरना।
नकुल० ना० पु० नौला सांपका बैरी, नेउला, पाण्डुका पांचवा पुत्र।
नकुआ० ना० पु० नाक, अणि।
नकेल० ना० स्त्री० काठ की वस्तु विशेष जो ऊंटकी नाकमें पहिनाते हैं।
नक्का० ना० पु० पांसे या तासका इक्का।
नक्की० ना० स्त्री० नाकसे बोलना, जूए में एक बढ़ना गण्डे से।
नक्कीमूठ० ना० स्त्री० द्यूतविशेष, जुआविशेष।
नक्कू० गु० अपयशी, बदनाम।
नक्र० ना० पु० कुम्भीर, मगर, नाका।
नख० } ना० पु० अंगुलियों के अग्रपर का
नखर० } अस्थिभाग, नाखून, नह।
नखरेखा० ना० स्त्री० खसोट, बकोट।
नखियाना० स० क्रि० खसोटना, बकोटना
नखी० गु० नखधारी, नखवाला, पशु।

नग० ना० पु० अंगूठी का पाषाणविशेष, मणि, पर्वत, वृक्ष, धाम।

नगचाई० ना० स्त्री० अनाई।

नगचाना० अ० क्रि० पास आना।

नगचाहट० ना० स्त्री० नगचाई।

नगदौना० ना० पु० पौधा विशेष।

नगन० ना० पु० हाथी, गु० नग्न।

नगभिस्फ० ना० पु० पाषाण भेद।

नगर० ना० पु० शहर, पुरी, ग्राम।

नगरकोट० ना० पु० कोटकांगड़ा।

नगरनारी० ना० स्त्री० गणिका, वेश्या।

नगरवर्त्ती० ना० पु० नगरवासी।

नगरवासी० गु० पुरी वा शहरका वासी।

नगरी० ना० स्त्री० छोटानगर, बस्ती।

नगा० ना० स्त्री० नारी, स्त्री।

नग्न०
नंगा०
नंगा० } गु० दिगम्बर, वस्त्रहीन।

नंगी० ना० स्त्री० नग्न स्त्री।

नचवाना० स० क्रि० नचाना, नाचकराना।

नचवैया० ना० पु० नाचने हारा।

नचाना० स० क्रि० नाचकराना।

नट० ना० पु० डीठबन्दों या नाचनेहारोंकी जाति विशेष, कौतुकी, स्वांगी।

नटखट० गु० धूर्त्त, कपटी, छली, फरफन्दिया।

नटखटी० ना० स्त्री० धूर्तता, कपट, छल, फरफन्द।

नटत० क्रि० अस्वीकार करता है, नाचता है।

नटना० अ० क्रि० नमानना, अस्वीकारकरना।

नटनागर० ना० पु० चतुर नट, डीठबन्द, टोनहा।

नटभूषण० ना० पु० हरताल, नटकाभूषण।

नटवर०
नटवा० } ना० पु० डीठबन्द, टोनहा।

नटसाल० ना० पु० टूटाकांटा।

नटिन०
नटिनी० } ना० स्त्री० नटकी स्त्री।

नटी० ना० स्त्री० वेश्या, नाचनेहारी।

नटुआ०
नटुवा० } ना० पु० नटवा।

नठना० अ० क्रि० नशाना, बिगड़ना, स० क्रि० नाशना, बिगाड़ना।

नत० गु० नम्र० ना० पु० तगर, औषधि, अव्य० नतरु, नहीं तो।

नतरु० अव्य० नहीं तो।

नतांगी० ना० स्त्री० कठशृंगी।

नति० ना० स्त्री० प्रणाम, नमस्कार।

नतिनी० ना० स्त्री० नातिन, दौहित्री।

नतैत० ना० पु० नातेदार, सम्बन्धी, गोतैत।

नथ० ना० स्त्री० नाकमें का गहनाविशेष, नथुनी।

नथना० अ० क्रि० छिदना, फसना, ना० पु० नथुना।

नथनी० ना० स्त्री० नाथने का अस्त्र विशेष, नथुनी।

नथी० गु० छिदी, फँसी।

नथुआ० ना० पु० छिदुआ।

नथुई० ना० स्त्री० छिदुई।

नथुना० ना० पु० नाकका मार्ग।

नद० ना० पु० ब्रह्मपुत्रादि जलप्रवाह विशेष।

नदिया० ना० स्त्री० छोटी नदी, ना० पु० नद विशेष।

नदी० ना० स्त्री० जो जलकी धारा [illegible] से निकलकर देशान्तरों में होकर समुद्र में पहुँचे जैसे गंगा और सिन्धु आदि।

नदीकान्ता० ना० स्त्री० [illegible]

नदोला० ना० पु० [illegible]

ननद०
ननदिया० } ना० स्त्री० [illegible]

ननदी० ना० स्त्री० [illegible]

ननिहाल० ना० पु० [illegible]

नन्द० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र के कथित पिता, नग, नो ६।
नन्दन० ना० पु० देव उपवन, देववन, चन्दन, लड़का, गु० आनन्ददाता।
नन्दलाल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
नन्दिग्राम० ना० पु० नगरविशेष जहां भरत जी तपस्या करते थे।
नन्दिनी० ना० स्त्री० पार्वती, पुत्री, पति की बहिन (प्रयुक्त), सौति, हर।
नन्दी० ना० पु० शिवजी का वाहन।
नन्दीगण० ना० पु० शिवजी का गण।
नन्दीघोष० ना० पु० रथ जो अग्निदेवने अर्जुन को दियाथा।
नन्दोई० ना० पु० पतिकी बहिन का स्वामी, ननद का पति।
नन्दोला० ना० पु० नाद।
नन्दोसी० ना० पु० नन्दोई।
नन्हा० गु० छोटा लघु।
नपुंसक० ना० पु० क्लीव, हीजड़ा मार।
नपुंसकलिंग० ना० पु० ताससलिंग।
नभ० ना० पु० आकाश आश्रय और श्रावण मास।
नभग० गु० पक्षी पवन ग्रह, देवता।
नभगनाथ० ना० पु० गरुड़ चन्द्रमा।
नभगामी० गु० पक्षीयादि, नभग।
नभगेश० ना० पु० नभगनाथ, गरुड़, चन्द्रमा
नभश्चर० ना० पु० आकाश में उड़ने हार, यथा पक्षी, तारागण, ग्रह देवता।
नभस्य० ना० पु० भाद्रपद।
नभस्वन० ना० पु० पवन वायु।
नम० ना० पु० नमस्कार, त्याग।
नमत० गु० प्रणाम करते।
नमन० गु० नम्रता, नमाना।
नमस्कार० ना० पु० प्रणाम, सलाम का बोधक।
नमस्कारी० ना० पु० सलाम।
नमस्य० गु० नमस्कार के योग्य।
नमामि० क्रि० नमस्कार करता हूं।
नमित० गु० नीचे शिर किये, शिरझुकाय नमस्कार करते।
नमो० ना० पु० नमस्कार या प्रणाम करता हूं, दोहा, नमानमो गुरुदेवको करोंप्रणाम अनन्त गुरु प्रसाद सब भेद को चरणदास बरनन्त १० इतिस्वरोदय।
नम्र० गु० विनयी, मिलनसार, आधीन, नर्म।
नम्रता० ना० स्त्री० आधीनता, विनय, नर्मी।
नय० ना० पु० नीति, कानून।
नयन० ना० पु० नेत्र, आंख।
नयनअमिय० ना० पु० नेत्रोंका अमृत, यथा, श्रीगुरुपदरजमृदुलमंजुल, नयनअमियदृगदोषवि भंजन। इतिरामायण।
नया० गु० नवीन, ताजा।
नर० ना० पु० मनुष्य, पुरुष, पुत।
नरक० ना० पु० पापों के भोग फल का स्थान, देशविशेष जिसे भामापुर भी कहते हैं।
नरकट० ना० पु० नरसल तृणविशेष, जिस की चटाई बनती है।
नरकसी० ना० स्त्री० हलक, गला।
नरकुल० ना० पु० नरकट।
नरपति० ना० पु० मनुष्यों का रक्षक, राजा।
नरपुर० ना० पु० मर्त्यलोक।
नरवाहन० } ना० पु० कुबेर, यक्षराज।
नरयान०
नरसिंगा० ना० पु० बाजा विशेष तुरही।
नरसिंगिया० ना० पु० नरसिंगाबजानेहारा।
नरसिंह० ना० पु० विष्णुका चौथाअवतार।
नरसों अव्य० बीताहुआ चौथादिन, चौथादिन आनेवाला।
नरहड्ड० ना० पु० पिण्डली की हड्डी।
नरहरि० ना० पु० नरसिंहजी, कवि विशेष।
नरहरिदास० ना० पु० गोसाईं, तुलसीदास के सद्गुरु।

नरान्तक० ना० पु० नरोंकाकाल, दैत्यविशेष।
नरिया० ना० स्त्री० छोटी नाली, खपरा।
नरी० ना० स्त्री० चर्म विशेष लोहे का यन्त्र विशेष, जिसमें बीने का सूत रखते हैं।
नरुल० गु० पुल्लिंग।
नरेट० ना० पु०
नरेटा० ना० पु०
नरेटी० ना० स्त्री० } सांसी नली, नरई
नरेन्द्र०
नरेश० } ना० पु० राजा, बहुतदेशका प्रतिपालक।
नरोत्तम० गु० श्रेष्ठमनुष्य ना० पु० श्रीकृष्णजी।
नर्त्तक० ना० पु० नाचनेहारा।
नर्त्तकी० ना० स्त्री० नीच, नाचनेवाली।
नर्त्तन० ना० पु० नाच, नृत्य।
नर्मदा० ना० स्त्री० नदी विशेष।
नल० ना० पु० मुख्य वानर, मुख्यराजा, कुबेर का पुत्र, नरकुल, पोंगी, खोखल।
नलकूबर० ना० पु० कुबेर के बालक।
नलपुरटिक० ना० पु० बलिहारी।
नला० ना० पु० उदर में स्थान विशेष।
नलिका० ना० स्त्री० नली, नाली।
नलिन० ना० पु० कमल।
नलिनी० ना० स्त्री० बहुत नलिनका संयोग स्थान या कमलिनी।
नली० ना० स्त्री० नरटी, पोंगी, नाल, नरहर, लोहे का यन्त्र जिसमें सूत रखकर बिनते हैं।
नलुआ० ना० पु० भारी बांसका एक भाग पत्र आदि रखने के काम आताहै।
नव० गु० गिनती विशेष, ९ नया।
नवखण्ड० ना० पु० पृथ्वी के नौ भाग अर्थात् भरतखण्ड, इलावर्त्त, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हिरण्य, रम्य, हरि, कुरुखण्ड।
नवजल० ना० पु० प्रथम वर्षा, नया वर्षा।
नवयौवना० ना० स्त्री० यौवनवती।
नवद्वार० ना० पु० शरीर के नौ द्वार अर्थात् आंख २ कान २ नाक २ मुख, गुदा, लिङ्ग।

नवधा० गु० नौप्रकार।
नवधाभक्ति० ना० स्त्री० नौ प्रकार की भक्ति अर्थात् श्रवण, हरिकथा, गुरुसेवा, हरिगुणगान, वेदपाठ, सज्जनधर्म, समभाव, लाभालाभसम, हरिशरण।
नवधाभजन० ना० पु० नौ प्रकारका भजन अर्थात् हरिगुण श्रवण, हरिगुण कीर्त्तन, हरिस्मरण, हरिपदसेवा, हरिअर्चन, हरिपदवन्दन, दास्यभाव, मित्रभाव, आत्मज्ञान ९।
नवनाडिका० ना० स्त्री० नौश्वासा अर्थात् इड़ा, पिंगला, सुषुम्णा, पयस्विनी, कुहू, गंधारी, शंखिनी, पूषा, अलम्बुषा।
नवनि० ना० स्त्री० झुकनि, प्रणाम।
नवनिधि० ना० स्त्री० कुबेर का धन।
नवनीत० ना० पु० मक्खन, नेनू, मसका।
नववधू० ना० स्त्री० नवेली, नई दुलहिन।
नवबाला० ना० स्त्री० नवयौवना।
नवम० गु० नवां है।
नवमांश० ना० पु० नवभाग।
नवमी० ना० स्त्री० नवमीतिथि, नवीं।
नवरंग० ना० पु० [illegible], [illegible], [illegible]।
नवरत्न० ना० पु० [illegible] पहिरने के लिये हार विशेष।
नवरत्न० ना० पु० नवरत्न या नौ रत्नाकारजु अर्थात् मुक्ता, माणिक, वैदूर्य, गोमेद, [illegible], [illegible], [illegible], इन्द्र, नवरत्न।
नवल० गु० सुन्दर, नया, ना० पु० [illegible]।
नवला० ना० स्त्री० नवयौवना, नवयौवना।
नवा० ना० गु० नया।
नवडा० ना० पु० नाव विशेष।
नवाना० स० क्रि० झुकाना, झुकना, दाहरा, क्षीणकराना।
नवाबी० स० क्रि० [illegible], [illegible]।
नवारी० ना० स्त्री० पुष्प विशेष या उसका वृक्ष।
नवासी० गु० अस्सी और नौ ८९।

नवी० ना० स्त्री० रस्सी जिससे गाय के पांव दूध दुहते समय बांधते हैं।

नवीन० गु० नया, ताजा।

नवीनता० ना० स्त्री० नयापन।

नवोढ़ा० ना० स्त्री० नई स्त्री, नवयौवना।

नवोद्भिद्० ना० पु० अङ्कुर, अखुआ।

नव्य० गु० नया, नवीन, उपरा।

नब्बे० गु० नवदहाई ९०।

नश्वर० गु० नाशवान् विनाशी, झूठ।

नशाया० क्रि० मिगया, नाश किया।

नखत० ना० पु० नक्षत्र, तारागण, तारा।

नष्ट० गु० जिसका नाश होगया, भ्रष्ट।

नष्टता० ना० स्त्री० भ्रष्टता।

नष्टा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी।

नस० ना० स्त्री० नाड़ी, रग।

नसाना० स० क्रि० नाशकरना, बिगाड़ना।

नसी० ना० स्त्री० फालका अग्रभाग या फाला जो खाड़े या हल में लगता है।

नस्य० गु० सानुनासिक हुलास जो नासिका से सूंघते हैं।

नह० ना० पु० नख, नाखून।

नहक० गु० दुबला, पतला, सुन्दर।

नहट्टा० ना० पु० नखौर खसोट।

नहनी० ना० स्त्री० नहनी नखानी विशेष।

नहरुआ० ना० पु० रोग विशेष।

नहर्नी० ना० स्त्री० नख काटने का अस्त्र विशेष।

नहलाना० स० क्रि० स्नान कराना नहाना।

नहान० ना० पु० स्नान।

नहाना० प० क्रि० स्नान करना।

नहारदमुह० अव्य० बिनाखाये।

नहाद० ना० पु० चमड़े का टुकड़ा।

नहियर० ना० पु० स्त्री की ससुराल या मैका।

नहीं० अव्य० निषेध, न।

नक्षत्र० ना० पु० तारा तारागण।

ना० अव्य० नहीं।

नाई० अव्य० प्रकार, सदृश, समान।

नाइन० ना० स्त्री० नाई की जोरू।

नाई० } ना० पु० नापित, जातिविशेष, क्षौरक।
नाऊ० }

नाक० ना० पु० आकाश, स्वर्ग, स्त्री नासिका।

नाकड़ा० ना० पु० नाक में रोगविशेष।

नाकपति० ना० पु० इन्द्र।

नाकनटी० ना० स्त्री० अप्सरा परी।

नाका० ना० पु० मार्ग या पैंडे का अन्त, सुईका छेद, गला, नक्र, जलमन्तु विशेष।

नाकिन० ना० स्त्री० नाकरी स्त्री।

नाग० ना० पु० सांप, पन्न, हाथी दुष्टनर, सूक्ष्म वायुभेद।

नागउरता० ना० पु० सीसा, धातु।

नागकन्या० ना० स्त्री० कन्या जो पातालमें रहती है सुलोचना, मेघनादकी स्त्री।

नागकेसर० ना० पु० पुष्प विशेष।

नागगर्भ० ना० पु० सिन्दूर चन्दन।

नागचाम्पेय० ना० पु० नागकेसर।

नागज० ना० पु० सिंदूर चन्दन।

नागदन्ती० ना० स्त्री० इन्द्र वारुणी।

नागदमनी० ना० स्त्री० नागदौन।

नागदौन० ना० पु० पौधा, मरुआ।

नागन० ना० स्त्री० सापिनी।

नागनी० ना० स्त्री० पान नागरी रस।

नागपञ्चमी० ना० स्त्री० श्रावणशुक्लपञ्चमी का पर्व विशेष।

नागपत्नी० ना० स्त्री० सापिन, नागिन।

नागपाश० } ना० पु० पाश या बन्धन
नागपास० } विशेष।

नागपुर० ना० पु० नगर विशेष, नागलोक।

नागफांस० ना० स्त्री० फांसी विशेष।

नागबला० ना० स्त्री० गँगरुआ।

नागवल्ली० ना० स्त्री० नागबेलि।

नागबेलि० ना० स्त्री० पानआदि।

नागभाषा० ना० स्त्री० प्राकृत भाषा जो पा-

सालके रहने हार बोलते हैं।
नागमाता० ना० स्त्री० कद्रू मनसिल।
नागर० ना० पु० गुजराती ब्राह्मणकी जाति विशेष, नागरोपन अर्थात् चतुर, और पानी, धीरा, सोंठि।
नागरंग० ना० पु० नारंगी।
नागरमोथा० ना० पु० सुगंधि तृण विशेष का मूल।
नागरि०
नागरिन० } ना० स्त्री० चतुर स्त्री, नागरकी स्त्री।
नागरिपु० ना० पु० न्याला, मोर, गरुड़, सिंह।
नागरी० ना० स्त्री० संस्कृत के अक्षर, चतुर स्त्री।
नागल० ना० पु० हल खेत जोतने का।
नागा० ना० पु० संन्यासी, नम्बर।
नागाह्वा० ना० स्त्री० नागदौन।
नागारि० ना० पु० नागरिपु।
नागार्जुन० ना० पु० सहस्रबाहु राजाविशेष।
नागिन०
नागिनी० } ना० स्त्री० सांपकी स्त्री।
नागौर० ना० पु० मारवाड़ देशके पासका प्रदेश।
नाघना०
नांघना० } स० क्रि० लांघना, पारजाना।
नाच० ना० पु० नृत्य।
नाचना० अ० क्रि० नाचकरना, कूदना।
नाज० ना० पु० अन्न, अनाज।
नाट० ना० पु० नाश।
नाटक० ना० पु० प्रबंधविशेष।
नाटा० गु० ठिंगना, ठेनी।
नाटिका० ना० स्त्री० नाटी।
नाटा० ना० स्त्री० छोटी, ठिंगनी।
नाठि० ना० स्त्री० नाश, विनाश।
नाठी० गु० नाशगई।
नाड़० ना० स्त्री० मीना, नाला।
नाड़िका० ना० स्त्री० एकघड़ी।
नाड़ी० ना० स्त्री० पैरोंकी नस, रोगपरीक्षा के लिय हाथ में की एकरग, श्वासा, नस, नदी।
नाड़ीतिक्त० ना० पु० चिरायता।
नाड़ीधम० ना० पु० सोनार, स्वर्णकार।
नाड़ीमण्डल० ना० पु० नाड़ियों का समूह।
नाड़ीज्ञान० ना० पु० रोगपरीक्षा, और श्वासा का ज्ञान।
नात० ना० पु० सम्बन्ध, रिश्तह, बिरादरी।
नातर०
नातरु० } अव्य० नायथा, नहीं तो।
नाता० ना० पु० सम्बन्ध।
नातिन० ना० स्त्री० कन्या की कन्या, बेटा की बेटी।
नाती० ना० पु० बेटीका पुत्र, बेटा का पुत्र, रामायणे यथा, उत्तमकुल पुलस्ति के नाती शिवविरंचि पूजेहुभांती।
नाथ० ना० पु० स्वामी, प्रभु, ना० स्त्री० बैल की नाककीरस्सी, धार की बत्ती।
नाथना० स० क्रि० छेदना, बैल के नाकमेंरस्सी डालना।
नाथित० गु० जो नाथागया।
नाद० ना० पु० शब्द, गरज, गीत, राग।
नादना० स० क्रि० आरम्भ करना।
नादिया० ना० पु० नन्दी, पशु विशेष जो जोगियों के पास होता है।
नाधना० स० क्रि० जुये में लगाना, आरम्भ करना।
नाधा० ना० पु० तालाव, वा नदी में से पानी निकालने का गढ़ा।
नानक० ना० पु० सिक्खों का गुरु विशेष।
नाना० ना० पु० माताका पिता, गु० अनेक, बहुत, समूह।
नानाकार० गु० बहुत रूपके, अनेकप्रकारके।
नानाकारण० ना० पु० अनेकप्रकार के कारण।
नानाप्रकार०
नानाभांति० } गु० अनेक प्रकार।
नानारूप० ना० पु० अनेक रूप।

नानार्थ० ना० पु० अनेक अर्थ।
नानाविधि० गु० अनेक प्रकार।
नानी० ना० स्त्री० माता की माता।
नान्द० ना० स्त्री० नाद, मिट्टी का बड़ा बर्त्तन विशेष।
नान्दिया० ना० पु० शिवजी का वाहन, वृषभ।
नान्दीमुख० ना० पु० श्राद्ध विशेष, जो पुत्र जन्म के पीछे होता है वा विवाहादि में।
नाधना० स० क्रि० आरम्भ करना।
नान्यतर० } अव्य० अन्यथा नहीं, असत्य नहीं।
नान्यथा० }
नाप० ना० स्त्री० माप, परिमाण।
नापना० स० क्रि० मापना, परिमाण करना।
नापित० ना० पु० नाई, हज्जाम।
नाभि० ना० स्त्री० पहिये मध्यका स्थान, ढोंढ़ी, तोंदी, ना० पु० राजाविशेष।
नाम० ना० पु० कीर्ति, यश, विख्याति, संज्ञा।
नामकरण० ना० पु० संस्कार विशेष, नाम रखना।
नामानि० ना० पु० नामका बहुवचन।
नामी० गु० प्रसिद्ध, कीर्तिमान् विख्यात, यशी, मशहूर।
नायक० ना० पु० अगुआ, प्रधान, स्वामी, सुन्दर रीति से गायक या नर्तक बनजारों का प्रधान।
नायका० ना० स्त्री० नायिका।
नायिन० ना० स्त्री० नाई की जोरू।
नायकी० ना० स्त्री० नायक की स्त्री, धर्मी, नियावुडनी।
नार० ना० स्त्री० नारि, नाल, झुण्ड, माता।
नारक० ना० पु० नरक।
नारकी० गु० नरक निवासी, नरकी।
नारंगा० ना० पु० } फल विशेष।
नारंगी० ना० स्त्री० }
नारद० ना० पु० मुनि विशेष।
नारा० ना० पु० नाला कमरबन्द।
नाराच० ना० पु० बाण, तीर।
नारायण० ना० पु० भगवान।
नारायणी० ना० स्त्री० लक्ष्मी, दुर्गा, गौरी, नारायण सम्बन्धी ज्योति विशेष।
नारि० ना० स्त्री० अबला, नाड़ी, जिस में बान का सूत रखकर बुनते हैं, बन्दूक बिना काठ, बांसका पोर जिसमें तेल पानी आदि भरके बैल गाय आदिको पिलाते हैं।
नारिकेर० }
नारिकेल० } ना० पु० फल विशेष।
नारियल० }
नारियली० ना० पु० नारियल का हुक्का।
नारी० ना स्त्री० अबला, स्त्री, नाड़ीनाम रग का, जिस करमुआ कहते हैं।
नाल० ना० पु० कमलादि की दण्डी, नाल, पोला नल, नली।
नालकी० ना० स्त्री० पालकी विशेष।
नाला० ना० पु० जल निकलने का मार्ग।
नालिसिंदुक० ना० पु० सभालू।
नाली० ना० स्त्री० छुरी नाम नाला, जिसमें दण्ड करते हैं, जिसकाठको उखाते हैं।
नाव० ना० स्त्री० नौका, तरनी।
नावना० स० क्रि० झुकाना, डालना, नवाना।
नावरि० ना० पु० निवारा, जलक्रीड़ा।
नाविक० ना० पु० मांझी, नाव वा जहाज चलाने हारा मल्लाह, कपतान।
नाशक० गु० नाशकरनेहारा, मिटानेहारा।
नाशन० ना० पु० मिटावन, भग्न।
नाशना० स० क्रि० मिटाना ध्वंसकरना, नाशना।
नाशपाती० ना० स्त्री० फल विशेष।
नाशा० ना० स्त्री० नासिका।
नाशासभेदन० ना० पु० नकछिकनी पौधा।
नासिका० ना० स्त्री० नासिका, नाक।
नास० ना० पु० सुंघनी, हुलास।
नासना० अ० क्रि० भागना, स० क्रि० नाश करना।

नासा० ना० स्त्री० नाक, नासिका।
नासिका० ना० स्त्री० नाक।
नास्ति० अव्य० जो नहीं है।
नास्तिक० } ना० पु० जिनके मत में पर
नास्तिकी० } लोक की बात को नहीं मानते हैं, जैनी।
नाह० ना० पु० नाथ, स्वामी।
नाहर० ना० पु० शेर, व्याघ्र।
नाहीं० अव्य० नहीं।
नि ० अव्य० यह शब्द जिसशब्द के पहिले संयोगी होय उसको अर्थरहितकरे, यथा, नि शङ्क अर्थात् शङ्कारहित, निषेध।
नैपाप० गु० प्रदीप।
नै शङ्क० गु० निडर, अभय।
नै दोष० गु० दोषरहित अर्थात् सम्पूर्ण।
नै पढ़० गु० अति मूर्ख।
नै सत० गु० सत रहित अर्थात् अचला।
नै शरण० ना० पु० शरणहीन, अर्थात् मृत्यु उपाय, विदा।
नै स्व० गु० दरिद्र, अधन।
नि० अव्य० में भीतर, ऊर्ध्व, रहित।
निष्कंटक० गु० सुगम बेखटक निर्द्वंद्व, सारसुखी, बेफ़िक्र।
निकन्द० गु० संतद रहित, अर्थात् उखड़, निर्मूल।
निकन्दन० गु० निर्मूलकर्त्ता, उखाड़नहारा।
निकट० अव्य० पास, समीप, करीब।
निकटवर्त्ती० ना० पु० पासहो, समीप में।
निकटी० ना० स्त्री० छोटी तराज़ू।
निकम्मा० गु० निर्गुणी जो किसीकामका नहीं है, शिथिल।
निकर० ना० पु० समूह, झुण्ड, सार, सब।
निकरना० अ० क्रि० निकलना।
निकरम्ब० ना० पु० समूह, गिरोह।
निकलचलना० अ० क्रि० भागजाना बढ़के बोलना अधिक होजाना।
निकलना० अ० क्रि० निकसना, बहना, भाग जाना, भागना, उठाना, उखड़ना।
निकलपड़ना० अ० क्रि० बाहर, आना।
निकसना० अ० क्रि० निकलना।
निकाना० स० क्रि० खेतकी घास निकालना।
निकाम० गु० अति कामना रहित, बकाम।
निकाय० ना० पु० सब समस्त, समूह।
निकारना० स० क्रि० निकालना, अलगीकरि करना।
निकाल० ना० पु० उभार, निकास, झाड़ताड़।
निकालना० स० क्रि० उतारना, बिनना, चुनना, उठाना उखाड़ना।
निकास० ना० पु० नगर, नगरके आसपास, मार्ग निकलनेका, सुकौता, मूल।
निकासना० स० क्रि० निकालना।
निकासी० ना० स्त्री० कर, महसूल, अन्न।
निकासु० गु० जो निकालागया।
निकेत० ना० पु० घर।
निकुञ्च० ना० पु० बड़हल।
निकुञ्ज० ना० पु० कुञ्ज, मंडवा।
निकुटी० ना० स्त्री० छोटा इलायची।
निकुम्भिला० ना० स्त्री० राक्षसोंका थाहरा।
निकृष्ट० गु० अधम, नीच, खराब।
निखंग० ना० पु० तूणीर, तरकश।
निखट्टू० गु० आलसी, उड़ाऊ, लुगाऊ।
निखण्ड० गु० मध्य।
निखरना० अ० क्रि० छिलका उतारना, उजला होना चमड़ा उधड़ना।
निखरवाना० स० क्रि० उजलाकराना, फचौना।
निखर्व० गु० १०खर्व, १००००००००००००।
निखारना० स० क्रि० उजला करना, कपड़ेकी माड़ी निकालना।
निखारा० गु० स्वच्छ, उज्ज्वल।
निखिल० गु० सर्व, सम्पूर्ण, बिलकुल।
निखोट० ना० पु० खोट रहित मनुष्य।
निखोड़ना० स० क्रि० खालना, उखाड़ना।

निगड़० ना० पु० कठिन बंधन, बेड़ी पैकड़ी काठ।
निगत० गु० नगा।
निगन्दना० स० क्रि० तागना।
निगन्दा० ना० पु० } तागने का काम।
निगन्दाई० ना० स्त्री० }
निगम० ना० पु० वद, नीचे, जहां जा न सके।
निगमनदी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
निगमनिवासी० ना० पु० ब्रह्मा वेदनिवासी।
निगर० ना० पु० दीर्घ बड़ा ठाम।
निगलना० स० क्रि० लीलना, घूटना।
निगाली० ना० स्त्री० हुक्का पीने की नली, फुकनी।
निगुण० गु० निर्गुण।
निगूढ़० अतिअगम, दुर्गम, अतिकठिन, अप्रकट, गुप्त।
निगोड़ा० ना० पु० अकर्मी चाण्डाल।
निग्गर० गु० ठोस।
निग्रह० ना० पु० त्याग, रोक, घिन, चिढ़, कुपथ दण्ड।
निग्रही० गु० ताड़नेहारा, रोकने हारा।
निघटत० क्रि० घटतेही।
निघटना० अ० क्रि० घटना।
निघटाना० स० क्रि० घटवाना।
निघटी० क्रि० भू० घटी या बहुत घटगई।
निघण्ट० ना० पु० औषधि वर्णन, रागपरीक्षा।
निघरघट्टा० ना० पु० दुलखना, ढिठाई करना, ढिठाई करना।
निचय० ना० पु० समूह।
निचिन्त० गु० चिंता रहित, अचिंत, असोच।
निचिन्ताई० ना० स्त्री० अंमारे, सुभीना, बेखटके।
निचोड़० ना० पु० काम का पूरा होना या कुछ शेषरहना।
निचोड़ना० स० क्रि० दबाना गारना, चूसलेना।
निचोडू० गु० लुटेरा, गाऊरप।
निचोलनि० ना० स्त्री० चोलनी, कपड़ा, वस्त्र।
निछावर० ना० स्त्री० उतारा, बलि।
निज० गु० आप निश्चय, उत्कृष्ट।
निजका० गु० अपना।
निजगति० ना० स्त्री० अपनी दशा या चाल।
निजगुरु० ना० पु० अपना गुरु।
निजतन्त्र० गु० निजइच्छा, स्ववश।
निजपति० ना० स्त्री० अपनी प्रतिष्ठा, ना० पु० अपना स्वामी।
निजवर्ती० गु० निजाश्रित, स्वतंत्र।
निजसन्धि० ना० स्त्री० अवसर, निजसमय।
निजस्थान० ना० पु० अपना घर या स्थान।
निजानन्द० ना० पु० अपना सुख में, निज म मग्न।
निजाश्रित० गु० स्ववश, निजवश, अपने निज भरोसे।
निझाना० स० क्रि० निरेखना, झांकना।
निझोटना० स० क्रि० खसोटना, झटकना।
निझोल० गु० झोलरहित, अर्थात् सुडौल, चलन हारा।
निठुर० गु० कठोर, निर्दय, स्नेही बिनप्रीति।
निठुरता० } ना० स्त्री० कठोरता, निर्दयता।
निठुराई० }
निडर० गु० निर्भय, बराक।
निढाल० } गु० स्थावर, अचल।
निढोल० }
नित० अव्य० नित्य, प्रतिदिन।
नितनय० गु० नितनया।
नितप्रति० अव्य० नित्य, प्रतिदिन।
नितम्ब० ना० पु० चूतड़, कमिके पीछे का नीचला भाग।
नितम्बिनी० ना० स्त्री० युवती, स्त्री, औरत।
नितान्त० अव्य० अत्यन्त, अधिक।
नित्य० अव्य० नित्यप्रति, सदा, सत्य, पअमर।

नित्यकर्म० ना० पु० स्नानपूजादि कर्तव्य कर्म शुक्लकर्म।
नित्यता० ना० स्त्री० सदापन, सदैव।
नित्यदान० ना० पु० प्रतिदिनदेना, सत्यदान, सात्त्विकदान।
नित्यानन्द० ना० पु० सर्वदाकाल आनन्द।
निथम्भ० ना० पु० स्तम्भ, पीलपाया।
निथरा० गु० फर्चा, फर्चा।
निथारना० स० क्रि० उवेलना, फर्चा करना।
निदग्धिका० ना० स्त्री० श्वेत धोरी कटाई।
निदरहि० क्रि० निन्दाकर, नामाने।
निदरना० स० क्रि० निन्दा करना।
निदरि० अ० क्रि० निरादरकरके, अपमानकर।
निदाघ० ना० पु० ग्रीष्म, गर्मी।
निदान० अव्य० अन्त, पीछे, पूरा, निपट ना०पु० रोगपरीक्षा, योगादि कथन, अन्तनिचार, कारण।
निदेश० ना० पु० आज्ञा, अनुशासन, यन्निदेशि मौरिनिदेशानिमेष्ट, देउदवायनागतरपेष्ट, इतिभ्र द्यदव रैनै सहजरामवाक्ये।
निद्रा० ना० स्त्री० औंघाई, नींद।
निद्रारि० ना० पु० चिरौयता।
निद्रालु० गु० स्वभावतः, जो अधिक सोवै।
निद्रित० गु० निंदासा, सोतासा।
निधड़क० गु० निर्भय, अव्य० अचानक।
निधन० ना० पु० मृत्यु, नाश, धनहीन।
निधरक० गु० निधड़क।
निधान० ना० पु० स्थान, घर, धन, आधार, भाड़ा।
निधि० ना० स्त्री० कुवेरका एक रत्न, सम्पत्ति, ना० पु० समुद्र, गु० नौ ६।
निधिजात० ना० पु० चन्द्रमा आदि।
निधिसुता० ना० स्त्री० श्रीलक्ष्मी जी।
निनन्द० } ना० पु० शब्द, घहरा, ध्वनि।
निनाद० }
निनाया० ना० पु० सम्मल।
निनायी० ना० पु० विरोग, रोगविशेष।
निन्दक० गु० निंदा करनहारा, नींदनेहारा।
निन्दकाई० ना० स्त्री० निंदकता, निंदा।
निन्दना० स० क्रि० दोषदेना, कलंकलगाना।
निन्दनीय० निंदा के योग्य।
निन्दा० ना० स्त्री० दोष, कलङ्क, बुरा कहना।
निन्द्य० गु० निंदा के योग्य।
निनावा० ना० पु० रोगविशेष।
निन्नानवे० गु० एकोनशत, ९९।
निपट० अव्य० निरानिर, अधिक, बहुत, अति, सरासर, सर्व।
निपटना० अ० क्रि० चुकना, पूराकरना।
निपटाना० स० क्रि० चुकाना, पूराकरना, ठहराना, निबकना।
निपटारा० ना० पु० निवेड़ा, फैसला।
निपटारू० ना० पु० निवेरू।
निपात० ना० पु० मृत्यु, नाश, गिरना।
निपातत० क्रि० नाश किया, मिटाया।
निपान० ना० पु० जलाशय, दोहनी।
निपुण० गु० प्रवीण, चतुर, दाना।
निपूता० गु० जिसके सन्तान नहीं।
निफल० गु० निरर्थ, फलरहित।
निबटेरा० ना० पु० निरतौर, छुटानी।
निबड़ना० अ० क्रि० निपटना, होचुकना।
निबन्ध० ना० पु० बन्धेज, इकरार गु० जो ठहर गया।
निबन्धन० ना० पु० बन्धन, ठहराव।
निबन्धित० गु० जो ठहरगया, बन्धित।
निबल० गु० निर्बल, लाचार बुड्ढा।
निबाह० ना० पु० समाप्त, निबड़ा, निर्वाह, बात का पूरा करना।
निबाहू० गु० निबाऊ ना० पु० निपटारू।
निबेड़ना० स० क्रि० निपटाना।
निबेड़ा० ना० पु० निबेरा, निपटारा।
निबेड़ि० गु० निबाद।
निभ० ना० पु० तुल्य, बराबर।

निमना० अ० क्रि० निवाहहोना, पारहोना।
निमाना० स० क्रि० निवाहना, पारकरना।
निमकी० ना० स्त्री० लोनका निम्बू।
निमकौड़ी० ना० स्त्री० नीमका फल।
निमन० गु० ठोस, गाढ़ा, सुंदर।
निमनाई० ना० स्त्री० गाढ़ाई।
निमलाना० स० क्रि० पोढ़ाकरना, सभालना।
निमग्न०
निमज्जन० } ना० पु० गोता।
निमाना० गु० भोला, मैदान।
निमि० ना० पु० राजाविशेष।
निमित्त० ना० पु० कारण, लिये, भाग, हेतु।
निमिष० ना० पु० आठपहर, पलक, चाल।
निमिषमात्र० ना० पु० अत्यन्त थोड़ाकाल।
निमीलन० ना० पु० मृत्यु, झपकी, पलक।
निमेष० ना० पु० पलक, विपल।
निम्न० गु० नीचास्थान, नीचान, अधः।
निम्नगा० ना० स्त्री० नदी।
निम्ब० ना० पु० नीब वृक्ष।
निम्बक० ना० पु० निम्बू।
निम्बरक० ना० पु० नीब, या महानीब।
निम्बू०
निम्बूक० } ना० पु० नीबू।
नियत० गु० जो ठैहरगया, मुकर्रर, कायम।
नियन्ता० ना० पु० स्वामी, अध्यक्ष, सारथी, नियतकर्ता।
नियम० ना० पु० व्रत, वचन, अङ्गीकार, जो कुछ धर्म की क्रियाकरे, प्रधानत।
नियमित० गु० निश्चित, प्रणकिया गया।
नियमन० ना० पु० नीम वृक्ष, रोक।
नियर०
नियरे० } अव्य० समीप, पास।
नियराई० ना० स्त्री समीपता, निकटता।
नियामक० ना० पु० नाविक, नियन्ता।
नियुक्त० गु० नियोजित, स्थापित।
नियुत० गु० दशलाख, १०००००० ।
नियोग० ना० पु० प्रश्न, आज्ञा, तथा मुकर्रर करना।
नियोजन० ना० पु० स्थापन, आज्ञा।
नियोजित० गु० स्थापित, रक्खा।
निर० अव्य० नि।
निरखना० स० क्रि० देखना, निरीक्षना।
निरकार० गु० निराकार।
निरंकुश० गु० स्वेच्छाचारी, निडर।
निरंजन० गु० निर्मल, राग रहित, अविद्या रहित, ना० पु० ईश्वर।
निरत० गु० अति प्रीतिमय, लीन।
निरतक० ना० पु० नर्चैया।
निरर्थ० गु० झूठ, निष्प्रयोजन, अशब्दह।
निरन्त० गु० अन्तरहित, अपरम्पार, ना० पु० आकाश, ईश्वर।
निरन्तर० अव्य० नित्यप्रति, जिसमें वियोग नहीं, सदा, अन्तर बिन।
निरन्ध० गु० अन्धा, देखने वाला।
निरपराध०
निरपराधी० } गु० अपराध रहित, निर्दोष।
निरम्बु० गु० जलरहित।
निरय० ना० पु० नरक, दोजख।
निरर्थक० गु० ढीला, प्रमादी, अनरीति, अर्थ रहित, निष्प्रयोजन।
निरवग्रह० गु० स्वच्छन्द, स्वतन्त्र।
निरवद्य० गु० आनन्दित, अकथ्य।
निरवारण० ना० पु० उधारन, बचाव, सुलझावट।
निरवारना० स० क्रि० खोलना, छोड़ना।
निरस० गु० रसहीन, फीका, बदमजह।
निरस्त० गु० त्यागित, जिसका अस्त न हो।
निरस्त्र० गु० अस्त्रहीन।
निरस्य० गु० त्यागने के योग्य, त्यागकिये।
निरा० गु० केवल, मात्र, ठेठ, रूखा।
निराकांक्षी० ना० पु० निस्पृह, आशारहित।
निराकार० गु० आकारहीन, यथा ईश्वर।

निरादर० गु० आदररहित, अपमानयुत, या अ वज्ञा करो हारा।
निराधार गु० सहारा रहित, आधार हीन।
निरामिष० गु० मांसरहित भोजन।
निरालम्ब० गु० आलम्बरहित, अवलम्बहीन।
निरालस्य० गु० आलस्य हीन, कामकाजी, मिहनती, उपायी।
निराश० गु० भरोसारहित, आशा टूटगई।
निराहार० गु० भोजनहीन, बिनकुछखाये।
निरिच्छ० निरिच्छित० } गु० इच्छारहित बिन इच्छा, जिसको कुछ चाह नहीं।
निरीश० गु० स्वामीरहित, जिसका मालिक न हो पतिहीन, ना० पु० जीव अर्थात् ईश नहीं।
निरीह० गु० चेष्टारहित यथा ईश्वर।
निरीक्षण० ना० पु० ताक, दृष्टि।
निरुत्तर० गु० उत्तरहीन, लाजवाब।
निरुपधि० गु० निष्प्रयोजन।
निरुपम० निरुपमा० } गु० उपमा हीन दृष्टान्त रहित।
निरुपाधि० गु० उपाधि रहित, बेखटके।
निरुपाय० गु० उपायहीन, बिना उपायकिये।
निरूप० गु० रूपहीन, निराकार।
निरूपण० ना० पु० दृष्टि, निर्णय, जताना, विस्तार पूर्वक कथन।
निरूपित० गु० जो विस्तारपूर्वक कहागया वा निर्णय कियागया, निश्चययुत, स्थापित।
निरेखना० स० क्रि० निहारना, झांकना।
निरोग० निरोगी० } गु० निरोग, भला चङ्गा, रोग रहित।
निरोध० ना० पु० घेरना, थांभना।
निर्गत० गु० निकला।
निर्गता० गु० निकलकर, ना० स्त्री० निकली।
निर्गम० ना० पु० जहा जाय न सके, धाम।
निर्गुण० गु० गुण हीन, निकम्मा, मूर्ख।
निर्गुण्डी० ना० स्त्री० सम्भालू।
निर्घण्ट० ना० पु० सूचीपत्र।
निर्घात० ना० पु० वज्र, शब्द।
निर्घृणा० गु० निर्दया कठोर।
निर्घोष० ना० पु० ध्वनि, शब्द।
निर्जर० ना० पु० देवता, जो बूढ़ा न हो।
निर्जन० गु० मनुष्य हीन, जनरहित।
निर्जननदी० ना० स्त्री० आगगाजा।
निर्जल० गु० जलहीन, सूखा, पायाब।
निर्जीव० गु० जिसमें जीव नहीं है यथा मिट्टी पत्थर आदि, मृतक।
निर्णास० गु० सार, सिद्धान्त।
निर्झर० ना० पु० झरना।
निर्झरिणी० ना० स्त्री० नदी।
निर्णय० ना० पु० निश्चय, ठिकाना, न्याय, झगड़ा मिटाना।
निर्णीत० गु० निश्चित, निर्णय कियागया।
निर्दई० निर्दय० निर्दया० निर्दयी० } गु० जिसमें दया नहीं है, कठोर, बेरहम।
निर्दिष्ट० गु० जो अच्छी विधि दखा गया या निरूपित हुआ या वर्णन हुआ।
निर्दोष० निर्दोषी० } गु० दोषहीन, अकलङ्की, अदोष।
निर्द्वन्द्व० गु० बिना झगड़ा, बेखटके।
निर्धन० गु० धनहीन, दरिद्री।
निर्धार० निर्धारण० } ना० पु० निश्चय, निर्णय।
निर्धारित० गु० निश्चत, निर्णीत।
निर्वंश० गु० वंशरहित, असन्तान, लावल्द।
निर्बन्धु० गु० बन्धु रहित, अकेला।
निर्बल० गु० लाचार, दुबला, जिसको सामर्थ्य नहीं है।
निर्वश० गु० वश रहित, असमर्थ।
निर्बीज० गु० बीज रहित, दुर्बीज।
निर्बुद्धि० गु० बुद्धिहीन, मूर्ख।

निर्बूझ० गु० जो समझ में न आवै, मूर्ख।
निर्भय० गु० अभय, निडर।
निर्भर० गु० पूर्ण, पूरा।
निर्मम० गु० ममता रहित।
निर्मल० गु० मलहीन, स्वच्छ, शुद्ध, साफ, पवित्र।
निर्मलता० ना० स्त्री० पवित्रता, स्वच्छता, सफाई।
निर्मली० ना० पु० बीज विशेष जिससे पानी को स्वच्छ करते हैं।
निर्माण० ना० पु० बनावट, रचना, बनाना, तत्त्व, सार।
निर्माल्य० ना० पु० प्रसाद, निवेदित वस्तु, स्वच्छता, शुद्धता।
निर्मित० गु० रचित, बनाया गया, निर्माण किया गया।
निर्मूल० गु० हीन मूल, बिना जड़।
निर्मोह०
निर्मोही० } गु० मोहरहित, उदासी।
निर्यास० ना० पु० शिलाजीत, वृक्षका रस अर्थात् गोंद, क्वाथ।
निर्याण० ना० पु० यात्रा, प्रस्थान।
निर्लज्ज० गु० लज्जा रहित बेहया नकटा।
निर्लिप्त० गु० स्पर्शहीन, जो लिप्त नहीं है।
निर्लेप० } गु० जिसका चिह्न नहीं वा लेश
निर्लेश० } नहीं, बिना लाग, सर्व।
निर्लोभ० गु० लोभ रहित, दाता।
निर्वन्ध० गु० छूटाहुआ।
निर्वाण० ना० पु० मोक्ष, अपवर्ग, लय, गु० वैकुण्ठवासी, मान होगया।
निर्वाणसुख० ना० पु० मोक्ष, मुक्ति, वैकुण्ठवास।
निर्बाधा० गु० बाधा रहित, अकंटक।
निर्वाह० गु० निबाह।
निर्वाहक० गु० निबाह करनेहारा।
निर्विकल्प० गु० भेद रहित, अनर्थ, कल्पना हीन।
निर्विकार० गु० विकारहीन, निर्दोष, अरोग।
निर्विघ्न० गु० विघ्नरहित, सानन्द निर्बाधा।
निर्वृत्ति० ना० स्त्री० मुक्ति, मृत्युआनन्द, उस मार्ग तरीक, पथ।
निर्वैर० गु० वैर भाव हीन।
निर्व्याज० गु० अचल, यथार्थ।
निर्व्याधि० गु० व्याधि हीन, अराग, अकंटक।
निर्हर० ना० पु० हरनेवाला।
निलज्ज० गु० निर्लज्ज, लज्जाहीन।
निलय० ना० पु० घर।
निवान० गु० नीचाई।
निवानी० स० क्रि० नवाना।
निवार० ना० स्त्री० कार, पट्टी सुतली।
निवारक० गु० बचानेवाला, रोकनेवाला।
निवारण० ना० पु० निषेध, रोक, बचाव।
निवारना० स० क्रि० रोकना, बचाना, बरजना
निवारत० क्रि० बचावत, रोकत, बर्जत।
निवारि० क्रि० बचाय कर, रोकि, बरजि।
निवारित० गु० बचायागया, बर्जागया।
निवावना० स० क्रि० नवाना।
निवास० ना० पु० बसने का स्थान, वास, घर।
निवासी० ना० पु० बसनेहारा, रहनेवाला।
निबिड़० गु० अधिक, सघन, निहायत।
नियुक्ति० अ० क्रि० प्राप्ति, वृद्धि।
निवृत्ति० ना० स्त्री० ठहराव, रुकावट, विश्राम, चैन।
निवेदन० ना० पु० प्रार्थना विनती, अर्ज।
निवेदनपत्र० ना० पु० अर्जी, विनयपत्र।
निवेदित० गु० अर्पित, विनय किया गया।
निवेशन० ना० पु० विवाह, शादी।
निशङ्क० गु० निडर, निस्सन्देह, बिन प्रयास।
निशा० ना० स्त्री० रात्रि।
निशाकर० ना० पु० चन्द्रमा।
निशागम० ना० पु० रात्रिका आगम, सन्ध्या साँझ, शाम।

निशाचर० ना० पु० राक्षस, चोर, उलूकादि, चन्द्रमा आदि नक्षत्र।
निशाटन० ना० पु० निशाचर।
निशि० ना० स्त्री० निशा।
निशिचर० ना० पु० निशाचर।
निशिनाथ० ना० पु० चन्द्रमा, चाद।
निशिमुख० ना० पु० सन्ध्या, साझ।
निशिभानु० ना० पु० चन्द्रमा।
निशीथ० ना० पु० आधीरात।
निशीश० ना० पु० चन्द्रमा, चाद।
निश्चय० ना० पु० निर्णय, निश्वास, गु० ठीक।
निश्चल० गु० स्थिर, अचल।
निश्चित० गु० निर्णीत।
निश्चिन्त० गु० चिन्तारहित, निरालम्बे।
निश्चेष्ट० गु० चेष्टारहित, मूर्च्छित।
निश्छिद्र० गु० निर्दोष छेदरहित।
निश्रेणी० ना० स्त्री० निसेनी, सीढ़ी, जीना।
निश्श्वास० ना० पु० श्वास, प्राणवायु।
निश्शेष० गु० अशेष, समस्त, सब।
निषाद० ना० पु० गाने में पहिला स्वर, चाण्डा ल सङ्करवर्ण, भेव, मलाह।
निषिद्ध० गु० जो कर्त्तव्यनहो वर्जित।
निषिद्धता० ना० स्त्री० निवारण, कर्त्तव्य रहित, इङ्कार।
निषेद० ना० पु० श्रद्र स, दविधा।
निषेध० ना० पु० इङ्कार, निवारण, कर्त्तव्य रहित।
निषेधित० गु० वर्जित, निवारित।
निष्क० ना० पु० हीरा, १६ टङ्कका प्रमाण।
निष्कण्टक० ना० पु० उपाधिरहित, बेखटक।
निष्कपट० गु० सत्य, सच्चा, छलहीन, भोला।
निष्कर्ष० ना० पु० निश्चय।
निष्कारण० गु० विना प्रयोजन, बे सबब।
निष्केवल० गु० एकही, सयक्र।
निष्क्रमण० ना० पु० संस्कार विशेष।
निष्ठ० गु० स्थापित, तत्पर, उत्तम, उत्कर्ष।
निष्ठमति० ना० स्त्री० उत्तमबुद्धि, उत्तमज्ञान्।
निष्ठा० ना० स्त्री० विश्वास, भरोसा।
निष्ठुर० गु० निठुर, निर्दय, कठोर, अप्रीति।
निष्ठुरता० ना० स्त्री० } कठोरता, निर्दयता,
निष्ठुरत्व० ना० पु० } निठुरता।
निष्पत्ति० ना० स्त्री० सिद्धि, समाप्ति।
निष्पन्न० गु० कृत, बना, सिद्ध।
निष्पादन० ना० पु० सम्पादन।
निष्पाप० } गु० पापरहित, निर्दोष।
निष्पापी० }
निष्प्रपञ्च० गु० छलहीन।
निष्प्रयोजन० गु० व्यर्थ, विनाप्रयोजन।
निष्फल० गु० फलहीन, वृथा, बेफायदह।
निस० ना० स्त्री० निशा।
निसक्त० गु० असक्त, पौरुषरहित।
निसङ्क० गु० निश्शङ्क।
निसङ्कट० गु० सङ्कटरहित।
निसन्धि० गु० ठोस, सन्धिरहित।
निसरना० अ० क्रि० निकसना।
निसांस० ग० आहभरना।
निसांसी० गु० तङ्ग, हैरान।
निसान० ना० पु० तूर्य, नक्कारह।
निसास० ना० पु० निश्वास।
निसि० ना० स्त्री० निशि।
निसित० गु० पैनी० तेज, धारदार।
निसैनी० ना० स्त्री० सीढ़ी, जीना।
निसोत० ना० पु० औषधि विशेष, गु० ठोस
निस्तार० ना० पु० मुक्ति, मोक्ष, उद्धार।
निस्तारा० ना० पु० निपटारा।
निस्तारना० स० क्रि० निस्तार करना।
निस्तेज० गु० प्रतापहीन, तेजरहित।
निस्तोक० ना० पु० चुकौता, निपटारा।
निस्पद० ना० पु० निश्चेष्ट, हिसाब
निस्पृह० गु० लालसाहीन।
निस्व० गु० निर्धन, दरिद्री।

निस्वना० गु० ध्वनि, शब्द।
निस्सन्देह० गु० सन्देहरहित, बेखटके।
निहग गु० नगा, अचित।
निहत्था० गु० औहथा, अस्त्र रहित, लूला, हाथ रहित।
निहाई० ना० स्त्री० लोहेकी वस्तु विशेष जिसपर सोना आदि गढते हैं।
निहाली० ना० स्त्री० रज, कपड़े।
निहार० ना० पु० व्यवहार, कुहिरा, समासमें यथा, तिमिनिहार में दिनरदुग, दृष्टि।
निहारना० स०क्रि०देखना, विलोकना,झांकना।
निहारा० स० क्रि० देखा।
निहुरना० अ० क्रि० लचना, झुकना, दबना।
निहुराना० स० क्रि० लचाना, झुकाना, दबाना।
निहोर० } ना० पु० कृपा, उपकार, विनती,
निहोरा० } फुसलाहट, खुशामद।
निक्षिप्त० गु० जो निक्षेप, कियाजावे, त्यागित।
निक्षेप० ना० पु० परित्याग, धाहर।
नींद० ना० स्त्री० औंघाई, निद्रा।
नींदना० अ० क्रि० सोना, स०क्रि० मुकरना।
नींदू० ना० पु० सोवैया।
नींब० ना० पु० वृक्ष विशेष, निम्ब।
नींबू० ना० पु० लाबू, फल विशेष।
नीक० गु० भला, अच्छा।
नीका० } गु० सुन्दर, भला, अच्छा।
नीको० }
नीच० गु० खोटा, कमीना,हीन, कुत्सित,निकम्मा। तले, हेठ)
नीचगामी० गु० जो नीचेजाता है, यथाजल।
नीचा० गु० ऊंचे के विरुद्ध, नमेव।
नीचाई० ना० स्त्री० हेठाई, नीचापन।
नीचे० अव्य० तले।
नीठ० गु० तुम्हारा।
नीति० ना० स्त्री० उचित, व्यवहार, रीति, बादूर।
नीतिज्ञ० गु० धार्मिक, न्यायी।
नींद० ना० स्त्री० नींद।
नींदना० स० क्रि० नामानना, मुकरजाना।
नीप० ना० पु० कदमवृक्ष।
नीपुर० ना० पु० सिर।
नीबी० ना० स्त्री० फेंटा, जो स्त्रियांभी बांधतीहैं।
नीबू० ना० पु० निम्बू।
नीम० ना० पु० नीम।
नीमन० गु० निमन।
नीमावत० ना०स्त्री० नीमानन्दसपासीका पन्थ।
नीर० ना० पु० जल, पानी।
नीरज० ना० पु० कमल, जो जलजातहो।
नीरय० गु० निर्दय, निष्फल।
नीरद० ना० पु० मेघ।
नीरधर० ना० पु० मेघ, समुद्र।
नीरस० गु० निरस रसहीन, फीका।
नीरोग० गु० निरोग, आरोग्य।
नीरोगी० गु० चंगा, भला, रोगहीन।
नील० गु० कृष्णवर्ण विशेष, काला, ना० पु० वस्तु विशेष जो वृक्षके पत्तों से बनाते हैं सुरत वानर की सेवा, १००००००००००००।
नीलक० गु० नाला, ना० पु० नालुरग का हरिय विशेष, बीजगणित में विशेष प्रमाण।
नीलकण्ठ० ना० पु० पक्षी विशेष, मोर, अग्नि और श्रीशंकरजी।
नीलगवय० ना० पु० नीलगाव, रोझ।
नीलगाव० ना० पु० रोझ।
नीलता० ना० स्त्री० } श्यामता, कालापन।
नीलत्व० ना० पु० }
नीलपर्वत० ना० पु० विन्ध्यका एकभाग, जो उड़ीसा के दक्षिणहै, हरिद्वार के समीप तीर्थ विशेष।
नीलपुष्पी० ना० स्त्री० विष्णुकान्ता, अलसी।
नीलबड़ी० ना० स्त्री० नीलकी बड़ी।
नीलम० } ना० पु०-मणि विशेष।
नीलमणि० }

नेत्राम्बु० ना० पु० आंसू।
नेत्रोपमा० ना० स्त्री० बादाम, आंखोंकी उपमा।
नैर्ऋत्य० ना० पु० पश्चिम और दक्षिण का कोण, राक्षस।
नैकट्य० ना० पु० निकटता।
नैक० गु० थोड़ा, अल्प।
नैडाना० अ० क्रि० झुकना, निहुरना।
नैना० ना० पु० नेत्र, पनहा।
नैपाल० ना० पु० ताना, देश विशेष, नीति का प्रतिपाल।
नैपाली० ना० पु० मनसिल, नेपालवासी।
नैपुण० गु० निपुण।
नैपुण्य० ना० पु० निपुणता।
नैमित्तिक० गु० समयी, निमित्तका।
नैमित्तिकदान० ना० पु० समयदाय देना।
नैया० ना० स्त्री० नावछोटी, खेवट, दासी।
नैयायिक० ना० पु० न्यायशास्त्र का ज्ञाता, तार्किक।
नैर्मल्य० ना० पु० निर्मलता।
नैवेद्य० ना० पु० देवता के भोजन की सामग्री, गुरुअर्पण।
नैष्ठिक० गु० विश्वासी, निष्ठायुत।
नैहर० ना० पु० स्त्री० का मैका।
नो० अव्य० नहीं।
नोखा०
नोखो० } गु० अनूठा, अजायब।
नोच० ना० पु० बकोट, चुटकी
नोचना० स० क्रि० बकोटना, चुटकी लेना।
नोन० ना० पु० लोन।
नोना० स० क्रि० दुहने के समय गाय के पैर बांधना, ना० पु० सीताफल विशेष।
नोनापानी० ना० पु० सवणाम्बु, समुद्रका जल।
नोनिया० ना० पु० लोनिया।
नोय० क्रि० दुहते समय गायके पांवबांधना।
नौखण्ड० ना० पु० पृथ्वी के नौ खण्ड।
नौगरी० ना० स्त्री० नवगिरी।
नौछावर० ना० पु० निछावर।
नौढ़ना० अ० क्रि० झुकना, निहुरना, आधीन होना।
नौढ़ाना० स० क्रि० झुकाना, निहुराना।
नौतना० स० क्रि० नेवतना।
नौता० ना० पु० नेवता।
नौमासा० ना० पु० गर्भ से नवें मास का उत्सव।
नौमि० क्रि० नमस्कार करताहूं।
नौमी० ना० स्त्री० नवमी, नवीं तिथि।
नौरतन० ना० पु० नवरत्न।
नौल० ना० पु० नवल।
नौसादर० ना० पु० औषधि विशेष।
न्यक्कार० ना० पु० झूला।
न्यग्रोध० ना० पु० बर्गद का वृक्ष।
न्यस्त० गु० सौंपाभया, सौंपित।
न्याय० ना० पु० धर्म, विचार, तर्कशास्त्र, विशेष फैसला।
न्यायक० ना० पु० न्याय करनेहारा।
न्यायशास्त्र० ना० पु० तर्कशास्त्र।
न्यायी० ना० पु० न्यायक, न्यायशास्त्र का जाननेहारा।
न्यार० ना० पु० चारा।
न्यारा० गु० अलग, निराला, अनूठा।
न्यारिया० गु० सचेत, चौकस।
न्यून० गु० छोटा, घाट, हीन, कम।
न्यूनकोण० ना० पु० छोटा कोना।
न्यूनता० ना० स्त्री०
न्यूनत्व० ना० पु० } घटती, कमी।
न्यूनवय० गु० कम उमर।
न्यूनाधिक० ना० पु० छोटा बड़ा।
न्यौतना० स० क्रि० नेवतना।
न्यौता० ना० पु० नेवता।

पंखा० ना० पु० बेना, बिजना।
पंखिया० गु० परोदिया, झगड़ालू।
पंखी० ना० पु० परवा डेना, छोय पखी, परन्द।
पंगत० } ना० स्त्री० पांति, श्रेणी, धरी।
पंगति० }
पंगुला० गु० लँगड़ा।
पचक० ना० स्त्री० सूत।
पचकना० अ० क्रि० ससना, सूजन उतरना।
पचखना० गु० पाचखण्ड वाला।
पचघरा० ना० पु० घर विशेष जिस में पांच घर हों।
पचतोरिया० } ना० पु० वस्त्रविशेष अर्थात्
पचतोलिया० } सारी ओढ़न थी।
पचना० अ० क्रि० सड़ना, गलना, भस्महोना, परिश्रम करना।
पचपचाना० अ० क्रि० गीला या ढीला या भीगा होना, पसीजना, सड़ना।
पचपन० गु० पचास और पांच, ५५।
पचमिल० गु० मिश्रित, मिलित।
पचमेल० गु० पचमिल।
पचम्पचा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।
पचलड़ा० ना० पु० } गु० जिसमें पांच लड़े हों।
पचलड़ी० ना० स्त्री० }
पचलोना० ना० पु० औषधि विशेष।
पचाडालना० स० क्रि० पचाना, सड़ाना और खापजाना, हजमकरजाना।
पचानवे० गु० नब्बे और पांच ६५।
पचाना० स० क्रि० पचाना, सड़ाना, हजम करना।
पचास० गु० पांच दहाई, ५०।
पचासी० गु० अस्सी और पांच, ८५।
पचीस० गु० बीस और पांच, २५।
पचीसी० ना० स्त्री० खेल विशेष।
पचूका० ना० पु० पिचकारी।
पचत्० क्रि० पचताहै, दुखपाता है, पकताहै।
पचोतर० } ना० पु० सैकड़ा पीछे पांच लेना,
पचोतरा० } पांच रुपये सैकड़ा।
पचौनी० ना० स्त्री० ओझ, झोझ।
पच्चर० ना० स्त्री० फची, ठेक।
पच्छिम० } पु० पश्चिम।
पच्छिम० }
पछड़ना० } अ० क्रि० गिरजाना, हटजाना,
पछरना० } आधीन होना।
पछताना० स० क्रि० पश्चात्ताप करना, पीछे को सोचना, अफसोस करना।
पछतावा० ना० पु० पश्चात्ताप, शोच।
पछना० ना० पु० गोंटी, खोदवारे, चीरा, अस्त्र विशेष।
पछनी० ना० स्त्री० शरीर के चमड़े में चीरा करना।
पछरा० गु० गिरपड़ा पीछे को हटा।
पछवा० ना० पु० पवन जो पश्चिम से आताहै।
पछाड़० ना० स्त्री० पटकन, पटकने का काम।
पछाड़ना० } स० क्रि० गिरादेना, आधीन
पछारना० } करना, पटकना।
पछाह० ना० पु० पश्चिम।
पछयाना० स० क्रि० पीछा करना।
पछियाव० ना० पु० पश्चिम का पवन।
पछाड़० ना० स्त्री० फटकन, पटकार, फटकने का काम।
पछोड़ना० } स० क्रि० फटकना, सूपमें डालके
पछोरना० } उछालना।
पछोड़ा० गु० निकम्मा, पाजी।
पंच० गु० पांच ५ ना० पु० जाति के चौधरी, कार्य्यादि के विचारक, सभा, ५ मनुष्य, कमान का रोदा।
पंचक० गु० स्त्री० पिसा, रोदह पांचकरना।
पंचकोश० ना० पु० पांचोरा अर्थात्, अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्द।
पंचगव्य० ना० पु० पांच पदार्थ जो गाय से प्राप्त होते हैं अर्थात् दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोमय।

पंचज्योनार० ना० पु० पाचप्रकार की ज्योनार अर्थात् भोज्य, भक्ष्य, लेह्य,चोर्प्य, पेय, ५।

पंचतत्त्व० ना० पु० पाचतत्त्व अर्थात् आकाश, वायु, अग्नि, जल, मिट्टी, ५।

पंचतन्त्र० ना० पु० पाचतन्त्र अर्थात् वशीकरण, मारण, उच्चाटन, मोहन, आकर्षण।

पंचत्व० गु० मृत्यु।

पंचदश० गु० पन्द्रह, १५।

पंचदशानर्थ० ना० पु० पन्द्रह अनर्थ अर्थात् चोरी, हिंसा, मिथ्या, दम्भ,काम, क्रोध,विस्मरण, वैर, अप्रतीति, भेद, मय, खेद, चिन्ता, लोभ, सर्वस्पर्द्धा, १५।

पचनखी० ना० स्त्री० गोह।

पंचपल्लव०ना०पु०पाँच वृक्षों की पत्ती वा डाली।

पंचपात्र० ना० पु० पूजाका पात्रविशेष।

पंचपुराणलक्षण० ना० पु० पुराण के पाच लक्षण अर्थात् सर्ग,प्रतिसर्ग,वंश,मन्वन्तर,वंशानुचरित।

पंचप्राण० ना० पु० पाचप्राण अर्थात् प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, ५।

पचभूत० ना० पु०पचतत्त्व।

पंचम० गु० पाचवा, रागका स्वरविशेष।

पचमांश० गु० पाचवाभाग।

पचमी० ना० स्त्री० पाचवीं तिथि, व्याकरण में पाचवाकारक।

पंचमुख० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

पंचम्यन्त०गु०जिसके अन्तमें पचमीका प्रत्ययहे।

पंचवक्त्र० ना० पु० श्रीमहादेव जी।

पंचविंश०
पंचविंशति० } गु० पचीस, २५

पंचविंशतितम० गु० पचीसवा।

पंचविंशप्रकृति० ना० स्त्री० पचीस प्रकृति अर्थात् अस्थि, मास, नर्क, रोम, नाडिका,वीर्य, मूत्र, रक्त,रसा,लार,भूख, प्यास, नींद, क्रांति, आलस्य, दौड़ना, चलना, पसारना, समेटना, कूदना, राग, द्वेष, लाज, भय, मोह, २५।

पंचनख० ना० पु० सिंह, व्याघ्र।

पंचविरोधी० गु० सबका वैरी, दुष्ट।

पंचशर० कामदेव।

पंचशाख० ना० पु० हाथ।

पंचसूक्ष्मवायु० ना० पु० पाचसूक्ष्म वायु अर्थात् नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनजय।

पचांगुल० ना० पु० दोनों अरण्ड, पाचअंगुल।

पचांगुली० ना० स्त्री० पाच अंगुली अर्थात् अंगुष्ठ, तर्जनी,मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका।

पचाध्यायी० ना० स्त्री० श्रीमद्भागवत के रासमण्डल के पाच अध्याय का समुदाय।

पचानन० ना० पु० श्रीमहादेवजी, सिंह।

पंचामृत० ना० पु० दही, दूध, घी, मधु, शक्कर की मिलौनी जो देवता हेतु बनाते हैं।

पचायत० ना० स्त्री० बहुत मनुष्यों की मति वा मनुष्यों का समूह,जिसमें झगड़ा निपटायाजाता है, वा जातिकी सभा वा समुदाय।

पचाल० ना० पु० देश विशेष।

पंचालिका० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया।

पचाली० ना० स्त्री० वेश्या, द्रौपदी।

पंचावन० गु० पचपन, ५५।

पचास० गु० पचास, ५०।

पचास्य० ना० पु० श्रीमहादेव जी, सिंह, गु० पाच मुखवाला।

पंचीकरण०
पंचीकृत० } गु० पाचकाकियाहुआ, वा पाच कियागया।

पक्षी० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।

पंजर० ना० पु० पासली, पाजर, पिंजरा।

पजरगत० गु० पिंजरे में।

पंजाब० ना० पु० देशविशेष जिसमें पाच नदियां हैं अर्थात् सतलज, व्यासा, रावी, चिनाव, जिहलम्।

पंजारी० पु० पमाव ऐसावा मनुष्य वा वस्तु।
पंजीरि० ना० स्त्री० ओषधिविशेष, जो जच्चा खाती है।
पट० ना० पु० कपडापद्धति, गिरने वा मारने का शब्द, द्वार वा किवाड आदि ढकना, गु० उलटा पुलटा पत्र।
पटकन० ना० स्त्री० पछाड़ चोट।
पटकना० स० क्रि० दे मारना, पटकदेना, अ० क्रि० चरचराना, फटना, ना० पु० कोका।
पटका० ना० पु० कमरबंद, कमर बांधने का कपड़ा।
पटकाजाना० अ० क्रि० दबना, पतितहोना, गिरना।
पटकाना०
पटकारना० } स० क्रि० पटकना, देमारना।
पटकीदेना०
पटखर० ना० पु० पुराना वस्त्र, यथा पटखर जीर्णवस्त्रमित्यमर।
पटड़ा० ना० पु० सिली बैठने के लिये काठका आसन, चौकी, पीढ़ी, पीढ़ा, तख्ता।
पटतर० ना० पु० तुल्य, सदृश, बराबर।
पटन० ना० पु० पटने का काम।
पटना० स० क्रि० छतका बनना, दबना, भर-जाना, भरना, भरपाना, ना० पु० नगर विशेष।
पटनी० ना० पु० नैया।
पटपट० ना० पु० धुनने वा वा मारने वा वा पीटने का शब्दविशेष, चटचट।
पटरा० ना० पु० पटड़ा, ऊजड़।
पटरानी० ना० स्त्री० रानी, शहजादी।
पटरी० ना० स्त्री० छोटापटड़ा, पटिया, सपरा।
पटल० ना० पु० अभ्रक, अबरक, ढक्कन, समूह।
पटवा० ना० पु० जातिविशेष, पटुआ।
पटवाना० स० क्रि० पाटना, भराना।
पटवारा० } ना० पु० धरती का लेखा
पटवारी० } लगानेहारा।
पटा० ना० पु० पटरा, पीढ़ा, पीढ़ी, पट्टलिया।
पटाक० ना० पु० पटाक, शराट।
पटाका० ना०, पु० पटाखा, आतशबाजी विशेष, धमाका।
पटाना० स० क्रि० भराना, चौका गोबर से लगाना, मिट्टी से लीपना।
पटपट० ना० पु० चटाचट।
पटाव० ना० पु० सांचाव, भराव, पत्थर जो द्वार वा छतपर डालते हैं।
पटिया० ना० स्त्री० पटरी।
पटीना० ना० पु० पक्षीविशेष।
पटीमा० ना० पु० वस्त्र छापने का बड़ा पत्थर।
पटीलना० स० क्रि० मारना, पीटना, आधीन करना।
पटु० गु० चतुर, निपुण, ना० पु० वस्तु, नकछिकनी, गु० सुन्दर।
पटुता० ना० स्त्री० चतुराई, निपुणता, सुन्दरता।
पटुआ० ना० पु० पाट, सन।
पटेर० ना० पु० पौधाविशेष, सींठी।
पटेरा० ना० पु० वृक्षविशेष।
पटेल० ना० पु० लठियाने का काम, प्रभुता, कुरसी, जातिमें प्रधान, महाराष्ट्र की पदवी।
पटेला० ना० पु० नावविशेष, ना० स्त्री० सरवन।
पटेली० ना० स्त्री० छोटा पटेला।
पटेलो० ना० पु० पटरा।
पटोलन० ना० पु० पटा।
पटोर० ना० पु० रेशमीवस्त्र, पाट।
पटोल० ना० पु० परवल।
पटोहिया० ना० पु० उल्लू।
पटौनी० ना० स्त्री० नैया, पटनी।
पट्ट० ना० पु० पट, पत्र।
पट्टन० ना० पु० नगर, पुर।
पट्टवस्त्र० ना० पु० रेशमी कपड़ा।
पट्टा० ना० पु० घोड़ेकी पटी, कुत्ते के गले में बांधनेका चमड़ा, कानों परसे रखायेहुये बाल,

लिखतग अर्थात् खत आदि की सनद।

पट्टी० ना० स्त्री० पाटी, बधनी, पाखपट्टा। किसी स्थान आदि का भाग, शीतकाण्ड।

पट्टू० ना० पु० ऊनी की चादर, ऊर्णवस्त्र विशेष।

पट्ठ० ना० स्त्री० जमीनसा, थोड़े दिन की बकरी।

पट्ठा० ना० पु० नरपाधा, पाना, कुश्ती लड़नेहारा, रागविशेष, जिसका लम्बपत्ताहो।

पठ० ना० पु० पढ़त।

पठकायन् ना० स्त्री० पाठक की पत्नी।

पठन० ना० स्त्री० पढ़न।

पठचाना० } स० क्रि० भजवाना।
पठाना० }

पठिया० ना० स्त्री० जमीनसा स्त्री, नई बकरी।

पठौना० ना० पु० } पठाना।
पठौनी०ना० स्त्री० }

पड़ना० अ० क्रि० गिरना, देश करना, आरम्भ करना, लटना।

पड़पड़ाना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, गिरना।

पड़ाना० स० क्रि० गिराना, छिपाना।

पड़ापड़० अव्य० बारबार मार।

पड़ापाना० स० क्रि० सहज से पाना, कोई वस्तु मार्ग आदि में पाना।

पड़ाव० ना० पु० ठहराव, टिकाव, टिकासर, टिकने का स्थान, सेना, भीड़।

पड़ायना० स० क्रि० पड़ाना।

पड़िया० ना० स्त्री० भैंस की बछिया।

पड़ोस० ना० पु० समीपता, निकटता।

पड़ोसिन्० ना० स्त्री० पड़ोसिनी स्त्री, समीप वासी स्त्री।

पड़ोसी० ना० पु० निकटवासी, पड़ोस रहनेहारा।

पढ़न० ना० स्त्री० पढ़ने का मार्ग।

पढ़ना० स० क्रि० बाचना, पाठकरना, जपना।

पढ़न्त० } ना० स्त्री० अध्याय, सरथा, विद्या,
पढ़न्ति० } टोटका।

पढ़ा० गु० चतुर, पण्डित, बुद्धिमान्।

पढ़ाना० स० क्रि० शिक्षा देनी, सिखलाना, नु ताना।

पढ़िन० ना० पु० मत्स्यविशेष, मछलीविशेष।

पढ्य० } गु० पढ़ा व पाठ्य।
पढ्यमान० }

पण० ना० पु० प्रतिज्ञा, अवस्था, कमाई, माल चार कौड़ियों अर्थात् बीसगण्डा कौड़ी।

पण्डा० ना० पु० पुजारी, देवालय का प्रधान।

पण्डित० गु० विद्वान्, गुणवान्, पढ़ा, बुद्धिमान्।

पण्डिताई० ना० स्त्री० पण्डितकाकाम वा विद्या।

पण्डितायन्० ना० पु० पण्डित की जोरू।

पण्डियायन्० ना० स्त्री० पाण्डे की जोरू।

पंडुब्बी० ना० स्त्री० जलपक्षी, मुर्गाबी।

पंडुखी० ना० स्त्री० कपोताकृति पक्षीविशेष, फाख़्तह।

पंडूरी० ना० स्त्री० पक्षीविशेष।

पतग० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।

पतंग० ना० पु० आग उड़नेवाला जन्तु, तुक्कल विशेष लकड़ीविशेष, रंगविशेष, सूर्य्य पक्षी, अग्नि, वृक्षविशेष।

पतंगा० ना० पु० चिंगारी, जन्तु पतंगविशेष।

पतझड़० गु० पत्तोंका गिरजाना, ना० स्त्री० ऋतुविशेष।

पतन० ना० पु० पटकन, पछाड़, गिरन।

पतना० अ० क्रि० पड़ना गिरपड़ना।

पतला० गु० दुबला, झीना, जो गाढ़ा न हो।

पतलाई० ना० स्त्री० दुर्बलता दुबलापन्।

पतवार० } ना० पु० कनहर नाव के पिछाड़ा
पतवाल० } का डाँड़विशेष।

पतत्रि० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।

पताका० ना० पु० चिह्न, निशान।

पताका० ना० स्त्री० ध्वजा, छोटी झंडी।

पताल० ना० पु० पाताल।
पति० ना० स्त्री० प्रभु, स्वामी, इज्जत, सुख्याति।
पतित० गु० भ्रष्ट, दोषी, जो गिरगया।
पतिदेव० } ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री, राम
पतिदेवता० } चंद्रिकाया, तू पतिदेवनका गुरु बेटी, तेरी यम मृत्यु कहावत चेटी।
पतिमा० ना० स्त्री० प्रतिमा।
पतिया० ना० स्त्री० पत्री, चिट्ठी।
पतियाना० स० क्रि० प्रतीति करना, भरोसा रखना।
पतियारा० ना० पु० भरोसा, प्रतीति, विश्वास।
पतिव्रता० ना० स्त्री० साध्वी, कुलवन्ती और सुधर्म स्त्री।
पतीरी० ना० स्त्री० चटाई विशेष।
पतीला० गु० पतला।
पतीला० ना० पु० बड़ी बटलोई, तौली, तसला।
पतीली० ना० स्त्री० छोटा पतीला।
पतुकी० ना० स्त्री० छोटी कराही, पतीली का पात्र।
पतुरिया० ना० स्त्री० वेश्या, गणिका।
पतुहिया० ना० स्त्री० पतोहू, बहू।
पतोह० } ना० स्त्री० बहू, पुत्रकी स्त्री।
पतोहू० }
पतौरा० ना० पु० सेंठाकी पत्ती।
पतौवा० ना० पु० पत्ती।
पत्तन० ना० पु० नगर।
पत्तर० ना० पु० पत्र, वर्क।
पत्तल० ना० स्त्री० पत्तोंकापात्र भोजनके लिये।
पत्ता० ना० पु० पान, दल, भगली, गहनाविशेष।
पत्ती० ना० स्त्री० पाती, भंग।
पत्थर० ना० पु० पाषाण शिला।
पत्नी० ना० स्त्री० भार्या, विवाहितानारी।
पत्यारो० ना० पु० पतियारा।
पत्र० ना० पु० पत्ता, चिट्ठी, पत्ता, चांदी सोने आदि का पत्र।
पत्ररथ० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।
पत्रा० ना० पु० तिथिपत्र, पत्री।
पत्रांक० ना० पु० पत्रकी सल्या।
पत्रिका० ना० स्त्री० चिट्ठी, पत्री।
पत्री० ना० स्त्री० चिट्ठी, पक्षी, वृक्ष, बाण, कमल।
पथ० ना० पु० मार्ग, बाट, राह।
पथरकला० ना० पु० बन्दूकविशेष।
पथरचट्टा० ना० पु० पौधाविशेष।
पथराना० अ० क्रि० पत्थर होजाना, कड़ा होना।
पथरी० ना० स्त्री० किरकिर, आकर, कंकरी चकमकका पत्थर जो मूत्रको बदकरता है, मूत्रीविरोध, पक्षाका भीतरीअङ्ग विशेष।
पथरीला० गु० भूमि जिसमें बहुत पत्थरहों।
पथिक० गु० पु० बटोही, मुसाफिर, राही।
पथ्य० ना० पु० रोगीका आहार, लाभकारी, उपकारी वस्तु, मुफीद।
पथ्या० ना० स्त्री० हड़।
पद० ना० पु० चरण, पाव, अधिकार, महिमा, पति, स्थान, शब्द स्वरूप, कलिमा।
पदग० } गु० पैदल, पियादा।
पदचर० }
पदच्युत० गु० महिमासे जो भ्रष्ट अधिकार से बदलजाना, बदलना।
पदज० ना० पु० पावकी अंगुली।
पदना० ना० पु० } पदकर, पदू, डरपोक-
पदनी० ना० स्त्री० } ना।
पदपद्धी० ना० स्त्री० एकप्रकारका नृत्य।
पदपद्म० ना० पु० पुष्करमूल, कमल के पत्ता, अधिकारका पत्र।
पदपीठ० ना० पु० खड़ाऊ, जूता।
पदम० ना० पु० पद्म।
पदवी० ना० स्त्री० पंति, पराक्रगाम, आस्पद, मार्ग, अधिकार।

पदवृत्त० ना० पु० शब्द, जो दो शब्दोंसे मिलित हों।

पदस्थ० ना० पु० जो अपनी पदवीपर स्थिरहै।

पदत्राण० ना० पु० जूता।

पदाघात० ना० पु० पैरकीमारु, चरणका घात।

पदाति० ना० पु० पैदल, पियादह, सेवक।

पदाना० स० क्रि० वायु छोड़ाना, डराना, खेल में हराना।

पदाभिषिक्त० ना० पु० राजस्थान में जो अभिषेचित हो।

पदार्थ० ना० पु० वस्तु, अनूप वस्तु और शब्द का अर्थ, द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ विशेष ५ समवाय ६ अभाव ७, ये सात।

पदिक० ना० पु० जड़ाऊ चौकी, हीरा।

पदुत्तम० ना० पु० सेंधानोन, उत्तमपदवी।

पदोड़ा० गु० पादू, पदक्कड़, डरपोक।

पद्दराग० ना० पु० पतंगवृक्ष।

पद्दली० ना० स्त्री० पाडरवृक्ष।

पद्धति० ना० स्त्री० पदवी, मार्ग, दस्तूर, रीति।

पद्म० ना० पु० कमल, चिह्न जो चरणादि में होता है, विष्णु का अस्त्रविशेष, सोनील, १०००००००००००००००।

पद्मक० ना० पु० पदमाक मुख्य सार।

पद्मकर्कटी० ना० पु० कमलगट्टा।

पद्मनाभि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक नाम।

पद्मराग० ना० पु० लालमणि, माणिक।

पद्मा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, माईं, नदीविशेष।

पद्माकर० ना० पु० कमलयुक्त तालाब, समुद्र धनवान्।

पद्माह्व० ना० पु० कमलगट्टा।

पद्मावती० ना० स्त्री० पुस्तक विशेष, पद्मिनी, छन्दविशेष, नदीविशेष।

पद्मिनी० ना० स्त्री० कमलिनी, उत्तम स्त्री।

पद्मी० ना० पु० हाथी।

पद्य० ना० पु० श्लोक, छन्द, नज़्म।

पधारना० अ० क्रि० विदाहोना, जाना, स्थिर करना।

पन० ना० पु० पण, अवस्थाबोधक यथा बालपन, पानी।

पनघट० ना० पु० पानी भरनेका घाट।

पनच० ना० स्त्री० रोदह, चिल्ला।

पनचक्की० ना० स्त्री० वह चक्की जो पानी से चलाते हैं।

पनचोरा० ना० पु० पानचिराय।

पनपना० अ० क्रि० मोटा होजाना, प्रफुल्लित होना।

पनपनाहट० ना० स्त्री० सनसनाहट।

पनमत्ता० ना० स्त्री० पानी और मानकी मिलौनी।

पनघ० ना० पु० ढोल।

पनवार० ना० पु० पौधाविशेष, राजपूतों में जातिविशेष।

पनवारा० ना० पु० पत्तल।

पनवारी० ना० स्त्री० जिस स्थान में पान उपजता है।

पनस० ना० पु० कटहल।

पनसल्ला० ना० पु० पियाऊ, जहां पथिकादि को पानी पिलाते हैं।

पनसा० गु० पौंसा, अलोना, ना० पु० छालादा।

पनसारा० ना० पु० औषधि, किराना आदि।

पनसारी० ना० पु० किराना बेचनेवाला।

पनसाल० ना० पु० पनसल्ला।

पनसोई० ना० स्त्री० छोटी नावविशेष।

पनहा० ना० पु० पना, चिह्न, सुराग, चोराव मसका।

पनहाना० अ० क्रि० दूध उतरना, पन्हाना।

पनहारा० ना० पु० पनभरा।

पनहारिन्० } ना० स्त्री० पानी भरनेहारी
पनहारी० } स्त्री।

पनही० ना० स्त्री० जूती।

पनारा० } नाο पु० मोरी नाबदान, बद
पनाला० } रो।

पनाली० ना० स्त्री० छोटा पनाला।

पनिया० ना० पु० पानी, जलका सांप।

पनियाना० स० क्रि० सींचना, भिगाना, अ० क्रि० पानी भर आना।

पनियाला० ना० पु० फलविशेष।

पनीहा० ना० पु० जलजन्तु।

पन्थ० ना० पु० मार्ग, मत, धर्म, अर्जन।

पन्था० ना० पु० पन्थ।

पन्थान० ना० पु० मार्ग, बाट, सड़क।

पन्थी० ना० पु० हरेनी, माया, जीव ईश्वर, अभिमन्यु पथिक, मतावलम्बी।

पन्नग० ना० पु० सांप।

पन्नगपति० ना० पु० शेष, सर्पराज।

पन्नगारि० ना० पु० गरुड़, मोर, नेवला।

पन्ना० ना० पु० रत्नविशेष, पत्र।

पन्नी० ना० स्त्री० सुवर्ण इत्यादि का बहुत सूक्ष्म पत्र।

पपड़ा० ना० पु० दुपड़ा, पपर।

पपड़िया० ना० स्त्री० आग पपड़ा।

पपड़ियाकथ० ना० पु० श्वेत कथा।

पपड़ी० ना० स्त्री० देवली, छिलका, परत, पाक विशेष।

पपड़ीला० गु० परतीला, पपड़ादार।

पपनी० ना० स्त्री० बरना।

पपरा० ना० पु० पपड़ा।

पपरी० ना० स्त्री० पपड़ी।

पपीहा० ना० पु० चूहेमार, तुमेती, पक्षी विशेष जो कभी पानी नदी आदिका नहीं पीता है।

पपैया० ना० पु० खिलौना विशेष, वृक्षविशेष वा उसका फल।

पय० } ना०पु० दूध, पानी, अमृत, दोष अव्य०
पय ० } ऊपर, तौभी।

पयद० ना० पु० मेघ, गाय।

पयोधि० ना० पु० समुद्र।

पयोदधि० } ना० पु० क्षीरसमुद्र अर्थात्
पयोनिधि० } दूध वा जलका समुद्र।

पयस्विनी० ना० स्त्री० विदारीकन्द, दुधारगाय आदि, श्वास जो आय काम प्रकाशित है।

पयान० } ना० पु० चाला, विदा।
पयाना० }

पयार० ना० पु० तृणविशेष।

पयोधर० ना० पु० स्तन, मूर्वा, मेघ, तृणविशेष, मदारवृक्ष, पर्वत, समुद्र, ताल।

पर० गु० दूसरा, दूर, पराया, शिरोमणि, परे, अव्य० ऊपर, द्वारा, उपरान्त, तत्पर।

परकना० अ० क्रि० सधना, अभ्यासी होना।

परकाज० ना० पु० परापकारार्थ, और का काम।

परकाजी० गु० पराया काम करनेवाला वा साधनेवाला, परार्थी।

परकाना० स० क्रि० सधाना, निसाना।

परकाय० गु० दूसरेका, आनका।

परकीया० ना० स्त्री० पराई स्त्री वा परपुरुष रत स्त्री।

परख० ना० स्त्री० परीक्षा, तजरुबा।

परखना० स० क्रि० परीक्षा करना, जांचना।

परखाई० ना० स्त्री० परखनेका काम वा उसका पैसा।

परखाना० स० क्रि० परीक्षाकराना, जांचवाना,

परखा० } गु० परीक्षक, परखैयाहारा।
परखैया० }

परचा० ना० पु० परीक्षा, इम्तहान।

परचून० ना० पु० आटा दालि आदि।

परचूनिया० ना० पु० बनिया, परचून बेचने हारा।

परची० ना० पु० परीक्षा, परखकरना, इम्तहान।

परछिद्र० ना० पु० पराया छेद, पराया भेद।

परजंक० ना० पु० खाट, सेज।

परजा० ना० स्त्री० प्रजा।

परत० ना० पु० लड़, पपड़ा, तह।
परतंत्र० ना० पु० पराधीन जो और के वश है।
परतल० ना० पु० डेराडण्डा।
परतला० ना० पु० डाल, जिसमें तलवार रख ते हैं।
परता० ना० पु० परेता, चरखी, बाध।
परती० ना० स्त्री० पजर, पछाड़ई धरती वा क पड़े स पवन करके अन्न साफ़ करना।
परतीत० ना० स्त्री० प्रतीत, निश्चय।
परदादा० ना० पु० दादा का बाप।
परदादी० ना० स्त्री० दादे की माता।
परदार० } ना० स्त्री० पराई स्त्री।
परदारा० }
परदेश० ना० पु० आनदेश, विदेश।
परदेशी० गु० अन्यदेशी, अनजान, विदेशी।
परद्रोह० ना० पु० परायावैर, आनका विरोध।
परद्रव्य० ना० पु० पराया धन।
परधन० ना० पु० पराया द्रव्य, परायाधन।
परन० ना० पु० प्रण, प्रतिज्ञा, परण।
परनाना० ना० पु० नाना का बाप, प्रमानामह।
परनाला० ना० पु० } मोरी, नावदान,
परनाली० स्त्री० } नाला।
परन्तु० अव्य० किंतु, लेकिन।
परपंच० ना० पु० प्रपंच, छल, धोखा, कपट।
परपंची० गु० प्रपंची, छली, कपटी, लपटी।
परपराना० अ० क्रि० चरपराना।
परपराहट० ना० स्त्री० चरपराहट।
परपुष्टा० ना० स्त्री० कोयल पक्षी।
परपूरन० गु० परिपूर्ण, भरपूर।
परपठ० ना० पु० हुण्डीका उतारा।
परब० ना० पु० पर्व्व, उत्सव, अध्याय, त्योहार।
परबल० गु० प्रबल।
परम० गु० उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, श्रेष्ठतम, बड़ा।
परमल० ना० पु० भर्वेष विशेष।
परमविरत० गु० योगेश्वर, सिद्ध, यतिलीन।
परमहंस० ना० पु० योगी विशेष।
परमज्ञान० ना० पु० शुद्ध विज्ञान।
परमा० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति।
परमाणु० ना० पु० अत्यन्त सूक्ष्मवस्तु।
परमात्मा० ना० पु० परब्रह्म, भगवान्, ईश्वर।
परमान्न० ना० पु० पायस, खीर।
परमायु० } ना० स्त्री० जीवनकाल, समस्त,
परमायुष० } आयु।
परमार्थ० ना० पु० पदार्थ वा व्यवहार जो सब से उत्तम है, कीर्ति, पुण्यतत्त्व वस्तु।
परमार्थी० गु० भक्त, कीर्तिमान् उत्तमकार्य्यी।
परमीश० } ना० पु० परमात्मा, सर्व्वेश
परमेश्वर० } रिश्व, ईश्वर।
परमेष्ठी० ना० पु० ब्रह्मा।
परमोधु० मुर्च्छना, बेहोशी।
परम्परा० ना० स्त्री० क्रमागत, प्राचीन।
परलोक० ना० पु० स्वर्ग, मरने के पीछे की स्थान।
परवर० } ना० पु० पलवल, तरकारी विशेष।
परवल० }
परवश० } गु० दूसराधीन, पराधीन।
परवस० }
परब्रह्म० ना० पु० परमेश्वर।
परमाद० ना० पु० प्रमाद।
परशु० ना० पु० फरसा।
परशुधर० } ना० पु० विष्णु नारायण का
परशुराम० } छठा अवतार।
परश्व० अव्य० परसों।
परस० ना० स्पर्श, छुआवट।
परसना० स० क्रि० छूना, परोसना।
परसिया० ना० पु० हँसिया।
परसी० ना० पु० मच्छी मार, रामचन्द्रिकाया यथा, बंक हिये न प्रभा सरसीसी, कर्दम काम वधू परसीसी, कामना कामिनि कोरि गसीसी, मीनमनुष्यन की नासीसी, क्रि० छुई, मिली।

परसूत० ना० पु० रोग विशेष ।

परसूतिया० } गु० जिसको परसूतरोगहो ।
परसूती० }

परसों० अव्य० अगिला वा पिछला, तीसरादिन ।

परस्पर० अव्य० आपुस में ।

परहित० ना० पु० परायाकाम, परस्वार्थ ।

परत्र० अव्य० परलोक में ।

परा० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह मिलता है उसका अर्थ कभी प्रभुता, कभी उलटाई, कभी अहंकार, कभी अधिकाई आदि होता है, ना० पु० श्रेणी, पंक्ति, कतार ।

पराक्रम० ना० पु० सामर्थ्य, पौरुष ।

पराक्रमी० गु० सामर्थी, बलवान् ।

पराग० ना० पु० फूलकी रज वा धूलि ।

परामुख० ना० पु० विमुख, मुखफिरा ।

पराजय० ना० पु० पराभव, भंगेल, हार ।

पराजयी० गु० पराजय करनेवाला ।

पराजित० गु० जिसकी पराजय हुआ, जो हार गया ।

पराजिता० ना० स्त्री० विष्णुकान्ता, पौधा ।

पराठा० ना० पु० एकप्रकार की रोटी विशेष ।

परात० ना० पु० बड़ीथाली, प्रातं ।

परातिक्ता० ना० पु० लाल पुनर्नवा ।

पराती० ना० स्त्री० परात, थाल ।

पराधीन० गु० जो निजवश में नहीं है, अस्वतंत्र ।

पराना० अ० क्रि० भागना, पजरियाना ।

परानी० ना० पु० प्राणी, जीवधारी ।

परान्न० ना० पु० और का अन्न अर्थात् दूसरे की कमाई वा लागत का भोजन ।

पराभव० ना० पु० पराजय, निरादर, हार ।

पराभूत० गु० जो पराजय होगया, जो हारगया ।

परामर्श० ना० पु० विचार, मंत्र, उपदेश ।

परामोधना० ना० पु० फुसलाहट ।

परायण० ना० पु० किसी काममें मनकी लगावट होनी, गु० तत्पर, तत्पर ।

पराया० गु० और का, द्वितीय का ।

परारा० गु० पराया ।

परालब्धि० ना० स्त्री० भाग्य, दैवगति, द्वितीय जन्म अर्थात् पिछले जन्म कर्म का फल भोग ।

परावती० ना० स्त्री० वागनधा नदी ।

परावह० ना० पु० मुख्य पवन ।

पराशर० ना० पु० वेदव्यासजी के पिता मुनि विशेष ।

परास० ना० पु० पलास वा रस्सी जो उसकी छाल से बनती है ।

परासर० ना० पु० पराशर ।

परास्त० गु० खराब, नष्ट, तहनाला ।

पराह० ना० स्त्री० भागाभाग, देशत्याग ।

पराह्ण० ना० पु० दोपहर दिन चढ़े के उपरान्त ।

परि० अव्य० अति, पास, जिस शब्द की आदि में यह युक्तहोता है उसका अर्थ कभी चौदिश कभी भाग, कभी त्याग, कभी अवधि, और कभी अधिक आदि होजाता है ।

परिकर० ना० पु० कमरफेंट ।

परिक्रमा० ना० स्त्री० प्रदक्षिणा ।

परिखा० ना० स्त्री० खाई ।

परिगणन० ना० पु० मापना, गिनना ।

परिग्रह० ना० पु० पड़ोसी, निकटवासी ।

परिघ० ना० पु० वज्र, पर्वत, भाप, सूर्य्य, चांद, शेष, जल और ब्योंहा ।

परिचय० ना० पु० मेल मिलाप, जान पहिचान ।

परिच्छद० ना० पु० परिधिरथ, परिसेवक ।

परिचर्य्या० ना० स्त्री० सेवा, खिदमत ।

परिचारक० ना० पु० सेवक, ढढोरिया, जमादार ।

परिचारी० ना० स्त्री० दासी, सेवकिन ।

परिच्छिन्न० ना० पु० परिमित, हीन, क्षीण ।

परिच्छेद० ना० पु० विभाग, अध्याय, पर्व ।

परिजन॰ ना॰ पु॰ परिवारके लोग, निकटवासी।

परिणाम॰ ना॰ पु॰ अन्त, समाप्ति, अवस्थान्तर की प्राप्ति।

परिणाह॰ गु॰ विशाल, मोटा, स्थूल।

परित ॰ अव्य॰ चारों ओर सर्वत्र।

परिताप॰ ना॰ पु॰ सन्ताप, दुःख, शोक, पीड़ा।

परितोष॰ ना॰ पु॰ सन्तोष, प्रसन्नता।

परित्राण॰ ना॰ पु॰ रक्षा, रखवाली, पालना।

परित्राता॰ गु॰ रक्षक, पालनेवाला।

परित्यक्त॰ गु॰ जो सर्वप्रकारत्यागित।

परित्याग॰ ना॰ पु॰ जो भलीभांति त्याग।

परिदेवन॰ ना॰ पु॰ विलाप, शोक, रोना।

परिधन॰ }
परिधान॰ } ना॰ पु॰ कपड़ापहिरनेका, रामायणे, जटा मुकुट परिधन मुनि चीरा।

परिधि॰ ना॰ स्त्री॰ वेष्टनसीमाप, मण्डल, घेरा।

परिधेय॰ गु॰ पहिरायागया।

परिनै॰ }
परिनैन॰ } ना पु॰ विवाह, नाम माला, परिननिवेशन, परिनैन, उद्वाह, जून, विवाह।

परिपक्व॰ गु॰ पक्का, पक्व।

परिपन्थी॰ गु॰ वैरी, शत्रु।

परिपाक॰ गु॰ पक्का, ना॰ पु॰ समाप्ति और अन्त।

परिपाटी॰ ना॰ स्त्री॰ अनुक्रम, उत्क्रम, रीति, दस्तूर।

परिपिष्टक॰ ना॰ पु॰ सीसा धातु।

परिपूरण॰ }
परिपूरन॰ } गु॰ समस्त, सम्पूर्ण, सर्व्व, सब।
परिपूर्ण॰ }

परिवाह॰ ना॰ पु॰ मुख्य पवन।

परिभद्र॰ ना॰ पु॰ नीमवृक्ष।

परिभव॰ ना॰पु॰ पराभव, अनादर, बदनामी।

परिभाषा॰ ना॰ स्त्री॰ व्याकरणादि शास्त्र का संकेत।

परिभ्रमण॰ ना॰ पु॰ फिरना, घूमना।

परिभृत॰ ना॰ पु॰ कोकिला, अच्छा सेवक, यथा, वनश्रियों परिभृत कोकिलापिस्इयपि इत्यमर रामचन्द्रिकाया, देखो शुभगिरिवर स कल शोभावर फूलबरण बहु फलनिफरे, सगसरभ ऋक्ष जन केशरिकेनन मनहु धरनि सुग्रीव धर, सगशिशा निराजे गज सुखगाजे परिभृतबोले चित्त हरे, शिरशुभचन्द्रधर परम दिगम्बर मानोहर अहिराज धरे, इस छन्द मे श्लेष है इस लिये परिभृत के दोनों अर्थ सिद्ध हैं।

परिमाल॰ ना॰ पु॰ सुगन्धित, सुवास।

परिमाण॰ ना॰ पु॰ परिच्छेद करना, बाट, बखरा।

परिमित॰ गु॰ जो नापागया, मिलाहुआ।

परिवर्त्त॰ ना॰ पु॰ बदला, फेराफेरी, भागाभाग।

परिवर्त्तन॰ ना॰ पु॰ बदला, फेराफेरी करना।

परिवाद॰ ना॰ पु॰ गाली, उलहना, निन्दा।

परिवार॰ ना॰ पु॰ घराने के लोग, पाल्यजन, वंश।

परिवृढ॰ ना॰ पु॰ स्वामी, नायक, मालिक।

परिवृत्त॰ गु॰ चारों ओर से घिराहुआ।

परिवेष॰ ना॰ पु॰ घेरा, गोलाई, परिधि।

परिवेषण॰ ना॰ पु॰ लपटना, भोजन का परोसना।

परिवेष्टित॰ गु॰ जो लपेटागया, घेरागया।

परिव्राजक॰ ना॰ पु॰ संन्यासी।

परिव्राजी॰ ना॰ स्त्री॰ स्योबा, पौधा मुण्डी।

परिशोध॰ ना॰ पु॰ ऋणको चुकायदेना।

परिश्रम॰ ना॰ पु॰ आयास, श्रम, थकान, क्लेश, मिहनत।

परिश्रमी॰ गु॰ कामकाजी, धुनी, मिहनती।

परिष्कार॰ ना॰ पु॰ शोभा, आभूषण।

परिष्कृत॰ गु॰ शोभित, आभूषित।

परिहरना॰ स॰ क्रि॰ त्यागना, छोड़ना, लेलेना।

परिहार॰ ना॰ पु॰ अवज्ञा, अपमान, और राजपूतों में जाति विशेष।

परिहास० ना० पु० व्यङ्ग्य वाक्य, हँसी ठट्ठा, खिल्ली, कौतुक।

परी० ना० स्त्री० तेल भाड़ से निम्पानन का पात्र विशेष, पारसी भाषा में अमरा को कहते हैं।

परीच्छित० गु० दूसर की इच्छानुसार।

परीक्षक० ना० पु० परीक्षा करनेहारा।

परीक्षा० ना० स्त्री० जाच, खोज, इम्तहान।

परीक्षित० गु० जो जाचा गया, परीक्षा किया गया, ना० पु० अर्जुनका पोता, राजा विशेष।

परु० ना० पु० पार, गाठ।

परुष० गु० कठोर ना० पु० कुवचन, गाली, निरसवचन, असद्वचन।

परुषाक्षर० ना० पु० कुवचन, असद्वचन।

परुष० } ना० पु० फालसा वृक्ष।
परुषक० }

परे० अव्य० उधर।

परेखा० ना० पु० पछितावा।

परेखना० स० क्रि० परेखना।

परेतराट्० ना० पु० जमराज।

परेता० ना० पु० परेतन, चरखी।

परेवा० ना० पु० कबूतर, प्रतिपत्तिथि।

परेश० ना० पु० श्रीभगवान्।

परेह० ना० पु० पलेव।

परोपकार० ना० पु० पराया स्वारथ करना।

परोपकारी० गु० जो पराया उपकार करे।

परोस० ना० पु० निकट, पास, समीप, पड़ोस।

परोसना० स० क्रि० भोजन थाली आदि में रखना।

परोसा० ना० पु० पाक जो किसी को भेजें या देवें।

परोसी० ना० पु० निकटवासी, पड़ोसी।

परोसैया० ना० पु० परोसनेवाला।

परोहन० ना० पु० वाहन, रथ, बहल, घोड़ा आदि।

परोहा० ना० पु० चरस, मोट।

परोक्ष० ना० पु० वनवासी, वानप्रस्थ, गु० गुप्त, अगोचर।

पर्खा० ना० स्त्री० परीक्षा।

पर्चाना० स० क्रि० भरकवाना, दानचीन करना, सुलगाना, जलाना।

पर्चूनिया० ना० पु० आटादाल बेचनेवाला।

पर्चूनी० ना० स्त्री० आटादाल बेचनेवाला।

पर्छती० ना० स्त्री० छोटी छपरिया जो मार्गमें भीतपर छायन हैं।

पर्छाँ० }
पर्छाईं० } ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब प्रतिरूप, अक्स।
पर्छाँया० }

पर्ज० ना० स्त्री० टालका हथकड़ा, रागिनीविशेष।

पर्ण० ना० पु० पत्ता, पान, प्रतिज्ञा, प्रण।

पर्णकुटी० } ना० स्त्री० पत्तोंसे छाया हुआ,
पर्णशाला० } झोंपड़ा।

पर्दादा० ना० पु० दादाका बाप, प्रपितामह।

पर्दादी० ना० स्त्री० दादा की माता, प्रपितामही।

पर्पट० } ना० पु० पित्तपापड़ा।
पर्पटक० }

पर्यङ्क० }
पर्य्यंक० } ना० पु० सेज, खाट, पलँग।

पर्य्यटन० ना० पु० भ्रमण।

पर्य्यटित० गु० भ्रमित, घूमाभया।

पर्य्यन्त० अव्य० तक, लग, ना० पु० अन्त न की सीमा।

पर्यवसान० ना० पु० चरम, समाप्ति।

पर्य्याय० ना० पु० क्रम, डौल, अवसर, दौर

परला० गु० फालसा, उसपारका।

पर्व० ना० पु० त्योहार, उत्सव, पत्रादिन, महान, अध्याय, मणि, हीरा, कुसमय।

पर्वत० ना० पु० पहाड़, तरकारीविशेष, मुनि वि०।

पर्वतनन्दिनी० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीजी।

पर्वतारि० ना० पु० इन्द्र।

पर्वतिया० ना० पु० लौकी, लौवा, पर्वतवासी।

पवङ्गम० ना० पु० प्लवग, वानर।
पवन० ना० पु० वायु, वायुकोण का स्वामी।
पवनसखा० ना० पु० अग्नि, आग।
पवनावर्त्ता० ना० स्त्री० कश्यप की एक स्त्री का नाम।
पवमान० ना० पु० पवन, वायु, हवा।
पवाई० ना० पु० घोड़े के पैरकी खावर, पकड़ी, जूते का एक पत्ता।
पवाड़० ना० पु० नीच लोग।
पवाँर० ना० पु० राजपूत, जातिविशेष।
पवाँरना० स० क्रि० चलाना, पठाना, फेरना।
पवि० ना० पु० वज्र।
पविपात० ना० पु० वज्रपड़ना, बीजलीपड़ना।
पवित्र० ना० पु० शुद्ध, पाक, निर्मल, चदोष।
पवित्रता० ना० स्त्री० शुद्धता, पाकी, निर्मलता।
पवित्रात्मा० ना० पु० धर्मात्मा, उत्तम।
पवित्री० ना० स्त्री० मुद्रिका कुशकी जो सब इत्यादि पूजा के समय पहिनते हैं वा धातु रचित।
पशु० ना० पु० जन्तु, जीवधारी, चतुष्पदादि।
पशुपति० ना० पु० श्रीमहादेवजी, ग्वालादि।
पशुपाल०
पशुपालक० ना० पु० ग्वाल, अहीर।
पश्चात्० अव्य० पीछे, अनन्तर।
पश्चात्ताप० ना० पु० पछताना, अफसोस।
पश्चात्तापी० गु० पछितानेवाला।
पश्चिम० ना० पु० पछाह।
पश्यति०
पश्यन्ति० क्रि० देखता।
पश्यतोहर० ना० पु० सामने चोरी करनेहारा, सुनार।
पषान० ना० पु० पषाण, पत्थर, ज्यों पनिहारी जेवरी सैचत कूपपषान, तुलसी रसना रामकहु पाप विविध अनुमान।
पसरना० अ० क्रि० फैलना।
पसली० ना० स्त्री० पाजर की हड्डी।
पसा० ना० पु० दोमुट्ठीभर।
पसाई० ना० स्त्री० चावल विशेष, तृणविशेष, जिसका दाना धान के सदृश होता है।
पसाउ०
पसाऊ० ना० पु० दया, कृपा, मेहरबानी।
पसाना० स० क्रि० भातका माड़ निकालना, चाढ़ना।
पसार०
पसारा० ना० पु० फैलाव, बिछाव।
पसारी० ना० पु० पनसारी।
पसारना० स० क्रि० फैलाना, बिछाना।
पसीजना० अ० क्रि० स्वेद छूटना, सितली छूटना, दयालु होना।
पसीना० ना० पु० स्वेद, सितली।
पसूज० ना० स्त्री० सीना, तुरपं।
पसूजना० स० क्रि० सीना, तुरपना, तागना, तुरपाना।
पसीव० ना० पु० पसीना।
पह० ना० पु० तड़का, भोर, अन्य० पास।
पहचान० ना० स्त्री० ज्ञान, चिन्हारी।
पहचानना० स० क्रि० जानना, चीन्हना।
पहनना० स० क्रि० पहिरना, ओढ़ना।
पहनावा० ना० पु० वस्त्र, कपड़ा।
पहर० ना० पु० समयका परिमाण जो तीनघंटे का होता है, एक दिन वा रातका चतुर्थांश।
पहरा० ना० पु० चौकी।
पहराना० स० क्रि० पहिराना, ओढ़ाना।
पहरावनी० ना० स्त्री० जो विवाह आदि में लोगों को कपड़ा पहराते हैं।
पहरिया०
पहरुआ०
पहरू० ना० पु० चकोरिया, चौकीदार, रोकदार, रखवारा।
पहरना० अ० क्रि० पहनना।
पहल० ना० पु० रूई का पर्त, पहलू, तिकोनादि की एक ओर।
पहला० गु० प्रथम, अव्वल।
पहाड़० ना० पु० पर्वत।

पाख० ना० पु० पत्त, १५ दिनका, भीति, विशेष जिसपर बरेंडी रखते हैं।
पाखण्ड० ना० पु० छल, धूर्त्तता, बनाव।
पाखर० ना० पु० घोड़े, वा हाथी के बांदने की मूल विशेष, जो लोहमय होती है।
पाखा० ना० पु० कोनरा, पाख।
पाग० ना० स्त्री० पगड़ी, रस, चासनी, मिलित।
पागना० अ० क्रि० रसमिलित होना, सनना, मिलना, स० क्रि० पगाना।
पागल० गु० उन्मत्त, सिड़ा।
पागा० ना० पु० घोड़ों का झुण्ड।
पागुर० ना० पु० चभार्द, जुगाली।
पागुराना० स० क्रि० चाबना, जुगाली करना।
पाचक० } ना० गु० रसोइया, स्वच्छ, अग्नि
पाचन० } कारक ओषधि, हाजिम।
पाछ० ना० पु० टीका, गाछी खुदाई।
पाछना० स० क्रि० टीका देना, गाछी खादना।
पाछे० } अव्य० पीछे।
पाछें० }
पाञ्चाल० ना० पु० देश विशेष।
पाञ्चाली० ना० स्त्री० द्रौपदी।
पाट० ना० पु० सारी जाति विशेष, पट्टा, चौड़ाई, टसर, रेशम, सिंहासन।
पाटकृमि० ना० पु० रेशमका कीड़ा।
पाटन० ना० स्त्री० छाना, छत, पटना।
पाटना० स० क्रि० छतवाना, भरदेना, छाना, किसी वस्तुकी बहुतायत करना, थापना।
पाटमहिषी० ना० स्त्री० पटरानी।
पाटम्बर० ना० पु० चन्दली, रेशमी कपड़ा।
पाटल० ना० पु० वर्ण विशेष, फूलवाले वृक्ष, लाल सफ़ेद अर्थात् गुलाब।
पाटला० ना० पु० पुष्प विशेष, ना० स्त्री० दुर्गा।
पाटलिपुत्र० ना० पु० शोणभद्र के पास एक प्राचीन नगर।
पाटा० ना० पु० पट्टा।
पाटी० ना० स्त्री० खाट में का लम्बा काठ, पटिया, मिठाई विशेष, चटाई विशेष, तख्ती लिखने की।
पाटीर० ना० पु० चन्दन।
पाठ० ना० पु० सबक, अध्याय, अध्ययन, सबक।
पाठक० गु० शिक्षक, ना० पु० विप्रजाति विशेष।
पाठशाला० ना० स्त्री० पढ़ने पढ़ाने का घर, चटसाल।
पाठा० ना० पु० युवाजन्तु, मल्लयुद्ध करनेहारा।
पाठी० ना० स्त्री० युवावस्थी, ना० पु० पढ़ा, पाठक।
पाठीन० ना० पु० सहस्र दाढ़का मच्छ विशेष।
पाठ्य० गु० जो पढ़ने के योग्यहै।
पाड़० ना० स्त्री० मरगज, डीगा।
पाड़ना० स० क्रि० गिराना, धनख निकालना।
पाड़ा० ना० पु० भैंसका बच्चा, टीला।
पाढा० ना० पु० मृग विशेष।
पाढ़ी० ना० स्त्री० नदी के पारजाना।
पाण० ना० पु० पीना, पत्ता, नये कपड़े की माँड़ी।
पाणि० ना० पु० हाथ।
पाणिग्रहण० ना० पु० विवाह, कन्यादान लेना।
पाणिनि० ना० पु० व्याकरणशास्त्रकर्त्ता, मुनि विशेष।
पाणिनीय० गु० पाणिनि मुनिका व्याकरण वा उसका पढ़ाने वा पढ़नेहारा।
पाण्डव० ना० पु० पाण्डुराजा के पांचपुत्र अर्थात् युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव।
पाण्डु० ना० पु० राजा युधिष्ठिर का पिता।
पाण्डुपुत्री० ना० स्त्री० रेणुका ओषधि।
पांडुर० ना० पु० वर्ण विशेष, अर्थात् उज्ज्वल, पाण्डुकी पत्ती, वृक्ष विशेष, पीला, सफ़ेद।
पाण्डुरा० ना० स्त्री० मषुहारा, पत्ती विशेष।

पाण्डे० ना० पु० ब्राह्मण की जाति वा पदवी विशेष।
पात० ना० पु० पतन, पत्र, पत्ता, कानका गहना विशेष।
पातक० ना० पु० पाप, पापकर्त्ता।
पातकी० गु० पापी, दोषी।
पातर० ना० स्त्री० वेश्या, गु० पतला, दुर्बल।
पातञ्जल० ना० पु० शास्त्र विशेष।
पाता० ना० पु० पत्ता, रक्षिता।
पाताल० ना० पु० नागलोक, नरक।
पातालाय० गु० पाताल गामी।
पाती० ना० स्त्री० पत्री, चिट्ठी पत्ती।
पात्र० ना० पु० बर्तन, भाण्डा, गु० उचित, योग्य, उत्तम।
पाथ० ना० पु० जल, पानी।
पाथना० स० क्रि० गोबरसे कण्डे वगैरे बनाना, थोपना, जोड़लगाना।
पाथर० ना० पु० पत्थर।
पाथेय० ना० पु० पथम व्ययकरनेकी सामग्री।
पाथोज० ना० पु० कमल।
पाथोद० ना० पु० मेघ।
पाथोधि० ना० पु० समुद्र।
पाद० ना० पु० पद, चरण, चोथाभाग, गुदशब्द, दूसरी।
पादकटक० ना० पु० बिछुआ।
पादना० अ० क्रि० टर्रमारना, पादमारना, हुसरना, गुदा स शब्द मारना।
पादप० ना० पु० वृक्ष, पेड़।
पादांगद० ना० पु० बिछुआ, पायका भूषण।
पादानोन० ना० पु० लोन विशेष।
पादार्घ० ना० पु० जागार, माठी।
पादार्पण० ना० पु० पैरदना।
पादुका० ना० पु० खड़ाऊ, जूती।
पादूकृत० ना० पु० चमार, मोची।
पादोदक० ना० पु० पायका धोवन।
पाद्य० ना० पु० पायधोने क पानी।
पाधा० ना० पु० शिक्षक, लाल।
पान० ना० पु० ताम्बूल, ताम्बोल, पत्ता, पाण पाणि।
पानदान० ना० पु० पान रखनेका पात्र विशेष।
पाना० स० क्रि० उपार्जन करना, मिलना।
पानिप० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, सुन्दरता।
पानी० } ना० पु० जल, वीर्य, धातु, भड़क,
पानीय० } पति, इज्जत, आबरू।
पान्थ० ना० पु० पथिक, मुसाफिर।
पाप० ना० पु० अधर्म, कुकर्म, अपराध, दोष।
पापखण्डन० ना० पु० पापनाशन।
पापड़० ना० पु० बहुत पतले फुलरा भूनके।
पापड़ा० ना० पु० पोधाविशेष।
पापड़ाखार० ना० पु० केले के वृक्षको जलायके क्षार को जो पापड़ों में लगाते हैं।
पापरूपी० गु० पापकी मूर्त्ति, अधम शरीर।
पापरोग० ना० पु० कोढ़, माता विशेष, शीतला विशेष।
पापात्मा० गु० पापिष्ठ, अधर्मी, काफिर।
पापिन० } ना० स्त्री० दोषिनी, पाप करने
पापिनी० } हारी।
पापिया० ना० पु० एरण्ड, वृक्ष विशेष, जिसके फलको बङ्गाली खाते हैं।
पापिष्ठ० गु० पापात्मा, अधर्म की मूर्त्ति, हिंसक।
पापी० गु० अपराधी, गुनहगार।
पामर० गु० नीच, अधम, तुच्छ।
पामरी० ना० स्त्री० नीचकी स्त्री, रेशम, वस्त्र विशेष।
पायक० ना० पु० पदल, सेवक, पैदल योद्धा।
पायद० ना० पु० डौंजा।
पायन्त० ना० पु० } खाटका वह ओर जिधर
पायन्ती० स्त्री० } पगरखते हैं।
पायल० ना० स्त्री० पायकाभूषण, अर्थात् पायजेब आदि गु० सुचाल।
पायस० ना० पु० खीर।

पाय० ना० पु० खाट आदि का पैर, फारसी शब्द है।
पार० ना० पु० नदादि का परला तीर।
पारख० ना० पु० परीक्षक, जांचनेहारा, परख।
पारखी० गु० परीक्षक, परखनेहारा।
पारग० ना० पु० पारजाना।
पारण० ना० पु० उपवास के पीछे भोजन मेवा।
पारथ० ना० पु० अर्जुन, वाक्ये यथा, पारथ के स्वारथ कियो वा स्वारथ भगवान
पारथी० ना० स्त्री० पालथी।
पारद० ना० पु० पारा।
पारदारिक० ना० पु० परस्त्रीगामी, व्यभिचारी।
पारन० ना० पु० पारण।
पारना० ना० पु० उपवास का खोलना,स० क्रि० निवेड़ना, गिराना, पालना।
पारल० ना० पु० पौधाविशेष।
पारलौकिक० गु० जो परलोक चाहै।
पारब्रह्म० ना० पु० परब्रह्म, परमात्मा।
पारस० ना० पु० लोहेका आकर्षक पत्थर विशेष, जिसको मुद्धलोग सोहा एक प्रकार का कहते हैं।
पारसपीपल० ना० पु० वृक्षविशेष।
पारसाल० ना० पु० अगला या पिछला वर्ष, यह शब्द फारसी का है।
पारसी० ना० स्त्री० पारसिक देशकी भाषा, ना० पु० वा उस देश के निवासी, जाति विशेष।
पारसीक० ना० पु० पारसी, घोड़ा।
पारा० ना० पु० पारद, धातु विशेष।
पारायण० ना० पु० पुराण आदिका सङ्कल्प पूर्वक पाठ, पूर्णता।
पारावत० ना० पु० कबूतर, कपोत।
पारावार० ना० पु० नदी के दोनों तट, समुद्र।
पारि० ना० स्त्री० पाड़, जगन दूपरी।
पारिजात० ना० पु० कल्पवृक्ष, कमल, हरसिंहार।
पारिजाती० ना० स्त्री० तेजपत्र।
पारितोषिक० गु० जिस से सन्तुष्ट हो, इनाम
पारिभद्रक० } ना० पु० वृक्ष औषधि।
पारिभव० }
पारिभाषिक० गु० शास्त्र में सुगमता के लिये संज्ञा मानली है।
पारिषद० ना० पु० सहचर, देखवैया।
पारिषद्रदा० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
पारिहार्थ० ना० पु० वृक्ष।
पारी० ना० स्त्री० गुड़की भेली, बारी पन्ती।
पार्थिव० ना० पु० श्रीशिवजी, उद्भिद् योनि राजा, मृत्तिका से निर्मित।
पार्वण० ना० पु० पर्व में श्राद्ध विशेष।
पार्वती० ना० स्त्री० श्रीभवानी, हिमालय जाता।
पार्श्व० ना० पु० बाया वा दाहिना पाजर, अव्य० पास, समीप।
पार्श्ववर्त्ती० ना० पु० निकटवर्ती।
पाल० ना० पु० नाव दौड़ाने के लिये टांगने काहिई वस्तु, खाप तम्बू, घास या पत्तका पर्त जिसमें आम आदि पकाते हैं, सिरकी की बनी वस्तु विशेष।
पालक० ना० पु० साग विशेष, पालनेहारा।
पालकजूही० ना० स्त्री० औषधि, वृक्ष विशेष
पालकता० ना० स्त्री० पालना, पालने का काम।
पालकी० ना० स्त्री० शिविका, डोली विशेष।
पालक्य० ना० पु० पालकका साग।
पालन० ना० पु० पोषण, पक्ष, रक्षा, परवरिश।
पालना० ना० पु० हिंडोला, स० क्रि० पालन करना।
पालव० ना० पु० वृक्षकी चोटी या शाखा।

पाला॰ना॰ पु॰ शीत, जाड़ा, कोहर, हिम।
पालागन॰ ना॰ पु॰ पायछूना, प्रणाम।
पालाश॰ ना॰ पु॰ ढाक का वृक्ष, गु॰ हरित।
पालि॰ ना॰ स्त्री॰ मागधी, प्राकृत भाषा जिस को स्याम आदि देशके पण्डित सीखते हैं।
पालिक॰ ना॰ पु॰ पालक, खाट।
पालिकोण॰ ना॰ पु॰ परिधि का कोना।
पालित॰ गु॰ पाला गया, रक्षित।
पालिन्द्री॰ ना॰ पु॰ गामा, मूसा, पोआ।
पाली॰ ना॰ स्त्री॰ बगाल देशमें तोलने आदि का यन्त्र, जिस स्थान में पक्षी लड़ते हैं।
पालय॰ ना॰ पु॰ पालने के योग्य।
पावक॰ ना॰ पु॰ अग्नि, कुसुम।
पावड़ा॰ ना॰ पु॰ पावड़ा।
पावन॰ ना॰ पु॰ पाक, पवित्र, जल।
पावना॰ स॰ क्रि॰ पाना।
पावरी॰ ना॰ स्त्री॰ खड़ाऊं।
पावस॰ ना॰ स्त्री॰ वर्षाऋतु, बरसात।
पाश॰ ना॰ पु॰ पासा, फास।
पाशा॰ ना॰ पु॰ पाशा।
पांशुभव॰ ना॰ पु॰ खारी, लोन।
पाषाणु॰ ना॰ पु॰ पाषाणभेद।
पाषण्ड॰ ना॰ पु॰ वेदविरुद्ध, अतिदुराचार, कपट वा कपटी।
पाषण्डता॰ ना॰ स्त्री॰ अपनिन्दा, कपट।
पाषण्डी॰ गु॰ कपटी, वेदविरुद्धी, दुरात्मा।
पाषाण॰ ना॰ पु॰ पत्थर।
पास॰ अव्य॰ समीप, निकट, ना॰ पु॰ पाश।
पासपति॰ ना॰ पु॰ वरुण देव।
पासी॰ ना॰ स्त्री॰ फांसी, ना॰ पु॰ वरुणदेव, नीचजाति विशेष, फासी डालने हारा।
पाहन॰ ना॰ पु॰ पत्थर।
पाहनकृमि॰ ना॰ पु॰ एक कीड़ा होता है, जो पत्थर में अपना घर बनाता है।
पाहरू॰ ना॰ पु॰ चौकीदार, पहरूआ।
पाहि॰ अव्य॰ दयाप्रीहना, त्राहि, रक्षाकरो।
पाही॰ ना॰ स्त्री॰ आनगांव में खेती वा आनगांव की आसामी, अव्य॰ पास।
पाहुन॰ ना॰ पु॰ } अतिथि, मेहिमान।
पाहुना॰ ना॰ पु॰ }
पाहुनी॰ स्त्री॰ }
पिंड॰ गु॰ प्रिय, ना॰ पु॰ स्वामी, प्रीतम।
पिक॰ ना॰ पु॰ कोकिल, कोयल।
पिकप्रिय॰ ना॰ पु॰ आम्रवृक्ष, आम।
पिकवयनी॰ } गु॰ जिसकी वा स्वर पिकके समान हो।
पिकबैनी॰ }
पिकवल्लभ॰ ना॰ पु॰ आमवृक्ष।
पिघलना॰ अ॰ क्रि॰ पिघलना, गलना।
पिघलाना॰ स॰ क्रि॰ पिघलाना, गलाना।
पिंगल॰ ना॰ पु॰ छन्द शास्त्र नाम, नाग विशेष, गोला, काच, गु॰ वर्ण विशेष।
पिंगला॰ ना॰ स्त्री॰ श्वास विशेष जो दहिने पुट में नासिका के प्रकाशित होती है।
पिंगरा॰ ना॰ पु॰ पालना, हिंडोला।
पिचकना॰ अ॰ क्रि॰ दबना, सिकुड़ना, सिमटना।
पिचकारना॰ स॰ क्रि॰ दबाना, समेटना, बोरना।
पिचकारी॰ ना॰ स्त्री॰ फचूका, पदमकला, जिस में रंगादि भरके छोड़ते हैं।
पिचपिचा॰ गु॰ लिलपिला, ढीला।
पिचिका॰ } ना॰ पु॰ पिचकारी।
पिचुका॰ }
पिचुमन्द॰ ना॰ पु॰ नींबका वृक्ष।
पिछलन॰ ना॰ पु॰ फिसलना, रिसलना।
पिछलना॰ अ॰ क्रि॰ हटना, फिसलना।
पिछला॰ गु॰ पिछाड़ी का पीछेका।
पिछलाना॰ स॰ क्रि॰ पीछे करना या पीछे करना।
पिछवाड़ा॰ ना॰ पु॰ } पीछा, पीछेकास्थान।
पिछवाड़ी॰ स्त्री॰ }

पिछाड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ पीछे के पैर बांधने की रस्सी पश्चात्, पीछे।
पिछान॰ ना॰ स्त्री॰ पहिचान।
पिछाने॰ पु॰ जानेहुये, पहिचाने भये।
पिछूत॰ अव्य॰ पीछे, उपरांत ना॰ पु॰ घरका पिछवाड़ा।
पिछेत॰ ना॰ पु॰ घरका पिछवाड़ा।
पिछौरा॰ ना॰ पु॰ चद्दर, दुपट्टा।
पिछौरी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा पिछौरा।
पिंजर॰ } ना॰ पु॰ पक्षी आदि रखनेका घर
पिंजरा॰ } जो काठ या लोहादिका बनता है।
पिंजल॰ ना॰ पु॰ तीतर, पक्षी।
पिंजूला॰ ना॰ पु॰ वानरका मेल।
पिट॰ ना॰ पु॰ नद्दकुल।
पिटना॰ अ॰ क्रि॰ मारखाना।
पिटारा॰ ना॰ पु॰ कपड़ा आदि रखने का डब्बा जो तृणादि का होता है।
पिटारिया॰ } ना॰ स्त्री॰ छोटा पिटारा।
पिटारी॰ }
पिंड॰ ना॰ पु॰ तन, देह, गोलवस्तु, श्राद्ध का गोलाकार अन्न, जो चावलादि के मृतक हेतु देते हैं, क्षेत्र, खेत, गात्र।
पिंडफला॰ ना॰ स्त्री॰ कड़ुई तोमड़ी।
पिंडाली॰ ना॰ स्त्री॰ पंगली।
पिंडा॰ ना॰ पु॰ पिण्डा, टुकड़ा, मैनफल।
पिंडारा॰ ना॰ पु॰ लुटेरा, चालाक।
पिंडाराव॰ ना॰ पु॰ मैनफल।
पिंडालुका॰ ना॰ पु॰ पिण्डालू।
पिंडालू॰ ना॰ पु॰ फलविशेष, ओषधि जड़।
पिंडी॰ ना॰ स्त्री॰ महादेवजी के लिंगका ऊपरी भाग, पिण्डली, वालू से बनाईहुई, छोटी वेदी।
पिंडीमुस्त॰ ना॰ पु॰ नागरमोथा।
पिंडुक॰ ना॰ पु॰ धूप।
पिण्डोल॰ ना॰ पु॰ माटी विशेष, पोतना।
पिण्याक॰ ना॰ पु॰ पीना, खली।
पितर॰ ना॰ पु॰ पूर्वज, पितृ।

पितराई॰ ना॰ स्त्री॰ पित्र के तांबे पीतल के सम्बन्धी, पीतलका मुर्चा।
पितरौ॰ ना॰ पु॰ माता, पिता।
पितरौला॰ ना॰ पु॰ पितृ पूजने का पात्र।
पितलाना॰ अ॰ क्रि॰ पितराई से बिगड़ना।
पिता॰ ना॰ पु॰ जनक, बाप।
पितामह॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा, पिता का पिता, दादा, आजा।
पितामही॰ ना॰ स्त्री॰ पिताकी माता, दादी।
पितिया॰ ना॰ पु॰ चाचा, बापका भाई।
पितु॰ ना॰ पु॰ पिता, बाप।
पितृ॰ ना॰ पु॰ पिता, देवता, पुरखा।
पितृघातक॰ ना॰ पु॰ जो पुत्र पिता का वैरी होवे।
पितृपति॰ ना॰ पु॰ धर्मराज।
पितृपक्ष॰ ना॰ पु॰ आश्विन मासका कृष्णपक्ष, कनागत।
पितृव्य॰ ना॰ पु॰ बड़ाचचा, पिता का भाई।
पितृऋण॰ ना॰ पु॰ पिताका ऋण।
पित्त॰ ना॰ पु॰ शरीरकी धातु विशेष, सफरा।
पित्तलोह ना॰ पु॰ पीतल।
पित्ता॰ ना॰ पु॰ शरीर का भीतरी अंग जिस में पित्त रहताहै, क्रोध, कलेजा, जहरा।
पित्तिनी॰ ना॰ स्त्री॰ शालपर्णी।
पित्तपापड़ा॰ ना॰ पु॰ औषधि, पौधाविशेष।
पिधान॰ ना॰ पु॰ आच्छादन, ढकना, पोशाक।
पिन॰ ना॰ पु॰ शारंग, शब्द।
पिनकी॰ ना॰ स्त्री॰ पीनकवाला।
पिनपिनाना॰ अ॰ क्रि॰ टकोरना, ठुनठुनाना।
पिनहाना॰ स॰ क्रि॰ पहिराना।
पिनाक॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी का धनुष, नाना विशेष।
पिनाकी॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी।
पिन्ना॰ ना॰ पु॰ पीना खली।
पिन्नी॰ ना॰ स्त्री॰ चावल आदि का लड्डू।

पिपासा० ना० स्त्री० प्यास, तृषा।
पिपासित० गु० प्यासा, तृषित।
पिपील० ना० स्त्री० चींटी, रामायणे यथा, जिमि पिपील चह सागर थाहा।
पिपीलक० ना० पु० चींटा।
पिपीलिका० } ना० स्त्री० चींटी।
पिपीलिका० }
पिप्पल० ना० पु० पीपल वृक्ष।
पिप्पली० ना० स्त्री० पीपली।
पीय० ना० पु० प्रिय, प्रीतम, स्वामी, पति।
पियाना० स० क्रि० पिलाना।
पियार० ना० पु० प्यार, लाड़, दुलार।
पियारा० गु० प्यारा, लाड़ला, दुलारा।
पियाल० ना० पु० चिरौंजी, धान वा चांदी की घास।
पियासी० ना० स्त्री० मछली विशेष, तृषित स्त्री।
पिरकी० ना० स्त्री० फुड़िया।
पिराना० अ० क्रि० दुखना, दर्द होना।
पिरोना० स० क्रि० गूथना, तागना, छेदना।
पिलई० ना० स्त्री० तापतिल्ली।
पिलचना० अ० क्रि० चिपटना, लिपटना।
पिलना० स० क्रि० भावावरना, घुसड़ना, अ० क्रि० पिल्ना।
पिलपिला० गु० चिपचिपा, ढीला, नम्र।
पिलपिलाना० स० क्रि० ढीलाकरना, नम्र करवाना।
पिलपिलाहट० ना० स्त्री० कोमलता, ढीलापन।
पिलाई० ना० स्त्री० पीने के बदले देना वा पीने का दाम।
पिलाना० स० क्रि० पानकराना, घुसेड़वाना।
पिलुआ० ना० पु० पिल्लू, कीट।
पिला० ना० पु० कुत्ते का बच्चा।
पिल्ली० ना० स्त्री० कुत्ते की बच्ची।
पिल्लू० ना० पु० कीट विशेष।
पिशाच० ना० पु० प्रेतविशेष, भूत।
पिशाचग्रस्त० गु० जिस को पिशाच लगा है।
पिशाची० ना० स्त्री० प्रेतिनी, पिशाचकी पत्नी।
पिशितौदन० ना० स्त्री० केसर।
पिशुन० गु० दुष्ट, कठोर, चुगल।
पिशुनता० ना० स्त्री० दुष्टता, कठोरता, चुगली।
पिसाई० ना० स्त्री० पीसने का काम वा पैसा।
पिसान० ना० पु० आटा, चून।
पिसाना० स० क्रि० पिसवाना, बुकवाना।
पिसू० ना० पु० पिस्सू, छोटा जन्तु विशेष।
पी० गु० प्रिय, ना० पु० स्वामी, प्रीतम।
पीक० ना० स्त्री० पान के रसयुक्त थूक।
पीच० ना० स्त्री० माड़।
पीचू० ना० पु० फल विशेष।
पीछ० ना० स्त्री० माड़।
पीछा० ना० पु० पिछला भाग, पिछाड़ी पड़ना।
पीछे० अव्य० पश्चात्, निदान।
पीटना० स० क्रि० कूटना, मारना।
पीठ० ना० पु० पृष्ठ, देहका पिछला भाग, आसन विशेष।
पीठसार० ना० पु० पलंग।
पीठा० ना० पु० भोजन विशेष।
पीठी० ना० स्त्री० धोई और पीसी हुई उरद की दाल, पीठ।
पीठौता० ना० पु० पक्का पूआ।
पीड़० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दया।
पीड़क० गु० पीड़ादायक।
पीड़ना० अ० क्रि० पीड़ित होना, स० क्रि० दरड देना।
पीड़ा० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दर्द।
पीड़ाकर० गु० पीड़ादायक।
पीड़ित० गु० दुःखित, क्लेशित, रंजीदह।
पीढ़ा० ना० पु० पटरा, मचिया।
पीढ़ाबन्ध० ना० पु० पुरखों की आदि का सन्तान विशेष, दीवानह।
पीढ़ी० ना० स्त्री० छोटापीढ़ा, वंशकी परम्परा।

पीत० गु० पीला, ना० स्त्री० प्रीति, कुसुम, ना० पु० मलय चन्दन, पियाबासा।
पीतक० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
पीतद्रुमा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।
पीतपुष्पा० ना० स्त्री० ककोड़ी, सिसादा।
पीतपुष्पिका० ना० स्त्री० सहदेवी।
पीतफेनु० ना० पु० रीठा।
पीतम० गु० प्रियतम, मित्र, प्यारा।
पीतरक्त० ना० पु० पद्माक।
पीतरस० ना० पु० हल्दी।
पीतल० ना० पु० धातु विशेष।
पीतला० गु० पीतलका।
पीतसार० ना० पु० मलयचन्दन।
पीता० ना० स्त्री० हल्दी, जूही।
पीताम्बर० ना० पु० रेशमी पीलावस्त्र, श्रीरामचन्द्रजी, श्रीकृष्णचन्द्रजी।
पीन० गु० मोटा, स्थूल, पुष्ट, भारी।
पीनक० ना० स्त्री० अफीम की पीन।
पीनना० स० क्रि० रूई के अवयवों को पृथक् पृथक् करना।
पीनपयोधर० ना० पु० भारीस्तन, कठोर कुच।
पीनस० ना० पु० नाकरोग विशेष, ना० स्त्री० पालकी विशेष, नाव विशेष।
पीना० स० क्रि० सुड़कना, पानकरना, ना० पु० खली।
पीपल० ना० पु० वृक्ष विशेष।
पीपला० ना० पु० खड्गादि नोक वा अंगिया मुनि।
पीपलामूल० ना० पु० पिप्पली का मूल।
पीपलि० ना० स्त्री० पिप्पली, पीपरी।
पीपा० ना० पु० मद्यादि रखने के लिये काठका बर्त्तन विशेष।
पीब० ना० स्त्री० मांस, राद।
पीबियाना० अ० क्रि० पकना।
पीबियाहट० ना० स्त्री० पकाव, पकनि।

पीयूष० ना० पु० पेउस, अमृत।
पीर० ना० स्त्री० पीड़ा, दर्द, दुःख।
पीरा० गु० पीला।
पीराई० ना० पु० ढोल बजानेहारा।
पीलपर्णिका० ना० स्त्री० सुरहरी।
पीलाम० ना० पु० रेशमी वस्त्र विशेष।
पीली० ना० स्त्री० मोहर, सुवर्ण, मुद्रा।
पीलीभीत० ना० पु० बांसबरेली के उत्तर नगर विशेष।
पीलु० } पीलू० } ना० पु० वृक्ष विशेष।
पीवर० गु० मोटा, भारी, स्थूल।
पीसना० स० क्रि० आटाकरना, किचकिचाना, ना० पु० पीसने का अन्न।
पीहर० ना० पु० स्त्री की ससुराल, मैका।
पुं० ना० पु० नर, मनुष्य, पुरुष।
पुंलिंग० ना० पु० पुरुषका चिह्न।
पुंश्चली० ना० स्त्री० पतुरिया, वेश्या।
पुंस० ना० पु० मनुष्य, पुरुष, नर।
पुंसवन० ना० पु० संस्कार विशेष।
पुंस्त्व० ना० पु० पुरुषत्व।
पुकार० ना० स्त्री० गोहारि, हांक।
पुकारना० स० क्रि० गुहराना, टेरना, हांकमारना, बुलाना।
पुखराज० ना० पु० मणि विशेष।
पुंग० ना० पु० समूह, पुञ्ज, पूग।
पुंगव० ना० पु० श्रेष्ठ, बड़ा, उत्तम।
पुंगीफल० ना० पु० पूग, सुपारी।
पुचकारा० } पुचारा० } ना० पु० भीति लीपने के लिये गीली मिट्टी।
पुच्छ० ना० स्त्री० पूंछ, दुम।
पुच्छकर्ण० ना० पु० भेड़ी।
पुच्छल० गु० पूंछवाला जिसके पूंछहो।
पुच्छलतारा० ना० पु० केतु, दुमदारसितारा।
पुछवैया० ना० पु० खोजनेहारा।
पुजवाना० स० क्रि० पूजाकराना।

पुजाना० स० क्रि० भरना, भराना, पूराकरना, पूजा कराना।
पुजापा० ना० पु० पूजा की सामग्री।
पुजारी०
पुजारू० } गु० पूजा करने हारा।
पुञ्ज० ना० पु० समूह, ढेर, गज।
पुट० ना० पु० पत्ता, दोना, मिलाव, घुलाव।
पुटरी०
पुटली० } ना० स्त्री० गठरी लाड़।
पुटी० ना० पु० पत्ते का दोना, अजली।
पुट्ठा० ना० पु० पशु आदि का चूतड़।
पुड़ा० ना० पु० भारी या बड़ी पुरिया।
पुड़िया० ना० स्त्री० पत्तों की या कागज की ढानी जिस में कुछ औषधि इत्यादि बांधते हैं।
पुड़ी० ना० स्त्री० लाल जिसस ढोल मढ़ते हैं।
पुण्डरीक० ना० पु० कमल विशेष, आकाश, बाण, सिंह।
पुण्डरीकाक्ष० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र, नारायण।
पुण्ड्रक० ना० पु० ऊख गन्ना।
पुण्ड्रक० ना० पु० सर्प विशेष सज्ञा विशेष।
पुण्य० ना० पु० सुकृतकर्म, कीर्ति, पवित्रता।
पुण्यग्राम० ना० पु० पूनानगर, पुण्यके समूह।
पुण्यग्रामीय० गु० पूने के सम्बन्धी।
पुण्यजन० ना० पु० निशाचर, राक्षस, रात्रिचरारा त्रिचर कर्वुरोनिकषात्मज, यातुधान पुण्यजनो नैऋतोयातुरक्षसी, इत्यमर।
पुण्यभूमि० ना० स्त्री० आर्य्य वर्त्त देश।
पुण्ययोषिता० ना० स्त्री० वश्या पतुरिया।
पुण्यवान्० ना० पु० सुकृती धर्मात्मा।
पुण्याई० ना० स्त्री० सुकृतकर्म, जो पूर्व किया है, गु० पुण्यात्मा, दाता।
पुण्यात्मा० गु० दाता, सुकृती, धर्मात्मा।
पुतला० ना० पु० तृण वा काठ वा धातु वा मृत्तिका की बनीहुई मूर्त्ति।
पुतली० ना० स्त्री० आंखका तारा, काष्ठादि निर्मित मूर्त्ति, प्रतिमा।
पुताई० ना० स्त्री० पोतने का काम वा पसाव।
पुत्तलिका० ना० स्त्री० पुतली।
पुत्र० ना० पु० पूत, लड़का, बेटा।
पुत्रक० ना० पु० दाना, सुगन्धित, पाथा।
पुत्रजीवी० ना० स्त्री० जीवापति, पतिजिया।
पुत्रिका० ना० स्त्री० कन्या, बेटी, पुतली।
पुत्री० ना० स्त्री० कन्या, बेटी, आंखका तारा।
पुन० अव्य० फेर, फिरि बहुरि।
पुन पुन० अव्य० फेर फर, पुनि पुनि।
पुनराय० ना० पु० दूसरीबार।
पुनरारम्भ० ना० पु० दूसरीबार आरम्भकरना।
पुनरुक्ति० ना० स्त्री० पुनः कहना, दुबारा, फिर से कहना।
पुनरुत्थान० ना० पु० फिरसे उठना।
पुनर्जन्म० ना० पु० दूसरा जन्म, द्वितीयजन्म।
पुनर्नवा० ना० पु० मीवा विशेष।
पुनर्नव० ना० पु० नख, नाखून, नह।
पुनर्वसु० ना० पु० सातवां नक्षत्र।
पुनि० अव्य० फिर, पुनि।
पुनिपुनि० अव्य० पुन पुन।
पुनीत० गु० निर्मल, पवित्र पाक।
पुमान्० ना० पु० नर, पुरुष, मनुज।
पुर० ना० पु० नगर वा ग्राम देह विशेष।
पुरइन० ना० स्त्री० कमल बलि।
पुर सर० ना० पु० अग्रगामी पहला।
पुरस्ट० ना० पु० सुवर्ण, स्वर्ण, सोना।
पुरनिया० गु० प्राचीन, बूढ़ा, मगध देश में नगर।
पुरन्दर० ना० पु० इन्द्र।
पुरवासी० गु० नगर का बसने हारा।
पुरविला०
पुरविलाव० } ना० पु० पिछला वा अगला जन्म।
पुरवाई०
पुरवैया० } ना० स्त्री० पूर्वकी पवन।

पुरश्चरण० ना० पु० जपहीआदिकेपूर्णताप्रयत्न।
पुरस्कार० ना० पु० सत्कार, आदर, सम्मान।
पुरा० ना० पु० बड़ागार, पहिले।
पुराकृत० ना० पु० पिछले जन्मका कर्म।
पुराण० ना० पु० इतिहास विद्या जो व्यास रचित है।
पुराणपुरुष० ना० पु० श्री भगवान्।
पुरातन०, पुरातम० } ना० पु० प्राचीन, पिछला, पुराना।
पुराना० स० क्रि० भरदेना, लिखवाना, कहवाना, गु० कालीन, प्राचीन, जीर्ण।
पुरारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
पुरी० ना० स्त्री० नगर, गाम या अयोध्यादि सात नगर विशेष।
पुरीष० ना० पु० मल, विट्, मूत्र।
पुरुखा० ना० पु० पुरखा, बूढ़ा।
पुरुखे० ना० पु० अगले पुरुष।
पुरुष० ना० पु० मनुष्य, नर।
पुरुषत्व० ना० पु० मनुष्यता, मनुसाई।
पुरुषा० ना० पु० आचार्य या पिछले लोग।
पुरुषाधम० गु० जो मनुष्यों में निन्दितहोवे।
पुरुषान० ना० पु० पीढ़ियां, शाख, पुरखे, पुरुष का बहुवचन।
पुरुषारथ० ना० पु० पुरुषार्थ।
पुरुषोत्तम० ना० पु० मनुष्यों में जो श्रेष्ठ या प्रधान श्रीविष्णु, नारायण।
पुरुहूत० ना० पु० इन्द्र।
पुरैन० ना० स्त्री० कमलवालि।
पुरोडास० ना० पु० यज्ञका द्रव्य, रोटी, दग्ध का शेष भाग।
पुरोधा०, पुरोहित० } ना० पु० कुलगुरु, वंश पूज्य ब्राह्मण।
पुरोहितानी० ना० स्त्री० पुरोहित की स्त्री।
पुर्खा० ना० पु० पुरातन, बुड्ढा।
पुर्चक० ना० स्त्री० दल, बढ़ावा।
पुर्वा० ना० स्त्री० पूर्वका पवन।
पुर्वाई० ना० स्त्री० पूर्वकी पवन।
पुर्वाना० स० क्रि० भरवाना, पूरा करना।
पुरवया० ना० स्त्री० पुरवाई।
पुर्सा० ना० पु० चारहाथकी माप।
पुल० ना० पु० सेतु, बांध यह शब्द फारसी का है।
पुलक०, पुलकावलि०, पुलकावली० } ना० स्त्री० रोमाञ्च, आनन्द वा शोक में मग्न होना।
पुलकित० गु० हर्षित, रोमाञ्चित।
पुलपुला० गु० पिलपिला।
पुलपुलाना० अ० क्रि० करना, पिलपिलाना।
पुलपुलाहट० ना० स्त्री० डर, भय, नरमी।
पुलस्ति० ना० पु० मुनिविशेष, रावणके पितामह।
पुलहाना० स० क्रि० मनाना, राजीकरना।
पुलाक० ना० पु०, पुलाव० } मांसोदन भोजन विशेष यह शब्द फारसी का है।
पुलिक० ना० पु० मुख्य सार।
पुलिन० ना० पु० बालुका टापू, नदी में किनारा।
पुलिन्द० ना० पु० म्लेच्छ भेद।
पुलिन्दा० ना० पु० बस्ता, फारसी शब्द है।
पुलोमजा० ना० स्त्री० इन्द्राणी, देवरानी, पुलोमनाराची आणी इत्यमर।
पुँल्लिङ्ग० ना० पु० पुल्लिंग, नर, मुच्छकर।
पुआल० ना० पु० पियाल।
पुष्कर० ना० पु० आकाश, जल, कमल, तालाब, हाथी की सूंड़, तीर्थ विशेष।
पुष्करजटा०, पुष्कराह्व० } ना० पु० पुष्करमूल।
पुष्कराह्वय० ना० पु० सारस।
पुष्करिणी० ना० स्त्री० जलाशय, तलैया।
पुष्कल० ना० पु० भरतजी का पुत्र, पूर्ण, श्रेष्ठ।
पुष्ट० गु० पाला, स्थूल, पोढ़ा, कड़ा।

पुष्टद० } गु० पुष्टि कर्त्ता औषधि वा भाज-
पुष्टक० } नादि।

पुष्टता० ना० स्त्री० मोटाई, स्थूलता, पायदारी।

पुष्टि० ना० स्त्री० पुष्टता, पुत्रजीवा, चन्द्रमकला विशेषका नाम।

पुष्टिकर० गु० पुष्टद।

पुष्प० ना० पु० फूल, प्रसून।

पुष्पक० ना० पु० कुबेरका विमान।

पुष्पगन्धा० ना० स्त्री० जूही।

पुष्पचाप० ना० पु० कामदेव, मदन।

पुष्पजम्बुक० ना० पु० केनशी।

पुष्पधनु० ना० पु० कामदेव, मनोज।

पुष्पनीलक० ना० पु० सभालू।

पुष्पपात्र० ना० पु० फूलका आधार।

पुष्पफला० ना० स्त्री० कुम्हड़ा।

पुष्पमृत्यु० ना० पु० नकुल।

पुष्परस० ना० पु० फूल जिस म मधु व अमृत निकलता है, फूलकारस।

पुष्पवती० ना० स्त्री० रजस्वला, पपड़ा स।

पुष्पसंचरी० ना० स्त्री० फुलिहारी।

पुष्पाञ्जलि० ना० स्त्री० फूलों से भरी हुई अजली।

पुष्पित० गु० फूलाहुआ वृक्ष।

पुष्पी० ना० स्त्री० कुमा।

पुष्पेश० ना० पु० माधव।

पुष्य० ना० पु० आठवा नक्षत्र।

पुस्तक० ना० पु० ग्रन्थ, पोथा, किताब।

पुहमि० } ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
पुहमी० }

पूआ० ना० पु० मीठापूरी।

पूं० ना० पु० पादने का शब्द।

पूगी० ना० स्त्री० बासली विशेष।

पूछ० ना० स्त्री० पुच्छ, दुम।

पूछना० स० क्रि० पछना पूछना।

पूछार० गु० पुछवान् पूछवाला।

पूँजी० ना० स्त्री० मूल, धन, सम्पत्ति।

पूग० ना० पु० समूह, सुपारी वा सुपारीका वृक्ष।

पूगीफल० सुपारी।

पूछ० ना० पु० खोज।

पूछना० स० क्रि० खोजना, प्रश्नकरना।

पूछी० ना० स्त्री० मच्छीकी पूछ।

पूजक० गु० पूजा करनहार।

पूजन० ना० पु० पूजा का व्यापार।

पूजना० स० क्रि० अर्चना, भजना, ध्याना, अ० क्रि० भरना, पूरा होना।

पूजनीय० } गु० पूजा के योग्य, मान्य।
पूजमान्० }

पूजा० ना० स्त्री० अर्चा, आदर, सत्कार।

पूजित० गु० जो पूजागया।

पूज्य० } गु० पूजाके योग्य मान्य।
पूज्यमान्० }

पूठ० ना० पु० पुट्ठा।

पूठा० ना० पु० पुलक वा गत्ता।

पूड़ा० ना० पु० बेसनका पकवान विशेष।

पूड़ी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।

पूणी० ना० स्त्री० रुई जो कातने के लिये बनाते हैं।

पूत० ना० पु० पुत्र, पवित्र।

पूतना० ना० स्त्री० हड़, निशाचरी विशेष।

पूतला० ना० पु० पुतला।

पूतरी० } ना० स्त्री० पुतली।
पूतली० }

पूति० ना० स्त्री० जमादन्द, पवित्र, छोग, अवयव।

पूतिचर्चिका० ना० स्त्री० बबरी, पौधा।

पूतिफला० ना० स्त्री० बाकुची।

पूनियो० ना० स्त्री० पूर्णमासी।

पूनी० ना० स्त्री० पोनी, पूणा।

पूनो० ना० स्त्री० पूर्णमासी।

पूप० ना० पु० पुआ।

पूय० ना० पु० राद, माज।

पूर० गु० सब, कुछ भरा, प्रवाह, धारा।
पूरक० गु० पूरा करनेहारा, पूरा होने वाला, पु० बिजौरा, श्वास विशेष जो जिस क्रिया से खैंचते हैं।
पूरण० गु० भरा, पूरा, सब, सारा।
पूरणा० } ना० स्त्री० चन्द्रमा की कला
पूरणामृता० } विशेष।
पूरना० स० क्रि० भरना, पूरा करना, फैलाना।
पूरब० ना० पु० पूर्व।
पूरा० गु० पूरण, सब, समस्त।
पूराई० ना० स्त्री० भराई, पूरणता।
पूरिया० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
पूरी० ना० स्त्री० पक्वान विशेष।
पूर्ण० गु० पूरण, समस्त, सारा, भरा।
पूर्णज्या० ना० स्त्री० पूरारेखा, सूधी रेखा।
पूर्णता० ना० स्त्री० पूरणता, पुराई।
पूर्णपात्र० ना० पु० पात्र विशेष, जिस में २५६ मुष्टिका चावल भरके संकल्प करे, गु० पात्र भरपूर, पूरापात्र।
पूर्णभूत० ना० पु० समस्त बीतगया।
पूर्णमासी० ना० स्त्री० शुक्लपक्ष की समाप्ति की तिथि, पूनो।
पूर्णाहुति० ना० स्त्री० होम पूरा होने पर जो आहुति देते हैं उसका नाम।
पूर्णिमा० ना० स्त्री० पूर्णमासी।
पूर्व० गु० पहला, पिछला, अगला, ना० पु० जिस दिशा में सूर्योदय होता है।
पूर्वक० गु० विस्तार युत, भराहुआ, साथ।
पूर्वकृत० ना० पु० पहले का काम।
पूर्वकृतकर्म० ना० पु० पूर्व जन्म किये कर्म।
पूर्वज० ना० पु० अग्रज, बड़ाभाई।
पूर्वयाम० ना० पु० पहला पहर।
पूर्वदेश० ना० पु० मध्य देश के पूर्व का देश। या निज स्थान से पूर्व का देश।
पूर्वपक्ष० ना० पु० पहला पक्ष चरचा करने में जो स्थापन या निषेध किया जाता है।
पूर्ववत्० अव्य० उसी प्रकार, वैसाही।
पूर्ववायु० ना० पु० पूर्वका पवन, पुरवाई।
पूर्वा० ना० पु० पुरवा, छोटा गांव।
पूर्वाफाल्गुणी० ना० स्त्री० ग्यारहवा नक्षत्र।
पूर्वाभाद्रपद० ना० पु० पच्चीसवा नक्षत्र।
पूर्वाभिमुख० ना० पु० पूर्व दिशाके सामने।
पूर्वार्द्ध० गु० पहिला, आधा।
पूर्वाषाढ़० ना० स्त्री० बीसवा नक्षत्र।
पूर्वाह्न० ना० पु० दिनका पहला भाग।
पूर्वी० गु० पूर्व देशीय ना० स्त्री० रागिनीविशेष।
पूर्वोक्त० गु० प्रथम कहा है, प्रथम कहाहुआ।
पूला० ना० पु० } तृण वा अन्न की डांठी २
पूली० ना० स्त्री० } गट्ठी।
पूषण० ना० पु० सूर्य।
पूषा० ना० स्त्री० सूजन, चन्द्रकला विशेष, श्वास विशेष, जो दक्षिण कान में प्रचारित है।
पूस० ना० पु० पौष मास, दशवां मास।
पृच्छा० ना० पु० जिज्ञासा, प्रश्न।
पृतना० ना० स्त्री० सैन्य, फौज, दल।
पृथक्० अव्य० भिन्न, अलग।
पृथक्करण० ना० पु० अलग २ करना।
पृथक्छद० ना० पु० असराट।
पृथक्त्व० ना० पु० भिन्नता, जुदाई।
पृथक्पर्णी० ना० स्त्री० सुरहरी।
पृथग्० अव्य० पृथक्।
पृथग्पृथग्० अव्य० अलग २ जुदा २।
पृथवी० ना० स्त्री० पृथिवी।
पृथवीनाथ० ना० पु० राजा, बादशाह।
पृथिवी० ना० स्त्री० धरती, जमीन।
पृथु० गु० बड़ा, भारी, ना० पु० राजा विशेष।
पृथुरोमा० ना० स्त्री० मछली।
पृथुल० गु० बड़ा, भारी, मोटा, स्थूल।
पृथुशिरा० ना० पु० स्त्रीनारूप।

पृथूदर० ना० पु० मेढ़ा, भेंड़ा।
पृथ्वाक० ना० पु० पुनर्नवा।
पृथ्वी०,ना० स्त्री० धरती।
पृथ्वीका० ना० स्त्री० कलौंजी।
पृथ्वीनाथ०
पृथ्वीपति० } ना० पु० राजा, बादशाह।
पृथ्वीपाल०
पृष्ट० गु० पूछागया।
पृष्ठ० ना० पु० पीठ, पिछलाभाग, पत्रका एक ओर।
पृष्टा० ना० पु० जिज्ञासक, पूछनेवाला।
पृष्ठास्थि० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी।
पृष्ठि० ना० पु० पीठ, पृष्ठ।
पृष्ठिस्थोरी० ना० पु० घोड़ा।
पेई० ना० स्त्री० पिटारी।
पेंग० ना० पु० झूलेका हिलाना, पक्षी विशेष।
पेंगना० अ० क्रि० झूलेको बढ़ाकर झूलना।
पेंठ० ना० स्त्री० हाट, मण्डी, बाजार।
पेंड़० ना० स्त्री० डग, चलावा, टीला, वृक्ष।
पेंदा० ना० पु०
पेंदी० ना० स्त्री० } तला, निचानका खण्ड।
पेक्षक० गु० यथेचित दूत भेजनेवाला।
पेखना० ना० पु० स्वांग, खिलौना, स्त्रियों का छल, स० क्रि० देखना।
पेखनिया० ना० पु० स्वांगी।
पेखित० गु० भेजागया।
पेच० ना० पु० मरोरी, घुमाव, फेर।
पेचक०
पेचा० } ना० पु० उलूक।
पेट० ना० पु० उदर, गर्भ।
पेटक० ना० पु० पिटारा।
पेटार्थी०
पेटार्थू० } गु० पेटपाल, खाऊ, भक्षक।
पेटिया० ना० स्त्री० प्रतिदिनका खाना, सीधा।
पेटी० ना० स्त्री० कमरबन्द, पेटका बन्धन, पिटारी, सन्दूक, छाती।
पेटू० गु० पेटार्थी।
पेटोखा० ना० पु० पेटचलने का रोग।
पेठा० ना० पु० लौकी वा कद्दू, या कुम्हड़ा विशेष।
पेड़० ना० पु० वृक्ष, वृक्ष।
पेड़ा० ना० पु० मिठाई विशेष, लोई।
पेड़ी० ना० स्त्री० पेड़ा० सुपारी, नील आदि का वृक्ष जो एकबार जो कटगया, और पेड़का स्तम्भ।
पेड़ू० ना० पु० नाभिके नीचे का अंग।
पेम० ना० पु० प्रेम।
पेमी० ना० पु० प्रेमी।
पेय० ना० पु० पानी, दूध, शरबत, गु० जो पीने के योग्य हो।
पेरना० स० क्रि० प्रेरणा, कोल्हू में कुचल के रस वा तेल निकालना।
पेरु० ना० पु० कुक्कुट विशेष।
पेलड़०
पेलड़ा० } ना० पु० आंड, कौड़ी, फोत।
पेलन० ना० पु० पालन, झूलना।
पेलना० स० क्रि० ठेलना, रेलना, ठांसना, दबाना, भरना, घुसेड़ना, अ० क्रि० पिलजाना, घुसड़जाना।
पेला० ना० पु० आड़, दोष, उपद्रव, टेकन।
पेलू० ना० पु० ढकेलू, घुसेड़ू।
पेवड़ी० ना० स्त्री० पीतरंग विशेष।
पेवसी० ना० स्त्री० पीयूष जो दूध फटे को पकाते हैं।
पेषण० ना० पु० दलैती, किसी वस्तु को दो पत्थरों से घिसना।
पेषणीय० गु० पीसने के योग्य।
पै० ना० पु० पय, दूध, जल, ना० स्त्री० दोष, अव्य० ऊपर, तौभी, परन्तु।
पैंचना० स० क्रि० पछोड़ना, फटकना, बदलना।
पैंचा० ना० पु० बदला, पलटा।
पैंजनी० ना० स्त्री० पांवका गहना विशेष।

पैंड़० } नाo पुo मार्ग, बाट वा बाट देखना।
पैंड़ा० }
पैंतालीस० गु० चालीस और पांच, ४५।
पैंतीस० गु० तीस और पांच, ३५।
पैंसठ० गु० साठ और पांच, ६५।
पैकड़ा० ना० पु० } बेड़ी, पैर का गहना
पैकड़ी० ना० स्त्री० } विशेष।
पैगू० ना० पु० ब्रह्म देश का प्रदेश।
पैज० ना० स्त्री० प्रतिज्ञा, प्रण, पराक्रम।
पैठ० ना० पु० हुण्डी की पतिया, पहुँच, प्रवेश।
पैठना० अ० क्रि० घुसना, धसना।
पैठालना० स० क्रि० प्रवेश कराना, घुसाना।
पैड़० ना० पु० पाओं का चिह्न।
पैड़ा० ना० पु० ऊंची खड़ाऊं।
पैड़ी० ना० स्त्री० सीढ़ी।
पैतला० गु० उथला, छिछला।
पैतृक० गु० पपौती, पूर्व जनों से जो धन वा व्यवहार प्राप्त हो।
पैदल० अन्य० पैरों से ना० पु० पियादे।
पैन० ना० पु० नाली, पोलरा।
पैना० ना० पु० पशु हांकने का अस्त्र गु० तीव्र, तीक्ष्ण, तेज।
पैनाना० स० क्रि० तीक्ष्ण करना, बाढ़ देना।
पैनाला० ना० पु० परनाला, मुहरी।
पैया० ना० पु० पहिया, चक्र।
पैर० ना० पु० पांव, खलिहान, गु० जो पैरने के योग्य है।
पैरना० अ० क्रि० हेलना, तिरना, पवरना।
पैराई० ना० स्त्री० पैरने का काम।
पैराक० ना० पु० पैरनेहारा।
पैराकी० ना० स्त्री० पैरनेहारी।
पैराना० स० क्रि० तैराना, हिलाना।
पैराव० गु० जो पैरने के योग्य है।
पैरी० ना० स्त्री० पांवका गहना विशेष।
पैला० ना० पु० अन्न मापने का पात्र, दला।
पैशून्य० ना० पु० दुष्टता, चिड़चिड़ा, चुगली।

पैसा० ना० पु० तांबे का मुद्रा।
पैसार० ना० पु० पैठ, पहुँच, प्रवेश।
पैसारना० स० क्रि० पैठाना, पहुँचाना, प्रवेश कराना, घुसेड़ना।
पोआ० ना० पु० पोवा, दूधपीनेहारा बच्चा, सांप का बच्चा थोड़े दिनों का।
पोआना० स० क्रि० धमाना।
पोईस० अन्य० परे, बचो, पोइस शुद्ध है, फारसी शब्द है।
पोंकना० अ० क्रि० पेट चलना।
पोंका० ना० पु० कीड़ा विशेष।
पोंगा० ना० पु० उल्लू, मूर्ख, ढोला विशेष, पोर, गु० छूछा।
पोंगी० ना० स्त्री० नली, छूछी, खोखली, मूर्खस्त्री।
पोंछन० ना० पु० झाड़ना, गर्द।
पोंछना० स० क्रि० झाड़ना, स्वच्छ करना।
पोखना० स० क्रि० पालना।
पोखर० } ना० पु० जल, तड़ाग, तालाव।
पोखरा० }
पोच० गु० नीच, खल, यह शब्द फारसी का है।
पोट० ना० स्त्री० मोट, गांठ, गठरी।
पोटला० ना० पु० बड़ी गठरी।
पोटली० ना० स्त्री० गठरी, खाई विशेष।
पोटा० ना० पु० पेटा, पलक, पक्षी का क्षोभक, चोंच, रंग गु० पोटनेहारा।
पोढ़ा० गु० कड़ा, बलवान, ठोस, दृढ़।
पोढ़ाई० ना० स्त्री० कड़ापन, ठोसाई, दृढ़ता।
पोत० ना० स्त्री० कांचकी छोटी गुरिया, नाव, रसभाव, प्रकृति, बच्चा, कपड़ा।
पोतकी० ना० स्त्री० पोय, बेलि।
पोतड़ा० ना० पु० छोटे लड़कों का बिछौना, गुदड़ी।
पोतड़ी० ना० स्त्री० लेरी, हल।
पोतना० स० क्रि० लीपना, चपोतना, ना० पु० पिंडोर, मृत्तिका विशेष।

पोता० ना० पु० पुत्रका पुत्र, पौत्र।
पोती० ना० स्त्री० पुत्रकी कन्या, पौत्री।
पोथा० ना० पु० बड़ा ग्रन्थ।
पोथी० ना० स्त्री० छोटा ग्रन्थ।
पोदना० ना० पु० पक्षी विशेष।
पोदनी० ना० स्त्री० पोदना की स्त्री।
पोना० स० क्रि० पकाना, पिराना, ना० पु० झरना।
पोनी० ना० स्त्री० पूर्णी।
पोपनी० ना० पु० बाजा विशेष।
पोपला० गु० दाँतों से रहित।
पोमचा० ना० पु० जय नगरी, वस्त्र विशेष।
पोय० ना० स्त्री० साग विशेष, बेलि विशेष।
पोया० ना० पु० साग विशेष।
पोर० ना० पु० दो गाठियों का मध्यभाग।
पोरी० ना० स्त्री० बासकीगाठ, टोंटा।
पोला० गु० छूछा, कोमल, खोखला, खाली।
पोली० ना० स्त्री० छूछी, खोखली, बनाड़ी।
पोषक० ना० पु० पालनेहारा।
पोषण० ना० पु० पालन, पालना।
पोषना० स० क्रि० पालना।
पोषित० गु० पालागया, पालाहुआ।
पोष्य० गु० पालने के योग्य।
पोष्यपुत्र० ना० पु० ले पालक।
पोष्यवर्ग० ना० पु० कुटुम्ब।
पोसना० स० क्रि० पालना।
पोसे० क्रि० पाले।
पोह० ना० स्त्री० पार, तड़का, भोर।
पोहना० स० क्रि० पिरोना, पेड़ा बनाना।
पोत्री० ना० पु० सुअर, शूकर।
पौ० ना० पु० जल पिलाने की शाला, पासेमेंका एका।
पौंड़ा० ना० पु० मोटा इक्षु विशेष गन्ना।
पौंरि० ना० स्त्री० ड्योढ़ी।
पौरिया० ना० पु० ड्यौढीवान, द्वारपाल।
पौंढ़ना० स० क्रि० लेटना, सोना।
पौढ़ा० गु० पोढ़ा, लेटाहुआ।
पौढ़ाई० ना० स्त्री० पोढ़ाई, लेटास।
पौण्ड्रक० ना० पु० ऊख, गन्ना, पौंडा।
पौत्तलिक० ना० पु० मूर्त्तिपूजक।
पौत्र० ना० पु० पुत्रका पुत्र, पोता।
पौत्री० ना० स्त्री० पुत्रका कन्या, पोती।
पौधा० ना० पु० वृक्ष जो तरुण हैं, बिरवा एक बरस का।
पौन० गु० तीन चौथाई, ¾ ना० पु० पवन।
पौनचक्र ना० पु० बैंडरा, प्रवाग्रन्थि।
पौना० ना० पु० झरना, पोनका पहाड़ा।
पौने० गु० चतुर्थांश रहित।
पौर० ना० स्त्री० फाटक, द्वार।
पौराणिक० ना० पु० श्रीवेदव्यास, सूतजी, पुराण का वक्ता।
पौरी० ना० स्त्री० पौर।
पौरुष० ना० पु० मनुष्यत्व, बल।
पौरोहित्य० ना० स्त्री० पुरोहिताई।
पौलस्त्य० ना० पु० रावण, कुबेर।
पौलिया० ना० स्त्री० पौरिया, छोटा खड़ाऊ।
पौली० ना० स्त्री० पाणि, खड़ाऊ।
पौलोमी० ना० स्त्री० इन्द्राणी, देवरानी।
पौवा० ना० पु० सेर का चौथा भाग।
पौष० ना० पु० नवामास, पूस।
पौष्कराह्वय० ना० पु० पुष्करमूल।
पौष्टिक० गु० पुष्टिकारक।
पौसरा० ना० पु० पियाऊ।
पौह० ना० पु० जल पिलाने का स्थान।
पौहदा० ना० पु० पौंसा।
पौहा० ना० पु० चार चलादि पशु।
प्यार० ना० पु० प्रेम, दुलार।
प्यारा० गु० प्रिय, दुलारा, लाडिला।
प्यारी० ना० स्त्री० प्रिया, दुलारी, लाडिली।
प्यावना० स० क्रि० पिलाना।
प्यास० ना० स्त्री० तृषा।

प्यासा० } गु० तृषायुत, तृषित।
प्यासी० }
प्यौसार० } ना० पु० पतिका घर स्त्री० सासु
प्यौहर० } राल।
प्र० अव्य० जिस शब्दके आदिमें यह मिलितहो उसका अर्थ अभा आो दभा अधिकहै।
प्रकट० } गु० प्रकट, प्रसिद्ध।
प्रकटित० }
प्रकम्पन० ना० पु० आधी झकड़।
प्रकर० ना० पु० समूह, गराह।
प्रकरण० ना० पु० एक विषयका प्रस्ताव, पाठका विश्राम स्थान अध्याय, समूह।
प्रकाम० ना० पु० सिद्धि विशेष।
प्रकार० ना० पु० रीति तरह विशेष, भेद, सादृश्य, ढाल।
प्रकारान्तर० गु० दूसरे प्रकार दूसरा प्रकार।
प्रकाश० ना० पु० ज्योति उजाला रोशनी गु० प्रकट।
प्रकाशक० ना० पु० प्रकाशकर्ता।
प्रकाशवान्० गु० प्रकाशयुत, प्रकाशित रोशन।
प्रकाशित० गु० प्रकाश कियागया, रोशन।
प्रकाश्य० गु० प्रकाशके योग्य।
प्रकीर्ण० ना० पु० चौरी अध्याय गु० प्रकट व्याप्त।
प्रकीर्तन० ना० पु० कथा, भाषण।
प्रकीर्तित० गु० कथित, भाषित।
प्रकृत० ना० स्त्री० स्वभाव, गुण गु० जो बनाया गया।
प्रकृतार्थ० ना० पु० प्रकृतका ठीक अर्थ।
प्रकृति० ना० स्त्री० स्वभाव मूल, माया, संसार।
प्रकृष्ट० गु० उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर अच्छा।
प्रक्रम० ना० पु० चलना, गमन, अवसर।
प्रक्रिया० ना० स्त्री० व्याकरण के अंश प्रकरण, साधनिका।
प्रखर० ना० पु० खच्चर गु० तीक्ष्ण।
प्रख्यात० गु० प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध, प्रसन्न, आदित।
प्रगट० गु० व्यक्त, साक्षात् प्रत्यक्ष, प्रकाश, प्रसिद्ध।
प्रगटना० अ० क्रि० प्रकट्होना।
प्रगल्भ० गु० शास्त्र में निडर अभय योद्धा, प्रतिभावान्, सामर्थी।
प्रगाढ़० ना० पु० पीड़ा, तपस्या, गु० बहुत गाढ़ा, कठोर।
प्रग्रह० ना० पु० किरवाली।
प्रघट० गु० प्रगट।
प्रघटी० ना० स्त्री० सुवर्ण वा रौप्य के लिये सांचा।
प्रचण्ड० गु० बलवान् तेज, असहा, भयङ्कर, भारी।
प्रज्वलित० गु० जो चलताहै, जारी।
प्रचार० ना० पु० विस्तार, फैलाव, खुलना, प्रकाश जारी होना, प्रकटता।
प्रचारक० गु० प्रचार करनेहारा।
प्रचारना० स० क्रि० चलाना, नाद देना उमड़ना।
प्रचारित० गु० विस्तारित चलित और प्रकाशित।
प्रचुर० गु० बहुत।
प्रचेता० ना० पु० वरुण देवता।
प्रचोदित० गु० प्रेरित, जो आज्ञा दियागया।
प्रच्छन्न० ना० पु० चोर, खिड़की, गु० गुप्त, आच्छादित।
प्रजरण० ना० पु० जरण, जलन।
प्रजरना० अ० क्रि० जलना, बरना।
प्रजरित० गु० ज्वलित जलता भया।
प्रजा० ना० स्त्री० सन्तान, सेवक, राज्य के वासी रैयत।
प्रजाता० ना० स्त्री० जननी, जच्चा।
प्रजापति० ना० पु० राजा, ब्रह्मा, दक्ष, कुम्हार।
प्रजारक० गु० जलानेहारा।
प्रजारण० ना० पु० जलावन, दहकाव।

प्रजारना० स० क्रि० जलाना, दहकाना।
प्रजाशन० पु० प्रजामक्षक।
प्रजेश० ना० पु० राजा, ब्रह्मा, कुम्हार।
प्रज्वलता० ना० स्त्री० ज्योति, उज्ज्वलता और जलाव।
प्रज्वलित० गु० ज्योतिष्मान्, उज्ज्वल, जला।
प्रण० ना० पु० प्रतिज्ञा, दावा।
प्रणऊं० क्रि० प्रणाम करों।
प्रणत० गु० अतिदीन, अतिनम्र, शरणागत।
प्रणति० ना० स्त्री० नमस्कार, प्रणाम।
प्रणय० ना० स्त्री० प्रीति, प्रेम, युक्ति, भरोसा, अपनापन।
प्रणव० ना० पु० अक्षर, मन्त्रराज, ओंकार।
प्रणवा० क्रि० प्रणाम करो।
प्रणाम० पु० नमस्कार, सलाम।
प्रणाली० ना० स्त्री० नाली।
प्रणिधान० ना० पु० मनोयोग, उद्योग।
प्रणिपात० ना० पु० दण्डवत्, प्रणाम।
प्रणी० गु० प्रण करनेहारा, मनचला।
प्रतन० गु० पुराना, प्रत्न।
प्रताप० ना० पु० ऐश्वर्य्य, तेज, सूरमापन।
प्रतापवान्० } गु० तेजवान्, तेजस्वी, तेज
प्रतापी० } धारी।
प्रतारक० ना० पु० ठग, चतुर, चचर।
प्रतारण० } ना० पु० वंचन, ठगई।
प्रतारणा० }
प्रतारित० गु० ठगाया, वञ्चित।
प्रति० ना० स्त्री० नकल, अव्य० यह शब्द जिस शब्द के आदि में होता है, उसका अर्थ कभी फेर कभी सतेके कभी एक एक।
प्रतिउपकार० ना० पु० प्रत्युपकार, प्रतीकार।
प्रतिकार० ना० पु० बदला, पलटा।
प्रतिकूल० गु० विरुद्ध, उलटा, प्रतिपक्ष।
प्रतिग्रह० ना० पु० दान, जो ब्राह्मणको दानदेवें या ऐसा दान लेना, सहायीपे।
प्रतिघ० स० ना० पु० मारण, वा।
प्रतिच्छाया० ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब, सदृश, मूर्ति।
प्रतिछाह० ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब, छाया।
प्रतिदान० ना० पु० धरोहर, फेरदेना।
प्रतिदिन० अव्य० दिन दिन।
प्रतिधा० अव्य० बार, बार, हरबार, हरदफा।
प्रतिनिधि० ना० स्त्री० सदृश, तदनुरूप प्रतिमू, पेशकार।
प्रतिपत्० ना० स्त्री० परेवा, पक्षकी प्रथमतिथि।
प्रतिपत्ति० ना० स्त्री० यश, ज्ञान।
प्रतिपद्० ना० स्त्री० प्रतिपत्, परेवा।
प्रतिलिका० ना० स्त्री० कण्ठपसारन।
प्रतिपन्न० गु० जानागया, निश्चित।
प्रतिपक्ष० ना० पु० } शत्रु, वैरी।
प्रतिपक्षी० स्त्री० }
प्रतिपादन० ना० पु० [illegible], दुष्पादना।
प्रतिपादित० गु० जिसका प्रतिपादन होगया।
प्रतिपाद्य० गु० योग्य, वर्णन के योग्य।
प्रतिपालन० ना० पु० पालन, पोषण।
प्रतिपालक० ना० पु० पालन करनेहारा।
प्रतिपालन० ना० पु० प्रतिपाल, पोषण।
प्रतिपालना० स० क्रि० पालन करना, पोषणा।
प्रतिप्रसव० ना० पु० जो बात और बात से सिद्ध हो।
प्रतिफल० ना० पु० सम्पूर्ण फल, इनाम।
प्रतिबन्ध० ना० पु० काम का विनाशक।
प्रतिबन्धक० ना० पु० बाधक, रोकनेहारा, अटकानेवाला।
प्रतिभट० ना० पु० समान योद्धा, तुल्यबलवीर।
प्रतिभा० ना० स्त्री० बुद्धि, ज्योति, चमक।
प्रतिभाग० ना० पु० अंश, अशांश, हरहिस्सह।
प्रतिभू० ना० पु० मनौती, ज़ामिन, दरमियानी।
प्रतिमा० ना० स्त्री० मूर्ति, तसवीर, पुतला।
प्रतिमास० ना० पु० महीने, २ मास, २, हरमाह।
प्रतिमूर्ति० ना० पु० परछाहीं, छाया, प्रतिबिम्ब।

प्रतिमूर्त्ति० ना० स्त्री० एक प्रतिमा के तुल्य द्वितीय।
प्रतियोग० ना० पु० शत्रुता, विरोध, वैर।
प्रतियोगी० गु० शत्रु, वैरी, विरोधी।
प्रतिरूप० ना० पु० सदश, चित्र, मूर्त्ति।
प्रतिरोध० ना० पु० बटवार, रोर।
प्रतिरोधक० ना० पु० चोर, रोकनेवाला।
प्रतिलोम० गु० बाया, औंधा, उलटा, दुष्ट, नीच।
प्रतिवचन० ना०पु० उत्तरपीछे वचन,वचनपर।
प्रतिवर्ष० ना० पु० वर्ष वर्ष, हरसाल।
प्रतिवाक्य० ना० पु० प्रति वचन, गु० जो उत्तर देने के योग्य है।
प्रतिवाद० ना० पु० विवाद, झगड़ा, विरोध।
प्रतिवादी० ना० पु० विवादी, विरोधी, प्रत्यर्थी।
प्रतिवास० ना० पु० पड़ोस।
प्रतिवासी० ना० पु० पड़ोसी।
प्रतिबिम्ब० ना० पु० जो दर्पणादि द्रव्यने में रूप देख पड़ता है, चक्स, प्रतिरूप।
प्रतिशब्द० ना० पु० शब्दपीछे, शब्द के साथही शब्द।
प्रतिशब्दक० ना० पु० भारी शब्द, जो शब्द के साथही गूफादि से शब्द सुनाई देता है।
प्रतिषिद्ध० ना० पु० निषिद्ध, वर्जित।
प्रतिषेध० ना० पु० निषेध, ना० स्त्री० मनाई।
प्रतिष्ठा० ना० स्त्री० मूर्त्ति स्थापन, सुख्याति, कीर्त्ति, अदब, बड़ाई।
प्रतिष्ठित० गु० स्थापित, कीर्तिमान्, यशी, सुख्यातियुत, इज्जतदार।
प्रतिहत० गु० जो निराशभया, रोकागया, भ्रष्ट, नष्ट।
प्रतिहार० ना० पु० ड्योढ़ीवान, चोबदार।
प्रतिहिंसक० गु० घातक का घाती, बैरागार।
प्रतिज्ञा० ना० स्त्री० वचन, प्रण, पक्षादि, अवश्य काम का स्वीकार।
प्रतीक० ना० पु० अवयव, अङ्ग।
प्रतीकार० ना० पु० पलटा, बदला।
प्रतीची० ना० स्त्री० पश्चिम दिशा, पछाह।
प्रतीत० गु० प्रतिष्ठित, प्रकट।
प्रतीति० ना० स्त्री० विश्वास, श्रद्धा, भरोसा, समझ।
प्रतीक्षा० ना० स्त्री० और का मार्ग देखना, प्रत्याशा।
प्रतोली० ना० स्त्री० मार्ग, बाट, राह।
प्रतोष० ना० पु० सन्तोष, धीरज, सबर।
प्रत्न० गु० पुराना।
प्रत्यर्क० ना० पु० ऊषा।
प्रत्यय० ना० पु० विश्वास, समझ, चिह्न, निशान।
प्रत्यवाय० ना० पु० वियोग।
प्रत्यह० अव्य० प्रतिदिन, हररोज।
प्रत्यक्ष० गु० प्रसिद्ध, साक्षात्, दृष्टि गोचर, देखने के योग्य, अव्य० आगे।
प्रत्याशा० ना० स्त्री० आसरा, भरोसा, उम्मेद।
प्रत्याहार० ना० पु० स्वल्प भोजन।
प्रत्युत्तर० ना० पु० उत्तरका उत्तर, जवाब।
प्रत्युत्थान० ना० पु० उठकरके जो सम्मान।
प्रत्युपकार० ना० पु० उपकार के पलटे उपकार, पलटादेना, इनाम।
प्रत्येक० गु० एक एक, एक, एक, हरएक।
प्रथम० गु० पहला, आदि, अव्वल, मुख्य।
प्रथमा० ना० स्त्री० पहली।
प्रथमान्त० गु० जो नाम या सर्व नाम प्रथम विभक्ति में हो।
प्रथा० ना० स्त्री० सुख्याति, यश, कीर्ति।
प्रथित० गु० यशवन्त, प्रसिद्ध, कीर्तिमान्।
प्रद० गु० दानाका चिह्न शब्दान्त में, दाता।
प्रदक्षिण० } ना० स्त्री० पूज्यको दाहिनेकर उस
प्रदक्षिणा० } के चारोंओर फिरकर निजस्थान पर आना, फिरना।
प्रदीप० ना० पु० दीपक, दिया।

प्रदेश० ना० पु० भूमिखण्ड, देश, स्थान, पर दश, छाटी वितरित।

प्रदोष० ना० पु० सूर्यास्त स होदण्ड, शिवव्रत विशष, दाष।

प्रदोषा० ना० स्त्री० रात, रात्रि।

प्रद्युम्न० ना० पु० श्रीकृष्णाच द्रजीकापुत्र, काम देव।

प्रद्योतन० ना० पु० सूर्य।

प्रधान० ना० पु० मुख्यमन्त्री, श्रेष्ठ, गु० पहला।

प्रधानता० ना० स्त्री० मुख्यता, श्रेष्ठता, बड़ा रत।

प्रधाननगर० ना० पु० प्रसिद्ध नगर, बड़ा नगर।

प्रनाम० ना० पु० प्रणाम।

प्रनाशी० गु० नाशनेवाला, मिटानेवाला।

प्रपञ्च० ना० पु० छल, निरोध, ढँग, धोखा, चूक ससार, बातों का विस्तार।

प्रपञ्चित० गु० जो विस्तारयुत वर्णनहुआ, जो छला गया।

प्रपंची० ना० पु० प्रपञ्चकर्त्ता पाती, छली।

प्रपितामह० ना० पु० पितामह का पिता, परदादा।

प्रपितामही० ना० स्त्री० पितामह की माता परदादी।

प्रपुन्नाग० ना० पु० पवार पोधा।

प्रपौत्र० ना० पु० पौत्रका पुत्र, परपाता।

प्रपौत्री० ना० स्त्री० पौत्रकी पुत्री, परपाती।

प्रफुला० ना० पु० फूल वालि।

प्रफुल्ल० गु० विकसित, फूला, खिला।

प्रफुल्लित० गु० विकसित, फूलाभया, आनन्द, मग्न, खुश।

प्रबन्ध० ना० पु० बंध ॥ वाक्य की बनावट, रचना विशष, कथा, वृत्तात, बदोवस्त।

प्रबन्धाधीन० गु० प्रबन्ध के आधीन।

प्रबल० गु० बलवान, पहलवान्।

प्रबलता० ना० स्त्री० बलात्कारी, बरबस।

प्रबोध० ना० पु० ज्ञान उपदेश, सुर्त्त, उजगता, तसल्ली, सबर।

प्रबोधक० गु० प्रबोध करने हारा।

प्रभद्र० ना० पु० नींब वृक्ष।

प्रभञ्जन० ना० पु० पवन, गु० विनाशन।

प्रभव० ना० पु० उत्पत्ति, उपज, उत्पत्तिकारी।

प्रभा० ना० स्त्री० शामा, कान्ति, दीप्ति, चमक।

प्रभाकर० ना० पु० सूर्य, च द्रमा।

प्रभाव० ना० पु० माहात्म्य, सामर्थ्य, फल।

प्रभात० ना० पु० प्रात काल, भार, तड़का।

प्रभाती० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

प्रभावती० ना० स्त्री० पातालगगा।

प्रभास० ना० पु० तीर्थ विशेष।

प्रभिन्न० ना० पु० हाथी, (प्रभिन्ने गर्भितामत्त इत्यमर)।

प्रभु० ना० पु० नाथ, स्वामी, राजा, ईश्वर, प्रतिपालक, गुरु।

प्रभुता० ना० स्त्री०
प्रभुताई० ना० स्त्री०
प्रभुत्व० ना० पु० } राज्यादि अधिकार, प्रधानता, स्वामित्व, ईश्वरता।

प्रभुतालय० ना० पु० नीतिगृह, कचहरी, अदालत।

प्रभृति० अव्य० इत्यादि।

प्रमदा० ना० स्त्री० सुलक्षणा स्त्री।

प्रमदी० ना० स्त्री० कलिहारी।

प्रमथा०
प्रमथ्या० } ना० स्त्री० हड शिवा।

प्रमथनाथ०
प्रमथाधि०
प्रमथाधिप० } ना० पु० श्रीमहादेवजी, यथा (मृत्युंजय कृत्तिवासा पिना की प्रमथाधिप इत्यमर)।

प्रमा० ना० स्त्री० यथार्थ का ज्ञान, अनुभव।

प्रमाण०ना० पु० निश्चय,का कारण साक्षी, अवधि प्रत्यक्ष, निश्चय, सत्य, ग्राह्य।

प्रमाणिक० गु० योग्य, निश्चयकारक, ग्राह्य रूप प्रमाण के योग्य।

प्रमातामह० ना० पु० मातामह का पिता, परनाना।

प्रमातामही० ना० स्त्री० मातामह की माता, परनानी।

प्रमाद० ना० पु० भूल, चूक, असावधानता, अनजानी।

प्रमादी० गु० असावधान, अशोच, गुमड़।

प्रमीलिका० } ना० स्त्री० नींद, झुकी।
प्रमीला०

प्रमुख० ना० पु० निशाचर विशेष, प्रधान।

प्रमुदित० गु० हर्षित, आनन्दित।

प्रमेह० ना० पु० वीर्य्य का रोग, क्षीणरोग।

प्रमोद० ना० पु० हर्ष, आनन्द।

प्रमोदित० गु० हर्षित, आनन्दित, खुश।

प्रयन्त० अव्य० पर्यन्त।

प्रयाग० ना० पु० तीर्थराज, इलाहाबाद।

प्रयाण० ना० पु० यात्रा, गमन।

प्रयान्ति० क्रि० जाता है।

प्रयुक्त० गु० मिलाहुआ, भराहुआ।

प्रयोग० ना० पु० अनुष्ठान, दृष्टान्त, फल, उपाय, तदवीर, प्रयोजन।

प्रयोगी० गु० उपायी, चलानेवाला।

प्रयोजक० ना० पु० प्रेरक, उठाने हारा।

प्रयोजन० ना० पु० कारण, तात्पर्य, गरज, मतलब।

प्रयोजनी० गु० अवसर, मतलबी, गरजी।

प्रयोज्य० गु० भृत्य, ना० पु० सेवक, चेला।

प्रलम्ब० ना० पु० प्रलम्बासुर, लम्बा।

प्रलम्बघ्न० ना० पु० बलदेव जी।

प्रलय० ना० पु० उत्पात, सर्वनाश, सूखा।

प्रलयकाल० ना० पु० नाशका समय।

प्रलाप० ना० पु० अज्ञानता समय का वाक्य, निरर्थवाक्य।

प्रलेप० ना० पु० औषधि आदि का लेपन।

प्रवञ्चना० ना० स्त्री० प्रतारण, ठगी, धोखा।

प्रवर० ना० पु० सन्तान, धरा, गोत्र, गु० बलवान, श्रेष्ठ, बहादुर।

प्रवर्त्तक० ना० पु० प्रेरक, उतारनेहारा।

प्रवर्षण० ना० पु० पर्वतविशेष।

प्रवाल० ना० पु० मूंगा।

प्रवास० ना० पु० विदेश, देशान्तर, परदेश।

प्रवासा० ना० स्त्री० मधुशर्करा।

प्रवासी० गु० विदेशी, परदेशी।

प्रवाह० ना० पु० नदीकी धारा, बहाव, सम्य पवन।

प्रविष्ट० गु० जो प्रवेश हुआ, घुसा, पैठा।

प्रवीण० गु० निपुण, सुचतुर, स्याना।

प्रवीणता० ना० स्त्री० निपुणता, चतुराई, स्यानपन।

प्रवृत्तकर्त्ता० गु० विश्वासी, मजूर, नजर।

प्रवृत्ति० ना० स्त्री० खबर, समाचार, धारा, इच्छा, किसी काम में लगना या लगाना यत्न।

प्रवेक० गु० प्रधान, सरदार।

प्रवेणी० ना० स्त्री० वर्षा, केशपाश।

प्रवेश० ना० पु० पैठ पहुंच, घुसाव।

प्रशान्त० गु० लीन, लयहुआ, थकित।

प्रशंसक० गु० स्तुतिकर्त्ता, बड़ाई करनहारा।

प्रशंसनीय० गु० प्रशंसा के योग्य।

प्रशंसा० ना० स्त्री० स्तुति, बड़ाई।

प्रशमन० ना० पु० वध।

प्रशस्त० गु० आनन्दा, योग्य, भला।

प्रशस्ति० ना० स्त्री० स्तुति, बड़ाई, योग्य, अच्छी।

प्रश्न० ना० पु० जिज्ञासा, सवाल पूछना।

प्रश्नोत्तर० ना० पु० प्रश्न का उत्तर, सवाल जवाब।

प्रषद० ना० पु० मृग, हरिण।

प्रष्टा० ना० पु० पूछनेहारा।

प्रसक्त० अव्य० सदा, गु० सजातन, प्राप्त।

प्रसङ्ग० ना० पु० प्रस्ताव, मेल, सङ्गम, संयोग, सम्बन्ध, चर्चा, साथ, रंग, वरत।

प्रसन्न० गु० हर्षित, आनन्दित, दयालु, खुश।

प्रसन्नता० ना० स्त्री० प्रसाद, हर्ष, आनन्द, कृपा।

प्रसन्नित० गु० हर्षित, आनन्दित, दयालु, राजी।

प्रसमित० गु० रहित, हीन, बिहून, बिन।

प्रसव० ना० पु० गर्भसे बालक का निकलना, जनाया, पदायश, उत्पत्ति।

प्रसवत० क्रि० उपजते, जनमते।

प्रसव्य० गु० बायां प्रतिकूल उपजने के योग्य।

प्रसाद० ना० पु० देवताओंको या गुरुको जूठन, कृपा, दान, भोजन।

प्रसादी० ना० स्त्री० जो कुछ देवताओं को चढ़ायागया, भोग, खाना।

प्रसारण० ना० पु० फैलाव, पसराव, गंधपसारण, पोना।

प्रसादक० ना० पु० भाजी बथुआ का साग।

प्रसारित० गु० विस्तारित, जो फैलायागया।

प्रसिद्ध० गु० प्रकाशित, विख्यात, मशहूर।

प्रसिद्धता० ना० स्त्री० प्रकटता, सुख्याति, जाहुर।

प्रसीद० क्रि० दयालुहो, कृपाकरो।

प्रसूत० ना० पु० जात, जन्मा, प्रसूति।

प्रसूति० ना० स्त्री० रोग विशेष, पानीबहने का रोग विशेष।

प्रसूतिका० } गु० स्त्री० जनाना जच्चा, माता।
प्रसूता०

प्रसून० ना० पु० पुष्प, फूल फल।

प्रसौती० ना० स्त्री० प्रसूती।

प्रस्तर० ना० पु० पत्थर, पाषाण।

प्रस्तरमय० गु० पाषाणमय, पथरीला।

प्रस्ताव० ना० पु० अवसर, चर्चा।

प्रस्ताविक० गु० समयपर, सामयिक।

प्रस्तुत० गु० वर्णित, सिद्ध, स्तुति कियागया।

प्रस्थ० ना० पु० परिमाण विशेष।

प्रस्थर० ना० पु० पत्थर।

प्रस्थान० ना० पु० गमन, विदा, यात्रा करने हारेका गमन, पायतुराव, नकल मकान।

प्रस्थापित० गु० प्रेरित, भेजा गया।

प्रस्थिति० ना० स्त्री० कीर्ति, नेकनामी।

प्रस्फुटित० गु० विकसित।

प्रहर० ना० पु० पहर, याम, दिन वा रातका आधा भाग।

प्रहरण० ना० पु० वध, मारण।

प्रहस्त० ना० पु० राक्षस विशेष।

प्रहार० ना० पु० चोट, ठोकर, मार।

प्रहारित० गु० मारागया वा माराहुआ।

प्रहारी० गु० मारनेहारा।

प्रहृन० ना० पु० विनय, प्रणाम।

प्रहेलिका० ना० स्त्री० पहेली, दृष्टिकूट।

प्रहृष्ट० गु० सन्तुष्ट।

प्रह्लाद० ना० पु० भक्त विशेष।

प्रह्लादिनी० ना० स्त्री० हसपादी पूरी।

प्रक्षालन० ना० पु० धलाई।

प्रक्षालित० गु० जो धोयागया।

प्रज्ञा० ना० स्त्री० सरस्वती, निर्मलबुद्धि।

प्रज्ञात्मा० गु० आपजानता, आपमानी।

प्राक्० अव्य० आग, पहले, पूर्व।

प्राकार० ना० पु० गढ़।

प्राकृतकवि० ना० पु० सूरदासादि।

प्राकृतभाषा० ना० स्त्री० रसूलभाषा विशेष।

प्राक्तन० गु० पुराना।

प्रागल्भ्य० ना० पु० प्रगल्भता, ढिठाई, घमंड।

प्राची० ना० स्त्री० पूर्व दिशा।

प्राचीन० गु० पुराना, बूढ़ा।

प्राचीना० ना० पु० पनी आंवला।

प्राड्विवाक० ना० पु० राजाकी आज्ञासे विचार करने के लिये स्थापित पुरुष, न्यायक।

प्राण० ना० पु० प्राणवायु, जीव, विशेषय।

प्राणदा० ना० स्त्री० जीवदाता।

प्राणप्रतिष्ठा० ना० पु० मन्त्र से देवता में जीव प्राप्त करना।

फणपति० ना० पु० शेषजी सर्पोंमें राजा।
फणा० ना० पु० फण।
फणि० ना० पु० सांप या उसकी मणि।
फणिक० ना० पु० सांप।
फणिज्जक० ना० पु० मरुआ, सुगन्धितपाता।
फणी० ना० पु० फणि, सांप।
फणीन्द्र०, फणीश० } ना० पु० सांपोंका राजा, शेषजी।
फदकना० अ० क्रि० दालआदिका उरना।
फदफदाना० अ० क्रि० मलबलाना, छोटे २ दाने पड़ना।
फन० ना० पु० फण।
फनगा० ना० पु० टिड्डा, पांखदार कीड़ा।
फनफनाना० अ० क्रि० फन फैलाना, फुस-कारना।
फन्दा० ना० पु० फांसी, पेंच, उलझाव।
फफसा० ना० पु० फूलाहुआ।
फफूंदी० ना० स्त्री० गीलापन के कारण से जो सफेदी अचार आदि में लगजाती है, सफूत।
फफोला० ना० पु० फुलका, छाला।
फब० ना० स्त्री० शोभा।
फबकना० अ० क्रि० पनपना, डाल निकलना।
फबता० ना० पु० योग्य, ठीक, जचता।
फबती० ना० स्त्री० शोभा, किसीको वस्त्र पहिने देखकर कहना यह किस जातिका है।
फबन० ना० स्त्री० शोभा, सजन।
फबना० अ० क्रि० सोहना, खुलना, सजना।
फबीला० गु० शोभित, सजीला, शोभायमान।
फर० ना० पु० फल, तीरकीगांसी, पत्ता।
फरकना० अ० क्रि० फड़कना।
फरचा० ना० पु० मेघोंका फटजाना, फैसला।
फरचाना० स० क्रि० न्यायकरना, आज्ञा देना।
फरछा० गु० निर्मल, स्वच्छ, खरा।
फरछाना० स० क्रि० स्वच्छ वा निर्मल कराना, खराना।
फरफन्द० ना० पु० छल, कपट, धोखा।
फरफन्दिया० गु० छली, धूर्त, ठग, कपटी।
फरस० ना० पु० फरसा।
फरसा० ना० पु० फावड़ा, कुल्हाड़ा, टबर, अस्त्र विशेष।
फरहरा० ना० पु०, फरहरी० ना० स्त्री० } पताका, पताका, गु० प्रफुल्लता।
फरहा० ना० पु० खोखला, फरसा, निर्मल।
फरिया० ना० स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष, लड़कियों के पहरने का वस्त्र विशेष।
फरी० ना० स्त्री० ढाल, फली फल समेत।
फर्राटा० ना० पु० बांसका टुकड़ा, ध्वजाके हिलने या पांखे की हवासे जो शब्द होताहै।
फर्राना० अ० क्रि० हिलना या उड़ना।
फल० ना० पु० वृक्षादिका सस्य, फलका मोती, कर्मोंका भोग, सन्तान, वाणके आगे का लोहा इत्यादि।
फलकना० अ० क्रि० फड़कना।
फलचारि० ना० पु० अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।
फलजनक० ना० पु० जो फललावे।
फलताङ्० ना० पु० ताड़का फल।
फलदं० ना० पु० गुग गु० फलका दाता।
फलदाता०, फलदानि० } गु० फल देनेहारा।
फलना० अ० क्रि० फललाना, भाग्यवान्‌होना।
फलमूल० ना० पु० फूल की दण्डी।
फलराज० ना० पु० खरबूजा, दशांगुल।
फलवर्तुल० ना० पु० तरबूज, हिंदुवाना।
फलवान्० गु० जो फल युक्त हो।
फलाई० ना० पु० संयुतासर, समरसर, गु० फलित।
फलांग० ना० स्त्री० कूदन, लंघन, टेग, जुरत।
फलाशिन० ना० पु० गिरनी।
फलाश० ना० स्त्री० फलांग।
फलित० गु० फलाहुआ, फलों समेत।

फलितार्थ॰ ना॰ पु॰ तात्पर्यार्थ, ठीक अर्थ।
फलिना॰ ना॰ पु॰ प्रियगु।
फलिया॰ ना॰ स्त्री॰ छीमी, तुकमा।
फली॰ ना॰ स्त्री॰ छीमी, तुकमा, ना॰ पु॰ वृक्ष, गु॰ स्त्री॰ फलित।
फलीग्रह॰ ना॰ पु॰ पारसपीपुल।
फलोदय॰ ना॰ पु॰ फलाप्राप्ति, आसराम, स्वर्ग आनंद।
फलोपम॰ ना॰ पु॰ सरद बैंगन, श्वेत भाग।
फसकद॰ ना॰ स्त्री॰ बड़र विशेष।
फसकना॰ अ॰ क्रि॰ फटना, फूटना।
फसकाना॰ स॰ क्रि॰ फाड़ना, ताड़ना, फोड़ना।
फसफाऊ॰ ना॰ पु॰ फाड़ तोड़ फाड़।
फसना॰ अ॰ क्रि॰ बझना, उलझना, जालमें पड़ना, कठिनता में पड़ना, फंसना, फंद में आना, वश में आना।
फसफसा॰ गु॰ पिलपिला, अलग।
फसफसाना॰ अ॰ क्रि॰ पिलपिलाना, सरना।
फसवाना॰ स॰ क्रि॰ उलझाना, अटकाना, बझवाना, मदद करवाना।
फसाना॰ स॰ क्रि॰ बझाना, उलझाना, फसाना, अटकाना, जाल में डालना, और बंदीगृह में रखना।
फहरना॰ अ॰ क्रि॰ फरीना।
फहराना॰ अ॰ क्रि॰ फरीना, उड़ाना, फूदना।
फाक॰ ना॰ स्त्री॰ फलका टुकड़ा।
फाकना॰ स॰ क्रि॰ फका मारना।
फांकी॰ ना॰ स्त्री॰ फाल, फकिया, पूर्वपक्ष।
फाटना॰ स॰ क्रि॰ बांटना, विभाग करना।
फाट॰ ना॰ पु॰ चाड़ाव, हिस्सह, विभंग।
फाद॰ ना॰ पु॰ फंद, फंदा।
फादना॰ स॰ क्रि॰ लंघना, कूदजाना।
फादा॰ ना॰ पु॰ फाद, गुच्छा।
फादी॰ ना॰ स्त्री॰ गन्नों का एक नाम।
फांफड़॰ ना॰ पु॰ छेद, मुह।
फांस॰ ना॰ स्त्री॰ सूक्ष्म कांटा।
फासना॰ स॰ क्रि॰ बांधना, रोकना, फंदकरना, जाल में रखना।
फासा॰ ना॰ पु॰ डोरका उकसा।
फासी॰ ना॰ स्त्री॰ फंदी, फसरी, फंद, फंसउ रस्सा।
फाग॰ ना॰ पु॰ गुलाल या अबरा डालना, वा उड़ाना, होला का समय।
फागुन॰ ना॰ पु॰ फागुन।
फाटक॰ ना॰ पु॰ बड़ा द्वार, दरवाज़ा।
फाटना॰ अ॰ क्रि॰ फटना।
फाड़खाना॰ स॰ क्रि॰ भभारना, झकोरना।
फाड़ना॰ स॰ क्रि॰ चीरना, फाटना, तोड़ना, मसकाना।
फाडा॰ गु॰ चाराहुआ।
फाल॰ ना॰ स्त्री॰ हलके आगका लोहा, चौकठी सुपारी का टूक, डग चो।
फालसा॰ ना॰ पु॰ फल वा वृक्ष विशेष।
फाल्गुन॰ }
फागुन॰ } ना॰ पु॰ फागुन मास, अर्जुन।
फाल्गुनिका॰ ना॰ स्त्री॰ फगु, होला।
फाव॰ ना॰ पु॰ थलुआ रूलर।
फावड़ा॰ ना॰ पु॰ माटी खोदने का अस्त्र, फर्सा, बड़ा और भारी उदार।
फावड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ करागा, डराना।
फावना॰ अ॰ क्रि॰ सोहना, शोभादेना।
फावित॰ गु॰ शोभित।
फावी॰ गु॰ शोभतभर्म, शोभा दा।
फाहा॰ ना॰ पु॰ मरहम से भीगाहुआ कपड़ेका छोटा टुकड़ा, गीली।
फिकारना॰ स॰ क्रि॰ सिर नंगा करना।
फिट॰ ना॰ पु॰ धिक्कार।
फिटकार॰ ना॰ स्त्री॰ धिकार लानत।
फिटकरी॰ ना॰ स्त्री॰ फटकरी।

फिटकारना० स० क्रि० धिक्कार करना, कोसना, शापना।
फिटाना० स० क्रि० फेंटना, फिनाना।
फिर० अव्य० पुनि, पुन, फेर।
फिरकवाहनी० ना० स्त्री० सेजगाड़ी।
फिरकी० ना० स्त्री० नेगी, भौंरा, चकई, फिराने की वस्तु जिसको लड़के फिराते हैं।
फिरजाना० अ० क्रि० पलटना, फिरना।
फिरत० ना० पु० वस्तु जो अप्रसन्नता से लौटदी।
फिरता० गु० रमता, फेरो का पैसा।
फिरतारहना० अ० क्रि० रमना, फेरा करना, भटकता रहना।
फिराना० स० क्रि० घुमाना, भटकाना, रमाना।
फिराव० ना० पु० घुमाव, फेर।
फिर्ना० अ० क्रि० घूमना, लौटना, भटकना, रमना।
फिर्की० ना० स्त्री० फिरकी।
फिल्ली० ना० स्त्री० पिंडली।
फिसफिसा० गु० डरपोक, फसफसा।
फिसफिसाना० अ० क्रि० भयभीत होना डराना।
फिसलन० ना० स्त्री० सिसलन, बिछलना।
फिसलना० अ० क्रि० सिसलना, बिछलना, रपटपड़ना।
फिसलाना० स० क्रि० सिसलाना, बिछलाना, चूकना।
फिसलाहट० ना० स्त्री० सिसलाहट, चिकनाहट।
फींचना० क्रि० ना० खंगालना, धोना।
फीका० गु० स्वादरहित, सीठा, सांवला, बदरंग, बेमजे।
फुकार० ना० स्त्री० सांपकी फनफनाहट।
फुंकारना० अ० क्रि० फनफनाना।
फुंहार० ना० स्त्री० झांसी, फूही।
फुकना० अ० क्रि० जलना, ना० पु० भैसा।
फुकनी० ना० स्त्री० धौंकनी, निगाली, आग फूंकने की जो नाल वा पीतलादि की होती है।
फुट० गु० अयुग्म।
फुटकर० गु० अलग, भिन्न भिन्न, अयुग्म।
फुटकी० ना० स्त्री० छींट, छिटकी, गु० अयुग्म।
फुड़िया० ना० स्त्री० फुंसी छोटा फोड़ा।
फुदकना० अ० क्रि० कुदकना, थोड़ा थोड़ा उछलना।
फुदकी० ना० स्त्री० पक्षी विशेष।
फुनगी० ना० स्त्री० वर्ली, कोंपल, वृक्षकी चोटी
फुनंग० ना० स्त्री० शिखर, चोटी।
फुनसी० ना० स्त्री० मुंहासा, फुड़िया, पिरकी।
फुनिया०, फुन्नी०, फुन्नो० } ना० स्त्री० लोलो।
फुपकार० ना० स्त्री० फुकार।
फुप्फा० ना० पु० फूफा।
फुप्फो० ना० स्त्री० फूफू, फूआ।
फुफेरा० ना० पु०, फुफेरी० ना० स्त्री० } गु० जो फूफूसे उत्पन्न भया या जो फूफूका सम्बन्धी होवे।
फुर० गु० सच, ठीक, सत्य।
फुरति० ना० स्त्री० फुर्ती।
फुरफुराना० अ० क्रि० कांपना, हिलना।
फुरफुरी० ना० स्त्री० कम्पाहट, थरथराहट।
फुर्त०, फुर्ती० } ना० स्त्री० वेगता, शीघ्रता, चालाकी चटपटी, जल्दी।
फुर्तीला० गु० वेगी, चालाक, चटपटिया।
फुलका० गु० फूलाहुआ, हलका, ना० पु० फफोला, पतली छोटा रोटी।
फुलकारना० अ० क्रि० फूलना, फय, उठाना।
फुलकारी० ना० स्त्री० कपड़ा जिसमें फूलहों।
फुलकिया०, फुलवार० } ना० स्त्री० रोग विशेष।
फुलझड़ी० ना० स्त्री० आतशबाजी विशेष।

फुलवाई० ना० स्त्री० फुलवाड़ी, रामायणे यथा, एक सखी सियसंग बिहाई, गई रहै देखन फुलवाई।

फुलवाड़ी० ना० स्त्री० फूलोंकी बाड़ी वा बाग।

फुलाना० स० क्रि० सुजाना, मोगवरना।

फुलासरा० ना० पु० लल्लोपत्तो, फुसलाहट।

फुलेल० ना० पु० चमेली का तेल।

फुलौरी० ना० स्त्री० पकौड़ी।

फुल्ल० गु० फूला, खिला।

फुल्लद्रु० गु० बकेला, फूलसे थोड़े दिनमें फल।

फुल्ली० ना० स्त्री० आंखकी फूली।

फुसफुसाना० अ० क्रि० धीरे धीरे बातकहना, फीसी पड़ना।

फुहार० ना० स्त्री० पानीके कण छोटे २ पड़ना।

फुहारा० ना० पु० फव्वारह छोटी २ बूंदें छूटना।

फूआ० ना० स्त्री० फूफू, बापकी बहन।

फूंक० ना० पु० फूंकने का काम वा चाल।

फूंकना० स० क्रि० मुख से वायु छोड़ना, सुलगाना, मुख से बजाना, उड़ाना, जलाना।

फूफकारना० अ० क्रि० फनफनाना।

फूही० ना० स्त्री० फीसी, फूहा।

फूकना० स० क्रि० फूंकना।

फूट० ना० स्त्री० ककड़ीविशेष, अशुभ, बिगाड़, भिन्नता, खाट।

फूटन० ना० स्त्री० अनबनाव, विरोध।

फूटना० अ० क्रि० टूटना, फटना, भिन्न भिन्न होना, प्रकट होना दुर्गन्धि निकलना।

फूटा० गु० टूटा।

फूटी० ना० स्त्री० विरोध, बिगाड़, गु० टूटा।

फूफा० ना० पु० फूफूका पति।

फूफा० } ना० स्त्री० बापकी बहिन।
फूफू० }

फूल० ना० पु० पुष्प, बत्ती, निहानी, सूज, जले हुए मृतककी हड्डी।

फूलना० अ० क्रि० खिलना, विगसना, आन न्दितहोना, सूजना, अभिमानी होना।

फूला० गु० सूजा, ना० पु० धानोंके लावा।

फूलाव० ना० पु० सूजन।

फूली० ना० स्त्री० फुल्ली जो आंख में होती है।

फूस० ना० पु० पुरानी घास, तृण, पूसमास।

फूसड़ा० ना० पु० गूदड़।

फूसी० ना० स्त्री० भूसी।

फूहड़० ना० स्त्री० फूहर।

फूहड़ा० गु० कुवचन कहनेहारा।

फूहर० ना० स्त्री० अनशीली, धामड़, कुचाल चलनेहारी, ना० स्त्री० भिग्गल।

फूहा० ना० पु० रुतनके सदृश रुई गोला।

फूहार० ना० स्त्री० फूहर, फुहरा।

फूही० ना० स्त्री० भीसी।

फेंक० ना० स्त्री० फेंकने का काम वा चाल।

फेंकना० स० क्रि० डालना, झोंकना।

फेंकाव० गु० फेंकने के योग्य।

फेंट० ना० स्त्री० कब, कटिबंध, पटका।

फेंटन० स० क्रि० मिलाना, सानना, लतपत करना।

फेंटा० ना० पु० छोटा पगड़ा, पटका।

फेंटी० ना० स्त्री० आंटी।

फेट० ना० स्त्री० फेंट।

फेटना० स० क्रि० फेंटना।

फेटा० ना० पु० फटा।

फेणु० ना० पु० फेना।

फेणोद्गारि० ना० पु० समुद्र फेणु।

फेन० } ना० पु० झाग, फेणु।
फेना० }

फेनाना० अ० क्रि० फेना उठना।

फेनी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।

फेनुस० ना० पु० पीयूष।

फेफड़ा० ना० पु० अङ्ग विशेष जिसके द्वारा श्वास लेते हैं।

फेफड़ी० ना० स्त्री० चलोंकी आसक्ति।
फेर० अव्य० पुन।
फेर० ना० पु० बाक, टेढ़ाई, घुमाव, घेरा, कुयदशी, घोल, घुमाव।
फेरना० स० क्रि० घुमाना।
फेरा० ना० पु० घुमाव, फेलाव।
फेराफेरी० ना० स्त्री० इधर उधर जाना, आवागमन।
फेरी० ना० स्त्री० प्रदक्षिणा।
फेरीवाला ना० पु० फेरनेवाला, विसाती आदि।
फेरु० ना० पु० शृगाल, गीदड़, धोखा, अन्तर, फेर।
फेंटा० ना० पु० फेंटा।
फैलना० अ० क्रि० बिछना, पसरना, बिथरना, प्रगट होना।
फैलाना० स० क्रि० बिछाना, चौड़ाना, पसारना, बिथराना, प्रगट करना।
फैलाव ना० पु० विस्तार, पसार, प्रकटता, प्रचार, भराव।
फौर० गु० खोखला, पाला, ना० स्त्री० बाबरी एक ओर जिसमें पेंच में लगाते हैं।
फोंकी० ना० स्त्री० नली, भूली।
फोहार० ना० स्त्री० फुहार।
फोक० ना० पु० तरल, सीठी, गु० खोखला वस्त्र या फन्दा, बाण का एक भाग।
फोकट० ना० पु० कंगाल।
फोकड़० ना० पु० मूढ़, तरल, फूहा।
फोड़ना० स० क्रि० ताड़ना, फाड़ना।
फोड़ा० ना० पु० स्फोटक, बालतोड़, पिरती।
फोला० ना० पु० फफोला, छाला।

[ब]

बंधोटी० ना० स्त्री० बाँझ होने की औषधि विशेष।
बंटवाना० स० क्रि० भागकरवाना, हिस्सहद रवाना।
बंटैया० ना० पु० भागकर्त्ता, बांटनेहारा।
बंटाना० स० क्रि० बाँटना, वा बटवाना।
बंटैत० ना० पु० बटैया।
बंडोहा० ना० पु० बवण्डर, बोहरा।
बंश० ना० पु० बांस।
बंशकार० ना० पु० बांस का बनानेवाला।
बंशचीरी० ना० पु० वंशलोचन।
बंशरोचन० पु० बंसलोचन।
बंशावली० ना० स्त्री० बंसावली।
बंशी० ना० स्त्री० बंसी।
बक० ना० पु० बग, ना० स्त्री० भक, गप।
बकुची० ना० स्त्री० पौधा विशेष जिसके बीज से सुजली जाती है।
बकझक० ना० स्त्री० बकवाद।
बकना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, भकलगाना।
बकबक० ना० स्त्री० बकबक, गप शप।
बकबकाना० स० क्रि० बकबक करना।
बकरा० ना० पु० अज, छाग।
बकरी० ना० स्त्री० अजा, छेरी छाग।
बकला० ना० पु० छिलका, छाल।
बकवाद० ना० स्त्री० बकबक।
बकवादी० ना० पु० बकवादिया।
बकवास० ना० पु० बकवाद।
बकवाहा० ना० पु० } बड़बड़िया।
बकवाही० ना० स्त्री० }
बकसा० गु० समेट बंधेना।
बकसुआ० ना० पु० चपरास, चपरास।
बकसैला० गु० बरसा।
बकायन० ना० स्त्री० वृक्ष विशेष।
बकारा० ना० पु० अगुवा, पथिक, बगेरी।
बकारी० ना० स्त्री० टहीलरीर।
बकिया० ना० स्त्री० छुरी, चाकू।
बकुला० ना० पु० बगला।
बकेनी० ना० स्त्री० बहुत दिनकी व्यानी गाय अथवा भैंस।
बकेलू० ना० पु० पलाश अर्थात् ढाकवी जड़।

को कूटकर बनाते हैं जिससे रस्सी आदि बनती है।
बकोटना० स० क्रि० खसोटना, नोचना।
बक्कम० ना० पु० रंगने का काठ।
बक्कल० ना० पु० बकला।
बक्का० ना० पु० } गु० झक्की, गप्पी, बकवादी।
बक्की० ना० स्त्री० }
बखरी० ना० स्त्री० झोपड़ी, घर, मकान।
बखरा० ना० पु० बखेरा, मोरा।
बखान० ना० पु० वर्णन, स्तुति।
बखानना० स० क्रि० वर्णनकरना, स्तुतिकरना, सराहना।
बखार० ना० पु० } खाता, भण्डार, अनाज
बखारी० ना० स्त्री० } रखने की कोठी या कोठरी।
बखेड़ा० ना० पु० झगड़ा, लड़ाई, रोला।
बखेड़िया० गु० झगड़ालू, लड़ाका।
बखेरना० स० क्रि० बिथराना, छितराना।
बखोर० ना० स्त्री० रोक, टेक, अभ्यास।
बखोरना० स० क्रि० छेड़ना, पूछना।
बखौरा० ना० पु० कन्धा, मोढ़ा।
बग० ना० पु० बक, बगुला, बाग।
बगछुट० ना० पु० सरपट।
बगपांति० } ना० स्त्री० बगुलों की पांति।
बगपांती० }
बगड़० ना० पु० चावल विशेष।
बगड़ा० ना० पु० छल, दुरा।
बगड़िया० गु० छली, ठग।
बगदना० अ० क्रि० फिरना, बिगड़ना, भूलना, फैलना।
बगदाना० स० क्रि० फिराना, बिगाड़ना, भुलाना, फैलाना।
बगमेल० ना० पु० अति निकट, बाग में बाग का मिलजाना।
बगर० ना० पु० घर आंगन, सहन।
बगराना० स० क्रि० छिटकाना, फैलाना, बिथराना।
बगला० ना० पु० बक, बगुला, पक्षी विशेष।
बगलाभगत० गु० कपटी, धूर्त, छली।
बगहंस० ना० पु० हंस विशेष।
बगिया० ना० स्त्री० } फुलवाड़ी, छोटा उपवन,
बगीचा० ना० पु० } छोटाबाग, फारसी शब्द है।
बगुला० ना० पु० बक, पक्षी विशेष।
बगूला० ना० पु० बावण्डर, बौंडरा।
बघनहा० ना० पु० सुगन्धि विशेष, जड़ विशेष।
बघना० ना० पु० बाघ के नख या दांत जो बालक को पहिनाते हैं।
बघरूरा० ना० पु० बावण्डर, बगला, पवनग्रन्थि।
बघार० ना० पु० छौंक।
बघारना० स० क्रि० छौंकना।
बघ्री० ना० स्त्री० मांस, गुड़मखरी।
बघेल० ना० पु० राजपूत, जाति विशेष।
बघेलखण्ड० ना० पु० देश विशेष, रीवां का प्रदेश।
बघेला० ना० पु० बघेल, बाघका बच्चा, बाघरू।
बंक० ना० पु० बांका।
बंकाई० ना० स्त्री० फेर, टेढ़ाई।
बंग० ना० पु० धातु विशेष, उल्लूसन, बंगाला देश।
बंगरी० ना० स्त्री० गहना विशेष।
बंगला० ना० पु० छप्पर या खपरैल का घर विशेष, पान विशेष, बंगाले के अक्षर या भाषा।
बंगसेन० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष।
बंगा० ना० पु० बांसका जड़का पोर, गु० उल्लू, नासमझ, रामायणे यथा, तीरथ राज प्रयाग नदी पुनि गंगा, राममंत्र करिये रहबंगा।
बंगाल० } ना० पु० देश विशेष जो गयाजी
बंगाला० } से पूर्व में है।
बंगालिन० ना० स्त्री० बंगाली की स्त्री।
बंगाली० गु० बंगाले का वासी।

बत्तीसी० ना० स्त्री० सब दांत, गु० जिसमें बत्तीस वस्तुका समुदाय हो।

बत्सा० ना० पु० चावल विशेष।

बथुआ० ना० पु०
बथुई० ना० स्त्री० } शाक विशेष भाजी।

बद० ना० स्त्री० रोग विशेष, गाथा।

बदना० स० क्रि० ठहराना, मानना अंगीकार करना।

बदर० ना० पु० सब मेवा एक तरह मछली वस्तु अर्थात् तोता यह शब्द अरबी में शुद्ध बदरहै परन्तु अयोध्या प्रान्त में यों लिखतेहैं, यथा, विरव बदर जनु तुम्हरे हाथा।

बदल० ना० पु० भेष, प्रतीकार, अव्य० सन्ते।

बदलना० स० क्रि० पलटना, पीसना।

बदरा० ना० पु० सता ताड़न, पलटा पीसा।

बदलाई० ना० स्त्री० तोड़नाई, पलटाई, पीसाई।

बदलाना० स० क्रि० फरवालना ताड़ाना पीसाना।

बदबा० ना० स्त्री० घसरा घाग मय।

बदा० गु० जो मारन में लिखितहै।

बदाबदी० अव्य० दिखाका समत लड़ाई से झगड़े से।

बदि०
बदी० } ना० स्त्री० कृष्णपक्ष, हतु, लिये।

बद्दल० ना० पु० मघ।

बद्ध० गु० जो बाधागया।

बद्धी० ना० स्त्री० गल में पहरेनेकी वस्तु विशेष, तसमा चमड़े का।

बद्रीबन० ना० पु० बद्रीनाथ का वन।

बध० ना० पु० हत्या, हिंसा, हनन।

बधन० ना० पु० हनन, हनन।

बधना० स० क्रि० मारडालना, हत्या, मरना ना० पु० पानी पीने का पात्रविशेष।

बधजन्य० ना० पु० मेराका वध।

बधस्थान० गु० जिस स्थान में वध कियाजाय।

बधाई० ना० स्त्री०
बधावा० ना० पु० } जयकार मानना, आनन्द, मङ्गलाचार जो छठी आदि को लड़के के घर पूछी भेजाती है।

बधिक० गु० पु० हिंसक हत्यारा, कसियारा बहेलिया, कसाई।

बधिया० ना० स्त्री० पशुओं में जो अण्डहीन हुआ।

बधिर० गु० बहिरा।

बधू०
बधूटी० } ना० स्त्री० बहू, पुत्रकी स्त्री।

बध्य० गु० जो वध करनके योग्यहै।

बन० ना० पु० वन, पानी।

बनज० ना० पु० वणिज, ब्योपार, कमल।

बनजारा० ना० पु० धनका ब्योपारी जो बैलों पर धन लादकर लेजाता है।

बनजारी० ना० स्त्री० बनजारा की स्त्री, तम्बू विशेष अथवा जो चाम।

बनठन० गु० शृङ्गारयुत, तैयारी, सजधज से।

बनत० ना० पु० गोटसे बुनीहुई वस्तु विशेष जो आकार लिये धोती आदि में लगाते हैं।

बनमराई० ना० स्त्री० पाधाविशेष।

बनना० अ० क्रि० रूपपकड़ना तैयार होना, बना।

बनपड़ना० अ० क्रि० बात सुधरना।

बनप्रिय० ना० स्त्री० कोयल।

बनमञ्जरी० ना० स्त्री० सम्भालू।

बनमाल०
बनमाला० } ना० स्त्री० माला जो बहुपुष्पों से गुथी और लम्बी पावं तक होती है।

बनमालिका० ना० स्त्री० बराहक्रान्ता, बनमाला।

बनमाली० ना० पु० श्रीकृष्ण का एकनाम।

बनरा० ना० पु० दूलह।

बनरी० ना० स्त्री० दुलहन।

बफारा० ना० पु० भाफ, भाठ।
बबुआ० ना० पु० लड़का, बालक।
बबूल० ना० पु० वृक्ष विशेष, कीकड़।
बम० ना० स्त्री० सोता, पुसौ।
बमकना० अ० क्रि० उभरना, सूजना, फूलना।
बम्बई० ना० पु० देश वा नगर विशेष।
बम्बा० ना० पु० वृक्ष विशेष, सोता, यंत्र विशेष।
बया० ना० पु० पक्षीविशेष, निरखी।
बयार० ना० पु० वायु, पवन, हवा।
बयाला० ना० पु० रोशनदान, बुधुक्का, गु० जिस वस्तु में वाई रहती है।
बयालीस० गु० चालीस और दो, ४२।
बयासी० गु० अस्सी और दो, ८२।
बर० ना० पु० आशीर्वाद, पदार्थ, दुलहा, धान की चौड़ाई, शाक्र्य वृक्ष वरदान, ना० स्त्री० बिरनी, गु० श्रेष्ठ, सुन्दर, अभिराम।
बरई० ना० पु० तम्बोली।
बरखना० अ० क्रि० बरसना।
बरगत० } बरगद० } ना० पु० बड़, वृक्ष विशेष।
बरजना० स० क्रि० निषेध करना, हटकना, बारना, रोकना।
बरत० ना० पु० व्रत बर्त्त, चमोटी, चमड़े की रस्सी जिस से पुरका पानी सींचते हैं, गु० जलत, धधकत।
बरतना० स० क्रि० बाचना, बिचारना।
बरतनी० ना० स्त्री० अक्षरांगी, वर्णमाला।
बरदैत० ना० पु० भाट, दसौंधी, बानावाले।
बरध० ना० पु० बैल, वृषभ।
बरधना० स० क्रि० गौ और बैलकाप्रसंगहोना।
बरधाना० स० क्रि० गौका बैल से प्रसंग कराना।
बरन० ना० पु० वर्णन, अव्यय तो भी, किंवा, बल्कि।
बरनन० ना० पु० वर्णन।
बरना० ना० पु० वृक्ष विशेष, स० क्रि० विवाह करना अ० क्रि० जलना, धधकना, नदी विशेष।
बरनी० ना० स्त्री० पपनी।
बरबस० ना० पु० बल बलात्कार, प्रबलता।
बरब० ना० पु० पक्षी विशेष।
बरवट० ना० पु० रोग विशेष, सर्प विशेष, बरबस, बरियाई।
बरवा० ना० पु० छन्द विशेष, काग मछलीमारने का जा० स्त्री० रागिनीविशेष जिससे हरिण और सर्प मोहता है।
बरस० ना० पु० वर्ष, मोदक वस्तु विशेष जो अफ़ीम से बनती है।
बरसगांठ० ना० स्त्री० जन्मदिन, जन्मदिन में सर्वदा गांठ बांधने का व्यवहार।
बरसना० अ० क्रि० पानी पड़ना।
बरसवान० गु० वर्षा स्रवती, वार्षिक।
बरसौंडी० ना० स्त्री० वर्ष का भाड़ा या कर, वार्षिक।
बरहा० ना० पु० खेत जिसमें गौ चराते हैं, रस्सा चमोटी, खेतमें पानी लहाने का मार्ग, पुत्रजन्म के बारहवें दिन का व्यवहार।
बरा० ना० पु० बड़ा, भोजन में व्यञ्जन विशेष, स्त्री० बाबुची, गु० बड़ी स्त्री।
बराक० ना० पु० बराक, दमता।
बरात० ना० स्त्री० दूलह और उसके साथी।
बराती० ना० पु० विवाह के योतहारी।
बराना० अ० क्रि० परे रहना, अलग होना, आचार करना तजना, छोड़ना।
बराव० ना० पु० सयम, अलगाव।
बरियाई० ना० स्त्री० बड़ाई, उमंग, बरजस।
बरियाय० ना० पु० वरट, जबरदस्ती।
बरियार० गु० बलवान्, प्रबल, तेजस्वी।
बरियारा० ना० पु० पौधा विशेष, बरेरा।
बरी० ना० स्त्री० कली, बड़ी औषधि की गसा बर्ग, पिवाही।

बरीस० } गु० वर्ष, वाक्ये यथा, कृष्णावस्था
बरीसा० } पाच बरीसा, जब राधिका प्रथम
दिन दीसा।

बरु० अव्य० चाहो, यद्यपि।

बरेठन० ना० स्त्री० धोबिन्।

बरेठा० ना० पु० धोबी।

बरेटा० ना० पु० बिरवा विशेष, बिरनी।

बरै० ना० स्त्री० तम्बोली।

बरैन० ना० स्त्री० तम्बोलिन्।

बरोठा० } ना० पु० ड्योढ़ी।
बरौठा० }

बर्छा० ना० पु० } भाला विशेष।
बर्छी० ना० स्त्री० }

बर्छैत० ना० पु० भालैत, भाला मारनेवाला।

बर्त० ना० पु० काम, अभ्यास, बरत।

बर्तन० ना० पु० बासन, भाड़े, पात्र।

बर्तना० स० क्रि० काममें लाना।

बर्मा० ना० पु० बेधक, बढ़ई का अस्त्र विशेष।

बर्माना० स० क्रि० बेधना, छेदना।

बर्म्हा० ना० पु० देशविशेष जो भारतखण्ड के पूर्व है।

बर्रै० ना० पु० कुसुम का बीज, छत्तादारकाटा विशेष।

बर्वै० ना० पु० भाषाका छन्दविशेष।

बर्स० ना० पु० वर्ष।

बर्सात० ना० स्त्री० वर्षा, प्रावृट्।

बर्साती० ना० पु० घोड़े के पेर में रोगविशेष गु० जो वर्सातमें उपजता वा सब परसताहो।

बर्साना० स० क्रि० पानी गिराना, ना० पु० मजमें नगर विशेष।

बर्सी० ना० स्त्री० बरसदिन का श्राद्ध।

बर्हं० ना० पु० मोरपख।

बर्ही० ना० पु० मोर, मयूर।

बल० ना० पु० सामर्थ्य, श्रीबलदेवजी, बली, ऐंठन, दल, वीर्य, पीज, देत्य विशेष।

बलकना० अ० क्रि० खोलना, निज बड़ाई करना।

बलताड़० ना० पु० वृक्ष विशेष।

बलतोड़० ना० पु० फुड़िया जो बाल के टूटने से होती है।

बलद० ना० पु० बैल जो बोझा ढोता है।

बलदाऊ० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

बलदिया० } ना० पु० बैल का लादने हारा
बलदी० } या बैल का चलाने या चराने हारा।

बलदेव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र के ज्येष्ठ भ्राता।

बलना० अ० क्रि० जलना।

बलियकरा० ना० पु० बलिका बकरा, युद्ध में जो विना लड़े मारा जावे।

बलबलाना० अ० क्रि० उबलना, कामातुर होना।

बलबीर० ना० पु० श्रीबलदेवजी या श्रीकृष्ण।

बलभद्र० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

बलम० ना० पु० पीतम, स्वामी, पति।

बलमा० ना० पु० पीतम, स्वामी, पति, प्रियतम राग विशेष जो होली में गाते हैं।

बलराम० ना० पु० श्रीबलदेवजी।

बलवन्त० गु० पराक्रमी, सामर्थी, योद्धा।

बलवर्द्धक० गु० बलका बढ़ाने हारा।

बलवान्० गु० बलवंत।

बलही० ना० स्त्री० आगी, भार।

बलाईलेना० स० क्रि० और की दुर्गति के पाप चाहना।

बलात्कार० ना० पु० बरबस, अनिच्छा से काम कराना, जबरदस्ती।

बलाराति० ना० पु० इन्द्र, देवराज।

बलि० ना० पु० भोजन, भाग, अंश, पूजा, गन्धक, सदक्रह, राजा विशेष, ना० स्त्री० चमारर, लहरी।

बलित० गु० भरा, परा, बल संयुक्त।

बलिदान० ना० पु० देवता के हेतु पशु का अर्पण।

बलिपुष्ट०, बलिभुक्० ना० पु० कौवा, काग।

बलिरसा० ना० स्त्री० गंधक।

बलिष्ठ० गु० बलवान्, पहलवान।

बलिहारी० ना० स्त्री० न्योछावर, कुर्बान्।

बली० गु० बलवान, पहलवान, वीर।

बलीमुख० ना० पु० वानर, कपि, बन्दर।

बलीवर्द० ना० पु० बरद।

बलुआ० गु० बालूमय।

बलूला० ना० पु० बुलबुला।

बलेंडा० ना० पु० मदयंडर, बंडेरा, बर्गेवला।

बलेंड़ी० ना० स्त्री० लम्बी धरनि, जा दो छप्परों के बीच में रखते हैं।

बलिक० क्रि० बरआदकर, निज बड़ाई कर।

बवगुजा० ना० स्त्री० बकुची।

बल्प० ना० स्त्री० बसगंध।

बल्कल० ना० पु० मोठ धान।

बल्लकी० ना० स्त्री० वीणा, तम्बूरा।

बल्लभ० ना० पु० भाला, सेल।

बल्लरी० ना० स्त्री० बेल, लता।

बल्लरीकोष्ठ० ना० पु० हरतिलाइ।

बल्ला० ना० पु० लट्ठा दण्ड, लम्बा बांस जिस से नाव चलाते हैं गोबर की बनी वस्तु जो होली में डालते हैं।

बवंडर० ना० पु० बगूला, बगूला, बँडेरा, प धा की गाँथ।

बवासीर० ना० स्त्री० गुदा में रोगविशेष।

बवेलिया० ना० पु० गाड़, गड़िया।

बस० ना० पु० वश।

बसन० ना० पु० कपड़ा।

बसना० अ० क्रि० रहना, गराहाना, ना० पु० कपड़ाविशेष जिसमें धान लपेटते हैं।

बसमी० ना० स्त्री० हरिया, थैली।

बसाना० स० क्रि० आबाद कराना, अ० क्रि० गंध देना।

बसूला० ना० पु० बढ़ई का अस्त्र विशेष।

बसूली० ना० स्त्री० ईंट काटने के लिये अस्त्रविशेष छोटा बसूला।

बसेंधा० गु० सना, उमसा।

बसेरा० ना० पु० बकस, सायंकाल, बसना।

बसोबास० ना० पु० बसगति।

बस्ता० ना० स्त्री० वस्तु, चीज।

बस्ती० ना० स्त्री० ग्राम, गांव, नगर, बढ़ावा।

बहन० ना० पु० बठन।

बहकना० अ० क्रि० निराश होना, भटकना, भूलना।

बहकाना० स० क्रि० निराश करना, भटकाना, भुलाना, छहकाना।

बहँगी० ना० स्त्री० जिसमें कहार बोझ लये-लते हैं।

बहजाना० अ० क्रि० बहना, बिगड़ना, उजड़ना।

बहत्तर० गु० सत्तर और दो, ७२।

बहना० अ० क्रि० चलना, भरना, उमड़ना, मर्याद से बाहर जाना, भूलजाना।

बहनेऊ० ना० पु० बहिनका स्वामी, बहनोई।

बहेलिया० ना० स्त्री० ल पालक, बहन।

बहनोई० ना० पु० बहनका पति।

बहनेटा० ना० पु० भाइयका बालक।

बहर० ना० स्त्री० अनेक भौंरा।

बहरा० गु० बधिर, जिसको सुनाई नहीं देता है।

बहरियां० गु० अनजान, बाहरका।

बहरी० ना० स्त्री० पक्षिविशेष जो कबूतर को पकड़ लेता है।

बहल० ना० स्त्री० बलन की गाड़ी।

बहलाना० अ० क्रि० मनप्रसन्न रहना या करना।

बहलाना० स० क्रि० रिझाना, रिझाना मन प्रसन्न करना।

बहलिया० ना० पु० आखेटकी, वधिक, धनुर्धर, नीचजाति विशेष।

बहली० ना० स्त्री० छोटी बहल।

बहाना० स० क्रि० चलाना, भसाना, उमड़ाना भुलाना, मर्यादा बाह्य चलाना।

बहाव० ना० पु० अहिला, बाढ़ लदाव।

बहिः० अव्य० बाहर।

बहिःकोण० ना० पु० बाहरका कोना।

बहिआना० अ० क्रि० पतित होना, बहना, बिगड़जाना, खराब होना।

बहिन० ना० स्त्री० भगिनी, अनुजा।

बहिरन्तर० अव्य० बाहर, भीतर।

बहिरा० गु० बधिर, बहरा।

बहिराना० स० क्रि० बहलाना, अ० क्रि० निकलना।

बहिर्देश० ना० पु० बाह्यस्थान, बाहरकादेस।

बहिर्मुख० ना० पु० धर्मकरने में अचेत, अभगत।

बही० ना० स्त्री० महाजनों के हिसाब की पोथी, खसरह, खाता।

बहीर० ना० स्त्री० सेना के संग जो भीड़आदि सामग्री।

बहु० गु० बहुत, ढेर, अनेक।

बहुकाल० ना० पु० अनेक दिन, बहुत दिन।

बहुकालीन० गु० बहुत दिनों का।

बहुत० गु० अधिक ढेर, बड़ा।

बहुतात०
बहुतायत० } ना० स्त्री० अधिकता, सरसाई, विस्तार, जियादती।

बहुतेरा० गु० अनेक, अधिक।

बहुत्व० ना० पु० बहुतायत।

बहुदर्शी० ना० पु० जिसने बहुत देखा है।

बहुधा० अव्य० अनेक प्रकारसे, बहुत प्रकार, कईबार, अक्सर।

बहुनयन०
बहुनेत्र०
बहुनैन० } ना० पु० इन्द्र।

बहुपद० ना० पु० बरगदवृक्ष।

बहुपत्रा० ना० पु० भौंरा, भ्रमर।

बहुपुट० ना० पु० भोजपत्र।

बहुपुत्रिका०
बहुपुत्री० } ना० स्त्री० बड़ी शतावर, बहुतबेटी।

बहुबाहु०
बहुभुज० } ना० पु० बाणासुर, नागार्जुन, रावण, गु० जिसके बहुत भुजाहों।

बहुभुजक्षेत्र० ना० पु० बहुतभेदों का खेत।

बहुमञ्जरी० ना० स्त्री० तुलसी।

बहुमूल्य०
बहुमोल्य० } गु० महंगा वा जिसका बहुत मोल है, क़ीमती।

बहुर० अव्य० फेर, पुनि।

बहुरंगी० गु० अनेक रंग का धारिधर।

बहुरना० अ० क्रि० फिरना, फिरआना।

बहुराना० स० क्रि० फेरलाना, फिराना।

बहुरि० अव्य० पुनः फेर।

बहुरिया० ना० स्त्री० बधू, बहू।

बहुरूपा० ना० पु० शरट।

बहुरूपिया०
बहुरूपी० } ना० पु० भांड, स्वांगी।

बहुरूप्य० ना० पु० भांडैती।

बहुल०
बहुलता० } गु० बहुतायत, अधिकता, इफ़रात।

बहुलच्छद० ना० पु० सहिंजनवृक्ष।

बहुला० ना० स्त्री० छोटी कटाई।

बहुवचन० ना० पु० अधिकत्व, संख्या का बोधक, प्रत्यय, बहुतबातें।

बहुविध०
बहुविधि० } गु० अनेक प्रकार, बहुधा।

बहुव्रीहि० ना० पु० समासविशेष।

बहुशः० अव्य० बारम्बार, बार बार।

बहू० ना० स्त्री० बधू, दुलहन।

बहेड़ा० ना० पु० फलविशेष।

बहेतू० ना० पु० लुच्चा, फिरन्ता, गु० बहाहुआ।

बहेलिया० ना० पु० बधिक, चिड़ीमार।

बहोरना० स० क्रि० फिराना, लौटाना।

बहोरि० अव्य० फिर, बहुरि।

बांक॰ ना॰ पु॰ भाजविशेष, कटारविशेष, फेर, टेढ़ाई, घुमाव, दोष।

बांकपन॰ ना॰ पु॰ टेढ़ापन, छछोरपन, सुघ-पन।

बांका॰ ना॰ पु॰ छैला, अकड़ैत, बांसकाटने का अस्त्र विशेष, गु॰ टेढ़ा।

बांबी॰ ना॰ स्त्री॰ सांप का बिल।

बांगा॰ ना॰ स्त्री॰ बिनौला समेत रुई, पीली सरसों।

बांचना॰ स॰ क्रि॰ पढ़ना।

बांजर॰ ना॰ पु॰ बंजर, बिना जोती बोई धरती।

बांझ॰ ना॰ स्त्री॰ बन्ध्या।

बांट॰ ना॰ पु॰ भाग, अंश, बटखरा।

बांटना॰ स॰ क्रि॰ भागकरना, पीसना।

बांड़ा॰ गु॰ पूंछ बिना पशु, मनुष्य जिसके कोई नहीं रहा, सर्प पूंछरहित।

बांड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ लठ, लकड़।

बांदा॰ ना॰ पु॰ आकाशलता जो वृक्षपर होती है।

बांदी॰ ना॰ स्त्री॰ लौंडी, दासी।

बांध॰ ना॰ पु॰ मेंड़, बन्ध, पुल।

बांधना॰ स॰ क्रि॰ जकड़ना, गांठना, लगाना, बन्दकरना, बनाना, लटकाना, लपेटना, उठाना, तपाना।

बांधनू॰ ना॰ पु॰ रंगनेकीरीतिविशेष, कलंक, उपाय, रेशमी कपड़ाविशेष, तोनाविशेष।

बांस॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष, तालाबआदिनापने के लिये मापकविशेष।

बांसफोड़ा॰ ना॰ पु॰ जातिविशेष जो बांस की वस्तु बनाता है।

बांसली॰ ना॰ स्त्री॰ मुरली, बंशी।

बांसा॰ ना॰ पु॰ नासिका की हड्डी।

बांसी॰ ना॰ स्त्री॰ मुरली, छोटाबांस, बांस से बनी हुई वस्तु, बांस का फल।

बांसुरी॰ ना॰ स्त्री॰ मुरली।

बांह॰ ना॰ स्त्री॰ भुजा।

बांहिया॰ गु॰ पक्षी, धोरी तरफदार।

बाई॰ ना॰ स्त्री॰ महाराष्ट्रों में, स्त्रियों का नाम, कंचनी बात अव्य॰ जीर्ण।

बाईस॰ गु॰ बीस और दो, २२।

बाईसी॰ ना॰ स्त्री॰ राजा की फ़ौज बाईस हजार पलटन प्रधानता।

बाकला॰ ना॰ पु॰ तरकारी विशेष।

बाकस॰ ना॰ पु॰ झाड़ी जिसके कोयलों से बारूद बनाते हैं।

बाखर॰ } ना॰ पु॰ अंगनाई, कई एकघर
बाखल॰ } जो एक हाते के भीतर हों।

बाग॰ ना॰ स्त्री॰ लगाम।

बागडोर॰ ना॰ स्त्री॰ लम्बी बाग, लगामकी रस्सी।

बागा॰ ना॰ पु॰ जोड़ा, खिलत, पहिरने का वस्त्र विशेष।

बागी॰ ना॰ पु॰ असवार, घुड़चढ़ा।

बाघ॰ ना॰ पु॰ व्याघ्र, शेर।

बाघन॰ } ना॰ स्त्री॰ व्याघ्री, शेरनी।
बाघनी॰ }

बाघम्बर॰ ना॰ पु॰ बाघकी खाल।

बाघा॰ ना॰ पु॰ बाघ।

बाछ॰ ना॰ स्त्री॰ चुनाव, छांट, दरिसह, लगान, होंठके दोनोंओरके कोने, गु॰ निकम्मा।

बाछना॰ स॰ क्रि॰ चुनना, छांटना।

बाजगाज॰ ना॰ पु॰ अनेक बाजों का इकट्ठा शब्द।

बाजन॰ ना॰ पु॰ कई एक बाजा।

बाजना॰ अ॰ क्रि॰ बजना, प्रकट होना, भिड़ना।

बाजदा॰ ना॰ पु॰ वाद्य, ढोल आदि, गु॰ भिड़

बाजा॰ ना॰ पु॰ वाद्य, ढोल आदि, गु॰ भिड़ गया।

बाजी॰ ना॰ पु॰ घोड़ा।

बाजू॰ ना॰ पु॰ बांहमें पहिरने का गहना विशेष

बाहा॰ अव्य॰ बाहर।

याह्यालय० ना० पु० मंदिर के बाहर।
याट० ना० स्त्री० मार्ग, राह, पथ।
याट० ना० पु० बाट जो पत्थर आदि के होते हैं।
याड़० ना० स्त्री० धार, पार, सिपाहियों की पंक्ति।
याड़व० ना० पु० ब्राह्मण।
याड़वाग्नि० } ना० पु० जल में की अग्नि।
याड़वानल० }
याड़ा० ना० पु० हाता, घेर, मंदिर, भूर, स्थान।
याड़िया० ना० पु० बाड़ बनाने हारा।
याड़ी० ना० पु० उपवन विशेष, उपवन समेत जो घर।
याढ़० ना० स्त्री० धार, बढ़ती, अधिकाई, सरसई, जलाधिक्य, अहिला, बढ़िया।
याढ़ना० } अ० क्रि० बढ़ना, उमड़ना।
याढ़नो० }
याण० ना० पु० शर, बाण, खाटकी रस्सी।
यानप्रस्थ० ना० पु० तृतीयाश्रमी अर्थात् जो स्त्री प्रसंग रहित हो परंतु स्त्री के साथ रहे।
याणा० ना० पु० मूंज।
याणासुर० ना० पु० दैत्यविशेष, राजा बलि का पुत्र।
याणिज्य० ना० पु० व्योपार, तिजारत, सौदागरी।
याणी० ना० स्त्री० सरस्वती, यावाजा।
यात० ना० स्त्री० वार्ता, वाणी, वचन, कारण, कारज, समाचार, पवन।
यातकीयातमें० अव्य० अभी, तुरंत।
याती० ना० स्त्री० बत्ती, दीपक की बत्ती, अपर की बत्ती।
यातूनिया० } गु० बड़बड़िया, चर्चेत, बड़ा
यातूनी० } बतबढ़ा, बकवादी।
यादल० ना० पु० मेघ।
यादला० ना० पु० सोनेरूपे का तारविशेष, रूपा।
यादली० ना० स्त्री० रूपा।
यादुर० ना० पु० चमगीदड़।
याध० ना० पु० निवारण, रोक, खाट बुनने की रस्सी।
याधक० ना० पु० जो बाधकरे, प्रतिबंधक, दुखदाता।
याधा० ना० स्त्री० दुख, पीड़ा, अटकाव, रुकाव, मिथ्या, आफत।
याध्य० गु० बाधने के योग्य।
यान० ना० स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल, यथा, तुलसी यहमन तजत नहिं सुरबिनिया की बान, ना० पु० बाण, खाटबुनने की रस्सी।
यानगी० ना० स्त्री० नमूना, सरीखा, दृष्टांत।
यानवे० गु० नब्बे और दो, ९२।
याना० ना० पु० स्वभाव, व्यवहार, अस्त्र विशेष, कपड़े की ब्योंत, भर्ती, भेष, निशानी, प्रतिज्ञा, फैलाना।
यानि० ना० स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल।
यानिक० ना० पु० बनाव, सजाव, सनाव।
यानी० ना० स्त्री० वाणी।
यानीयोली० ना० स्त्री० विनवाई।
यानूआ० ना० पु० जलपक्षी विशेष।
यानूसा० ना० पु० } वस्त्र विशेष।
यानूसी० ना० स्त्री० }
यानैत० गु० बानावाले, बानधारी, और धनुर्धर।
यान्धव० ना० पु० भाई, नतैत, सम्बन्धी।
याप० ना० पु० पिता, जनक।
यापड़ा० ना० पु० बापुरे।
यापरो० } गु० तुच्छ, नीच, दीन, कंगाल,
यापुरी० } असमर्थ।
याफ० ना० स्त्री० भाफ, बफारा।
याबर० ना० पु० मिठाईविशेष।
याबा० ना० पु० नानक, दादा, बूढ़ा, बालक संन्यासी।
याबू० ना० पु० बालक, राजा, स्वामी।
याम० ना० स्त्री० बामा, औरत।
याह्मन० ना० पु० ब्राह्मण।

बाह्नी० ना० स्त्री० औषधि पौधा विशेष, बनियां, माठेपा, बनजाही, सांगरीत, प्रिय वसा।

बायन० ना० पु० न्यारही, मिठाई आदि जो मित्रों के घर भेजते हैं।

बायव० गु० दूसरा अलग, ना० पु० वायुकोण।

बायव्य० ना० पु० वायुकोण।

बायां० गु० वामा, दक्षिण के विपरीत अंग।

बायो० क्रि० फैलाया, पसारा।

बार० ना० पु० द्वार, दिन, बालक, बल, ना० स्त्री० समय, अर्थ, नाना, दाँ।

बारण० } ना० पु० हाथी, निवारण, रुकावट।
बारन० } रोकना, बचाना, निछावर।

बारना० अ० क्रि० निछावर करना, जिलाना, स० क्रि० निछावर करना, जलाना।

बारनारि० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया।

बारम्बार० अव्य० बारबार, अनेकबार, पुनः पुनः।

बारह० गु० द्वादश, १२।

बारहखड़ी० } ना० स्त्री० द्वादश मात्रा जो
बाराखरी० } व्यंजनोंमें मिलाकर बालकों को पढ़ाते हैं।

बारासिंगा० ना० पु० बारहसिंगा, मृगविशेष।

बाराह० ना० पु० शूकर।

बाराहीकंद० ना० पु० गेंठीवाला।

बारी० ना० स्त्री० बाड़ी, झरोखा, कमसिन कन्या, बीसरी, बाग़, ना० पु० जाति विशेष, दार, बाला, ना० स्त्री० बाली।

बारूद० ना० स्त्री० बारूद जिससे बंदूक चलाते हैं।

बारे० ना० पु० बच्चे, लड़के।

बाल० ना० पु० शिरोरुह, बालक, बाला, मूर्ख, गूंगा, बाला, दरार, चार, रामायण का प्रथम काण्ड।

बालक० ना० पु० लड़का, नेत्रवाला औषधि।

बालकता० } ना० स्त्री० लड़काई।
बालकपन० }

बालका० ना० पु० योगी का संन्यासी चेला।

बालछड़० ना० स्त्री० औषधि वा सुगंधविशेष।

बालतोड़० ना० पु० बलतोड़।

बालसुर० ना० पु० भेड़ा, भेर।

बालदशा० ना० स्त्री० बालकता।

बालना० स० क्रि० जलाना, सुलगाना।

बालपत्र० ना० पु० जवासा।

बालबच्चे० ना० पु० लड़केवाले।

बालभाव० ना० पु० लड़काई, बालकता।

बालभोग० ना० पु० प्रात काल जो श्रीकृष्ण च देवीके निमित्त भोग लगाते हैं।

बालम० ना० पु० प्रियतम, पति, खड्गविशेष।

बालमूल० ना० पु० मूला।

बालरण्ड० ना० स्त्री० जो बालकपन से विधवा है।

बाला० ना० स्त्री० सोलह वर्षतक की कन्या, युवती, पाथा विशेष, जूही, ना० पु० कान के पहरने का भूषण, बालक।

बालापन० ना० पु० लड़कपन, बालकता।

बालिकय० ना० पु० माँ औषधि।

बाली० ना० स्त्री० छोकरी, गेहूं आदिकी फली, कान के पहरने का भूषण विशेष।

बालुक० ना० पु० एलुआ, मुसब्बर।

बालुका० ना० स्त्री० बालू, रेत।

बालुकामय० गु० रेतीला, रेतला, किरकिरा।

बालू० ना० स्त्री० रेत, रेणु।

बाल्कर० ना० पु० बाजा विशेष।

बाल्मीक० ना० पु० मुनि विशेष, रामायणकर्ता।

बाल्य० } ना० स्त्री० लड़काई, बाल-
बाल्यावस्था० } दशा।

बाल्हिक० ना० पु० घोड़ा।

बाल्हीक० ना० पु० हींग देश विशेष।

बाव० ना० पु० वायु।

बावन० ना० पु० बावनी, बौना।

बावगोला० ना० पु० वायुशूल।

बावला० गु० गप्पी, बकी।

बावड़ी० नां० पुं० बड़ा कूप ।
बावयतास० नां० स्त्री० देसमस्ती, दुर्गति, आपदा ।
बावन० गु० पचास और दो, ५२ बौना, नां० पुं० श्रीविष्णुनारायण का पांचवां अवतार ।
बावर० गु० बावला, अनाड़ी, मिथ्यावादी, अधर्मी ।
बावरि० नां० स्त्री० मृगबन्धनी, बागुरि, गु० सिड़न ।
बावला० गु० विक्षिप्त, सिड़ी ।
बावली० नां० स्त्री० बड़ाकूप, पोखरी, बेल-सिड़न ।
बावसरना० अ० क्रि० पादना, गुदा से पवन का निकलना ।
बावशूल० नां० पुं० वायुशूल, पेटमें रोगविशेष ।
बास० नां० पुं० बसने का स्थान, ठांव, नां० स्त्री० गन्धि, महक ।
बासन० नां० पुं० बरतन, पात्र ।
बासना० स० क्रि० सोंधाना, महकाना, नां० स्त्री० अभिलाषा, इच्छा, सुगन्धि ।
बासन्ती० नां० स्त्री० औषधिविशेष ।
बासा० नां० पुं० पक्षी प्रसिद्ध, रहनेकास्थान ।
बासित० गु० सुगन्धित कपड़े पहनेहुये ।
बासी० गु० भोजनादि जो बसरातका है, महकीला, बासयुत ।
बाह० नां० पुं० बोझा ।
बाहक० नां० पुं० बहनेहारा ।
बाहन० नां० पुं० वाहन, सवारी ।
बाहना० स० क्रि० अग्रचलाना वा फेंकना, भैंस का गर्भिन वा प्रसंगित होना ।
बाहर० अव्य० बहिः, परदेश ।
बाहिनी० नां० स्त्री० सेना ।
बाहु० नां० स्त्री० भुजा, बांह ।
बाहुदा० नां० स्त्री० नदीविशेष जो हिमालय से निकलती है ।
बाहुदेना० अ० क्रि० हाथ पकड़ना ।
बाहुमुख० नां० पुं० हाथ ।
बाहुयुद्ध० नां० पुं० मल्लयुद्ध, कुश्ती ।
बाहुलेय० नां० पुं० स्वामिकार्तिक ।
बाहुल्य० नां० पुं० } आधिक्य, अधिकाई,
बाहुल्यता० नां० स्त्री० } बहुतायत ।
बिआरी० नां० स्त्री० बयाल, सायंकालका भोजन ।
बिजन० नां० पुं० व्यंजन ।
बिक० नां० पुं० हुंडार, भेड़िया ।
बिकट० गु० कठिन, भयानक, भयंकर, टेढ़ा, प्रबल ।
बिकना० अ० क्रि० खपना, बिकजाना ।
बिकरार० } गु० भयानक, भौंडा, भयंकर,
बिकराल० } टेढ़ा, डरौना, कठिन ।
बिकल० गु० व्याकुल, निरिथर, आतुर ।
बिकलता० स्त्री० } व्याकुलता, घबराहट, बेचै-
बिकलत्व० पुं० } नी, निरिथरता ।
बिकलित० गु० व्याकुल, घबड़ा, बेचैन ।
बिकल्प० नां० पुं० विचार, मनसूबा, तर्क ।
बिकसन० नां० पुं० प्रकाश, हर्ष, फूलन ।
बिकसना० अ० क्रि० खिलना, फूलना, हर्षित होना ।
बिकसित० गु० प्रफुल्लित, हर्षित, फूलाहुआ ।
बिकसोभगुडा० नां० पुं० मँजीठ ।
बिकाऊ० गु० बिकनेहारा ।
बिकाना० अ० क्रि० बिकजाना, स० क्रि० बेचवाना ।
बिकाय० नां० स्त्री० बिक्री ।
बिकास० नां० पुं० प्रकाश, फैलाव, दिखिलावा, हर्ष, आनन्द ।
बिकी० नां० स्त्री० खपत, चटनी, भौंरी, चबेना, चर्वित, चूर्ण ।
बिखरना० अ० क्रि० बिथरना, फैलना, भाषित होना ।
बिगड़ना० अ० क्रि० नाश वा भ्रष्ट होना, भ्रमरना,
बिगाड़ी० नां० स्त्री० फूट, लड़ाई ।

बिगसन॰ ना॰ पु॰ विकसन, खिलना।

बिगसना॰ अ॰ क्रि॰ विकसना, खिलना, फूलना।

बिगहा॰ ना॰ पु॰ बीघा।

बिगाड़॰ ना॰ पु॰ झगड़ा, तोड़, लड़ाई झगड़ा।

बिगाड़ना॰ स॰ क्रि॰ नसाना, टाय देना, मित्रों में लड़ाई कराना।

बिगोना॰ स॰ क्रि॰ भुलाना, छुपाना, अटकरना।

बिघन॰ ना॰ पु॰ विघ्न।

बिच॰ अव्य॰ बीच।

बिचकना॰ अ॰ क्रि॰ निराशहोना, भागजाना, अंगीकार करके बदलजाना।

बिचकाना॰ स॰ क्रि॰ निराशकरना न मानना, वचन तोड़ना।

बिचल॰ गु॰ चलायमान, अचल।

बिचलना॰ अ॰ क्रि॰ फिरना, घूमना, चलना, खिसकना।

बिचली॰ गु॰ भागी, घूमी, घबड़ानी।

बिचवई॰ ना॰ पु॰ बिचवानी, जामिन।

बिचार॰ ना॰ पु॰ विचार, सोच, बूझ, ध्यान।

बिचारक॰ ना॰ पु॰ विचारी, सोचा, बूझन हारा, न्यायक।

बिचारना॰ स॰ क्रि॰ सोचना, ध्यानकरना, यांचना, समझना।

बिचारित॰ गु॰ सोचाहुआ, विचाराहुआ, बूझा, समझा।

बिचारी॰ गु॰ विचारी, विचारक।

बिचाली॰ ना॰ स्त्री॰ पाआरवाल।

बिचौलिया॰ ना॰ पु॰ मध्यस्थ, विसरैत।

बिच्छू॰ ना॰ पु॰ वृश्चिक, जन्तुविशेष।

बिछना॰ अ॰ क्रि॰ फैलना, पसरना।

बिछरना॰ अ॰ क्रि॰ भिन्नहोना, जुदाहोना।

बिछराहट॰ ना॰ स्त्री॰ भिन्नता।

बिछलो॰ | अ॰ क्रि॰ खिसलना, फिसलना,
बिछलना॰ | भिन्न भिन्नहोना, निकलना।

बिछवाना॰ स॰ क्रि॰ फैलाना, पसराना।

बिछाना॰ स॰ क्रि॰ फैलाना, पसारना।

बिछुआ॰ ना॰ पु॰ कटारविशेष, पैरोंकाभूषण।

बिछुड़ना॰ अ॰ क्रि॰ बिछलना।

बिछुरन॰ ना॰ पु॰ वियोग, जुदायगी।

बिछुरना॰ अ॰ क्रि॰ वियोगहोना, जुदाहोना।

बिछोना॰ स॰ क्रि॰ भिन्नकरना, बिलगाना।

बिछोह॰ }
बिछोहा॰ } ना॰ पु॰ वियोग, जुदायगी, विरह।

बिछौना॰ ना॰ पु॰ बिस्तर, सज।

बिजना॰ ना॰ पु॰ पखा, बना।

बिजली॰ ना॰ स्त्री॰ विद्युत्, चपला, वज्र।

बिज्ञान॰ गु॰ अज्ञान, मूर्ख, जो कुछ नहीं जानता।

बिजायठ॰ ना॰ पु॰ बाहुका गहनाविशेष।

बिजार॰ ना॰ पु॰ साड़ बैल।

बिजाला॰ गु॰ ज्ञान सयुक्त।

बिजया॰ ना॰ स्त्री॰ भंग, बूटी।

बिझकना॰ अ॰ क्रि॰ चौंकना, डरना, भाग जाना बदलजाना।

बिझका॰ गु॰ चौंका, चौंकेल, भागा, डराभया।

बिझकाना॰ स॰ क्रि॰ चौंकाना, डरवाना, भगाना, न मानना, बदलना।

बिट॰ ना॰ पु॰ बीट, विष्ठा।

बिटचर॰ ना॰ पु॰ शूकर, परेवा।

बिटना॰ अ॰ क्रि॰ बिथुरना, छिटकना, गिर जाना।

बिटप॰ ना॰ पु॰ वृक्ष का नया बैल, पल्लव, पसराव, गुच्छा।

बिगना॰ स॰ क्रि॰ छिटकाना, बिथराना, गिराना।

बिठाना॰ स॰ क्रि॰ बैठाना।

बिडकम॰ ना॰ पु॰ बटेरादि पक्षी, रामचन्द्रि कायों यथा, बिडकनघन घूरे मति के वाम जीवे।

बिडरना॰ अ॰ क्रि॰ भागजाना डरजाना।

विडार० ना० पु० वनबिलाव, भगौड़ा।
विडारना० स० क्रि० भगाना, बिचलाना, डराना।
विडारी० पु० भगाई।
विडौजा० ना० पु० इन्द्र।
विढ़ई० ना० स्त्री० कमाई, फायदा उठाया, निनि सनौरी।
वित्त० ना० पु० धन, द्रव्य, वस्तु, सामर्थ्य।
वितना० अ० क्रि० व्यतीत होना, पु० लोग ना० पु० वितरित, बालिश्त।
वितलानी० पु० घबरानी, बिललानी।
वितरना० स० क्रि० देशलना, दान करना।
विताना० स० क्रि० गँवाना, काटना, व्यतीत करना।
वितीत० ना० पु० व्यतीत।
वित्त० ना० पु० वित्त, धन, द्रव्य।
वित्ता० ना० पु० वितरित, बालिश्त।
वित्तिया० ना० पु० बौना, नाटा, ठुमका।
विथरना० अ० क्रि० छिटकना, बिखरना।
विथराना० स० क्रि० तिरडाना, छिटाना, बिखवाना, बिखराना।
विथा० ना० स्त्री० पीड़ा, आपदा।
विथुरना० अ० क्रि० बिथरना, पसरना।
विथुरा० ना० पु० दुःख, पीड़ा गु० छितराहुआ।
विदरना० अ० क्रि० फरना, चिरना।
विदा० ना० स्त्री० रुखसत करना।
विदारन० ना० पु० फाड़ना, तोड़ना।
विदारना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना।
विध० ना० स्त्री० विधि।
विधना० ना० पु० विधाता, ब्रह्मा।
विधायट० ना० स्त्री० साख, भेद।
विन० अव्य० बिना।
विनती० ना० स्त्री० विनय, प्रार्थना, बड़ाई करना।
विनना० अ० क्रि० बिनजाना।
विनवार० ना० स्त्री० विनती।
विनसना० अ० क्रि० नशाना, बिगड़ना।
विना० अव्य० रहित, बिन।
विनाई० ना० स्त्री० बिनने का काम या पैसा।
विनाना० स० क्रि० बिनवाना, उठाना।
विनावट० ना० स्त्री० बिनने का काम।
विनु० अव्य० रहित, छोड़ि।
विनौना० स० क्रि० बिनती करना अरचना, पूजना, नमना, छाटना।
विनौला० ना० पु० रुई का बीज।
विनौली० ना० स्त्री० छोटाओला जो आकाश मार्ग से बरसताहै।
विन्द०
विन्दी० } ना० स्त्री० बिन्दु।
विन्धना० स० क्रि० धसाना, उकियाना, अ० क्रि० छिदना, फसना।
विन्नाना० स० क्रि० बुना, जाली निकलना, बुनाना।
विपत०
विपता०
विपत्ति० } ना० स्त्री० विपत्ति आफत।
विफरना० अ० क्रि० बिगड़ना, दुःखित होना। मगरा, हठीला या ढीठहोना।
वियार० ना० पु० बीज।
वियारी०
वियालू० } ना० स्त्री० सायङ्काल का भोजन, परन्तु का भोजन।
वियाह० ना० पु० विवाह।
विरकट० ना० पु० रोगी विशेष, गु० जिसका मा उत्पत्ति है।
विरचन० ना० पु० बेरचा आग।
विरद० ना० पु० यश, स्तुति, बीरबाना और, हथियार।
विरदावलि० ना० स्त्री० सुयश, स्तुति।
विरमना० अ० क्रि० ठहरना, विलम्बकरना।
विरमाना० स० क्रि० ठहराना, अटकाना धरने रखने करना।
विरवा० ना० पु० वृक्ष छोटा वृक्ष, पौधा।

विरह॰ ना॰ पु॰ वियोग।
विरहा॰ ना॰ पु॰ वियोग धोबियों का गीत विशेष।
विरहित गु॰ वियोगित।
विरहिनी॰ गु॰ विरहिनी, वियोगिनी।
विरहिया॰ ना॰ स्त्री॰ विरहिनी।
विरही॰ गु॰ जो पुरुष अपनी सजनी से बिछड़े।
विराजना॰ अ॰ क्रि॰ प्रकाशित वा प्रज्वलित होना, स्वाधीन होके सुख भोग करना, शोभित होना, बैठना।
विराट्॰ ना॰ पु॰ जगद्रूप, ईश्वर, जगद्,राजा धिराज, देशविशेष, राजाविशेष।
विराना॰ गु॰ पराया, स॰ क्रि॰ चिढ़ाना, सताना।
विराम॰ गु॰ व्याकुल, स्थिर, मादा।
विरियां॰ ना॰ स्त्री॰ समय, बार।
विर्नी॰ ना॰ स्त्री॰ बर।
विल॰ ना॰ स्त्री॰ सर्पादि जन्तुओं के घर वा छिद्र वा भट्टा वा भार।
विलकना॰ अ॰ क्रि॰ सिसकना, फूरना, किसी वस्तुपर जी लगना।
विलख॰ ना॰ पु॰ दुःख, अप्रसन्नता।
विलखना॰ स॰ क्रि॰ देखना, निरेखना, बिलोकना, अ॰ क्रि॰ सिसकना, अप्रसन्न होना।
विलखाय॰ विलखित॰ } अ॰ क्रि॰ अप्रसन्नहोय दुःखमान।
विलग॰ गु॰ अलग भिन्न, ना॰ स्त्री॰ भिन्नता, फूट, द्वेष, बुराई।
विलगना॰ अ॰ क्रि॰ अलग २ होना, फटना, फूटना, जपना, दुखना।
विलगाना॰ स॰ क्रि॰ भिन्न २ करना, छोड़ना, बिछाड़ना।
विलगाव॰ ना॰पु॰ भिन्नता, बिछुराहट,अलहदगी।
विलगादी॰ अ॰ क्रि॰ अलग होना।
विलगना॰ स॰ क्रि॰ चढ़ावकरना, चढ़ना।
विलनी॰ ना॰ स्त्री॰ अमनहारी।
विलपना॰ अ॰ क्रि॰ रोना, विलापकरना।
विलपाना॰ स॰ क्रि॰ रोलाना, विलापकराना।
विलफन्द॰ ना॰ पु॰ निपटारा, निस्तार।
विलविलाना॰ अ॰ क्रि॰ व्याकुलहोना, पीड़ा से दुःखितहोना, हायहायकरना, तड़पना।
विलम्ब॰ ना॰ पु॰ देरा, ढील, टाल मटोल, शिथिलता।
विलम्बना॰ अ॰ क्रि॰ ढीलकरना, अटकना।
विलम्भ॰ ना॰ पु॰ विलम्ब।
विलम्मना॰ अ॰ क्रि॰ विलम्बना।
विलल्लाना॰ अ॰ क्रि॰ बिलबिलाना।
विलसना॰ } अ॰ क्रि॰ भोगना, तृप्तहोना, आनन्दित होना।
विलस्त॰ ना॰ पु॰ बित्ता, बिलस्त।
विलहरा॰ ना॰ पु॰ पान रखने का पात्र।
विलहरी॰ ना॰ स्त्री॰ पत्ता, छोटा बिलहरा।
विलाई॰ ना॰ स्त्री॰ बिल्ली, मकड़ीलकड़ी आदि रगड़ने की लाट की वस्तु।
विलाईकन्द॰ ना॰ पु॰ खानी विशेष।
विलाना॰ अ॰ क्रि॰ चलाजाना मिटना, भरकना, स॰ क्रि॰ अदेख करना उन्नमना, बांटना, खाना।
विलाप॰ ना॰ पु॰ रोलाप, हाहाकार।
विलापना॰ अ॰ क्रि॰ रोना, फूटना, हाहाकार करना।
विलार॰ ना॰ पु॰ मार्जार, पशुविशेष, बिलौगा।
विलाव॰ ना॰ पु॰ विलार।
विलावल॰ ना॰ पु॰ रागिनी विशेष।
विलास॰ ना॰ पु॰ विलास आदि।
विलासी॰ [illegible] विलासी।
विलास॰ ना॰ पु॰ क्रीड़ा, हर्ष, तृप्ति, भोग, सुरसभोग।
विलासी॰ गु॰ सुखभोगी, आनन्दी, हर्षी।
विलोकना स॰ क्रि॰ देखना, निरेखना

बिलोना० } स० क्रि० मथना मंहना।
बिलोवना० }
बिलौटा० ना० पु० बिलार।
बिलोटिया० ना० स्त्री० बल्ली।
बिल्ला० ना० पु० बिलार, बिलार।
बिल्ली० ना० स्त्री० बिलाई, बिल्ली।
बिल्लीलोटन० ना० पु० बिलाईकन्द, औषधि विशेष।
बिस० ना० पु० विष।
बिसखपरा० ना० पु० औषधि पौधाविशेष, जन्तुविशेष जो गोहप सदृश होती है।
बिसखोपरा० ना० पु० जन्तुविशेष जो गोह के सदृश होता है।
बिसन० ना० पु० दोष, पाप, बुराई, काम, कामना।
बिसनपन० ना० पु० दुराचार, लुचपन।
बिसनी० ना० पु० लुचा, लम्पट, गु० सुघड़, छल, छिछोर।
बिसबिसाना० अ० क्रि० बजबजाना, सड़ी हुई वस्तु से शब्द निकलना।
बिसमार० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष।
बिसर० ना० पु० चूक, भूल।
बिसरा० गु० भूलाहुआ, भूलाहुआ।
बिसराना० स० क्रि० भुलाना, बहकाना।
बिसर्ना० अ० क्रि० भूलना भटकना।
बिसरात० ना० स्त्री० भूल, चूक।
बिसाध० } ना० स्त्री० कुवास, दुर्गंध।
बिसायध० }
बिसासी० ना० पु० विश्वासघाती।
बिसाना० स० क्रि० मोललेना, चलना, पारख का, वश, काबू।
बिसार्ना० स० क्रि० भुलाना।
बिसाहू० ना० स्त्री० वस्तु जो मोललो, खरीद।
बिसाहना० स० क्रि० मोल लेना।
बिसुरना० अ० क्रि० सिसकना, हूकना।
बिसेला० गु० विषधर, जहरीला।

बिस्तर० } ना० पु० विस्तार, बढाव के कहना, व्योरेवाल चौड़ाव, प्रसार,
बिस्तार० }
बिस्तुइया० } ना० स्त्री० छिपकली।
बिस्तुई० }
बिहन० ना० पु० बीज।
बिहवल० गु० व्याकुल, भयभीत, विह्वल।
बिहरना० अ० क्रि० रीझना, हुलसना, स० क्रि० भाग करना, रिझाना, फटना।
बिहरी० ना० स्त्री० चन्दा, दामशाह।
बिहसना० अ० क्रि० हँसना।
बिहाग० ना० पु० रागविशेष जो आधी रात के पर गाया जाता है।
बिहान० ना० पु० प्रातःकाल, तड़का, भोरगया।
बिहाना० अ० क्रि० काल काटना, बिताना, तजना, छोड़ना।
बिहाने० अव्य० सबेरे।
बिहार० ना० पु० क्रीड़ा, लीला, आनन्द देशविशेष।
बिहारस्थल० } क्रीड़ा का घर, लीलाभवन, आनन्दगृह।
बिहारस्थली० }
बिहारी० गु० विलासी, क्रीड़ाकर, ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी का एक नाम।
बिहारीलाल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी सतसई-कर्त्ता कविविशेष।
बिहून० } अव्य० रहित, बिन, विहून।
बिहूना० }
बी० अव्य० भी।
बींदा० ना० पु० लपेटाहुआ, कागज, गट्ठा।
बींधना० स० क्रि० बेधना, छेदना।
बीघा० ना० पु० २० बिस्वा, बिगहा।
बीच० अव्य० मध्य में, अन्तर।
बीछी० ना० पु० बिच्छू।
बीज० ना० पु० वीर्य्य, अमर, जड़, मूरी, कारण, रतन, बिया

बीजक० ना० पु० चलान, चिट्ठी, सत्ता, विजय सार, इन्दिरिस्त।
बीजना० ना० पु० पत्ता, पंखा।
बीजार० गु० विजेला।
बीजी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष, नकुल।
बीझना० स० क्रि० ठेलना, रलना लादना।
बीट० ना० स्त्री० विष्ठा, ग्रह।
बीटना० अ० क्रि० हलकना, टलना बिथरना।
बाट० ना० स्त्री० पायजा का सिटा।
बीठा० ना० पु० बिड़वा, एड्डा।
बीड़ा० ना० पु० लगायाहुआ पान।
बीतना० अ० क्रि० व्यतीत होना, पूराहोजाना गुजरना, होचुकना।
बीना० गु० गुजरगया, व्यतीतहोगया, ना० पु० वितरित।
बीत० ना० स्त्री० बीणा, बिया बिराष।
बीनना० स० क्रि० चुनना उठाना।
बीमा० ना० पु० वस्तु को टाटे समेत पहुंचाने के लिये जो पैसा दियाजाता है टीरा हुडा, भाड़ा यह शब्द फारसी है।
बीर० ना० पु० भाई यार पानका भूषण।
बीरता० ना० स्त्री० वीरता मर्दुमी, शूरता।
बीरबहुट्टी० } ना० स्त्री० लालरंगका कीड़ा विशेष।
बीरबहूटी० }
बीरा० ना० पु० बीड़ा, भाई।
बीरी० ना० स्त्री० बीड़ा।
बीर्य० ना० पु० वीर्य, पराक्रम।
बील० ना० पु० बिलकुल।
बीस० गु० दो दहाई, २०।
बीसा० ना० पु० बीस नखका कुत्ता।
बीसी० ना० स्त्री० अन्नमापनेका परिमाण विशेष, गु० बीसकी।
बुन्दा० ना० पु० बिंद।
बुन्दिया० ना० स्त्री० मिठाई वा भाजनविशेष।
बुन्देला० ना० पु० बुंदलखण्डका राजपूत

बुकटा० } ना० पु० ग्रास, मुट्ठीभर।
बुकट्टा० }
बुकनी० ना० स्त्री० चूर्ण, चूरा।
बुकलाना० अ० क्रि० थापीधाप नकरना,
बुका० ना० पु० बुकटा।
बुकी० ना० स्त्री० गाती, मृगभर।
बुजना० ना० पु० जिठानीके कारण से जो वस्त्र रिया पहनाता है।
बुजहरा० ना० पु० पानी गम करनेका पात्र।
बुझना० अ० क्रि० ठण्ड होना।
बुझाना० स० क्रि० ठण्डाकरना, समझाना सुझाना।
बुड़ाना० स० क्रि० डुबाना।
बुड्ढा० गु० बूढ़ा प्राचीन मनुष्य।
बुढ़मस० गु० जो बूढ़ा तरुणकी चालचले।
बुढ़वा० गु० बड्ढा।
बुढ़ापा० ना० पु० वृद्धावस्था।
बुढ़िया० गु० बूढ़ी स्त्री।
बुंडा० ना० पु० कानका भूषणविशेष।
बुत० ना० पु० डुग वा पचीसी खलने में जिसपर पासा फेंकते हैं घूसा।
बुताना० स० क्रि० बुझाना।
बुत्ता० ना० पु० ठगाई, छल।
बुदबुद० ना० पु० बुलबुला।
बुदबुदाना० अ० क्रि० बड़बड़ाना।
बुद्ध ना० पु० पण्डित, चौथाग्रह, चौथावार, नवम अवतार।
बुद्धि० ना० स्त्री० ज्ञान, समझ, बूझ, सोच, अक्ल।
बुद्धिमान्० गु० ज्ञानवान्, समझदार, चतुर, पण्डित।
बुद्धिहा० ना० स्त्री० मदिरा, शराब।
बुद्धी० गु० चतुर, समझदार, बुद्धिमान्।
बुध ना० पु० चौथाग्रह, चन्द्रपुत्र, चौथादिन नवम अवतार जो गया में भया, पण्डित, देवता।

घुघवार० ना० पु० घोघानार।
घुधि० ना० स्त्री० बुद्धि।
घुन्द० ना० पु० विंदु शून्य, कतरह।
घुन्ना० स० क्रि० विना।
घुभुक्षित० गु० भूखा।
घुरभसिया० गु० बुदभस।
घुरा० गु० दुष्ट, लटा खराब, अवर।
घुराई० ना० स्त्री० दुष्टता, खोट।
घुर्ज० ना० पु० ररसा, खासा।
घुर्जरा० ना० स्त्री० स्त्रियों की गाली।
घुर्जारी० ना० स्त्री० घुर्जरी।
घुलघुला० ना० पु० घुल्ला।
घुलाक० ना० पु० नाक में का भूषणविशेष।
घुलाना० स० क्रि० पुकारना, हाक देना, तलब करना।
घुलाहट० ना० स्त्री० आवाहन।
घुहनी० ना० स्त्री० अगवानी, पहिलीविक्रीरा नाम, बयानह।
घुहरी० ना० स्त्री० भुनेहुये जौ।
घुहारन० ना० स्त्री झाड़न।
घुहारना० अ० क्रि० झाड़ना।
घुहारी० ना० स्त्री० झाड़।
घुहारू० ना० पु० भंगी।
घूआ० ना० स्त्री० बहिन, फूफा माता।
घूई० ना० स्त्री० लड़कों के डराने का शब्द।
घून्द० ना० स्त्री० विंदु, टपका, गु० भला, ऊंचा, लड़ाकू।
घून्दा० ना० पु० बड़ाबूंद।
घून्दी० ना० स्त्री० टपका वर्षा की बूंद, मिठाई विशेष।
घूकना० स० क्रि० पीसना, बुकनी करना।
घूका० ना० पु० चूर्ण, छोगमोती, बुकनी।
घूचा० ना० पु० जिसके कान नहीं, कनकटा।
घूची० गु० स्त्री० कनकटी।
घूझ० ना० स्त्री० समझ, बुद्धि।
घूझना० अ० क्रि० समझना, जानना।
घूट० ना० पु० हराचना, तरकारी।
घूटा० ना० पु० पौधा, वृक्ष, फूल कपड़े का।
घूटी० ना० स्त्री० वनस्पति, औषधि, छोटा वृक्ष, निरवा, भंग विजया।
घूड़ना० अ० क्रि० डूबना।
घूडमरना० अ० क्रि० डूबमरना।
घूडिया० ना० पु० डूबनेहारा।
घूत० } ना० पु० बल, सामर्थ्य, पौरुष,
घूता० } ताकत।
घूबू० ना० स्त्री० बहन, बीबी।
घूर० ना० स्त्री० भूसी, छिलका।
घूरा० ना० स्त्री० खांड, लकड़ी की बुकनी, चूर्ण, यह शब्द फारसी का है।
घे० अव्यं० पर।
घेंट० ना० पु० हथकड़ा, दस्ता।
घेंड़ा० पु० गु० टेढ़ा, बांका।
घेंधना० स० क्रि० गूथना, उनना।
घेग० ना० पु० वेग, जोर।
घेगवान्० गु० वेगवान्, जोरवाला।
घेगार० ना० पु० बरबस काम कराना।
घेगारी० ना० स्त्री० मोटिया, बगारकर्त्ता।
घेगी० गु० वेगी।
घेंग० ना० पु० मेढक, भेक।
घेंचना० स० क्रि० बिकाना, मोल लेकरदेना।
घेचू० गु० बचनेवाला।
घेजू० ना० पु० जन्तुविशेष।
घेझा० ना० पु० निशाना, जिसपर तीर वा गोली का अभ्यास करते हैं।
घेटा० ना० पु० पुत्र, लड़का।
घेटी० ना० स्त्री० पुत्री कन्या।
घेठन० ना० पु० वेष्टन, लपेटन।
घेड़० ना० पु० बाड़ा, बियावर, अम्बका।
घेड़िया० ना० पु० जातिविशेष।
घेड़ी० ना० स्त्री० पैरड़ी, जिससेकरी।से खेत सींचत हैं।

बेड़ना० स० क्रि० बाड़ाबांधना, घेरना। हका रना, लाभउठाना, छीनलेना, कमाना, चुराना।

बेत० ना० पु० यत्र, छड़ी, आकाश।

बेद० ना० पु० वेद।

बेदगिरा० ना० पु० वेदवाक्य।

बेध० ना० पु० छेद, सूराख।

बेधक० गु० छेदनेवाला।

बेधड़क० गु० निधड़क।

बेधना० स० क्रि० छेदना।

बेधमुख्या० ना० स्त्री० कस्तूरी।

बेधा० ना० पु० ब्रह्मा, खरातूस।

बेधी० ना० पु० बेधक।

बेन० ना० स्त्री० बांसुरी, वंशी।

बेमा० ना० पु० पत्ता, खस खस।

बेनी० ना० स्त्री० जूड़ा, चोटी, किवाड़वाएक काठविशेष।

बेर० ना० पु० वृक्ष वा० उसका फलविशेष, ना० स्त्री० बार, विलम्ब, बेला।

बेरबेर० अ प० बारबार।

बेरमयानक० ना० पु० प्रलयकी रात, मृतक की रात।

बेरी० ना० स्त्री० बेरका वृक्ष।

बेरे० ना० पु० नाव जहाज।

बेल० ना० पु० बिल्वफल, पुष्पविशेष बेलि।

बेलन० ना० पु० रोटी बेलने की वस्तु।

बेलना० स० क्रि० फैलाना० ना० पु० बेलन।

बेलनी० ना० पु० टहनी।

बेलबूटा० ना० पु० फूल ही, लताविशेष।

बेला० ना० पु० पुष्प विशेष, कगरा, बेला।

बेलि० ना० स्त्री० बेलि, लता जो पौधा आपसे खड़ा न होसके।

बेसन० ना० पु० चनेका चून।

बेसनी० ना० स्त्री० बेसनसे बनीहुई।

बेसनौटी० ना० स्त्री० बेसनकी रोटी।

बेसर० ना० स्त्री० नथनी।

बेसरा० ना० पु० पक्षीविशेष।

बेसवा० ना० स्त्री० वश्या।

बेह० ना० पु० छिद्र, सास।

बेहड़० ना० स्त्री० पृथ्वी जहाऊंची नीचीहो।

बैंगन० ना० पु० भांटा, तरकारीविशेष।

बैंगनी० } गु० रंग जो बैगन के समान हो,
बैंजनी० } पिंगल।

बैंदी० ना० स्त्री० टिकुली।

बैठक० ना० स्त्री० } बैठनेकास्थान, चौपाड़, बैठ
बैठका० ना० पु० } नेकी चाल वा रीति।

बैठना० अ० क्रि० आसन मारना।

बैठवा० गु० चपटा, चौरस।

बैठा० ना० पु० चप्पू, डांड़।

बैठाना० } स० क्रि० स्थापन कराना।
बैठालना० }

बैतरा० ना० स्त्री० साड़ीविशेष।

बैतरणी० ना० स्त्री० नरकमार्ग की नदी।

बैदिक० ना० पु० वैदिक, वेदका जानेवाला।

बैन० ना० पु० वचन, वाणी, बनसी।

बैनतेय० ना० पु० विनताके पुत्र गरुड़, अरुण।

बैना० ना० पु० माथेपरका भूषणविशेष, पक वान जो विवाह आदि में बांटते हैं, व्याहारी, परा।

बैपार० ना० पु० व्यापार, तिजारत।

बैपारी० ना० पु० सौदागर, ताजिर, व्योपारी।

बैर० ना० पु० वैर, दुशमन।

बैरख० ना० स्त्री० झण्डी, ध्वजा, पताका।

बैरागी० ना० पु० वैरागी, जिसको वैराग्यहो।

बैल० ना० पु० वृषभ, बरध।

बैस० ना० पु० आयुर्दा, वय, वैश्य, राजपूतों में जातिविशेष।

बैसन्दर० ना० पु० आग।

बैसाखु० गु०, आलसी, मनसामार, घर में बैठनहारा।

बोआई० ना० स्त्री० बोने का काम, बोने का समय।

बोआना० स० क्रि० बीजडलवाना, बसाना।
बोआरा० ना० पु० बोने का समय।
बोंट० ना० पु० डाट, डठा, डाली।

बोक०
बोकड़ा०
बोकरा० } ना० पु० बकरा, अज।

बोकरी० ना० स्त्री० बकरी।
बोच० ना० पु० मगर, कुम्भीर।
बोचा० ना० पु० पालकी विशेष, चूचा।
बोझ० ना० पु० भार, लादी।
बोझना० स० क्रि० लादना।

बोझल०
बोझेल० } गु० लदा, भरा।

बोटी० ना० स्त्री० मांसका छोटा टुकड़ा।
बोतू० ना० पु० बकरा।
बोदली० ना० स्त्री० भाली, गेगली।
बोदा० गु० निर्बल, आसत, भोला, गेगला।
बोद्धा० गु० बुद्धिमान।
बोध० ना० पु० ज्ञान, मति, मनौती, धारस।
बोधक० ना० पु० जिससे ज्ञानहो बाधकर्त्ता।
बोधना० स० क्रि० फुसलाना, समझाना।
बोना० स० क्रि० बीजडलना।
बोनी० ना० स्त्री० बान का समय।
बोर० ना० पु० पाजव क घुघरू।
बोरा० ना० पु० गान, गनिया, लाथा, टाट का थला।
बोरी० ना० पु० रामधनुष चावल विशेष।
बोल० ना० पु० शब्द गीतका शब्द, बात।
बोलचाल० ना० स्त्री० बात चीत।
बोलता० ना० पु० प्राण, जीव, बालने की शक्ति।
बोलना० अ० क्रि० बातकरना, कहना, बजना।
बोलवाला० ना० पु० आशीर्वादविशेष।
बोली० ना० स्त्री० वाणी, भाषा बान।
बौंड० ना० पु० बेलि, लता।

बौंडना०
बौंड़ियाना० } अ० क्रि० लिपटना, घूमना, गेंर, रखा।

बौंड़ी० ना० स्त्री० बेलि, लता।
बौछार० ना० स्त्री० वायुसहित बड़ी वृष्टि या जो वायु क झकोड़ से बूंदें धरम चली आती हैं।
बौद्ध० ना० पु० बुधका मतावलम्बी।
बौना० गु० छोय, बावन, नाटा।
बौनी० ना० स्त्री० ठिंगनी, बोने का समय वा काम।
बौरहा० गु० बाउहा।
बौरा० गु० गूंगा, मूर।
बौराना० अ० क्रि० बावला होना।
बौरापन० ना० पु० सिड़पन।
बौराहा० गु० बावला, सिड़ी।
बौला० गु० पोपला, मुर्ला।
बौहा० गु० पथरीला।
बौहाई० ना० स्त्री० जिस स्त्री को गर्भोंश रोगहै।
ब्यान० ना० पु० पश्वादि का प्रसव।
ब्याना० अ० क्रि० जनमना, उत्पन्न होना।
ब्याह० ना० पु० विवाह।
ब्याहता० गु० विवाहिता।
ब्याहनयोग० गु० जो ब्याहने के योग्य है।
ब्याहना० स० क्रि० विवाह करना।
ब्याहा० गु० विवाहित, जिसका विवाहहोगया।

ब्योंगा० ना० पु०
ब्योंगी० स्त्री० } चमड़ा छीलने का अस्त्र।

ब्योंत० ना० पु० गढ़न, डौल, रीति, ढब।
ब्योंतना० स० क्रि० कपड़ा का छालियाना बनाना।
ब्योरा० ना० पु० भेद, हत्तान्त, बखान, अंतर।
ब्योपार० ना० पु० व्यापार, तिजारत सौदागरी।
ब्योपारी० गु० व्यापारी, ताजिर, सौदागर, दरामद।
ब्रह्म० ना० पु० परमेश्वर, जगत् का कारण ब्रह्म, वेद, दवता जीव, गुरु।
ब्रह्मअस्त्र० ना० पु० ब्रह्माजी का अस्त्रविशेष।
ब्रह्मसूत्र० ना० पु० जनेऊ, सूत।

ब्रह्मगिरा० ना० स्त्री० आकाशवाणी, ब्रह्मवाणी।
ब्रह्मघोष० ना० पु० जहां वेद पढ़ाया वा पढ़ा जाता है, वेदपाठशाला।
ब्रह्मचर्य्य० ना० पु० ब्रह्मचारी का व्यवहार।
ब्रह्मचारी० ना० पु० प्रथमाश्रमी, ईश्वरपूजक।
ब्रह्मदारु० ना० पु० शहतूत।
ब्रह्मदैत्य० ना० पु० ब्रह्मराक्षस।
ब्रह्मन० ना० पु० ब्राह्मण।
ब्रह्मपादप० ना० पु० ढाकका वृक्ष।
ब्रह्मपुत्र० ना० पु० नदविशेष, ब्रह्माका पुत्र।
ब्रह्मबान० ना० पु० ब्रह्मास्त्र।
ब्रह्मभवन० ना० पु० ब्रह्माका स्थान।
ब्रह्मभुवन० ना० पु० ब्रह्माका लोक।
ब्रह्मभोज० ना० पु० ब्राह्मणों को भोजनदेना।
ब्रह्ममेखला० ना० स्त्री० मूज।
ब्रह्मरन्ध्र० ना० पु० मस्तकका मध्यस्थान।
ब्रह्मरात्रि० ना० स्त्री० ब्रह्माकी रात जो सहस्र चतुर्युगी होती है।
ब्रह्मराक्षस० ना० पु० प्रेत विशेष, लूका।
ब्रह्मवाद० ना० पु० वेदान्त कथन।
ब्रह्मवादी० ना० पु० वेदान्ती।
ब्रह्मविचार० ना० पु० ब्रह्मविद्या, अध्यात्म ज्ञान।
ब्रह्मलोक० ना० पु० लोकविशेष जहां ब्रह्माजी का निवासस्थान है।
ब्रह्मश्रय० ना० पु० वेद।
ब्रह्मसूत्र० ना० पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ।
ब्रह्महत्या० ना० स्त्री० ब्राह्मणकी हत्या।
ब्रह्मज्ञान० ना० पु० ईश्वरज्ञान, परमज्ञान, आत्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान।
ब्रह्मा० ना० पु० देशविशेष जो पूर्व में है वा उस देश के राजा की जातिविशेष विधाता, सृष्टि कर्त्ता।
ब्रह्माचारी० ना० पु० ईश्वरपूजक, ब्रह्मविचारी।
ब्रह्माण्ड० ना० पु० जगत्, संसार, शिरकीहड़।
ब्रह्मानन्द० ना० पु० निज स्वरूपानन्द, आत्मानन्द।
ब्रह्माणी० ना० स्त्री० सरस्वती।
ब्राह्मण० ना० पु० प्रथम वर्ण।
ब्राह्मणी० ना० स्त्री० ब्राह्मण की स्त्री।
ब्राह्मण्य० ना० पु० ब्राह्मण का धर्म, ब्राह्मणों की सभा, शनिका ग्रह।
ब्राह्मी० ना० स्त्री० संहिताविशेष, सरस्वती, वाला औषधि।
ब्राह्म्य० ना० पु० अचम्भा, आश्चर्य्य, ब्राह्मणों की सभा।
ब्राह्ममुहूर्त्त० ना० पु० सूर्योदय से पहले चार घड़ी पौह, पह।

[भ]

भ० ना० पु० नक्षत्र, राशी।
भँवर० ना० पु० भौंरा, चक्कर।
भवर०
भवरा० } ना० पु० आलि, लता, भ्रमर।
भँवेरी०
भवारी० } ना० स्त्री० तीतरी, पतङ्गविशेष।
भकोरना० स० क्रि० काटना, काटखाना।
भकसुरी० ना० स्त्री० पृथ्वी में शुक्र, थथरी।
भकुआ० गु० निर्बुद्धि, मूर्ख, घड़मक।
भकुवाना० अ० क्रि० निर्बुद्धि होना, उल्लू होजाना।
भकोसना० स० क्रि० खालेना, ठुंसना।
भक्त० ना० पु० धर्मेक, सेवक, उपासक, भात, गु० धर्मी, चाहक।
भक्तवत्सल० ना० पु० भक्तप्रिय, श्रीभगवान्।
भक्ता० ना० पु० भक्त।
भक्ताई० ना० स्त्री० भगताई, सेवकाई, भक्ति, धर्म।
भक्ति० ना० स्त्री० मन, धर्म, श्रद्धा, प्रीति, सेवा
भग० ना० स्त्री० यानि, गुर, सुभाग, ऐश्वर्यादि गुण, ना० पु० सूर्य, भागवते यथा, धाता

विधाता वरुणोऽर्यमा सविता भग ।
भगण० ना० पु० ज्योतिषगणविशेष, जिसमें आदिका अक्षर दीर्घ होता है यथा, राघव ।
भगत० ना० पु० भक्त ।
भगतन० ना० स्त्री० भगतकी स्त्री वा वेश्या ।
भगताई० ना० स्त्री० भगतपन ।
भगतिया० ना० पु० भवैया, पथिक, राधा, जाति ।
भगन्दर० } ना० पु० गुदा में रोग विशेष ।
भगन्धर० }
भगनी० ना० स्त्री० बहन, भगिनी ।
भगर० ना० पु० मगर ।
भगल० ना० पु० छल, कपट, फरेब, इन्द्रजाल ।
भगवत० ना० स्त्री० भागवत ।
भगवती० ना० स्त्री० माया, आदिशक्ति, ईश्वरी ।
भगवन्त० ना० पु० भगवान् ।
भगवा० ना० पु० गहना वस्त्र ।
भगवान्० ना० पु० ऐश्वर्यादि गुणसंयुक्त, तेजस्वी, प्रतापवान्, ईश्वर ।
भगाना० स० क्रि० हँकाना, चलाना, दूरकरना ।
भगीरथ० ना० पु० राजा विशेष जो श्रीगङ्गाजी को स्वर्ग से लाया ।
भगेल० ना० स्त्री० पराजय, ना० पु० भगोड़ा ।
भगोड़ा० ना० पु० भागनेहारा ।
भग्गुल० ना० पु० दूत, हरकारह, भग्गू ।
भग्गू० ना० पु० भगोड़ा ।
भग्न० गु० पराजित, नाशित, टूटा फूटा ।
भंकार० ना० पु० शब्द करना, आदिका शब्द ।
भंग० ना० पु० खण्डन, तोड़, लहर, पराजय । भाग गु० भग्न ।
भंगड़ा० ना० पु० जड़ी विशेष, भृंगराज ।
भंगड़ी० गु० भाग पीनेहारा ।
भंगन० ना० स्त्री० भंगी की स्त्री ।
भंगना० ना० स्त्री० मछली विशेष ।
भंगा० ना० स्त्री० भाग, पक्षी विशेष ।
भंगार० ना० पु० भगरा, भगड़ा ।
भंगी० ना० पु० भगड़ी, मिहतर, खुर्दहा, गु० नाशक, मेटनेवाला ।
भंगेरन० ना० स्त्री० भंग की बेचनेहारी ।
भंगेरा० ना० पु० भंग बेचनेहारा ।
भंगेला० ना० पु० भंग के लवाओं का अन्न विशेष ।
भचक० गु० घायल, विस्मित, अचम्भित ।
भचकना० अ० क्रि० अचम्भित वा विस्मित होना ।
भचक्र० ना० पु० दौरह, चालभर, निजगति पर्यन्त ।
भजन० ना० पु० अर्चा, पूजा, सेवन और नौविधि ईश्वर का यशगाना ।
भजना० स० क्रि० अर्चा वा पूजा वा सेवा, जप करना अ० क्रि० भागना ।
भजनी० गु० भजन करनेहारा ।
भजनीक० ना० पु० अर्चक, भजन करनेहारा
भजामि० स० क्रि० भजताहूं, ध्यावताहूं ।
भजजाना० अ० क्रि० भागजाना ।
भज्जि० अ० क्रि० भागकर ।
भज्य० अ० क्रि० भागके बाटके ।
भञ्जन० ना० पु० खण्डन, मारन तोड़न ।
भञ्जाना० स० क्रि० तोड़ाना, भुनाना, बदलाना ।
भट० ना० पु० योधा, शूरवीर, धिक्कार, तदूर ।
भटई० ना० स्त्री० भाट की स्तुति, भाट का काम ।
भटकना० अ० क्रि० भूलजाना, भ्रमना चूकना, टपना ।
भटका० गु० भूलाहुआ भूला, चूका, भ्रमित ।
भटमेरा० ना० पु० मिलाप, मिलान, मुलाकात ।
भटकाना० स० क्रि० बहकाना भुलाना, भटकाना ।
भटकीला० गु० जिसमें भटका पायाजावे ।

भटाई० ना० स्त्री० बहादुरी, लड़ाई, भटई।
भटू० ना० स्त्री० सखी, निधालिंह प्रशंसा, दखिके भटूको मैं लटू ह्वैरहो शिवनाथ आवे पीत पट्ट सो अगावै नालदारी है।
भट्ट० ना० पु० विद्यावान्, पण्डित, दक्षिणी ब्राह्मणों का आस्पद, भट।
भट्टाचार्य्य० ना० पु० पण्डितों में जो सब से बड़ा ज्ञानवान् बंगाले के ब्राह्मणों का उपनाम या आस्पद।
भट्टी० ना० स्त्री० चूल्हा विशेष।
भठियारपन० ना० पु० भठियार का काम।
भठियारा० ना० पु० सराय का भाड़ा उगाहने हारा, जाति विशेष।
भठियारन० ना० स्त्री० भठियारे की स्त्री।
भठियाल० गु० जो नदी की धारापर से बहे।
भड़० ना० पु० बड़ी नाव विशेष।
भड़क० ना० स्त्री० चटक, झलक, घबराहट, झझक, चौंक।
भड़कना० अ० क्रि० झिझकना, चौंकना, आंच उठना, जल उठना।
भड़काना० स० क्रि० डराना, भभकाना आंच करना, लूका लगाना, चौंकाना।
भड़की० ना० स्त्री० चमकी चमक, आंच, चौंक।
भड़कीला० गु० चमकीला, चमकाला, चौकस।
भड़कैल० गु० जगला, अनपहिचान, चौंकेला।
भड़भड़िया० गु० निष्कपट, साधा।
भड़भूजन० ना० स्त्री० भुजन।
भड़भूजा० ना० पु० भुनी, भुनवा।
भड़रिया० ना० पु० ठग, भड़ा, जासी।
भड़साई० ना० पु० भाड़।
भड़िहा० गु० चोर, चुराने हारा, घिनौना, निलज्ज।
भड़िहाई० ना० स्त्री० भड़िहापन, रामायणे यथा, सो दशशीश श्वान की नाईं, इत उत चितै चला भड़िहाई।
भडुवा० ना० पु० कुटना, वेश्याका भाना रितादि।
भडुवाई० ना० स्त्री० कुटनापन।
भड़ैत०
भड़ैती० } ना० पु० भाड़ादेनेहारा प्रजा।
भणन० ना० पु० कथन।
भणित० गु० कथित, कहाहुआ, कविता।
भण्टिका० ना० स्त्री० भांग, बैंगन।
भण्ड० ना० पु० भाड़, भ्रष्टता।
भण्डा० ना० पु० मरखा भांगी, भरुई।
भण्डार० ना० पु० कोठा, खाता भतार।
भण्डारा० ना० पु० योगी, वा सन्यासी, वा उदासियों का ज्योनार या जिमाना, भोजन।
भण्डारी० ना० पु० भण्डारे का रक्षक, रोटी किया, रसोइया।
भण्डेरिया० ना० पु० भड़रिया।
भण्डैला० ना० पु० भाड़।
भण्डौआ० ना० पु० निन्दा, चकड़।
भतरा० ना० पु० भतार, पति।
भतरौड़० ना० पु० मथुरा वृन्दावन के मध्य स्थान विशेष।
भतार० ना० पु० भर्तार, पति, स्वामी, कर्त्ता।
भतीजा० ना० पु० भाई का बेटा।
भतीजी० ना० स्त्री० भाई की कन्या।
भत्त० ना० पु० भात।
भद० ना० स्त्री० धप्पा, धड़ाका, कुयश।
भदभद० ना० पु० वृक्षके फल गिरने का वा मनुष्य के चलनेका शब्द।
भदभदाना० स० क्रि० मारने से जो शब्द निकलता है, बारबार मारना।
भदभदाहट० ना० स्त्री० भदभद।
भदाक० ना० पु० धड़ाक, फटाक।
भदाका० ना० पु० धड़ाका शब्द।
भदेस०
भदेसल० } गु० जो अच्छा नहो कुढाल, भोंडा, मनोरी रामायणे यथा, भणित भदेसवस्तु भलिबरणी।
भद्दा० गु० निर्बुद्धि, उल्लू, भोंडा।
भद्र० ना० पु० भागभागी, मूंछ सहित शिरका

मुण्डन, कल्याण, बढ़ती, नवसरवों में से एक का नाम गु० भला, श्रेष्ठ, भाग्यवान्।
भद्रक० ना० स्त्री० प्राप्त, लाभ, स्वभाव, सुन्दरता, भलाई।
भद्रकाली० ना० स्त्री० दुर्गादेवी।
भद्रकाष्ठ० ना० पु० देवदारु।
भद्रचन्दन० ना० पु० जवासा।
भद्रजयघ० ना० पु० इन्द्रजौ।
भद्रपर्णिका० ना० स्त्री० कम्भारी, गन्धपसारं।
भद्रपर्णी० ना० स्त्री० गंधपसारन।
भद्रमस्त० ना० पु० नागरमोथा।
भद्रवती० ना० स्त्री० कायफल।
भद्रवृक्ष० ना० पु० गोखुरू।
भद्रश्रिय० ना० पु० चन्दन।
भद्रहोना० अ० क्रि० मूछसहित शिरमुंडाना।
भद्रा० ना० स्त्री० अशकुन समय, पक्षकी दूसरी सातवीं बारहवीं तिथि, कम्भारी, गन्धपसारन, कुघड़ी, कल्याणकारिणी, ना० पु० पशी विशेष।
भद्राश्व० ना० पु० कृत्रिमकुठाव।
भद्रिका० ना० स्त्री० दशाविशेष, कल्याणी।
भद्री० ना० पु० ज्योतिष, सामुद्रिकी, कायफल।
भद्रोदनी० ना० स्त्री० खिरहटी।
भभकना० अ० क्रि० क्रोधित होके दौड़ना, आग लगना, छींटे आदि से पानी गिरने का शब्द।
भभका० ना० पु० बड़े मुखका पात्रविशेष।
भभकाना० स० क्रि० सुलगाना, जलाना, उकसाना, खिजाना, एडमारना।
भभकी० ना० स्त्री० धमकी।
भभ्भड़० ना० पु० डर, खटका, भभरा।
भभक० ना० स्त्री० अचानक जो आंच आदि की फुवास आजाते।
भभकना० अ० क्रि० सनसनाना, बुलबुला उठना, खलबलाना।
भभर० ना० पु० डर, खटका।
भभराना० अ० क्रि० खटका होना, सूजना।
भभरि० क्रि० डरकर, धबड़ाकर।
भभूका० ना० पु० ज्योति, आंच, एकाएक आग जलउठना, गु० लाल, सुन्दर, भड़कीला।
भभूत० ना० स्त्री० भस्म, विभूति।
भय० ना० पु० डर, शङ्का, खौफ।
भयकार०
भयंकर० } गु० भयानक, डरौनी मूर्त्ति।
भयचक० गु० भयकरके जो व्याकुल हो।
भयद०
भयदायक० } गु० भयानक, भयंकर।
भयभीत० गु० शंकित, डराक, डराहुआ।
भयमान० गु० डरपोक, शंकित।
भया० ना० पु० भाई, क्रि० हुआ।
भयातुर० गु० भयचक, भयग्रस्त।
भयानक० गु० भयंकर, जिसको देखकर डर लगे, डरौना, रस विशेष।
भयापा० ना० पु० अपनाहत, भाईपन।
भयावना०
भयावहा० } गु० भयंकर, भयानक।
भर० गु० पूर्ण, पूरा, सब।
भरका० ना० पु० जब बरीपर पानी दिया उस का नाम।
भरकाना० स० क्रि० बरीपर पानी डालना।
भरण० ना० पु० पोषण, पालन, धारण।
भरणी० ना० स्त्री० दूसरा नक्षत्र, सांपभक्षक, जीव विशेष।
भरत० ना० पु० अनेक धातु का मेल, राजा विशेष, जिसके नाम से हिन्दुस्तान भरतखण्ड प्रसिद्ध है, रामचन्द्रजी के भाई।
भरतखण्ड० ना० पु० हिन्दुस्तान।
भरतपुर० ना० पु० शूरसेन देशका एक नगर विशेष।
भरद्वाज० ना० पु० मुनि विशेष, खंजनपक्षी
भरद्वाजसुत० ना० पु० द्रोणाचार्य।
भरन० अव्य० तक, तलक।

भरना० स० क्रि० पूर्ण करना, ओपना, सेसना, घाव धगा होना, निकालना, फटे नसमें घुस डालना, दागना।
भरनी० ना० स्त्री० बाना, भरणी।
भरिपाना० अ० क्रि० दामपाना, फलपाना।
भरिपूर्ण० गु० भरपूर।
भरभराना० अ० क्रि० सूजना, घबराएन उड़ना।
भरभरी० ना० स्त्री० सूज, फुलाव।
भरभाड़० ना० पु० ऊटकटेला, छोटा पौधा विशेष।
भरम० ना० पु० भय, भ्रम, साख।
भरमगमाना० अ० क्रि० असाखहोना, अपयशी होजाना।
भरमाना० स० क्रि० फुसलाना, व्याकुलकरना, फिराना, घुमाना।
भरवाना० स० क्रि० पूर्णकराना।
भरा० गु० पूरा।
भराना० स० क्रि० भरवाना, घोड़ाघोड़ीलगाना।
भरावट० ना० स्त्री० वस्तु जिससे दूसरी वस्तु भराते हैं।
भरित० गु० पालाहुआ, भराहुआ।
भरिता० गु० भरीहुई।
भरी० ना० स्त्री० तोला, बारह माशेका परिमाण।
भरु० ना० पु० बोझ।
भरैत० ना० पु० भड़ैत।
भरोटा० ना० पु० तृणादि का बोझा।
भरोसा० ना० पु० आशा, आसरा, प्रतीत।
भर्गः० } ना० पु० श्रीमहादेवजी, रामचन्द्रिकामें
भर्गु० } यथा, चन्देदेव जेयभीनरघमाग ले लिये, अमेयतेज भर्गभक्त भार्गवेश देखिये।
भर्जन० ना० पु० भूनने का काम।
भर्त्त० ना० पु० निजपति, भर्त्ता, स्वामी, विवाहित पति।
भर्त्ता० ना० पु० पति, स्वामी, मालिक, प्रतिपालक, तरकारी जो भाण्टादि भूनके बनाते हैं।
भर्त्तार० ना० पु० भर्त्ता, स्वामी।
भर्त्तिया० ना० पु० ठठेरा, कसेरा।
भर्त्ती० ना० स्त्री० समाप्ति, भराव, बढ़ाव।
भर्त्सना० ना० स्त्री० तिरस्कार।
भर्म० ना० पु० सुवर्ण, यथा, तपनीयशातकुम्भमागेयभर्मकर्बुरम्, इत्यमर।
भवँर० ना० पु० नदी का भँवर, भौंरा।
भल० गु० भला, ना० पु० भीर।
भलका० ना० पु० सोने की टिकली जो नथ मे लगती है।
भलमनुसाई० }
भलमनसात० } ना० स्त्री० सद्गुण, अच्छाई।
भलमनसी० }
भला० गु० अच्छा, शीलवन्त, चंगा, धर्मी, अद्भुत बहुत।
भलाई० ना० स्त्री० अच्छापन, क्षेम, कुशल, उपकार, सुकृत।
भलाचंगा० गु० अच्छा।
भल्लूक० ना० पु० भालु, रीछ।
भल्ल० ना० पु० भल्लूक, भालु।
भल्लक० ना० पु० सभैं, पैने, तेज।
भल्लात० }
भल्ली० } ना० पु० भालु, रीछ।
भल्लुक० }
भल्लू० }
भल्लूक० } ना० पु० रीछ, भाल, तरकारी।
भल्लूकप्रिय० ना० पु० स्योना वृक्ष।
भव० ना० पु० संसार, शिवजी, कल्याण, भय, जन्म होना।
भवदर्शन० ना० पु० आपका दर्शन।
भवन० ना० पु० घर, मकान।
भवा० ना० स्त्री० पार्वती।
भवानी० ना० स्त्री० पार्वती।
भवापवर्ग० ना० पु० मोक्ष, जीवन्मुक्ति।
भवार्णव० ना० पु० संसारसागर।

भवार्पण० ना० पु० शिवहेतु देना।
भविक० ना० स्त्री० कुशल, क्षेम, कल्याण।
भवितव्य० गु० होनहार, जो होवेगा।
भवितव्यता० ना० स्त्री० प्रारब्ध, होनहार।
भवर० ना० पु० पानी की गति, भौरा।
भवावर्त्त० ना० पु० ससार का भँवर, जगत् भवर।
भविष्य० } गु० होनहार, जो कुछ होवेगा,
भविष्यत्० } आनहारा समय।
भविष्यत्वक्ता० } ना० पु० भविष्यत् कहने
भविष्यद्वक्ता० } हारा, आगमज्ञानी।
भवैया० ना० पु० कथक, राधा नर्तक।
भव्य० गु० भाग्यवान, योग्य, कल्याण, होनी, ना० पु० कमरख वृक्ष।
भष० } ना० पु० भोजन, भक्षण, खाना।
भषण० }
भस० ना० पु० राख, खाक।
भसकना० अ० क्रि० गिरना, पड़ना, फाकना।
भसना० अ० क्रि० तैरना, बहना।
भसभसा० गु० पिलपिला।
भसम० ना० पु० भस्म, राख।
भसाना० स० क्रि० बहाना, चलाना।
भस्म० ना० स्त्री० विभूति, राख।
भस्मी० ना० पु० शिरमी, गु० खाबी।
भस्मीभूत० गु० जलगया, भस्महोगया।
भहराना० अ० क्रि० कांपना, लड़खड़ाना, डग मगाना।
भक्ष० ना० पु० भोजन, चर्बैण।
भक्षक० गु० खानेहारा।
भक्षण० ना० पु० भोजन, चर्बैण।
भक्षी० गु० भक्षक।
भक्ष्य० गु० जो खाने के योग्यहै, खाद्य।
भा० ना० स्त्री० शोभा, कांति।
भांग० ना० स्त्री० बूटी, विजया, भंग।
भांज० ना० स्त्री० ऐंठ, बल, रस्सी बनानेका काम।
भांजना० स० क्रि० फिराना, घुमाना, ऐंठना, हिलाना, चमकाना।
भांजा० ना० पु० बहनका पुत्र।
भांजी० ना० स्त्री० बहन की कन्या, हरज, नुकसान।
भांट० ना० पु० ओषधि, पौधा विशेष।
भांटा० ना० पु० बैंगन, तरकारी विशेष।
भांड़० ना० पु० हंसोड़, बहुरूपिया, स्वांगी।
भांड़ना० स० क्रि० गालीदेना, बिगाड़ना।
भांड़ा० ना० पु० माटीका बड़ा बर्तन, सामग्री, जो रुपया किसी को पृथ्वी म गड़ाहुआ मिले, पकवा, दर्पानह।
भांडीर० ना० पु० बर्गद का वृक्ष, स्थानविशेष।
भांडैती० ना० स्त्री० बहुरूप्य, स्वांग।
भांति० ना० स्त्री० रीति, डौल, ढब, जाति, शोभा, प्रकार।
भांवर० }
भांवरि० } ना० स्त्री० फेर, घुमाना।
भांवरी० }
भाई० ना० पु० भ्राता, बिरादर।
भाईचारा० ना० पु० भयापा, आपस।
भाईबन्द० ना० पु० जाति के लोग।
भाक्र० ना० पु० परवश, पिछलगा।
भाखना० स० क्रि० बोलना, कहना।
भाग० ना० पु० अंश, प्रारब्ध, कर्म, हिस्सह।
भागजाना० अ० क्रि० टलना, पीठदेना।
भागड़० ना० स्त्री० फरार, देशत्याग, भगदर।
भागना० अ० क्रि० भागजाना, टलना।
भागमान्० गु० भाग्यवान्।
भागमानी० ना० स्त्री० सुभाग, धनाढ्यता।
भागलपुर० ना० पु० नगरविशेष।
भागवत० ना० पु० पुराणविशेष, भगवद्धर्मी।
भागवती० ना० पु० श्रीमगवान्, भागवतपाठक, ना० स्त्री० सद्दिया विशेष, सुभागिन।

भागवन्त० } गु० भाग्यवान्।
भागवान्० }

भागाभाग० ना० पु० भागड़, बिन ठहरे चला जाना।

भागनेय० ना० पु० भाजा, बहन का पुत्र।

भागी० ना० पु० साझी, अंशी, बर्तैत, गु० भाग्यवान्।

भागीरथ० ना० पु० भगीरथ।

भागीरथी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।

भाग्य० ना० पु० प्रारब्ध, धर्म, तकदीर, गु० जो भाग करने के योग्य है।

भाग्यवन्त० } गु०प्रारब्धी, तकदीरदार,किस्मतवर, प्रतापी, धनाढ्य।
भाग्यवान्० }

भाग्यहीन० गु० मन्दभाग्य, दरिद्री, कमबख्त।

भाजक० गु० जिसपर बाटाजाय, भागकारी।

भाजन० ना० पु० बासन, बर्तन।

भाजना० अ० क्रि० भागना, स० क्रि० भूनना, तलना।

भाजी० ना० स्त्री० तरकारी, शाक, बथुवा, बैना।

भाज्य० गु० जो भाग किया जावे, विभाग किया जावे।

भाट० ना० पु० बन्दीजन, वर्त्तिविशेष, जाति विशेष।

भाटन्० ना० स्त्री० भाटकी स्त्री।

भाठा० ना० पु० धारा समुद्र का उतार, भट्ठा।

भाठियाल० ना० पु० भठियाल।

भाठी० ना० स्त्री भट्ठी, भौंकनी, भठियाल।

भाड़० ना० पु० अन्न भूनने के लिये अग्नियुक्त स्थान।

भाड़ा० ना० पु० किराया।

भाण्ड० ना० पु० बासन, बर्तन।

भाण्डार० ना० पु० भण्डार।

भाण्डारि० ना० पु० भण्डार का अधिपति।

भाण्डीर० ना० पु० व्रजमें बनविशेष।

भात० ना० पु० ओदन, रांधेहुये चावल।

भाता० ना० पु० भत्ता।

भाथा० ना० पु० तूण, तरकश।

भाथे० ना० पु० बहुभाथा।

भादवा० }
भादौं० }
भाद्र० } ना० पु० छठामहीना, वर्षा का भाग।
भाद्रपद० }
भाद्रमास० }

भान० ना० पु० स्मरण, सूर्य, भानु।

भानजा० ना० पु० बहनका पुत्र।

भानजी० ना० स्त्री० बहनकी पुत्री।

भानना० स० क्रि० हनना, मारना, फाड़ना, ताड़ना, भाजना।

भानमती० ना० स्त्री० नटनी।

भाना० अ० क्रि० भला लगाना, सजना।

भानु० ना० पु० सूर्य।

भानुज० ना० पु० शनैश्चर, राजवर्षी और यमराज ना० स्त्री० श्रीयमुनाजी, काव्ये यथा, भानुजसरि प्रयाम करि श्याम, कृष्णावतल विहार तट जाम्।

भानुमति० गु० सुन्दर, ना० स्त्री० राजा विक्रमादित्य वा राजा दुर्योधनकी रानीका नाम।

भानुरिपु० ना० पु० राहु, केतु।

भानुयोगेश्वरी० ना० स्त्री० कश्यपकी पत्नी विशेष।

भाफ० ना० स्त्री० बाष्प, भाफ।

भाफना० स० क्रि० समझना, अटकलना।

भाभी० ना० स्त्री० भौजाई, भाईकी स्त्री।

भाम० ना० पु० श्रीमहादेवजी, यथा, दोहा, गंगाधर हर शूलधर शशिधर शङ्कर वाम। शर्व शम्भु शिव भीम भव भर्ग भाम त्रिपुरराम।

भामरि० ना० स्त्री० भावरी।

भामा० ना० स्त्री० पार्वती, सामान्य स्त्री।

भामिनि० } ना० स्त्री० प्रिय वा कर्कशा स्त्री, लड़ाका।
भामिनी० }

भाय० ना० पु० भाव, स्वभाव, भाई।
भायप० ना० पु० भाईबन्दी, भाइयों का परस्पर स्नेह।
भायमान्० } गु० सुशोभित, अच्छा, भाग्य।
भायवन्त०
भायवान्०
भार० ना० पु० भारु, भारी, बरही, जितना एक मनुष्य लेचलता है।
भारक० ना० पु० गधा, ऊंट, यथा भारवेजुम हारस इति पिंगल।
भारंगी० ना० स्त्री० औषधि विशेष।
भारत० ना० पु० व्यासरचित इतिहास वा पुराण विशेष, कौरव पांडव का समर।
भारतवर्ष० ना० पु० जम्बूद्वीपके नवखंडों मे से एकका नाम, हिंदुस्तान।
भारतवर्षीय० गु० जो भारतवर्षका सम्बन्धीहो।
भारती० ना० स्त्री० वाग्देवता, सरस्वती।
भारद० गु० भारदाता, परन्तु सतसई ग्रन्थ में भाव अर्थ हुआ और रद फारसीशब्द का अर्थ तोड़ना लियाहै अर्थात् तोडागया, नाशहुआ।
भारद्वाजी० ना० स्त्री० वनकपास, नमा।
भारवाह० ना० पु० गधा, खर।
भारवाहक० गु० जो भार को ले चलैवाहा, यथा मजिया, हम्माल।
भारा० ना० पु० भाग, भाड़ा, किराया।
भारी० गु० गरुड़, बड़ा, महंगा, मोटा, गंभीर, पादा, टेढ़ा, ना० पु० भाजिया।
भार्गव० ना० पु० शुक्र, जमदग्नि।
भार्गवी० ना० स्त्री० दूब, घास।
भार्गवेश० ना० पु० परशुराम।
भार्या० ना० स्त्री० पत्नी, नारी।
भाल० ना० पु० तीर आदिकी नोक, ललाट, रीछ।
भाला० ना० पु० बर्छी विशाल।
भालू० } ना० पु० रीछ।
भाल्ह०
भालुनाथ० } ना० पु० जामवंत, भालुवाला, रीछ पालनेवाला।
भालुपति०
भाव० ना० पु० प्रकृति, स्वभाव, सम्मति, मोल, चैतन्य, शाच, वृक्ष, योनता, भेद, द्रव्य, उदय, स्वाग फावली, मनकीलहर, जन्तु।
भावक० गु० सोची, मित्र, सज्जन।
भावज० ना० स्त्री० भाई की स्त्री।
भावता० गु० प्रिय, चाहता।
भावती० ना० स्त्री० चाहती, प्रिया।
भावन० ना० पु० सुहावन, दिलनोट।
भावना० ना० स्त्री० कामना, वासना, इच्छा, चिंता, सहारा, शरण।
भाववाचक० ना० पु० वह संज्ञा जिससे उसका वा शब्द का धर्म वा भाव जानाजावे।
भावह० ना० स्त्री० आगे भाई की जोरू।
भावान्तर० ना० पु० प्रकारान्तर, दूसरेप्रकार।
भावित० गु० चिंतित, शंकित।
भावी० ना० स्त्री० भविष्यत्, होनहार, बदा।
भावुक० ना० पु० भव, कल्याण।
भाव्य० वाचित, जो भाव के योग्य है, सुन्दर।
भाषण० ना० पु० कथन।
भाषा० ना० स्त्री० बोली, वाणी, सरस्वती, जो संस्कृत नहीं है।
भाषित० गु० कथित, कहाहुआ।
भाष्य० ना० पु० सूत्रादि ग्रन्थ का प्रथम विवरण।
भास० ना० पु० प्रकाश, चमत्कार, दीप्ति।
भासना० अ० क्रि० प्रगट होना, सूझना।
भासित० गु० प्रकाशित, समझायागया।
भासुर० ना० पु० पतिका चचा है।
भास्कर० ना० पु० सूर्य।
भास्वान्० ना० पु० सूर्य, गु० प्रकाशित।
भास्वर० ना० पु० सूर्य।
भिखारी० ना० पु० याचक, भिक्षुक, फकीर, मंगता, मगन।

भिगाना०
भिगोना०
भिजाना० } स० क्रि० भीला वा थोदाकरना।

भिटनी० ना० स्त्री० कुच के ऊपर नोक पुनर्वा।

भिड़ना० अ० क्रि० मिलना, सटना, लड़ना।

भिड़ाना० स० क्रि० मिलाना, सटाना, लड़ाना।

भिण्डपाल० ना० पु० गोफना, धनवासी, जिस में ढेला रखकर घुमाय के चलाते हैं।

भिण्डी० ना० स्त्री० तरकारी विशेष।

भित्ती० ना० स्त्री० भीत, दीवार।

भिनकना०
भिनभिनाना० } स० क्रि० मक्खी उड़नेसे जो शब्द निकले।

भिनसार० ना० पु० तड़का।

भिन्न० गु० पृथक् अलग, बतर।

भिन्नता० ना० स्त्री० अलगाहट।

भिन्नाना० अ० क्रि० शिरघूमजाना, घबराना।

भिन्सार० ना० पु० भोर, प्रात, तड़का, सबेरा।

भिरना० अ० क्रि० भिड़ना।

भिरस० ना० स्त्री० बरट, लड़ाई।

भिलावां० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष, जो देहमें लगने से छाला पड़जाता है।

भिलौंजी० ना० स्त्री० भिलावाका बीज।

भिषक्०
भिषज० } ना० पु० वैद्य, हकीम, तबीब।

भिक्षा० ना० स्त्री० भीख, खैरात।

भिक्षाटन० ना० पु० भीखमांगना वा भीख मांगने के लिये फिरना।

भिक्षु० ना० पु० दण्डी, संन्यासी, स्योड़ी पौधा।

भिक्षुक० ना० पु० भिखारी।

भी० अव्य० च, हु और।

भीख० ना० स्त्री० भिक्षा, मंगनई।

भीगना०
भीजना० } अ० क्रि० गीला वा थोदाहोना, दुःखी होना।

भीज्ञ० गु० गीला, भीगा भया।

भीठ० ना० स्त्री० ऊंची धरती वा जिस स्थान में पान उत्पन्न होते हैं।

भीड़० ना० स्त्री० मण्डली, ठठ, बहुतात, झेरा।

भीड़ा० ना० पु० सकीर्ण।

भीत० गु० डरा, भययुक्त, ना० स्त्री० दीवार।

भीतर० अव्य० अन्तर, बीचमें।

भीतरिया० ना० पु० भीतर रहनेवाला वा जो मनुष्य देवालयका प्रधानता से कामकरताहै अर्थात् भण्डारी, रसोइया, पुजारी।

भीतरी० ना० पु० भीतरिया, गु० भीतर का।

भीति० ना० स्त्री० भय, शंका, दीवार।

भीम० ना० पु० भय, अमलवेत वृक्ष, युधिष्ठिर का भाई, गु० भयानक, भयंकर।

भीमसेन० ना० पु० पाण्डुका दूसरा पुत्र।

भीमसेनी० ना० पु० कपूरविशेष।

भीर० ना० स्त्री० भीड़।

भीरु०
भीरुक० } गु० कायर, डरपोक।

भील० ना० पु० जातिविशेष।

भीलन०
भीलिन० } ना० स्त्री० भीलकी जोरू।

भीलुक० गु० भीरुक।

भीषण० ना० पु० भय, गु० भयानक, भयंकर।

भीष्म० ना० पु० शिरजी, कौरवों का दादा।

भीष्माष्टमी० ना० स्त्री० माघकी शुक्लाष्टमी।

भुआर०
भुआल० } ना० पु० राजा।

भुक्० गु० भोता, भोगी खानेहारा।

भुक्त० गु० जो भोजन किया गया है।

भुक्ति० ना० स्त्री० भोगवस्तु, भोजनादि।

भुगतना० अ० क्रि० सुख वा दुःखको भोगना, पुण्य वा पाप का उठाना, व्यतीतहोना।

भुगतमान्० गु० जो भुगतने के योग्यहै।

भुगताना० स० क्रि० भोगकराना, निपटाना।

भुग्गा० गु० सीधा, भोला।

भुच० अनगढ़, मूर्ख, जो छीला नहीं गया।

भुचम्पा० ना० पु० वृत्त विशेष ।
भुज० ना० स्त्री० बाहु, दण्ड, मेंड, भोजपत्र ।
भुजग० ना० पु० साप ।
भुजंग० } ना० पु० कालासर्प विशेष, गु-
भुजंगम० } वाला ।
भुजंगपर्णिनी० ना० स्त्री० नागदौन ।
भुजंगिनि० ना० स्त्री० सर्पिणी ।
भुजा० ना० स्त्री० भुज, बाहु ।
भुजाभूषण० ना० पु० बाजूबन्द ।
भुजाली० ना० स्त्री० तलवार विशेष, बाजूबन्द ।
भुजिया० ना० स्त्री० भाजी ।
भुट्टा० ना० पु० बाली ज्वारकी, मकी ज्वार ।
भुण्डली० ना० पु० कीड़ा विशेष ।
भुतना० ना० पु० छोटा भूत, भोक्स ।
भुतनी० ना० स्त्री० भुतनेकी स्त्री ।
भुतवा० ना० पु० भुतना ।
भुताहा० गु० जो भूतके समानहै ।
भुतियाना० अ० क्रि० भुताहा होना ।
भुनि० अव्य० मानो, गोया, सी ।
भुना० अ० क्रि० पहचना, भुजना, पचना ।
भुरभुरा० गु० सूखी बुरकी ।
भुरभुराना० स० क्रि० चोना आदि सारे की वस्तु पर छिड़कना, बुरकाना ।
भुलसना० अ० क्रि० झुलसना, जलजाना ।
भुलाना० स० क्रि० भूलकराना, फुसलाना । बहकाना ।
भुलावा० ना० पु० धोखा, डमरा ।
भुव० ना० पु० स्वर्ग, आकाश, अम्बर, धरती ।
भुवंग० } ना० पु० भुजग, साप ।
भुवंगम० }
भुवन० ना० पु० जगत्, संसार, लोक, मंदिर, आकाश, पानी, भोग, १४ लोक ।
भुवाल० } ना० पु० राजाधिराज, बादशाह,
भुवालु० } राजा, भूमिपाल ।
भुस० ना० पु० चोकर ।
भुशुण्ड० ना० पु० माथा, शिर, शीश ।
भुशुण्डी० ना० स्त्री० तोप, बन्दूक रामायण विशेष ।
भुसुण्डा० ना० पु० भुशुण्ड, कमल की जड़ें ।
भुसेरा० ना० पु० }
भुसेला० ना० पु० } स्थान विशेष जिस में
भुसौरा० ना० पु० } भूसा रखते हैं ।
भुसौरी० ना० स्त्री० }
भू० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।
भूईडोल० ना० पु० भूकम्प, हालाचाला ।
भूं० } ना० स्त्री० भूमि ।
भूंई० }
भूंजा० ना० पु० भड़भूना ।
भूंसना० अ० क्रि० हौं हौं करना ।
भूकम्प० ना० पु० भौंचाल, हालाडोला ।
भूख० ना० स्त्री० क्षुधा ।
भूखा० गु० क्षुधित ।
भूगोल० ना० पु० धरामण्डल ।
भूचर० ना० पु० पृथ्वीपर चलनेहारे जन्तु ।
भूजन० ना० पु० पृथ्वीपर के मनुष्य, भोगना ।
भूड़० ना० स्त्री० रेतली धरती ।
भूत० ना० पु० अतीतकाल, पृथिव्यादि पंचतत्त्व अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, नभ, और प्रेतनिशाच, जीव ।
भूतघ्नी० ना० स्त्री० तुलसी
भूतनया० ना० स्त्री० श्रीसीताजी ।
भूतनाथ० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
भूतनाशन० ना० पु० हींग ।
भूतनी० ना० स्त्री० प्रेतनी ।
भूतंदुला० ना० स्त्री० लिङ्ग ।
भूतपति० ना० पु० भूतनाथ, शिवजी, भैरव ।
भूतमर्द्दी० ना० पु० समुद्रलोन ।
भूतल० ना० पु० पृथ्वी, धरातल ।
भूतवास० ना० पु० बहेड़ा ।
भूतवृक्ष० ना० पु० स्योना ।
भूति० ना० स्त्री० विभूति, सम्पदा, राख, सिद्धि ।

भूतिक० ना० पु० कपूर।
भूतेश० ना० पु० भूतनाथ।
भूदेव० ना० पु० ब्राह्मण।
भूधर ना० पु० पर्वत, राजा, हाथी, मेष, साप, शेष, गौ, सूर्य, कच्छप।
भूधात्री० ना० पु० भूम्यावला।
भूनना० स० क्रि० पकाना, सहलाना, तलना।
भूनिम्ब० ना० पु० चिरायता।
भूप०
भूपति० } ना० पु० राजा, महीपति।
भूपपद० ना० पु० राज्य, बादशाहत।
भूपाल० ना० पु० भूपति, राजा, महीपति।
भूभल० ना० पु० गरम राख।
भूभृत्० ना० पु० पर्वत, पहाड़।
भूमण्डली० ना० स्त्री० निल्य, धरामण्डल।
भूमध्यस्थ० ना० पु० जो समुद्र वृक्ष और अग्निराके मध्यवर्ती है।
भूमि० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन।
भूमिका० ना० स्त्री० दीबाचह, तात्पर्य।
भूमिज० ना० पु० मंगल, भौमासुर, उद्भिज, साग।
भूमिनाग० ना० पु० साधारण साप।
भूमिपति०
भूमिपाल० } ना० पु० राजा, महीपति।
भूमिया० ना० पु० भूमिका देवता।
भूमीश० ना० पु० भूपाल, राजा।
भूय० अव्य० पुन, फेर।
भूयोभूयः० अव्य० पुन पुन, फिर फिर।
भूर०
भूरसी० } ना० स्त्री० दक्षिणा, बाझा, दान, माल।
भूरा० गु० हैरा, कपिल, पिंगल।
भूरि० गु० बहुत अधिक।
भूर्ज० ना० प० भोजपत्र।
भूर्जपत्र० ना० पु० भोजपत्र वा उसका वृक्ष।
भूर्जपत्र० ना० पु० भोजपत्र।
भूल० ना० स्त्री० विस्मरण, चूक, धोखा।

भूलना० अ० क्रि० बिसरना, चूकना, भटकना, खोजाना, लोपहोना।
भूलाबिसरा०
भूलाभटका० } गु० जो भटकगया।
भूलोक० ना० पु० मनुष्यलोक।
भूषण० ना० पु० आभरण, गहना, शोभा।
भूषित० गु० अलकृत, भूषणयुत, शोभित।
भूसा० ना० पु० गेहू और जौ आदिका सूखा तृण।
भूसिता० ना० स्त्री० अमोल।
भूसी० ना० स्त्री० छिलका, धान आदिका चोकर, तूस।
भूसुता० ना० स्त्री० सीताजी।
भूसुर० ना० पु० ब्राह्मण।
भूस्वामी० ना० पु० भूपति।
भृकुटी० ना० स्त्री० भौंह, भ्रू, उड्डा।
भृगु० ना० पु० मुनिविशेष, वासना।
भृगुनन्दन०
भृगुनाथ०
भृगुनायक०
भृगुपति० } ना० पु० परशुराम।
भृगुबन्धु० ना० पु० कुन्दरुन।
भृगुसुता० ना० स्त्री० भारगी औषधि।
भृंग० ना० पु० भ्रमर, भौंरा, कीटविशेष।
भृंगराज० ना० पु० भगड़ीविशेष, पक्षीविशेष, भँगरा, बूटी।
भृंगाह्व० ना० पु० भँगरा बूटी।
भृंगारि० ना० पु० झींगुर।
भृंगी० ना० स्त्री० कुम्हारी, कीट, कीड़ाप्रसिद्ध जो झींगुरको लाकर निजरूप करताहै, शिवगण विशेष।
भृत्य० ना० पु० दास, सेवक, गुलाम।
भृत्यगण० ना० पु० सेवकों का समूह।
भृत्या० ना० स्त्री० दासी, लौंडी।
भेउ० ना० पु० प्रकार, स्वभाव, भेद, मर्म।
भेजा० गु० स्वर्गपाताली, देरा।

भेंट० ना० स्त्री० भट।
भेंटना० स० क्रि० भटना।
भेक० ना० पु० मेढक, मेघ।
भेज० ना० स्त्री० लगान, धरतीका पठावा।
भेजना० स० क्रि० पठाना, पहुंचाना।
भेजा० ना० पु० मूड़ा मस्तकका भीतरी मास।
भेट० ना० स्त्री० दर्शन, मुलाकात, सौगात, अर्पण उपायन, उपहार, नजर।
भेटना० स० क्रि० मिलना, उपायन करना।
भेटी० ना० स्त्री० } बोंट, डंठा, भेंटा, मिलैया।
भेटू० ना० पु० }
भेड़० ना० स्त्री० मद, मेषकी जाति विशेष।
भेड़ा० ना० पु० मेढ़ा।
भेड़िया० ना० पु० विग, हुण्डार।
भेड़ियाधसान० ना० पु० गचपच करके मचलनी।
भेड़ी० ना० स्त्री० मेढ़ा, मष।
भेद० ना० पु० भिन्नभाव, बाचविशेष, गुप्त बात, मर्म, छद, अन्तर, फर्क, निरम।
भेदक० गु० भेदकरनेहारा, पाताभद।
भेदकिया० ना० पु० भेदलगानेहारा, खोजी।
भेदन० ना० पु० भेद करने का काम।
भेदिका०, भेदिया०, भेदी० } ना० पु० भेदकरनहारा, खोजी, जासूस, घातिया, मर्म जाननेहारा।
भेदू० ना० पु० भेदलेनेहारा।
भेद्य० गु० भेदके योग्य।
भेना० ना० स्त्री० बहन।
भेर०, भेरि०, भेरी० } ना० स्त्री० बाजा विशेष, कर्णार्य।
भेला० ना० पु० भिलावा।
भेली० ना० स्त्री० गुड़का ढला।
भेष० ना० पु० भाव, प्रकृति, स्वभाव, मर्म, भेद।

भेष० ना० पु० रूप, चाल, सूरत।
भेषज० ना० पु० औषधि, दवा।
भेषरज० ना० पु० भगरा।
भैंस० ना० स्त्री० माहषी।
भैंसा० ना० पु० महिष, जामूरा।
भैंसिया० ना० स्त्री० लागी भैंस।
भैंसियादाद० ना० पु० दाद रोग विशेष।
भैचक० गु० भयचक।
भैमी० ना० स्त्री० माघ शुक्ल एकादशी, दमयंती, नलकी स्त्री।
भैया० ना० पु० भाई।
भैरव० ना० पु० रागविशेष, शिवजी वा उनका सहचर, घृणा, कराल।
भैरवी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, भैरवकी स्त्री, दुर्गा।
भैहू०, भैहा० } ना० स्त्री० छोटे भाई की रनी।
भोंकना० स० क्रि० टोकना, हूलना।
भोंडा० गु० कुडौल, कुरूप।
भोंदू० गु० सीधा, भोला।
भोंप० ना० पु० नरसिंहा।
भोई० ना० पु० कहार, कि० भिगाई।
भोकस० ना० पु० खोक्सा, मन्सा।
भोक्ता० गु० भोजन में जो निपुण, अच्छा खानेहारा।
भोग० ना० पु० सुख वा दुःखका उठाना वा हर्ष, सुख, खाना, नैवद्य, विहार, विलास।
भोगना० अ० क्रि० सुख दुःखका उठाना वा पाना, सुख, विलास करना।
भोगवती० ना० स्त्री० शेषका निवासस्थान।
भोगा० ना० पु० छल, ठगई, धोखा।
भोगी० गु० भोग करनेवाला, आनन्दी ना० पु० सांप।
भोग्य० गु० जो भोग करने के योग्य है।
भोज० ना० पु० ज्यौनार, राजा विशेष, देश विशेष जो पटना और भागलपुर का प्रदेश है।
भोजन० ना० पु० आहार, खाना।

भोजनचार० ना० पु० चारप्रकार का आहार अर्थात् भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य।

भोजपत्र० ना० पु० वृक्षविशेष की छाल।

भोजपुर० ना० पु० नगर विशेष।

भोज्य० ना० पु० जो खाने के योग्य है, सीधा।

भोट० ना० पु० भोट देशके वस्त्र, देश विशेष, जो तिब्बत का एक देशहै।

भोटन्त० ना० पु० देश विशेष जो नेपाल के पूर्व है।

भोटिया० ना० पु० भोट देश के लोग।

भोडर० } ना० पु० अभ्रक, अबरक।
भोडल०

भोता० गु० जो अत्यन्त तेज नहीं है, मन्द।

भोपा० ना० पु० टोनहा, उल्लू, बाजा विशेष।

भोपाल० ना० पु० देश वा नगरविशेष।

भोर० ना० पु० प्रात काल, पौ।

भोरा० ना० पु० धोखा, गु० भोला, सीधा, दयालु।

भोरे० गु० धोखे, भूले, रामायणे यथा, का क्षति लाभ जीर्ण धनु तोरे। देखा राम नयेके भोरे।

भोला० गु० छलहीन, सीधा, ना० पु० शिवजी।

भोलानाथ० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

भोली० गु० स्त्री० सीधी।

भौं० ना० स्त्री० भृकुटी, भ्रू, भूमि।

भौंकना० अ० क्रि० हाँ हाँ करना, कुत्ता से बोलना, कुत्ताका शब्द।

भौंचाल० ना० पु० भूमिकम्प, हालाचाला।

भौंर० ना० पु० भँवर।

भौंरा० ना० पु० भ्रमर, अलि, षट्पद।

भौंरियाना० स० क्रि० फिराना, घुमाना।

भौंरी० ना० स्त्री० घोड़े के दोष विशेष, भौंरकी स्त्री, छदी रोगी, फेरा।

भौंसना० अ० क्रि० भौंकना।

भौ० ना० पु० भय, डर।

भौचक० गु० भयचक।

भौजाई० } ना० स्त्री० बड़े भाई की स्त्री।
भौजी०

भौनासु० ना० पु० बड़ा मूरा जिसम हाथी बाधत है।

भौतिक० गु० जो भूत करके हाय, शरीरराग।

भौतिकदेह० ना० स्त्री० पञ्चतत्त्वकृतशरीर।

भौम० ना० पु० मंगल, उद्भिज, लोन, भौमासुर।

भौमवार० ना० पु० मंगलवार।

भौमासुर० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको नरकासुर भी कहते हैं।

भ्रंस० ना० पु० ध्वंस।

भ्रम० ना० पु० भूल, चूक, सन्देह, संशय।

भ्रमण० ना० पु० पर्यटन, भ्रमर, फिरना।

भ्रमणा० ना० स्त्री० भ्रम, भूल, सन्देह, फिरना।

भ्रमभीर० ना० पु० भूलका समूह वा बोझ।

भ्रमर० ना० पु० भौंरा, अलि।

भ्रमरी० ना० स्त्री० भ्रमरकी स्त्री, भौंरी।

भ्रमरका० ना० स्त्री० बावरी, जल्फें।

भ्रष्ट० गु० पतित, स्वधर्महीन, छुड़लेला।

भ्रष्टा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा।

भ्रष्टाचार० ना० पु० अधर्म, स्वधर्महीन, सर्व्वभक्षी।

भ्राजमान० गु० शोभित, सुशोभित, जैसा।

भ्राता० ना० पु० भाई।

भ्रातृज० ना० पु० भतीजा, भाईका लड़का।

भ्रान्त० गु० जो घुमायागया।

भ्रान्ति० ना० स्त्री० भूल, चूक, भ्रम, मतिभ्रम।

भ्रामक० गु० भ्रमदाता, ठग, धोखा देनेवाला।

भ्रुव० } ना० स्त्री० भौंह, पंक्ति, घुड़कना।
भ्रू०

भ्रूणहत्या० ना० स्त्री० गर्भपातन या विनाशन।
भ्रूभङ्ग० ना० पु० भ्रूविक्षेप, धुड़की।

[म]

मडुआ० ना० पु० अन्न विशेष।
मकड़ा० ना० पु० कीट विशेष जो जाला बनाता है।
मकड़ना० अ० क्रि० टेढ़ाचलना, जोशुराना।
मकड़ी० ना० स्त्री० छोटा मकड़ा, लूतक।
मकर० ना० पु० दशवीं राशि, मगर, मृग, मत्स्य।
मकरध्वज० ना० पु० कामदेव, श्रीबलदेवजी, श्रीहनुमान्जी का पुत्र।
मकरन्द० ना० पु० पुष्पका रस, कोकिला।
मकरन्दी० ना० पु० कमल।
मकराकृत० गु० मछली के डौल।
मकराक्ष० ना० पु० खरासुर का पुत्र।
मकरी० ना० स्त्री० मछली, मकर की स्त्री, मकड़ी।
मकुष्ट०
मकुष्टक० } ना० पु० मोठ अन्न।
मकोड़ा० ना० पु० बड़ा चूंटा।
मकोय० ना० पु० फल या पौधा या झाड़ी विशेष।
मक्खन० ना० पु० नवनीत, माखन, नैनूप्रसद्द।
मक्खी० ना० स्त्री० माखी, बन्दूक का माखा।
मख० ना० पु० यज्ञ।
मखन० ना० पु० माखन।
मखना० ना० पु० हाथीविशेष जिसके दांत न हों, मुर्ग जिस के ताज न हो।
मखनिया० ना० पु० माखन बनानेहारा।
मखाना० ना० पु० पौधाविशेष।
मखी० ना० स्त्री० मक्खी।
मग० ना० पु० मार्ग, पन्थ,बाट, मगध देश।
मगध० ना० पु० देशविशेष, जिस में गयातीर्थ है या पटनादि नगर है।
मगधभाषा० ना० स्त्री० प्राकृत भाषाविशेष जो मगध और श्याम में प्रचलित है जिसको वहां पालिक कहते हैं।
मगण० ना० पु० गणविशेष जिस में तीन अक्षर दीर्घ होते हैं।
मगन० गु० मग्न।
मगनता० ना० स्त्री० मग्नता, प्रसन्नता।
मगर०
मगरमच्छ० } मकर, ग्राह, कुम्भीर।
मगरा० गु० ढीठ, घमण्डी, हठीला, मचला।
मगराई० ना० स्त्री० } ढिठाई, घमण्ड, मच-
मगरापन० पु० } लाहट।
मगरेला० ना० पु० कालेरंग का छोटा बीज विशेष।
मगसिर० ना० पु० मगसिर, अगहन महीना।
मगही० गु० मगध देश की वस्तु।
मगहैया० ना० पु० मगध देश के वासी।
मगुरी० ना० स्त्री० मछलीविशेष।
मग्न० गु० डूबा, प्रसन्न, हर्षित, मुदित, गलित।
मग्नता० ना० स्त्री० प्रसन्नता, हर्ष, मुद।
मघवा० ना० पु० इन्द्र।
मघवास्त्र० ना० पु० वज्र।
मघा० ना० स्त्री० दशवां नक्षत्र।
मघोनी० ना० स्त्री० इन्द्राणी।
मंका० ना० पु० जापी माला, सुमिरन, गुरी।
मंगत०
मंगता० } ना० पु० भिखारी।
मंगन० ना० पु० भिक्षुक, भिखारी, बनि।
मंगनी० ना० स्त्री० सगाई, उधार।
मंगरा० गु० बलवान्, ढीठ, मगरा।
मंगल० ना० पु० कुशल, आनन्द, तीसरा ग्रह, तातार देश के लोगों की तीनजाति में से एक और तीसरा वार, रागविशेष जो विवाहादि आनन्द में गायाजाता है।
मंगलकोष्टी० ना० स्त्री० चटाई विशेष।
मंगलघट० ना० पु० विवाहादि का कलश।

मँगलद्रव्य० ना० पु० फूलआदि।
मँगलवार० ना० पु० तीसरा वार।
मंगलसमाचार० ना० पु० शुभसमाचार, अच्छा खबर।
मंगला० ना० स्त्री० पार्वती दशाक्षिरा, सुहाग।
मंगलाचार० ना० पु० बधावा, विवाह का गान।
मंगलाचरण० ना० पु० शुभ कर्मों में गणेशादि देवताओं की विनय वा पूजा वा नमस्कारादिक।
मँगलामुखी० ना० स्त्री० बजना, गवैया वेश्या।
मंगली० गु० मंगलकारक, जयदूत।
मंगल्या० ना० स्त्री० सजीवा, गोरोचना।
मँगवाना० स० क्रि० बुला भेजना।
मगशिर० ना० पु० मार्गशीर्ष, अगहन।
मगाना० स० क्रि० बुलाभेजना, उन्वालना व खबरकरना।
मगूला० ना० पु० घराऊन्ना।
मगतर० ना० स्त्री० स्वर्ग।
मचक० ना० स्त्री० भार की धाक मरमराहट दबर।
मचकना० अ० क्रि० भार में धाहहोना चरचराना, मरमराना।
मचकाना० स० क्रि० चरचराना, भाकना पलकमारना।
मचना० अ० क्रि० छाना, उगना, होना रचना।
मचमचाना० अ० क्रि० चरचराना, मरमराना।
मचलना० अ० क्रि० हठकरना, मचलाहोना।
मचलपन० ना० पु० हठ, मगरापन, ढिठाई।
मचला० गु० हठीला, मगरा, ढीठ।
मचलाई० ना० स्त्री० मचलापन, मचलाहट।
मचलाना० अ० क्रि० हठ करना, मतलाना, मचलाहोना करना।
मचलाहट० ना० स्त्री० हठ, ढिठाई।

मचलहा० गु० हठीला।
मचान० ना० पु० मच।
मचामच० गु० लदालद।
मचिया० ना० स्त्री० पीढ़ी, चारा, पलंगिया।
मचोड़ना० स० क्रि० निचोड़ना, ऐंठके तोड़ना
मच्छ० ना० पु० मगर, मछला।
मच्छड़० ना० पु० एक छोटा कीड़ा उड़नेहारा।
मच्छी० ना० स्त्री० मछली, मकरा।
मच्छ० ना० पु० मगर, मछली।
मछन्दर० ना० पु० चूहा, गु० मूर्ख।
मछली० ना० स्त्री० जलशयनी जलतुरई मत्स्य।
मछुआ० ना० पु० धीमर, कहार, मछीमार।
मछी० ना० स्त्री० मछली।
मछुवा० ना० पु० मछवा धीमर।
मजीठ० ना० पु० औषधि विशेष जिससे लालरंग बनता है।
मजीत० गु० ऐसा जो वस्तु काम में लाई जावे और फिर बचाजावे।
मजीरा० ना० पु० मंजार बाजा विशेष झांझ।
मजूर० ना० पु० कमरा, ठीक शब्द मजदूर है, यह शब्द फारसी का है।
मज्जा० ना० स्त्री० हाड़ के भीतर का गूदा चर्बी।
मझला० गु० मझला, बीचवाला, मध्यवर्ती।
मझार० ना० पु० बीच, मध्य।
मझेली० ना० स्त्री० मझाली।
मझोला० गु० जो न बड़ा न छोटा अथवा न अच्छा और न बुरा, अर्थात् मध्यम।
मझोली० ना० स्त्री० छोटागाड़ी वा बहल।
मञ्च० ना० पु०, मचान, डांड़ा, सिंहासन विशेष, खाट, वेदी, मचान, तख्त, ख़टतपारा।
मञ्जन० ना० पु० दांत धोने का चूर्ण विशेष, मांजन, स्नान, नहान।
मञ्जना० अ० क्रि० उजला होना, साफहोना,

मंजरी० ना० स्त्री० फूलोंका गुच्छा फली समूह।
मंजल० ना० पु० अजीरवृक्ष।
मंजा० ना० पु० नये वर्षेपानी का फेन अर्थात् प्रथम आषाढ में बर्षनेवालापानी मछली को विष होता है, रामायणे यथा, मजा मनहु मीन कह व्यापा
मंजार० ना० पु० बिलार, बिलार।
मंजारी० ना० स्त्री० बिल्ली।
मंजित० गु० मजन कियागया वा किये हुये, धोयागया।
मंजिष्ठ० ना० पु० मजीठ।
मजीर० ना० पु० बिछुवा, पांवका भूषण।
मजीरा० ना० पु० मजीरा।
मजु० गु० सुंदर, मनोहर, चाहता।
मंजुघोष० ना० पु० कबूतर, परेवा।
मंजुघोषा० ना० पु० कबूतरी, कोयल, कोकिला।
मंजुल० गु० सुंदर, मनोहर, चाहता, अच्छा।
मंजुला० ना० स्त्री० मजीठ।
मजूषा० ना० स्त्री० टोकरा।
मटक० } ना० स्त्री० चोचला, भ्रकुटी, अठिलानपन, चमकन।
मटकना० }
मटकना० ना० पु० कुप्पा, बधना, मृत्तिकाका छोटापात्र।
मटकना० अ० क्रि० पलक वा आंखका मरना, चमकना।
मटका० ना० पु० मठोर मृत्तिकाकाबड़ाबर्त्तन।
मटकाना० स० क्रि० आंख घुमाना, चमकाना, दूसरेको बिराना।
मटकी० ना० स्त्री० छोटा मटका, चमनी, गुधी, छगुनी, मसकी, सेर।
मटकोठा० ना० पु० मिट्टीका घर।
मटर० ना० पु० अन्न विशेष, कलाउ।
मटरा० ना० पु० मटरविशेष, रेशमीवस्त्रविशेष।
मटरी० ना० स्त्री० मटर विशेष।
मटरीला० गु० जिसमें मटर मिलाहो।
मटियाना० स० क्रि० मिट्टीसे माजना, अ० क्रि० धून, सींचना, आंख छुपाना, होनेदेना, शिथिल होजाना।
मटियार० ना० पु० एकप्रकारकी धरती विशेष जो रेतली नहीं है।
मटियारा० गु० जो निर्मल कामका न हो, जोताऊ खेती के योग्य।
मटियाव० ना० पु० आनाकानी, आलस्यपाप।
मट्टी० ना० स्त्री० मिट्टी, मृत्तिका।
मट्ठा० ना० पु० छाछ, मठा।
मठ० ना० पु० शिवालय, गोसाइयों का घर, मण्डप।
मठड़ी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।
मठपति० } ना० पु० गोसाईं, अतिथि वा जो
मठपती० } मनुष्य शिवार्पितवस्तु लेताहो।
मठा० ना० पु० मट्ठा, गु० ढीला, धीमा, धीरा।
मठोर० ना० पु० मटका।
मढ़ियाना० स० क्रि० चपकाना, मोड़लगाना, जमाना।
मड़ोड़० ना० स्त्री० एंठ, बल, पेच।
मड़ोड़ना० स० क्रि० एंठना बलदेना, पेच डालना।
मड़ोड़ा० ना० पु० पेट में की पीड़ा, पचिरा।
मड़ोटी० ना० स्त्री० मुरा, एंठा, जोरा।
मढ़न० ना० पु० मढ़ी वा वस्तु वा काम।
मढ़ना० स० क्रि० लेसना, लगाना, लिपटना।
मढ़ा० गु० जो मढ़ागया, ना० पु० विस्तार वा मण्डप, बड़ी मढ़ी।
मढ़िया० ना० स्त्री० छोटी मढ़ी।
मढ़ी० ना० स्त्री० कुटी, झोपड़ी मण्डप।
मणि० ना० स्त्री० भूषण के लिये पाषाण विशेष, हीरा सोना आदि चमत्कार, शिरोमणि और प्रसिद्ध है कि एक विशेष सर्प के पास होती है जो रात्रिको प्रकाश करती है।

मणिकर्णिका० ना० स्त्री० काशीजी में स्थान विशेष जहां देवीजी के कान की मणि गिरीथी।
मणिका० ना० स्त्री० छोटी मणि, गुरिया।
मणिपूर० ना० पु० चक्र विशेष, देश विशेष, जो बंगाल देश के पूर्व में है।
मणियां० ना० पु० मालाको गुरिया वा दाना।
मणियार० ना० पु० सर्प विशेष जिसके मणि होती है, जाति विशेष जो चूड़ी बनाता है।
मण्ड० ना० पु० जूस, माड़, पोच वा खाता जिसमें शीरा भराजाता है।
मण्डन० ना० पु० भूषण विशेष, मिलान।
मण्डप० ना० पु० तृणादि से रचित देवताकाघर, मढ़ा, मढ़वा।
मण्डल० ना० पु० स्थान, देश, गोला, झुण्ड, घाघरा, तल।
मण्डला० ना० स्त्री० धौंकुवार।
मण्डलाकार० गु० गोलाकार।
मण्डलाग्र० ना० पु० खड्ग, तलवार।
मण्डलाना० अ० क्रि० फिरना, उड़ना, यथा पक्षी उड़ते हैं।
मण्डलिया० ना० पु० कपोत विशेष।
मण्डली० ना० स्त्री० समूह, सभा, बैठक, घर।
मण्डलीक० ना० पु० राजा, महन्त, चाधरी।
मण्डलेश्वर० ना० पु० राजा, मण्डलपति।
मण्डवा० ना० पु० बुज ना० स्त्री० मड़वी।
मण्डवी० ना० स्त्री० अन्न विशेष।
मण्डा० ना० पु० पेड़ा विशेष।
मंडित० गु० जड़ित, शोभित, भूषित, मढ़ हुआ।
मण्डियाना० अ० क्रि० कलपदना वा लगाना।
मण्डी० ना० स्त्री० हाट, गोला, गञ्ज।
मण्डूक० ना० पु० मेंढक, भेक।
मण्ढना० स० क्रि० मढ़ना।
मत० ना० पु० धर्म पंथ, सलाह, सम्मत रीति रह, ढंग, अभिप्राय, बुद्धि, अव्य० नि षेधार्थ अर्थात् नहीं, जनि।
मतंग० ना० पु० हाथी, मुनि विशेष।
मतना० ना० पु० ऊख विशेष।
मतभेद० ना० पु० मतान्तर, अभिप्राय का भेद।
मतराना० स० क्रि० मनाना।
मतलाना० अ० क्रि० जी घिनाना, उबकाना।
मतवाला० गु० मत्त, मदमाता।
मतहीन० गु० मतरहित, बुद्धि रहित।
मता० ना० पु० उपदेश, सलाह, परामर्श।
मतानुसार० ना० पु० अभिप्राय के अनुकूल, मजहब के मुवाफिक, सलाह के मुवाफिक।
मतान्तर० ना० पु० द्वितीयमत, मतके विपरीत, दूसरा धर्म।
मतान्तराचार० ना० पु० द्वितीय धर्म का व्यवहार।
मतावलम्बी० ना० पु० मताश्रयी, पन्थी।
मताश्रयी० ना० पु० मत के आश्रित, मतके आधीन, पन्थी।
मति० ना० स्त्री० बुद्धि, सम्मति, रीति, राय।
मतिमान्० } गु० बुद्धिमान्।
मतीर्ड }
मतीर० ना० पु० तरबूज, हिंदुआना, सफरा तिकाया यथा, गजभर पार मतीर ही मारक है पयोधि।
मतो० ना० पु० मत, सम्मत।
मत्त० गु० मधुमाता, मस्त, मनवालाहाथी।
मत्तवत्० गु० मधुमाता, मधुमाते के समान।
मत्सर० ना० पु० डाह, जलन, ईर्षा, गु० जलनी।
मत्स्य० ना० पु० मछली, देश विशेष।
मत्स्यबन्धी० } ना० स्त्री० बंसिरा, जिससे
मत्स्यबंधन० } मछला मारते हैं।
मत्स्यपित्ता० ना० स्त्री० कुटकी।
मत्स्याक्षी० ना० स्त्री० माक्षी, स्वेतदूब।
मथन० ना० पु० बिलावन, मथोरन, हुड़ाव।

मथना० स० क्रि० मद्दना, बिलोवना, मथोना, ना० पु० मथनी, पात्र विशेष।

मथनियां० ना० स्त्री० मथानी।

मथनी० ना० स्त्री० बिलोनी, मद्दानी, रई।

मथा० ना० पु० माथा, गु० मथाहुआ।

मथानी० ना० स्त्री० दूधहाड़ी, मटकी, चाटी।

मथित० गु० छाछ, मठ्ठा जो मथागया।

मथुरा० ना० पु० नगर विशेष, जहां श्रीकृष्ण चन्द्र जन्मे थे।

मथुरिया० ना० पु० मथुराके ब्राह्मण।

मथुरनी० ना० स्त्री० मथुरिया की जोरू।

मथौट० ना० पु० चन्दा, बिहरी, बाछ।

मथौरा० ना० पु० सूर्यमुखी, छाता, छतुरी।

मद० ना० पु० गर्व, अहङ्कार, कस्तूरी, मादक वस्तु, मदिरा आदि।

मदकल० ना० पु० हाथी।

मदकारिणी० ना० स्त्री० सुरापानी चलनाहन।

मदन० ना० पु० श्रौषधि, पौधाविशेष, मैनफल, कामदेव, प्रद्युम्नजी, दौना।

मदनांकुश० ना० पु० लिंग।

मदनाह्वा० ना० स्त्री० सिरहटी।

मदनारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

मदमाता० ना० पु० } गु० मतवाला, मतवाली।
मदमाती० ना० स्त्री० }

मदमाल० ना० पु० बिछुआ, पादामद।

मदयन्तिका० ना० स्त्री० मालती।

मदान्ध० गु० अभिमानी, मदिरा में गर्वित।

मदार० ना० पु० आक, अर्क।

मदारिया० ना० पु० मदारका फूल।

मदारी० ना० पु० शफरा, नटवर, सारवाना।

मदिक० गु० अहंकारी, मदान्ध।

मदिरा० ना० स्त्री० शराब, दारू, ना० पु० मद।

मदोत्कट० ना० पु० कपोत, कबूतर।

मदोत्कंठ० ना० पु० हाथी।

मद्गुर० ना० पु० योगन, मत्स्य विशेष, गुरुार।

मद्य० ना० स्त्री० सुरा, मदिरा, शराब।

मद्यगन्धा० ना० स्त्री० मौलसिरी।

मद्यप० ना० पु० अधिक मदिरा पीनेवाला।

मद्या० ना० स्त्री० मर्दी।

मधुमाता० गु० मतवाला।

मधुवोषित० ना० पु० करैल, मिरच।

मधु० ना० पु० मदिरा, पुष्प का रस, शहद, पानी, चैत्रमास, बसन्तऋतु, वृक्ष, दूध, अमृत, दैत्य विशेष।

मधुक० ना० पु० महुआ वृक्ष।

मधुकर० ना० पु० भ्रमर, भौंरा।

मधुकरी० ना० स्त्री० भ्रमरी, भौंरी, रोटीविशेष।

मधुकर्कटिका० ना० स्त्री० मधुककड़ी।

मधुकोष० ना० पु० मधुमाखी का छत्ता।

मधुकोषक० ना० पु० महुआ वृक्ष।

मधुग० ना० पु० महुआ भेद।

मधुतृण० ना० पु० ऊख, गन्ना।

मधुदूतिका० ना० स्त्री० कोयल।

मधुद्रुम० ना० पु० मधूकवृक्ष, चैतके वृक्ष।

मधुप० ना० पु० भौंरा, भ्रमर।

मधुपर्क० ना० पु० पूजाकी सामग्री, मधु और दही आदि मिलाकर खाना।

मधुपर्णी० ना० स्त्री० दूबिया, पोदा।

मधुपर्श० ना० पु० पका रसीला फल।

मधुपुर० ना० पु० } मथुराजी।
मधुपुरी० ना० स्त्री० }

मधुफला० ना० पु० खजूर, दाख।

मधुमण्ड० ना० पु० मोम।

मधुमक्षी० ना० स्त्री० शहदकी मक्खी, ममाखी।

मधुमात० ना० पु० रागिनी विशेष।

मधुमास० ना० पु० चैत्रमास।

मधुयष्टी० ना० स्त्री० मुलहटी।

मधुयोनि० ना० पु० खजूर, दाख।

मधुर० गु० मीठा, प्यारा, सुन्दर, अच्छा।

मधुरमण्ड० ना० पु० मोम।

मधुरसा० ना० स्त्री० मुनक्का, अंगूर, दाख।

मधुरा० ना० स्त्री० काकोली ।
मधुरी० गु० स्त्री० मीठी, रसीली ।
मधुरान्न० ना० पु० मीठा भोजन यथा रसात्र, ।
मधुलिड्० } ना० पु० भौंरा, भ्रमर ।
मधुलिह० }
मधुवन० ना० पु० मथुरा नगर ।
मधुवस० ना० पु० मधुकर, भौंरा, भ्रमर ।
मधुशिग्रु० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष ।
मधुश्रवा० ना० स्त्री० गुड़हर, सञ्जीवन बूटी ।
मधुष्ठीवी० ना० पु० महुआ वृक्ष ।
मधुष्ठीव० ना० पु० गुड़हर ।
मधुसूदन० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।
मधूक० ना० पु० महुआ वृक्ष ।
मधुकरी० ना० स्त्री० पकाये अन्नकी भिक्षा जो अतिथि को देते हैं, भौंरी, रोटी ।
मधूनका० ना० स्त्री० मुलहटी ।
मधूप० ना० पु० गुड़हर ।
मधोर्दूली० ना० स्त्री० कुम्भी तालाब की ।
मध्य० अव्य० अन्तराल, बीच, विषय ।
मध्यदिवस० ना० पु० दुपहर ।
मध्यदेश० ना० पु० दुर्लभ स्थान, बीचका देश अर्थात् हिमालय और विन्ध्य और प्रयाग और कुरुवन के मध्यका देश, अवध आदि ।
मध्यभाग० ना० पु० मध्यस्था ।
मध्यम० गु० न भला न बुरा, समासम, धीरे, न्यूनाधिक रहित, रागका स्वर विशेष ।
मध्यमपुरुष० ना० पु० मध्यमार्गीनर, सामनेवाला, मुखातिब, हाजिर ।
मध्यमा० ना० स्त्री० अनामिका और तर्जनी के बीचकी अंगुली ।
मध्यलोक० ना० पु० मनुष्यलोक ।
मध्यवर्ती० } ना० पु० बिचवैया, बिचवई, समानवर्ती ।
मध्यस्थ० }
मध्यस्थल० } ना० पु० कटि, कमर, बीचका स्थान ।
मध्यस्थान० }
मध्याह्न० ना० पु० ठीकदोपहर, दिनका बीच ।

मध्वा० ना० स्त्री० मदिरा, शराब ।
मन० ना० पु० चित्त, हृदय, आत्मा, ४० सेरका ।
मनकामना० ना० स्त्री० मनोयोग ।
मनघटा० ना० पु० कुआंकी जगत ।
मनचला० गु० चरफरा, अगमना, सूरमा ।
मनजात० ना० पु० कामदेव ।
मनता० ना० स्त्री० मनौता, स्वीकार ।
मनन० ना० पु० चिन्तन, मनसूबा ।
मनभावन० } गु० भाना, भला, चाहता ।
मनभावना० }
मनमथ० ना० पु० कामदेव ।
मनमारना० स० क्रि० अपनी इच्छाको रोकना ।
मनमोहन० ना० पु० सज्जन, प्यारा, श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम जो मनको मोहलेवे ।
मनस्विनी० ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री ।
मनसा० ना० स्त्री० इच्छा, अर्थ विचार, इरादह ।
मनसिज० ना० पु० कामदेव ।
मनसी० ना० स्त्री० सत्करणकी-देनेकी इच्छाकी ।
मनसेधू० ना० पु० मनुष्य ।
मनस्ताप० ना० पु० मनकी पीड़ा ।
मनहु० अव्य० मानो, जानो ।
मनहारी० गु० मन का हरण करनेहारा ।
मनाना० स० क्रि० अंगीकार करवाना, आदर देना, बहलाना, मनको भावना, कृपालकरना ।
मनावना० स० क्रि० मनाना ।
मनि० ना० स्त्री० मणि ।
मनिका० ना० स्त्री० मणिका, दाना, गुरिया ।
मनिहार० ना० पु० चूड़ीवाला, जाति विशेष ।
मनिहारी० ना० स्त्री० चूड़ी बेचनेवाली ।
मनीषा० ना० स्त्री० बुद्धि ।
मनीषी० ना० गु० बुद्धिमान, चतुर ।
मनु० ना० पु० स्वायंभुव आदि १४ जो प्रत्येक कल्प में होते हैं, स्वायम्भुवमनु विरचित स्मृति, ब्रह्मा, ब्रह्मा का पुत्र, प्रथम मनुष्य ।
मनुआ० ना० पु० मन, विचार, ना० स्त्री० रुई विशेष ।

मनुजा० ना० पु० मनुष्य, आदमी।
मनुजाद० ना० पु० असुर, दैत्य, राक्षस।
मनुष्य० ना० पु० मानव, मर्त्य, आदमी।
मनुष्यता० स्त्री० } मनुसाई, पुरुषार्थ, भल
मनुष्यत्व० पु० } मनसात।
मनुसाई० ना० स्त्री० पुरुषार्थ, मनुष्यता, भल मनसी।
मनुहार० ना० स्त्री० माइनी, [illegible] दरी।
मनो० अव्य० माना, जाना।
मनोगुप्ता० ना० स्त्री० मनसिल।
मनोज० ना० पु० कामदेव।
मनोभव० ना० पु० कामदेव।
मनोयोग० ना० पु० मनका योग।
मनोरथ० ना० पु० इच्छा, कामना, लालसा, मतलब।
मनोरम० ना० पु० ग० मनोहर, सुन्दर, [illegible]।
मनोहर० गु० मनको हरनेहारा, मनोज्ञ।
मनोज्ञ० गु० सुन्दर, सरूप, चाहता, मनभावित, मनको जाननेहारा।
मनौती० ना० स्त्री० जामिनी ना० पु० विचवई, और मध्यस्थ।
मन्त्र० ना० पु० दीक्षा, रक्षीवरथी, सम्का, एकान्त का गुप्त उपदेश, सम्मति, सलाह।
मन्त्रणा० ना० स्त्री० परामर्श, विचार, आदेश।
मन्त्रराज० ना० पु० तारकादि मन्त्र।
मन्त्री० ना० पु० जिसके साथ परामर्श की जाय, वज़ीर, सम्मति, सलाही, गु० मन्त्रजानने हारा।
मन्थन० ना० पु० मथन।
मन्थरा० ना० स्त्री० केकयी की दासी विशेष।
मन्थित० गु० दलल, मठा, मथित।
मन्थी० ना० पु० चन्द्रमा, कामदेव, नाला, स्व भांनु अर्थात् राहु, शनैश्चर।
मन्द० गु० अल्प, धीरा, शिथिल, बुरा, दुष्ट, नीच, अभागी, धीरा, मलान, ना० पु० पाप, शनैश्चर, अज्ञान।
मन्दतर० गु० अतिमन्द, अतिनीच।
मन्दर० ना० पु० पर्वत विशेष।
मन्दरा० ना० पु० गचमीना, गु० नाग, ठिगना।
मन्दराचल० ना० पु० मन्दर।
मन्दराज० ना० पु० समुद्र के तट पर नगर विशेष।
मन्दा० गु० धीरा, कोमल, नम्र, सस्ता, हलका।
मन्दाकिनी० ना० स्त्री० आकाशगंगा, स्वर्गंगा।
मन्दार० ना० पु० कमल, मदार, कल्पवृक्ष।
मन्दिर० ना० पु० घर, देवालय।
मन्दिरा० ना० पु० मजीरा।
मन्दोदरी० ना० स्त्री० रावण की स्त्री, पंचकन्या।
मन्मथ० ना० पु० कामदेव।
मन्वन्तर० ना० पु० एक मनुका काल, अर्थात् इकहत्तरि युगका परिमाण वा दो मनुओं के मध्य का काल।
मपान० ना० पु० नाप, परिमाण।
मपाना० स० क्रि० माप करवाना, नपाना।
मफेनक० ना० पु० अपगुन, अकाम।
मम० स० मेरा, मैं, ना० स्त्री० ममता, इर्षा।
ममता० स्त्री० } घमण्ड, दम्भ, मनमौज, माया,
ममत्व० पु० } मोह, दया, प्यार।
ममाखी० ना० स्त्री० मधुमक्खी।
ममियासास० ना० स्त्री० पति वा पत्नी की ममानी।
ममियाससुर० ना० पु० पति वा पत्नी का मामू।
ममेरा० गु० मामूका० यथा, मामूका पुत्र।
ममेराभाई० ना० पु० मामूका पुत्र।
मर्मोड़० ना० पु० मेरोरोर, मेरासाथी।
मय० ना० पु० कार्य, प्रधान, रूप, दैत्य विशेष, [illegible] गु० बहुत।
मयकल० ना० पु० पर्वत विशेष।

मयंक० ना० पु० चन्द्रमा।
मयन० ना० पु० कामदेव।
मयना० ना० स्त्री० पार्वती की माता, मैना।
मयसुता० ना० स्त्री० मन्दोदरी।
मया० ना० स्त्री० माया, दया।
मयूर० ना० पु० मोर, पक्षी विशेष हंस।
मयूरक० ना० पु० ऊंगा।
मयूरग्रीवक० ना० पु० नीलाथोथा, तूतिया।
मयूरचोख० ना० पु० स्योना।
मयूख० ना० पु० किरण।
मरक० ना० पु० सर्वव्यापक रोग महामारी।
मरकत० ना० पु० नीलम, नीलमणि, प्रवाल।
मरकन्हा० } गु० मारनेहारा।
मरकहा० }
मरगजी० ना० पु० मुरझाया हुआ मरगशब्द फ़ारसीका अर्थात् मौत और जो जीव अर्थात् मुआ जीव यह शब्द सतसई में है।
मरघट० ना० पु० मृतक के जलाने का स्थान।
मरजाना० अ० क्रि० मरना।
मरजिया० ना० पु० समुद्र से मोती निकालने हारेका नाम।
मरण० ना० पु० प्राणवियोग, मृत्यु।
मरदनिया० ना० पु० मर्दनी।
मरना० अ० क्रि० प्राण निकलना।
मरपच० अ० गु० सरा, गन्दा, जीर्ण।
मरपचना० अ० क्रि० दुःख वा शोकका भोग करना, अत्यन्त उद्यम करना, बहुत परिश्रम अर्थात् मिहनत करना।
मरभूखा० गु० उपासा, लघा, खाऊ, बड़पेटा।
मरमर० ना० पु० पाषाण विशेष, बिल्लौर।
मरमराना० स० क्रि० चरचराना, यथा नई जूती बालती है।
मरवैया० ना० गु० मरनेहारा वा मारनेहारा, मृतक।
मरहट्टा० ना० पु० छन्द विशेष, जाति विशेष।
मरा० गु० मरगया, मृतक।
मराल० ना० पु० हंस, बतक।
मराली० ना० स्त्री० मराल की स्त्री, बाचाल।
मरिच० ना० स्त्री० मिरच, कालीमिरच।
मरीचि० ना० स्त्री० किरण, लहरी, ना० पु० मुनि विशेष।
मरीचिका० ना० स्त्री० मृगतृष्णा, शराब।
मरु० ना० पु० रेता, बालू।
मरुआ० ना० पु० पाधा विशेष, जिसमें सुगन्धि होती है।
मरुक० ना० पु० मरुआ।
मरुप्रिय० ना० पु० ऊंट।
मरुद्रवा० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी, जवासा।
मरुभूमि० ना० स्त्री० मारवाड़कीधरती, रेतली।
मरुव० ना० पु० मरुवा।
मरुत्० ना० पु० वायु, पवन।
मरोड़० ना० स्त्री० मरोड़।
मरोड़ना० स० क्रि० मरोड़ना।
मरोड़फली० ना० स्त्री० पाधाविशेष की फली।
मरोड़ा० ना० पु० मरोड़ा।
मरोड़ी० ना० स्त्री० मरोड़ी, ऐंठन, मुरड़ी।
मरोर० ना० स्त्री० मरोड़।
मरोरना० स० क्रि० मरोड़ना।
मरोह० ना० स्त्री० छोह, प्यार, माया, मखम नसाई।
मरोही० गु० छोही, मायावंत, दयाशील।
मर्कट० ना० पु० वानर, कपि।
मर्कटी० ना० स्त्री० कौंचबीज, जाल, मकड़ी, वानरी, गणित मर्कटी जो पिंगल में है।
मर्त्य० ना० पु० मनुष्य।
मर्त्तलोक० } ना० पु० मनुष्यलोक।
मर्त्यलोक० }
मर्दक० ना० पु० पवार पोधा, गु० मलनेहारा।
मर्दन० ना० पु० शरीर का मलना, रगड़ना, पिसाव, नाशन।
मर्दना० स० क्रि० मलना, नाशना, मिटाना।

मर्दनफलन० ना० पु० मैनफल।
मर्दनी० गु० मलनेहारा।
मर्दित० गु० जो मलागया, मारागया।
मर्म० ना० पु० भेद, समाचार, ज्ञान, चोर, कठार इत्यादि अंग।
मर्मर० ना० पु० एक पत्थर का नामहै यह शब्द फारसी का है।
मर्मस्थान० ना० पु० शरीरके जिस स्थान का घाव सघातिक है, भेदका स्थान।
मर्मज्ञ० ना० पु० जो मर्म को जाने, ज्ञानी।
मर्मी० गु० भेदु, भेदज्ञाता, मर्मज्ञ।
मर्य्याद० } ना० स्त्री० महत, पति, सामान,
मर्य्यादा० } सीमा, हद, वादा, प्रमाण।
मल० ना० पु० मल० विष्ठा, स्त्री की रज, पाप।
मलक० ना० पु० पानी, आवला, जो पिनाना।
मलकना० अ० क्रि० चहारने समान चलना,जो घिनाना या उबकाना।
मलग० ना० पु० पक्षाविशेष।
मलगी० ना० पु० लोन बनानेहारा।
मलत० ना० पु० रुपया वा पैसा जो घिसगया हो, सिलपट।
मलथ० ना० स्त्री० कदूवरि।
मलन० ना० पु० नाश, लोर, मलने का काम।
मलना० स० क्रि० मर्दना, घिसना, माँजना।
मलया० ना० पु० चूड़ा, मैल, बर्तन विशेष।
मलमल० ना० पु० कपड़ा विशेष।
मलमास० ना० पु० लौंद, अधिमास।
मलमेट० ना० पु० उजाड़, सत्यानाश, होचुका जैसे रे गाद।
मलय० ना० पु० पर्वतविशेष, जो दक्षिणमें है।
मलयज० ना० पु० चन्दन।
मलयगिरि० ना० पु० पर्वतविशेष, जहां चन्दन अधिकतासे उपजताहै।
मलया० ना० स्त्री० पद्माक, ना० पु० मलय।
मलयागिरि० ना० पु० चन्दन का रंग।
मलयुत० गु० मैला।
मलवाई० ना० स्त्री० मलवानेका पैसा वा काम।
मलविका० ना० स्त्री० कालानिशोत।
मलवैया० ना० पु० मलनेहारा।
मलाई० ना० स्त्री० साढ़ी, बालाई, मलने का काम वा पैसा।
मलान० ना० पु० दुःख, उदास, दुःखी।
मलाना० स० क्रि० मर्दन कराना, घिसाना, मिलाना।
मलार० ना० पु० रागविशेष।
मलिच्छ० गु० म्लेच्छ।
मलिन० गु० मलीन, मैला, उदास, ना० स्त्री० कालीमिरच।
मलिनता० ना० स्त्री० मालिन्य, अपवित्रता, मैलापन।
मलिनमुख० गु० उदास, कठोर, लिहाड़ा, दुष्ट।
मलिनी० ना० स्त्री० पुष्पवती, रजस्वला।
मलिन्द० ना० पु० भ्रमर, भौंरा।
मलिया० ना० स्त्री० काष्ठ या नारियल वा मिट्टी का पात्र, जिसमें तेल रखते हैं, हँडिया।
मली० गु० मैला।
मलीन० गु० मैला, अपवित्र धूधला, उदास, दुःखित, व्याकुल।
मलीनता० ना० स्त्री० मलिनता।
मलेपञ्ञ० गु० घोड़ा जिसकी आयुदशावर्ष से अधिक हुई।
मलेच्छ० गु० म्लेच्छ।
मल्ल० ना० पु० भालू, जो बाहुयुद्ध में निपुण, योद्धा, पहलवान।
मल्लयुद्ध० ना० पु० बाहुयुद्ध,कुश्ती।
मल्लार० ना० पु० मलार।
मल्लिक० ना० पु० पक्षि विशेष।
मल्लिका० ना० स्त्री० मालती, चमेली, पुष्प विशेष।
मल्लूर० ना० पु० बेलु, बिल्व।
मवास० ना० पु० शरण पाना, आसरा।

मशक॰ ना॰ पु॰ मसक, चमड़ाऋपी जलपात्र ।
मशहरी॰ ना॰ स्त्री॰ मच्छड़ों के निवारणार्थ जो आवरण पलंग के ऊपर रहेताहै ।
मसृणा॰ ना॰ स्त्री॰ अलसी ।
मषी॰ ना॰ स्त्री॰ स्याही, रोशनाई ।
मष्ट॰ गु॰ चुप, मौन, ना॰ स्त्री॰ मौनी ।
मष्टता॰ ना॰ स्त्री॰ चुपकी, मौनता ।
मसक॰ ना॰ पु॰ मच्छड़, बिलार, मसा ।
मसकना॰ अ॰ क्रि॰ फटना, चिरना, धसना, बोलना ।
मसकाना॰ स॰ क्रि॰ फाड़ना, चीरना, तोड़ना, घुसाना ।
मसकी॰ ना॰ स्त्री॰ दराई, फसी, बोली ।
मसमसाना॰ अ॰ क्रि॰ किसू के डरसे मनकी बात छुपाना, घुटाहोजाना ।
मसलना॰ अ॰ क्रि॰ घुमराना, मांजना और पीसना ।
मसहरी॰ ना॰ स्त्री॰ मशहरी ।
मस॰ ना॰ पु॰ मेच्छक, इसा, शरीर में काला ऊंचा चिह्न विशेष ।
मसान॰ ना॰ पु॰ श्मशान, मरघट ।
मसानिया॰ ना॰ पु॰ जो मृतक की वस्तु लेय ।
मसि॰ ना॰ स्त्री॰ स्याही, रोशनाई ।
मसिपात्र॰ ना॰ पु॰ दवायत, दवात ।
मसिबिन्दुक॰ ना॰ पु॰ मनला, काजलका टीका जो स्त्रिया बालक के माथे में लगाती हैं ।
मसी॰ ना॰ स्त्री॰ मसि, रात, बोली ।
मसीन॰ } ना॰ पु॰ दमिश्क ।
मसीना॰ }
मसूढ़ा॰ ना॰ पु॰ दांतों के ऊपर का मांस ।
मसूर॰ ना॰ पु॰ अन्न विशेष ।
मसूरविदला॰ ना॰ स्त्री॰ कालानिसोत ।
मसूरिया॰ ना॰ स्त्री॰ माता विशेष, शीतला विशेष ।
मसें॰ ना॰ पु॰ छोटी २ मूछें जो नई जवानी में निकलती हैं ।
मसोसना॰ स॰ क्रि॰ मरोड़ना, निचोड़ना ।
मसोसा॰ गु॰ मरोड़ा, निचोड़ा, ना॰ पु॰ दुःख, व्यथा, पछतावा ।
मस्तक॰ ना॰ पु॰ माथा, शिर, खोपड़ी ।
मस्तूल॰ ना॰ पु॰ खम्भ जो नाव के बीचमें पाल चढ़ाने के लिये गाड़ते हैं ।
मस्या॰ ना॰ स्त्री॰ ठुड्डी, ठुड्ढी ।
मस्याधार॰ ना॰ पु॰ दवायत, मसी रखने का पात्र ।
मस्सा॰ ना॰ पु॰ मसा ।
मह॰ अव्य॰ मध्य, में, बीच ।
महंगा॰ गु॰ बड़ेमोलका, काल, दुर्भिक्ष ।
महंगी॰ ना॰ स्त्री॰ काल, दुर्भिक्ष, कहत ।
महक॰ ना॰ स्त्री॰ सुगन्धि, सुवास ।
महकना॰ अ॰ क्रि॰ सुवास निकलना या उठना
महकाना॰ स॰ क्रि॰ बासना, सोंधाना ।
महकीला॰ गु॰ सुगन्धित, सोंधा ।
महत्॰ गु॰ बड़ा, बेजरी, श्रेष्ठ, ना॰ स्त्री॰ बड़ाई, मर्य्यादा, मान ।
महत्॰ ना॰ पु॰ महतो ।
महति॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ी बड़ाई, गु॰ बड़ी ।
महतिया॰ ना॰ पु॰ महतो ।
महतो॰ } ना॰ पु॰ जो मनुष्य गाव में प्रधान
महतो॰ } होता है, मुखरम, महतिया ।
महत्फला॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ीतुरई ।
महत्त्व॰ ना॰ पु॰ श्रेष्ठता, बड़ाई, बड़प्पन ।
महद्भाग्य॰ ना॰ पु॰ बड़ाभाग्य ।
महना॰ स॰ क्रि॰ मथना ।
महन्त॰ ना॰ पु॰ सन्तों में का प्रधान ।
महन्ताई॰ ना॰ स्त्री॰ महन्तका काम ।
महर॰ ना॰ पु॰ प्रधान या उसकी जोरू, गाड़ का उपनाम ।
महरा॰ ना॰ पु॰ कहार, भोई ।

महराई० ना० स्त्री० कहरई, शोपों का राग विशेष।
महरि० ना० स्त्री० स्त्री०, पक्षीविशेष,महरकोल्ही।
महर्लोक० ना० पु० स्वर्ग विशेष।
महर्षि० ना० पु० महाऋषि, महामुनि।
महा० गु० बड़ा, कुलीन, निपट, अति।
महाउन्नत० ना० पु० कदमवृक्ष, गु० महाऊंचा, महोन्नत।
महाकन्द० ना० पु० लहसुन।
महाकर्त्ता० गु० बड़ाकर्त्ता, निरीक्षकर्त्ता।
महाकाल० ना० पु० श्रीशिवजी का नाम, मूर्त्ति विशेष, जो उज्जैन में है।
महाकुम्भी० ना० पु० कायफल।
महाखात० ना० पु० समुद्रका जल जो चौड़े मुख से स्थल में लगा है।
महाघोष० ना० पु० कर्कशासिंही।
महाजन० ना० पु० उत्तमलोग, साहूकार, सेठ।
महाजनी० ना० स्त्री० महाजन का काम।
महाजम्बू० ना० पु० जामुन, फरेंद।
महाजाल० ना० पु० दानर।
महातम० ना० पु० माहात्म्य, बड़ाअंधकार।
महातर० ना० पु० सेहुँड।
महातल० ना० पु० पातालविशेष।
महातीर्थ० ना० पु० श्रेष्ठतीर्थ।
महातुम्बी० ना० स्त्री० बड़ी तोमड़ी।
महात्मा० गु० महाशय, अतिशिष्ट।
महात्म्य० ना० पु० महात्म्य, यश, बड़ाई।
महात्यागी० गु० संसार को झूठ जाननेहारा।
महादेव० ना० पु० देवदेव, श्रीशिवजी।
महाद्रुम० ना० पु० महुआ, ताड़वृक्ष।
महान्० गु० बहुतबड़ा।
महानन्दा० ना० स्त्री० जो श्रीगंगा नाम मिलाई।
महानवमी ना० स्त्री० आश्विनशुद्धनवमी।
महानाग० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।

महानिद्रा० ना० स्त्री० बड़ी नींद, मृत्यु।
महापद्मक० ना० पु० सर्प विशेष।
महापातक० ना० पु० ब्रह्महत्यादि, बड़ापाप।
महापातकी० गु० बड़ापापी, हत्यारा, जो ब्रह्म-हत्या वा गोहत्या करे।
महापुरुष० ना० पु० साधु मनुष्य, सिद्धपरमात्मा, श्रीनारायण, बड़ी दनावर।
महाप्रतापी० गु० बड़ा तेजस्वी, ऐश्वर्यवान्।
महाप्रलय० ना० पु० जगत् का नाश जो प्रति कल्पान्त में होता है वा जिसमें, ब्रह्मा सृष्टिसमेत नशाता है।
महाफल० ना० पु० नारियल।
महाफला० ना० स्त्री० लौका, कुम्हड़ा।
महाबिल० ना० पु० आकाश।
महाभारत० ना० पु० कौरव और पाण्डव का युद्ध वा उसके वृत्तान्त का एकपुराण।
महाभोगी० गु० बड़ा भोगी, निरिच्छाभोगी।
महामणि० ना० पु० जहरमुहरा।
महामाया० ना० स्त्री० भगवती, जगज्जननी।
महामुण्डी० ना० स्त्री० पौधाविशेष।
महामेदा० ना० स्त्री० मेदा, औषधि।
महामोद० ना० पु० अत्यन्तप्रसन्नता, मदभूल।
महारजत० ना० पु० सुवर्ण, कांचन।
महारस० ना० पु० ऊख, गन्ना।
महाराज० ना० पु० राजाधिराज, श्रेष्ठराजा, साधारण बड़ों का सम्बोधन।
महारानी० ना० स्त्री० महाराजकी रानी।
महाराष्ट्र० ना० पु० देशविशेष, जातिविशेष।
महावट० ना० पु० मेघ जो माघ पौस में बरसता है, सहोटी द्वार आदि में लगाते हैं।
महावन० ना० पु० हाथीवान, फीलवान।
महावर० ना० पु० रंग लाख का, लाली।
महावला० ना० स्त्री० सहदेवी बूटी।
महावात० ना० पु० आंधी, बड़ावात।
महाविद्या० ना० स्त्री० गोंद।

महावृक्ष० ना० पु० भूसली।
महादाय० ना० पु० महात्मा, दाता।
महाशिरा० ना० स्त्री० मछली।
महाश्यामा० ना० स्त्री० बिधारा।
महाश्वेता० ना० स्त्री० बिदारीकन्द।
महाष्टमी० ना० स्त्री० आश्विनशुक्लाष्टमी।
महासागर० ना० पु० समुद्र।
महासिद्धि० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति।
महास्कन्धा० ना० स्त्री० जामुन, फलेंद।
महि० ना० स्त्री० पृथ्वी।
महिदेव० ना० पु० ब्राह्मण।
महिपाल० ना० पु० राजा, बादशाह।
महिमा० ना० स्त्री० महत्त्व, बड़ाई, श्रेष्ठता। नेकनामी, सिद्धिविशेष।
महिरुह० ना० पु० वृक्ष, वृक्षादि।
महिला० ना० स्त्री० नारि, स्त्री, औरत।
महिष० ना० पु० भैंसा, दैत्यविशेष।
महिषध्वज० ना० पु० यमराज।
महिषासुर० ना० पु० दैत्यविशेष।
महिषाक्ष० ना० पु० गुग्गुल, गूगल।
महिषी० ना० स्त्री० भैंसी, पटरानी, राजरानी।
महिषेश० ना० पु० यमराज।
मही० न० स्त्री० पृथ्वी, ना० पु० दही, मट्ठा।
महीधर० ना० पु० पर्वत, शेषादि, राजा, गौ, दिग्गज, पत्थर।
महीना० ना० पु० मास, मासिक, दरमाहा।
महीन्द्र० } ना० पु० राजा, पृथ्वीपति।
महीप० }
महीपति० ना० पु० राजा, पृथ्वीपति।
महीपते० क्रि० प्राप्तहोताहै, जाता है।
महीरुह० ना० पु० महिरुह।
महीश० ना० पु० राजा, बादशाह।
महीश्वर० } ना० पु० ब्राह्मण।
महीसुर० }
महुआ० ना० पु० वृक्षविशेष।
महेन्द्र० ना० पु० राजेन्द्र, प्रधान राजा।
महेर० ना० पु० } भोजनविशेष।
महेरी० ना० स्त्री० }
महेला० ना० पु० घड़के लिये पकायाहुआ अदौवा।
महेश० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
महेश्वरी० ना० स्त्री० पार्वती, पीतल धातु।
महेश्वर्य्य० ना० पु० बड़ा ऐश्वर्य्य।
महोप० } ना० पु० पक्षीविशेष।
महोपा० }
महोटिका० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।
महोत्सव० ना० पु० बड़ा उत्सव, अत्यानन्द।
महोदर० ना० पु० निशाचर विशेष, बड़ापेट।
महोसा० ना० पु० जो तरुणावस्था में मुँह में मसूड़े निकलते हैं।
महोक्ष० ना० पु० बड़ा बैल, मूर्ख।
महौजसी० ना० स्त्री० तेज, बल।
महौभयान्धरा० ना० स्त्री० मेदा औषधि।
महौषध० ना० पु० जो औषधि शीघ्र रोगहरे, लहसुन, अतीस।
महौषधि० ना० स्त्री० सोंठि, दूबौषध।
मह्यो० ना० पु० मही, छाछ, मट्ठा।
मल्लिका० ना० स्त्री० मैंखली, मास्बी, माधवी।
मा० सू० स्त्री० लक्ष्मी, माता, सूर्य, शुभकर्त्ता, हर्षक्री।
माई० ना० स्त्री० माता।
माई० ना० स्त्री० भवानी, औषधी विशेष।
मां० अ० ना० में भीतर, अतर।
मांग० ना० स्त्री० सिरके बालाकेबीचकी लकीर जो कन्या वचनदत्त हुई।
मांगचिरुनी० ना० पु० पक्षीविशेष।
मांगलेना० स० क्रि० किसी के लिये उधारलेना।
मांगना० स० क्रि० चाहना, तलबकरना।
मांगलेना० स० क्रि० उधारलेना, सेंतलेना।
मांगी० ना० स्त्री० दुपहर, सेंत, वचनदत्त।
मांज० ना० पु० रादः फीट।
मांजन० स० क्रि० मेलना, उज्वल करना।

मांझ० ना० पु० रागिनी विशेष, अव्य० मध्य, बीच।
मांझत० ना० स्त्री० ठाठ।
मांझा० ना० पु० पतंगकी डोर में शीशा और भातका लगाना, जड़वट।
मांझी० ना० पु० नाविक, कर्णधार, बिचवानी, मध्यवर्ती।
मांड० ना० पु० पीच, माड़ी।
मांडना० स० क्रि० मलना, मींजना, सानना, करना, कलपचढ़ाना।
मांडा० ना० पु० फलीविशेष, रोगविशेष।
मांडी० ना० स्त्री० कलपविशेष जो चावलों को पीसके वा पकाके बनाते हैं।
मांढ़ा० ना० पु० मढ़ा।
मांद० ना० पु० गुफा, मार, गोबर।
मांस० ना० पु० मास, गोश्त, कलिया।
मांसभक्षी० मांसाद० मांसाहारी० } ना० पु० गु० मांस खानहारा।
मांह० मांहि० } अव्य० मध्य, में अन्तर, भीतर।
माकन्द० ना० पु० आंबा वृक्ष वा फल।
माचण्डा० गु० मूर्ख, निर्बुद्धि, उल्लू।
माखन० ना० पु० मक्खन, नैनू, दही, मसरूर।
माखी० ना० स्त्री० मक्खी, शहद।
मागध० ना० पु० भाट, चड़ैत, वंशावली कहनेहारा पुरोगा, प्रशंसक।
मागधी० ना० स्त्री० मागधीक दू, सोंठ।
मागजे० ना० स्त्री० पीपली सोंठ।
माघ० ना० पु० ग्यारहवां महीना, मासविशेष।
माघी० ना० स्त्री० जो माघ में उत्पन्न हो।
माचा० ना० पु० मच, पलंग।
माचिका० ना० स्त्री० मोई दता।
मारी० ना० स्त्री० हैजा रोगजा।
माछर० ना० पु० मच्छड़, मशा, मशक।
माछी० ना० स्त्री० मक्खी।

माजाई० ना० पु० बड़ा वा बेटी जो एकमासे उपजे हों।
माजू० ना० पु० माजूफल।
माझ० ना० पु० माझ।
माझधार० ना० पु० बीचधारा।
माट० ना० पु० बड़ा मटका।
माटी० ना० स्त्री० मृत्तिका, मिट्टी।
माठा० ना० पु० मट्ठा, तक्र, मट्ठा।
माठू० ना० पु० ढोल।
माड़ना० स० क्रि० माड़ना।
माड़नि० ना० स्त्री० माड़।
माड़िया० गु० पतला, दुर्बल।
माड़ो० ना० पु० मण्डप, मड़वा।
माणवक० ना० पु० यज्ञोपवीत के योग्य जो बालक हो वा जिसकी अवस्था सोलह वर्ष से कम हो।
माणिक० माणिक्य० } ना० पु० देश विशेष, लालमणि, हीरा, लाल, रत्न विशेष।
मात० ना० स्त्री० माता, माता, मतवालापन।
मातंग० ना० पु० हाथी।
मातना० अ० क्रि० मतवाला होना।
मातलि० ना० पु० इन्द्रका रथवान्।
माता० ना० स्त्री० जननी, शीतला, पोडुलिरि, गु० मत्त, मस्त।
मातामह० ना० पु० नाना, माता का बाप।
मातामही० ना० स्त्री० नानी, माताकी माता।
मातुल० ना० पु० मामा, माता का भाई।
मातुलानी० ना० स्त्री० ममानी, मामी।
मातुली० ना० स्त्री० ममानी।
मातुलुंग० ना० पु० बिजौरा।
मातृ० ना० स्त्री० माता, महतारी।
मात्र० गु० सब, किञ्चित्, अव्य० हि, केवल।
मात्रा० ना० स्त्री० अक्षर के ऊपरकी रेखा, स्वर, परिमाण।
मात्सर्य० ना० पु० डाह, द्रोह, जलन, हसद।
माथ० ना० पु० मस्तक, ललाट, गल्ही।

माधीलेना० स० क्रि० एकसा बेनाना।
माथुर० ना० पु० मथुराका वासी, ब्राह्मण और कायस्थकी जाति विशेष।
मादक० गु० मत्त करनेहारी वस्तु, नशा बढ़ाने वाली चीज।
मादकता० ना० स्त्री० नशा अमल हित नित विचारहीन मस्ती, बहाली।
माद्री० ना० स्त्री० सहदेव और नकुलकी माता।
माधव० ना० पु० वैशाखमास, मधूपक्ष, श्रीरामचन्द्रजी का एक नाम।
माधवी० ना० स्त्री० वाराहीकन्द, लता और लताविशेष।
माधुरी० ना० स्त्री० मीठी सुन्दर।
माधुर्य्य० ना० पु० सुन्दरता, मिठास।
मान्त्रा० ना० स्त्री० मदुयाकी मात्रा।
मान० ना० पु० नामपति, मर्य्यादा, घमण्ड, अहङ्कार परिमाण, अभिमान नाज।
मानकच्चू० ना० पु० कन्दविशेष जो नगालों में होता है।
मानता० ना० स्त्री० मत्र, प्रतिज्ञा, पूजा, दान बढ़ाई।
मानदा० ना० स्त्री० मानकी दाता, चन्द्रमाकी एक कलाका नाम।
मानव० ना० पु० मनुष्य, आदमी।
मानस० ना० पु० मन, मनसा, मनुष्य, मान सरोवर।
मानसमूल० ना० पु० सरयूनद।
मानसिक० गु० मनकी आशा, मनोवृत्ति, मनसा।
मानहु० अव्य० मानो।
मानाम न० ना० पु० मान और अपमान।
मानिक० ना० पु० माणिक्य।
मानिकजोड़० ना० पु० पक्षीविशेष।
मानिनी० ना० स्त्री० अभिमानवती स्त्री।
मानी० गु० मर्य्यादिक, अभिमानी।
मानुष० } मानुष्य० } ना० पु० मनुष्य, आदमी।
मानो० अव्य० जानो।
मान्धाता० ना० पु० राजाविशेष।
मानना० स० क्रि० प्रतिरक्षना, पूजना महत्वकरना, अङ्गीकार करना, बनालाना।
मान्य० ना० गु० जो पूजने वा मानने के योग्य, पूज्य।
मान्यता० ना० स्त्री० पूजा, बड़ाई।
माप० ना० पु० नाप, पैमाइश।
मापक० गु० नापनेवाला, अमीन।
मापना० स० क्रि० नापना, पैमाइश करना।
माबाप० ना० पु० माता पिता।
मामा० ना० पु० मातुल, मामू।
मामी० ना० स्त्री० ममानी माई, मामाकी जोरू।
मामीलेना० स० क्रि० पक्षकरना, स्वीकारना।
मामू० ना० पु० मामा सर्प।
माया० ना० स्त्री० कृपा, माह, दया, करुणा, भ्रम, छल, धाखा, सम्पत्ति धन भूल, योगमाया, आत्माकी निगुण इन्द्रजालविद्या।
मायाकृत० ना० पु० सांख्य इन्द्रजाली गु० जो माया से बनाया गया।
मायापति० ना० पु० जो माया का स्वामी होय विशेष परमात्मा।
मायावी० गु० छली कपटी, राक्षसविशेष।
मायिक० ना० पु० बाजीगर, ऐन्द्रजालिक, ठगहा।
मार० ना० पु० कामदेव, विष, विघ्न, धतूरा, ना० स्त्री० प्रहार धप्पा, लड़ाई।
मारक० ना० पु० मारनेहारा।
मारग० ना० पु० मार्ग।
मारडालना० स० क्रि० वधकरना।
मारण० ना० पु० वध, हत।
मारना० स० क्रि० पीटना, कूटना, ताड़न, करना वधकरना, बिगाड़ना, ठगना, चरि

याना, डाकना, रोकना, थामना, मर्दनकरना।
मारवा० ना० पु० रागविशेष।
मारवाड़० ना० पु० देश विशेष।
मारवाड़ी० ना० पु० मारवाड़देशका वासी वा उस देशकी वस्तु।
मारा० गु० वधहुआ, जो डूबगया, ना० पु० वारा, शिकार।
माराजाना० अ० क्रि० वधजाना, डूबजाना, था धाहोना, वधहोना।
मारी० ना० स्त्री० मरक, महामारी, वबा।
मारीच० ना० पु० कक्कोल, दैत्यविशेष।
मारीचपत्रक० ना० पु० शालवृक्ष।
मारुत० ना० पु० वायु, पवन।
मारुतसुत० } ना० पु० श्रीहनुमान्जी, भीमसेन।
मारुति० }
मारू० ना० पु० वैगनविशेष, रागविशेष, डंका, मारनेहारा, मरुदेश।
मारे० अव्य० से, कारण, निमित्त।
मार्कण्डी० ना० स्त्री० मवली।
मार्कण्डेय० ना० पु० चालीन, मुनि विशेष।
मार्कव० ना० पु० भृंगराज, भंगरा, यीरा।
मार्ग० ना० पु० सड़क, बाट, राह, अगहन, अनुन।
मार्गण० ना० पु० बाण, तीर।
मार्गशीर्ष० ना० पु० अगहन।
मार्गित० गु० मार्गदेखता, बाटहेरता।
मार्जन० ना० पु० फर्श करने का काम, सफाई, मांजना।
मार्जार० ना० पु० बिलाव, बिलौटा।
मार्तण्ड० ना० पु० सूर्य।
मार्तण्डमण्डन० ना० पु० सूर्यमण्डल, सीसका मार्गविशेष।
माल० ना० पु० मल्ल, माला, समूह।
मालकंगनी० } ना० स्त्री० औषधि, पौधा
मालकाकुनी० } विशेष।
मालकोश० } ना० पु० रागविशेष।
मालकौस० }
मालती० ना० स्त्री० दो तीन जाति के पुष्प, पौधाविशेष।
मालतीजात० ना० पु० सुहागा।
मालतीपत्रिका० ना० स्त्री० जावित्री।
मालद्वीप० ना० पु० सिंहलद्वीप के समीप द्वीप विशेष।
मालपूआ० } ना० पु० पकवानविशेष।
मालपूप० }
मालव० } ना० पु० देश विशेष, मालवा।
मालवा० }
माला० ना० स्त्री० पुष्पादिका हार, पांती, पंक्ति, कंठी, तसवीह, रुद्राक्षादिकी।
मालाकार० ना० पु० माली।
मालिन्० ना० स्त्री० मालीकी स्त्री।
मालिनी० ना० स्त्री० छन्दविशेष।
मालिन्य० ना० पु० मलिनता।
माली० ना० पु० बागसींचनेहारा वा लगाने हारा, जाति विशेष मालाधारी।
मालूर० ना० पु० बिल्व, बेल।
माल्य० ना० पु० फूलकी माला।
माल्यवान्० ना० पु० राक्षस विशेष।
मावस० ना० स्त्री० अमावस्या, कृष्णपक्षकी १५।
मावा० ना० पु० आहार, मंडेकी पिलाई, खोवा, गाढ़ा दूध।
माष० ना० पु० उरद, अन्नविशेष, दैर्घ्य, दर्द।
माषमात्र० ना० पु० एकउरदभर।
माषा० ना० पु० तोलेकाबारहवांभाग, ८ रत्ती।
मास० ना० पु० महीना, सम्मति, मांस।
मासा० ना० पु० माषा।
मासान्त० ना० पु० महीने का अन्त वा अन्तकी तिथि।
मासिक० गु० महीनेका, माहवारी, देरमहीना, ना० पु० श्राद्ध जो प्रतिमास कियाजाता है।

मासिकविभाग० ना० पु० नौकरी या पैसा बांटना।
मासिकविभागी० गु० बलशी, नौकरीका रुपया बांटनेहारा।
मासी० ना० स्त्री० मासी, माताकी बहन।
माहु० ना० पु० माघ, अव्य० मध्य, बीच, से।
माहात्म० } ना० पु० सुयश, सुकीर्त्ति, बड़ाई,
माहात्म्य० } बड़प्पन, महातम।
माहीं० अव्य०, बीच,म, ना० स्त्री० माखी।
माहुर० ना० पु० विष, हलाहल।
माहू० ना० पु० कीटविशेष, कातसलाई।
मालिक० ना० स्त्री० सोनामक्खी।
मिचकारना० स० क्रि० खखालना, धनवासना, धोना।
मिचना० अ० क्रि० मूदना, लगना, बन्दहोना।
मिचोलना० स० क्रि० आखमूदना।
मिटना० अ० क्रि० बिगड़ना, मलमिटहोना।
मिटाना० स० क्रि० बिगाड़ना, मेटना, मल मट करना।
मिटिया० ना० स्त्री० मिट्टी की हडी विशेष।
मिटियाना० स० क्रि० मिट्टी से मलना।
मिटियामेट० गु० मिटगया, निश्शेषहोगया।
मिटेलना० स० क्रि० मिटाना।
मिटेला० गु० मिटायागया, मिटायाहुआ।
मिट्टी० ना० स्त्री० माटी, मृत्तिका, धूल, भूमि।
मिठरी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।
मिठाई० ना० स्त्री० मिष्ठान, मिठाव, गुड़, शक्कर।
मिठास० गु० मधुरता, मिष्टता।
मितारक० ना० स्त्री० न्यायय विशेष ना० पु० छन्द विशेष।
मिति० ना० स्त्री० अन्त, मर्यादा, वादह,प्रमाण।
मिती० ना० स्त्री० तिथि, तारीख, व्याज, सूद।
मित्र० ना० पु० हितु, बन्धु, दोस्त, सूर्य, अग्नि।
मित्राई० } ना० स्त्री० बन्धुता, हितकार, प्रीति
मित्रता० } दोस्ती, यारी।

मित्रद्रोही० ना० पु० जो मित्रके साथ वैरकरे।
मित्रपोषी० गु० मित्रका पालनेहारा, दोस्त-परवर।
मिथः० अव्य० परस्पर।
मिथिला० ना० पु० जनकपुर, तिरहुत।
मिथिलापति० } ना० पु० राजा जनक, या
मिथिलेश० } मिथिलाका राजा।
मिथुन० ना० पु० पुरुष स्त्री, युग्म, दो, और राशि तीसरी।
मिथ्या० अव्य० अयथार्थ ना० पु० झूठ, वृथा।
मिथ्यादृष्टि० ना० स्त्री० नास्तिकता, कुफर, झूठी नजर।
मिथ्यामति० ना० स्त्री० भ्रम, भूल।
मिथ्यावाद० ना० पु० झूठ, वृथा वार्त्ता।
मिथ्यावादी० गु० झूठा, वृथावादी।
मिनती० ना० स्त्री० विनती।
मिमियाना० अ० क्रि० बिल्ली या बकरीकाशब्द करना।
मिमियाहट० ना० पु०बिल्ली या बकरीकाशब्द।
मिरा० ना० स्त्री० मदिरा, शराब।
मिर्गी० ना० स्त्री० रोग विशेष।
मिर्गीहा० गु० जिसको मिर्गीका रोगहोवे।
मिर्च० ना० स्त्री० मरिचें।
मिर्चा० ना० पु० लालमिर्चें।
मिर्दंग० ना० पु० मृदंग।
मिर्दंगिया० } ना० पु० मृदंगबजानेहारा।
मिर्दंगी० }
मिर्दहा० ना० पु० चरोहा जो गांव में रहताहै।
मिलन० ना० पु० मेल, मुलाकात।
मिलनसार० गु० मिलापी, मेली।
मिलना० अ० क्रि० मिश्रित होना, भेंटना, एकट्ठा होना, बैठना, सधा, पाना।
मिलवाना० स० क्रि० मिश्रित करवाना, भेंट करवाना।
मिलाप० ना० पु० मिलाप, भेंट।
मिलाना० स० क्रि० मिश्रित करना, जोड़ना,

लगाना, सादृश करना, मिलाप कराना।
मिलाप० ना० पु० मल, बनाव, भेंट, एकता।
मिलापी० गु० मिलनसार।
मिलाव० ना० पु० मिलानी मेल।
मिलित० गु० मिला हुआ, समिश्रित।
मिलौनी० ना० स्त्री० मिलाव, मेल।
मिशि० ना० पु० सोया का साग।
मिश्र० गु० मिलाहुआ, मिलित, ब्राह्मणों में जाति विशेष, वैद्य।
मिश्रानी० ना० स्त्री० मिश्र की स्त्री मदई।
मिश्रित० गु० मिलित, मिलाहुआ।
मिश्री० ना० स्त्री० मिठाई प्रसिद्ध, मिस्री।
मिश्रेय० ना० पु० सोया का साग।
मिष० ना० पु० बनावट, पेलना, धाधल, धोखा, हीला बहाना।
मिष्ट० ना० पु० मीठा मधुर।
मिष्टा० ना० स्त्री० मिठाई, गुड़।
मिष्टान्न० } ना० पु० मिठाई मिला अन्न।
मिष्टान्न० }
मिस० ना० पु० मिष।
मिसना० अ० क्रि० पिसना।
मिसर० ना० पु० मिश्र, देश विशेष जो यूनान के दक्षिण में है।
मिसी० ना० स्त्री० मिस्सी।
मिसु० ना० पु० मिष।
मिस्सी० ना० स्त्री० दांतों का मंजन विशेष।
मिहदी० ना० स्त्री० मेंहदी।
मिहना० ना० पु० बोली ठोली।
मिहरा० ना० पु० पुरुष जो स्त्रीका वेषधरता है।
मिहरारू० } ना० स्त्री० स्त्री, औरत, नारि।
मिहरिया० }
मिहरी० }
मिहाना० अ० क्रि० सीलना, सीला होना।
मिहानी० ना० स्त्री० मथानी, मथनिया, पाटी।
मिहिर० ना० पु० सूर्य।

मीजना० स० क्रि० मानना, मलना, मसलना।
मीच० ना० स्त्री० मृत्यु, मौत।
मीचना० } स० क्रि० मूंदना, बन्द करना।
मीछना० }
मीजना० स० क्रि० मलना, रगड़ना, मसलना।
मीजू० ना० स्त्री० मग़ज़।
मीठा० गु० मधुर, धीमा, सुस्त, नामर्द, ना० पु० विष विशेष, फल विशेष।
मीठिया० } ना० स्त्री० चूमा, चूमी, मची।
मीठी० }
मीड़ना० स० क्रि० मीजना।
मीड़े० गु० मलेगये, मलेहुए।
मीणा० ना० पु० जाति विशेष।
मीत० ना० पु० मित्र, सज्जन, मीता, दोस्त।
मीतन० ना० स्त्री० सनामीस्त्री, सखी, सहेली।
मीता० ना० पु० सनाम, हमनाम।
मीन० ना० स्त्री० मछली, बारहवीं राशि, ना० पु० श्रीविष्णुजीका प्रथमावतार।
मीनकेतु० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।
मीरहा० ना० पु० बनसी, बहिरा, चरखा।
मीना० ना० पु० हिंदूजाति विशेष जो चोर होते हैं।
मीमांसक० ना० पु० मतवादी, ईश्वरवक्ता।
मीमांसा० ना० स्त्री० हिंदू का मत विशेष, शास्त्र विशेष।
मीमियाना० अ० क्रि० मिमियाना।
मीसना० स० क्रि० पीसना, मलना, मैंड़ना, मुरेरना, मुसना।
मुकताई० ना० स्त्री० छुट्टी, उद्धार।
मुकरना० स० क्रि० नकार करना, न मानना।
मुकरी० ना० स्त्री० ब्रजभाषा में छन्दविशेष।
मुकुट० ना० पु० मकुट, ताज, छत्र।
मुकुन्द० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक नाम, मुक्तिदाता।
मुकुर० ना० पु० दर्पण, आरसी।
मुकुल० ना० पु० कली जो खुलजाती है।

मुकुलित० गु० थोरी खिलीहुई कली, फूला, मोरयुत, ग्राम आदि बौर समेत।
मुकुन्दक० ना० पु० पियाज़ मसा।
मुकेल० ना० स्त्री० नकेल।
मुक्का० ना० पु० } घूसा, घुस्सा।
मुक्की० ना० स्त्री० }
मुक्त० गु० जिसने मुक्ति पाई, परिचित।
मुक्तरस्मा० ना० स्त्री० तारा।
मुक्ता० ना० पु० मोती, गु० बद्ध।
मुक्तामणि० ना० पु० मोती।
मुक्तास्फोट० ना० पु० सीपी।
मुक्ताहल० ना० पु० मोती, शब्दवर्जन के यथा, मुक्ताहल लिये चोंच लुभाय, मौनरहे की हरियशगाय।
मुक्ति० ना० स्त्री० मोक्ष, पाप से उद्धार, निस्तार, छुटकारा, निजात।
मुक्तिदाता० ना० पु० मुक्तिदेनहारा, उद्धारक।
मुख० } ना० पु० मुहड़ा मुँह।
मुखड़ा० }
मुखदूषण० ना० पु० पियाज़, पलाण्डु, प्याज़।
मुखमण्डन० ना० पु० तिलकपुष्प।
मुखर० गु० बकवादी, दुष्ट।
मुखागर० } ना० पु० मुखाग्र, ज़बानी याद।
मुखाग्र० }
मुखान० ना० पु० मुखड़ा बहुवचन।
मुखिया० } ना० पु० प्रधान, गु० पहिला, बड़ा,
मुख्य० } खास अव्वल, सरदार।
मुगदर० ना० पु० मोगरा, काठकी मोगरी विशेष जिसको फिराते हैं।
मुग्ध० गु० अज्ञानी, मूर्ख, भङ्गुरा, सुन्दर।
मुग्धा० ना० स्त्री० कुमारी या अज्ञानी नारी, गु० झूठी, मूर्ख।
मुचुकुन्द० ना० पु० राजा विशेष जो अयोध्या में हुआ है।
मुजरा० ना० पु० प्रणाम, दण्डवत्, मा[illegible]।
मुटापा० ना० पु० मोटाई, मोटापन।

मुट्ठी० ना० स्त्री० हाथ, मुक्का।
मुठभेर० गु० अति निकट, बहुतपास।
मुठिया० ना० पु० हाथभर, दस्ता, कब्ज़ा।
मुठोल्ल्या० ना० पु० मठोलिया, ठट्ठा।
मुठोली० ना० स्त्री० ठट्ठा, मखोली।
मुड़ना० अ० क्रि० ठटाहोना, बलखाना।
मुढ० ना० पु० प्रधान।
मुड़ियाना० अ० क्रि० मुड़ना।
मुण्ड० ना० पु० शिर, मस्तक छेद।
मुण्डधारी० ना० पु० श्रीमहादेवजी, अघोरी।
मुण्डन० ना० पु० बालकके पहिले बालबनाना, मुण्डने का काम।
मुण्डना० अ० क्रि० बालबनाना, ठगजाना।
मुण्डला० गु० मुण्डागया, मुण्डिया।
मुण्डवाना० स० क्रि० बालबनवाना, ठगाना।
मुण्डा० ना० पु० पतंग का शिर, छेद, गु० जो मूण्डागया वा दुबला।
मुण्डाना० स० क्रि० मुड़वाना।
मुण्डासा० ना० पु० कुछ कपड़ा जो मूड़ में बाधते हैं, मुण्डासा।
मुण्डित० गु० मुण्डा, मुण्डागया।
मुण्डितिभिक्षु० ना० स्त्री० गोरखी, मुनी।
मुण्डिय० ना० पु० शिर, एकप्रकार के साधू।
मुण्डी० ना० स्त्री० गोरखी ना० पु० मुण्डिया, साधू।
मुण्डू० ना० पु० सन्यासी, भाराई।
मुण्डेर० } ना० स्त्री० छतपर की घेरीभीत,
मुण्डेरी० } भीत का सिरा।
मुतनी० गु० बहुत मूतने हारा, रखपुतकी।
मुताल० ना० स्त्री० मूतने की इच्छा।
मुताम्ला० गु० जिसको मूतने की इच्छा है।
मुद० ना० पु० आनन्द, प्रसन्नता, खुशी।
मुदा० ना० स्त्री० मोर, मयूर।
मुदित० गु० हर्षित आनन्दित निहाल।
मुदिर० ना० पु० मेघ, बादल।

मुदिरनाथ० ना० पु० इन्द्र।
मुद्ग० ना० पु० मूग अन्न।
मुद्गर० ना० पु० मुदगर, मोंगरा।
मुद्रा० ना० स्त्री० छाप, सुवर्ण वा चांदी का रुपया वा मोहर, छल्ला, यन्त्र, अगूठी।
मुद्रांकित० गु० जो छापागया।
मुद्रिका० ना० स्त्री० मुंदरी, अगूठी।
मुद्रित० गु० बनालिखा, मुंदा जो छापा गया, लिखा जारी कियागया।
मुनमुन० ना० पु० बिल्ली के पुकारने का शब्द वा विशेष।
मुनमुनाना० अ० क्रि० बिल्ली का पुकारना, थोडा मदके सूखजाना।
मुनि० ना० पु० ऋषि, तपेश्वरी, विद्वान्।
मुनिद्रुम० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष।
मुनिपट० ना० पु० वकला, भोजपत्रादिके वस्त्र।
मुनिपति० ना० पु० मुख्य मुनि।
मुनिपद० ना० पु० शातपर्वा, मुनिका पेड़।
मुनिया० ना० स्त्री० लालपक्षी की स्त्री।
मुनिवल्लभ० ना० पु० चिरौंजी।
मुनीन्द्र०, मुनीश० ना० पु० मुनियों का प्रधान, अधीश।
मुन्था० ना० स्त्री० ज्योतिष में प्रसिद्ध।
मुन्दना० अ० क्रि० बन्दहोना, मिचना।
मुन्दरी० ना० स्त्री० अगूठी, छल्ली।
मुमाखी० ना० स्त्री० मधुमाखी।
मुमुक्षु० गु० मुक्ति खोजनेवाला।
मुमूर्षु० ना० पु० जो मनुष्य मरन पर है।
मुर० ना० पु० दैत्यविशेष।
मुरई० ना० स्त्री० मूली।
मुरकना० अ० क्रि० ऐंठना, बलपड़ना।
मुरकाना० स० क्रि० एठना, बलदेना।
मुरकी० ना० स्त्री० कान का भूषणविशेष।
मुरचंग० ना० पु० बाजाविशेष।
मुरझाना० अ० क्रि० सूखजाना, कुम्हलाना।
मुरण्डाकरना० स० क्रि० जकड़ना, बांधना।
मुरमुरा० ना० पु० चर्बणविशेष।
मुरला० गु० पोपला, अदांत, ना० पु० मोर।
मुरली० ना० स्त्री० बनसी, बंशी, बांसुरी।
मुरलीधर० ना० पु० वंशीधर, श्रीकृष्णजी।
मुरवा० ना० पु० पाव की कलाई, मोर।
मुरहा० ना० पु० लड़ाका, ऐंठा, मयूर, बिनामाता पिताका बालक।
मुरही० ना० स्त्री० ऐंठन, मरोड़।
मुराई०, मुराऊ० ना० पु० काछी, तरकारी बेचने वाला वा कोइहारा, कबाड़ी।
मुरार० ना० स्त्री० कमल की जड़।
मुरारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
मुरेला० ना० पु० मोरका बच्चा।
मुर्रा० ना० पु० पेटोखा, पेचिश, मरोड़।
मुलकना० अ० क्रि० मुसकाना।
मुलतान० ना० पु० देश वा नगरविशेष।
मुलतानी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, गु० जो मुलतानकी हो।
मुलतानीमिट्टी० ना० स्त्री० पीली मिट्टी प्रसिद्ध।
मुलहट्टी० ना० स्त्री० जेठीमधु।
मुलाई० ना० स्त्री० थरथ।
मुलाना० स० क्रि० मोलठहराना, चुकाना।
मुश्क० ना० पु० भुजदण्डकोरा।
मुष्टामुष्टि० ना० पु० घूसमघूसा।
मुष्टि० ना० स्त्री० मुट्ठी, घूसा, मुक्का।
मुष्टिक० ना० पु० घूसा, मुक्का।
मुसकाना० अ० क्रि० मुसके हंसना।
मुसकराहट० ना० स्त्री० हसी।
मुसकुराना० अ० क्रि० मुसकाना।
मुसल० ना० पु० मूसल।
मुसल्मान० ना० पु० मुहम्मदका मतावलम्बी।
मुसाना० स० क्रि० चोरी करवाना।

मुस्तवारिधर० } नां० पु० नागरमोथा।
मुस्ता० }
मुहरा० ना० पु० हरावल, अगाड़ी, दरवाजह।
मुहरी० ना० स्त्री० कोस, छोटापनाला।
मुहाना० ना० पु० नदी का वह स्थान जहाँ समुद्र से मिलती है।
मुहासा० ना० पु० फुनसी, मुँहरसा, महोसा।
मुही० सर्व० मोहिं, मुझको।
मुहुर्भाषा० ना० स्त्री० दुःखित वाक्य, पुन: कथन।
मुहुर्मुहु:० अव्य० पुन: पुन: बारबार।
मुहूर्त्त० ना० पु० दोघड़ी।
मुआ० गु० मरा।
मूंग० ना० पु० अन्नविशेष।
मूंगची० } ना० स्त्री० मूंगकी बड़ी।
मूंगरी० }
मूंगा० ना० पु० प्रवाल, विद्रुम।
मूंगिया० ना० पु० मूंगके रंगके तुल्य रंग।
मूंछ० ना० स्त्री० मुख होंठके ऊपर के बाल।
मूंज० ना० स्त्री० तृणविशेष जिसकी रस्सी बनाते हैं।
मूड़० ना० पु० मुण्ड, शिर।
मूड़ना० स० क्रि० बाल बनाना, मोड़ना, शिष्य करना, फुसलाके लूटना।
मूड़ला० गु० मुण्डली, जिसका शिर मुड़ागया।
मूड़ी० ना० स्त्री० शिर, शिरमुण्ड।
मूढ़ा० ना० पु० मोढ़ा।
मूंदना० स० क्रि० बन्दकरना, ढांकना, मीचना।
मूंदरी० ना० स्त्री० मुन्दरी, अँगूठी।
मूह० ना० पु० मुख, वदन।
मूहा० ना० पु० मुखका रोगविशेष।
मूढ़० गु० मूर्ख, जो बात चीत न करसके।
मूषा० ना० पु० मूसा, मोसा, अरोसा, हार्य।
मूसी० ना० स्त्री० मूसा, मुसी।
मूछ० ना० स्त्री० मूछ।
मूछाकड़ा० ना० पु० बड़ी मूंछ।

मूछारा० } गु० बड़ी मूछवाला।
मूछैल० }
मूठ० ना० पु० बेंट, दस्ता, कब्जा, हाथ, हाथ भर।
मूठा० ना० पु० बेंट, मुट्ठी।
मूठी० ना० स्त्री० मुट्ठा।
मूढ़० गु० मूर्ख, नादान, अहमक।
मूढ़ता० ना० स्त्री० मूर्खता, उल्लूपन, अहमकी।
मूत० ना० पु० मूत्र, लघुशंका, पेशाब, कारूरह।
मूतना० अ० क्रि० लघुशंका करना, पेशाब करना।
मूत्र० ना० पु० मूत।
मूत्रफला० ना० पु० खीरा।
मूना० अ० क्रि० मरना, देह तजना, शरीर छोड़ना।
मूनू० गु० लघु, छोटा, पोता।
मूर० ना० पु० मूल।
मूरख० गु० मूर्ख।
मूरत० ना० स्त्री० मूर्त्ति।
मूरि० ना० स्त्री० जड़ी, बूटी, पौधा।
मूरिसंजीवन० ना० स्त्री० औषधि, पौधा विशेष।
मूरी० ना० स्त्री० मूली।
मूर्ख० गु० मूढ़, अज्ञानी, बोदला।
मूर्खता० } ना० स्त्री० अज्ञानता, दुर्मति, नादानी, उल्लूपन।
मूर्खताई० }
मूर्छना० ना० स्त्री० रागभेद, मूर्च्छावन्त।
मूर्छा० ना० स्त्री० अचेत होना, बेखबर, मोह, गश।
मूर्छावन्त० गु० जो मूर्च्छित होगया।
मूर्छित० अव्य० जो मूर्च्छामें पड़ाहै, मोहित।
मूर्त्ति० ना० स्त्री० प्रतिमा, आकार, पुतली, तसवीर।
मूर्त्तिपूजक० गु० देवपूजक, चातुर्वर्ण्य लोग।
मूर्त्तिमन्त० गु० आकारवन्त, शरीरधारी।

मूर्द्धज० ना० पुं० केश, बाल।
मूर्द्धन्य० जिस अक्षरका उच्चारण मूर्द्धा से हो यथा ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष।
मूर्द्धा० ना० पु० मस्तक, तालुसे ऊपर।
मूर्द्धनि० ना० पु० तालु से कुछेक ऊपर।
मूर्वा० ना० स्त्री० मुरहरी।
मूल० ना० पु० जड़, वंश, कुल, पूंजी, असल, बिना टीका की पुस्तक, उन्नीसवां नक्षत्र, पारथ।
मूलक० ना० पु० मूली।
मूलद्वार० ना० पु० गुदा।
मूलवीर० ना० पु० पुहकरमूल।
मूलस्थिति० ना० स्त्री० पहिली स्थिति।
मूलिया० गु० जिसका मूल नक्षत्र में जन्म हुआ।
मूली० ना० स्त्री० तरकारी विशेष, मूल विशेष।
मूल्य० ना० पु० मोल।
मूसल० ना० पु० मुसल।
मूसली० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
मूष०
मूषक० } ना० पु० मूसा, चूहा।
मूषिक०
मूषकवाहन० ना० पु० श्रीगणेशजी।
मूसना० स० क्रि० चुराना, झपटलेना।
मूसरा० ना० पु० चूहा।
मूसरी० ना० स्त्री० चुहिया।
मूसल० ना० पु० जिससे अन्नादिक कूटते हैं।
मूसलधर० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
मूसलधार० ना० पु० झड़ी, अति वृष्टि।
मूसली० ना० पु० श्रीबलदेवजी, ना० स्त्री० औषधि।
मृग० ना० पु० हरिण, वनके जीवजन्तु।
मृगछाला० ना० पु० मृगका चमड़ा।
मृगजल० ना० पु० मृगतृष्णा का पानी।
मृगतृष्णा० ना० स्त्री० जेठादि ग्रीष्मकाल में सूर्य की किरणों में जो जल की कान्ति देख पड़ती है।
मृगदंशक० ना० पु० कुत्ता।
मृगद्विष० } ना० पु० सिंह, व्याघ्र।
मृगध्वंस०
मृगनाभि० ना० स्त्री० कस्तूरी, मृगकीनाभि।
मृगनाभिरसा० ना० स्त्री० कस्तूरी, मुश्क।
मृगनयनी० } ना० स्त्री० गु० जिस स्त्री की आंखें मृगकी आंखों के सदृश हों।
मृगनैनी०
मृगपति० ना० पु० सिंह, शेर, व्याघ्र।
मृगबन्धनी० ना० स्त्री० वागुरि, जाल, फंदा।
मृगमद० ना० पु० कस्तूरी, मुश्क।
मृगया० ना० स्त्री० आखेट, अहेर, शिकार।
मृगराज० ना० पु० सिंह, व्याघ्र।
मृगशिर० } ना० पु० पांचवां नक्षत्र।
मृगशिरा०
मृगांक० ना० पु० चन्द्रमा।
मृगाण्डज० ना० पु० कस्तूरी, मुश्क।
मृगाधीश० } ना० पु० सिंह, शेर।
मृगादन०
मृगाक्षी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
मृगी० ना० स्त्री० रोगविशेष, हरिणी।
मृगेन्द्र० ना० पु० सिंह, मृगपति।
मृड० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
मृडानी० ना० स्त्री० श्रीपार्वती।
मृणाल० ना० पु० डंठल, कमलनाल।
मृणालका० ना० स्त्री० कमल की जड़।
मृणाली० ना० स्त्री० हंसिनी।
मृत्० ना० स्त्री० मिट्टी।
मृत० गु० मरा, मुआ, मुर्दा।
मृतक० ना० पु० शव, लोथ, मुर्दा।
मृतकर्पट० ना० पु० कफ़न, मुर्देके लिये वस्त्र।
मृत्तिका० ना० स्त्री० मिट्टी।
मृत्यु० ना० स्त्री० मौत, काल, मरण।
मृत्युञ्जय० ना० पु० मृतक।

मृत्युगण० ना० पु० यमदूत, मलकुल्मौत।
मृत्युञ्जय० ना० पु० श्रीमहादेवजी, और मन्त्रविशेष।
मृत्सा०, मृत्स्ना० ना० स्त्री० मिट्टी, माटी।
मृदंग० ना० पु० बाजाविशेष।
मृदंगिया०, मृदंगी० ना० पु० मृदंग बजानेहारा।
मृदु० ना० पु० गु० नम्र, कुन्द, कोमल, मीठा।
मृदुकन्दक० ना० पु० पियाचांसा।
मृदुका० ना० स्त्री० अंगूर, दाख।
मृदुच्छद० ना० पु० फरौंदा।
मृदुपत्रक० ना० पु० ऊख, गन्ना।
मृदुफल० ना० पु० फालसा।
मृदुल० गु० कोमल, दु।
मृद्वीका० ना० स्त्री० अंगूर, दाख।
मृषा० अव्य० मिथ्या, वृथा, झूठ।
मैं० सर्व, मुझको, मेरा।
मैं० अव्य, अधिकरण का बोधक।
मैंगनी० ना० स्त्री० लेंडी, पंजादिकी विष्ठा।
मैंड़० ना० स्त्री० खेतकी सीमा।
मैंडक० ना० पु० भेक, मेढ़क।
मैंडकी० ना० स्त्री० भेकी, मेंढ़की।
मैंढ़ा० ना० पु० भुवेका मुख।
मैंढ़ियाया० अ० क्रि० गिरना।
मैंढ़ा० ना० पु० भेड़ा।
मेह० ना० पु० वृष्टि।
मेहँदी० ना० स्त्री० मिहँदी, पौधाविशेष।
मेख० ना० पु० मणिपुर और बंगाले के बीच एक प्रकार के पर्वतीयलोग, कील।
मेखला० ना० स्त्री० स्त्रियोंकी करधनी, ब्राह्मण का यज्ञोपवीत जो मूंजवाला से बनताहै, तीनवर्ण का यज्ञोपवीत।
मेखली० ना० स्त्री० टाट, पट्टी।
मेघ० ना० पु० घन, बादल, अभ्र, रागविशेष।
मेघडम्बर० ना० पु० रावणका छत्रविशेष।
मेघाध्वा० ना० पु० आकाश।
मेघनाद० ना० पु० मेघकी शब्द, मेघनादशब्द, रावणका पुत्रविशेष।
मेघनाथ०, मेघराज० ना० पु० इन्द्र, मेघपति।
मेघागम० ना० पु० वर्षाकाल, बरसात।
मेघाभा० ना० पु० जामुन, फलेंद।
मेचक० गु० काला, श्याम।
मेटना० स० क्रि० धोडालना, नाशना, मलमेट, विरोधकरना।
मेटा० गु० मिटायागया।
मेढ़ा० ना० पु० भेड़ा।
मेथिका० ना० स्त्री० मेथी।
मेथी० ना० स्त्री० सागविशेष।
मेद० ना० पु० मेध, चर्बी, मोटाई।
मेदनाद० ना० पु० मोर।
मेदा० ना० स्त्री० पौधाविशेष।
मेदिनी० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, मालती।
मेदिनीपुर० ना० पु० नगरविशेष।
मेध० ना० पु० यज्ञ, बलिदान।
मेधा० ना० स्त्री० अनुभव, बूझ, बुद्धि, निपुणता।
मेधाख्या० ना० स्त्री० नागरमोथा।
मेधावती० ना० स्त्री० कश्यप की पत्नीविशेष।
मेधावी० गु० मेधावान्, बुद्धिमान्, निपुण।
मेध्या० ना० स्त्री० शंखाहोली।
मेन० ना० पु० मोम।
मेनका० ना० स्त्री० मुख्यअप्सरा, हिमालय की स्त्री।
मेमना० ना० पु० बकरीका बच्चा।
मेरीकरी० ना० स्त्री० स्वर्गीय, गंगाजी जो विश्वामित्रीय गंगा प्रसिद्ध है, यह शब्द रामचरित्रकामें विश्वामित्र का वाक्यहै, द्वितीयपक्ष प्रसिद्ध है।
मेरु० ना० पु० पर्वतविशेष, सुमेरु।
मेल० ना० पु० संयोग, भेंट, मिलाप, संबन्ध

मेलना० स० क्रि० टालना, घुसेड़ना, डालना।
मेला० ना० पु० तीर्थादि पर किसी देवता की पूजाहेतु बहुतजनों का इकट्ठा होना वा किसी प्रकार बहुत मनुष्यों का इकट्ठा होना।
मेली० ना० पु० संगी, गु० मिलापी।
मेव०, मेवड़ा०, मेवाती० } ना० पु० मेवात, पर्वत, के निवासी।
मेष० ना० पु० मेढ़ा, प्रथमराशि, पत्रांवृक्ष।
मेषवल्ली० ना० स्त्री० मेढ़ासिंही।
मेषवा० ना० स्त्री० मेखला।
मेषशृङ्गी० ना० स्त्री० मेढ़ासिंही।
मेह० ना० पु० मेघ, मूत्र व मार्ग में रोग विशेष।
मेहतर० ना० पु० भंगी, प्रधान, चौधरी।
मेहतरानी० ना० स्त्री० भंगिन।
मेहनदा० ना० पु० ठठोली करनेहारा।
मेहना० ना० पु० ठठोली।
मैं० सर्व० सर्वनामवाचक उत्तम पुरुष का एक वचन।
मेकलसुता० ना० स्त्री० नर्मदानदी।
मैका० ना० पु० स्त्री के मा बाप का घर या घराना।
मैत्री० ना० स्त्री० मित्रता, बन्धुता।
मैथिल० ना० पु० तिरहुत के बसने हारे, ब्राह्मण की जाति विशेष।
मैथिली० ना० स्त्री० श्रीजानकी, मिथिला की भाषा विशेष।
मैथुन० ना० पु० प्रसंग, रति, पुत्रोत्पादनार्थ दम्पति की क्रिया।
मैनफल० ना० पु० औषधि, फल विशेष।
मैना० ना० स्त्री० पक्षी विशेष, पार्वतीकी माता।
मैनाक० ना० पु० पर्वत विशेष।
मैमा० ना० स्त्री० सौतेलीमाता।
मैया० ना० स्त्री० माता, महतारी।
मैल० ना० पु० मल, धूली, कफ, काज।
मैला०, मैला कुचैला० } गु० मलीन, अपवित्र।
मैहिका० ना० पु० महिष, भैंसा।
मैहिकी० ना० स्त्री० महिषी, भैंसी।
मो० सर्व, मैं।
मोढ़ा० ना० पु० कंधा, कूबड़, मोढ़ा।
मोकना० स० क्रि० त्यागन, छोड़ना, फोड़ना।
मोखा० ना० पु० रोशनदान, प्याला।
मोगरा० ना० पु० मुद्गर, बड़ी मोगरी, पुष्प विशेष।
मोगरी० ना० स्त्री० कूटने की काष्ठरचित वस्तु विशेष।
मोघ० गु० वृथा, निरर्थ, निष्फल।
मोच० ना० पु० लचक, कचक, झटका।
मोचक० ना० पु० मोचरस, गु० छुड़ानेहारे।
मोचन० ना० पु० चोरी, छोड़ना, त्याग।
मोचना० स० क्रि० त्यागना, छोड़ना, झाड़ना, बुझाना, मियना, ना० पु० बाल उखाड़ने के लिये चिमटा।
मोचरस० ना० पु० सेमल वृक्षका गोंद।
मोचस्रावी० ना० पु० मोचरस।
मोचा० ना० पु० सेमरवृक्ष, केला या उसकाग़ाभा।
मोची० ना० पु० चर्मकार।
मोट० ना० स्त्री० गठरी, मोट।
मोटक० ना० पु० छन्द विशेष।
मोटकी० ना० स्त्री० कुदारी, मोटी भी।
मोटरा० ना० पु० गठरी।
मोटा० ना० स्त्री० गठरा, गट्ठा, गु० स्थूल, गाढ़ा, घना, भद्दा।
मोटाई० ना० स्त्री०, मोटापा० ना० पु० } पुष्टता, गाढ़ाई, स्थूलता।
मोटिया० ना० पु० बोझ उठानेहारा।
मोठ० ना० स्त्री० गठरा, पट, बोझ, चरस, पुरवट, अन्न विशेष।
मोड़० ना० पु० बांक, फेर, वक्र, ऐंठन।

मौली० ना० स्त्री० नारा।
मौल्य० ना० पु० मोल, कीमत।
मौसा० ना० पु० माताकी बहन का पति।
मौसी० ना० स्त्री० माताकी बहन।
मौसेरा० गु० जो मोसी का है, यथा,मौसेरा भाई।
म्लान० गु० मैला, मन्द।
म्लेच्छ० ना० पु० जो लोग वेद और शास्त्र से विपरीत चलते हैं।
म्लेच्छदेश० ना० पु० देश जिस में म्लेच्छ बसते हैं।

[य]

यक० गु० एक, १।
यकश्रांक० अव्य० निश्चय करके।
यजमान० ना० पु० जो दक्षिणादि देवे धर्म वा कर्म करवावे।
यजु० ना० पु० द्वितीय वेद, यजुर्वेद।
यतन० ना० पु० यत्न।
यति० ना० पु० यती, सन्यासी, भिखारी वा जैनमतका भिखारी।
यत्० अव्य० जो, जब।
यत्किञ्चित्० अव्य० जो कुछ।
यत्न० ना० पु० जतन, उपाय, उद्योग,तद्बीर।
यत्नमान० } गु० यत्न करनेहारा।
यत्नी० }
यत्र० अव्य० जहां, जिस जगह।
यत्रतत्र० अव्य० जहां तहां।
यथा० अव्य० जैसा, जिस प्रकार।
यथाकथञ्चित्० अव्य० जिसकिसी प्रकारसे।
यथाकाल० ना० पु० जैसा समय।
यथाक्रम० ना० पु० क्रमसे, परिपाटी से, जैसी रीति, सिलसिलेवार।
यथापि० अव्य० यदपि, जोभी, अगचि।
यथायोग० ना० पु० जैसा उचित वा चाहिये, अव्य० जैसा चाहिये वैसा।
यथार्थ० अव्य० ठीक, सच, खरा।
यथावत्० अव्य० सम्पूर्ण।
यथावस्थित० अव्य० ज्योंकात्यों, गु० स्थिर।
यथाशक्ति० ना० स्त्री० जैसा सामर्थ्य।
यथाशास्त्र० अव्य० शास्त्र के अनुसार, शास्त्र सम्मत, ना० पु० जैसा शास्त्र।
यथासम्भव०,गु० जैसा होनहार।
यथेच्छा० ना० स्त्री० जैसी इच्छा।
यथोक्त० गु० जैसा कहागया।
यथोचित० गु० यथायोग्य, जैसा, उचितहोर।
यदवधि० अव्य० जबसे।
यदपि० अव्य० जोभी, अगर्चि।
यदा० अव्य० जब, जहां।
यदि० अव्य० जो, कदाचित्।
यदु० ना० पु० सोमवंशी, पांचवा राजा।
यदुजात० ना० पु० यदुवंशी।
यदुनाथ० }
यदुपति० } ना पु० श्रीकृष्णचन्द्र।
यदुवर० }
यदुराय० }
यदुवंश० ना० पु० राजा यदुकी सन्तान।
यदुवंशी० ना० पु० यदु से जो उत्पन्न भया श्रीकृष्णचन्द्रादि।
यद्यपि० अव्य० जोभी, यदपि, अगचि।
यद्वातद्वा० अव्य० ऐसा वैसा, भलाबुरा।
यन्त्र० ना० पु० कल, समान, बाध, टोटका, तबीज, ताला।
यन्त्रणा० ना० स्त्री० पीड़ा, क्लेश।
यन्त्रित० गु० यन्त्र कियागया, तालालगायाहुआ, यन्त्रयुक्त।
यन्त्री० ना पु० यन्त्रदेनेहारा, तारलोचन का यन्त्र, बजानेहारा कलसाज।
यम० ना० पु० यमराज, यमदूत, साधन वा नियम विशेष, गु० दो।
यमक० ना० पु० छन्दमें अक्षर सम्पर्क वा प्रथम का शब्द, तुक, जोड़िया, जो दो बालक एक साथही उपजहों।

यमयातना० ना० स्त्री० मरणसमयका दुःख।
यमदग्नि० ना० पु० मुनि विशेष, परशुराम के पिता।
यमदूत० ना० पु० यमराजके दूत या यम विशेष।
यमद्वितीया० ना० स्त्री० कार्तिकशुक्ल दूज है।
यमनी० ना० पु० जो यमन देशवाले है।
यमराज० यमराट्० } ना० पु० यम, धर्मराज, अन्तक।
यमल० गु० दो, जोड़ा युग्म।
यमी० गु० यम करनहारा, यमुनाजी।
यमुना० ना० स्त्री० श्रीयमुनाजी।
यमुनाभेदी० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
यमुनाभ्राता० ना० पु० यमराज।
ययाति० ना० पु० चंद्रवंशी राजा विशेष।
ययु० ना० पु० घोड़ा, यथा ययुरुच्चाश्वम शीघ्री जवनस्तुजवाधिक, इत्यमर।
यव० ना० पु० जो अन्न विशेष।
यवन० ना० पु० देश विशेष वा यवन देश का निवासी, म्लेच्छ।
यवनपुर० ना० पु० यवनो का देश या नगर विशेष।
यवनिका० ना० स्त्री० कनात, आड़।
यवसूक० ना० पु० जवाखार।
यवक्षार० ना० पु० खारा, जवाखार।
यवाग्रज० ना० पु० जवाखार लोन।
यवास० ना० पु० पुष्प विशेष जवासा।
यवासक० यवासा० } ना० पु० जवासा।
यश० ना० पु० कीर्ति, ख्याति, पति, सुकृत।
यशःपति० यशोमन्त० } गु० कीर्तिमान, प्रतिष्ठित, सुकृती।
यशस्विनी० ना० स्त्री० जीवती बूटी।
यशस्वी० यशी० } गु० यशवन्त, सुकृती, प्रतिष्ठित।
यशोदा० ना० स्त्री० जसोदा, नंदरानी।

यष्टि० यष्टिका० } ना० स्त्री० लाठी।
यष्ट्या० ना० स्त्री० मुलहटी।
यसक० ना० पु० जवासा।
यस्मिन्० सर्व० जिसमें।
यस्य० सर्व० जिसका।
यह० सर्व० निश्चयवाचक, सर्वनाम।
यहां० अव्य० इस स्थानमें इधर।
यहीं० अव्य० इसीस्थान में।
यक्ष० ना० पु० देवताकी जाति विशेष।
यक्षकर्दम० ना० पु० यक्षोंका अंगमर्दन अर्थात् कस्तूरी, कपूर, अगर, कक्कोलकी मिलौनी का उबटन।
यक्षधूप० ना० स्त्री० राल।
यक्षपति० यक्षराज० } ना० पु० कुबेर।
यक्षिणी० ना० स्त्री० यक्षकी स्त्री।
यक्षेश० ना० पु० कुबेर।
यज्ञ० ना० पु० याग, मख, बलिदान, ब्रह्म-भजन।
यज्ञदत्त० ना० पु० संज्ञा विशेष।
यज्ञपुरुष० ना० पु० श्रीनारायण।
यज्ञप्राता० ना० स्त्री० सोमवल्ली।
यज्ञसूत्र० ना० पु० जनेऊ।
यज्ञस्थल० ना० पु० यज्ञका घर।
यज्ञेश्वर० ना० पु० श्रीशिवजी वा श्रीविष्णु।
यज्ञोपवीत० ना० पु० उपवीत, जनेऊ।
या० सर्व, यह।
याग० ना० पु० यज्ञ।
याचक० ना० पु० जाचक, भिक्षुक।
याचना० स० क्रि० चाहना, मांगना, विनय करना, भिक्षा मांगना।
याचित० गु० मांगाहुआ।
याजक० ना० पु० पुरोहित जो ब्राह्मण दक्षिणा लेकर यज्ञादि कर्म करावे।
याजन० ना० पु० याजकका काम।

याज्य० ना० पु० यज्ञादिकर्मकी दक्षिणा।
यातना० ना० स्त्री० अत्यन्त पीड़ा, नरकका कष्ट।
यातायात० ना० पु० आवागमन।
यात्रा० ना० स्त्री० तीर्थ, प्रस्थान, कूच, पर्व।
यात्रिक० ना० पु० प्रसाद, राही, पन्थी।
यात्री० ना० पु० तीर्थकर्त्ता, राही, पन्थी।
याथार्थिक० ना० पु० जो ठीक कर्म करे।
याथार्थ्य० ना० पु० यथार्थता, सचाई।
यादव० ना० पु० यदुकी सन्तान, कृष्ण।
यादवपति० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
यान० ना० पु० वाहन, सवारी।
यामिनी० ना० स्त्री० रात, जो यवनकी है।
यामिनीभाषा० ना० स्त्री० यवन लोगोंकी भाषा विशेष।
यावक० ना० पु० लाल।
यावज्जीव० | यावज्जीवन० } अव्य० जबतक जीवन है या जीवन कालभर।
यावत्० अव्य० जबतक।
यास० ना० स्त्री० दुःख, त्रास।
याज्ञवल्क्य० ना० पु० मुनि विशेष।
याज्ञिक० ना० पु० यज्ञ करने हारा।
युक्त० गु० उचित, योग, लगा, मिलाहुआ।
युक्तायुक्त० गु० योग्यायोग्य।
युक्ति० ना० स्त्री० प्रवीणता, हथौटी, तर्क, ग्रथ, उपाय, तरकीब।
युग० ना० पु० सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि, इनचारों में से एक, युग्म, जोड़ा, गु० दो, २।
युगपत्० अव्य० एकबेर में।
युगल० गु० युग्म, दो, २।
युगान्त० ना० पु० युगका अन्त, प्रलय।
युगलकिशोर० ना० पु० दो पुत्र तरुणताप्राप्त, राम कृष्ण या रामलक्षण।
युग्म० गु० दो, २, जोड़ा।
युत० गु० युक्त, मिलाहुआ, पथ, धर्मयुत।
युत्थ० ना० पु० समूह।
युत्थनाथ० ना० पु० सेनानी, सेनापति, हाथी।
युत्थप० | युत्थपति० } ना० पु० युत्थनाथ, सिपहसालार, हाथी।
युत्थी० ना० स्त्री० सेना, फौज।
युद्ध० ना० पु० संग्राम, समर, लड़ाई।
युद्धभूमि० ना० स्त्री० संग्रामस्थल, लड़ाई की भूमि।
युधि० ना० पु० संग्राम, समर, युद्ध।
युधिष्ठिर० ना० पु० पांडुका ज्येष्ठपुत्र।
युवती० ना० स्त्री० यौवनवती स्त्री अर्थात् सोलह वर्ष से तीस वर्षतककी।
युवराज० ना० पु० राजाका प्रधान पुत्र जो राजा के पीछे राजा होवेगा।
युवा० गु० यौवनयुक्त तरुण मनुष्य सोलह वर्ष से सत्तर वर्षतक।
युवावस्था० ना० स्त्री० तरुणता।
यूं० अव्य० इसप्रकार।
यूंही० अव्य० इसीप्रकार।
यूका० ना० स्त्री० जूआ।
यूथ० ना० पु० झुण्ड, युत्थ, समूह, गिरोह।
यूथनाथ० | यूथप० } ना० पु० सेनानी, सेनापति, हाथी।
यूथिका० ना० स्त्री० सोनजुही।
यूप० ना० पु० यज्ञका स्तम्भ।
यूष० ना० पु० जूस, परेह, शोरवा।
योग० ना० पु० मेल, लगन, मिलन, भक्तिमार्ग, तपस्या विशेष, जोड़, सत्ताईसयोग जो ज्योतिष में प्रचलित हैं।
योगगम्य० गु० योगमार्ग से योगज्ञाता।
योगमाया० ना० स्त्री० वह शक्ति जिससे ईश्वर इच्छानुसार कार्य करता है।
योगशक्ति० ना० स्त्री० योगमाया।
योगसारक० ना० पु० नारंगी।
योगिनी० ना० स्त्री० प्रेतनी विशेष जो दुर्गाकी सहचरी है।

योगी० ना० पु० जो योग साधन करै, तपस्वी, गु० मिलाहुआ।
योगेश्वर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी, श्रीमहादेवजी, तपस्वी।
योग्य० गु० उपयुक्त, सम्भव, उचित।
योग्यता० ना० स्त्री० उचिताई, सम्भवता।
योजन० ना० पु० चारिकोस परिमाण।
योजनगन्धा० ना० स्त्री० वेदव्यासकी माता।
योजना० ना० स्त्री० मेल, मिलाप, जोड़।
योद्धा० ना० पु० जोधा।
योद्धा० ना० पु० बहादुर, युद्धकरनेहारा, सावन्त।
योधन० ना० पु० युद्ध, समर, लड़ाई।
योधापन० ना० पु० वीरता, शावन्ती।
योनि० ना० स्त्री० उत्पत्तिका अंगविशेष, कोख जिसमें बच्चा रहता है।
योनिज० ना० पु० मनुष्यादि।
यौवन० ना० पु० तरुणता, जवानी।
योषा० योषित० योषिता० } ना०स्त्री०पत्नी,स्त्री,नारि,दुलहिन।
यों० अव्य० इसप्रकार।
यौगिक० गु० योगमें बना, योगकारक, सयाना, जो दो आदि शब्दों से बना।
यौतुक० ना० पु० दायजा, दहेज।
यौवन० ना० पु० बाल्यावस्था से ऊपरी वय।

[र]

रई० ना० स्त्री० कथनी विलोनी, कर्नी, चूरा।
रंहट० ना० पु० कूपसे पानी निकालने का यन्त्र विशेष।
रंहटा० ना० पु० चरखा सूतकातने का।
रंहटी० ना० स्त्री० पानी भरनेका यन्त्र विशेष।
रंस० ना० स्त्री० रश्मि, किरण।
रकत० ना० पु० रक्त।
रक्त० गु० लाल, अरुण, ना० पु० रुधिर, गूर सिंदूर।
रक्तक० ना० पु० पानी, आवला, दुपहरिया-पुष्प विशेष।
रक्तकन्दक० ना० पु० रतालू।
रक्तकाष्ठ० ना० पु० पतंगवृक्ष।
रक्तकोढ़० ना० पु० कुष्ठ विशेष।
रक्तचन्दन० ना० पु० लालचन्दन।
रक्तदृग्० ना० पु० कोकिला।
रक्तपद्मानन० ना० पु० सुर्ख हंस।
रक्तयष्टी० ना० पु० मंजीठ।
रक्तपा० ना० स्त्री० जोंक।
रक्तपात० ना० पु० रुधिर का निकालना।
रक्तपादिका० ना० स्त्री० लजालू, पौधा विशेष।
रक्तपादी० ना० स्त्री० हंसपदी, पौधाविशेष।
रक्तपाषाण० ना० पु० गेरू।
रक्तपित्त० ना० पु० रोग विशेष।
रक्तपुष्प० ना० पु० अनार, कचनार, पियावासा।
रक्तपुष्पिका० ना० स्त्री० सेमल वृक्ष।
रक्तफल० ना० पु० आलू, बरगद, लालफल।
रक्तफला० ना० स्त्री० कन्दूरीलता, आकारा, बेल, अमरबेल।
रक्तमुख० ना० पु० शुक, मछली, लालमुख।
रक्तमूर्धा० ना० पु० सारस पक्षी।
रक्तरज० ना० पु० सिंदूर जो स्त्रिया माथे में लगाती हैं।
रक्तवर्णिका० ना० स्त्री० अग्निकी जिह्वा विशेष।
रक्तबीज० ना० पु० अनार, रीठा, दैत्यविशेष।
रक्तसार० ना० पु० लालचन्दन, खैर, कत्था।
रक्तसिन्धिद० ना० पु० लालकमल।
रक्ता० ना० स्त्री० रासना, मजीठ।
रक्ताङ्ग० ना० पु० मजीठ।
रक्तालू० ना० पु० रतालू तरकारी।
रक्तिम० ना० स्त्री० लाली।
रक्तैरण्ड० ना० पु० लाल अरण्ड।

रक्षोदर० ना० पु० मछली।
रखछोड़ना० स० क्रि० धरना, सौंपना, रखना।
रखदेना० स० क्रि० रखना धरना।
रखना० स० क्रि० धरना, त्यागना, बचाना, दाब रखना।
रखलेना० स० क्रि० धरलेना।
रखवाई० ना० स्त्री० धरोहरका व्याज वा भाड़ा, रखवाला, रक्षा।
रखवाना० स० क्रि० धरवाना, सौंपना।
रखवाल० } ना० पु० रक्षक, रखनहार, हा-
रखवाला० } रिज, तथा गडरिया जो भेड़ों को रखताहै।
रखवाली० ना० स्त्री० रक्षा, चराने का काम, बचाने का काम हिफाजत।
रखा० गु० जो बचाया गयाथा, धरा रखाहुआ।
रखाना० स० क्रि० रखवाना, रक्षाकरना, बचाना।
रखियाव० ना० स्त्री० रक्षा, बचाव, रखवाई।
रखैया० ना० पु० रक्षक, धरनहारा।
रग० ना० स्त्री० शिरा, नाड़ी।
रगड़० ना० स्त्री० रगड़ा, घिसाव।
रगड़ना० स० क्रि० घिसना, घसना, मलना।
रगड़ा० ना० पु० झगड़ा, श्रमातिशय, घिसाव।
रगेद० ना० स्त्री० खदेड़।
रगेदना० स० क्रि० खदेड़ना, पीछा करना।
रघु० ना० पु० अयोध्याका प्राचीन सूर्यवंशी राजा विशेष।
रघुनन्दन० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।
रघुनाथ० }
रघुनायक० } ना० पु० रघुवंशियों में राजा
रघुपति० } विशेष, दशरथ, श्रीरामचन्द्र
रघुवर० } जी।
रघुराज० }
रघुवंश० ना० पु० राजा रघु का वंश, काव्य, विशेष।
रघुवंशी० ना० पु० राजा रघुकी सन्तान, राज पूतों में जातिविशेष।

रङ्क० ना० पु० दरिद्री, कंगाल, ग़रीब।
रङ्ग० ना० पु० वर्ण, डौल, रीति, क्रीड़ा, त्योहार, तेल, रंगनेकी वस्तु।
रंगत० } ना० स्त्री० वर्ण।
रंगति० }
रंगना० स० क्रि० रंग चढ़ाना।
रंगपुर० ना० पु० देशविशेष बंगाले के उत्तर।
रंगभंग० ना० पु० क्रीड़ा का विनाश।
रंगभवन० ना० पु० क्रीड़ा का स्थान, विहार स्थल, आनन्दभवन।
रंगभूमि० ना० स्त्री० क्रीड़ाका स्थान, नाचघर, यज्ञस्थल, तमाशे का घर।
रंगमहल० ना० पु० रंगभवन।
रंगमारना० स० क्रि० चौसर के खेलमें जीतना या किसी के रंगडालना।
रंगरस० ना० पु० हर्ष, आनन्द, विहार।
रंगरालना० स० क्रि० किसीको हारदेना, किसी से अधिकजी लगाना।
रंगरूप० ना० पु० वर्ण, आकार।
रंगवैया० ना० पु० रंगरेहारा।
रंगाई० ना० स्त्री० रंगने का भाड़ा।
रंगाना० स० क्रि० रंगदिलवाना।
रंगावट० ना० स्त्री० रंगने का काम।
रंगी० } गु० विलासी, चमकीला, रसीला,
रंगीला० } सुडौल, रंगदार।
रचना० स० क्रि० व्यापना, मारागना, किसी काम में लगना, तालसमेत गाना, पैठना, बदना स० क्रि० बनाना, करना, सिरजना, भा० स्त्री० उत्पत्ति, बनावट, सृष्टि, बनाव।
रचाना० स० क्रि० बनाना, कराना, सिरजना, चलाना, आरम्भ करना, लगाना, मेहदी से हाथ पैर रंगना।
रचित० गु० रचाहुआ, विराचित।
रचितग्रन्थ० ना० पु० बनाहुई पुस्तक, रचना।
रच्छक० ना० पु० रक्षक।
रच्छा० ना० स्त्री० रक्षा।

रज० ना० पु० रजोगुण, लाल, ना० स्त्री० धूलि, अग्नि, रस्सी, पराग, निहानी, कपंड, ना० पु० मनुष्यका दूसरा गुण।

रजक० ना० पु० धोबी।

रजत० ना० पु० चांदी, रूपा।

रजधानी० ना० स्त्री० राजधानी, रामायणे। यथा, राजाराम अवध रजधानी।

रजमक० ना० पु० कपाला औषधि।

रजनी० ना० स्त्री० रात, हल्दी।

रजनीगन्धा० ना० स्त्री० सुगन्धरा,पुष्पविशेष।

रजवाड़ा० ना० पु० राज्य, देश जो राजा के वशमें है।

रजस्वला० ना० स्त्री० ऋतुमती, कपड़ों से।

रजाई० ना० स्त्री० शीतकालमें ओढ़ने का वस्त्र, राजत्व, आज्ञा।

रजाय० ना० पु० आज्ञा, अनुशासन।

रजायसु० ना० पु० आज्ञा वा राजाकी आज्ञा।

रजोगुण० ना० पु० मनुष्य का द्वितीय गुण जिस में क्रोधआदि बसता है।

रजोवती० ना० स्त्री० पुष्पवती, जो स्त्री कपड़ा से होवे।

रज्जु० ना० स्त्री० सूत रस्सी।

रञ्ज० } गु० अल्प, थोड़ा बहुतथ का।
रञ्जक० }

रञ्जक० ना० पु० जो प्रीतको उपजाय रंग देने द्वारा, चित्रकार, तापआदि जलाने की वस्तु।

रञ्जन० ना० पु० रंगाव, चित्रकारी, प्रसन्नता, जन्माना, सुसदना, सुसद।

रञ्जित० गु० रंगाभया, चित्रत, प्रसन्नित, उपजा, हुसी।

रट० ना० स्त्री० दुहराव, नक।

रटना० स० क्रि० दोहराना, तिहराना, बकना लगातार कहना।

रण० ना० पु० समर, युद्ध, लड़ाई।

रणभूमि० ना० स्त्री० समरभूमि, युद्धभूमि।

रणबीमत्स० ना० पु० युद्धमें कुशल, समर प्रदीप, विराज चड़ेरा।

रणवास० ना० पु० रानियों के रहनेका स्थान।

रण्ड० ना० पु० अरण्ड, रेंड।

रण्डा० ना० स्त्री० रांड, विधवा।

रण्डापा० ना० पु० विधवापन।

रण्डिया० ना० स्त्री० विधवा स्त्री।

रण्डी० ना० स्त्री० नारी, स्त्री, पतुरिया।

रण्डुआ० } ना० पु० निरस्त्री, जिस मनुष्यकी
रण्डूआ० } स्त्री मरगई हो।

रत० ना० पु० मैथुन, रात, नीतिमय, लीन, लवलीन।

रतकेल० ना० पु० मैथुन।

रतजगा० ना० पु० उत्सव में रातका जागना।

रतन० ना० पु० रत्न जवाहिरात।

रतनार० ना० स्त्री० लालवर्ण।

रतनिया० ना० पु० चावलविशेष।

रतवाही० ना० स्त्री० धात्रा, रातका, हरिविनुको रात पुरुष पास आती है।

रताना० स० क्रि० कामातुर होना।

रतालू० ना० पु० अलूविशेष।

रति० ना० स्त्री० प्यार, मैथुन, कामदेवकी स्त्री।

रतिनाथ० }
रतिनाह० } ना० पु० कामदेव।
रतिपति० }

रत्ती० ना० स्त्री० आठ जौ का तोल, रत्ती, भाग, थोड़ा।

रतीवन्त० } गु० भाग्यवान्।
रतीवन्त० }

रतौंधा० } ना० पु० अधलाई, ना० स्त्री०
रतौंधी० } जिसके कारण से रातको दिखाई नहीं देता है।

रत्ती० ना० स्त्री० आठ यव वा आठ चावल का तोल, भाग्य, भाग।

रत्न० ना० पु० मणि मुक्ताआदि, पुतली।

रत्नगर्भा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
रत्नजोत० ना० स्त्री० पौधा विशेष, खासकी औषध, औषधिविशेष।
रत्नमाला०ना० स्त्री० मालाजो रत्नोंसे बनी है।
रत्नसिंहासन०ना० पु० वह सिंहासन जो रत्नों से जड़ित है।
रत्नाकर० ना० पु० समुद्र, रत्नों की खान।
रथ० ना० पु० चारपहियों की गाड़ीविशेष।
रथवान्० ना० पु० सारथी, गाड़ीवान्।
रथवानी० ना० स्त्री० रथवान् का काम।
रथवाह० } रथसिद्ध० } ना० पु० घोड़ा।
रथांग० ना० पु० चकवा पक्षी, चक्र, पहिया।
रथाग्र० ना० पु० रथके आगे।
रथी० ना० पु० रथका सवार, तीरथी जिसपर मृतक को श्मशान को लेजाते हैं।
रथ्या० ना० स्त्री० मार्ग, सड़क, वीथी, गली।
रद० ना० पु० दांत।
रदछद० ना० पु० ओष्ठ, होंठ।
रदन० ना० पु० दांत।
रदनछद० } रदपट० } ना० पु० ओष्ठ, होंठ।
रद्दा० ना० पु० भीति का परत।
रद्दी० ना० स्त्री० जो कागज किसी कामका नहीं फारसी शब्द।
रन० ना० पु० रण।
रनगढ़० ना० पु० सारनी, सागर।
रनवन० ना० पु० महावन।
रनवास० ना० पु० रनवास, जिसमें राजा की स्त्रियां रहती हैं, अन्तःपुर।
रंतिदेव० ना० पु० राजाविशेष।
रंद० ना० पु० रथ।
रंध० ना० पु० रन्ध्र, छिद्र।
रंधना० अ० क्रि० पकना, सुलना, उबलना।
रंध्र० ना० पु० छिद्र, छेद।
रंभी० ना० पु० [illegible]

रपट० ना० स्त्री० रेंड़, फिसलाहट, रगेद।
रपटना० अ० क्रि० फिसलना, खिसलना।
रपटाना० स० क्रि० रगेदना, फिसलाना, दौड़ाना।
रपड़०ना० स्त्री० परिश्रम, थकाई, व्यर्थ, दौड़ धूप।
रपड़ना० अ० क्रि० थकना, व्यर्थ दौड़ धूप में पड़ना।
रपड़ा० गु० थका, थकित।
रपड़ाना० स० क्रि० थकाना, व्यर्थ दौड़धूप कराना।
रबड़ी० ना० स्त्री० गाढ़ादूध।
रमचेरा० ना० पु० गुलाम, किंकर, लौंडा।
रमण० ना० पु० भोग, विलास, क्रीड़ा, मैथुन, व्यापक, विहारना, घटन।
रमणक० ना० पु० द्वीपविशेष।
रमणी० ना० स्त्री० उत्तमास्त्री।
रमणीक० गु० सुन्दर, मनभावित।
रमणीय० गु० मनोहर, अच्छा, सुन्दर।
रमना० स० क्रि० भोग करना, मैथुन करना, फिरना, विचरना।
रमा० ना० स्त्री० लक्ष्मी वैष्णवी।
रमाना० स० क्रि० फुसलाना, बहकाना, फिराना, भोगकराना।
रमानाथ० } रमापति० } रमेश० } ना० पु० श्रीविष्णु, नारायण।
रम्भा० ना० स्त्री० गाय, वेश्या, केला और मुख्य अप्सरा।
रम्भाना० अ० क्रि० गौका बोलना।
रम्य० ना० पु० पृथ्वी के नवखण्डों में से एक का नाम गु० सुन्दर, अच्छा।
रम्यक० ना० पु० महानींब।
रम्या० ना० स्त्री० चम्पकपुष्प।
रये० } रयो० } क्रि० रंगे, मिले, भरे, रामचन्द्रिकामें (जनुसिंहंकेमुखसोंउमिटिही श्रीरघे)।

रटना० स० क्रि० रटना।
रलना० स० क्रि० मिलना, मिसना, मिमना।
रलाना० स० क्रि० मीसना, सींचना, मिलाना।
रव० ना० पु० शब्द, ध्वनि।
रवताई० ना० स्त्री० रावतपन, वीरता युद्ध।
रवन० ना० पु० पति, प्रियतम, प्यारा, यार।
रवनी० ना० स्त्री० पत्नी, प्यारी, प्रियतमा।
रवन्ना० ना० पु० रणवासका सेवक जो स्त्रियों के लिये सौदा लाता है, ख्वाजा।
रवा० ना० पु० चांदी वा सोनेका रेता, या चूर, व लू, धूलि आदिका वस्तु।
रवि० ना० पु० सूर्य्य।
रविक० ना० पु० नीव वृक्ष।
रविजा० ना० स्त्री० यमुनानदी।
रविजात० ना० पु० शनैश्चर, यमराज, कर्ण, सुग्रीव।
रविनामक० ना० पु० तांबा।
रविमणि० ना० स्त्री० सूर्य्यमणि।
रविवार० ना० पु० आदित्यवार, पहिला दिन, विश्रामका दिन, इतवार।
रविलक्षिप० ना० पु० नींवृक्ष।
रसिक० गु० रसिक।
रश्मि० ना० स्त्री० रश्मि, किरण।
रस० ना० पु० जीभमें जिसका ग्रहणहोवे, यथा, घी, दूध, अमृत, विष, पानी आदि शृंगारादि नव रस वा कटुआदि षट्रस और निचोर, स्वाद, रास प्रेम, धीरा, पारा, वा धातु मरहुये की राख, यथा, रूपरस, ताम्ररस।
रसकपूर० ना० पु० रस भस्मविशेष।
रसद० ना० पु० रसदाता अर्थात् ऊख, गन्ना, नायिका, धान्य।
रसधातु० ना० पु० पारा।
रसना० ना० स्त्री० जीभ, जबान्।
रसनाग० ना० पु० रासना।
रसप्रभु० ना० पु० पारा।
रसमसाना० अ० क्रि० पसीने वा सुगन्धि वस्तु से भीगजाना।
रसमसीला० गु० जोरसमस गया, भीगा।
रसमार० ना० पु० विष, हलाहल।
रसभेद० ना० पु० कचनार।
रसरा० ना० पु० डोरा, मोटी रस्सी, बरारा।
रसराज० ना० पु० शृंगाररस, पुस्तकविशेष।
रसरी० ना० स्त्री० डोरी, रस्सी।
रसवत० ना० पु० रसौत।
रसवती० ना० स्त्री० रसीली।
रसवीर० ना० पु० भ्रमर, भौंरा।
रसज्ञ० गु० रसका ज्ञाता, यथा, रसिया, कवि, पण्डित, साधु, रसधातु का बनानेहारा।
रसज्ञा० ना० स्त्री० जीभ, जिह्वा।
रसा० ना० स्त्री०पृथिवी, रासना।

रसाग्र०
रसाञ्जन० } ना० पु० रसौत।

रसातल० ना० पु० पातालविशेष।
रसाना० स० क्रि० जोड़ना, मिलाना।
रसायन० ना० पु० विद्याविशेष, जिसमें ताम्रादि धातुको सुवर्णादि करते हैं कीमिया, विषवैद्य चिकित्साविशेष।
रसायनी० गु० रसायनजाता, ना० स्त्री० घी कुवार।
रसाल० ना० पु० रसाल ऊख, गन्ना गु० मीठा, ना० आम।
रसीला० गु० जो रससे पूर्ण, व्यसनी, कामी।
रसीली० गु० स्त्री० यौवनवती, ना० पु० अगूर।
रसिक० गु० रसज्ञ, रसिया।
रसिकाई० ना० स्त्री० रसामपना, धूर्तताई, कामातुरता।
रसिया० ना० पु० कामी, मग्नी, लुचा।
रसियाना० अ० क्रि० गीला वा रसीला होना, पसीजना, रिसना।
रसे० अव्य० धीरे, हौले।
रसेन्द्रमणि० ना० गु० पारा।

रसोइया० ना० पु० भोजन पकानेहारा।
रसोई० ना० स्त्री० पाक, भोजन, पाकस्थान।
रसोद्भव० } ना० पु० रसौत।
रसोद्भूत० }
रसोनक० ना० पु० वृक्ष विशेष।
रसोत० ना० पु० औषधि विशेष।
रस्सा० ना० पु० जेवड़ा, बरारा, बड़ीरस्सी।
रस्सी० ना० स्त्री० जेवड़ी छोटा रस्सा।
रहकल० } ना० पु० छोटी तोप, छोटीगाड़ी,
रहकला० } छकड़ा।
रहचटे० अव्य० मनोरथ चाह में।
रहचोला० ना० पु० लल्लोपत्तो, मीठी बातें।
रहआना० अ० क्रि० धीरज करना, संतोष करना, थम्भना, बाट जोहना।
रहट० ना० स्त्री० गरारी।
रहटा० ना० पु० चरखा।
रहटी० ना० स्त्री० चरखी, गरारी।
रहते० अव्य० होते, सामने, आगे।
रहन० ना० स्त्री० रीति, चलन, चाल।
रहना० अ० क्रि० टिकना, ठहरना, बसना, बचजाना।
रहला० ना० पु० चना अन्न।
रहवैया० ना० पु० बसनहारा।
रहस० ना० पु० ठठोलपन, नाच विशेष, ना० स्त्री० लीला, क्रीड़ा, गु० एकान्त, निर्जन।
रहसना० अ० क्रि० प्रसन्नहोना हुलसना, एकान्त होना, छुपाना।
रहसि० ना० पु० एकान्त।
रहस्य० ना० पु० रहस, गुप्त एकान्त।
रहायस० ना० स्त्री० } टिकाव, ठहराव, कयाम,
रहाव० ना० पु० } रहने का स्थान।
रहित० गु० वर्जित, हीन, बिना।
रक्षक० ना० पु० रक्षाकरनेहारा।
रक्षण० ना० पु० } बचाव बचत, उद्धार,
रक्षा० ना० स्त्री० } राखी, पालन, रखवाली।
रक्षाबन्धन० ना० पु० श्रावणशुक्लपूर्णिमा।
रक्षावीर्य्य० ना० पु० रीठा।
राई० ना० स्त्री० सरसों विशेष, गु० थोड़ा।
रांगा० ना० पु० धातु विशेष।
रांभन० }
रामजना० } ना० पु० सज्जन, प्रियतम।
रामा० }
राड़० ना० स्त्री० विधवा बेवह।
रादपड़ोस० ना० पु० अड़ोस पड़ोस, समापता।
राधना० स० क्रि० पकाना, रींधना, जुराना।
रांपा० ना० स्त्री० खुरपी० चमारोंका अस्त्र विशेष।
राँभना० अ० क्रि० बिंबियाना, डकारना, गौका बोलना।
राकस० ना० पु० राक्षस।
राका० ना० स्त्री० पूर्णमासी, पूनो।
राकेश० ना० पु० चन्द्रमा।
राख० ना० स्त्री० भस्म, धूलि, खाक।
राखना० स० क्रि० रखना।
राखी० ना० स्त्री० यन्त्र जो श्रावणकी पूर्णिमाको हिन्दूलोग बाहु में बांधते हैं।
राग० ना० पु० गायकों में प्रसिद्ध, जैसे मलार बिहागादि, क्रोध, प्यार, मोह, विषयभोग।
रागना० अ० क्रि० अलापना।
रागमाला० ना० स्त्री० रागकी पुस्तक।
रागसागर० ना० पु० गीत जिस में कई एक राग निकलते हैं।
रागिनी० ना० रागकी स्त्री।
रागी० ना० स्त्री० गायक, प्रिया, गु० मागी, मोही, लालवर्ण।
राघव० ना० पु० समुद्र का मत्स्य विशेष, श्रीरामचन्द्रजी।
राघवेंद्र० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।
राचना० अ० क्रि० प्यारमें अटकना या लीन होना।

राचा॰ गु॰ प्यारमें अनुरागा।
राछ॰ ना॰ पु॰ कारीगरों का अस्त्र।
राज॰ ना॰ पु॰ राज्य, घरबनानेहारा कारीगर, थवई।
राजअंश॰ ना॰ पु॰ कर, महसूल, राजा का भाग।
राजकर॰ ना॰ पु॰ राजअंश।
राजकर्कटी॰ ना॰ स्त्री॰ खरबूजा, कद्दू।
राजकीय॰ गु॰ राजा का, राजाऊ।
राजकुमार॰ ना॰ पु॰ राजा का पुत्र।
राजगृह॰ ना॰ पु॰ राजाकाघर, नगर विशेष।
राजजम्बू॰ ना॰ स्त्री॰ जामन, फलेंद।
राजत्व॰ ना॰ पु॰ राजाका काम।
राजद्वार॰ ना॰ पु॰ राजभवन का फाटक।
राजधर॰ ना॰ पु॰ राजा का मन्त्री।
राजधानी॰ ना॰ स्त्री॰ जिस नगर में राजा वसता है, यथा अवध में लखनऊ।
राजन्॰ ना॰ पु॰ राजा।
राजनय॰ ना॰ पु॰ राजनीति।
राजना॰ स॰ क्रि॰ चमकना, शोभित होना।
राजनिभ॰ ना॰ पु॰ गोह।
राजनीति॰ ना॰ स्त्री॰ राज्यकरने की चाल, दस्तूर, कानून।
राजपति॰ ना॰ पु॰ राजा, हिन्दूलोगों की पदवी।
राजपद॰ ना॰ पु॰ राज्य, प्रभुता, बादशाही।
राजपुताना॰ } ना॰ पु॰ देश विशेष जिसमें
राजपुत्थान॰ } जयपुर जोधपुर आदि हैं।
राजपुत्र॰ ना॰ पु॰ राजाकापुत्र, जाति विशेष।
राजपुत्रिका॰ ना॰ स्त्री॰ राजाकी कन्या और रायलता और पीला।
राजपुत्री॰ ना॰ स्त्री॰ राजाकी कन्या, कड़ई तुम्बी।
राजपूत॰ ना॰ पु॰ राजाकापुत्र, जाति विशेष।
राजभवन॰ ना॰ पु॰ राजाका मंदिर।
राजभोग॰ ना॰ पु॰ राजकभोग, मध्याह्न में देवता के लिये नैवद्य।
राजमन्दिर॰ ना॰ पु॰ राजभवन।
राजमार्ग॰ ना॰ पु॰ राजपथ, सड़क, पैंड़ा।
राजयोग॰ ना॰ पु॰ जन्मकुण्डली में उच्च ग्रहों का होना यथा बृहस्पति मूर्तिमें इत्यादि।
राजयोग्य॰ गु॰ जो राजा के योग्य है।
राजराज॰ ना॰ पु॰ यक्षपति, कुबेर, राजाधिराज।
राजराणी॰ } ना॰ स्त्री॰ राजाकी स्त्री।
राजरानी॰ }
राजरोग॰ ना॰ पु॰ वह रोग जिससे बचने की आशा न हो, यथा क्षयरोग, मृगी।
राजला॰ ना॰ स्त्री॰ मीठीतुम्बी, लौकी।
राजलोक॰ ना॰ पु॰ राजभवन।
राजवंश॰ ना॰ पु॰ राजाकी संतान।
राजवंशी॰ ना॰ पु॰ राजाकी संतान, राजपूतों में जाति विशेष।
राजवल्ला॰ ना॰ स्त्री॰ गंधप्रसारा।
राजवल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ रायलता।
राजवृक्ष॰ ना॰ पु॰ सिरवाली।
राजशाला॰ ना॰ स्त्री॰ सभा, कचहरी।
राजशासन॰ ना॰ पु॰ राजा की आज्ञा और राज का दण्ड।
राजश्री॰ ना॰ स्त्री॰ राजाकी सम्पत्ति।
राजस॰ ना॰ पु॰ जो काम रजोगुण करके होवे, रजोगुण।
राजसिंहासन॰ ना॰ पु॰ राजा का सिंहासन।
राजसू॰ } ना॰ पु॰, यज्ञ विशेष जिसको
राजसूय॰ } केवल राजाधिराज करसक्ते हैं।
राजस्व॰ ना॰ पु॰ राजाकाधरा, कर, महसूल।
राजहंस॰ ना॰ पु॰ हंस विशेष, बतक।
राजा॰ ना॰ पु॰ भूपति, देशपति, बादशाह।
राजादन॰ ना॰ पु॰ खिरनी विशेष।
राजाहा॰ ना॰ स्त्री॰ खिरनी।

राजाधिराज॰ ना॰ पु॰ राजाओंमें जो बड़ा राजा।

राजिका॰ ना॰ स्त्री॰ पांति, अवली, समूह।

राजिल॰ ना॰ पु॰ सांप यथा राजिल डिंडिभो ड्यमर।

राजी॰ ना॰ स्त्री॰ पंक्ति, पांति।

राजीव॰ ना॰ पु॰ कमल, मछली, पानी, च क्षमा, मोती।

राजीवगण॰ ना॰ पु॰ कमलोंका समूह।

राजेश्वर॰ ना॰ पु॰ महीपति, बादशाह।

राज्य॰ } ना॰ पु॰ अधिकार देश, राज
राज्यपद॰ } काज, प्रभुताई, बादशाहत।

राटो॰ ना॰ स्त्री॰ चौकी वाली बुंदेलखण्ड में।

राठेर॰ ना॰ पु॰ शूरसेन देश।

राठौर॰ ना॰ पु॰ राजपूतोंकी जाति विशेष।

राड़ा॰ ना॰ पु॰ क्षत्रियों में जाति विशेष।

राढ॰ ना॰ पु॰ गौड़देश का एक राढ जो गंगाके पश्चिममेंहै, बड़ा।

राढी॰ ना॰ पु॰ राढ देश का ब्राह्मण, बड़ी तरकारी।

राणा॰ ना॰ पु॰ राजपूतकी जाति विशेष।

राणी॰ ना॰ स्त्री॰ रानी।

रात॰ ना॰ स्त्री॰ रात्रि निशा।

रातना॰ स॰ क्रि॰ रंगदेना, अ॰ क्रि॰ रचना।

राता॰ गु॰ रक्त, लाल जो रँगागया, जो राचा।

रात्रि॰ ना॰ स्त्री॰ रजनी, रात, निशा।

रात्रिचर॰ ना॰ पु॰ निशाचर, भूत प्रेत, चोर, उलूकादि।

रात्र्यन्ध॰ गु॰ जो रात्रि में नहीं देखता है यथा उलूक।

राद॰ } ना॰ पु॰ पीब, मवा।
राध॰ }

राधा॰ ना॰ स्त्री॰ वृषभानसुता, नीति, जाति विशेष।

राधानगरी॰ ना॰ स्त्री॰ रेशमीवस्त्र जो राधा नगरमें बनता है।

राधिका॰ ना॰ स्त्री॰ वृषभानुसुता, कृष्णप्रिया।

राना॰ ना॰ पु॰ राय।

रानी॰ ना॰ स्त्री॰ राजा की स्त्री॰, राणी।

राब॰ ना॰ स्त्री॰ जूसी विशेष, वस्तु विशेष जिससे शक्कर बनती है।

राबड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ रबड़ी भोजन विशेष।

राम॰ ना॰ पु॰ परशुराम, श्रीरामचन्द्र जी, श्रीबलरामजी, गु॰ ३।

रामकहानी॰ ना॰ स्त्री॰ रामायण, लम्बा वृत्तान्त।

रामकली॰ ना॰ स्त्री॰ रागिनी विशेष।

रामचन्द्र॰ ना॰ पु॰ श्रीराम, दशरथपुत्र।

रामजनी॰ ना॰ स्त्री॰ नाचनी, वेश्या, वर्ण विशेष।

रामठ॰ ना॰ पु॰ हींग।

रामतुरई॰ ना॰ स्त्री॰ भींडी, तरकारी विशेष।

रामदुहाई॰ ना॰ स्त्री॰ राम की शपथ।

रामदूत॰ ना॰ पु॰ श्रीहनुमान्जी आदिक।

रामफल॰ ना॰ पु॰ कमरख।

रामराम॰ ना॰ पु॰ प्रणाम या सलाम विशेष।

रामसर॰ ना॰ पु॰ पौधा विशेष, नरकट विशेष।

रामसेनक॰ ना॰ पु॰ चिरायता।

रामानन्दी॰ ना॰ पु॰ वैरागी, रामानन्द के मतके।

रामायण॰ ना॰ पु॰ रामधाम, राममार्ग, राम कहानी, ग्रन्थ विशेष।

रामावत॰ ना॰ पु॰ वैरागी, जाति विशेष का मत।

राय॰ ना॰ पु॰ राजा, राणा।

रायता॰ ना॰ पु॰ कद्दू या रामतुरई का दही में डाल के जो बनाते हैं।

रायबांस॰ ना॰ पु॰ बांस विशेष।

रायबेलि॰ ना॰ स्त्री॰ पुष्पविशेष।

रायरायान्० ना० पु० राजाधिराज।
रायलता० ना० स्त्री० पुष्प, वृक्ष विशेष।
रारि० ना० स्त्री० विरोध, लड़ाई, झगड़ा।
राल० ना० स्त्री० धूना।
राव० ना० पु० राजकुमार, राजा, राय।
रावचाव० ना० पु० विलास, आनन्द।
रावटी० ना० स्त्री० तम्बू विशेष।
रावण० ना० पु० लंकेश, राक्षसपति विशेष।
रावणारि० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।
रावणी० गु० जो रावण से सम्बन्ध रखता है, ना० पु० मेघनाद।
रावत० ना० पु० शूर्मा, वीर, सर्दार।
रावरा० } रावरो० } सर्व० तुम्हारा, आपका।
रावी० ना० स्त्री० नदी विशेष जो पंजाब में है।
राशि० ना० स्त्री० ढेर, समूह, मेषादि १२।
राश्यंतर० ना० पु० एकराशि से दूसरी राशि तकका समय।
राष्टी० ना० स्त्री० बड़ी कटार।
राष्ट्र० ना० पु० बसाहुआ देश।
रास० ना० पु० गोपियों के साथ श्रीकृष्णचन्द्रजी की क्रीड़ा पर्वविशेष, राशि ना स्त्री० वाघ सन्दरा लेपाला।
रासचक्र० ना० पु० लग्नमण्डल।
रासधारी० ना० पु० रासकरनेहारे।
रासभ० ना० पु० गधा, खर।
रासभी० ना० स्त्री० गदही, खरकी स्त्री।
रासी० गु० घोड़ा इत्यादि जो न भला हो न बुरा मध्यम, ऐसा वैसा।
रासना० } रास्ना० } ना० स्त्री० जो वृक्षपर जमता है यथा बांदा।
राहना० स० क्रि० चक्की में दांत बनाना।
राहु० ना० पु० आठवां ग्रह, दैत्य विशेष जो चन्द्रमा और सूर्यको ग्रासता है।
राक्षस० ना० पु० असुर विशेष कै यार।
राक्षसी० ना० स्त्री० राक्षसकी स्त्री।
राक्षसीवेला० ना० स्त्री० संध्या उपरांत मुहूर्त।
रिक्त० गु० खाली, शून्य।
रिचा० ना० स्त्री० ऋचा, वेदमन्त्रका नाम।
रिझवैया० ना० पु० रीझने हारे।
रिझाना० स० क्रि० प्रसन्न करना, खुशकरना, सताना, दुःखदेना।
रिताना० स० क्रि० रीता कराना, छूछा कराना दुर्गंध दूर कराना।
रितु० ना० स्त्री० ऋतु।
रितुराज० ना० पु० ऋतुराज, बसन्त।
रित्तम० ना० पु० मद्य विशेष।
रिद्धि० ना० स्त्री० सम्पत्ति, बढ़ती, वृद्धि, ऋद्धि।
रिपु० ना० पु० वैरी, शत्रु, मुद्दई।
रिपुता० ना० स्त्री० शत्रुता, वैर, अदावत।
रिपुंजय० गु० शत्रुजित्, अतिशर्मा।
रिपुघाक० ना० पु० इन्द्र।
रिपुहा० ना० पु० शत्रुघ्न, गु० शत्रुजित्।
रिषि० ना० पु० ऋषि।
रिषिमित्र० ना० पु० ऋषिमित्र।
रिष्ट० ना० पु० खड्ग, गुड़ जो निष्ट है।
रिष्टपुष्ट० गु० मोटा, स्थूल।
रिस० ना० स्त्री० कोप, क्रोध, खिसियाहट।
रिसना० अ० क्रि० धीमें टपकना।
रिसहा० गु० क्रोधी।
रिसाते० गु० क्रोधयुत, क्रोध करते।
रिसाना० } रिसियाना० } अ० क्रि० अप्रसन्न या क्रोधित होना, चिढ़ना, दुःखित होना।
रिक्ष० ना० पु० ऋक्ष, रीछ।
रिक्षराज० } रिक्षेश० } ना० पु० ऋक्षराज, जाम्बवतादि।
री० अव्य० रे।
रींगना० अ० क्रि० कँटचाल, रेंगना।
रींधना० स० क्रि० पकाना।
रीछ० ना० पु० ऋक्ष, भालु।
रीझ० ना० स्त्री० चाह, इच्छा, सुरत, तृप्ति।

रीझना० अ० क्रि० प्रसन्न वा तृप्तहोना ।
रीठा० ना० पु० फल विशेष ।
रीठी० ना० स्त्री० छोटा रीठा ।
रीढ़० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी ।
रीता० गु० खाली, शून्य ।
रीति० ना० स्त्री० चाल, चलन, प्रकार, कानून, दस्तावदह ।
रीर० ना० रीढ़, रीर ।
रिरियाना० अ० क्रि० बालककी रीतिसे रोना, फुफकुड़ाना, स० क्रि० गिड़गिड़ाना, खुशामद करना ।
रीस० ना० स्त्री० क्रोध ।
रुक० ना० पु० रोक, उनियाहट ।
रुकना० अ० क्रि० अटकना, बन्दहोना, ठहरना ।
रुकवैया० ना० पु० अटकाऊ ।
रुकाना० स० क्रि० अटकाना, ठहराना, रोकवाना ।
रुकाव० ना० पु० } अटकाव, ठहराव ।
रुकावट० स्त्री० }
रुक्म० ना० पु० सुवर्ण, चांदी, रुक्मिणीका भाई ।
रुक्मिणी० ना० स्त्री० श्रीकृष्णचन्द्रजीकी पट रानी विशेष ।
रुक्मकेश० ना० पु० रुक्मिणीजीका भाई ।
रुख० ना० पु० सनेत इशारह, आज्ञा, मुह ।
रुखाई० ना० स्त्री० घुड़की, तिखाई ।
रुखान० ना० पु० बढ़ई का अस्त्र विशेष ।
रुखाना० अ० क्रि० रूखापन होना, सुखाना, सूखना ।
रुखानी० ना० स्त्री० छोटा रुखान, गु० सूखीहुई ।
रुग्न० गु० टेढ़ा, रोगी ।
रुच० ना० स्त्री० रुचि ।
रुचना० अ० क्रि० भावना, अच्छालगना ।
रुचि० ना० स्त्री० मनोभिलाष, भोजनमें प्रवृत्ति, चाहत, शौक, गोरोचना ।
[illegible]० ना० पु० साईंदीखान, सोंचरलोन ।

रुज० ना० पु० रोग विकार ।
रुट्० ना० पु० क्रोध, गुस्सा ।
रुणि० ना० पु० शब्द ।
रुणित० गु० गुंजारित, शब्द करता भया ।
रुण्ड० ना० पु० शिर रहित शरीर ।
रुदन० ना० पु० रोदन, रोना ।
रुदित० गु० रोताहुआ ।
रुद्ध० गु० छेंका, रुका, बँधा ।
रुद्र० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।
रुद्राणी० ना० स्त्री० पार्वती ।
रुद्रावतार० ना० पु० श्रीहनुमान्जी ।
रुद्री० ना० स्त्री० ११ बेलपत्र, ११ शीशीम ।
रुधिर० ना० पु० रक्त, लोहू, खून ।
रुधिरा० ना० स्त्री० केसर, जाफरान ।
रुपना० अ० क्रि० डटना, अड़ना ।
रुपया० ना० पु० रुपैया ।
रुपहरा } गु० रूपेका, जो रूपेसे बना है ।
रुपहला }
रुपी० गु० डगीहुई, अड़ी ।
रुपैया० ना० पु० चांदीकामुद्रा, १६ आनेका ।
रुरुक० ना० स्त्री० खुरासानी अजवाइन ।
रोखाना० स० क्रि० रोकना, दुखदेना ।
रुष्ट० गु० क्रुद्ध, क्रोधित ।
रुसना० अ० क्रि० रिसाना ।
रुह० ना० पु० उत्पन्न, जन्मित ।
रुहा० ना० स्त्री० कुम्भी तालाबकी ।
रुहो० ना० स्त्री० दूब घास ।
रूक्ष० गु० रूखा, रूढ़ा, खरखरा ।
रुक्षिगन्धक० ना० पु० सोचरलोन ।
रुइया० ना० पु० रुईका व्योपारी ।
रुई० ना० स्त्री० जो कपास से निकलती है ।
रूघट० ना० पु० मैल, मल, बाल, रोम ।
रूधना० स० क्रि० घेरलेना, अ० क्रि० व्याकुलता ।

रूख० ना० पु० वृक्ष, पेड़, बृक्ष।
रूखड़० ना० पु० योगी विशेष।
रूखड़ा० ना० पु० छोटा वृक्ष।
रूखन० ना० पु० पलुआ, रुखान।
रूखा० गु० सूखा, निरा, रुक्ष, स्नेहरहित।
रूखाई० ना० स्त्री० खरखराहट, खराई।
रूखानी० ना० स्त्री० टाकी, छनी।
रूखा० ना० स्त्री० खावर, गु० सूखी।
रूखे० गु० सूखे, बिनारस, उदास।
रूचना० अ० क्रि० रुचना।
रूच्य० गु० मनभावित, चाहता।
रूछ० गु० रुक्ष।
रूज० ना० पु० कीट विशेष।
रूझा० गु० जन्तु वा पक्षी जिसको रुज ■ ताता है।
रूठना० अ० क्रि० बिगड़ना, झगड़ना, रिसाना, मानकरना।
रूठनी० ना० स्त्री० लजरू, गु० मानवती, झगड़ालू।
रूठा० गु० रिसाना बिगड़ाहुआ।
रूठारूठी० ना० स्त्री० परस्पर बिगाड़।
रूढ़० ना० पु० कड़ा, करड़ा, कठोर।
रूढ़ि० न ■ पु० वह संज्ञा जो मिश्रित न हो।
रूप० ना० पु० आकार, मुख, चित्र ढब, चाल, सुन्दरता, तुल्य, शोभा।
रूपक० ना० पु० सदृश, तुल्य समान।
रूपजस्त० ना० पु० रांगा।
रूपमञ्जरी० ना० स्त्री० अप्सरा, सदा सुहागिन फूल विशेष।
रूपर्द्द० गु० स्वरूपवश्य
रूपरस० ना० पु० रूपा जो जलाया गया, रूप और रस।
रूपराशि० ना० स्त्री० सुन्दर स्त्री, अयन्त
रूपवती० सुन्दरी।
रूपवान्० गु० सुन्दर स्वरूप, सुघड़।
रूपहला० गु० जो रूपा से बना है।

रूपा० ना० पु० चांदी, रजत, ना० स्त्री० वेश्या, रूपवती।
रूपान्तर० ना० पु० दूसरारूप।
रूपी० गु० आकारवान्।
रूमी० ना० पु० रूमदेशीय मनुष्यादि।
रूमीमस्तगी० ना० स्त्री० औषधि विशेष।
रूरा० गु० अच्छा, सुन्दर।
रूसना० अ० क्रि० रिसाना, रूठना।
रूसी० ना० स्त्री० शिरका मैल, ना० पु० रूस देशीय।
रूक्षक० ना० पु० बाला औषधि विशेष।
रे० अव्य० अरे, हो।
रेंक० ना० स्त्री० गदहे का शब्द।
रेंकना० अ० क्रि० रेंकरना।
रेंगना० अ० क्रि० चलना, धीर चाल।
रेंट० ना० पु० रहट रेंटा।
रेंटा० ना० पु० पोटा, सिनक, नटा।
रेंड़० ना० पु०
रेंडा० ना० स्त्री० } एरण्ड वा उसका बीज।
रेंदा० ना० स्त्री० आगेररडी।
रेंदी० ना० स्त्री० छोटा खरबूजा।
रेख० ना० स्त्री० लकीर चिह्न, मारग, ललाट।
रेखना० स० क्रि० लकीरकरना, चिह्न बनाना।
रेखा० ना० स्त्री० रेख, लकीर।
रेखागणित० ना० पु० गणित विशेष।
रेखागति० ना० स्त्री० कर्मगति, प्रारब्धकी चाल।
रेचक० ना० पु० वह औषधि जिस से दस्त आते हैं, योग में वह क्रिया जिससे पवन को उतारते हैं।
रेचनी० ना० स्त्री० वनस्पती जो दस्त उपजावे।
रेचा० ना० स्त्री० कपाला।
रेट० ना० स्त्री० चिह्न, निशान।
रेणु० ना० स्त्री० धूलि प्रादि।
रेणुका० ना० स्त्री० परशुराम की माता गंगा जीका रेता, धूलि, बालू।

रेणुपित्तहा० ना० पु० पित्तपापड़ा।
रेत० ना० पु० वीर्य, बीज, बालू, ढीला।
रेत ० ना० पु० वीर्य, कामदेव।
रेतना० स० क्रि० सोहनकरना, छीलना, खोदना।
रेतल० } गु० जहां बहुत रेतहोवे।
रेतला० }
रेता० ना० पु० बालू, रेत, गु० छीलाभया।
रेताई० ना० स्त्री० रेतने का काम या दाम।
रेतियाना० स० क्रि० रेतना, चिकना करना।
रेती० ना० स्त्री० जहां अधिक रेतहो, रेतने का हथियार।
रेतीला० गु० बालूका, किरकिरा।
रेतुआ० ना० पु० रेतनेहारा।
रेफ० ना० पु० रकार के आगे का वर्ण।
रेर० ना० पु० शोर, हल्ला।
रेलना० स० क्रि० ठेलना, ढकेलना, पेलना।
रेलपेल० ना० स्त्री० बहुतात, सरसाई, भीड़।
रेला० ना० पु० धक्का, बार, पशुओं की पांति, दङ्गल, पेला, झपट, ठला।
रेवड़ी० ना० स्त्री० तिलमिश्रित मिठाई विशेष।
रेवत० ना० पु० राजा विशेष, रेवती का बाप।
रेवती० ना० स्त्री० सत्ताईसवां नक्षत्र, श्रीबलदेवजी की पत्नी।
रेवतीरमण० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
रेवन्चीनी० } ना० स्त्री० औषधि विशेष।
रेवन्दचीनी० }
रेवा० ना० पु० नर्मदानद, ना० स्त्री० नदी विशेष।
रेह० ना० स्त्री० रेह।
रेहटू० ना० पु० खटिया।
रेही० ना० स्त्री० रेह।
रेहू० ना० स्त्री० ऊसर भूमिकी मिट्टी।
रैंकना० अ० क्रि० रेंकना।
रैन० } ना० स्त्री० रात, निशा।
रैनि० }
रैनिचर० ना० पु० निशाचर।
रैनिवर्ण० गु० काला, श्याम।
रैवत० ना० पु० मनु विशेष।
रोआई० ना० स्त्री० विलाप, हाहाकार।
रोआना० स० क्रि० रोलाना, सताना, कुढ़ाना, अ० क्रि० कुढ़ना, सिसियाना।
रोआं० ना० पु० रोम।
रोंगटी० ना० स्त्री० झगड़ा, छल, ठगविद्या।
रोंदना० स० क्रि० कुचरना।
रोपना० स० क्रि० लगाना, जमाना, गाड़ना।
रोक० ना० स्त्री० टोक, अटक, विघ्न, नकद।
रोकड़० ना० स्त्री० जो रुपया अपने पास जमा है।
रोकड़िया० ना० पु० रोकड़ रखनेहारा।
रोकथम० ना० स्त्री० ओट, आड़, बेड़ा।
रोकना० स० क्रि० घेरना, थामना, छेकना, अटकाना, बालवाल्ना।
रोकू० ना० पु० रोकनेहारा।
रोग० ना० पु० व्याधि, दुःख, विकार, बीमारी।
रोगरिपु० ना० पु० वैद्य, धन्वन्तरि, औषधि।
रोगहा० } गु० वैद्य, औषधि।
रोगहारी० }
रोगाह्वय० ना० पु० कूट औषधि।
रोगिया० } गु० व्याधी, दुःखी, बीमार, मरीज।
रोगी० }
रोच० ना० पु० खुशी।
रोचक० ना० पु० पाचक, जो रुचि उपजावे।
रोचन० ना० पु० तिलक, गोरोचन, मनभावन।
रोचनवक्त्र० ना० पु० कपाला।
रोचना० ना० पु० गोरोचना, तिलक, अ० क्रि० रुचना, भावना।
रोचिष० ना० पु० मनु विशेष।
रोज० } ना० पु० विलाप, रोना।
रोजड़ा० }

रोट० } नाο पुο मोटी रोटी, श्रीहनुमानजी
रोटा० } का मोटी रोटीका नैवेद्य।
रोटी० नाο स्त्रीο भोजन विशेष।
रोड़ा० नाο पुο बड़ा कंकर।
रोड़ी० नाο स्त्रीο छोटा कंकर।
रोदन० नाο पुο रोवाई, आंसू निकलना।
रोदसी० नाο स्त्रीο भूमि, आकाश।
रोध० नाο पुο तीर, तट, रोक, विरोध।
रोधी० गुο रोकनेहारा, घेरनेहारा, तटवाला।
रोना० अο क्रिο आंसूडालना, विलापना, उदास होना, नाο पुο विलाप, रोदन, शोक।
रोपक० नाο गुο जो रोपणकरे।
रोपण० नाο पुο वृक्षादि का लगाना।
रोपना० सο क्रिο रोपना, रोकना, अटकाना।
रोम० नाο पुο शरीर के बाल, ऊन।
रोमकर्ण० नाο पुο चौगड़ा, खरगोश।
रोमकूप० नाο पुο रोमकी जड़।
रोमपट० } नाο पुο रोमोंवस्त्र, यथा, कम्मल,
रोमवस्त्र० } दुशाला इत्यादि।
रोमश० नाο पुο डौंड़ा, तमालपत्र, सूअर।
रोमशफला० नाο स्त्रीο डौंड़ा।
रोमहर्षण० } नाο पुο रोम खड़े होना,
रोमाञ्च० } गद्गद।
रोरी० नाο स्त्रीο जिसका शिरमें टीका लगाते हैं, रोली।
रोलना० सο क्रिο रन्दाकरना, चिकनाना, धुना।
रोली० नाο स्त्रीο रोरी, चावल और हल्दी और फटकरी की मिलौनी जिसका लाल तिलक माथेपरलगाते हैं।
रोवना० अο क्रिο रोना, गुο रोनेहारा।
रोश० } नाο पुο क्रोध, दुःख,गुस्सह।
रोष० }
रोषण० नाο पुο कासला, पारा, क्रोध।
रोष० नाο पुο रीस।
रोसना० अο क्रिο रूठना।
रोहट० नाο स्त्रीο रोदन।
रोहण० नाο पुο राजा विशेष, रोहिणी का पिता।
रोहिणी० नाο स्त्रीο श्रीबलदेवजी की माता, चौथा नक्षत्र, बुधकी माता, हर्र, कुटकी।
रोहित० नाο पुο मत्स्य विशेष।
रोहिताश्व० नाο पुο राजा हरिश्चन्द्रका पुत्र।
रोहित्थ० नाο पुο मेथी।
रोहिये० सο क्रिο धारण करिये।
रोही० नाο पुο बरगद।
रोहू० नाο पुο मत्स्य विशेष।
रोहेलखण्ड० नाο पुο बांसबरेली के आस पासका देश।
रौंदना० } सο क्रिο पांवसे खूंदना या पांव
रौंधना० } से मींजना वा मसलना या मलना।
रौताई० नाο स्त्रीο लड़ाई, समर, युद्ध।
रौद्र० नाο पुο घाम, क्रोध, धूप, गुο भयानक, कठिन, नाο पुο शृंगारादि नवरस में से एक का नाम।
रौप्य० नाο पुο चांदी, रजत।
रौर० नाο पुο रौला, जल।
रौरव० नाο पुο नरकका खण्ड विशेष।
रौरा० सर्वο तुम्हारा।
रौला० नाο पुο धूम धाम, बखेड़ा, हुल्लड़।
रौव्य० नाο पुο मनु विशेष।
रौहिणीय० } नाο पुο श्रीबलदेवजी, बुध।
रौहणेय० }

[ल]

लकड़० नाο पुο काष्ठ, काठ, लट्ठ।
लकड़हारा० नाο पुο लकड़ी बेचनेहारा।
लकड़ा० नाο पुο गिरर, लकड़ीका बड़ाटुकड़ा।
लकड़ी० नाο स्त्रीο लाठी, काष्ठ, इन्धन, गुο कड़ा, कठिन।
लकीर० नाο स्त्रीο रेखा, धारी, डंडीर।
लकुट० नाο पुο छड़ी, लाठी।
लकुच० नाο पुο बड़हल।

लख० ना० पु० मायाका पसार, गु० जो देखा जावे मौजूदात, लाख।

लखन० ना० पु० लषण, लक्ष्मण।

लखनऊ० ना० पु० अवधदेश की राजधानी।

लखना० स० क्रि० देखना, समझना।

लखपति० }
लखपती० } गु० धनी, भाग्यवान्, जिस के पास लाखों रुपया हो।

लखलुट० गु० उड़ाऊ।

लखा० ना० पु० लाखों।

लखाऊ० गु० जनाऊ, दिखाऊ।

लखिया० ना० पु० देखनहारा।

लखेरा० ना० पु० लहेरा, लाख चढ़ानेहारा।

लखौटा० गु० जिसमें लाख लगाई गई।

लग० अव्य० तक, पर्यंत, समीप, ना० स्त्री० छड़ी।

लगचलना० अ० क्रि० साथ साथ चलना, जल्द चलना।

लगड़० ना० पु० पक्षी विशेष।

लगन० ना० स्त्री० लग्न।

लगना० अ० क्रि० होना, सटना, पचना, स्पर्शहोना, भिड़ना, मिलना, जलना, गु० लगुआ ना० पु० लगाव।

लगभग० अव्य० पास पास, निकट।

लगातार० गु० एकपर एक ताबड़तोड़।

लगाना० स० क्रि० उतराना, वासकरना, मिलाना, मिलाना, बन्दकरना, खेलना, बांधना, चिपकाना, चुगलखोरी करना।

लगाव० ना० पु० सहार, मेल, सम्बन्ध।

लगावट० ना० स्त्री० मिलान, गठाव।

लगुड़० ना० पु० लाठी।

लगुआ० }
लगूआ० } ना० पु० यार, धगड़।

लग्गा० ना० पु० स्नेह, माथा, बड़ा बांस।

लग्गी० ना० स्त्री० लोगबाग, लाठी।

लग्न० ना० स्त्री० निमित्त, पत्र, राशिका उदय काल, प्रेम, मित्रता, विवाह का दिन, मुहूर्त्त।

लग्नेष्ट० ना० पु० लग्नका ठीक।

लग्नेष्टित० गु० लग्न विचारित।

लग्नोत्सव० ना० पु० विवाहका आनन्द।

लघिमा० ना० स्त्री० सिद्धिविशेष।

लघिष्ठ० गु० पास, पासवाला, लगाहुआ।

लघुता० ना० स्त्री० छोटाई, हलकापन और शीघ्रता, जल्दी, रामचन्द्रिकाया यथा (कोटि भांतिन पौनते मनते महालघुता लसै, बैठके ध्वज अग्र श्रीहनुमंत अतक ज्यों हँसै)।

लंक० ना० पु० कटि, लङ्का, गु० ढेर, बहुत।

लंकना० ना० पु० लम्बा, चौगड़ा, शशा।

लङ्कनायक० }
लङ्कप० } ना० पु० लङ्काका राजा, रामचन्द्रिकाया यथा (लङ्कनायक को विभीषण देवदूषणको दहै)।

लंका० ना० स्त्री० उपद्वीप विशेष।

लङ्काधि० }
लङ्कापति० } ना० पु० रावण, लङ्काकाराजा।

लङ्किनी० ना० स्त्री० निशाचरी विशेष।

लङ्केश० }
लङ्केश्वर० } ना० पु० रावण, लंका का राजा।

लंग० }
लंगड़ा० } गु० पङ्गु, अपाहज।

लंगड़ाना० अ० क्रि० लंगकरना।

लंगर० ना० पु० नौकादि के ठहराने के लिये बड़ाभारी लोह, लंगड़ा, ढीठ।

लंगरी० ना० स्त्री० थाली।

लंगूचा० ना० पु० खाने की वस्तुविशेष।

लंगूर० ना० पु० वानरविशेष, हनुमान्जी।

लंगोट० }
लंगोटा० } ना० पु० काछ बांधने का योग वस्त्र, कौपीन।

लंगोटिया० ना० पु० जो लड़काईका यार है।

लंगोटी० ना० स्त्री० लंगोट।

लंघन० ना० पु० उपास, फाका, उल्लंघन, न मानना, नांघना।

लंघना० अ० क्रि० उलंघना, फांदना, नांघना।

लर्घनी० ना० स्त्री० उपासी, गु० उपासा, भूखा।
लचक० ना० स्त्री० विमकाहट।
लचकना० अ० क्रि० टेढ़ा होना।
लचका० ना० पु० धक्का, झोंक, नार विशेष।
लचकाना० स० क्रि० टेढ़ाकरना, धक्का देना, झुकाना।
लचना० अ० क्रि० टेढ़ाहोना।
लचलचाना० अ० क्रि० लजलजहोना, चिमड़ा होना।
लचर० ना० पु० धाका।
लचाना० स० क्रि० टेढ़ा करना।
लच्छा० ना० पु० फेंटी।
लच्छन० ना० पु० लक्षण।
लजलजा० गु० रासलसा, चिपचिपा।
लजलजाना० अ० क्रि० पिलपिला होना।
लजवाना० स० क्रि० सकोच कराना, शरमाना।
लजाना० अ० क्रि० सकोचना लज्जितहोना।
लजारू० } ना० स्त्री० लजावती पौधा
लजालू० } विशेष, गु० सकोची, लजीला।
लजियाना० अ० क्रि० लजाना।
लजीला० गु० लाजवन्त सकोची।
लज्जा० ना० स्त्री० लाज, सकोच हया।
लज्जावान्० गु० सकोचित लाजयुक्त।
लज्जित० अ० क्रि० लजायगा।
लज्जिनिका० ना० स्त्री० लजालू, बहया।
लज्जित० सकोचित, लाजयुक्त।
लट० ना० स्त्री० केश जो उलझगया हे।
लटक० ना० स्त्री० हिलन, मारवाड़ा प्रकार विशेष।
लटकन० ना० पु० गहना विशेष जो नर्थ में पड़ता है, फल विशेष, पक्षी विशेष, चौथी।
लटकना० अ० क्रि० हिलना।
लटका० ना० पु० टोना, झाड़फूंक, टोटका, चुटकुला।
लटकाना० स० क्रि० हिलगाना, टांगना।
लटकाव० ना० पु० टंगाव।
लटपटा० गु० चचल, छिलाड़, पगड़ी जो अनरीति से बान्धी है।
लटपटाना० अ० क्रि० लड़खड़ाना, टाघरहाना।
लटपटी० ना० स्त्री० टोमराई, लड़कई।
लटा० गु० दुर्बल, दुबला, पतला, सड़ा, लुच्चा।
लटाई० ना० स्त्री० परेती चर्खी, गु० दुबलापना
लटापटा० गु० ऐसा वैसा।
लटूरिया० } ना० स्त्री० छार केश जिन में
लटूरा० } लट पड़जाती है।
लटोरा० ना० पु० पक्षी विशेष।
लट्टू० ना० पु० भौंरा, फगी, मोहित।
लट्टूहोना० अ० क्रि० किसीपर मोहित होना।
लठ० ना० पु० सोंटा, लाठी।
लठालठी० ना० स्त्री० परस्परलाठी की लड़ाई।
लठियाना० स० क्रि० लगलगी करना, लाठी से पीटना।
लठ्ठर० ना० पु० गु० ढाला, ठढा।
लड़० ना० स्त्री० पद, पक्ति, लड़ी, यथा परत।
लड़कपन० ना० पु० शैशव, बालपना, लड़काई।
लड़कबुद्धि० ना० स्त्री० चिविक्षिपन, लड़के कीसी बुद्धि।
लड़का० ना० पु० बालक, पुत्र, बच्चा।
लड़काई० ना० स्त्री० } लड़कपन, बालकता,
लड़कापन० ना० पु० } शिशुता।
लड़खड़ाना० अ० क्रि० डगमगाना, लड़बड़ाना।
लड़ना० स० क्रि० झगड़ना, युद्धकरना।
लड़पड़ाना० अ० क्रि० लड़खड़ाना।
लड़ाई० ना० स्त्री० युद्ध, समर, झगड़ा।
लड़ाक० } गु० झगड़ालू, युद्धशाली, वीर।
लड़ाका० }

लड़ाना० स० क्रि० लड़ाई वा युद्ध करवाना, और लाड़ करना।
लड़ियाना० स० क्रि० पिराना, गूथना।
लड़ी० ना० स्त्री० मोतियों की सरैंच।
लड़ैता० गु० दुलार, बहुतप्यारा, ढीठ।
लड्डू० ना० पु० मोदक जो मोठआदिसे बनते हैं, मिठाई विशेष।
लढ़ा० ना० पु०
लढ़िया० स्त्री० } छकड़ा, लद्दू।
लढ़ी० ना० स्त्री० छागड़कड़ा, लढ़िया।
लण्ठ० ना० पु० मूर्ख।
लण्ड० ना० पु० लिंग, लौड़ा।
लण्डूरा० गु० लुण्डा बाड़ा, बन्धुहीन, अनाथ।
लत० ना० स्त्री० बुरीचाल, आदत।
लतना० स० क्रि० पाड़ी वा पाड़ेके साथ मसग होना।
लतरी० ना० स्त्री० पुरानी जूता, दालहनविशेष।
लता० ना० स्त्री० बल्ल, प्रियंगु, दाखका पाधा।
लताड़ना० स० क्रि० दौन्धूप कराना, हल करना, तुच्छ करना।
लताना० स० क्रि० पाडी से पाडेका मसग कराना।
लतिका० न० स्त्री० लता।
लतियां० गु० जिसको चालबुरी है, कुकर्मी।
लतियाना० स० क्रि० लात से मारना।
लती० गु० लतिया।
लतुआ० ना० पु० पटाकपड़ा।
लत्ता० ना० पु० पुरानाकपड़ा, चीथड़ा, पात, लात, रामचरित्रका (हनूमत लता हरी दई भूल्यो, लत्ता कपनालाहिल इन्द्र फूल्यो,)।
लत्ती० ना० स्त्री० लटकती डोरी, तरंग में जो लात, घोड़े की लात।
लथड़ना० अ० क्रि० काचड़ आदि में भीगजाना।
लथेड़ना० स० क्रि० कावड़ से भिगादेना।
लदना० अ० क्रि० बाभिल वा भराहोना।
लदनिया० ना० पु० लादनेहारा, लदनहारा, लदाव।
लदान० ना० पु० बोझ, भराव, लदाव।
लदाना० स० क्रि० बोझना, भरना, लादना।
लदाव० ना० पु० लदान, बोझ।
लदुआ० ना० पु० जो लादाजाता है।
लप० ना० पु० हाथ, मुट्ठी, हथेली, पसर।
लपक० ना० स्त्री० चटक, भभक झलक, झपट।
लपकना० अ० क्रि० लहकना भभकना जैसे बन, झपटना झपकना।
लपका० ना० पु० झपट कुर्ने, बुरीचाल।
लपकाना० स० क्रि० किसी वस्तु के लेने को हाथ बढ़ाना।
लपकी० ना० स्त्री० तपची, टाका, भरके विशेष।
लपची० ना० स्त्री० मछली विशेष।
लपझप० गु० फुर्तीला, चपल।
लपट० ना० स्त्री० सुगन्ध महक दहक, मित्रा।
लपटना० अ० क्रि० चिपटना एटना, सिमटना, लड़ना।
लपन० ना० पु० मुखी।रसा वास नगार, सम्बन्ध।
लपटाना० स० क्रि० मिलाना, चिपटाना सटाना, सगाना जकड़ना।
लपटी० ना० स्त्री० लपसी।
लपलप० गु० भपभप।
लपाट०
लपाटिया० } गु० मिथ्यावादी, महाभूटा।
लपाड़ी० ना० स्त्री० मिथ्या, मृष,झूठ।
लपाड़ू० गु० लपाटिया।
लपेट० ना० स्त्री० पर्त लड़, घाट।
लपेटा० ना० स्त्री० बट।

लपेटना० स० क्रि० बाँधना, बेठन लगाना, लीपना।
लपेटवा० गु० लपेटागया।
लप्पा० ना० पु० कपड़ा जो बादले से बिना है।
लबड़सबड़० ना० पु० बकझक, झूठ सच।
लबड़ा० ना० पु० झूठा, बकी।
लबनी० ना० स्त्री० मिट्टी का पात्र जिसमें ताड़ी चुआते हैं।
लबलब० ना० पु० पथरी, हलद्द, उल्लू।
लबलबा० गु० चिपचिपा, लजलजा।
लबार० ना० पु० बकवादी, झूठा, गप्पी।
लबीं० ना० स्त्री० खांड का जलाव जब चीनी बनाने को पकाते हैं।
लबेदा० ना० पु० सोंटा, लठ विशेष।
लबेरा० ना० पु० फल वा वृक्ष विशेष, लभेरा।
लब्ध० गु० प्राप्त, उपार्जित।
लब्धि० गु० प्राप्ति।
लभेरा० ना० पु० वृक्ष वा उसका फल विशेष।
लभ्य० गु० मिलनहारा, मिलने के योग्य।
लमछड़ा० गु० ऊंचा, लम्बा।
लम्पट० गु० झूठा, असत्य, रसेरख, बुटखेल, परस्त्रीगामी, व्यभिचारी।
लम्ब० ना० पु० समूह, सुधीरेता, ऊचाव।
लम्बकर्ण० ना० पु० शशा, चौगड़ा, खरगोश।
लम्बा० गु० ऊंचा, दीर्घ, बड़ा।
लम्बाई० स्त्री० }
लम्बान० ना० पु० } ऊंचाई, दीर्घपन।
लम्बाना० स० क्रि० लम्बाकरना, बढ़ाना।
लम्बित० गु० जो लटकायागया।
लम्बियाकरना० अ० क्रि० कलोल करना, कुदकना।
लम्बी० ना० स्त्री० गु० ऊंची, बड़ी।
लम्बीसांसभरना० अ० क्रि० रोना, बिलाप करना।
लम्बू० गु० लम्बा।
लम्बोदर० ना० पु० श्रीगणेश जी।
लम्मा० ना० पु० चौगड़ा, शशा।
लय० ना० पु० प्रलय, नाश, टेर, ताल, स्वर, बिनाश, अत्यन्तस्नेह, ना० स्त्री० चितवन।
लर्रो० ना० पु० फर्रा, आगी।
ललक० ना० स्त्री० लहर, तरंग, नम्रता।
ललकना० अ० क्रि० चढ़ना, धावाकरना, नम्रता करना।
ललकाना० स० क्रि० झगड़ा उठाना, लड़ाना, नम्रकरना।
ललकार० ना० स्त्री० हांक, पुकार।
ललकारना० स० क्रि० पुकारना, हांकना और लड़ाई मांगना, प्रचारना।
ललगण्डा० ना० पु० बानर, कपि।
ललचाना० अ० क्रि० तरसना, जीलगारहना, स० क्रि० तरसाना।
ललना० ना० स्त्री० खिलाड़ नारि।
लला० ना० पु० छोकरा, लौंडा।
ललाट० }
ललार० } ना० पु० माथा, कपाल, प्रारब्ध, पेशानी।
ललित० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, गु० सुन्दर, अच्छा, लौकता भया।
ललिता० ना० स्त्री० स्त्री, अलबेल, देवी प्रसिद्ध श्रीराधिका की सखी विशेष।
ललिया० ना० स्त्री० स्त्री।
ललियाना० स० क्रि० फुसलाना, बहलाना, अ० क्रि० गिड़गिड़ाना, तमतमाना।
लल्ली० ना० स्त्री० छोकरी, लौंडी, लड़की, गु० ढीला, नपुंसक मनुष्य।
लल्लोपत्तो० ना० पु० चापलोसी, खुशामद।
लव० ना० पु० अंश, क्षण, श्रीसीताजी का योग पुत्र विशेष।
लवंग० ना० पु० लौंग, वृक्ष विशेष।
लवण० ना० पु० लोन, नमक।
लवणसिन्धु० ना० पु० खारी समुद्र।
लवणाम्बु० ना० पु० समुद्र, खारीपानी।
लवणासुर० ना० पु० लवनासुर, दैत्यकानामहै।

लवणोद० ना० पु० समुद्र खारीजलका।
लवमात्र० गु० अव्य० थोड़ीदेर, पलभर।
लवा० ना० पु० बटेर पक्षी।
लवाई० ना० स्त्री० थोड़े दिनकी व्यानीगाय।
लष्टम्पष्टम्० गु० उलटापलटा।
लशुन० ना० पु० लहसुन।
लषण० ना० पु० श्रीलक्ष्मणजी।
लषणपुर० ना० पु० लखनऊ नगर विशेष।
लस० ना० स्त्री० चिपचिपाहट।
लसकना० अ० क्रि० लजलजा होजाना, गीला होना।
लसना० अ० क्रि० सोहना, सजना, फबना, चमकना।
लसलसा० गु० चिपचिपा, लसवाला।
लसलसाना० अ० क्रि० लसलसाहोना।
लसित० गु० शोभित, साक्षात्।
लसियाना० अ० क्रि० चिपचिपाहोना, लस लसा होना।
लसी० ना० स्त्री० लस।
लसीला० गु० जिसमें लसहोवे।
लसोड़ा० ना० पु० फल विशेष जिस में लस होती है।
लस्सी० ना० स्त्री० लसी, दूध और पानी।
लहंगा० ना० पु० घेंघरा, घंघरिया।
लहक० ना० स्त्री० चमक, झलक।
लहकना० अ० क्रि० हिलना, चमकना, भभकना, पिचकारी खाना।
लहकाना० स० क्रि० पिचकारी से मारना, चमकाना, दहकाना, दरकाना।
लहकारना० स० क्रि० पुचकारना, थपथपाना करना।
लहकारट० ना० स्त्री० चमकाहट दहकाहट।
लहकीला० गु० चमकीला, भड़कीला।
लहकौर० } ना० स्त्री० कौर जो दुलहा
लहकौरर० } दुलहन् खाता है, इसे कहारी का विवाह में खिलाते हैं।
लहना० स० क्रि० पाना, खाना, अ० क्रि० फलना, काम आना, ना० पु० उधार, धर्ता, प्रारब्ध।
लहबर० ना० पु० तोता विशेष।
लहबेरा० ना० पु० पौधा विशेष।
लहर० ना० स्त्री० तरंग, हिलोर, सांपके विषकी जो तरंग आती है।
लहरबहर० ना० स्त्री० सुभाग, सम्पत्ति।
लहराना० अ० क्रि० लसलसाना, हिलकोरना।
लहरालगाना० स० क्रि० टालना, उधार धारे करना।
लहरिया० गु० जो लहरकी रीतिपर होवे।
लहरी० गु० तरंगी, तरल, चोंचला।
लहलहा० गु० विकसित, प्रफुल्लित, हरा।
लहलहाना० अ० क्रि० खिलना, फूलना, हराहोना।
लहलोट० गु० जो उधार लेकर फिर न देवे।
लहसुन० ना० पु० कन्द विशेष।
लहसुनिया० ना० पु० रत्न विशेष।
लहाछेह० ना० स्त्री० शीघ्रता, जल्दी।
लहास० } ना० स्त्री० नाव बांधनेकी रस्सी।
लहासा० }
लहियत० क्रि० पाता है या पाते हैं।
लहुरा० ना० पु० शीघ्रता, जल्दी।
लहू० ना० पु० लाहू, रुधिर, खून।
लहूआ० ना० पु० पौधा विशेष।
लहौर० ना० पु० लाहौर।
लहौरी० गु० जो लाहौर का है।
लक्ष० ना० पु० सौ हजार, १०००००, लाख, वह लाख जिसकी नहीं गणना है।
लक्षण० ना० पु० चिह्न, रूप, लक्षणजी।
लक्षत० क्रि० विलोकत, देखत।
लक्षित० गु० प्रकाशित, जो देख पड़ता है।
लक्ष्मण० ना० पु० रामचन्द्रजीके छोटे भाई।
लक्ष्मणा० ना० स्त्री० सारस पक्षी, श्रीकृष्ण की पटरानी विशेष, शोभा कान्ति।

लक्ष्मी० ना० स्त्री० सम्पत्ति वा धन, कमला, रमा।
लक्ष्मीफल० ना० पु० श्रीफल, बिल्व, बेल।
लक्ष्य० गु० जो देखाजावे, ना० स्त्री० लक्ष्मी, निशाना।
लाई० ना० स्त्री० धान का लावा, क्रि० जराई।
लांघना० स० क्रि० फांदना, कूदना।
लाकृति० ना० स्त्री० बड़ा आकार, रूप।
लाख० ना० पु० लक्ष, लाह, लाखा जिसकी चूड़ी बनती है।
लाखना० स० क्रि० लाख लगाना।
लाखी० ना० स्त्री० लालरंग जो लाख से निकालते हैं।
लाग० ना० पु० बैर, शत्रुता, द्वेष, स्नेह, छोह, भाव, मोल, नगचारी, खोर, कसूर, भेद।
लागत० ना० स्त्री० दाम, मोल।
लागना० अ० क्रि० लगना।
लागी० ना० स्त्री० चाह, स्नेह, छोह।
लागू० गु० चाहनेहारा, पिछलगा।
लाघव० ना० पु० आरोग्य, क्षेमकुशल, हलकाई, सूक्ष्मता, उसीसमय, जल्दी, शीघ्र।
लांगल० ना० पु० हल।
लांगली० ना० पु० किसान, नारियल, श्रीबलदेव जी।
लांगूल० ना० पु० लोम, पुच्छ, पूंछ।
लांगूली० ना० पु० कौंचबीज, बानर।
लाज० ना० स्त्री० लज्जा, सकोच, हया।
लाजना० अ० क्रि० लाज करना।
लाजवन्त० गु० लजीला, सकोची, बुधवन्त।
लाजा० ना० स्त्री० खीला।
लाझा० ना० पु० लस।
लाञ्छन० ना० पु० दोष, पाप, चिह्न, कलङ्क।
लाट०
लाठ० } ना० स्त्री० स्तम्भ, खम्भा।
लाठी० ना० स्त्री० लकड़ी, छड़ी।
लाड़० ना० पु० प्यार, दुलार।
लाड़ला० गु० प्यारा, दुलारा।
लाड़ली० ना० स्त्री० प्यारी, दुलारी।
लाडू० ना० पु० लड्डू।
लात० ना० स्त्री० पांवकी मार, टांग, पांव।
लातिन्० ना० स्त्री० भाषा विशेष।
लाद० ना० स्त्री० बोझ।
लादना० स० क्रि० बोझना।
लादिया० ना० पु० बोझनेहारा।
लादी० ना० स्त्री० छोटीलाद, धोबी के कपड़ेकी गठरी।
लादू० गु० जो लादने के योग्य वा लादागया।
लाना० स० क्रि० ले आना, अनाना, उपजाना, ब्याना।
लापाक० ना० पु० शृगाल, गीदड़।
लाफना० अ० क्रि० कूदना, उचकना।
लाभ० ना० पु० प्राप्ति, उपार्जन, फल, नफा।
लाय० ना० पु० अग्नि।
लार० ना० स्त्री० थूक, मुखका पानी, राल।
लारी० ना० स्त्री० लार।
लाल० गु० दुलारा, प्रिय, रक्तवर्ण, ना० पु० बालक, रत्न विशेष, पक्षी विशेष।
लालच० ना० पु० लोभ, तृष्णा, अदेख।
लालची० गु० लोभी, आपकामी।
लालड़ी० ना० स्त्री० माणिक चुन्नी।
लालन० ना० पु० बालक, ना० स्त्री० लालना।
लालबुझक्कड़० ना० पु० मूर्ख जो अपने तईं ज्ञानवान् जानता है।
लालमधु० ना० पु० सहिंजना वृक्ष।
लालसा० ना० स्त्री० इच्छा, चाह, तृष्णा, चोहत।
लाला० ना० पु० वैश्यादिकों की पदवी, कायस्थ विशेष जो बालक पढ़ाता है।
लालाद्रिक० ना० पु० प्रारब्धाधीन।
लालित्य० ना० पु० मनोहरता, कोमलता, चमक।
लाव० ना० पु० रस्सी, लहास।

लावण्य० ना० पु० } सुन्दरता, सलोनाई,
लावण्यता० ना० स्त्री० } बड़ाई।

लावलाव० ना० पु० लालच, अधीरता।

लाशा० ना० पु० लोथ, मुर्दा।

लासा० ना० पु० चेप, [illegible], [illegible], लसदार, तिब्बत देशका नगर विशेष।

लाह० ना० पु० कपड़ा विशेष, [illegible], [illegible], लाल, लाली।

लाहा० ना० पु० लाभ।

लाही० ना० स्त्री० पैसा विशेष, [illegible] विशेष।

लाडु० } ना० पु० लाभ, लड्डू।
लाडू० }

लाहौर० ना० पु० पंजाबदेशकी राजधानी।

लाचा० ना० स्त्री० लाख, [illegible]।

लिखत० } ना० पु० [illegible], लिखी, लेख।
लिखतंग० }

लिखना० स० क्रि० लेखना, लिखाई करना।

लिखनी० ना० स्त्री० लेखनी, कलम।

लिखनीदास० ना० पु० लेखक, कायस्थ।

लिखा० ना० पु० [illegible], [illegible]।

लिखाई० ना० स्त्री० लिखने का फल या पैसा।

लिखाना० स० क्रि० [illegible]।

लिखाव० ना० पु० } लिखने का ढंग।
लिखावट० ना० स्त्री० }

लिखित० गु० का लिखाहुआ।

लिंग० ना० पु० [illegible], पहचान करने की इन्द्रिय, पुरुष चिह्न, तीन लिंग अर्थात् स्त्री, पुरुष, नपुंसक।

लिंगी० ना० स्त्री० [illegible], [illegible]।

लिचु० ना० पु० [illegible]।

लिलड़ी० ना० स्त्री० [illegible], लटी, पतली।

लिट्ट० ना० पु० [illegible] भोजन।

लिटाना० स० क्रि० सुलाना, पौढ़ाना।

लिट्टी० ना० स्त्री० टिकिया, अंगाकड़ी, बाटी, [illegible]।

लिथड़ना० अ० क्रि० लथड़ना। }
लिथाड़ना० स० क्रि० लथेड़ना। }

लिपटना० अ० क्रि० चिपटाना, चिपटना, सटना।

लिपटाना० स० क्रि० सटाना, लगाना, चिपटाना।

लिपड़ी० ना० स्त्री० बहुत दिनों की पगड़ी।

लिपवाना० } स० क्रि० गोमय आदि से पोतवाना।
लिपाना० }

लिपि० ना० स्त्री० हस्ताक्षर, लिखावट, लेख, खत।

लिपिकर० ना० पु० लेखक।

लिप्त० गु० लीपागया, लीन, [illegible]।

लिये० अव्य० निमित्त, कारण, वास्ते।

लिवाना० स० क्रि० ग्रहण करवाना।

लिवालाना० स० क्रि० लेआना, बुलालाना।

लिवैया० ना० पु० लेवैया।

लिसौढ़ा० ना० पु० लसोढ़ा।

लिहाड़ा० गु० नीच, कुत्सित।

लीक० ना० स्त्री० गाड़ीका मार्ग, पगडण्डी, मर्याद, कलंक, लकीर।

लीख० ना० स्त्री० छोटाकपकीट, अर्थात् जूआँ।

लीचड़० गु० कृपण, कंजूस, सूम।

लीची० ना० स्त्री० फल विशेष।

लीझी० ना० स्त्री० गादि, तलछट।

लीला० ना० पु० [illegible]।

लीद० ना० स्त्री० घोड़े की विष्ठा।

लीन० गु० तन्मय, छिपाहुआ, मिलाहुआ, आसक्त, मग्न, योग्य।

लीम० ना० पु० संधि, मेल, मिलाप।

लीर० ना० स्त्री० चिट, धज्जी।

लीख० ना० पु० नीम, गु० नीला।

लीपना० [illegible]

लीला०, ना० स्त्री० क्रीडा, विहार, खेल, चरित्र, गु० नीलवर्ण।
लीलाइव० / लीलावत्० } गु० ज्यालहीमें लीलाके प्रकार।
लीलावती० ना० स्त्री० गणित की पुस्तक विशेष।
लुक० ना० पु० गिरनहारा, तारा, लूक।
लुकना० अ० क्रि० छिपना।
लुका० गु० गुप्त।
लुकाञ्जन० ना० पु० अञ्जनविशेष जिसके लगाने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है।
लुकाव० गु० गुप्तहुआ, छुपा, ना० स्त्री० छिपाव।
लुकोना० अ० क्रि० छिपना, स० क्रि० छिपाना, गुप्त करवाना।
लुकावना० स० क्रि० छिपावना, गुप्तकरवाना।
लुगाई० ना० स्त्री० औरत, स्त्री।
लुंगा० ना० स्त्री० मधुककड़ी।
लुगी० ना० स्त्री० धोती विशेष।
लुच० गु० निरा नग्न।
लुचई० ना० स्त्री० पूरीविशेष।
लुचपन० ना० पु० नष्टता, अधमाई, शुहदपन।
लुच्चई० ना० स्त्री० लुचपन, कुकर्म।
लुचा० ना० पु० कुकर्मी, लुचपन करनेहारा।
लुजलुजा० गु० लसलसा।
लुंज० / लुंजा० } गु० अपाहिज, लूला, हाथोंसे हीन।
लुटना० अ० क्रि० लूटहोजाना, लूटजाना।
लुटवैया० ना० पु० लुटेरा।
लुटाना० स० क्रि० गवाना, उड़ाना, लूट करवाना।
लुटिया० ना० स्त्री० छोटालोटा।
लुटेरा० / लुटेरू० } ना० पु० लूट करनेहारा, उड़ाऊ।
लुट्टस० ना० पु० लूट, बिगाड़, सत्यानाश।
लुड़का० ना० पु० कानका भूषणविशेष।
लुड़खना० / लुढ़कना० } अ० क्रि० टमगना, गिरते जाना।
लुदना० अ० क्रि० लुढ़कना।
लुढ़ाना० स० क्रि० गिरादना, उगराना।
लुदिया० ना० स्त्री० छाग लोंद।
लुदियाना० स० क्रि० कपड़े को लका करके दूसरे बार सीना।
लुण्डा० गु० बांड़ा, पुच्छहीन।
लुतरा० ना० पु० बकवादिया, उधर की इधर और इधर की उधर करन हारा।
लुपरी० ना० स्त्री० भोजनविशेष।
लुपलुप० ना० पु० चमक दमक।
लुप्त० गु० गुप्त, लूट, नाश।
लुब्ध० गु० लालची, लोभी।
लुब्धक० ना० पु० बधिक, लुब्धा, लम्पट।
लुभाना० स० क्रि० ललचाना, जीभगाना।
लुम्पक० ना० पु० राजाविशेष, नाशक।
लुम्पित० गु० छिपायागया, नाशित।
लुहण्डा० ना० पु० लोहेका पात्रविशेष।
लुहरा० ना० पु० लोग।
लुहांगी० ना० स्त्री० लाठी जिसमें लोहालगा होता है।
लुहार० ना० पु० लोहकार, जातिविशेष।
लुहारिन० ना० स्त्री० लुहार की जोरू।
लू० ना० स्त्री० ज्येष्ठ बैशाख की गरम वायु।
लूआट० गु० लूट।
लूक० ना० पु० अग्निकी लुकेठी, पतिततारा।
लूकट० गु० अधजला।
लूकटी० ना० स्त्री० कुरेल्नी, छोगलूकर।
लूकना० अ० क्रि० लू से जलना।
लूकधाई० ना० स्त्री० अगवाड़ी, वहीं २ दीवालीको जलाकर घरके बाहर डालते हैं।
लूका० ना० पु० जलती हुई चिनगारी।
लूख० ना० स्त्री० आँच, लुका।
लूट० ना० स्त्री० वस्तु का बरबस छीनना।

लूटना० स० क्रि० बरबस छीनलना, उड़ाना, गवाना।
लूटालूट० ना० स्त्री० लूट का काम।
लून० ना० पु० लवण, लोन, नमक।
लूनिया० ना० पु० लोन बनानेहारा, जाति विशेष पौधाविशेष, गु० लोना।
लूनी० ना० स्त्री० मक्खन, लोना।
लूता० ना० स्त्री० मकड़ी, व्याधिविशेष।
लूम० ना० स्त्री० पुच्छ, पूंछ, दुम।
लूला० गु० टूण्डा।
लूह० ना० स्त्री० लू।
लूहर० ना० पु० लुकाठा, लूक, पलितास।
ले० अव्य० से, तक, तलक।
लेई० ना० स्त्री० अहार, जो कपड़ा आदि में लगाते हैं।
लेंडी० ना० स्त्री० मेंगनी, बकरी आदि की विष्ठा।
लेंड़ा० ना० पु० मेंड़।
लेख० ना० पु० लिखना, लिखित, तहरीर।
लेखक० ना० पु० लिखिकर, लिखनेहारा।
लेखन० ना० पु० लिपि, लिखाई।
लेखनी० ना० स्त्री० कलम, लिखनी।
लेखर्षभ० ना० पु० इन्द्र, देवराज।
लेखा० ना० पु० देवता, गिनती, हिसाब, वीमक।
लेख्य० ना० पु० पत्र, चिट्ठी, लिखागया, लिखने के योग्य।
लेख्यपत्र० ना० पु० भोजपत्र।
लेजाना० स० क्रि० ठगना, लेभागना, जानना।
लेट० ना० स्त्री० चूनादि वस्तु भीतपर लगाने के लिये।
लेटना० अ० क्रि० पोढ़ना सोना, पड़ना।
लेनदेन० ना० पु० व्यवहार, व्यापार।
लेना० स० क्रि० ग्रहण करना, पकड़ना, छुना।
लेप० ना० पु० लग, उबटन, शरीर में लगाने की औषधिविशेष।
लेपटना० स० क्रि० लपटना, मैथुन करना, अपने कलङ्क से दूसरे को फँसाना।
लेपना० स० क्रि० पोतना, चुपड़ना।
लेपालक० ना० पु० धर्मका पुत्र, पोष्यपुत्र।
लेपालना० स० क्रि० वश करके लेना, पोष्य पुत्र करना।
लेमरना० अ० क्रि० कलङ्क लगाना, दागदना।
लेयमान० गु० जो सोनेवाला है।
लेरू०
लेरुआ० } ना० पु० बछरा।
लेला० ना० पु० भेड़ी का बच्चा।
लेलिह० ना० पु० सांप, सर्प।
लेलीतिक० ना० पु० गन्धक।
लेलुट० गु० लेया लूट, सहलूट।
लेलेना० स० क्रि० महयकरना, छीन लेना।
लेव० ना० पु० भीतकी परती जो गिरने योग्य है, एक बारका कराव।
लेवा० ना० पु० छोटा पालरा, लेनेहारा, धन, सीरी, रोटी पकाने के बर्तनों पर जो मिट्टी लगाते हैं।
लेवादेई० ना० स्त्री० लनदेन, बहावनी।
लेवार० ना० पु० मार्लामिट्टी जो दीवार में लगाते हैं।
लेवारा० ना० पु० लवा में लोटना।
लेवास० ना० पु० लेप।
लेवैया० ना० पु० लेनेहारा।
लेश० गु० थोड़ा, थोड़ा, ना० स्त्री० बागरे।
लेस० ना० पु० भूसा मिला मिट्टा की भीतमें लगावट, लीप पोत।
लेसना० स० क्रि० लीपना, पोतना, सुलगाना, बालना, झगड़ा उठाना।
लेसालेस०
लसोआ० } ना० पु० लीपा लीप।
लेह० ना० स्त्री० शाघ्रता, उतावला, चटपट।
लेहन० ना० पु० चाटना।
लेहना० ना० पु० चारा।

लेह्य० ना० पु० अमृत, गु० जो चाटने के योग्य।
लैस० गु० सिद्ध, मोलसिया, ना० पु० तुबा, शिरकाविशेष।
लोई० ना० स्त्री० औरत, कम्मल, मृषा, मुमकी क्रांति, अपेक्षा पेड़ा।
लों० अव्य० तर, तलक।
लोंदा० ना० पु० ढेला, पिंडा।
लोक० ना० पु० लोग, मनुष्य भुवन, ढांग, व्याकरण, यम, यश, नाम, कीर्त्ति, सत्कारादि।
लोकना० स० क्रि० पकड़ना, रोकना।
लोकनाथ० ना० पु० लोक का स्वामी यथा इन्द्रादिक १०।
लोकप० } ना० पु० राजा, दिक्पाल, लोक का पालनेहारा।
लोकपाल० }
लोकसंख्या० ना० स्त्री० मनुष्यों की गिनती।
लोकालोक० ना० पु० पर्वतविशेष जो जगत् की सीमा है।
लोकेश० ना० पु० ब्रह्मा, लोकनाथ।
लोखर० ना० पु० हथियार, लोहे का पुराना पात्र।
लोखरी० ना० स्त्री० लामड़ी।
लोखा० ना० पु० प्रात काल, ऊषाकाल।
लोग० ना० पु० मनुष्य, जन।
लोगाई० ना० स्त्री० नारी, स्त्री, औरत।
लोचन० ना० पु० नेत्र, आंख।
लोचनता० ना० स्त्री० दृष्टि, नज़र।
लोचना० ना० स्त्री० सुन्दर स्त्री।
लोटन० ना० पु० पटकन, भडलिया, भाड़ विशेष।
लोटना० अ० क्रि० पटकना, तल ऊपर होना, तलफना, छटपटाना।
लोटपोट० ना० गु० जो लोटता, चैनरहित, जो तलफगया।
लोटा० ना० पु० जलपात्र विशेष।
लोढ़ा० ना० पु० सिलपरका बट्टा।
लोढ़िया० ना० स्त्री० छोटा लोढ़ा।
लोथ० ना० स्त्री० मृत्युशरीर, मृतक, शव।
लोथरा० ना० पु० } मासका टुकड़ा।
लोथरी० ना० स्त्री० }
लोधा० ना० पु० नोरा, गोर।
लोदी० ना० स्त्री० लोहमढ़ी लाठी, लोहंगी।
लोदी० ना० पु० जातिविशेष।
लोध० ना० पु० जातिविशेष, वृक्षविशेष, औषधिविशेष।
लोधा० ना० पु० जातिविशेष, किसान।
लोधिया० ना० पु० जातिविशेष।
लोन० ना० पु० लवण, नमक।
लोना० गु० खारा, सुन्दर, नमकीन, ना० पु० फलविशेष, पौधाविशेष, लवण जो भीति आदि से गिरता है।
लोनाई०ना०स्त्री० सुन्दरता, लावण्यता, रामायणे यथा (जातसराहत सीयलोनाई)।
लोनार० ना० पु० खारभूमि, खेलाड़ी, स्थान जिसमें लवणबनाते हैं, जातिविशेष।
लोप० गु० अन्तर्ध्यान, अन्तर्द्धान, अगोचर, गुप्त, नाश।
लोखड़ी० ना० स्त्री० रुई की वस्तु का गोंदा, लट विशेष पगड़ा।
लोपी० गु० अदृश्यकर्त्ता, अगोचर करनेहारा, गुप्त हुआ।
लोबा० ना० स्त्री० लामड़ी।
लोबान० ना० पु० सुगन्धि द्रव्यविशेष।
लोबिया० ना० पु० अन्नविशेष जिसकी फली की तरकारी बनाते हैं।
लोभ० ना० पु० लालच, कृपणता, परीक्षा, मोह।
लोभना० अ० क्रि० मोहित होना, लालच करना।
लोमनीया० ना० स्त्री० महापुण्डी।
लोभी० गु० लालची, मोही, सूम, कृपण, अदाता।

लोम० ना० स्त्री० रोम, कृत।
लोमड़ी० ना० पु० जंगली जन्तुविशेष।
लोमश० ना० पु० मुनिविशेष, चिरजीवी।
लोमसी० ना० स्त्री० ककड़ी, वच ओषधि।
लोयन० ना० पु० लोचन, नेत्र, आंख।
लोर० ना० पु० लोलक, आंसू।
लोल० ना० पु० चाह, आलकापानी, गु० अथिर, चलायमान।
लोलक० ना० पु० कानका भूषणविशेष।
लोलिनी० ना० स्त्री० नटनी, चलायमानस्त्री।
लोलुप० गु० अत्यन्त लोभी, व्यभिचारी।
लोष्ट० ना० पु० ढेला, लाहा।
लोह० ना० पु० लोहा।
लोहकर्षण० ना० पु० चुम्बक।
लोहकार० ना० पु० लोहार, जातिविशेष, जो लोहेका काम बनाताहै।
लोहचून० } ना० पु० लोहकाचूरण।
लोहचूर० }
लोहण्डा० ना० पु० लोहकापात्र, कड़ाह।
लोहण्डी० ना० स्त्री० लोहे की कड़ाही।
लोहपूर० गु० वीरतायुक्त, हथियार बांधे या जंजीर पहन।
लोहसार० ना० पु० लोहे की खानि, खुर्मा।
लोहा० ना० पु० धातुविशेष।
लोहान० गु० लोहूभरा।
लोहानी० ना० पु० पठानों की जातिविशेष।
लोहार० ना० पु० लोहार।
लोहारिन० ना० स्त्री० लोहारकी जोरू।
लोहित० गु० लालवर्ण, रक्त।
लोहितांग० ना० पु० मंगल तारा।
लोहितरक्त० ना० पु० कपालाओषधि।
लोहिया० गु० जो लोहे से बनाहै, जो लोहा बेचत है।
लोही० ना० स्त्री० कम्बल, ज्वाला, पाट, अरुण, रेशमी वस्त्रविशेष।
लोहू० ना० पु० रुधिर, रक्त।
लौं० अव्य० लौं, तक।
लौंग० ना० पु० लवंग।
लौंगी० ना० स्त्री० पालनू कुतियाका नाम।
लौंड़ा० ना० पु० चेला, छोकड़ा, लिंग।
लौंडिया० } ना० स्त्री० छोकरी, चेली, लड़की।
लौंडी० }
लौंद० ना० पु० अधिकमास, मलमास।
लौकना० अ० क्रि० चमकना।
लौका० ना० पु० कुम्हड़ा, बिजली, चमक, कौंधा।
लौकिक० गु० लोकका व्यवहार, जो लोकमें हो।
लौकी० ना० स्त्री० पर्वती लौकी, रामतुरई।
लौटना० अ० क्रि० फिरना, पलटना, घूमना।
लौटाना० स० क्रि० फिराना, पलटाना, घुमाना।
लौड़ा० ना० पु० लिंग, मदनांकुश।
लौह० ना० पु० लोहा।
ल्यारी० ना० पु० भेड़िया, हुण्डार।

[व]

वंश० ना० पु० सन्तान, घराना, कुल।
वंशकार० ना० पु० बांसफोड़, डोम, भंगी।
वंशज० }
वंशरोचन० } ना० पु० वस्तुविशेष जो बांस में से निकलती है।
वंशलोचन० }
वंशक्षीरी० }
वंशावली० ना० स्त्री० पीढ़ी, वंशकी परिपाटी, शजरह।
वंशी० ना० स्त्री० मुरली, बांसुरी।
वंशीधर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एकनाम।
वंशीवट० ना० पु० जिसस्थानमें श्रीकृष्णचन्द्र वंशी बजाया करते थे।
वक० ना० पु० बगुला, अगस्ति।
वकहंस० ना० पु० पक्षीविशेष।
वकासुर० ना० पु० बगुलाऐसा दैत्यविशेष
वकी० ना० स्त्री० बगली बगुला की स्त्री।

वकुल० ना० पु० मौलसिरी वृक्ष।
वक्तव्य० गु० कहने के योग्य।
वक्ता० ना० पु० कहनेहारा।
वक्त्र० ना० पु० मुख, मुह।
वक्र० गु० टेढ़ा।
वक्रसुत० ना० पु० ऊंट।
वक्रगति० ना० स्त्री० बांकी चाल, टढ़ीचाल, बांके वा टेढ़ेकी चाल।
वक्रग्रीव० ना० पु० ऊंट।
वक्रता० ना० स्त्री० बांकापन, टेढ़ाई, निर्दया, वधादि कर्म।
वक्रदाणी० ना० पु० ताजा शुक्र।
वक्री० गु० टेढ़ा चलनेहारा।
वक्रोक्ति० ना० स्त्री० टेढ़ी बात, कटुबात।
वङ्क० ना० पु० बांका, टेढ़ा।
वङ्कता० ना० स्त्री० बांकापन, टेढ़ाई।
वङ्की० ना० स्त्री० छुरी।
वगसेन० ना० पु० अगस्तिवृक्ष।
वच० ना० पु० औषधिविशेष।
वचन० ना० पु० कथन, मुनिवाक्य, कथा, मयाद, उक्ति।
वचक्नु० ना० पु० वक्ता।
वज्रुल० गु० चमल।
वज्र० ना० पु० बिजली, हीरा अस्त्रविशेष, गु० अतिकठिन।
वज्रकन्द० ना० पु० जिमींकन्द।
वज्रतुण्ड० ना० पु० सेंहुड़वृक्ष।
वज्रद्रुक० ना० पु० सेंहुड़वृक्ष।
वज्रधर० } वज्रपाणि० } ना० पु० इन्द्र, देवराज।
वज्राग० ना० पु० कठिन तन।
वज्राङ्गी० ना० पु० हनुमान, अतिकठोर तनविशिष्ट, हनुमानजी।
वज्रहस्त० } वज्री० } ना० पु० इन्द्र, गेंडुड़।
वञ्चक० ना० पु० शृगाल, प्रतारक, गु० ठग, छली, कपटी।
वञ्चकता० ना० स्त्री० छलकर्म, ठगई, चोरी।
वञ्चन० ना० पु० ठगविद्या, छल, धोखा।
वञ्चना० ना० स्त्री० प्रतारण, ठगाई।
वञ्चित० गु० प्रतारित, छलित, ठगागया।
वञ्ची० गु० प्रतारक, ठग।
वञ्जुल० ना० पु० अशोकवृक्ष।
वट० ना० पु० बरगद, पवित्र, आश्रय।
वटिका० ना० स्त्री० बरा, बट्टी।
वटु० ना० पु० बालक, ब्रह्मचारी।
वटुक० ना० पु० बालक, ब्रह्म, भैरवविशेष।
वडवाग्नि० } वडवानल० } ना० पु० समुद्रकी अग्नि।
वडिश० न० स्त्री० बर्सी, मच्छ पकड़ने का कांटाविशेष।
वणिक० ना० पु० बनिया, व्यापारी।
वणिज्य० ना० पु० व्यापार, तिजारत।
वत्० अव्य० जिस शब्दके परे इसका प्रयोग होवे उसका अर्थ सदृश समझाजाता है यथा देववत् अर्थात् देव सदृश।
वत्स० न० पु० शिशु बछड़ा, वर्ष छाती, हृदय।
वत्सतरी० ना० स्त्री० बछिया।
वत्सर० ना० पु० दाहा, हुआ, वर्ष, साल।
वत्सराय० गु० वर्षका, बरसौंही।
वत्सरायणगमन० ना० पु० सूर्य के चारोंओर भ्रमण।
वत्सल० गु० प्रिय, स्नेही, दयावान्, दयायुत।
वत्सलता० ना० स्त्री० प्यार, दया, मोह।
वत्साद० ना० पु० गुरच।
वत्सासुर० ना० पु० बछरारूपी दैत्यविशेष।
वदन० ना० पु० मुख, रूप।
वदना० ना० स्त्री० मुखी, रूपी।
वदन्ति० क्रि० कहते हैं।
वदरी० ना० पु० भारतवर्ष उत्तर में तीर्थ।
वदरी श्र० ना० पु० तीर्थविशेष।

बदरीवन० ना० पु० वनविशेष, बदरीके समीप वा जहां बदरीनाथ हैं।
बदरी० ना० स्त्री० बरीवृक्ष।
बध० ना० पु० हत्या, मारामारी।
बधन० ना० पु० मारण, हनन।
बधदंश० ना० पु० बड़की हत्या।
बधिक० ना० पु० खेचरी, हत्यारा, शिकारी।
बन० ना० पु० अरण्य, जंगल, पानी, मेघजाल।
बनचर० ना० पु० जो बनमें चरे, यथा बाघ मछली आदि।
बनज० ना० पु० कमल।
बनप्रिय० ना० स्त्री० कोयल।
बनमञ्जरी० ना० स्त्री० सँभालू।
बनमानुष० ना०पु० जंगली मनुष्य, बानरजाति विशेष।
बनमाला० ना० स्त्री० बनमाला।
बनमालिका० ना० स्त्री० बाराहीकन्द, बनमाला।
बनमाली० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम, बनमाली।
बनयात्रा० ना० स्त्री० व्रज के चौरासीकोस की यात्रा।
बनधारी० ना० पु० श्रीकृष्णजी, बनमाली।
बनवास० ना० पु० बन में बास।
बनवासी० गु० बनका बसनेहारा।
बनविलासिनी० ना० स्त्री० शरहुली।
बनस्पति० ना० स्त्री० वृक्ष, जिस वृक्ष में फूल बिना फल हो।
बनायुज० ना० पु० घोड़ा।
बनिता० ना० स्त्री० प्यारी, स्त्री, प्रिया।
बनी० ना० स्त्री० छोटा जंगल।
बनैला० गु० बनका।
बन्त० अव्य० जिस शब्द के परे यह आवे उसका अर्थ कर्त्ता वा सूचक होता है, यथा दयावन्त अर्थात् दया कारक।
बन्दन० ना० पु० } स्तुति, नमस्कार, प्र
बन्दना० ना० स्त्री० } णाम।
बन्दनीय० गु० स्तुति के योग्य, नमस्कार के योग्य।
बन्दा० ना० पु० पौधाविशेष, आकाशलता।
बन्दी० } ना० पु० भाट, बिरदैती।
बन्दीजन० }
बन्द्य० गु० पूज्य, सेवायोग्य, स्तुति के योग्य।
बन्धुजीव० } ना० पु० दुपहरिया का पुष्प वा वृक्ष।
बन्धूक० }
बन्धूप० }
बन्य० गु० जो बनका या बन में हो, बनवासी, बनैला, मूर्ख।
बन्या० गु० स्त्री० बनकी वा जलकी बहुतात।
बह्नि० ना० पु० अग्नि, आग।
बह्निमुखी० ना० स्त्री० कलिहारी।
बह्निरुचि० ना० स्त्री० मालकंगुनी।
बह्निशिखा० ना० स्त्री० कलिहारी।
बपन० ना० पु० मुण्डन, बोना, वीर्य।
बपु० } ना० पु० शरीर, देह।
बपु० }
बपुरा० गु० तुच्छ, नीच।
बपुष० ना० पु० शरीर, देह, तनु।
बप्ता० ना० पु० पिता बीजबोनेहारा।
बभ्रु० ना० पु० नेवला।
बम० ना० पु० महादेवजी का स्तुति बोधक शब्द।
बमन० ना० पु० } छर्दि, उछाल।
बमि० ना० स्त्री० }
बय० ना० पु० विहग, समय, निश्चय, आयु।
बय० ना० पु० वय, जो आयु बीती हो।
बयसा० ना० स्त्री० सखी, दूती।
बयस्या० ना० स्त्री० गुरच।
बयस्य० ना० पु० जिनकी आयु समान है, हमजोली।
बर० ना० पु० आशिष, पदार्थ, दूलह, वावई वृक्ष, गु० सुन्दर, अभिराम, श्रेष्ठ।
बरबरिठका० ना० स्त्री० सैतावर, छतावर।

वरटा॰ ना॰ स्त्री॰ हंसिनी।
वरतिक्त॰ ना॰ पु॰ पित्तपापड़ा।
वरदा॰ ना॰ स्त्री॰ असगन्ध, वरदाता।
वरदान॰ ना॰ पु॰ वाञ्छितदान, विवाह का दान।
वरदाम्बरी॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ी सतावर।
वरदायन॰ ना॰ स्त्री॰ वरदान देनेहारी।
वरपीतक॰ ना॰ पु॰ अबरक, अभ्रक।
वरलोक॰ ना॰ पु॰ स्वर्गविशेष।
वरवण्ड॰ ना॰ पु॰ तेजस्वी, बलवान्, जबर दस्त।
वरवर्णिनी॰ ना॰ स्त्री॰ हलदी।
वरवर्णा॰ ना॰ स्त्री॰ सुन्दर, स्त्री, रूपवती।
वरस्त्री॰ ना॰ स्त्री॰ वेश्या, पुंश्चली, पतुरिया।
वरह॰ ना॰ पु॰ पत्ता।
वरा॰ ना॰ स्त्री॰ बकुची औषधि, ना॰ पु॰ व्यञ्जन।
वराक॰ ना॰ पु॰ देवता।
वराकट॰ ना॰ पु॰ कौड़ी, हिन्दी कोषेलिखित।
वराट॰
वराटिक॰ } ना॰ स्त्री॰ कौड़ी।
वराटिका॰
वराह॰ ना॰ पु॰ शूकर, आदिविष्णुनारायण का तृतीय अवतार।
वराहकर्णी॰ ना॰ स्त्री॰ असगन्ध।
वराहाख्य॰ ना॰ पु॰ नागरमोथा।
वरिष्ठ॰ ना॰ गु॰ अतिश्रेष्ठ।
वरू॰ अव्य॰ चाहो, अमर्ष।
वरुण॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष, जलका देवता मुख्य, जल का स्वामी सूर्य, जल।
वरुणा॰ ना॰ स्त्री॰ वरुणकी स्त्री।
वरुणावती॰ ना॰ स्त्री॰ वरुणलोक।
वरूथ॰ ना॰ पु॰ समूह, सिपाह, यूथ।
वरूथी॰ ना॰ स्त्री॰ सेना, फौज।
वरे॰ अव्य॰ इसपार, इधर, समूह।
वरेची॰ ना॰ स्त्री॰ अफीम।
वरेप्सी॰ ना॰ स्त्री॰ वरठहराना, माँगी वर कन्या का होना।
वरोहक॰ ना॰ पु॰ असगन्ध।
वर्ग॰ ना॰ पु॰ एकजाति का समूह, एकोच्चारण अक्षर, किसी अङ्क को उसी में घात करनेसे जो गुणन फल।
वर्गक्षेत्र॰ ना॰ पु॰ जिस क्षेत्रकी चारों भुजा समान और चारों कोण समकोण हों।
वर्जन॰ ना॰ पु॰ त्याग, निषेध।
वर्जना॰ स॰ क्रि॰ त्यागना, रोकना, रहित करना।
वर्जनीय॰ गु॰ जो त्याग के योग्य है, अयोग्य, कुपात्र।
वर्जित॰ गु॰ रहित, निषेधित, जो बर्जागया।
वर्ण॰ ना॰ पु॰ रक्त पीत आदि, अक्षर, द्विजादिक चारि, स्तुति।
वर्णन॰ ना॰ पु॰ बखान, कथन, लिखाई, स्तुति, रंग, देन।
वर्णना॰ ना॰ स्त्री॰ स्तुति अ॰ क्रि॰ कथना।
वर्णमाला॰ ना॰ स्त्री॰ समस्त सब अक्षर, ककहरा, अक्षरों का समूह।
वर्णवती॰ ना॰ स्त्री॰ हलदी।
वर्णसङ्कर॰
वर्णसंकर॰ } ना॰ पु॰ जो दावर्णोंसे उत्पन्न हुआ, दो।
वर्णात्मक॰ ना॰ पु॰ जिस शब्दके अक्षर अलग अलग सुनपड़ें।
वर्णि॰ ना॰ स्त्री॰ केसर।
वर्णित॰ गु॰ जिसका वर्णन होचुका है, कथित।
वर्तन॰ ना॰ पु॰ जीविका, बासन।
वर्तमान॰ ना॰ पु॰ गु॰ इसीसमय का काल।
वर्तलोह॰ ना॰ पु॰ पीतल।
वर्ता॰ ना॰ पु॰ पत्रेपर लिखने के लिये काठका कलम
वर्तार॰ ना॰ पु॰ बटरपक्षी।
वर्त्तिर॰ ना॰ पु॰ बटरपक्षी।
वार्तिका॰ ना॰ स्त्री॰ बत्ती, बटरपक्षी।

वर्त्ती० गु० वर्तनकरनेहारा।
वर्तुल० गु० गोल, गोलाकार, मटर, चक्र।
वर्द्धन०-ना० पु० वृद्धि, बढ़ती।
वर्द्धमानक० ना० पु० दोनों अरण्ड।
वर्द्धा० ना० पु० बैल, वृषभ।
वर्द्धित० गु० बढ़ाहुआ, फैलाहुआ, अधिक।
वर्म० ना० स्त्री० बख़्तर, कवच।
वर्म्मा० ना० पु० क्षत्रियों के नाम का उपपद, काठ में छेद करने का हथियार।
वर्य० गु० श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा।
वर्त्ता० ना० पु० नदीका इसपार।
वर्वर० गु० अधर्म, वनजारी, बावला।
वर्ष० ना०पु० वृष्टि, पृथिवी का खण्डविशेष,साल, बारहमासका समय।
वर्षण० ना० पु० बरसा, बरसात।
वर्षा० ना० स्त्री०
वर्षाऋतु० स्त्री०
वर्षर्त्तु० स्त्री०
वर्षाकाल० पु०
(वृष्टि, बरसात, चौमासा।)
वर्षाकाली० ना० पु० श्यामजीरा, गु० जो वर्षाकालमें हो।
वर्षाभू० ना० पु० भेक, मडूक।
वर्षाशन०
वर्षासन०
(ना० पु० बरसकी जीविका।)
वर्हिश्चूड० ना० पु० धुनेरा।
वर्हिण० ना० पु० तगर, मयूर, मोर।
वर्हिर्मुख० ना० पु० देवता।
वर्ही० ना० स्त्री० मयूर, मोर।
वलय०
वलया०
(ना० स्त्री० गोल, चूडी।)
वलयाकार० ना० पु० गोलाकार।
वला० अव्य० वर, ना० स्त्री० सैन्य, वरता, चचला, लक्ष्मी, औषधि।
वलाक० ना० पु० बगुला, रामायण यथा (कामी काक बलाक बिचारे)।
वलाका० ना० स्त्री० बगुलों की पांति।
वलाट० ना० पु० मूंग।
वलावा० ना० स्त्री० सिरहटी।
वलाहक० ना० पु० मेघ।
वलि० ना० पु० भेंट, बलिदान।
वलित० गु० भरा पूरा सयुक्त।
वलिपुष्ट०
वलिभुक्०
(ना० पु० कौआ, काग।)
वलिरसा० ना० स्त्री० गधक।
वलिष्ठ० गु० बलवान्, पहलवान।
वलून० ना० पु० आकाश में उडने की वस्तु, गुब्बारा।
वल्कल० ना० पु० वृक्षकी छाल, भोजपत्रादि वक्ला।
वल्लकी० ना० स्त्री० वीणा, तम्बूरा।
वल्लभ० गु० प्रिय, सुहागा, स्वामी, दिलवैया।
वल्लभा० ना० स्त्री० प्रिय, प्रियतमा।
वश० ना० पु० आधीन, पराक्रम, इच्छा, चाह, क़ाबू।
वशवर्त्ती० गु० आधीन, क़ाबू में।
वशिर० ना० पु० समुद्रलोन, लालऊगा।
वशिष्ठ० ना० पु० मुनिविशेष दूत, वकील।
वशीकरण० ना० पु० आधीन करने की रीति, पुस्तकविशेष, सिद्धिविशेष।
वशीभूत० गु० जो वशमें होगया, तावेदार, हिला।
वशरोहा० ना० स्त्री० स्त्री।
वश्य० गु० जो वशमें होगया, तावेदार, हिला पाला।
वसति० ना० स्त्री० बस्ती, बसने का स्थान, ग्राम।
वसतिस्थान० ना० पु० वासस्थान।
वसन० ना० पु० वस्त्र, कपड़ा।
वसन्त० ना० पु० रागविशेष, ना० स्त्री० मदन ऋतु जो चैत्र वैशाख में होती है।
वसन्तजा० ना० स्त्री० वासन्ती।
वसन्तद्रुम० ना० पु० सेंदूर।

वायुजात० } ना० पु० श्रीहनुमान, भीमसेन।
वायुपूत० }

वाय्वग्नि० ना० पु० पवन और अग्नि।

वार० ना० पु० दोवार, पार, इसपार, दिन। द्वार, ना० स्री० अवसर, विलम्ब, समय, धीरजता।

वारण० ना० पु० वर्जन, निषिद्धता, रोका, योधावर, हाथी।

वारठ० ना० पु० कपास।

वारन० स० क्रि० घेरना, घेर, नाल, हाथी।

वारना० स० क्रि० घेर लेना, अर्पण करना, मेंट चढ़ाना।

वारवधू० } ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया,
वारस्त्री० } पुंश्चली।

वारा० ना० पु० सलाई, बचाव, निछावर, सुरता, लाभ।

वारापार० अन्य० इधर से उधर तक।

वाराणसी० ना० स्त्री० काशी, बनारस।

वारि० ना० पु० जल, पानी।

वारिचर० ना० पु० मछली आदि।

वारिचरकेतु० ना० पु० कामदेव, श्रीवत्सदेवजी।

वारिज० ना० पु० कमल, समुद्र लवण, गु० जो जल से उत्पन्न हो।

वारिद० ना० पु० मेघ।

वारिदनाद० ना० पु० मेघनाद, रामायणे यथा (वारिदनाद जेठ सुत तासू, भटमहँ प्रथम रेख जग जासू)।

वारिधर० ना० पु० मेघ।

वारिधि० ना० पु० समुद्र।

वारिवल्ली० ना० स्त्री० करेला, तरकारी।

वारिविहग० ना० पु० जलके पक्षी।

वारिशूकर० ना० पु० कौड़ी।

वारिसम्भव० ना० पु० लोंग।

वारीश० ना० पु० समुद्र।

वारुणी० ना० स्त्री० मदिरा विशेष, पश्चिम दिशा, गंगामें का पर्व विशेष, दूब घास विशेष, हाथीकी चाल, पचीसवां नक्षत्र।

वारे० अन्य० त्यागे, छोड़े।

वार्ता० ना० स्त्री० वृत्तान्त, बात, बातचीत।

वार्ताकी० ना० स्त्री० बड़ी कटाई।

वार्तिक० ना० पु० मूलग्रन्थ का पूरकमन्थ, जो अन्यांश रहित, सत्य, वार्ता म।

वार्तिका० ना० स्त्री० भाग, बैगन।

वार्द्धक्य० ना० पु० बुढापा, वृद्धावस्था।

वार्षिक० गु० सलती, वर्षका, जो बरसातमें उत्पन्न होते हैं, जो बरसात के योग्य है।

वाल्य० ना० पु० बालकपन, बालकता।

वावदूक० ना० पु० बड़बोला, वाग्मक, गप्पी।

वाष्प० ना० पु० भाप, भाफ।

वाष्पिका० ना० स्त्री० कालाजीरा।

वास० ना० पु० घर, बसने का स्थान, वास।

वासना० ना० स्त्री० अभिलाषा, इच्छा, अ० क्रि० महकना।

वासन्ती० ना० स्त्री० लता विशेष, चैत्रमास में कामदेवका पर्व विशेष।

वासर० ना० पु० दिन, दिवस।

वासव० ना० पु० इन्द्र, देवराज।

वासांसि० ना० पु० वस्त्र, कपड़े।

वासा० ना० पु० वासा।

वासित० गु० सुगन्धयुक्त, वस्त्रयुत।

वासी० ना० पु० बसनेहारा, रहनेहारा।

वासुकि० ना० पु० मुख्यसर्प, प्रधान सर्प।

वासुदेव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।

वास्तव० अन्य० यथार्थ, तात्पर्य्य, असल।

वास्तव्य० गु० बसने के योग्य।

वास्तिका० ना० स्त्री० मेथीका शाक या मेथी।

वास्तुक० ना० पु० बथुआ का साग।

वास्तुकाकार० ना० पु० पालक का साग।

वास्तूक० ना० पु० बथुआ का शाक।

वास्तोपति०
वास्तोष्पति० } ना० पु० इन्द्र, अमर कोषे यथा (वास्ताष्पतिरसुरपतिर्वे बालातिरशर्चीपति)।

वाह० ना० पु० घोड़ा, बाजी।
वाहक० ना० पु० घुड़चढ़ा।
वाहन० ना० पु० घश, जिसपरचढ़के जाया जाय, सवारी।
वाहवैरी० ना० पु० भैंसा।
वाहि० सर्व० उसको।
वाहिनी० ना० स्त्री० वाहिनी, सवारी।

वाहु०
वाहू० } ना० पु० भुज।

वाहुमूल० ना० पु० हाथ।
वाह्य० गु० बाहर का।
वाह्यालय० ना० पु० मंदिर के बाहर का बाहर का।
वि० अव्य० यह शब्द उपसर्ग है उसका अर्थ कभी निषेध कभी भिन्नता कभी विरोध कभी विशेषण कभी हीन इत्यादि होता है।
विकट० गु० विकट।
विकराल० गु० विकराल, भयंकर।
विकल० गु० व्याकुल, अधूरा।
विकलित० गु० विकल, व्याकुल।
विकल्प० ना० पु० भूल, संदेह, विचार।

विकशित०
विकसित० } गु० प्रफुल्लित, फूलाहुआ।

विकार० ना० पु० बदल रंग, स्वभाव की बदल।
विकाल० ना० पु० गोधूलि, सायंकाल।
विकाश० ना० पु० प्रकाश।
विकीरण० ना० पु० मदार वृक्ष, आक।
विकीर्ण० गु० फैलाया गया।
विकृत० गु० विरोधी, मलीन, ना० पु० दुखी।
विकृति० ना० स्त्री० विचार या स्वभाव आदि का बदल।
विक्रम० ना० पु० पराक्रम, शक्ता, वीरता।
विक्रमादित्य० ना० पु० राजाधिराज जिसने संवत् चलाया है।
विक्रय० ना० पु० बिक्री।
विक्रीत० गु० जो बिकगया।
विक्रेता० ना० पु० बचवैया, बेचनहारा।
विख्यात० गु० प्रगट, प्रसिद्ध, प्रकाशित।
विगत० गु० रहित, बिना, बिदून।
विगति० ना० स्त्री० बिगाड़, बुराई, बिरस।
विगन्ध० ना० स्त्री० कुवास, बदबू।
विगुण० ना० पु० औगुण, अवगुण।
विग्रह० ना० पु० शरीर, फैलाव, बैर, युद्ध।
विघटन० ना० पु० तोड़न, सम्पूर्ण करण।
विघटित० गु० पूराकियागया, मराहुआ।
विघ्न० ना० पु० अटकाव, रुकाव, भूल, चूक, धोखा, शुभकर्म में जो बाधा।

विघ्नराज०
विघ्नविदारण०
विघ्नहरण० } ना० पु० श्रीगणराज।

विचरण० ना० पु० पर्यटन, सैर, विहारण, विहार।
विचरित० गु० विहारित।
विचल० गु० चलायमान, चंचल, अस्थिर।
विचलित० गु० चलायमान, चंचल, अस्थिर।
विचक्षण० गु० चतुर, निपुण, प्रवीण, स्याना।
विचार० ना० पु० ध्यान, शोच, बूझ, उपाय करना।
विचारक० ना० पु० विचार करनेहारा।
विचारित० गु० जो विचारागया, निर्णीत।
विचारी० ना० पु० विचारक।
विचार्य० गु० जो विचारने के योग्य है।
विचित्र० गु० रंगारंग, नानाप्रकार के, मनोहर।
विच्छेद० ना० पु० वियोग, विनाश।
विजय० ना० पु० जय, जीत, फतह, भगवान का पार्षद जिसका अवतार हिरण्यकशिपु हुआ था।

विजयदशमी० ना० स्त्री० आश्विन शुक्ल १०, वार सुदी १०।
विजयनर० ना० पु० अर्जुन।
विजया० ना० स्त्री० भंग, बूटी।
विजयी० गु० जयवन्त, जीतनेहारा।
विजाती० } गु० भिन्न जातिका, अनजाति।
विजातीय० }
विज्ञान० ना० पु० अज्ञान, अज्ञान, अबूझ, मूढ़।
विट्० ना० पु० बीर।
विट्चर० ना० पु० शूकर, घरैला।
विटप० ना पु० वृक्ष, पल्लव, पेड़, रामायण यथा (पुष्पकवाटी ज्यों उरगारी। मोह विटप नहिं सकत उपारी।)
विडम्ब० ना० पु० दुःख, डर, छलना।
विडम्बना० ना० स्त्री० दुःखदायक, निन्दा या निन्दायुत वचन।
विडम्बित० गु० दुःखित, पीड़ित, निन्दित।
विडाल० ना० पु० मार्जार, बिलार।
वितण्डा० ना० स्त्री० लाफजनाई।
वितन० ना० पु० कामदेव।
वितरण० ना० पु० दान, त्यागना, पार उतरना।
वितल० ना० पु० पाताल विशेष।
वितस्ता० ना० स्त्री० झेलमनदी विशेष जो पञ्जाब में है।
वितस्ति० ना० पु० बारहअंगुल, बालिश्त।
वितान० ना० पु० विस्तार, चन्दवा, तम्बू, मण्डप।
वितुन्न० ना० पु० धनिया।
वितृष्णा० ना० स्त्री० निराशा, वैराग्य, तृष्णा रहित।
वित्त० ना० पु० धन, दौलत, द्रव्य, खजाना।
विथक० } गु० चकित, घबराया।
विथकित० }
विद्० गु० जाननेहारा।
विदग्ध० ना० पु० लम्पट, गु० चतुर, विचक्षण।
विदग्धा० ना० स्त्री० लम्पट स्त्री, चतुर स्त्री।
विदारण० ना० पु० फाड़न।
विदारना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना।
विदारिका० ना० स्त्री० विदारीकन्द।
विदारिगन्धा० ना० स्त्री० शालपर्णी।
विदिक्० ना० स्त्री० आग्नेयादि कोण, विदिशा।
विदित० गु० प्रकट, जो जाना गया, प्रसिद्ध।
विदिशा० } ना० स्त्री० विदिक्।
विदिश्या० }
विदीर्ण० गु० फाड़ा, चीरा, फटाहुआ।
विदुर० ना० पु० दासीपुत्र, हरिभक्त विशेष।
विदुष० गु० पण्डित, बुधा।
विदूषक० ना० पु० भांड, निंदक।
विदेश० ना० पु० परदेश, परदेश, विलायत।
विदेशी० ना० पु० परदेशी, विलायती।
विदेह० ना० पु० राजा जनक, कामदेव।
विदेहजा० ना० स्त्री० सीताजी।
विदैवत० ना० पु० देवता।
विद्यमान० गु० वर्तमान, प्रकट, मौजूद।
विद्या० ना० स्त्री० शास्त्रका ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, इल्म, हुनर, गुण, शिक्षादिक १४।
विद्याधर० ना० पु० देवता विशेष, गु० पण्डित, गुणी, कारीगर।
विद्यावान्० गु० ज्ञानवान् पण्डित, आलिम।
विद्यार्थी० ना० पु० छात्र, शिष्य, गु० पढ़ने हारा।
विद्यालय० ना० पु० पाठशाला, विद्या का घर।
विद्युत्० ना० स्त्री० बिजली, कौंदा।
विद्युल्लता० ना० स्त्री० कलिहारी।
विद्युल्लता० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा।
विद्रुम० ना० पु० मूंगा।
विद्वद्विनोद० ना० पु० शास्त्रार्थ, गुण विद्याकी चर्चा पण्डितों में।
विद्वान्० गु० विद्यावान्, पण्डित, पढ़ा।

विद्वेष० ना० पु० वैर, विरोध, अदावत।
विद्वेषिनी० ना० स्त्री० विरोधिनी, निन्दक, घोर दुःखदाता।
विद्वेषी० ना० पु० वरी शत्रु।
विध० ना० स्त्री० प्रकार, रीति।
विधवा० ना० स्त्री० रांड, बेवह।
विधर्म० ना० पु० निज वर्णाश्रमसे विपरीत धर्म।
विधाता० ना० पु०, ब्रह्मा।
विधान० ना० पु० शास्त्रोक्त व्यवहार, विधि, आचार।
विधायक० ना० पु० जो विधानकरै, सौंपन हारा।
विधात्री० ना० स्त्री० सरस्वती।
विधि० ना० स्त्री० प्रारब्ध, ना० पु० ब्रह्मा, देवता, कर्म, भाग्य, विधाता, प्रकार, शास्त्रोक्त व्यवहार।
विधिब्रह्माण्ड० ना० पु० ब्रह्माण्ड।
विधिकर० ना० पु० सेवक, भृत्य, गुलाम।
विधिगति० ना० स्त्री० कर्म की चाल, ब्रह्मा की दशा या लिखनि या चाल या वर्त्तन।
विधिपिता० ना० पु० कमल।
विधिवत्० अव्य० यथा योग्य, विहित।
विधु० ना० पु० चन्द्रमा।
विधुन्तुद० ना० पु० राहु, आठवां ग्रह।
विधुवदनी० ना० स्त्री० चन्द्रवदना, अतिसुन्दर, जिसका मुख चन्द्रमा के समान है।
विधुर० ना० पु० वियोग, व्याकुलता।
विधेय० गु० सुभाऊ, शिष्ट, होनहार, सदाचारी विशेषणभेद।
विधेयार्थदर्शक० गु० विधान के अर्थ देखने हारा।
विध्वंस० ना० पु० विनाश, घृणा, विरोध।
वि० सर्व० उन।
विनत० गु० नम्र, आधीन, झुका, टेढ़ा।
विनता० ना० स्त्री० गरुड़जीकी माता, कश्यप की स्त्री।
विनती० ना० स्त्री० प्रार्थना, निवेदन, खुशामद।
विनय० ना० पु० शिष्टाचार, ज्ञान, नम्रता, आदर, सुभाव, खुशामद।
विनयी० गु० विनयशील, शिष्टाचारी, नम्र, नीतिज्ञ।
विनष्ट० गु० जिसका विनाश होगया।
विना० अव्य० त्याग के, छोड़, रहित।
विनायक० ना० पु० श्रीगणेशजी।
विनाश० ना० पु० क्षय, नाश।
विनिमय० ना० पु० अदलबदल, एवज।
विनीत० गु० विनयी, नम्र, ना० पु० माली।
विनीता० ना० स्त्री० उत्तमा।
विन० अव्य० विना।
विनोद० ना० पु० चाव, आनन्द, क्रीड़ा, खेल।
विन्दक० गु० लाभयुत।
विन्दु० ना० पु० बूंद, अनुस्वार, सुना, शून्य, मणि, वीर्य, रेत।
विन्ध्य० ना० पु० विन्ध्याचल।
विन्ध्यगिरि० ना० पु० विन्ध्याचल।
विन्ध्यवासिनी० ना० स्त्री० विन्ध्याचल की देवी विशेष जो मिर्जापुरके समीप है।
विन्ध्याचल० ना० पु० पर्वत विशेष जो भरतखण्ड के मध्यमें है।
विन्यास० ना० पु० समूह समह, और समूह या स्थान।
विपत्०
विपत्ति०
विपत्ति० } ना० स्त्री० आपदा, अभाग्य, दुर्गति, आफत।
विपथ० ना० पु० कुपन्थ, कुमार्ग।
विपद्० ना० पु० विपत्ति।
विपद्ग्रस्त० गु० अभागी, दुःखी।
विपरीत० ना० पु० उलटा, विरोधी, ना० स्त्री० विरोध, दुर्गा, स्पष्ट।
विपर्य्यय० ना० पु० विरुद्धता, विपरीतता।
विपल० ना० पु० पलका साठवां भाग।
विपक्ष० ना० पु० शत्रु, वैरी।

विपक्षता० ना० स्त्री० शत्रुता, वैर, अदावत।
विपक्षी० ना० पु० शत्रु, मुद्दई।
विपाक० ना० पु० प्रारब्ध का हेतु, भोजन का पकाना।
विपाट० } ना० स्त्री० व्यासानदी पञ्जाब
विपाशा० } की।
विपिन० ना० पु० वन, जंगल।
विपुल० गु० बहुत, बहुतात, विस्तार।
विपुलता० ना० स्त्री० बहुतायत, विस्तारित।
विपुला० ना० स्त्री० धरती, सुमेरुका पश्चिम भाग।
विपुवा० ना० स्त्री० भाद्रपेर।
विप्र० ना० पु० ब्राह्मण।
विप्रचरण० ना० पु० ब्राह्मण का पाव, विशेष भृगुलता का चिह्न जो श्रीविष्णुनारायण के हृदय में चिह्नित है।
विप्रलाप० ना० पु० अनर्थवाक्य, मृतकगुणकथन, विलाप समय वार्ता।
विफल० गु० निष्फल, व्यर्थ।
विभक्त० गु० जो भागकियागया, पृथक्, अलग।
विभक्ति० ना० स्त्री० अंश, भाग, बाँट, सुबादि और तिङ् आदि और कारक बोधक।
विभक्त्यन्त० ना० पु० जिस शब्द वा सर्वनाम के अन्त में विभक्तिका प्रत्यय है।
विभञ्जक० गु० भजन करने हारा, नाशन।
विभञ्जन० ना० पु० मारण, भञ्जन, नाशन।
विभव० ना० पु० द्रव्य, राज, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, प्रताप, मुक्ति।
विभाकर० ना० पु० सूर्य।
विभाकरी० ना० स्त्री० रात, रात्रि।
विभाग० ना० पु० अंश, विभक्ति।
विभावसु० ना० पु० सूर्य, अग्नि।
विभिस० ना० पु० सोर।
विभीतक० ना० पु० बहेड़ा।
विभीषण० ना० पु० रावणका भिमाय भई, मु० भगत।
विभु० ना० पु० स्वामी, श्रीविष्णुजी, श्रीशङ्कर, ब्रह्मा, गु० सर्वव्यापी, सर्वत्र।
विभूति० ना० स्त्री० यज्ञकी भस्म, ऐश्वर्य, भस्म, अष्टसिद्धि, प्रभुता।
विभूषण० ना० पु० आभरण, अलङ्कार, शोभा।
विभूषित० गु० शोभित, आभूषित, अलङ्कृत।
विभेद० ना० पु० अन्तर, फूट, विशेषभेद।
विभ्रम० ना० पु० भ्रान्ति, चूक, भूल, धोखा, सन्देह।
विमल० ना० स्त्री० विशेष बुद्धि, ना० पु० मातृपिहिर जो जनक राजाका विरोधी था।
विमल० गु० उजला, निर्मल, स्वच्छ, साफ।
विमलनयन० ना० पु० ज्ञानदृष्टि, दिव्यदृष्टि, निर्मल नेत्र।
विमला० ना० स्त्री० श्रीपार्वती जी।
विमाता० ना० स्त्री० सौतेली माता, दूसरीमाता।
विमातृ० ना० स्त्री० विमाता, साधारण लोग, इसका उच्चारण विमाताजिके स्थान में करते हैं।
विमातृज० ना० पु० सौतेली माताकापुत्र, सौतेला भाई।
विमान० ना० पु० स्वर्ग का सिंहासन, देवतों का यान।
विमुख० गु० विरोधी, प्रतिकूल, जिसका मुख फिरगया है, यह शब्द सम्मुख का विरोधी है।
विमोचन० }
विमोक्षण० } ना० पु० त्याग, छुटन।
विम्ब० ना० पु० परछाहीं, प्रतिबिम्ब, कुन्दुरू तरकारीविशेष, चन्द्र और सूर्य का मण्डल।
विम्बा० ना० पु० फलविशेष जो अतिकडू होता है और पकने पर अतिलाल वर्ण होजाता।
विम्बोर० ना० पु० कन्दूरी लता, अगर बेल।
विम्बुक० ना० पु० लाल, अधूर।
वियो० गु० दूसरा।
वियोग० ना० पु० विछोह, बिछुराहट, विच्छेद, आपदा, जुदाई।

वियोगित० गु० जो बिछुड़ गया, भिन्नभया।
वियोगिनी० ना० स्त्री० भिन्न, बिछुरी, जुदी।
वियोगी० गु० विरही, जुदा, बिछुरा, भिन्न।
विरक्त० गु० वैराग्य, शील, कामजित्, उदासी।
विरचन० ना० पु० बनाने, रचने, पैदाकरना।
विरचना० स० क्रि० बनाना, रचना, उपजाना।
विरचित० गु० बना, रचा।
विरजा० ना० स्त्री० पौधाविशेष, तृणविशेष, दूब।
विरञ्चि० ना० पु० ब्रह्मा।
विरज० गु० निर्मल, खुश।
विरत० गु० निवृत्ति, संगहीन।
विरति० ना० स्त्री० निवृत्त, वैराग्य।
विरथ० गु० रथहीन, पदाति।
विरद० ना० पु० विरद, गु० निदन्त।
विरल० गु० सूक्ष्म, ढीला, प्रकट, प्रसिद्ध।
विरलच्छदा० ना० स्त्री० पालक का शाक।
विरला० गु० कोई, अनूठा, अनूप, सूक्ष्म, ढील।
विरस० गु० रसहीन।
विरह० ना० पु० वियोग।
विरहित० गु० वियोगित।
विरहिनी० गु० स्त्री० वियोगिनी।
विरही० गु० वियोगी।
विराग० ना० पु० मन की इच्छा का त्याग, जुदाई, विषय भोग का परित्याग, सुख दुःख हीन।
विरागी० गु० उदासी, मनकी इच्छा मारने हारा।
विराजना० अ० क्रि० विराजना।
विराजमान०
विराजित० } गु० शोभायमान।
विराट० ना० पु० विराट राजा का नाम है।
विराम० ना० पु० देर, विश्राम, हलका चिह्न, गु० अस्थिर, व्याकुल, बीमार।
विरालिका० ना० स्त्री० बिराक्षिन्द।
विरुज० गु० आरोग्य, तन्दुरुस्त।
विरुद्ध० गु० विरोधी, विपरीत, जो रोकागया, वैर, अदावत।
विरुद्धता० ना० स्त्री० विरोध, चिढ़, घिन, शत्रुता।
विरूप० गु० कुरूप, भोंडा।
विरूपाक्ष० ना० पु० श्री महादेवजी, राक्षस विशेष।
विरेक० ना० पु० पैखाना, दस्त।
विरेचन० ना० पु० पैखाना होना, दस्तजारी होना।
विरोचन० ना० पु० सूर्य्य, अग्नि, दैत्य, राजा बलिका पिता, राजाविशेष।
विरोध० ना० पु० वैर, झगड़ा, अदावत।
विरोधी० गु० विरोधकारक, झगड़ालू, वैरी।
विरोधोक्ति० ना० स्त्री० अनर्थप्रकाश, विरोध कथन।
विल० ना० पु० बिल।
विलग० गु० भिन्न, पृथक्।
विलज्ज० गु० निर्लज्ज, बेहया।
विलम्ब० ना० पु० देर अबेर, टालमटोल।
विलम्बना० अ० क्रि० रहना, ठहरना, देर करना।
विलय० ना० पु० प्रलय, जगत् का नाश।
विलक्षण० गु० अभय प्रकारका, अद्भुत।
विलाप० ना० पु० सन्ताप, शोक का वर्णन, रोना।
विलायत० ना० स्त्री० परदेश, अन्यदेश।
विलाश० ना० विलास।
विलासी० गु० भोगी, क्रीडाकारक, ना० पु० सर्प।
विलास० ना० पु० हर्ष, आनन्द, सुख, क्रीडा, सिलाईपन, भोग, कार्य।
विलिका० ना० स्त्री० विलिका औषधि।
विलुप्त० गु० जो नाश को प्राप्तभया, मिटगया।
विलेप० ना० पु० लेप, चन्दन अपटना।

विलेशय० ना० पु० शशा, चौगड़ा, खरगोश।
विलोकन० ना० स्त्री० दृष्टि, तार।
विलोकना० स० क्रि० देखना, ताकना, निरखना।
विलोचन० ना० पु० नेत्र, नयन, आंख।
विलोड़ना० स० क्रि० मथना, महना।
विलोम० ना० पु० उलटा, विपरीत।
विलोरना० स० क्रि० विलोड़ना।
विल्व० ना० पु० बेल वृक्ष वा उसका फल।
विल्वकिम० ना० पु० बिल्व, बेल।
विवर० ना० पु० छिद्र, छेद, बिल, घर, गुफा।
विवरण० ना० पु० व्याख्या, बखान, विस्तार, टीका, वर्णहीन।
विवर्ण० ना० पु० नीचजातिकामनुष्य, कुजाति।
विवर्द्धक० गु० वृद्धिकारक, बढ़ानेहारा।
विवर्द्धन० ना० पु० बढ़ती, वृद्धि।
विवर्द्धित० गु० वृद्धिको प्राप्तभया, बढ़ायागया।
विवश० वशहीन, वशाभूत, परवश, पराधीन, मृत्युसमय जो घबरा वा अधिर हो।
विवस्त्र० गु० वस्त्रहीन, नंगा।
विवस्वान्० ना० पु० सूर्य।
विवक्षा० ना० स्त्री० वाञ्छा, कहनेकी इच्छा।
विवक्षित० गु० वाञ्छित, इष्ट।
विवाद० ना० पु० कलह, झगड़ा।
विवादी० गु० जो विवादकर।
विवाह० ना० पु० व्याह, गठबन्धन।
विवाहित० गु० जो विवाहागया।
विवाहिता० ना० स्त्री० जो विवाहीगई।
विवि० गु० दो, २।
विविक्त० ना० पु० एकान्त रहित।
विविध० गु० नानाप्रकार, अनेक, बहुरूपी।
विवुध० ना० पु० देवता, पण्डित।
विवुधवन० ना० पु० स्वर्ग, नन्दनवन।
विवुधवैद्य० ना० पु० अश्विनीकुमार।
विवुधारि० ना० पु० राक्षस, दैत्य।
विवेक० ना० पु० ब्योरा, विचार, ज्ञान।
विवेकी० गु० विचारी, ज्ञानी।
विवेचक० ना० पु० असत्य और सत्य का विचारी।
विवेचन० ना० पु० विचार।
विवेचना० ना० स्त्री० सत्यासत्य का विचार, परखना, जानना।
विशद० गु० उज्ज्वल, स्वच्छ, साफ, ठीक।
विशदण्ड० ना० पु० अग्निमन्दण्डा, दण्ड की निन्दा, कमलनाल।
विशदवार्ता० ना० स्त्री० उज्ज्वलवार्ता, स्वच्छभाषा, साफबात।
विशल्या० ना० स्त्री० कालिहारी।
विशाख० ना० पु० पुनर्नवा पौधा।
विशाखा० ना० स्त्री० स्त्री, सोलहवां नक्षत्र।
विशार० ना० पु० मछली।
विशारद० ना० पु० मोलसिरीवृक्ष, गु० चतुर, प्राज्ञ, ज्ञाता।
विशाल० गु० बड़ा, चौड़ा, सुन्दर, दुःखरहित।
विशाला० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
विशिख० ना० पु० बाण, तीर।
विशिखासन० ना० पु० धनुष, कमान।
विशिष्ट० गु० संयुक्त।
विशुद्ध० गु० पवित्र, पाक, साफ, चक्रविशेष, जो योगशास्त्रमें वर्णित है।
विशूचिका० ना० स्त्री० व्याधि, हुलकी, हैजा।
विशेष० ना० पु० जाति, तरह, भेद, गुण, ख़ास कर, गु० बहुत, अधिक, एक।
विशेषण० गु० जो एकको दूसरे से पृथक्करे, गुणवाचक, ताराज, सिफत।
विशेषता० ना० स्त्री० अधिकाई, प्रभुताई।
विशेष्य० ना० पु० गुण, जिसकी तारीफ़ की जावे, गु० जो विशेषण के योग्य है, पृथक्किया पदवा।
विशोक० गु० शोकरहित, खेदहीन, दुःख।
विश्रान्त० गु० जिसने विश्राम किया, ना० पु० मथुरापुरमें स्थानविशेष।

विश्राम॰ ना॰ पु॰ सुख, चैन, कल।
विश्राविगंधा॰ ना॰ स्त्री॰ आहुबेर।
विश्लेष॰ ना॰ पु॰ वियोग।
विश्व॰ ना॰ पु॰ जगत्, देवतोंकी जाति जिसमें दशवसु इत्यादि हैं, सोंठ, सब।
विश्वकर्मा॰ ना॰ पु॰ देवतों का बर्ढ़ई।
विश्वगन्धिका॰ ना॰ स्त्री॰ आहुबेर।
विश्वदेवा॰ ना॰ पु॰ गगेरुआ।
विश्वनाथ॰ ना॰ पु॰ काशी में प्रधानशिव।
विश्वभेषज॰ ना॰ पु॰ सोंठ।
विश्वम्भर॰ ना॰ पु॰ परमात्मा, ईश्वर।
विश्वम्भरा॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती।
विश्वरूप॰ ना॰ पु॰ सर्वरूप, ईश्वर, विराट तन।
विश्वरूपक॰ ना॰ पु॰ काला अगर।
विश्वविमोहन॰ ना॰ पु॰ कामदेव।
विश्वसर्ग॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा, कर्त्ता, विधाता।
विश्वामित्र॰ ना॰ पु॰ मुनिविशेष, धनुर्वेद कर्त्ता।
विश्वास॰ ना॰ पु॰ प्रतीत, भरोसा, प्रत्यय।
विश्वासघात॰ ना॰ पु॰ विश्वास का हनन।
विश्वासघाती॰ ना॰ पु॰ विश्वास का घात कर्त्ता, जो मित्रतामें छलकरे।
विश्वासी॰ गु॰ प्रतीत वा भरोसा रखनेहारा।
विश्वेश्वर॰ ना॰ पु॰ विश्वनाथ, भगवान्।
विश्वौषधि॰ ना॰ स्त्री॰ सोंठ।
विष॰ ना॰ पु॰ गरल, हलाहल।
विषण॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा, सूर्य्य।
विषद॰ गु॰ विशद, श्वेत, गोरा, ठेठ।
विषधर॰ ना॰ पु॰ सांप, सर्प, श्रीमहादेव।
विषध्वंसी॰ ना॰ पु॰ नागरमोथा।
विषपुष्पक॰ ना॰ पु॰ मेनफल।
विषम॰ गु॰ अयुग्म गिनती यथा ३।५।७ जो बराबर न हों, असम, कठिन,भयानक,ना॰ पु॰ ज्वरविशेष।
विषमत्रिभुज॰ ना॰ पु॰ जिसकी भुजा तुल्य न हों।
विषमान॰ ना॰ पु॰ औषधि वा विषविशेष।
विषमुष्टक॰ ना॰ पु॰ महानिंब।
विषय॰ ना॰ पु॰ इंद्रियां जिन वस्तुओंको ग्रहण करती हैं यथा स्वाद, रंग, रूप, रस, भोगादि, काम, बात, अर्थ, अव्य॰ लिये, मध्ये।
विषयक॰ गु॰ संसारी जगत् के।
विषयी॰ गु॰ जो विषयों में आसक्त।
विषवैद्य॰ ना॰ पु॰ जांगलिक,गारुड़ि जो सर्पादि काटेका विष उतारता है।
विषहा॰ गु॰ जो विषसे भरा है।
विषाण॰ ना॰ पु॰ पशुके सींग।
विषाद॰ ना॰ पु॰ थकाई, उदासी, दुःख।
विषादी॰ गु॰ उदासी, थका, दुःखी।
विषानिका॰ ना॰ स्त्री॰ मेढ़ासिंही।
विषुव॰ } ना॰ पु॰ जब दिन रात समान
विषुवत्॰ } होता है उसीका नाम।
विषुवत्काल॰ ना॰ पु॰ जिस समय सूर्य्य विषुवत् रेखापर रहते हैं।
विषुवद्रेखा॰ ना॰ स्त्री॰ रेखा, भूमि के ऊपर मध्य में समान सूत डालने से जो रेखा कल्पित है।
विषे॰ अव्य॰ में, बीच, मध्य।
विष्कर॰ ना॰ पु॰ मुर्गा।
विष्ठा॰ ना॰ स्त्री॰ बीट, मल, गूह।
विष्ठाकृमि॰ ना॰ पु॰ विष्ठा का कीड़ा।
विष्टि॰ ना॰ स्त्री॰ भद्रा, कुयोग।
विष्टर॰ ना॰ पु॰ आसनविशेष।
विष्टरश्रवा॰ ना॰ पु॰ विष्णु, नारायण।
विष्णु॰ ना॰ पु॰ साधु, मनुष्य, सूर्य, अग्नि, यज्ञ, श्रीनारायण।
विष्णुकान्ता॰ ना॰ स्त्री॰ पौधाविशेष, कौआठोंठी।
विष्णुपद॰ ना॰ पु॰ आकाश, छन्दविशेष, गीतविशेष।

विलेशय० ना० पु० साँप, चौसदा, खरगोश।
विलोकन० ना० स्त्री० दृष्टि, ताक।
विलोकना० स० क्रि० देखना, ताकना, निरखना।
विलोचन० ना० पु० नेत्र, नयन, आंख।
विलोड़ना० स० क्रि० मथना, महना।
विलोम० ना० पु० उलटा, विपरीत।
विलोरना० स० क्रि० बिलोड़ना।
विल्व० ना० पु० बेल वृक्ष या उसका फल।
विल्वकिल० ना० पु० विल्व, बेल।
विवर० ना० पु० छिद्र, छेद, बिल, घर, भुंहरा।
विवरण० ना० पु० व्याख्या बखान, विस्तार, टीका वर्णन।
विवर्ण० ना० पु० नीचजातिशूद्रमनुष्य, कुजाति।
विवर्द्धक० गु० वृद्धिकारक, बढानेहारा।
विवर्द्धन० ना० पु० बढ़ती, वृद्धि।
विवर्द्धित० गु० वृद्धि प्राप्तभया, बढ़ायागया।
विवश० वशहीन, वशीभूत, परवश, पराधीन, मृत्युसमय जो घबरा वा अस्थिर हो।
विवस्त्र० गु० वस्त्रहीन, नंगा।
विवस्वान्० ना० पु० सूर्य्य।
विवक्षा० ना० स्त्री० वाञ्छा, कहनेकी इच्छा।
विवक्षित० गु० वाञ्छित।
विवाद० ना० पु० कलह, झगड़ा।
विवादी० गु० जो विवादकरे।
विवाह० ना० पु० ब्याह, गठबन्धन।
विवाहित० गु० जो व्याहागया।
विवाहिता० ना० स्त्री० जो व्याहीगई।
विवि० गु० दो, २।
विविक्त० ना० पु० एकान्त रहित।
विविध० गु० नानाप्रकार और बहुरूपी।
विबुध० ना० पु० देवता, पण्डित।
विबुधवन० ना० पु० स्वर्ग, नन्दनवन।
विबुधवैद्य० ना० पु० अश्विनीकुमार।
विबुधारि० ना० पु० राक्षस, दैत्य।
विवेक० ना० पु० ध्यान, विचार, ज्ञान।
विवेकी० गु० विचारी, ज्ञानी।
विवेचक० ना० पु० असत्य और सत्य का विचारी।
विवेचन० ना० पु० विचार।
विवेचना० ना० स्त्री० सत्यासत्य का विचार, परखना, जांचना।
विशद० गु० उज्ज्वल, स्वच्छ, साफ, ठीक।
विशदण्ड० ना० पु० अतिनम्रदण्डी, दण्ड की निन्दा, कमलनाल।
विशदवाणी० ना० स्त्री० उज्ज्वलवाणी, स्पष्टभाषा साफबात।
विशल्या० ना० स्त्री० कलिहारी।
विशाख० ना० पु० पुनर्नवा पौधा।
विशाखा० ना० स्त्री० स्त्री, सोलहवां नक्षत्र।
विशार० ना० पु० मछली।
विशारद० ना० पु० मालसिरीवृक्ष, गु० चतुर, प्राज्ञ, ज्ञाता।
विशाल० गु० बड़ा, चौड़ा, सुन्दर, दुःखरहित।
विशाला० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
विशिख० ना० पु० बाण, तीर।
विशिखासन० ना० पु० धनुष, कमान।
विशिष्ट० गु० सयुक्त।
विशुद्ध० गु० पवित्र, पक्व, साफ, चक्रविशेष जो योगशास्त्रमें वर्णित है।
विशूचिका० ना० स्त्री० छर्दि, हैजा, हुलका।
विशेष० ना० पु० जाति, रत्न, भेद गुण प्रकाश कर, गु० बहुत, अधिक, एक।
विशेषण० गु० जो एकको दूसरे से पृथक्करे, गुणवाचक तारीफ सिफत।
विशेषता० ना० स्त्री० अधिकाई, प्रभुतियन।
विशेष्य० ना० पु० गुण, जिसकी तारीफ की जावें, गु० जो विशेषण के योग्य है, मुखिया पहला।
विशोक० गु० शोकरहित, क्लेशहीन, प्रसन्न।
विश्रान्त० गु० जिसने विश्राम किया, ना० पु० मथुरापुरमें स्नानविशेष।

विश्राम० ना० पु० श्रम, चैन, कल।
विश्राविगंधा० ना० स्त्री० आहुलेर।
विश्लेष० ना० पु० वियोग।
विश्व० ना० पु० जगत्, देवतोंकी जाति जिसमें दशावसु इत्यादि हैं, सोंठ, ■।
विश्वकर्मा० ना० पु० देवतों का बरई।
विश्वगन्धिका० ना० स्त्री० आहुलेर।
विश्वदेवा० ना० पु० गंगेरुवा।
विश्वनाथ० ना० पु० काशी में प्रधानशिव।
विश्वभेषज० ना० पु० सोंठ।
विश्वम्भर० ना० पु० परमात्मा, ईश्वर।
विश्वम्भरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
विश्वरूप० ना० पु० सर्वरूप, ईश्वर, विराट रूप।
विश्वरूपक० ना० पु० काला अगर।
विश्वविमोहन० ना० पु० कामदेव।
विश्वसर्ग० ना० पु० ब्रह्मा, कर्त्ता, विधाता।
विश्वामित्र० ना० पु० मुनिविशेष, धनुर्वेद कर्त्ता।
विश्वास० ना० पु० प्रतीत, भरोसा, प्रत्यय।
विश्वासघात० ना० पु० विश्वास का हनन।
विश्वासघाती० ना० पु० विश्वास का घात कर्त्ता, जो मित्रतामें छलकरे।
विश्वासी० गु० प्रतीत या भरोसा रखनेहारा।
विश्वेश्वर० ना० पु० विश्वनाथ, भगवान्।
विश्वौषधि० ना० स्त्री० सोंठ।
विष० ना० पु० गरल, हलाहल।
विषण० ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य्य।
विषद० गु० विशद, श्वेत, गरा, ठेठ।
विषधर० ना० पु० सांप, सर्प, धर्महृदेत।
विषध्यसी० ना० पु० नागरमाथा।
विषपुष्पक० ना० पु० मैनफल।
विषम० गु० अयुग्म गिनती यथा ३।५।७ जो बराबर न हो, अमम, कठिन, भयानक, ना० पु० ज्वरविशेष।
विषमत्रिभुज० ना० पु० जिसकी भुजा तुल्य न हों।
विषमान० ना० पु० औषधि या विषविशेष।
विषमुष्टक० ना० पु० महानिंब।
विषय० ना० पु० इंद्रिया जिन वस्तुओंको ग्रहण करती हैं यथा स्वाद, रंग रूप, रस, भोगादि, काम, बात, अर्थ, अव्य० लिये, मध्ये।
विषयक० गु० संसारी जगत् के।
विषयी० गु० जो विषयों में आसक्त।
विषवैद्य० ना० पु० जांगलिक, गारुड़ि जो सर्पादि काटेका विष उतारता है।
विषहा० गु० जो विषसे मरा है।
विषाण० ना० पु० पशुके सींग।
विषाद० ना० पु० घबराई, उदासी, दुःख।
विषादी० गु० उदासी, थका, दुःखी।
विषानिका० ना० स्त्री० मेढ़ासिंगी।
विषुव० }
विषुवत्० } ना० पु० जब दिन रात समान होता है उसीका नाम।
विषुवत्काल० ना० पु० जिस समय सूर्य्य विषुवत् रेखापर रहते हैं।
विषुवद्रेखा० ना० स्त्री० रेखा, भूमि के ऊपर शून्य में समान सूत डालने से जो रेखा कल्पित है।
विष्क० अव्य० म, बाद, मध्य।
विष्कर० ना० पु० मुर्गा।
विष्ठा० ना० स्त्री० बीट, मल, गूह।
विष्ठारम्भि० ना० पु० विष्ठा का कीड़ा।
विष्टि० ना० स्त्री० भद्रा, कुयोग।
विष्टर० ना० पु० आसनविशेष।
विष्टरश्रवा० ना० पु० विष्णु, नारायण।
विष्णु० ना० पु० साधु, मनुष्य, सूर्य, अग्नि, यज्ञ, श्रीनारायण।
विष्णुकान्ता० ना० स्त्री० पौधाविशेष, की आगारी।
विष्णुपद० ना० पु० आकाश, छन्दविशेष, गीतविशेष।

विष्णुपदी० ना० स्त्री० श्रीगङ्गाजी।
विष्णुपद्य० ना० पु० विष्णु का भजन।
विष्णुवल्लभा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी।
विस० सर्व० उस।
विसर्ग० ना० पु० दो बिन्दुमात्र, वर्णविशेष ः।
विसर्जन० ना० पु० विदा, त्याग, दान, पूरा।
विसारन० ना० पु० बिसरना।
विसूरति० क्रि० चिन्ता, दुचिता।
विस्तर० } ना० पु० फैलाव पसराव, धारा,
विस्तार० } बहुत, चौड़ाव, आधार।
विस्तीर्ण० गु० बड़ा, फैलाहुआ, फैला।
विस्तृत० गु० फैलाया, पसारा, विस्तारयुक्त।
विस्फोटक० ना० पु० फोड़ा, चेचक, माता।
विस्मय० ना० पु० आश्चर्य, अचम्भा, शोक, सन्देह, डर।
विस्मरण० ना० पु० भूल, चूक, भुलाहट।
विस्मित० गु० आश्चर्यित, अचम्भित, चकित, चिंतित।
विस्मृत० ना० स्त्री० भूल भुलाहट।
विस्वादु० गु० स्वादहीन, नीरस।
विहग० ना० पु० पक्षी, विहङ्ग, चिड़िया।
विहगेश० ना० पु० गरुड़।
विहङ्ग० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।
विहङ्गपति० ना० पु० गरुड़।
विहङ्गम० ना० पु० पक्षी, विहग।
विहगराज० ना० पु० गरुड़, वैनतेय।
विहण्डन० ना० पु० खण्डन, छेदन, भेदन।
विहरण० ना० पु० गमन।
विहरना० अ० क्रि० फटना, तड़कना।
विहसना० अ० क्रि० हसना, खिलना।
विहाय० अव्य० त्याग, छोड़, सिवाय।
विहायस० ना० पु० आकाश।
विहायसी० ना० पु० पक्षी, चिड़िया।
विहार० ना० पु० क्रीड़ा, आनन्द, दुरा।
विहारस्थली० ना० स्त्री० क्रीड़ागार।
विहारी० गु० क्रीड़ाकारक, चञ्चल, चपल।
विहित० गु० उचित।
विहीन० गु० त्यागित, रहित, अविवेकी, निरादर।
विह्वल० गु० व्याकुल, घबरा।
विक्षिप्त० गु० उन्मत्त, उग्र।
विक्षेप० ना० पु० व्याकुलता, त्याग, चूक, विघ्न।
विज्ञ० गु० चतुर, निपुण विद्वान्।
विज्ञता० ना० स्त्री० निपुणता, चातुर्य, जानकारी।
विज्ञप्ति० ना० स्त्री० विनती, विनय।
विज्ञान० ना० पु० विशेषज्ञान, अनेकविधि, आश्चर्य रस।
विज्ञाननिधान० ना० पु० महाज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी अध्यात्मज्ञाता, ब्रह्मवादी।
विज्ञानी० गु० परमज्ञानी, अतिचतुर, महापण्डित।
वितापन० ना० पु० जनावना, चिताना।
वीचि० } ना० स्त्री० लहरी, मौज।
वीचिका० }
वीज० ना० पु० मूल, कारण, निया, पानी।
वीणा० ना० स्त्री० तम्बूरह, वाद्यविशेष।
वीतराग० ना० पु० विरागयुक्त, वैरागी।
वीथिका० } ना० स्त्री० गली, मार्ग बाट, राह।
वीथी० }
वीप० गु० दो, २।
वीर० ना० पु० शूर, सूर्मा, बहादुर, भाई।
वीरता० ना० स्त्री० } सूरमापन, बहादुरी।
वीरत्व० ना० पु० }
वीरपुष्पा० ना० स्त्री० सहदेवी पौधा।
वीरभद्र० ना० पु० शिवगणविशेष।
वीरभाव० ना० पु० सामर्थ्य, धीरता, बहादुरी।
वीरभूमि० ना० स्त्री० युद्धस्थान, ना० पु० बंगालदेश में एक जिलह।

वीररस० ना० पु० काव्यरसविशेष, वीरता।

वीरवृक्ष० ना० पु० भिलावा वृक्ष।

वीरसेन० ना० पु० चाहू।

वीरा० ना० पु० केला (कदली मधनी मोचा रम्भावीरापरच्छदा, इति निघण्टे) वारोखी, पान।

वीर्य्य० ना० पु० बीज, सामर्थ्य, बल।

वीर्य्यकर० ना० पु० उड़द अन्न।

वुद्दी० अव्य० उसी समय वा उसी स्थान में, अभी।

वुरला० } ना० स्त्री० मीठी तुम्बी, लौकी, राम
वुसी० } तुरई (तुम्बिमिष्ट महातुम्बी राजला वुरला वुसी इति निघण्टे)।

वृक० ना० पु० भेड़िया, हुण्डार, पपीहा पक्षी, दैत्यविशेष।

वृत्त० ना० पु० गोल, गोलाकार, दैत्यविशेष।

वृत्तखण्ड० ना० पु० जो दो त्रिज्याओं और मध्यस्थ चापसे घिराहो, वृत्तका टुकड़ा।

वृत्तफल० ना० पु० तालऊगा।

वृत्तांश० ना० पु० गोलका अंश।

वृत्तान्त० ना० पु० समाचार, वार्ता, कथा, कहानी।

वृत्तार्द्ध० ना० पु० गोलार्द्ध, गोलका आधा।

वृत्ति० ना० स्त्री० आचरण, स्वभाव, प्रथा, जीविका, व्यवहार, सूत्रका अर्थ, टीका।

वृथा० अव्य० व्यर्थ, झूठ, निष्फल, अमतलब।

वृद्ध० गु० बूढ़ा।

वृद्धक० गु० वृद्धतारक, बड़ा ज्ञानी।

वृद्धतम० गु० बहुतबूढ़ा।

वृद्धता० ना० स्त्री० बुढ़ाई, बुढ़ापा।

वृद्धप्रपितामह० ना० पु० प्रपितामह का पिता।

वृद्धप्रपितामही० ना० स्त्री० प्रपितामह की माता।

वृद्धश्रवा० ना० पु० इन्द्र।

वृद्धा० ना० स्त्री० बुढ़िया, बूढ़ी।

वृद्धापन० ना० पु० वृद्धता, बुढ़ापा।

वृद्धावस्था० ना० स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धता।

वृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती, बाढ़, अधिकता।

वृन्तफला० ना० स्त्री० अखरोट।

वृन्ता० } ना० पु० भाटा, बैंगन।
वृन्ताकी० }

वृन्द० ना० पु० समूह, यूथ, झुण्ड, ढेर।

वृन्दा० ना० स्त्री० तुलसी, देवीविशेष जो वृन्दावन में है।

वृन्दारक० ना० पु० देवता, सुर।

वृन्दावन० ना० पु० तीर्थ वा नगरविशेष।

वृश्चिक० ना० पु० बिच्छू, आठवीं राशि।

वृश्चिककाली० ना० स्त्री० मेढासिंही।

वृष० ना० पु० बैल, दूसरी राशि, कर्ण का पुत्र, इन्द्र, कामदेव, धर्म, बारासोधा।

वृषकेतु० ना० पु० श्रीमहादेवजी, कर्ण का पुत्र।

वृषदंश० } ना० पु० बिलावजन्तु, बिलार,
वृषदंशक० } महाभारते भीष्मपर्वणि यथा (धृतराष्ट्रस्य वृषदंशस्य चोभयोः, मध्यादुद्ध ताराश्च राज्ञां यभस्तरस्य)।

वृषभ० ना० पु० बैल, धर्म, दैत्यविशेष।

वृषभध्वज० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

वृषभानु० ना० पु० श्रीराधाजीका पिता।

वृषमाद्री० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।

वृषा० ना० स्त्री० वसगन्ध।

वृषादित्य० ना० पु० वृषराशिपर सूर्य।

वृष्टि० ना० स्त्री० मेह, वर्षा, बरसात।

वृष्णिरांची० ना० स्त्री० मांस आदि।

वृष्यगन्धा० ना० स्त्री० विडल।

वृह० ना० पु० चलना, बढ़ना।

वृहती० ना० स्त्री० बड़ी कटेरी।

वृहत्० गु० बड़ा, चौड़ा।

वृहत्खण्ड० ना० पु० बड़ा टुकड़ा, ध्यान सण्ड।

वृहत्फला० ना० स्त्री० जामुन, परोंद, उतीरा चचरा।

बृहदला० ना० स्त्री० सहदेवी सौंधा।
बृहद्राज० ना० पु० कसेरू।
बृहद्भानु० ना० पु० सूर्य, अग्नि।
बृहस्पति० ना० पु० पांचवा ग्रह, देवपुरोहित।
बृहस्पतिवार० ना० पु० पांचवावार, विहफ।
वृक्ष० ना० पु० पेड़, तरवर।
वृक्षकन्दा० ना० स्त्री० विदारीकन्द, मूसली।
वृक्षमूल० ना० पु० वृक्षकी जड़।
वृक्षमूलस्थली० ना० स्त्री० थाला, थांवला।
वृक्षवल्ली० ना० स्त्री० विदारीकन्द।
वृक्षसारक० ना० पु० मूसा, पौधाविशेष।
वेग० ना० पु० उतावली, पुर्त्ती, अव्य० शीघ्र।
वेगगामी० } वेगवर्ती० } गु० उतावला, शीघ्रगामी, जल्द।
वेगवान्० ना० पु० पवन, वातातप्रा, गु० वेग गामी।
वेगि० } वेगी० } अव्य० शीघ्र, जल्द।
वेणी० ना० स्त्री० त्रिवेणी अर्थात् प्रयाग में गंगा यमुना सरस्वती का सगम, स्त्रियों की चोटी।
वेणु० ना० पु० वंशी, मुरली, बांस राजाविशेष।
वेणुधर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र, बांसीगर।
वेणुवा० ना० पु० वंशरोचन, बांसीगर, ठग, धालाक।
वेतस० ना० पु० उजरत, मिहनताना।
वेतस० ना० पु० अम्लवेत।
वेताल० ना० पु० पिशाचविशेष, जिन।
वेत्ता० ना० पु० ज्ञाता, ज्ञानी, जाननेहारा।
वेत्र० ना० पु० बेंत।
वेत्रवती० ना० स्त्री० नदीविशेष।
वेत्रवन्ती० ना० स्त्री० नदीविशेष।
वेद० ना० पु० हिन्दूलोगों में धर्मशास्त्रपुस्तक जो चार हैं अर्थात् ऋग, यजु, साम, अथर्वण।
वेदगिरा० ना० स्त्री० वेदवाणी ना० पु० मुनिविशेष।
वेदत्रयी० ना० पु० त्रिवेद अर्थात् ऋग, यजु, साम।
वेदन० } वेदना० } ना० स्त्री० पीड़ा, दुःख, दर्द।
वेदविद्० गु० वेदवादी, वेदवक्ता और वेद पाठक।
वेदव्यास० ना० पु० मुनिविशेष जिन्होंने वेदका समह किया।
वेदाङ्ग० ना० पु० वेदका अंग अर्थात् शिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ३ छन्द ४ ज्योतिष ५ निरुक्त ६।
वेदान्त० ना० पु० ईश्वर के विषयमें जो वार्त्ता वेद में निर्णीतहै उसका अर्थों उपनिषदमें समह कियागया।
वेदान्तविद्या० ना० स्त्री० जो वेदांत में है, आत्मज्ञान, ब्रह्मविचार।
वेदान्ती० गु० वेदान्त मतका ज्ञाता, आत्मवादी।
वेदिका० } वेदी० } ना० स्त्री० अग्निहोत्र, चौक, वेदी।
वेध० ना० पु० छिद्र।
वेधक० ना० पु० छिद्रवैया, वेधकार।
वेधना० स० क्रि० छेदना।
वेधमुख्या० ना० स्त्री० कस्तूरी।
वेधा० ना० पु० ब्रह्मा, वेधक।
वेरभयानक० ना० पु० प्रलयरात, मृतकरात।
वेला० ना० स्त्री० समय, सायत, काल।
वेशर० ना० स्त्री० बेसर।
वेश्म० ना० पु० घर, मकान।
वेश्या० ना० स्त्री० गणिका, पतुरिया, छिनाल।
वेष्टकेसी० ना० पु० मोचरस।
वेष्टन० ना० पु० वठन, लपटन।
वेष्टित० गु० जो चारों ओरसे ढका पूरा।
वेष्म० ना० पु० वरम।
वै० अव्य० निश्चय।
वैकल० गु० व्याकुल, विकल।

वैकुण्ठ० ना० पु० विष्णुधाम, थिर, नारायण (विष्णुर्नारायण कृष्णो वैकुण्ठोविष्टरश्रवा। इत्यमर)।
वैकुण्ठनाथ० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण।
वैगन्ध० ना० पु० गन्धक।
वैचित्र्यता० ना० स्त्री० चित्रविचित्र, रंगारंग।
वैजनाथ० ना० पु० वैद्यनाथ।
वैजयन्तिका० ना० स्त्री० धरणी।
वैजयन्ती० ना० स्त्री० पताका, झण्डा।
वैडूर्य्य० ना० पु० नीलमणि, नीलम।
वैतरणी० ना० स्त्री० यमपुरी की नदी।
वैताल० ना० पु० वितल, वेताल, पिशाच, भाट, बन्दी।
वैदिक० ना० पु० वेदपाठी, जो वेदोक्त कर्म करता है।
वैदेही० ना० स्त्री० पीपरी, श्रीसीताजी।
वैद्य० ना० पु० चिकित्सक, तर्जक, हकीम।
वैद्यक० ना० पु० वैद्यविद्या की पुस्तक, वैद्य विद्या।
वैद्यनाथ० ना० पु० धन्वन्तरि, झारखण्ड में श्रीमहादेवजी।
वैभव० ना० पु० राज्य, विभवता, ऐश्वर्य।
वैर० ना० पु० शत्रुता, अदावत।
वैरागी० ना० पु० जो वैराग्य धारण करे।
वैराग्य० ना० पु० विषय त्याग, उदासपन।
वैराट्० ना० पु० जगत्रूप सर्वरूप।
वैरिन्० ना० स्त्री० शत्रु स्त्री, वैरी की स्त्री।
वैरी० ना० पु० शत्रु, दुश्मन।
वैलक्षण० ना० पु० विलक्षणता, भावान्तर।
वैलापत्रक० ना० पु० मुख्य सर्प।
वैवस्वत० ना० पु० धर्मराज, मन्वन्तर।
वैशाख० ना० पु० वैशाख, दूसरा महीना।
वैशाखी० ना० स्त्री० इन्द्रायण, धूनी विशेष।
वैशारद्य० ना० पु० मत्स्य, मछली।
वैशेषिक० ना० पु० शास्त्रविशेष।
वैश्य० ना० पु० तृतीय वर्ण, राजपूत, जाति विशेष, बैस।
वैश्यका० ना० स्त्री० कुटनी, वृद्धी।
वैश्यनी० ना० स्त्री० वश्यकी स्त्री।
वैश्रवण० ना० पु० कुबेर, यक्षराज।
वैषम्य० ना० पु० असमता, विषमता, एकान्त।
वैखानस० ना० पु० वैरागी, उदासी।
वैष्णव० ना० पु० विष्णुका उपासक, गु० जो विष्णुका है।
वैष्णवी० ना० स्त्री० लक्ष्मी जो विष्णुकी है।
वैसा० गु० उसके समान, उसीप्रकार।
वैसे० अव्य० तैसे, विनामोल, मुफ्त।
वैज्ञानिक० ना० पु० विज्ञान, ज्ञाता, परमज्ञानी।
वोहित० ना० पु० जहाज, बड़ीनाव्।
व्यक्त० गु० ज्ञात, मालूम, खुला, स्पष्ट, ज्ञानी, पढ़ा, एक।
व्यक्ति० ना० स्त्री० एकता, पृथग्भाव, ऐकाई, प्रकटता, विभक्ति।
व्यग्र० गु० भूला, भटका, व्याकुल, घबरा।
व्यग्रित० गु० चिन्तायुत, विकलित।
व्यङ्ग० ना० पु० सांहा, कुत्सित।
व्यङ्गता० ना० स्त्री० कुत्सता।
व्यजन० ना० पु० पंखा, बना।
व्यञ्जक० गु० प्रकाशक।
व्यञ्जन० ना० पु० स्वररहित समस्त वर्ण, शाक आदि तरकारी, चटनी।
व्यतिक्रम० ना० पु० उल्लंघन, अन्यथा, विरुद्धता।
व्यतिरिक्त० गु० अलग, भिन्न, अन्य।
व्यतिरेक० ना० पु० भिन्नता, भेद।
व्यतीत० गु० जो बीतगया, गुजरगया।
व्यतीपात० ना० पु० योगविशेष।
व्यत्यय० ना० पु० उलगार, अपराध, विरुद्धता।

व्यथा० ना० स्त्री० पीड़ा, बाधा, दुःख, दर्द।
व्यथित० गु० दुःखित, पीड़ित।
व्यभिचार० ना० पु० परस्त्रीगमन, कुकर्म।
व्यभिचारिणी० ना० स्त्री० दुराचारी, कुलटा, स्वैरिणी, छिनाल।
व्यभिचारी० ना० पु० छिनला, लंपट, बदकार, जो व्यभिचार करे।
व्यय० ना० पु० लागत, क्षय, नाश, खर्च।
व्ययक० गु० खर्च करनेहारा, नाशक।
व्यर्थ० गु० वृथा, निकम्मा।
व्यलीक० ना० पु० कपट, छल, झूठ।
व्यवच्छेद० ना० पु० अलग करना।
व्यवधान० ना० पु० आच्छादन, अन्तर, बीच, बीचबिचाव।
व्यवधायक० ना० पु० जो व्यवधान करे।
व्यवसाय० ना० पु० उद्योग, परिश्रम, यत्न, उपाय, तदबीर, उद्यम।
व्यवसायी० गु० जो व्यवसाय करे।
व्यवस्था० ना० स्त्री० धर्मशास्त्रकी आज्ञा का वाक्य, अलग करना, दशा, रीति।
व्यवस्थापक० गु० व्यवस्था का देनेहारा।
व्यवस्थित०गु० जो भिन्न किया गया, जो व्यवस्था किया गया, अचल।
व्यवहार० ना० पु० उद्यम, धंधा, काम, उद्यम, व्यापार, अभ्यास, झगड़ा, चाल, रीति, भाँति, देनलेन।
व्यवहार्य० गु० जो व्यवहार के योग्य है।
व्यवहित० गु० संयुत, ढकाहुआ, छुरा।
व्यसन० ना० पु० जूआआदि कुकर्म।
व्यसनी० गु० जुआरी आदि कुकर्मी।
व्यस्त० गु० व्याकुल, फैला।
व्याकरण० ना० पु० शब्दके साधुत्वका उपाय, शास्त्र, जिस से पदबोध होवे।
व्याकरणी० ना० पु० व्याकरणजाना।
व्याकुल० गु० घबरा, अस्थिर चित्त, हैरान।
व्याकुलता० ना० स्त्री० घबराहट, हैरानी।

व्याख्या० ना० पु०
व्याख्यान० ना० स्त्री० } अर्थका व्यौरेवार कहना, दर्शन, बखान।
व्याघात० ना० पु० अटकाव, योगविशेष।
व्याघ्र० ना० पु० बाघ, शेर।
व्याघ्रपाद० ना० पु० भाकर्ड, बाघका पांव।
व्याघ्रपुच्छ० ना० पु० दोनों अरंड।
व्याघ्री० ना० स्त्री० छोटा कटाई, बाघिन।
व्याज० ना० पु० छल, ठगाई, मिष, ब्याज, भेद, धोखा, बहाना।
व्याजक० गु० छली, ब्याज, ऋण।
व्याजी० ना० पु० ब्याज लेनेहारा, छली।
व्याजू० ना० पु० ब्याजके लिये जो ऋणदा।
व्याध०
व्याधा० } ना० पु० व्याधकी, हिंसक, शिकारी जो बनके पशु मारलावे।
व्याधि० ना० स्त्री० रोग, पीड़ा जो ताप आदि से होवे।
व्याधिघात० ना० पु० किरवाली।
व्याधित०
व्याधी० } गु० रोगी, पीड़ित, दुःखित।
व्यान० ना० पु० समस्त शरीर में व्यापक वायु, प्राणविशेष।
व्याप० ना० पु० रसाव।
व्यापक० गु० फैलाहुआ, विभु।
व्यापकता० ना० स्त्री० फैलाव, विभुता वैभव।
व्यापना० अ० क्रि० सर्वत्र फैलना।
व्यापाद० ना० पु० मारितरता, कुकर।
व्यापार० ना० पु० काम धंधा, चाली, धर्म लक्षण, चिह्न।
व्यापारार्थ० गु० जिसका अर्थ व्यौपार है।
व्यापी० गु० विभु, सर्वत्र फैलनेहारा।
व्याप्त० गु० जो पैठगया, सर्वगत।
व्याप्ति० ना० स्त्री० सर्वत्रगति, प्राप्ति लाभ।
व्यामोह० ना० पु० पीड़ा, दुःख।

व्यायाम० ना० पु० परिश्रम, यकाई, मल्ल-कर्म।
व्याल० ना० पु० सांप, सर्प, चीतापशु, हाथी, दिन, क्रूरमनुष्य।
व्यालदंष्ट्रक० ना० पु० गोखुरू।
व्यालपत्री० ना० स्त्री० ककड़ी।
व्याला० ना० पु० करौला, घुंरेरा, ना० स्त्री० सांपिन।
व्यालारि० ना० पु० गरुड़, मोर, न्योला, सिंह।
व्याली० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गु० सपेरा।
व्यावहारिक० ना० पु० मंत्री, परामर्शी।
व्यास० ना० पु० कुतर, विस्तार, फैलाव, श्रीवेदव्यास।
व्यासार्द्ध० ना० पु० आधाविस्तार।
व्यासेश्वर० ना० पु० काशीके पार रामनगर में व्यासस्थापित महादेव।
व्युत्क्रम० ना० पु० उलटाक्रम।
व्युत्पत्ति० ना० स्त्री० शास्त्रीय ज्ञान, विद्या, शब्दको भिन्न करने का ज्ञान, उत्पत्ति, दक्षता, विद्याकी।
व्युत्पन्न० ना० पु० व्युत्पत्तिमान्, विद्यावान्।
व्यूह० ना० पु० युद्धहेतु सेनाकी रचनाविशेष, सेनाका कोटविशेष, समूह, झुण्ड।
व्योम० ना० पु० आकाश, आसमान।
व्योमकेश० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
व्योमचर० ना० पु० पक्षी, देवता, मेघ, नक्षत्र।
व्योमासुर० ना० पु० दैत्यविशेष।
व्यौरना० सं० क्रि० सुलझाना।
व्रज० ना० पु० देशविशेष।
व्रजन्ति० क्रि० प्राप्त होताहै, पाता है।
व्रजवासी० ना० पु० व्रज के लोग।
व्रजेन्द्र० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र
व्रजेश० }

व्रत० ना० पु० पुण्यकर्मविशेष यथा तपस्या, उपवास।
व्रती० गु० जो व्रतकरे।
व्रात्य० ना० पु० वह ब्राह्मण जिसका यज्ञोपवीत नहीं भया।
व्रीडा० ना० स्त्री० लाज, लज्जा, हया।
व्रीहि० ना० पु० अनेक प्रकार का धान्य।

[श]

शक० ना० पु० संवत् चलानेहारा, राजा, यथा शालिवाहन, जातिविशेष, देशविशेष, संवत्, शाक।
शककर्त्ता० } ना० पु० शाका चलानेहारा,
शककारक० } यथा कलियुग में युधिष्ठिर, विक्रमादित्य, शालिवाहन, विजयाभिनन्दन, नागार्जुन, बलि।
शकट० ना० पु० छकड़ा।
शकुन० ना० पु० शुभाशुभ का सूचक चिह्न, पक्षी, सगुन, चिड़िया।
शकुनी० ना० पु० जो मनुष्य शकुनको जानता हो, पक्षी, चिड़िया, कौरवोंका मन्त्री।
शकुन्त० } ना० पु० पक्षी, चिड़िया।
शकुन्ति० }
शकुल० ना० पु० कुल्की, मत्स्यविशेष।
शक्त० गु० सामर्थी, बलवान्।
शक्राह्व० ना० पु० इन्द्रजौ।
शक्ति० ना० स्त्री० सामर्थ्य, बल, बरछी, सांग, देवताका पराक्रम जो अपनी स्त्रीरूपी ठहराया गया, माया, देवी, भगवती।
शक्तिमान्० गु० बलवान, समर्थी।
शक्य० गु० होनेके योग्य, करने के योग्य।
शक्यता० ना० स्त्री० होने और करनेकी योग्यता वा सम्भव।
शक्र० ना० पु० इन्द्र।
शक्रधनु० } ना० पु० इन्द्रका धनुष जो
शक्रधनुष० } वर्षामें निकलता है वा इन्द्रका धनुष।

शक० ना० पु० भय, डँर, मुस्यतर्थ।

शकर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, कल्याण, गुण सङ्कुल, तय, वन्नि, दुरमा जिसमें दूसरा मिलगया।

शङ्करदेव० ना० पु० श्रीशिव, शङ्कराचार्य।

शङ्कर० ना० रागिनीविशेष।

शङ्कराचारी० ना० पु० शङ्कराचार्य का मता वलम्बी।

शङ्कराचार्य० ना० पु० यतीश्वरविशेष जिन्होंने जैनमतका खण्डन किया।

शङ्कराभरण० ना० पु० रागिनीविशेष।

शङ्करी० ना० स्त्री० पार्वती।

शङ्का० ना० स्त्री० भय, डर, सन्देह, जानक, जायसरूर, इगास।

शङ्कित० गु० भयभीत, डराभया।

शङ्कु० ना० पु० दृक्ष, मत्स्यविशेष, बर्छी, कील विशेष।

शङ्ख० ना० पु० जलजन्तुविशेष, या उसका घर, बड़ा घोंघा।

शङ्खचूड़० ना० पु० राक्षसविशेष।

शङ्खनाम्नी०
शङ्खपुष्पी० } ना० स्त्री० शङ्खहोली।

शङ्खलिखित० ना० पु० मुनिविशेष।

शङ्खासुर० ना० पु० दैत्यविशेष।

शङ्खाहोली० ना० स्त्री० औषधिविशेष।

शङ्खिनी० ना० स्त्री० विशेष लक्षणयुक्त स्त्री स्त्रीविशेष जो गुदा से निकलती है।

शङ्खोद्धार० ना० पु० द्वारिकाजी और काशीजी में तीर्थविशेष।

शचान० ना० पु० बाज, शिकरा।

शटी० ना० पु० कचूर, कचूरमद।

शठ० गु० धूर्त, ठग, छलिया मूर्ख।

शठता० ना० स्त्री० धूर्तता ठगई, मूर्खता।

शण० ना० पु० सन।

शणसूत्र० ना० पु० सुतली, सनका जाल।

शण्ड० ना० पु० सांड़।

शण्डी० ना० स्त्री० साडिनी।

शत० ना० पु० सौ, शत, १००।

शतखण्ड० ना० पु० सौटुकड़ा।

शतघ्नी० ना० स्त्री० तोप, बड़ीमुगुण्डी।

शतद्रु०
शतद्रू० } ना० स्त्री० सतलज नदी जो पञ्जाब में है।

शतधन्वा० ना० पु० यादवविशेष।

शतपत्र० ना० पु० सफेद कमल।

शतपदी० ना० स्त्री० सतावर, कनावर।

शतपञ्च० गु० सत पाच १२ या ५००।

शतपर्विका० ना० स्त्री० दूर्वा, दूबघास।

शतपदा० ना० स्त्री० सतावर, कनावर।

शतपुष्पा० ना० स्त्री० सौंफ।

शतभिषा० ना० स्त्री० पचीसवां नक्षत्र।

शतभेदक० ना० पु० अम्लवेत।

शतमख० ना० पु० सत्यधर्म, सत्यामत।

शतमन्यु० ना० पु० इन्द्र।

शतमूली० ना० स्त्री० लताविशेष।

शतशः अव्य० सैकड़ों।

शता० ना० स्त्री० सौंफ।

शतावरि० ना० स्त्री० सतावर, कनावर।

शत्रु० ना० पु० वैरी, रिपु, दुश्मन।

शत्रुघ्न० ना० पु० सुमित्रासुत, रामचन्द्र के भाई।

शत्रुता० ना० स्त्री० वैर, दुश्मनताई।

शनक० ना० पु० विनयसार, मुनिविशेष।

शनि० ना० पु० सातवां ग्रह, शनैश्चर।

शनिवार० ना० पु० सातवावार, शनीचर।

शनैः शनैः ० अव्य० हौले २, सहज २, धीरे २

शनैश्चर० ना० पु० सातवां ग्रह।

शपथ० ना० पु० किरिया सौंह, सौगन्द।

शब्द० ना० पु० ध्वनि, आवाज, शराय वा सभा आदि।

शब्दग्रही० ना० पु० कान, श्रवण।

शम० ना० पु० बाह्य इन्द्रियों का निग्रह अर्थात् त्याग।

शमन० ना० पु० शान्ति, बलिदान, यमराज, कपाली ओषधि।

शमी० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, फली, छीमी।

शम्याक० ना० पु० किरवाली।

शम्बुक० } ना० पु० कौड़ी, घोंघा, सीपी,
शम्बूक० } शंख।

शम्भु० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

शयन० ना० पु० सोना, नींद, लेटना, बिछौना।

शय्या० ना० स्त्री० जिसपर शयन करते हैं।

शर० ना० पु० बाण, तीर, सरकण्डा, जीति, तालाब, गणित में ५।

सरजन्मा० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।

शरट० ना० पु० गिरगिट, कृकलास।

शरण० ना० पु० घर, जो रक्षाकरे, आश्रय, पनाह।

शरणागत० गु० आश्रित, जो शरणचाहे, जो पनाह मांगे।

शरण्य० ना० पु० शरण, गु० शरणके योग्य।

शरत्० स्त्री० } ऋतुविशेष जिसमें क्वार
शरत्काल० पु० } कातिक है सामन्य शीतकाल।

शरत्पुष्प० ना० पु० दुपहरीफूल या उसका वृक्ष।

शरद्० स्त्री० }
शरदृतु० स्त्री० }
शरत्काल० पु० } शरत्काल।
शरदृतु० स्त्री० }

शरपुंखा० ना० पु० शरफोंका पौधाविशेष।

शराटा० ना० पु० शब्द, निनाद, ध्वनि।

शराभ्यास० ना० पु० निशाना वा चिह्न जिसे बाणादि से बेधते हैं अर्थात् बाण मारना सीखते हैं।

शराव० ना० पु० सकोरा।

शरावती० ना० स्त्री० नदीविशेष।

शरावलि० ना० स्त्री० बाणों की पंक्ति, तीरों का समूह।

शरासन० ना० पु० धनुष, कमान।

शरासुर० ना० पु० बाणासुर।

शरीर० ना० पु० देह, तन।

शरीरी० गु० देही, प्राणी।

शरव्य० ना० पु० बाणोंसे, तीरोंसे, बाणकरके।

शर्करा० ना० स्त्री० खांड़।

शर्मा० ना० पु० ब्राह्मणके नामका उपपद।

शर्वरी० ना० स्त्री० रात।

शलभ० ना० पु० टिड्डी।

शलाका० ना० स्त्री० सलाई, चन्दनलेपढी, रूलर।

शलादिसी० ना० स्त्री० कुरफी।

शलीत० ना० पु० थैला, बोरा।

शल्य० ना० पु० राजाविशेष, डंगा, बाण, वैद्य क्रियाका एक अंग।

शल्यक० ना० पु० मैनफल।

शव० ना० पु० लाश, लोथ, मृतक।

शवर० ना० पु० भील।

शवरी० ना० स्त्री० भीलनविशेष, भीलनी, धीवरी।

शष्प० ना० स्त्री० दूबआदि नवीन घास (बालतृण व लतुंबं घास, इत्यमरः)।

शश० }
शशक० } ना० पु० शशा, चौगड़ा।
शशा० }

शशांक० } ना० पु० चन्द्रमा।
शशि० }

शशिवर्ण० गु० श्वेत, चन्द्ररूप, सफेद।

शशिरस० ना० पु० अमृत, पीयूष।

शस्त्र० ना० पु० हथियार जो बिनाफेंके मारते हैं, यथा खड्गादि।

शस्त्रमय० ना० पु० लोहा।

शस्त्री० हथियारबन्द, शस्त्रधारी।

शाक० ना० पु० साग, भाजी, पृथ्वी के सात दीपोंमें से एकका नाम।

शाकटुस्सुखी० ना० स्त्री० भाई ओषधि।

शाकबीज० ना० पु० चंधुर्या।
शाकम्भरी० ना० पु० दुर्गादेवी, नगरीविशेष।
शाकल० } ना० पु० तिल जो चावल घी खांड,
शाकल्य० } आदि की मिलौनी जो हामते हैं।
शाकचौरिक० ना० पु० मुरोऊ, चचेड़िया।
शाकश्रेष्ठ० ना० पु० सजीवनी।
शाका० ना० पु० शाक।
शाकिनी० ना० स्त्री० देवीविशेष जो दुर्गा की सहचरी है।
शाक्त० ना० पु० शक्तिका उपासक, देवीपूजक।
शाक्ती० ना० पु० शाक्त, भगवतीका शिष्य।
शाख० ना० स्त्री० डाली कूंपली।
शाखा० ना० स्त्री० डाली कूंपली, परतर्क, बहु विचार।

शाखामृग० ना० पु० वानर, बन्दर।
शाखाविलासी० ना० पु० वानर, बन्दर।
शाखाशन० ना० पु० ऊंट।
शाखी० ना० स्त्री० वृक्ष, शाखी।
शांकरी० ना० स्त्री० पार्वती, शंकरी।
शाटिका० } ना० स्त्री० साड़ी, स्त्रियों के पहरने
शाटी० } का वस्त्रविशेष।
शाठ्य० ना० पु० शठता, ठगाई।
शाण० ना० पु० सलसान, जिसपर हथियार, चाकू आदि तेज करते हैं।

शाण्डिल्य० ना० पु० बिल्व, बेल, मुनिविशेष।
शातकुम्भ० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
शातातप० ना० पु० धर्मशास्त्र का प्रवर्तक मुनि।
शानपाकी० ना० पु० सिरहटी।
शान्त० गु० स्थिर, प्रतिरुंधा, मृत।
शान्ति० ना० स्त्री० स्थिरता, कल्, बंदाई, ग्रहन, निवृत्ति आदि में प्रसिद्ध कर्म।
शाप० ना० पु० सराप, धिक्कार, बद्दुआ।
शाब्दिक० गु० शब्दज्ञाता, वैयाकरणी।

शारदा० ना० स्त्री० सरस्वती, शारदा, सर्दी।
शारदा० ना० स्त्री० सरस्वती, चौतुरी।
शारदी० गु० जो शरद में उत्पन्न हो।
शार्दूल० ना० पु० प्रबलसिंह, कोई कोई मनुष्य कहते हैं कि एक पक्षी होताहै जो हाथीको पंजे में दाब लेजाता है।
शाल० ना० पु० शालवृक्ष, चिरौंजी, कोट, मत्स्यविशेष, छेद, श्रृगाल, शोभा, ऊर्ध्ववृक्षविशेष, धन।
शालक० गु० हंसक, छेदनेहारा, ना० पु० साला।
शालपर्णी० ना० स्त्री० ओषधिविशेष।
शाला० ना० स्त्री० स्थान, घर।
शालि० ना० पु० हेमन्तऋतु के धान।
शालिनी० ना० स्त्री० छन्दविशेष, छेदनेहारी, उत्सव।
शालिवाहन० ना० पु० राजाविशेष, शाका प्रचारक।
शालि० ना० पु० शालि, पृथ्वी की बहुत, गृहस्थ, देवी, बान, यन्त्र, मुख्य, स्वामी।
शालीना० } ना० स्त्री० सौंफका साग।
शालिशृता० }
शालूर० ना० पु० मेंडक (यथा मेके मंडूकवर्षाभू शालूरप्लवदर्दुराः, इत्यमरः [illegible])।
शाल्मल० ना० पु० द्वीपविशेष जो पृथ्वी के सात द्वीपमें से है।
शाल्मलि० } ना० पु० सेमरवृक्ष।
शाल्मली० }
शासन० ना० पु० } आज्ञा, ईश्वराज्ञा,
शासना० ना० स्त्री० } प्रेम, सिखन, ताड़ना।
शासनीय० गु० आज्ञाके योग्य, ताड़नीय।
शास्ति० ना० स्त्री० आज्ञा, शिक्षा।
शास्त्र० ना० पु० आज्ञा, हिन्दुओं के मतमें आज्ञारूपी पुस्तकविशेष, यथा वेदविद्या की पुस्तकें।

शास्त्रविहित० गु० शास्त्र की विधिसे, जो शास्त्र
का है।
शास्त्रज्ञ० ना० पु० जो शास्त्र को जानताहै।
शास्त्रार्थ० ना० पु० सुवाद, चर्चा, बहस।
शास्त्री० गु० शासक, धर्मज्ञ।
शास्त्रीय० गु० शास्त्रसम्बन्धी, जो शास्त्र का है।
शास्य० गु० शासन के योग्य।
शिंशपा० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, शीशमवृक्ष।
शिखण्डज० ना० पु० बृहस्पति।
शिखण्डिनी० ना० स्त्री० जुही।
शिखण्डी० ना० पु० मयूर, मोर, राजा द्रुपद
का पुत्र।
शिखर० ना० पु० पर्वतकी धारवा चोटी, शृंग,
लौंग।
शिखरी० ना० पु० पर्वत, कण।
शिखा० ना० स्त्री० चोटी, टपक्न।
शिखाचूड़० ना० पु० केशपाश, जटाजूट।
शिखि० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि।
शिखिवाला० ना० स्त्री० मयूर, मार।
शिखिवाहन० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
शिखी० ना० पु० मयूर, मार, अग्नि, गु०
चनला।
शिग्रु० ना० पु० सहिंजना वृक्ष।
शिथिल० गु० ढीला, थका, सुस्त, मंद,
मद।
शिथिलता० ना० स्त्री० ढीलापन, थकन, थकान,
सुस्ती, मादगी।
शिम्ब०
शिम्बिका० } ना० स्त्री० सेम वृक्षकी
शिर० ना० पु० सिर, मस्तक, मुंड।
शिरा० ना० स्त्री० धोरी, नस, नाड़ी जिसके
द्वारा रुधिर सारे शरीर में फिरता है।
शिरीष० ना० पु० वृक्ष विशेष, सिरसावृक्ष।
शिरोधी० ना० स्त्री० गला, गर्दन।
शिरोमणि० ना० पु० माथेजड़ित, माथेका आभूषण
विशेष, गु० सर्दार, श्रेष्ठ, उत्तम।

शिल०
शिला० } ना० स्त्री० चट्टान, पथरशिला।
शिलागोली० ना० स्त्री० मनशिल।
शिलाजीत०
शिलाजित० } ना० पु० शिलाजीत, शिलाजित
शिलाह्व० ना० पु० शिलाजीत।
शिलायन्त्र० ना० पु० पत्थरका छापा।
शिल्प० ना० पु० चित्रादिकर्म, कारीगरी, थवई
का काम।
शिल्पकार०
शिल्पी०
शिल्पीकर० } ना० पु० थवई, राज, मेमार।
शिव० ना० पु० शुभ, कल्याण, ललित, अविला,
मूसावला, गादरु, श्रीमहादेवजी।
शिवगिरि० ना० पु० कैलासपर्वत।
शिवरात्रि० ना० स्त्री० फागुन कृष्ण चतुर्दशी
का शिवजीकी दिवसी व्रत।
शिववाहन० ना० पु० नन्दीगण।
शिवशैल० ना० पु० कैलास पर्वत।
शिवसुत० ना० पु० श्री गणेशजी, स्वामिकार्
त्तिक।
शिवसुतवाहन० ना० पु० मूषक, मयूर।
शिवा० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीजी, हड़, शृगाली
स्त्री, सियाल साथ।
शिवालय०
शिवाला० } ना० पु० शिवजीका मन्दिर
वा मठ।
शिवि० ना० पु० राजाविशेष जो अयोध्यामें था।
शिविका० ना० स्त्री० पालकी।
शिवेश० ना० पु० सदाशिवजी, शृगाल।
शिशिर० ना० पु० जाड़ा, पाला, हेमन्त, ऋतु
विशेष जो माघ फागुन में होती है।
शिशु० ना० पु० बालक, बच्चा।
शिशुता० ना० स्त्री०
शिशुत्व० ना० पु० } बालकपन, लड़कई।
शिशुपाल० ना० पु० राजा विशेष जिसको श्री

पाण्डव के पक्ष में श्रीकृष्णचन्द्रजी ने वध किया था।

शिशुमार० ना० पु० मगरमच्छ।

शिष० ना० पु० शिक्षा, उपदेश, सीख, मन्त्र।

शिष्ट० गु० आधीन, आज्ञाकारी, जो आज्ञानुगामी, उत्तम, श्रेष्ठ।

शिष्टता० ना० स्त्री० आधीनता, उत्तमता।

शिष्टाचार० ना० पु० आदर, सत्कार, सम्मान, मिलसारी, बड़ाई देना।

शिष्टाचारी० गु० सम्मानी, जो शिष्टाचार करे।

शिष्य० ना० पु० चेला, मतावलम्बी, सीखने हारा।

शिक्षक० ना० पु० गुरु, अध्यापक, उपदेशक।

शिक्षा० ना० स्त्री० सीख, उपदेश, मन्त्र।

शिक्षित० गु० जो सिखाया वा पढ़ायागया, जो उपदेश कियागया।

शीकर० ना० पु० झींसी, फुहार।

शीघ्र० अव्य० तुरन्त, झट, उतावल, जल्द।

शीघ्रग० ना० पु० खरहा, शशा।

शीघ्रगामी० गु० शीघ्र, चलनेहारा।

शीघ्रता० ना० स्त्री० वेगताई, उतावली, फुर्ती।

शीत० ना० पु० हिम, ओस, ठंढ, पाला, पीलू का वृक्ष।

शीतकटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी के २३½ अंश उत्तर और २३½ अंश दक्षिण का भूमिखण्ड।

शीतकर० ना० पु० चन्द्रमा।

शीतकाल० ना० पु० जाड़े के दिन, हेमन्त।

शीतज्वर० ना० पु० तपतज्वर, विषमज्वर के विपरीत अर्थात् जाड़ा।

शीतभीरु० ना० पु० सम्भालू।

शीतरज० ना० पु० कपूर।

शीतल० गु० ठंढा।

शीतलता० ना० स्त्री० ठंढ, ठंढाई।

शीतांशु० ना० पु० चन्द्रमा, कपूर।

शीतांग० ना० पु० अर्धाङ्ग रोगविशेष।

शीतांतिका० ना० स्त्री० तेजपत्ता धनियाँ।

शीतार्त्त० गु० जो ठंढ गया, जो जाड़े से कांपे।

शीतोष्ण० गु० सर्द गरम।

शीर्ण० गु० पतला, थोड़ा।

शीर्ष० ना० पु० मस्तक, सिर, चोटी, ऊपर।

शीर्षकोण० ना० पु० ऊपर का कोना।

शीर्षिका० ना० स्त्री० केशपाश, बालों की वेणी।

शील० ना० पु० स्वभाव, सुभाव, सुरत्नुव।

शीलवान्० ना० गु० सुशील, मिलसार, नम्र।

शीश० ना० पु० सिर, मूड़।

शीशम० ना० पु० वृक्षविशेष।

शुक० ना० पु० तोता, सुआ।

शुकच्छद० ना० पु० थुनेर।

शुकदेव ना० पु० शुकाचार्य, भागवत वक्ता।

शुकप्रिय० ना० पु० अनार।

शुकवर्ण० ना० पु० थुनेर।

शुकाचार्य० ना० पु० मुनिविशेष, व्यासपुत्र।

शुक्त० ना० पु० अम्लवेत।

शुक्तचण्डिका० ना० स्त्री० अमिली वृक्ष।

शुक्ति० ना० स्त्री० सीपी।

शुक्तिज० ना० पु० मोती।

शुक्र० ना० पु० ग्रहविशेष, वीर्य, अग्नि, ज्येष्ठमास, शुक्रवार, दैत्यों का गुरु।

शुक्रदारु० ना० पु० देवदारु।

शुक्रमाता० ना० स्त्री० माई।

शुक्रवार० ना० पु० शुक्रवार।

शुक्ल० गु० श्वेतवर्ण, भक्तों में उपपद विशेष, ना० पु० कुन्द, सफेद जीरा।

शुक्लु० ना० पु० उनेलापाम।

विहित० गु० शास्त्रकी विधिसे, जो शास्त्र
है।
० ना० पु० जो शास्त्र को जानता है।
र्थ० ना० पु० संवाद, चर्चा, बहस।
० गु० शास्त्रज्ञ, धर्मज्ञ।
य० गु० शास्त्रसम्बन्धी, जो शास्त्रका है।
० गु० शासन के योग्य।
ा० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, शीशमवृक्ष।
डिज० ना० पु० वृहस्पति।
डिनी० ना० स्त्री० जुही।
ण्डी० ना० पु० मयूर, मोर, राजा द्रुपद
पुत्र।
र० ना० पु० पर्वतकी धार और चोटी, शि-
ग।
री० ना० पु० पर्वत, किला।
ा० ना० स्त्री० चोटी, टसुफन।
ाचूड़० ना० पु० केशपाश, जटाजूट।
० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि।
ावाला० ना० स्त्री० मयूर, मोर।
ावाहन० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
ी० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि, मु
नेला।
० ना० पु० सहिजन वृक्ष।
ल० गु० ढीला, थका, सुस्त, अदृढ़,
न्द।
लता० ना० स्त्री० ढीलापन, थकन, सुस्ती,
स्ती, मांदगी।
म्बः०
म्बिका० } ना० स्त्री० सेम तरकारी।
० ना० पु० सिर, मस्तक, मूंड़।
० ना० स्त्री० योनी, नस, नाड़ी जिसके
रा रुधिर सारे शरीरमें फिरता है।
ष० ना० पु० वृक्षविशेष, सिरसावृक्ष।
ोधी० ना० स्त्री० गला, गर्दन।
ोमणि० ना० पु० शिरोभूषित, माथे का भूषण-
रित, गु० सर्दार, श्रेष्ठ, उत्तम।

शिल०
शिला० } ना० स्त्री० चटान, पत्थरकी सिल।
शिलागोली० ना० स्त्री० मनसिल।
शिलाजीत०
शिलाजित० } ना० पु० शिलाजीत।
शिलाह्व० ना० पु० शिलाजीत।
शिलायन्त्र० ना० पु० पत्थरका छापा।
शिल्प० ना० पु० चित्रादिकर्म, कारीगरी, चतुर
का काम।
शिल्पकार०
शिल्पी०
शिल्पीकर० } ना० पु० बढ़ई, राज, मेमार।
शिव० ना० पु० शुभ, कल्याण, ललित, अविनाशी,
मुक्तावस्था, मंगल, श्रीमहादेवजी।
शिवगिरि० ना० पु० कैलासपर्वत।
शिवरात्रि० ना० स्त्री० फागुन कृष्ण चतुर्दशी
को शिवजीके दिनका व्रत।
शिववाहन० ना० पु० नन्दीगण।
शिवशैल० ना० पु० कैलास पर्वत।
शिवसुत० ना० पु० श्री गणेशजी, स्वामिका-
र्तिक।
शिवसुतवाहन० ना० पु० मूषक, मयूर।
शिवा० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीजी, हड़, शृगालकी
स्त्री, सोयाका शाक।
शिवालय०
शिवाला० } ना० पु० शिवजीका मन्दिर
या मठ।
शिवि० ना० पु० राजाविशेष जो अयोध्याम था।
शिविका० ना० स्त्री० पालकी।
शिवेश० ना० पु० सदाशिवजी, शृगाल।
शिशिर० ना० पु० जाड़ा, पाला, हेमन्त, ऋतु
विशेष जो माघ फागुन में होती है।
शिशु० ना० पु० बालक, बच्चा।
शिशुता० ना० स्त्री०
शिशुत्व० ना० पु० } बालपन, लड़काई।
शिशुपाल० ना० पु० राजा विशेष, जिसको

शृंग० ना० पु० स्वामि, शिखर, पहाड़ की चोटी।
शृंगनाम्नी० ना० स्त्री० ककरासिंगी।
शृंगबेर० ना० पु० सोंठ, अदरक।
शृंगाट० ना० पु० सिंघाड़ा।
शृंगार० ना० पु० प्रथम रस, स्त्री पुरुष का सिंगार, संवार, सजधज।
शृंगारित० गु० संवारीहुई, सिंगारयुत।
शृंगिका० ना० स्त्री० मेढ़ासिंगी।
शृंगी० ना० पु० जिस पशुके सींगहों, ककरासिंगी, भैंसा, पर्वतमुनिविशेष।
शृणु० क्रि० सुनो।
शेखर० ना० पु० शिरमें बांधने की फूलों की माला, मस्तकाभरण, शिर।
शेफालिका० ना० स्त्री० हरसिंगार।
शेलु० ना० पु० वृक्ष विशेष।
शैली० ना० स्त्री० राग, तालों की लटक।
शेलु० ना० पु० मेथी।
शेलमुख० ना० पु० बिल्व, बेल।
शेलु० ना० पु० लसोड़ा, परपीपर।
शेष० ना० पु० अवशिष्ट, समाप्ति, बाकी, नागराजविशेष, जिसके सहस्र शिर हैं, जिनपर विष्णुनारायण सोते हैं, थोड़ा।
शेषावस्था० ना० स्त्री० वृद्धावस्था, बाकी उमर।
शैखरिक० ना० पु० ऊंगा।
शैत्य० गु० ठंढा।
शैथिल्य० ना० पु० शिथिलता।
शैल० ना० पु० पर्वत, पहाड़।
शैलराज० ना० पु० हिमाचल, पर्वत का राजा।
शैली० ना० स्त्री० रीति, वार्तिक, गुरुपरम्परा।
शैव० ना० पु० शिवका उपासक।
शैवाल० ना० पु० जलका घासविशेष, सिवाल।
शैवी० ना० पु० शैव।

शैशव० ना० पु० शिशुता, बालकपन, लड़काई।
शोक० ना० पु० दुःख, क्लेश, सन्ताप, विलाप।
शोकार्णव० ना० पु० दुःखका सागर, महादुःख।
शोकार्त्त० गु० शोकयुक्त, शोकसे व्याकुल।
शोच० ना० पु० चिन्ता, अफसोस, अन्देशा।
शोचन० ना० पु० विचारना, मनमेंदुःख, चिन्तन।
शोचना० पद० क्रि० विचारना, अन्देशाकरना, अफसोसकरना, पश्चात्ताप करना।
शोचनीय० गु० जो शोचने के योग्य है।
शोण० ना० पु० पुष्पविशेष, लालपुष्प, लाल, मगधदेशका नद।
शोणभद्र० ना० पु० मगधदेश में नदविशेष।
शोणित० ना० पु० रुधिर, लोहू, केसर।
शोथ० ना० पु० सूजन, फुलाव।
शोध० ना० पु० खराका मरदना, पता, खबर, तलाश।
शोधन० ना० पु० देहका निरोगता अर्थात् शुद्ध करना।
शोधित० गु० जो शोधागया था, ढूंढागया, शुद्ध कियागया।
शोध्य० गु० जो शोधने के योग्य।
शोभन० गु० मनोरम, मनोहर, सुन्दर।
शोभा० ना० स्त्री० सुन्दरता, शृंगार, चमक, कान्ति।
शोभायमान० } गु० विभूषित, चमकीला,
शोभित० } चटकीला।
शोलाँ० ना० पु० वृक्षविशेष।
शोषक० गु० चूसनेहारा, सुखानेवाला, घटानेहारा।
शोषण० ना० पु० सुखाना, शोष, घटाना।
शौच० ना० पु० स्नान, स्नानादि कर्त्तव्यकर्म।
शौचकर्म० ना० पु० स्नानादि, शुचि क्रिया।

शौनक० ना० पु० मुनिविशेष।
शौरि० ना० पु० मङ्गल, शनैश्चर।
शौरिप्रिय० ना० पु० विजयसार।
शौर्य्य० ना० पु० सूर्यपन, बहादुरी।
श्मशान० ना० पु० मरघट, मृतक जलाने का स्थानविशेष।
श्याम० ना० पु० कोकिला, काम्बोज से पश्चिम देशविशेष, श्रीकृष्णचन्द्रजी, कालावर्ण।
श्यामकर्ण० ना० पु० वह घोड़ा जिसका एक कान श्याम और केश पीत और सर्वशरीर श्वेतवर्ण होवे।
श्यामल० गु० कालावर्णविशेष, गु० पीपरी।
श्यामली० ना० स्त्री० काली, नीली।
श्यामसुन्दर० ना० पु० श्रीकृष्णजी।
श्यामा० ना० स्त्री० श्यामरंग की पक्षी, पांडुर, पीपली, श्यामली, सुंदरी, अरमंथी, प्रियंगु, रात, प्रीति, कालिकादेवी।
श्यामाक० ना० पु० सामाधान्य।
श्यालक० } ना० पु० साला, पत्नी का भाई।
श्याला०
श्येन० ना० पु० पक्षीविशेष, बाज।
श्रद्धान० गु० श्रद्धायुक्त।
श्रद्धा० ना० स्त्री० आदर, इच्छा, विश्वास, प्रतीति, शुभेच्छा।
श्रद्धालु० गु० श्रद्धासंयुक्त।
श्रम० ना० पु० थकावट, दौड़धूप, उद्यमकष्ट।
श्रमबुन्द० ना० पु० श्रम करने में जो पसीना।
श्रमित० गु० थका, मांदा।
श्रमी० गु० श्रमकरनेहारा, उद्यमी।
श्रव० ना० पु० कान, बहन, चलना।
श्रवण० ना० पु० कान, सुनना और बाईसवां नक्षत्र।
श्रवणशीर्षका० ना० स्त्री० गोंड़ी, मुण्डी।
श्रवणा० ना० स्त्री० बाईसवां नक्षत्र।
श्रवणीय० गु० जो सुनने के योग्य है।
श्रवत० क्रि० चुवत, बहत।
श्रवती० ना० स्त्री० नदी।
श्राचूक० ना० पु० अर्जुन।
श्राद्ध० ना० पु० पितरों को श्राद्ध रीति सपिण्ड दान देना, यज्ञ।
श्राद्धदेव० ना० पु० धर्मराज, यमराज।
श्राद्धपक्ष० ना० पु० कनागत, आश्विन कृष्ण।
श्रान्त० गु० स्खलित, जो थकगया, श्रमित।
श्रान्ति० ना० स्त्री० श्रम, परिश्रम।
श्राप० ना० पु० शाप, आशीर्वाद से विपरीत, बद्दुआ।
श्रापित० गु० शापित, शाप दियागया।
श्रावक० ना० पु० जातिविशेष जो नास्तिकों अर्थात् जैनियों के चेले हैं, नास्तिक।
श्रावण० ना० पु० सावन, चौथा महीना।
श्री० ना० स्त्री० सम्पत्ति, शोभा, सुन्दरता, लक्ष्मी, शब्द के पहले बड़ाई का बोधक।
श्रीकण्ठ० ना० पु० सदाशिव।
श्रीकान्त० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण।
श्रीखण्ड० ना० पु० चन्दन।
श्रीगेह० ना० पु० रक्तकमल, शोभा का घर, लक्ष्मी का घर, ख़ज़ाना।
श्रीदामा० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक सखा।
श्रीपति० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण।
श्रीपर्णी० ना० स्त्री० कम्भारी।
श्रीपुष्प० ना० पु० लौंग, लवंग।
श्रीफल० ना० पु० नारियल, बेल, आंवला।
श्रीमत्० गु० भाग्यवान्, धनी, शोभासंयुक्त, धनाढ्य, दौलतवर।
श्रीधर० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण।
श्रीधराचार्य० ना० पु० आचार्यविशेष जिन्हों ने श्रीमद्भागवत का तिलक किया।
श्रीनगर० ना० पु० बद्रीनाथ के मार्ग में पर्वत पर नगरविशेष, कश्मीर में नगरविशेष।
श्रीमन्त० } गु० भाग्यवान्, धनी, शोभायुक्त, धनाढ्य, दौलतवर।
श्रीमान्०

श्रीयुक्त० } गु० यशवन्त, सुत्सावी, धनी,
श्रीयुत० } भाग्यवान, नामी।
श्रीरंग० ना० पु० श्रीनारायण, विष्णुजी।
श्रीरंगपट्टन० ना० पु० महीश्वर अर्थात् मैसूर देश की राजधानी।
श्रीराग० ना० पु० रागविशेष, तीसरा राग।
श्रीवणा० } ना० स्त्री० गोड़ी, मुण्डीरोपा।
श्रीवर्णी० }
श्रीवत्स० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण, लक्ष्मी का हृदय में वास।
श्रीहट्ट० ना० पु० सिलहट नगरविशेष जो ढाका के पूर्व है।
श्रीहिंडोल० ना० पु० रागविशेष।
श्रुत० गु० जो सुना गया।
श्रुति० ना० पु० वेद, कर्ण, ज्ञान, समाचार, ना० स्त्री० सुनाहट।
श्रुतिमणि० ना० पु० कुण्डल, कर्णफूल।
श्रुतिमुक्ति० ना० स्त्री० वेद, कीर्ति, शास्त्रोक्त।
श्रुतोदग० ना० पु० पीलूवृक्ष।
श्रेणी० ना० स्त्री० पंक्ति, लकीर, कतार, समूह, यूथिका।
श्रेय० ना० पु० कल्याण, कीर्ति।
श्रेयसी० ना० स्त्री० हड़, गजपीपर, रासना।
श्रेष्ठ० गु० उत्तम, अच्छा, सबसे भला, प्रधान।
श्रेष्ठता० ना० स्त्री० उत्तमता, प्रधानता, भाग्य।
श्रोण० ना० पु० रुधिर, रक्त, लोहू, मद्य।
श्रोणतिलका० ना० स्त्री० कश्यप की पत्नी।
श्रोणि० ना० स्त्री० कटि, कमर।
श्रोणित० ना० पु० रुधिर, रक्त, खून।
श्रोत० ना० पु० कान, कर्ण, नदी की धारा, फुरना, सोता।
श्रोतव्य० गु० जो सुनने के योग्य।
श्रोतस्वती० ना० स्त्री० नदी।
श्रोता० ना० स्त्री० नदी गु० सुननेहारा।
श्रोत्र० ना० पु० कान, रोमरन्ध्र, सुननेहारा।
श्लाघनीय० गु० बड़ाई के योग्य, मर्यादिक।
श्लाघा० ना० स्त्री० स्तुति, मर्यादा, निन्दा।
श्लाघ्य० ना० पु० श्लाघनीय।
श्लीपद० ना० पु० श्राम, पीलपाव।
श्लेष० ना० पु० जिसपद के, दो अर्थ वा अधिक हों।
श्लेषा० ना० स्त्री० नवां नक्षत्र, अश्लेषा।
श्लेष्मा० ना० स्त्री० कफ, नाकपकना, जुकाम।
श्लोक० ना० पु० पद्य, छन्द।
श्वशुर० ना० पु० पत्नी वा पति का पिता, ससुर।
श्वश्रू० ना० स्त्री० सास, पत्नी वा पति की माता।
श्वसन० ना० पु० पवन, वायु, यथा (प्रचेताः वह्यः पाती मातरिश्वा सदागतिः, श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः, इत्यमरः)।
श्वसनक० ना० पु० सूमा पौधा।
श्वान० ना० पु० कुत्ता।
श्वास० ना० पु० सांस, दम, रोग।
श्वेत० गु० शुक्ल, धौला, सफेद।
श्वेतता० ना० स्त्री० शुक्लता, उज्ज्वलता, सफेदी।
श्वेतदंडी० ना० स्त्री० दूब, घास।
श्वेतपुष्पा० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी, कनेर वृक्ष।
श्वेतफला० आहुर।
श्वेतमुखी० ना० स्त्री० पुनर्नवा।
श्वेतराजी० ना० स्त्री० चंपा तरकारी।
श्वेतसर्षप० ना० पु० सफेद सरसों।
श्वेता० ना० स्त्री० दूब घास।
श्वेतिका० ना० स्त्री० सौंफ।

[ष]

षट्० ना० गु० छः ६।
षट्कोण० ना० पु० इन्द्र का वज्र, छः कोनेका।
षट्चक्र० ना० पु० छः चक्र अर्थात् आधार, स्वा-

ष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा।

षट्पद० ना० पु० भौंरा, मधुमाखी, छन्द-विशेष।

षट्पदी० ना० स्त्री० भ्रमरी।

षट्शास्त्र० ना० पु० [illegible]: शास्त्र अर्थात् न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, पातंजल, सांख्य, वेदान्त।

षड्ग्रन्थि० ना० स्त्री० पीपरामूल।

षड्ऋतु० ना० पु० छः ऋतु अर्थात् वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर।

षड्ऊर्मी० ना० स्त्री० छः ऊर्मी अर्थात् शीत, उष्ण, दुःख, सुख, मान, अपमान।

षड्लोक० ना० पु० छः लोक अर्थात् भू, अन्तरिक्ष, स्वर्ग, पितृ, सूर्य, ब्रह्मलोक।

षड्गुण० ना० पु० छः गुण अर्थात् निर्भेद, निर्मात्सर्य, निर्मोह, निर्लोभ, निष्क्रोध, निष्काम।

षड्रस० ना० पु० छः रस अर्थात् कड़ुआ, खट्टा, मीठा, चर्परा, कसेला, खारा।

षड्ग्रन्था० ना० स्त्री० कचूर भेद।

षड्राग० ना० पु० छः राग अर्थात् मेघ, भैरव, मलार, दीपक, श्रीहिंडोल, मालकोश और झगड़ा बखेड़ा।

षड्वदन० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।

षड्विकार० ना० पु० [illegible]: विकार अर्थात् उत्पत्ति, शरीरवृद्धि, बालकता, प्रौढ़ता, वृद्धता, मृत्यु।

षडंग० ना० पु० शरीर के छः अंग अर्थात् हाथ, पांव, कटि, शिर, वेदके छः अंग अर्थात् ज्योतिष, व्याकरणादि; गोखुरू।

षड्भुजा० ना० स्त्री० बच औषधि।

षण्नेत्रिका० ना० स्त्री० करपत्री पत्नी।

षड्विंशति० गु० छब्बीस, २६।

षड्विंशतितम० गु० छब्बीसवां।

षड्विधि० ना० स्त्री० छः प्रकार।

षडंगवेद० ना० पु० वेदके छः अंग अर्थात् शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, ज्योतिष, छन्दःग्रन्थ।

षडंगसमाधि० ना० स्त्री० समाधि के छः अंग अर्थात् शम, दम, उपराम, विषय, सुख, दुःख, समान, वेद आचार्य का आज्ञाकारी होना, एकाग्रचित्त।

षडानन० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।

षण्ढ० ना० पु० नपुंसक।

षण्मास० ना० पु० छः मास।

षण्मुख० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।

षष्ठ० गु० छः, ६, छठवां।

षष्टि० गु० साठ, ६०।

षष्ठी० ना० स्त्री० दुर्गाजी, छठी तिथि, कारक।

षष्ठ्यन्त० गु० जिसके अन्त में षष्ठीका प्रत्यय है।

षोडश० गु० सोलह, १६।

षोडशचन्द्रकला० ना० स्त्री० चन्द्रमा की १६ कला अर्थात् अमृता, मानदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूरणा, पूर्णामृता १६।

षोडशविधपूजा० ना० स्त्री० सोलह प्रकार से पूजा अर्थात् आवाहन, स्थापन, पाद्य, सिंहासन, अर्घ, आचमन, स्नान, चन्दन, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा, नमस्कार, आरती १६।

षोडशशृङ्गार० ना० पु० सोलह प्रकार अर्थात् शुचि, स्नान, निर्मलवस्त्र, महावर, वेणीबंधन, मांगसिन्दूर, भालखौरि, तिलकपोल, केसरमर्दन, मेंहदीरंग, कुसुमाभरण, स्वर्णाभरण, सवंगादि आभरण, दांतोंमें मिस्सी, ताम्बूल, आंखों में सुरमा १६।

षोडशी० ना० स्त्री० मृतकका कर्म विशेष।

[स]

स० अव्य० जिसशब्द के आदि में इसका

प्रयोग होवे उसका अर्थ सहित, समान, से होता है।

सँई० ना० स्त्री० नदी विशेष।

सँ० अव्य० सथ, सहित, से।

संक्रन्दन० ना० पु० शच्या, इन्द्र।

संयम० ना० पु० योगादि नियम, व्रत, परहेज।

संयमनी० ना० स्त्री० यमपुरी।

संयमनीपति० ना० पु० यमराज।

संयमी० गु० नियमी, मध्यम।

संयुक्त० गु० मिलाहुआ, संलग्न, सङ्ग, जुड़ा।

संयुग० ना० पु० युद्ध, समर, रण, संग्राम।

संयुत० गु० संयुक्त।

संयोग० ना० पु० मिलान, अथवा मेल, संगत, दैवागत इत्तिफ़ाक़।

संयोगी० ना० पु० मिलित, मिलनसार, संगी।

संरक्त० गु० मदयुक्त, लालवर्ण।

संरम्भ० ना० पु० कोप, क्रोध, अहङ्कार।

संलग्न० गु० संयुक्त, लगत।

संलग्नी० गु० मिलित, लगाहुआ, संगी, संयोगी।

संलाप० ना० पु० परस्पर बातचीत।

संवत्० ना० पु० वर्ष, शाका, साल, सन्।

संवत्सर० ना० पु० वर्ष, साल।

संवत्सरी० ना० पु० वर्षका व्यवहार।

संवरण० ना० पु० आवरण, आच्छादन।

संवरना० अ० क्रि० सजना, शोभित होना, बचना।

संवर्त्त० ना० पु० स्मृति ग्रंथविशेष।

संवर्त्तक० ना० पु० मेघ।

संवल० ना० पु० दैत्यविशेष; जाना मार्गका।

संवलारि० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्नजी।

संवह० ना० पु० मुख्यपवन।

संवाद० ना० पु० बातचीत प्रश्नोत्तर, चर्चा।

संवाधा० स्त्री० स्त्री० विपत्ति, क्लेश, आपत्।

संवार० ना० स्त्री० सजाव, बनाव, शोभा।

संवारना० स० क्रि० सजाना, बनाना, शृङ्गार करना।

संशय० ना० पु० चिन्ता, सन्देह, भय।

संशयापन्न० गु० सन्देही, चिन्तायुक्त, भयभीत।

संसक्त० गु० समाप, मिला, युक्त।

संसर्ग० ना० पु० संगति, भेट, दर्शन, मेल, पड़ोस, समीप।

संसर्गी० गु० मिलनसार, विहारी, पड़ोसी, संगती।

संसया० ना० स्त्री० शर्करी।

संसार० ना० पु० जगत्, गृहाश्रम, दुनिया।

संसारी० गु० लौकिक, जो संसारका है।

संसृत० गु० संसारी, दुनियवी।

संस्कार० ना० पु० स्मरण का हेतु, व्यवहार यथा गर्भाधानादि १० पवित्रता।

संस्कृत० ना० पु० देववाणी।

संस्कृतानुयायी० गु० देववाणी के अनुगामी।

संस्कृताभिज्ञ० गु० संस्कृत भाषा जाननेवाले लोग।

संस्थान० ना० पु० दब, रूप, बनावट, चतुष्पथ।

संस्पर्श० ना० पु० छुआहट, घात, लगाव।

संहत० गु० ठोस, इकट्ठा।

संहति० ना० स्त्री० समूह, ढेर।

संहरण० ना० पु० वध, हनन, मारण, हरन।

संहरना० अ० क्रि० वधहोना, हतहोना, मारा-जाना।

संहार० ना० पु० नाश, वध, हत्या, गु० मारा, वधा।

संहारक० गु० नाशक, वधिक।

संहारना० स० क्रि० वधना, नाश करना।

संक्षेप० ना० पु० सार, विशेष कथन, गु० थोड़ा, सारांश, चुनाहुआ, मुख्तसर।

संक्षिप्त० गु० छिपा, अप्रकट।

संज्ञक० ना० पु० नामी, नामक।

संज्ञा० ना० स्त्री० नाम, शब्द, बुद्धि, ज्ञान।

सकट० ना० पु० छकड़ा, लेवी, गणेशजी का जन्मोत्सव दिन।

सकटाख्य० ना० पु० धवबृक्ष।

सकटासुर० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको श्री कृष्णजी ने मारा था।

सकटी० ना० स्त्री० सढ़ी, माढ़ी।

सकत० ना० पु० शक्ति।

सकना० ष० क्रि० सामार्थ्य होना।

सकरा० गु० संकेत, छोटा, तंग।

सकराई० ना० स्त्री० सकेती, तंगी, चौड़ाई।

सकराना० स० क्रि० संकेत करना, सकेलना, स्वीकार करना, कबूल करना।

सकरुणा० गु० दयायुत, दीनता से।

सकर्मक० गु० कर्म सहित किया।

सकल० गु० सारा, समस्त, सब, सगरा।

सकाना० अ० क्रि० उदासहोना, थकना, डरना।

सकानी० गु० स्त्री० उदास होगई, लज्जित, दबगई।

सकाम० ना० पु० फल वा कामना सहित।

सकारना० स० क्रि० हुण्डी को लेलेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, कबूलना।

सकारे० ना० पु० प्रातःकाल, सबेरे।

सकिलना० अ० क्रि० समिटना, हटना।

सकिलाना० स० क्रि० समिटाना, हटाना।

सकुचना० अ० क्रि० डरना, संशयकरना, सुकड़ना।

सकुचाना० स० क्रि० [illegible]जाना, डरना।

सकुचित० गु० लज्जित।

सकुल० ना० पु० पक्षी, कुलसमेत, हंस।

सकुलादानी० ना० स्त्री० मैदूर्गी।

सकेत० गु० सकरा, तंग, थोड़ा, ना० स्त्री० आपदा, दुर्भिक्ष।

सकेतना० स० क्रि० संकेतना, संकेतकरना।

सकेलना० स० क्रि० इकट्ठा करना, बटोरना।

सकेला० ना० पु० [illegible]

सकोच० ना० पु० आदिर सन्मान।

सकोरना० स० क्रि० समेटना, संकोचना, तंग करना।

सकोरा० ना० पु० कटोरा, मिट्टी वा काठका छोटा बर्त्तन।

सकोरी० ना० स्त्री० थाली, पिरिच।

सक्रोध० गु० क्रोधसमेत।

सखर० गु० अधिक, खरयुत।

सखा० ना० पु० मित्र, बन्धु, प्रियतम।

सखी० ना० स्त्री० मित्रणी, सहेली, संगिनी।

सख्य० ना० स्त्री० मित्रता, प्रीति।

सगड़० ना० पु० शकट, शकट।

सगर० ना० पु० अयोध्या का राजाविशेष।

सगरे० गु० सब, समस्त।

सगर्भ० गु० गर्भिणी, [illegible]

सगपहिता० ना० पु० [illegible]

सगा० गु० [illegible]

सगाई० ना० स्त्री० [illegible], मंगनी आदि [illegible], रिश्ते।

सगुन० ना० पु० [illegible]।

[illegible] ना० पु० [illegible]

[illegible] ना० स्त्री० मांस।

[illegible] गु० निरादर, लज्जित।

[illegible] गु० [illegible]

सघाती० ना० स्त्री० सखी, सहेली।

संकट० ना० पु० विपत्ति, दुःख, भीड़, सांसत।

संकटा० ना० स्त्री० ग्रहदशा, दशाविशेष, काशी की देवीविशेष।

संकर० ना० पु० दोगला, मिश्रित सन्तान।

संकर्षण० ना० पु० श्रीबलदेवजी, हलधर।

संकष० ना० पु० संगर, दर, शांकर, गंभीर।

संकलन० ना० पु० जोड़, जोड़दी, योग, संकुलता, भीड़।

संक्रान्ति० [illegible]

[illegible] ना० पु० गणित।

संकल्प० ना० पु० मनर्थ, इच्छा, विचार, शा-

स्वीय कर्म में प्रतिज्ञाविशेष, दान करना।
संकल्पना० स० क्रि० दानदेना, नियम व प्रतिज्ञा करना।
संकाश० ना० पु० तुल्य, प्रकाशयुत।
संकीर्ण० गु० मचामच, घना।
संकीर्तन० ना० पु० गुणोंका गान।
संकुचित० गु० सकुचाया, लज्जित।
संकुल० गु० मचामच, घना, भराहुआ, पूरा।
संकुलित० गु० भरा, युक्त।
संकेत० ना० पु० वचन, अवधि, सैन, इंगित, सलाह, इशारह, एकान्त।
संकोच० ना० पु० खान, डरना, केसर, कान्ति, चिलगोजा, सिमट।
संकोचन० ना० पु० खेंच, सिमटाहट।
संकोचना० स० क्रि० बटोरना, समेटना, कुम्हलाना, कान्तिकरना।
संकोची० गु० सजीला, लाजवन्त।
संक्रम० ना० पु० संचार, गमन।
संक्रान्त० गु० जो बीतगया, जो एकसे दूसरे को सौंपागया।
संक्रान्ति० स्त्री० एक राशि से दूसरी राशि में सूर्यका जाना।
संखिया० ना० स्त्री० विषविशेष।
संख्या० ना० स्त्री० गुनती आदिगिन्ती, शुमार।
संग० ना० पु० संयोग, मेल, सीलायोषा, अव्य० साथ, सहित।
संगपिछ० ना० पु० मोचरस।
संगति० ना० स्त्री० मैथुन, भेंट, मेल, मिलाप।
संगम० ना० पु० मेल, मिलाप, मैथुन।
संगर० ना० पु० युद्ध, लड़ाई, आपदा, प्रण, छावनी, लश्कर।
संगसी० ना० स्त्री० सड़सी।
संगी० ना० पु० साथी, हमराही, मिलापी।
संगीत० ना० पु० रागभेद, गान, गानेकी विद्या।
संगीतदर्पण० ना० पु० रागविद्या का ग्रन्थविशेष।
संगोपन० ना० पु० छिपाव, गोपन।
संग्रह० ना० पु० बटोर, संक्षेपन, सारांश लेना।
संग्रहण० ना० पु० स्वीकार करना, लेलेना।
संग्रहणी० ना० स्त्री० अतीसाररोगविशेष।
संगृहीत० गु० जो संग्रह कियागया जो इकट्ठा कियागया।
संग्राम० ना० युद्ध, समर, रण।
संघ० ना० पु० झुण्ड, समूह, मेला, ढेर, ठौर।
संघट० ना० पु० संयोग, मिलान, रगड़।
संघट्टन० ना० पु० रगड़न, घिसन।
संघात० ना० पु० मारना, समूह, नरकविशेष।
संघार० ना० पु० संहार।
संघारक० ना० पु० संहारक, काल, भैरव।
संघारना० स० क्रि० संहारना।
सच० गु० सत्य, साँच, अव्य० हां, ठीक।
सचमुच० अव्य० सचमुच।
सचल० ना० पु० चलनेकी शक्ति, समेत, गु० जो चल फिरसके यथा मनुष्य, पशु, पक्षी।
सचाई० ना० स्त्री० सत्यता।
सचिव० ना० पु० मन्त्री, वजीर।
सचिवज० ना० पु० मंत्रीका पुत्र, वजीरजादह।
सचु० ना० पु० आनन्द, सत्य, सांच।
सचेत०
सचेतन० } गु० सचेत, चौकस, चैतन्य, चतुर।
सचेष्ट० गु० चेष्टायुत, उद्युक्त।
सचौटी० ना० स्त्री० सचाई, सचकहनेकीचाल।
सच्च०
सच्चा० } गु० सत्य, ठीक, सीधा।
सच्चाई० ना० स्त्री० सचाई।
सच्चिदानन्द० ना० पु० ब्रह्म, ईश्वर।
सच्छास्त्र० ना० पु० अच्छाशास्त्र।
सज० ना० स्त्री० डौल, ढब, सिंगार, शोभा, रूप।
सजकना पु० स्याना।
सजग० गु० होशियार, खबरदार, उनींदा, चौकस, चैतन्य।

सजधज० ना० स्त्री० बनावट, रूप, साज।
सजन० ना० पु० पति, प्रियतम।
सजना० अ० क्रि० बनना, फबना, छाजना, परिरना, सधरना, ना० पु० सज्जन, सैन्जन।
सजनी० ना० स्त्री० सखी, सहेली।
सजल० गु० जो जल से भरा।
सजरा० ना० पु० सम्मिला भाई, चार भाइयों में से जो तीसरा भाई हो उसका उपनाम।
सजाई० ना० स्त्री० बनवाई, बनावट, समाप, रामायये यथा तौ विधिदेहहि माहिं सजाई।
सजातीय० गु०, समान, सम, जातिका, एक जाति का।
सजाना० स०, क्रि० बनाना, रचाना।
सजावट० ना० स्त्री० बनावट रचावट।
सजीला० गु० सुडौल सुढल, सुन्दर।
सजीन० गु० जीवन, जीवधारी, जान समेत, आनन्द में।
सजीवनि० ना० स्त्री० बूटाविशेष।
सजोयल० गु० बख्तर समेत, हथियारबन्द।
सज्जन० गु० कुलवन्त, आदरी, साधु, और अच्छा मनुष्य ना० पु० प्रियतम, प्यारा।
सज्जना० अ० क्रि० सजना।
सज्जी० ना० स्त्री० क्षारविशेष।
सझिया० ना० स्त्री० साझेदार सतयादि।
सझियार० ना० पु० साझी, शरीक।
सझियारा० ना० पु० साझा, शराकत।
सञ्चय० ना० पु० संग्रह, ढेर, समूह।
सञ्चयी० गु० सञ्चय करनेहारा।
सञ्चार० ना० पु० संसर्ग, गुरुता सञ्जो चलन, मार्ग, राह, बाट, चलन, निशान।
सञ्चारिका० ना० स्त्री० कुटनी।
सञ्चारिणी० गु० स्त्री० चलानेवाली।
सञ्चित० गु० जो बटोरागया, पूर्वकृत धर्म अधर्म।
सचेत० गु० सचेत।
सञ्छिन्न० गु० छिपा, गुप्त।

सजात० क्रि० उत्पन्न पैदा।
सकट० ना० पु० सचीली छड़ी, भगाउ, मैत्र मान दुकारी नय।
सटकना० अ० क्रि० भागजाना, छिपना, अलग होना।
सटकाई० ना० स्त्री० उतार चढ़ाव।
सटकाना० स० क्रि० निरस करना, छिपाना, भगाना, बालाना।
सटना० अ० क्रि० मिलना, जुड़ना, छिपना।
सटपटाना० अ० क्रि० घबड़ाना, डरना।
सटा० ना० स्त्री० गलक बाल, जटा।
सटाना० स० क्रि० चिपकाना, जोड़ना, लगाना।
सटासट० ना० स्त्री० लगातार।
सटिया० ना० स्त्री० छड़ी।
सटीक० गु० टीकासमेत, तिलकसंयुक्त।
सठियाना० अ० क्रि० साठ वर्ष की आयु से अधिक होना बुद्धिहीन होना।
सडेरा० ना० पु० पुष्ट, शिकार जो बच्चा का दिया जाता है।
सड़क० ना० स्त्री० राजमार्ग पथ, पैंडा।
सड़न० ना० स्त्री० सड़ाव, गहन।
सड़ना० अ० क्रि० गलना, उफनना।
सड़ा० गु० गला, उकसा।
सड़ाय० } ना० स्त्री० सड़ने की दुर्गन्ध।
सड़ाना० स० क्रि० गलाना, फुलाना।
सड़ियल० गु० निकम्मा, सड़ाहुआ।
सड़ैया० गु० सड़िनेहार।
सँडसी० ना० स्त्री० गहना, समभी सांसी।
सडा० गु० पोढ़ा मारा।
सड़ास० ना० पु० पायखाना, कदमची।
सड़ासा० ना० पु० बड़ी सन्सी।
सड़ासी० ना० स्त्री० छोटी सन्सी।
सत० गु० सत्य, ना० पु० सार, धीर, अच्छ सतमान, रस, कीर्ति, मन्त्र।
सतमासा० ना० पु० सात महीने में

की पूजा विशेष या क्योनार।
सतमी॰ ना॰ स्त्री॰ सप्तमी।
सतर॰ ना॰ स्त्री॰ तिर्छी, टेढ़ी।
सतराना॰ अ॰ क्रि॰ क्रोधित होना, कुढ़ना।
सतरौहीं॰ ना॰ स्त्री॰ टेढ़ी, तिर्छी।
सतर्क॰ गु॰ सावधान।
सतलज॰ ना॰ स्त्री॰ पञ्जावकी नदी विशेष।
सतलड़ा॰ गु॰ सतगुना, जिसमें सातलड़ हैं।
सतसठ॰ गु॰ साठि और सात, ६७।
सतसैया॰ ना॰ स्त्री॰ बिहारीलाल कविकृत ग्रन्थ विशेष।
सतहत्तर॰ गु॰ सत्तर और सात, ७७।
सताना॰ स॰ क्रि॰ दुःख देना, छेड़ना।
सती॰ ना॰ स्त्री जो स्त्री पति के साथ अग्नि में जलती है, पतिव्रता, दक्षसुता।
सतीमठ॰ ना॰ पु॰ स्थान जहां सती के चरित्र आदिस्थापन करते हैं।
सतीर्थ॰ ना॰ पु॰ जिन्होंने एक गुरु से अध्ययन किया है, गुरुभाई, सहाध्यायी, एक साथ के पढ़नेहारे।
सतीला॰ गु॰ पराक्रमी।
सतीवाड़॰ ना॰ पु॰ स्थान जिसमें सतीहुई है।
सतुवा॰ } ना॰ पु॰ सत्तू।
सतुआ॰ }
सत्कर्म॰ ना॰ पु॰ भलाकर्म, ठीक काम।
सत्कार॰ ना॰ पु॰ सम्मान, खोवका प्रसाना।
सत्कारी॰ ना॰ पु॰ मुर्देका जलानेवाला, सम्मान वा आदर करनेहारा।
सत्क्रिया॰ ना॰ स्त्री॰ मृतककी सुगति, उत्तम कर्म, आत्मगति।
सत्तम॰ गु॰ श्रेष्ठ, बड़ा, मर्य्यादिक, साधुओं में जो सब से अच्छा।
सत्तर॰ गु॰ सातदहाई, ७०।
सत्तरह॰ गु॰ दश और सात, १७।
सत्ता॰ ना॰ स्त्री॰ बल पराक्रम, गञ्जीफा में जो सात, आकार, मैजूद।
सत्ताईस॰ गु॰ बीस और सात, २७।
सत्तानवे॰ गु॰ नब्बे और सात, ९७।
सत्तावन॰ गु॰ पचास और सात, ५७।
सत्तासी॰ गु॰ अस्सी और सात, ८७।
सत्तु॰ ना॰ पु॰ भूनेयव आदिका चूर्ण।
सत्पथ॰ ना॰ पु॰ सन्मार्ग, अच्छामार्ग।
सत्पुत्र॰ ना॰ पु॰ सुपूत, भलापुत्र।
सत्य॰ गु॰ यथार्थ, ठीक, निश्चय, सांच।
सत्यकेतु॰ ना॰ पु॰ राजाविशेष, सत्यकी पताका।
सत्यता॰ ना॰ स्त्री॰ भलाई, सचाई।
सत्ययुग॰ ना॰ पु॰ प्रथमयुग जो सत्रह लाख अट्ठाईस सहस्रवर्ष का प्रमाण है।
सत्यभामा॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीकृष्णकी स्त्री विशेष।
सत्यभाव॰ ना॰ पु॰ सीधा स्वभाव।
सत्यलोक॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मलोक स्वर्गविशेष।
सत्यवचन॰ ना॰ पु॰ सच के कहना, ठीक।
सत्यवती॰ ना॰ स्त्री॰ वेदव्यास की माता, पतिव्रता स्त्री।
सत्यवाद॰ ना॰ पु॰ सत्यवचन, ठीकबात्ती।
सत्यवादी॰ गु॰ सच्चा, सच कहनेहारा।
सत्यसिन्धु॰ गु॰ बड़ासच्चा।
सत्यानाश॰ ना॰ पु॰ सम्पूर्णनाश, बिगाड़ना।
सत्यानाशी॰ ना॰ स्त्री॰ कटीला पौधाविशेष, गु॰ जो बिगड़गया, नष्ट।
सत्यानृत॰ ना॰ पु॰ वाणिज्य, व्योपार।
सत्ययुग॰ ना॰ पु॰ सतयुग, सत्तयुग।
सत्त्व॰ } ना॰ पु॰ भलाई का गुण।
सत्त्वगुण॰ }
सत्वन्ता॰ गु॰ भला कीर्तिमान्।
सत्वर॰ अव्य॰ तुरन्त, शीघ्र, जल्द।
सथराव॰ ना॰ पु॰ युद्धमें जो मारेगये उनके ढेर।
सथिया॰ ना॰ पु॰ शस्त्र वैद्य, जर्राह, चिह्न विशेष जो महाजन लोग स्वस्तिके प्रथमपत्र में करते हैं।

सद० अव्य० सद्य, तत्क्षण गु० श्रेष्ठ।
सदन० ना० पु० स्थान, घर, मकान।
सदय० गु० दयायुत, दयासहित।
सदया० ना० स्त्री० श्यामदवत्, पची की सी।
सदस्य० ना० पु० धर्म करो में जो न्यूनाधिक का विचार करे वा सुधारे, देखरैया।
सदा०
सदाई० } अव्य० सर्वदा, नित्य, हमेशह।
सदाकार० ना० पु० आव का वृक्ष या आम्र।
सदागति० ना० पु० पवन, वायु।
सदाचार० ना० पु० सर्वदाकाल श्राचार करना, श्रेष्ठाचार, पवन, वायु, हवा।
सदानन्द० ना० पु० सर्वत्र वा सर्वदाकाल प्रसन्न, श्रागुरु।
सदापुष्प० ना० पु० मंदारवृक्ष, कुंदवृक्ष, वृक्ष, जिसमें सर्वदाकाल फूल लगते हों।
सदाफल० ना० पु० नारियलवृक्ष, बेलवृक्ष गूलरवृक्ष, कटहल, गु० वृक्ष जिसमें सदाफल मिलता हो।
सदाव्रत० ना० पु० श्रतिथों और साधादि को नित्य भोजनदान।
सदाशिव० ना० पु० श्रीशिवजी का एकनाम।
सदासुहागन० ना० स्त्री० पक्षीविशेष, फूल विशेष, फ़क़ीर या भिक्षुक, जो स्त्री का भेष करता है।
सदेह० गु० देहसमेत।
सदृश० बराबर, तुल्य, समान।
सदेश० गु० समीप, पास।
सदैव० अव्य० सदा० सर्वदा।
सदैविक० गु० सबदिनका, नित्यका।
सदोष० गु० दोषसमेत।
सद्गति० ना० स्त्री० निस्तार, मुक्ति, त्राण।
सगन्द० ना० स्त्री० सुगन्ध।
सद्दल० ना० पु० समूह, गिरोह।
सद्म० ना० पु० घर, स्थान, मकान।

सद्य०
सद्य० } अव्य० तुरंत, तत्क्षण।
सद्वक्ता० गु० सत्य कहनेहारा।
सद्विवेक० ना० पु० सत्यविवेक, उत्तमज्ञान।
सद्विवेचक० ना० पु० जो यथार्थ का विचारे।
सधन० ना० पु० धन समेत।
सधना० अ० क्रि० बनना, हिलना, ठहरना, थंभना।
सधवा० ना० स्त्री० सुहागिन, पतिवती स्त्री।
सधाना० स० क्रि० मिलाना, बनाना, हिलाना, पूराकरना, ठहराना, थभाना।
सधी० गु० बुद्धिसमेत, श्रभ्यासमेत, हिली, ठहरीहुई, सीखीहुई।
सन० ना० पु० पौधाविशेष जिसकी छाल की रस्सी बनाते हैं, अव्य० से।
सनकार० ना० पु० सेन, इशारह।
सनकारना० स० क्रि० सैनदेना इशारह करना।
सनकारा० गु० इशारहकिया गया, जो सैन दिया हुआ।
सनत० ना० पु० मुनि विशेष।
सनत्कुमार० ना० पु० ब्रह्मा के चार पुत्रों में से एक जो श्रादि पुरुषथा।
सनना० अ० क्रि० गर्भणा होना, भरना, मलना, गुंधना।
सन्निपात० ना० पु० रोगविशेष, जो कफ पित्त वात के बिगड़ने से होता है।
सना० ना० पु० स्त्री० श्रोषधि विशेष, सनाय।
सनाढ्य० ना० पु० ब्राह्मणजाति विशेष।
सनातन० गु० जिसका श्रारम्भ और श्रन्त नहीं है जो नित्य रहेगा।
सनाथ० गु० नाथ सहित, निहाल, कृतार्थ।
सनाह० ना० पु० बख्तर, गु० पतिसमेत।
सनिया० ना० पु० टसरका वस्त्र विशेष।
सनीचर० ना० पु० शनैश्चर।
सनीचरा० गु० श्रभागा, श्रपयशी, ना० पु०

ग्वालियर के निकटपर्वत विशेष जिसपर सनीचर की मूर्ति है।
सनेह० ना० पु० तेल, गु० स्नेह।
सन्त० ना० पु० साधु वैरागी, ईश्वरसेवक, गु० धर्म्मात्मा, भला।
सन्तत० अ० निरंतर, निरंतर।
सन्तति० ना० स्त्री० सन्तान, वंश, पुत्रादि की लाद।
सन्तप्त० गु० पीड़ित, दुखित, सताया गया, सन्तापसहित।
सन्तरण० ना० पु० तरना, पार होना।
सन्ता० गु० बिगड़ा।
सन्तान० ना० पु० वंश, लड़केबाले, कल्पद्रुम।
सन्ताप० ना० पु० शोक, पीड़ा, दुःख।
सन्तापित० गु० सन्तप्त, सताया गया, पीड़ित।
सन्तापी० गु० शोकसंयुक्त, उदास, दुःखी।
सन्ती० ना० पु० बदला, अव्य० बदल, पलटे, लिए।
सन्तुष्ट० गु० धीरजी सन्तोषी, तृप्त, मनभरा हर्षित।
सन्तोष० ना० पु० आनन्द, धीरज, हर्ष, सुख।
सन्तोषी० गु० धीरजवान् आनन्दी, हर्षित।
सन्था० ना० स्त्री० पाठ सबक़।
सन्दंश० ना० स्त्री० सण्डसी, संसा।
सन्दर्शन० ना० पु० साक्षात्कार।
सन्दल० ना० पु० दामनवा, रेसमी जो घोंघा पार के पाँवमें बांधते हैं, सुनारों का हथियार विशेष।
सन्दिग्ध० गु० सन्देहयुक्त, भरमीला।
सन्दिग्धमूल० ना० पु० जिसके मूलमें सन्देह हो।
सन्देश०
सन्देशा०
सन्देस०
सन्देसा० } ना० पु० समाचार, पैगाम, ख़बर।

सन्देसी० ना० पु० दूत, पयम्बर।
सन्देह० ना० पु० संशय, शंका, चिंता, शक।
सन्देहिक० गु० जिसमें सन्देह हो।
सन्देही० ना० पु० संशयी, चिंतायुक्त।
सन्दोह० ना० पु० समूह, बहुतायत।
सन्धान० ना० पु० अन्वेषण, खोज, फ़ाक, संगान, लगाव, मिलान।
सन्धानना० सं० क्रि० जोड़ना, लगाना, ताकना।
सन्धाना० ना० पु० आचार।
सन्धि० ना० स्त्री० मेल, संयोग मिलाप, छिद्र, दरार, मिलाप।
सन्ध्या० ना० स्त्री० सन्धिकाल, गोधूलि, सांझ, त्रिकाल में उपासना का समयका नाम, यथा सूर्योदय, मध्याह्न, सूर्यास्त।
सन्नाटा० ना० पु० जलकी लहरोंका जो शब्द, वायु या झड़ी, से जो शब्द होता है।

सन्निकर्ष० ना० पु०
सन्निधान० ना० पु०
सन्निधि० ना० स्त्री० } समीप समीपी, निकटता, समीपहोना।

सन्निपात० ना० पु० सन्निरोध, संसर्ग।
सन्निहित० गु० निकट, समीप, पास।
सन्मान० ना० पु० आदर, सत्कार, मर्यादा।
सन्मानार्थ० गु० जिस शब्द से प्रतिष्ठा पाई जाती है।
सन्मानी० गु० शिष्टाचारी, आदरी, सत्कारी।
सन्मुद० ना० पु० हर्ष, प्रीति, आनन्द, खुशी।
सन्न्यास० ना० पु० चौथा आश्रम, दिगम्बर।
सन्न्यासी० ना० पु० चौथा आश्रमी, दिगम्बरी।
सपदि० अव्य० तत्क्षण, तुरन्त, अभी।
सपना० ना० पु० स्वप्न।
सपल्लव० गु० नवीन पत्तल, पत्तेसहित।
सपक्ष० ना० पु० सहायक, सखी, गु० पक्षसमेत।
सपीतक० ना० पु० घियातुरई।
सपुत्र० ना० पु० लड़के सहित।
सपुष्पा० ना० स्त्री० रामतोरई।

सपूत० ना० पु० सपूत।

सपूताई०
सपूतो० } ना० स्त्री० सत्पुत्रता, सपूती।

सपेला० ना० पु०
सपोला० ना० पु०
सपोलिया० ना० स्त्री० } सांपकाबच्चा, छोटा साप, जन्मता साप का बच्चा।

सप्त० गु० सात ७।

सप्तईति० ना० स्त्री० सातईति अर्थात् अनावृष्टि १ अतिवृष्टि २ टीडी ३ मूषक ४ शुक ५ स्वचक्र ६ परचक्र ७।

सप्तऋषि० ना० पु० सातऋषि अर्थात् कश्यप १ अत्रि २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ गौतम ५ जमदग्नि ६ वशिष्ठ ७।

सप्तजिह्वाग्नि० ना० पु० अग्निकी सातजिह्वा अर्थात् काली १ कराली २ जयवती ३ रक्तप्रिया ४ ज्वलनी ५ धूम्रपुष्पा ६ धूम्रशीर्षा ७।

सप्तति० गु० सत्तर ७०।

सप्तदश० गु० सत्तरह १७।

सप्तदेवपुरी० ना० स्त्री० सात देवपुरी अर्थात् विष्णुपुरी १ शिवपुरी २ ब्रह्मपुरी ३ अमरावती ४ अलकावती ५ वरुणावती ६ और यमपुरी ७।

सप्तद्वीप० ना० पु० सातद्वीप अर्थात् जम्बू १ लक्ष २ कुश ३ क्रौंच ४ शाक ५ शाल्मलि ६ पुष्कर ७।

सप्तपाताल० ना० पु० सात पाताल अर्थात् अतल, वितल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल, सुतल, ७।

सप्तपुरी० ना० स्त्री० अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काची, अवन्तिका, द्वारका ७।

सप्तम० गु० सातवां।

सप्तमी० ना० स्त्री० सातवींतिथि, अधिकरण।

सप्तम्यन्त० गु० जिसके अन्तमें, सप्तमी का प्रत्यय है।

सप्तमुख्यअप्सरा० ना० स्त्री० घृताची १ मेनका २ रम्भा ३ उर्वशी ४ तिलोत्तमा ५ सुकेशी ६ मञ्जुघोषा ७।

सप्तमुख्यवायु० ना० पु० सातमुख्यपवन अर्थात् आवह, प्रवह, अनुवह, संवह, विवह, परावह, परिवह ७।

सप्तयुद्ध० ना० पु० सात प्रकारका समर अर्थात् धनुष, चक्र, कुन्त, खड्ग, गदा, छुरिका, मल्ल ७।

सप्तराज्याङ्ग० ना० पु० राज्य के सात अङ्ग अर्थात् स्वामी, मन्त्री, देश, कोश, मित्र, गढ़, सैन्य, ७।

सप्तविंशति० गु० सत्ताईस २७।

सप्तविंशतितम० गु० सत्ताईसवां।

सप्तसिंधु० ना० पु० सात समुद्र अर्थात् लवणोद, रसोद, सुरानिधि, घृतनिधि, दधिनिधि, क्षीरनिधि, जलनिधि ७।

सप्तस्वर० ना० पु० सातस्वर अर्थात् षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, धैवत, निषाद, पञ्चम ७।

सप्तस्वर्ग० ना० पु० सातस्वर्ग अर्थात् भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोक ७।

सप्ताश्व० ना० पु० सूर्य्य।

सप्ताह० ना० पु० अठवारा, हफतह।

सप्ति० ना० पु० घोड़ा, यथा वाजिवाहार्व गन्धर्व यह सेन्धव सप्त इत्यमर।

सफरी० ना० स्त्री० मत्स्य, मछली।

सब० गु० सर्व, सारा, ना० स्त्री० रात।

सबरस० ना० पु० जल, पानी।

सबल० गु० बलवान्, प्रौढ़, पहलवान।

सबलता०
सबलाई० } ना० स्त्री० बल, प्रौढ़ता, पहलवानी।

सबेर० गु० समय से पहले, ठीक या अच्छे समय।

सबेरा० ना० पु० भोर, प्रात काल, तड़का।

सबेरे० अव्य० तड़के, भोरहे।

सप्रोतर० गु० सरस।
सभय० गु० भयसमेत, भयभीत।
सभव० ना० पु० जन्म, गु० उत्पन्न युक्त।
सभा० ना० स्त्री० कचहरी, मण्डली।
सभासद० ना० पु० दरबारी, सभामें बैठनेहारा या विचारकरनेहारा।
सभीत० गु० डराभया, भययुत।
सभ्य० ना० पु० सभा के कार्य्य में जो सहायक है, गु० जो सभा के योग्य है
सभ्रम० ना० पु० भूल, गु० भूल से भ्रम सहित।
सम० गु० तुल्य, सब, बराबर, व सर्ना मिलिहुये।
समकटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वी का वह भाग जो शीतकटिबन्ध और गर्मरेखा के बीच ४१ है बसा है।
समग्र० गु० समस्त, सारा।
समग्रता० ना० स्त्री० सम्पूर्णता।
समगा० ना० स्त्री० सिरहन।
समगी० ना० स्त्री० मजीठ लजालू।
समझ० ना० स्त्री० बूझ, ज्ञान, विचार।
समझना० अ० क्रि० बूझना, विचारना।
समझवार० गु० विचारवार, ध्यानी ज्ञानी।
समझाना० स० क्रि० बुझाना, जताना बताना।
समझौती० } ना० स्त्री० समझाने का काम।
समझावा० }
समञ्जस० ना० पु० योग्यता, उचितता गु० यथार्थ।
समता० ना० स्त्री० समभाव एकता बराबरी।
समदर्शी० गु० सम्यभ्दर्शी तुल्यदृष्टि, सबको समजाने।
समद्विबाहु० गु० जिसकी दो भुजा तुल्यहों।
समधिन० ना० स्त्री० अपने पुत्र वा पुत्री की सास।
समधियाना० ना० पु० समधी का घर घराना।
समधी० ना० पु० अपने पुत्र व पुत्रीका ससुर, गु० समबुद्धि।
समन्त० ना० पु० सेंहुडवृक्ष।
समन्वय० ना० पु० आपस में बहुतों का मेल।
समन्वित० गु० आपसम मिलित, संयुक्त।
समभाव० ना० पु० समता, बराबरी।
समय० ना० पु० काल, बेरा, अवसर, वर्त्त, सारवास, अन्तेदिन।
समर० ना० पु० युद्ध, लड़ाई, रण, कामदेव।
समररस० ना० पु० यत्न, बहादुरी।
समर्थ० गु० बलवान, योग्य, हिम्मतवर।
समर्थी० गु० सामर्थी, ताकतवर।
समर्पण० ना० पु० सौंपना, अर्पण, त्याग, देना
समर्पित० गु० सौंपागया, अर्पित, त्यागित।
समल० गु० पापी, मैला।
समवाय० ना० पु० भाग, समूह, न्यायशास्त्र में सम्बन्धविशेष।
समशील० गु० तुल्यभाव, समभाव, समता।
समसूत्र० गु० सीधासूत।
समसूत्रपात० ना० पु० सीधासूतका पड़ना या डालना।
समस्त० गु० सकल, सारा, सब।
समस्या० ना० स्त्री० समासार्थ, श्लोक का पूर्वार्द्ध एकदरवा कहना।
समक्ष० गु० साक्षात्, साम्हने।
समत्रिबाहु० गु० जिस त्रिभुज की तीनों भुजायें समान हों।
समा० ना० पु० समय, बहुतान, दिशा, मिलाप।
समाई० ना० स्त्री० समाव, धैर्य, शक्ति।
समाकृत० ना० पु० विश्रामता।
समागत० ना० पु० संयोग, अवाई, पहुँच।
समागम० ना० पु० संयोग, मिलाप, अवाई।
समाचार० ना० पु० सन्देश, वृत्तान्त, चर्चा।
समाचारपत्र० ना० पु० चिट्ठी, अखबार।

सम्पन्न० गु० परिपूर्ण, जो पूरा होचुका, भाग्यवान्, भराहुआ।

सम्पर्क० ना० पु० सम्बन्ध, मिलाप, संयोग, मैथुन

सम्पात० ना० पु० चुवावट, गिरना, स्पर्श।

सम्पाति० ना० पु० गिद्धविशेष।

सम्पादक० ना० पु० सम्पादन करने हारा।

सम्पादन० ना० पु० प्राप्ति।

सम्पादित० गु० प्राप्त।

सम्पुट० ना० पु० डब्बा, जड़ाव, बचाव।

सम्पूरण०
सम्पूर्ण० } परिपूर्ण, सारा, समस्त।

सम्प्रति० अव्य० अभी।

सम्प्रदान० ना० पु० चतुर्थी, कारकविशेष जिसके लिये कर्त्ता क्रिया सिद्धकरे।

सम्प्रदाय० ना० पु० परम्परा का धर्म।

सम्फुल्ल० गु० फूला विकसा।

सम्बद्ध० गु० संयुक्त, जो बांधागया, जो घेरा गया।

सम्बन्ध० ना० पु० सम्पर्क, नाता, लगाव, लुक, इशारह, कारकविशेष, षष्ठी।

सम्बन्धी० गु० नातेदार, रिश्तेदार, ना० पु० गोत्री, समधी।

सम्बर० ना० पु० दैत्यविशेष, सम्बल, पानीमेल।

सम्बरारि० ना० पु० कामदेव, प्रद्युम्न।

सम्बल० ना० पु० जानना मार्ग का, दैत्यविशेष।

सम्बुक०
सम्बूक० } ना० पु० घोंघा, घोंघी, शंख।

सम्बोधन० ना० पु० सन्मुख करने के लिये जो शब्द यथा हे, भो, धीरजकरना।

सम्भलना० अ० क्रि० थमना, सुधरना, खड़ा होना।

सम्भव० ना० पु० योग्यता होनहार उद्भव, गु० होने के योग्य।

सम्भवा० ना० स्री० गोरोचन।

सम्भार०
सम्भाल० } ना० पु० धमार, सुधान, रक्षा।

सम्भालना० स० क्रि० थामना, सुधारना, रक्षा करना।

सम्भावना० ना० स्री० होने की योग्यता, क्रिया के शक्त्यर्थ नियमका अभिप्राय, इच्छा।

सम्भावनीय० गु० होनहार।

सम्भावित० गु० बड़ामान्य।

सम्भाषण० ना० पु० बोलचाल, बातचीत।

सम्भूत० ना० पु० उत्पन्न, पैदा।

सम्भोग० ना० पु० सुख, हर्ष, स्त्री प्रसंग।

सम्भ्रम० ना० पु० आदर, सम्मान, उतावली, डर, घबराहट।

सम्मत०
सम्मति० } ना० स्री० इच्छा, स्वीकार, विचार, समानता, सलाह, राय।

सम्मीक० ना० पु० समर, युद्ध, रण।

सम्यक्० अव्य० सब, योग्यता से, ठीक रीतिसे, अच्छीतरह।

सयन० ना० पु० शयन, इशारह, संकेत।

सयान० ना० पु० चतुराई, प्रवीणता, छल।

सयाना० गु० चतुर, प्रवीण, छली, पक्का।

सर० ना० पु० ताल, कुण्ड, शर।

सरकण्डा० ना० पु० नरकटविशेष।

सरकना० अ० क्रि० हटना, भागना।

सरकाना० स० क्रि० खिसकाना, भगाना।

सरयू० ना० स्री० नदीविशेष।

सरट० ना० पु० गिरगिट, गिरगिदाना।

सरद्० ना० पु० शरद ऋतु।

सरद० ना० पु० फलविशेष।

सरन० ना० स्री० शरण।

सरना० अ० क्रि० बनना, चलना, निकलना, सड़ना शरण।

सरनागत० ना० पु० शरणागत।

सरणागतवत्सल० गु० शरणागतों पर जो दयाल अर्थात् ईश्वर।
सरपट० ना० पु० वगछूट।
सरपत० ना० पु० पतलो, पतावर, सैंठा, सरकण्डा।
सरभ० ना० पु० बन्दर विशेष, अव्य० शीघ्रता।
सरल० गु० सीधा, सादा, साधारण, वासंती पौधा विशेष।
सरला० गु० सीधा, ऊंचा, दीर्घ।
सरलाश्रिता० ना० स्त्री० निसोत।
सरवरि० ना० स्त्री० बराबरी।
सरस० गु० श्रेष्ठ, अधिक, बहुत, रससमेत।
सरसई० ना० स्त्री० सरस्वती नदी।
सरसाई० ना० स्त्री० अधिकाई, बहुतात।
सरसाना० अ० क्रि० बढ़ना, अधिकहोना।
सरसी० ना० स्त्री० तालाव।
सरसों० ना० स्त्री० सर्षप, राई विशेष।
सरस्वती० ना० स्त्री० नदी विशेष, वाणी की देवता और राग और विद्या की प्रतिपालक, संस्कृत भाषा की बनाने हारी।
सरा० ना० पु० शराव, चिता।
सराई० ना० स्त्री० अंगारा।
सराप० ना० पु० शाप, श्राप।
सरापना० स० क्रि० शापदना।
सरारक० ना० पु० जाति विशेष, जनी।
सरावन० ना० पु० हेंगा, पटेला, जिसको फिराकर खेत के ढेले तोड़ते हैं।
सराह० ना० स्त्री० स्तुति बड़ाई, महिमा।
सराहना० स० क्रि० स्तुति करना, बड़ाईकरना।
सरिगम० ना० पु० गान विद्या में स्वर बताने के लिये पहिलापद।
सरिणी० ना० स्त्री० गन्धप्रसारन।
सरित० ना० स्त्री० नदी।
सरिता० ना० स्त्री० नदी।
सरित्पति० ना० पु० समुद्र।
सरिस० गु० बराबर, तुल्य।
सरी० ना० स्त्री० विनाफलका शर, सरकण्डा जिससे तीर बनाते हैं।
सरीखा० गु० सदृश, समान, तुल्य।
सरुज० गु० रोगी, मरीज।
सरुट० } गु० क्रोधयुत, क्रोधसमेत।
सरुष० }
सरूप० ना० पु० स्वरूप।
सरूप्य० ना० पु० सारूप्य।
सरेखा० ना० स्त्री० श्लेषा।
सरेश० ना० पु० काठ आदि जोड़ने के लिये लासा।
सरोज० ना० पु० कमल।
सरोता० ना० पु० सुपारी काटने का हथियार।
सरोवर० ना० पु० तालाव, तड़ाग।
सरोष० गु० क्रोधयुत, रोष सहित।
सरोही० ना० स्त्री० खड्ग विशेष।
सर्करा० ना० स्त्री० खाड़, शक्कर, बालू, धूलि।
सर्ग० ना० पु० स्वभाव, मोक्ष, उत्पत्ति।
सर्ज्ज० } ना० पु० राल।
सर्ज्जरस० }
सर्जिका० ना० स्त्री० सज्जी।
सर्प० ना० पु० साप।
सर्पदंष्ट्रा० ना० स्त्री० मढ़ासिंगी।
सर्पपति० } ना० पु० शिवजी नागराज।
सर्पराज० }
सर्पारि० ना० पु० मोला, गरुड़, मयूर।
सर्व० गु० सब, समस्त ना० पु० वृक्ष विराट।
सर्वकाल० ना० पु० नित्य, सदा, हमेशह।
सर्वगत० गु० सर्वत्र, व्याप्त, सबजगह मोजूद।
सर्वतोभद्र० ना० पु० नीमवृक्ष, मण्डल विशेष। चारों कोण का मन्दिर वा राजघर जिस में चार द्वार हों।
सर्वत्र० अव्य० सबठार, सबजगह।
सर्वथा० अ० प० सब विधि, सब प्रकार से।

सर्वदा० अव्य० सदा, हमेशह, नित्य।

सर्वनाम० ना० पु० सर्व विश्वादि पैंतीस शब्द, वह शब्द जो संज्ञाका आदेशहो।

सर्वनाश० ना० पु० सत्यानाश।

सर्वनाशक० गु० सबका नाश करनेहारा।

सर्वभक्षक०, सर्वभक्षी० } ना० पु० सब कुछ खानेवाला सर्वांगी, धर्महीन, भ्रष्ट।

सर्वभक्षा० ना० स्त्री० बकरी।

सर्वमंगला० ना० स्त्री० भवानी, पार्वती, दुर्गा।

सर्वमय० गु० जो सर्वत्रफेलगयाहो, सम्पूर्ण।

सर्वव्यापक०, सर्वव्यापी० } गु० सर्वत्र पहुंचनहारा।

सर्वस०, सर्वस्व०, सर्वस्व० } ना० पु० सम्पूर्णद्रव्य, सर्वसम्पदा।

सर्वज्ञ०, सर्वज्ञानी० } ना० पु० श्रीविष्णुनारायण, श्रीशिवजी, गु० सबका जानने हारा।

सर्वाङ्ग० ना० पु० सारा शरीर, मत विशेष, सब मनोज्ञ सारार्थ धर्म।

सर्वाङ्गी० गु० सर्वांग का ज्ञाता वा धारक।

सर्वाणी० ना० स्त्री० श्रीपार्वती।

सर्वाभीष्ट० ना० पु० सब मनोवृत्ति और सकल इच्छा।

सर्वोपरि० अव्य० सब के ऊपर।

सर्वौषध० ना० स्त्री० जटामासी, मुरा इत्यादि दश औषध।

सर्षप० ना० पु० सरसों।

सलकी० ना० स्त्री० कमलकी जड़।

सलज्ज० गु० लाजयुक्त, लज्जासहित।

सलना० ना० पु० मोनी, बाहनाहकी ढीमी, अ० क्रि० छिदना, गड़ना।

सलभ० ना० पु० पतंगा, टीड़ी, भिड़ी, शलभ।

सलसलाना० अ० क्रि० सरसराना।

सलाई०, सलाका० } ना० स्त्री० शलाका।

सलिल० ना० पु० जल, पानी।

सलूनो० ना० स्त्री० सावन की पूनो जिस में राखी बांधते हैं।

सलूप० ना० पु० धोकासा।

सलूपी० ना० पु० विल्व, बेल।

सलोन० गु० लोन सहित, नमकीला, देशालय विशेष, नमकीन।

सलोना० गु० खारा, सांवला, स्वादिष्ट।

सलोनी० गु० रूपवत्, स्वादिष्ट, सुन्दर।

सल्लकी० ना० स्त्री० पशु विशेष जिसके सारे शरीर में कांटे होते हैं, साही, सेही।

सल्लभ० ना० पु० मोगा कपड़ा विशेष।

सल्लू० ना० पु० चमड़े का टुकड़ा जिससे जूता आदि सीते हैं, सर्प विशेष।

सवत्सा० गु० स्त्री० बछड़ा की।

सवति० ना० स्त्री० एक मनुष्यकी दो स्त्रियों में से एक दूसर की सवति कहाती है।

सवर० ना० पु० भील, कोल।

सवरस० ना० पु० जल, पानी।

सवरी० ना० स्त्री० भीलिनी विशेष जिस के फल रामचन्द्रने खाये थे।

सवर्ण० गु० एक जातिका, एकरंगका, सादृश्य, समानवर्ण।

सवल० गु० सबल।

सवा० गु० जिस गिनती के प्रथम में संयुक्त होवे उसमें चौथाईबढ़ावे यथा सवादो, २¼।

सवाई० ना० पु० जयपुरके राजाकी पदवी।

सवाचना० स० क्रि० जांचना, परखना।

सवाया० गु० एक और एककी चौथाई।

संवार० ना० पु० घरद्वार, घुड़चढ़ा।

सवारी० ना० स्त्री० चढ़ती, वाहन।

सविकार० गु० जिसमें कुछ बदल हुई।

सविता० ना० पु० सूर्य।

सवीर्य्य० गु० बीज समेत।

सवैया० गु० सवाया, ना० पु० छन्द विशेष, बाट जो एकसेर और पावभर का होता है।

सभय० गु० नाया।
सशंक० गु० सभय।
सशब्दयोगि० गु० शब्दयोगी अव्यय सहित।
सशोक० गु० दुखित भयभीत।
ससक० ना० पु० खरगोश, चौगड़ा।
ससता० गु० जो महंगा नहीं है।
ससताई० ना० स्त्री० ससतापन।
ससा० ना० पु० शश, चौगड़ा, खरगोश।
ससाधवी० ना० स्त्री० सुजाति।
ससुर० ना० पु० श्वशुर।
ससुराल० ना० स्त्री० श्वशुरका घर।
ससुराली० गु० जो श्वशुरका है, जो ससुराल का है।
सस्य० ना० पु० फल, अन्न, धान।
सह० अव्य० साथ, सहित, गु० जो सहने के योग्य है।
सहकार० ना० पु० आम्रविशेष, सहायता।
सहकारी० गु० सहायक।
सहगामिनी० ना० स्त्री० सती स्त्री।
सहचर० ना० पु० निशवासा, साथी, संगी।
सहचरी० ना० स्त्री० सखी, सहेली, अनुगामिनी।
सहज० गु० सामान्य, निश्चल, स्पष्ट, सुगम।
सहजना० ना० पु० वृक्ष विशेष।
सहदेवी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, शहतरह।
सहन० ना० पु० कपड़ा विशेष, सहनेकी शक्ति।
सहनहार० गु० सहनेवाली, सहनैया।
सहना० अ० क्रि० निबाहकरना, सन्तोषकरना, झलेना, बरदाश्त करना।
सहमना० अ० क्रि० डरना, भयभीत होना।
सहमरण० ना० पु० मृतपतिके साथ जलना।
सहराना० अ० क्रि० घबराना, सहलाना।
सहरावन० ना० स्त्री० गुदगुदी, सुरसुरी।
सहरी० ना० स्त्री० बोल्डी दूधी, मछली, विशेष, भूर मछली।
सहरोष० गु० रोष सहित, जोर से।

सहलाना० अ० क्रि० गुदगुदाना, सुलसुलाना।
सहलाहट० ना० स्त्री० गुदगुदाहट, सुलसुलाहट।
सहवास० ना० पु० पड़ोस।
सहवासी० गु० पड़ोसी।
सहवैया० गु० सहनेहार।
सहस० गु० सहस्र, हजार, १०००।
सहसकर० ना० पु० सूर्य, बाणासुर, नागार्जुन।
सहसबदन० ना० पु० शेषजी, सहस्रवदन।
सहसबाहु० ना० पु० सहस्रबाहु, राजाविशेष।
सहसनयन० ना० पु० सहस्रनयन, इन्द्र।
सहसा० अव्य० बिनाविचार किये, उतावली से।
सहसाक्षी० ना० पु० सहस्रआक्षी, इन्द्र।
सहसाखी० गु० सहस्रसमेत, साखीसहित।
सहस्रानन० ना० पु० शेषजी।
सहस्र० गु० हजार, १०००।
सहस्रनयन० ना० पु० इन्द्र।
सहस्रमुखी० ना० स्त्री० श्रीगङ्गाजी।
सहस्रवदन० ना० पु० शेषजी।
सहस्रबाहु० ना० पु० बाणासुर, नागार्जुन।
सहस्रवीर्य० ना० पु० बड़ी सतावर।
सहस्रशिर० ना० पु० राक्षस विशेष जिसको श्रीसीताजीने मारा था।
सहस्रा० } ना० स्त्री० पीलुवृक्ष।
सहस्रांगी० }
सहाई० ना० स्त्री० सहाय, मदद, ना० पु० सहायक।
सहाऊ० गु० जो सहने के योग्य है।
सहाना० ना० पु० रागविशेष, स० क्रि० निर्वाहकराना, सन्तोषकराना, बरदाश्त कराना।
सहाय० ना० स्त्री० सहारा, सैन, मदद, साथ।
सहायक० ना० पु० मित्र, सहाय करनेहारा।
सहायता० ना० स्त्री० } उपकार, उपकार, मदद।
सहारा० ना० पु० }

सहित॰ अव्य॰ संग, साथ, समेत, गु॰ हित समेत।

सही॰ ना॰ स्त्री॰ खानाविशेष, नदी, अव्य॰ निश्चयबोधक।

सहेजना॰ स॰ क्रि॰ जाचना, परखना, सैतना, बनाना, बनाना, ठहरा, रखना।

सहेली॰ ना॰ स्त्री॰ सखी, आली, संगकी स्त्री।

सहोदर॰ गु॰ जो एक माता से उत्पन्न भया, यथा सगाभाई।

सहोदरभाई॰ } ना॰ पु॰ सगाभाई।
सहोदरभ्राता॰ }

सहोटी॰ ना॰ स्त्री॰ मुरोटी, चौसट, विशेष।

सह्य॰ गु॰ सहने के योग्य।

सक्षत॰ गु॰ खण्डित, घावयुक्त।

सा॰ अव्य॰ सादृश्यबोधक यथा छोटासा, पीलासा।

साऊ॰ गु॰ सीखनहार, शिष्ट।

साऊंगी॰ ना॰ स्त्री॰ सांगी।

साँई॰ ना॰ पु॰ स्वामी, भगवान्।

सांक॰ ना॰ स्त्री॰ शंका, चातरशाख।

सांकर॰ ना॰ स्त्री॰ सांकल, गु॰ गाढ़, विपत्ति, कठिनता।

सांकरी॰ } ना॰ स्त्री॰ सकल, सिकली, भूषण
सांकल॰ } विशेष, जंजीर।

सांखू॰ } ना॰ पुल, सेन, बांध, काठ
सांखो॰ } विशेष।

सांगी॰ ना॰ स्त्री॰ गाड़ी में स्थान विशेष जिस में गठरी आदि रखते हैं, बर्छी।

सांगूल॰ ना॰ स्त्री॰ मछली विशेष, शाक।

सांघर॰ ना॰ पु॰ अगिलेपतिका पुत्र।

सांच॰ गु॰ सत्य, सच, सच्चा।

सांचा॰ ना॰ पु॰ ढालने वा भरने का घर, अगरी, गु॰ सांचा, सत्यवक्ता।

सांझ॰ ना॰ स्त्री॰ सन्ध्या, सायंकाल।

सांझा॰ ना॰ पु॰ } झोरी जो पितृपक्ष में
सांझी॰ ना॰ स्त्री॰ } बनाते हैं पुतलियां जा लड़के पितृपक्ष में बनाते हैं।

सांटा॰ ना॰ पु॰ कोड़ा, ऍड़, छप्परकी कमरका नास।

सांटी॰ ना॰ स्त्री॰ छड़ी, लग।

सांटो॰ ना॰ पु॰ बदला, पलग॰ रामचन्द्रिका-या (यहसांटोलयकृष्णावतार, तब हैही तुम संसारपार)।

सांठ॰ ना॰ स्त्री॰ योग, संयोग, गुट, अन्न पीटने के लिये लम्बा सबेड़ा।

सांठगांठ॰ ना॰ पु॰ सांट गांट, मेल संयोग।

सांठना॰ स॰ क्रि॰ सटाना, लगाना, जुटाना।

सांड॰ ना॰ पु॰ शायड।

सांड़नी॰ ना॰ स्त्री॰ ऊँटनी, शायडकी स्त्री।

सांडा॰ ना॰ पु॰ छिपकली के तुल्यजन्तुविशेष।

सांती॰ अव्य॰ सती।

सांप॰ ना॰ पु॰ सर्प।

सांपन॰ ना॰ स्त्री॰ सांप की स्त्री।

सांभर॰ ना॰ पु॰ लवणविशेष, नगरविशेष, झीलविशेष जो जयपुर और जोधपुर के मध्य में है।

सांवला॰ गु॰ कृष्ण सदृश जो वर्ण।

सांवा॰ ना॰ पु॰ अन्नविशेष।

सांशयिक॰ गु॰ संदेहयुत, चिन्तायुत।

सांस॰ ना॰ स्त्री॰ श्वास, दम।

सांसना॰ स॰ क्रि॰ डांटना, कुदृष्टि देखना।

सांसभरना॰ अ॰ क्रि॰ आहभरना।

सांसा॰ ना॰ पु॰ संशय।

सांसारिक॰ गु॰ जो संसारका है।

साक॰ ना॰ पु॰ शाक, साग।

साक्चणिक॰ ना॰ पु॰ कुराऊ, कचड़िया।

साका॰ ना॰ पु॰ शाका।

साकार॰ अव्य॰ आकार सहित।

साकल्य॰ ना॰ पु॰ शाकल्य, शाकल।

साकेत्ध॰ ना॰ पु॰ राजा जिसने शाका चाला है।

साख० } ना० स्त्री० धाक, भरम, नाम, मर्याद, धीति, प्रतीति, पुरवान् ।
साखि० }

साखी० ना० स्त्री० साखी, गवाही ना० पु० वृक्षगवाह ।

साखोच्चार० ना० पु० वंशवर्णन ।

साखोटक० ना० पु० सहोरावृक्ष ।

साख्य० ना० पु० साचात् ।

साग० } ना० पु० शाक ।
सागपात० }

सागर० ना० पु० समुद्र, बड़ातालाब, भरत खण्डका नगरविशेष ।

सागरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।

सागून० ना० पु० काष्ठविशेष या उसीकावृक्ष ।

सांख्य० ना० पु० शास्त्रविशेष ।

सांग० गु० समास, सहितअंग ।

सांगोपांग० गु० सम्पूर्ण, समस्त, ज्योंका त्यों ।

साज० ना० पु० अश्वादि के पहरने की सामग्री, समर्थ, सामान, शाला ।

साजन० ना० पु० सज्जन पति, स्वामी ।

साजना० स० क्रि० चाहना, सँवारना, सजाना, साजना ।

साजी० ना० स्त्री० जो पूरी टूटा नहीं है ।

साझा० ना० पु० व्यापारादि में कई मनुष्यों का मेल, शराकत ।

साझी० ना० पु० साथी, भागी, शरीक ।

साठ० गु० म दहाई ६० ।

साठी० ना० पु० धान या चावलविशेष ।

साढ़साती० गु० शनैश्चर जो साढ़ेसात वर्ष तक रहता है ।

साढ़ा० गु० साढ़ा ।

साढ़ू० ना० पु० जोरूकी बहन का पति ।

साढ़े० गु० जिस गिनती की आदि में यह लगाते हैं उसपर एकका आधा अधिक गिनित होते हैं, ३ ॥

सात० सं०, ७ ।

सात्यकि० ना० पु० मनोविशेष, सारथिविशेष ।

सात्विक० गु० सतोगुणी, उत्तमदान ।

साथ० अव्य० संग ।

साथरी० ना० स्त्री० आसनी, बिछौना ।

साथी० गु० संगी, संगवाला ।

सादर० गु० आदरसमेत ।

सादरा० ना० पु० गीतविशेष ।

सादृश्य० ना० पु० समानता, उपमा, तुल्यता, दृष्टान्त ।

साध० ना० स्त्री० इच्छा, चाह, चोप गु० साधु, अच्छामनुष्य ।

साधक० ना० पु० तपस्वी, साधु, साधन करनेहारा ।

साधन० ना० पु० अभ्यास, चिन्तन, परमार्थ का अनुष्ठान, बनावट, उपाय, नित्यक्रिया ।

साधनक्रिया० ना० स्त्री० रूपवनानेका काम ।

साधना० स० क्रि० हिसाना, सिखलाना, सीखना, सुधारना, अभ्यास करना, साजना, निबाहना, ना० स्त्री० अभ्यास, निबाह, बनावट, उपाय, नित्यक्रिया, तदबीर ।

साधनिका० ना० स्त्री० साधना, उपाय, तदबीर ।

साधस० ना० पु० डर, भय, शंका ।

साधारण० गु० सामान्य, सीधा ।

साधी० गु० सीधीहुई, ठहराई गई ।

साधु० गु० जिसका व्यवहार उत्तम है, धन्य, सुन्दर ना० पु० संत, साहूकार ।

साधुता० ना० स्त्री० साधुका कर्म या चाल ।

साधुमत० ना० पु० शिष्टाचार, आदर, गु० धर्मसम्मत ।

साधुसाधु० गु० धन्य धन्य ।

साधू० ना० पु० साधु गु० उपकारी, निष्पाप, सज्जन ।

साध्य० गु० जानने जाने योग्य, साधना के योग्य, रोगी, जो औषध के योग्य है ।

साध्वी० ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री ।

सान० ना० स्त्री० शाण, धार ।

सालना० स० क्रि० मिलना, मिलाना, गूंथना।
सानन्द० गु० आनन्द सहित।
सानुभाना० स० क्रि० सैन से समझाना।
सानी० ना० स्त्री० भूसा खलीकी मिलौनी।
सानुकूल० गु० प्रसन्न, राजी, कृपालु।
सान्त्वन० ना० पु० मिलाप।
सान्निध्य० ना० पु० सामीप्य, समीपी।
सापन० ना० पु० रोगविशेष जिससे बालकम क्रम से गिरजाते हैं।
सापराध० गु० जो दण्ड के योग्य काम करे।
साबर० ना० पु० बारहसिंगा वा उसका चर्म, सिद्धमन्त्र, चोरोंका हथियार जिससे सेंध लगाते हैं, रितकुन मकान।
साबरमन्त्र० ना० पु० भाषा में मन्त्रविशेष।
साम० ना० पु० तीसरा वेद, जो मूसल वा लाठी वा बेत आदि के अन्त में पीतल आदि लगाते हैं।
सामग्री० ना० स्त्री० वस्तु, सामान।
सामञ्ज० ना० पु० समय, काल।
सामध० ना० पु० समधाना, समधियों का मिलना।
सामर० ना० पु० सरवविशेष।
सामर्थी० गु० बलवान्, शक्तिमान्।
सामर्थ्य० ना० स्त्री० सामर्थ, ताकत, शक्ति।
सामा० ना० स्त्री० नानाप्रकार का भाजन, सामग्री।
सामाजिक० ना० पु० सभाआदि के काम में जो चतुर व दिखवैया वा सहायक।
सामान्य० गु० साधारण, जातिवाचक।
सामान्यता० ना० स्त्री० सामान्यपन।
सामी० ना० पु० साम, सामने, सामनेही।
सामीप्य० ना० पु० पास के योग्य, मुक्तिविशेष जिसमें इष्टदेव के पास बसता है।
सामुद्रि० ना० पु० समुद्रनोन।
सामुद्रिक० ना० स्त्री० विद्याविशेष, अर्थात् विद्या जिसमें हस्तादि रेखा विचारते हैं।
सामुहें० अव्य० सामने, सम्मुहे।
साम्राट० ना० पु० सम्राट।
साम्हे० अव्य० सम्मुख, आगे।
साम्हना० अव्य० सामना।
सायक० ना० पु० बाण, तीर।
सायंकाल० ना० पु० सन्ध्यासमय।
सायुज्य० ना० पु० मुक्तिविशेष जिसमें ईश्वर लीन होना है।
सार० ना० पु० खाद, लोहा, गूदा, हीर, मोल, सर, वीर्य, धीरज, धर्म, वज्र, घर, अन, बाठका सार।
सारङ्क० ना० पु० मैंस, मैनापक्षी।
सारंग० ना० पु० रागविशेष, मयूर, मेघ, सर्प, मोर का शब्द, मृग, सूर्य, घोड़ा, चन्द्रमा, हाथी, आकाश, पर्वत, सिंह, कुम्भ, पपीहा, मेंढक, दीपक, ज्योति, कोयल, चामर, बाल, हंस, कुच, खञ्जन, कमल, कामदेव, धरती, तालाब, सुन्दर, पक्षी, पानी, विष्णु का धनुष, कपड़ा, रात्रि, स्त्री, भ्रमर, मधुमाखी, देशविशेष।
सारंगिया० ना० पु० सारंगी बजानेहारा।
सारंगी० ना० स्त्री० बाजाविशेष, किंगरी।
सारथी० ना० पु० रथवान्।
सारदा० ना० स्त्री० शारदा, सरस्वती, वाग्देवता।
सारना० स० क्रि० करना, निबाहना, बिगड़ना, सुधारना, पालना, पूराकरना।
सारस० ना० पु० पक्षीविशेष, कमल।
सारसजात० ना० पु० ब्रह्मा।
सारस्वत० ना० पु० देशविशेष, ब्राह्मण जाति विशेष।
साराo गु० सम्पूर्ण, समस्त, साला।
सारांश० ना० पु० संक्षेप।
सारासार० गु० सत्यासत्य, सारभूत।
सारिका० ना० स्त्री० मैनापक्षी।
सारी० ना० स्त्री० महारी, मैना, पक्षी, साड़ी,

जोरू की बहन।
सारू० ना० पु० पक्षीविशेष।
सारूप्य० ना० पु० इष्ट का रूप बनजाना, मुक्ति विशेष।
सार्थ० गु० जिसमें अर्थ पाया जावे, जो अर्थ समतद्दो।
सार्थक० गु० सफल, अर्थवाला।
सार्वभौम० ना० पु० सर्वपृथ्वी का राजा, कुबेर का हस्तीविशेष।
साल० ना० पु० वाक्षविशेष, कांटा, छद, शाला, सियार।
सालतीसुत० ना० पु० जायफल।
सालन० ना० पु० तरकारी, छदन।
सालनिर्यास० ना० पु० राल, गुग्गुल।
सालना० स० क्रि० छिदना, बेधना, अ० क्रि० दुःखना, पाड़ित होना।
सालसा० ना० पु० औषधविशेष।
साला० ना० पु० पत्नीका भाई, शाला, ना० स्त्री० पिप्पली।
सालिग्राम० ना० पु० विष्णुरूपी पाषाणविशेष।
साली० ना० स्त्री० बीबीकी बहन।
सालू० ना० पु० लालवर्ण वस्त्रविशेष।
सालूक० ना० पु० जायफल।
सालोक्य० ना० पु० मुक्तिविशेष, इष्टदेव के लोक में वास पाना।
सालोतरी० ना० पु० घोड़ों का वैद्य।
सावक० ना० पु० बालक, बच्चा।
सावकाश० } ना० पु० अवकाश, दुर्बल, धान, अन्तर, छुट्टी, फुरसत।
सावकास० }
सावज० गु० बनैला, जङ्गलीजीव, मृग, ना० पु० चहेर।
सावधान० गु० चौकस, सचेत, [illegible]।
सावधानी० ना० स्त्री० चौकसी, [illegible]।
सावन० ना० पु० श्रावण।
सावन्त० गु० शूर, योद्धा, वीर।
सावन्ती० ना० स्त्री० [illegible]
सावयव० गु० सांग, अवयव सहित।
सावर० ना० पु० साबर।
सावर्णि० ना० पु० दूसरामनुविशेष।
सावित्री० ना० स्त्री० माता, महतारी।
सास० ना० स्त्री० पत्नी वा पतिकी माता।
सासन० ना० पु० शासना।
सासना० स० क्रि० ताड़ना, डाटना।
सासु० ना० स्त्री० सास।
साहु० ना० पु० बनिया, महाजन, साधु।
साहचर्य० ना० पु० सङ्गति, साथ।
साहन० ना० स्त्री० साहकी स्त्री।
साहनी० ना० स्त्री० सेना, फौज।
साहस० ना० पु० बरबस, बलात्कार, बैरता, ढाढस, बिनाविचार।
साहसी० गु० बरबसिया, निडर, वीर।
साहाय्य० ना० पु० मित्रता, [illegible]।
साहित्य० ना० पु० सङ्गता, [illegible]।
साही० ना० पु० जन्तुविशेष [illegible] में कांटा होते हैं।
साहु० } ना० पु० [illegible]।
साहुकार० }
साहूकारी० [illegible], महाजनी।
साक्षात् [illegible], [illegible] में।
[illegible] ना० पु० [illegible]।
[illegible] ना० स्त्री० गवाही, [illegible], ना० पु० [illegible]।
सिन्दद० ना० पु० [illegible]।
सिंचितिका० ना० स्त्री० [illegible]।
सिकुया० ना० पु० [illegible]।
सिंह० ना० पु० [illegible], [illegible] का [illegible], [illegible], [illegible]।
सिंहल० ना० पु० [illegible], [illegible]।
सिंहद्वार० ना० पु० [illegible] के [illegible]

शब्द, सिंहका शब्द।

सिंहनी० ना० स्त्री० सिंहकी स्त्री।

सिंहपौर०
सिंहपौरि०
सिंहपौल० } ना० स्त्री० सिंहद्वार, ड्योढ़ी।

सिंहमुखी० ना० पु० घास।

सिंहल० ना० पु० सिंहलद्वीप।

सिंहलक० ना० पु० पीतल।

सिंहलद्वीप० ना० पु० भरतखण्ड के दक्षिण में उपद्वीपविशेष।

सिंहासन० ना० पु० देवतों और राजाओं का आसन, पाट, बैठका, तख्तशाही।

सिंहिका० ना० स्त्री० निशाचरीविशेष।

सिकटा० ना० पु० ठिकरा।

सिकता० ना० स्त्री० सिकता, बालू, रेत।

सिकरा०
सिकली० } ना० स्त्री० धुपड़नी, सरत।

सिख० ना० पु० शिष्य, नानकशाही, ना० स्त्री० सीख।

सिखनाबट० ना० स्त्री० शिक्षा, सिखावट।

सिखर० ना० पु० चोटी, शिखर।

सिखरन० ना० पु० दही और शक्करकी मिलौनी।

सिखलाना० स० क्रि० पढ़ाना, दिखलाना, डांटना, ताड़नकरना।

सिखा० ना० स्त्री० चोटी।

सिखाना०
सिखवना० } स० क्रि० सिखलाना।

सिखिकण्ठ० ना० पु० नीलथोथा।

सिगरो० गु० सब, सारा, सकल।

सिंगरौर० ना० पु० शृङ्गवेरपुर।

सिंगा० ना० पु० तुरही।

सिंगार० ना० पु० शोभा, सजावट, आभरण, शृंगार।

सिंगारना० स० क्रि० सजाना, शृंगार करना।

सिंगारिया गु० देवता का शृंगारकरनेहारा।

सिंगौटी० ना० स्त्री० सींगमें बनाहुआ पैंटना, बैलके सींगपर भूषणविशेष।

सिंघाड़ा० ना० पु० पौधा जो जल में होता है का उसीका फल, भूषणविशेष।

सिंघाण० ना० पु० नाकका मैल।

सिंघी० ना० स्त्री० नदी का र्द।

सिझाना० स० क्रि० पकाना।

सिड़० ना० स्त्री० बौराहट, बौड़ापन।

सिड़न० ना० स्त्री० बावली, बौरही।

सिड़पन० ना० पु० बौड़हापन।

सिड़ा०
सिड़ी० } गु० बावला, बौरहा।

सित० गु० श्वेत, सफ़ेद, उजला।

सितकण्ठ० ना० पु० महादेवजी।

सितपी० ना० स्त्री० गेंद, पसीना।

सिताम्भोज० ना० पु० सफ़ेदकमल, श्वेत-कमल।

सिद्ध० ना० पु० देवतानविशेष जो कुछ लोक में रहते हैं, साधु अर्थात् जो अष्टसिद्धि के वशी हैं गु० महात्मा, योगमत, कृतार्थ, पक्, बना, लब्ध, पूर्ण, शामिल, वारीं।

सिद्धरूप० ना० पु० प्रथमही से जिसका रूप बना है, जो दूसरे से नहीं बना।

सिद्धान्त० ना० पु० वादी प्रतिवादी से निर्णीत जो अर्थ, कोइग्रंथविशेष।

सिद्धान्तशिरोमणि० ना० स्त्री० ज्योतिष का ग्रंथ विशेष।

सिद्धान्ती० ना० पु० मीमांसक, मतावलम्बी।

सिद्धि० ना० स्त्री० वाञ्छितार्थ की प्राप्ति, देवतों की पूजा वा तपस्या का फल, मन्त्रादि जपने से जो पराक्रम, दक्षता, शुद्धता, अणिमादिक अष्ट, फल, कीर्ति, कराम त।

सिद्धिदा० ना० स्त्री० भगवती, गु० सिद्धि-दाता।

सिद्धिदाता० ना० पु० श्रीगणेशजी, गु० सिद्धि देनेहारा।

सिद्धिरूपी० गु० जो आपही सिद्धि होवे।

सिधाना० अ० क्रि० दौड़ना, जाना, चला जाना।

सिधारना० } अ० क्रि० चलाजाना, उठजाना,
सिधार्नो० } स० क्रि० सुधारना, ठीक करना।

सिनक० ना० पु० रेंट, पोंग, नेग।

सिनकना० स० क्रि० नाक झाड़ना।

सिन्दुरू० ना० पु० सभालू पौधा।

सिन्दुवारक० ना० पु० सभालूपौधा।

सिन्दूरक० ना० पु० वृक्ष विशेष।

सिन्दूर० ना० पु० लालवर्ण चूर्णविशेष जो स्त्रियां मांगमें लगाती हैं।

सिन्धु० ना० पु० समुद्र देश विशेष, नदी विशेष।

सिन्धुज० ना० पु० सेंधनलोन, १४ रत्न।

सिन्धुर० ना० पु० हाथी।

सिन्धुरगामी० गु० गजगामी।

सिपाह० ना० स्त्री० सेना, यह शब्द फ़ारसी का है।

सिपाहसालार० ना० पु० सेनापति, फ़ारसी शब्द।

सिपाही० ना० पु० पैदल, चपरासी, यह भी शब्द फ़ारसी का है।

सिम० ना० पु० मछली।

सिमट० ना० स्त्री० सकोच, सिकोर।

सिमटजाना० } अ० क्रि० सिकुरना, बटुरना।
सिमटना० }

सिमाना० ना० पु० सिवाना, धुरा।

सिम्हल० ना० पु० समनदुत।

सिय० ना० स्री० श्रीसीताजी।

सियनि० ना० स्री० सीवनी।

सियनिन्दक० ना० पु० रजक विशेष जो अयोध्यापुरी में बसता था और श्रीसीताजी को लाञ्छन लगाया था।

सियरा० गु० ठंढा, कच्चा।

सियरी० ना० स्त्री० ठंढी, वर्षा।

सिया० ना० स्री० श्रीसीताजी।

सियार० } ना० पु० शृगाल, गीदड़।
सियाल० }

सिर० ना० पु० शिर मस्तक।

सिरकी० ना० पु० सर्टावस्तु विशेष जो सींकें से बनी है।

सिरकी० ना० स्री० सरपतविशेष, सेंठाका ऊपरी भाग या उसीकी बनीवस्तु जो पानी रोकने के लिये होती है।

सिरखप० गु० मनचला।

सिरखपी० ना० स्री० जोखिम, दादरा।

सिरजन० ना० पु० रचाव, उपति, बनाव।

सिरजनहार० ना० पु० ईश्वर, रचनेहारा, उपजानेहारा।

सिरजना० स० क्रि० रचना, उपन्न करना, बनाना।

सिरजा० गु० बनाया हुआ, उपजाया गया।

सिरताज० गु० मुख्यरहनेहारा, दमैत।

सिरहाना० ना० पु० तकिया, खाटका शिर सिरारो।

सिरात० गु० ठंढा, सीरा।

सिराना० स० क्रि० ठगना, बहाना, पठाना, व्यतीत करना।

सिरानी० गु० स्त्री० सीतगई, हारी भई।

सिरिस० ना० पु० वृक्षविशेष, सिरीस।

सिरोधी० ना० पु० कंठ, गला, गर्दन।

सिल० ना० पु० शिला।

सिलपट० गु० चौपट।

सिलवट्टा० ना० पु० सिलका बट्टा।

सिलवाना० स० क्रि० सिलाना।

सिला० ना० स्त्री० शिला, पाषाण विशेष जिस पर मसाला पीसते हैं।

सिलाई० ना० स्त्री० सिलाने का काम या पसा।

सिलाजीत० ना० पु० अश्मज, औषध विशेष।

शब्द, सिंहका शब्द।
सिंहनी० ना० स्त्री० सिंहकी स्त्री।
सिंहपौर०
सिंहपौरि०
सिंहपौल० } ना० स्त्री० सिंहद्वार, ड्योढ़ा।
सिंहमुखी० ना० पु० वास।
सिंहल० ना० पु० सिंहलद्वीप।
सिंहलक० ना० पु० पीतल।
सिंहलद्वीप० ना० पु० भरतखण्ड के दक्षिण मे उपद्वीपविशेष।
सिंहासन० ना० पु० देवतों और राजाओं का आसन, पाट, अष्टासन, तख्तताऊस।
सिंहिका० ना० स्त्री० निशाचरीविशेष।
सिकटा० ना० पु० ठिकरा।
सिकता० ना० स्त्री० सिकता, बालू, रेत।
सिकया०
सिकली० } ना० स्त्री० सुरवना, सकल।
सिख० ना० पु० शिष्य, नानकशाही ना० स्त्री० शीख।
सिखनावट० ना० स्त्री० शिक्षा, सिखावट।
सिखर० ना० पु० चोटी, शिखर।
सिखरन० ना० पु० दही और गुड़का मिलौना।
सिखलाना० स० क्रि० पढ़ाना, सिखलाना, बताना, ताड़नकरना।
सिखा० ना० स्त्री० चोटी।
सिखाना०
सिखवना० } स० क्रि० सिखलाना।
सिखिकण्ठ० ना० पु० नीलथोथा।
सिगरो० गु० सब, सारा, समस्त।
सिगरौर० ना० पु० शृङ्गवेरपुर।
सिगा० ना० पु० तुरही।
सिगार० ना० पु० शोभा, सजावट, आभरण, शृंगार।
सिगारना० स० क्रि० सजाना, शृंगार कराना।
सिगारिया गु० देवता का शृङ्गारकरनेहरा।
सिगौटी० ना० स्त्री० सींगका बना या पेंटा, बैलके सींगपर शृङ्गारविशेष।
सिंघाड़ा० ना० पु० पौधा जो जल में होताहै या उसीका फल, शृङ्गाटक।
सिंघाण० ना० पु० नाकका मैल।
सिंघी० ना० स्त्री० नकी कर्म।
सिझाना० स० क्रि० पकाना।
सिट० ना० स्त्री० सीटी, सीत्कार।
सिठनी० ना० स्त्री० गारनी, सीठनी।
सिड़पन० ना० पु० बौरहापन।
सिड़ा०
सिड़ी० } गु० बावला बौरहा।
सित० गु० श्वेत, सफेद, उजला।
सितकण्ठ० ना० पु० मदहाथी।
सितरौ० ना० स्त्री० स्वेद, पसीना।
सिताम्भोज० ना० पु० शुक्लकमल, श्वेत कमल।
सिद्ध० ना० पु० देवतानविशेष जो अन्तरिक्ष में रहते हैं, साधु अर्थात् जो अष्टसिद्धि के वशी हैं गु० महात्मा, अजर, कृतार्थ, पक्व, बना, दक्ष, पूर्ण, कामिल, वर्ती।
सिद्धरूप० ना० पु० प्रथमही से जिसका रूप बनाहै, जो दूसरे से नहीं बना।
सिद्धान्त० ना० पु० बादी प्रतिवादी से निर्णीत जो अर्थ, कोई विशेष।
सिद्धान्तशिरोमणि० ना० स्त्री० ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।
सिद्धान्ती० ना० पु० मीमांसक, मुसाफिरखानी।
सिद्धि० ना० स्त्री० वाञ्छितार्थ की प्राप्ति, देवतों की पूजा वा तपस्या का फल, मृगनादि जपन सो जो पराक्रम, सत्य, शुद्धता, अणिमादिक आठ, फल व्यतीत, कामना।
सिद्धिदा० ना० स्त्री० भगवती, गु० सिद्धि दाता।
सिद्धिदाता० ना० पु० श्रीगणेशजी, गु० सिद्धि देनेहारा।
सिद्धिरूपी० गु० जो आपही सिद्धि होवे।

सिधाना० अ० क्रि० दोड़ना, जाना, चला जाना।

सिधारना० } अ० क्रि० चलाजाना, उठजाना,
सिधार्नो० } स० क्रि० सुधारना, ठीक करना।

सिनक० ना० पु० रेंट, पोंग, नेग।

सिनकना० स० क्रि० नाक भाड़ना।

सिन्दुक० ना० पु० सगालू पौधा।

सिन्दुवारक० ना० पु० सगालूपौधा।

सिन्दूरक० ना० पु० वृक्ष विशेष।

सिन्दूर० ना० पु० लालवर्ण चूर्णविशेष जो स्त्रिया मागमें लगाती है।

सिन्धु० ना० पु० समुद्र देश विशेष, नदी विशेष।

सिन्धुज० ना० पु० सेंधनलोन, १४ रत्न।

सिन्धुर० ना० पु० हाथी।

सिन्धुरगामी० गु० गजगामी।

सिपाह० ना० स्त्री० सेना, यह शब्द फारसी का है।

सिपाहसालार० ना० पु० सेनापति, फारसी शब्द।

सिपाही० ना० पु० पदक, चपरासी, यह भी शब्द फ़ारसी का है।

सिम० ना० पु० मछली।

सिमट० ना० स्त्री० सकोच, सिकोर।

सिमटजाना० } अ० क्रि० सिकुरना, बटरना।
सिमटना० }

सिमाना० ना० पु० सिवाना, धुरा।

सिम्यत० ना० पु० समावृत्त।

सिय० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।

सियनि० ना० स्त्री० सीवनि।

सियनिन्दक० ना० पु० रजक विशेष जो अयोध्यापुरी में बसता था और श्रीसीताजी को लाञ्छन लगाया था।

सियरा० गु० ठढा, कच्चा।

सियरी० ना० स्त्री० ठढी, कच्ची।

सिया० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।

सियार० } ना० पु० शृगाल, गीदड़।
सियाल० }

सिर० ना० पु० शिर मस्तक।

सिरका० ना० पु० खट्टीवस्तु विशेष जो माड़े से बनती है।

सिरकी० ना० स्त्री० सरकण्डाविशेष, सेंठाका ऊपरी भाग वा उसकी बनीवस्तु जो पानी रोकने के लिये होती है।

सिरखप० गु० मनचला।

सिरखपी० ना० स्त्री० जालिम, दावरा।

सिरजन० ना० पु० रचाव, उपजी, बनाव।

सिरजनहार० ना० पु० ईश्वर, रचनेहारा, उपजानेहारा।

सिरजना० स० क्रि० रचना, उपजन करना, बनाना।

सिरजा० गु० बनाया हुआ, उपजाया गया।

सिरसींग० गु० गुप्तकरनेहारा, दगैल।

सिरहाना० ना० पु० तकिया, खाटका शिरधर सिराही।

सिरात० गु० ठढा, बीता।

सिराना० स० क्रि० ठगाना, बहाना पठाना, व्यतीत करना।

सिरानी० गु० स्त्री० बीतगई, राती भई।

सिरिस० ना० पु० वृक्षविशेष, शिरीष।

सिरोधी० ना० पु० कठ, गला, गर्दन।

सिल० ना० पु० शिला।

सिलपट० गु० चौपट।

सिलबट्टा० ना० पु० सिलवा बट्टा।

सिलवाना० स० क्रि० सिलाना।

सिला० ना० स्त्री० शिला, पाषाण विशेष जिस पर मसाला पीसते हैं।

सिलाई० ना० स्त्री० सिलाने का काम वा पैसा।

सिलाजीत० ना० पु० अश्मज, धौत, शिला।

सीपी के समान होती है, सीपी।
सीपसुत॰ ना॰ पु॰ मोती।
सीपी॰ ना॰ स्त्री॰ जलजन्तुविशेष।
सीमंत॰ / सीमन्ती॰ } ना॰ स्त्री॰ स्त्री, बाला।
सीमा॰ ना॰ स्त्री॰ हद, डाड़ा, धूरा, मर्य्याद, सिवाना, अवधि।
सिय॰ / सिया॰ } ना॰ स्त्री॰ श्रीजानकी जी।
सीर॰ ना॰ पु॰ हल, खेती निजकी।
सीरपाणि॰ ना॰ पु॰ श्रीबलदेवजी।
सीरा॰ गु॰ शीतल, ना॰ पु॰ मोहनभोग, शीरा।
सील॰ ना॰ पु॰ शील।
सीला॰ गु॰ गीला, शीतल, ना॰ पु॰ अन्न का बीनना।
सीव॰ ना॰ पु॰ सींव, मर्य्याद, सीम।
सीवती॰ ना॰ पु॰ जातिविशेष।
सीस॰ ना॰ पु॰ शीर्ष, शिर, शिखा।
सीसक॰ / सीसा॰ } ना॰ पु॰ धातुविशेष।
सीसों॰ ना॰ पु॰ शीशम वृक्षविशेष।
सु॰ अव्य॰ इसका प्रयोग जिस शब्द के प्रथम में हो उसके अर्थ में अधिकाई वा भलाई वा उत्तमता समझी जाती है यथा सुबुद्धि सुकर्म आदि, और से यथा जासु अर्थात् जिस से, सो।
सुंघाना॰ स॰ क्रि॰ महकाना।
सुंघायट॰ ना॰ पु॰ महक, गंधि, बास।
सुअञ्जन॰ ना॰ पु॰ अच्छा अञ्जन, सिद्धाञ्जन।
सुअर॰ ना॰ पु॰ शूकर।
सुआर॰ ना॰ पु॰ रसोइया, बावर्ची, रसोई करनेहारा।
सुआसिन॰ ना॰ स्त्री॰ माय, नानदारकी स्त्री।
सुकचाना॰ अ॰ क्रि॰ डरना, सकोचितहोना।
सुकड़ा॰ गु॰ सूखा, दुबला।
सुकड़ी॰ गु॰ स्त्री॰ दुर्बल, दुबली, सूखी।
सुकड़ना॰ अ॰ क्रि॰ सिकुड़ना, बटरना, समिटना।
सुकण्टक॰ ना॰ पु॰ पिण्डखजूर।
सुकंठ॰ ना॰ पु॰ सुग्रीव, गु॰ अच्छागला।
सुकनास॰ ना॰ पु॰ स्योनावृक्ष।
सुकर॰ गु॰ सहज, करने के योग्य।
सुकवार॰ गु॰ कोमल, निर्मल।
सुकसारण॰ ना॰ पु॰ रावण के दूत।
सुकाल॰ ना॰ पु॰ अच्छीऋतु, बहुतात, अच्छा समय इत्यादि।
सुकांटक॰ ना॰ पु॰ करेला तरकारी।
सुकुचना॰ अ॰ क्रि सकुचाना।
सुकुमार॰ गु॰ सुकवार, नर्म्म, कमसिङ्गत, ना॰ पु॰ चम्पा, केला, गन्ना, बालक।
सुकृत॰ ना॰ पु॰ भलाई, पुण्य, कीर्ति, दान, गु॰ अच्छी रीति से किया गया, अच्छा कर्म।
सुकृती॰ गु॰ पुण्यवान्, भाग्यवान्, धर्मात्मा, दाता।
सुकेत॰ ना॰ पु॰ दक्षजातिका देवताविशेष।
सुकेतसुता॰ ना॰ स्त्री॰ ताड़का निशाचरी।
सुकेशी॰ ना॰ स्त्री॰ अप्सराविशेष।
सुख॰ ना॰ पु॰ चैन, कल, सन्तोष, आनन्द।
सुखचैन॰ ना॰ पु॰ विश्राम, सावकाश।
सुखतला॰ ना॰ पु॰ जूते में दूसरातला।
सुखद॰ गु॰ सुखदायक, अच्छा।
सुखदर्शन॰ ना॰ पु॰ पाषाणविशेष जिसको रसायन में पीसा के सेवन डालते हैं।
सुखदाता॰ गु॰ सुख दनहारा।
सुखदान॰ ना॰ पु॰ सुखका दान।
सुखदानी॰ / सुखदायक॰ } गु॰ सुखका दनहारा।
सुखदास॰ ना॰ पु॰ धानकी एक जाति।
सुखदेव॰ ना॰ पु॰ देवताका सुख।
सुखपाल॰ ना॰ पु॰ पालकी विशेष।
सुखपूर्वक॰ अव्य॰ सुख से।
सुखमा॰ ना॰ स्त्री॰ शोभा, कान्ति, चमक।

सिलाना० स० क्रि० सिलवाना, लगाना।
सिलारस० ना० पु० शिलाजीत।
सिली० ना० स्त्री० पथरी, शाण।
सिलीमुख० ना० पु० बाण, भ्रमर।
सिवाना० ना० पु० सीमा, डाड़ा, धूरा, हद।
सिविका० ना० स्त्री० पालकी विशेष।
सिष्ट० गु० बुद्धिमान्, अच्छा।
सिसकना० अ० क्रि० सिसुकना।
सिसकी० ना० स्त्री० दुःख।
सिस्न० ना० पु० लिंग, मदनांकुश।
सिहरा० ना० पु० मौर।
सिहराऊ० गु० थराऊ, उचाट।
सिहराना० स० क्रि० थकेना, उचाट करना, सहलाना।
सिहर्नो० अ० क्रि० कांपना।
सिहाना० अ० क्रि० प्रसन्नहोना, ललचाना।
सींक० ना० स्त्री० तृणविशेष जिसका झाड़ू बनती है।
सींकर० ना० पु० सींकका फूल।
सींका० ना० पु० पर, छींका।
सींकिया० गु० डण्डीदार, धारीदार, लहरिया, डोरिया।
सींग० ना० पु० शृङ्ग।
सींगड़ा० ना० पु० बारूद रखने का सींग।
सींगा० ना० पु० नरसिंगा।
सींगिया० ना० पु० विष विशेष।
सींगी० ना० स्त्री० छोटानरसिंगा, मछली विशेष, तोमड़ी।
सींच० ना० स्त्री० पानी की बाढ़।
सींचना० स० क्रि० सींचना, पाटना, पानीदेना।
सींचाई० ना० स्त्री० सींचन का पैसा वा काम।
सींची० ना० स्त्री० सींचने का समय।
सींव० ना० पु० सीमा, मर्य्यादा।
सीकर० ना० पु० कदिविशाय।
सीख० ना० स्त्री० शिक्षा, पाठ, विद्या, आज्ञा, सिखाना।

सीखना० स० क्रि० विद्या उपार्जन करना, पाना।
सींचना० स० क्रि० सींचना, पानीदेना।
सीझ० ना० पु० पौधाविशेष।
सीजना० अ० क्रि० रिसना, निकलना, उबलना, उबलना।
सीटी० ना० स्त्री० मुख से बजावट।
सीठ० ना० स्त्री० फोग, मूल, छानन।
सीठना० ना० पु० } विवाह में गाली समेत गीत
सीठनी० ना० स्त्री० } स्त्रियां गाती हैं।
सीठा० गु० नीरस, रसहीन, फीका, असार, रोगहा।
सीठी० ना० स्त्री० सीठ, सीगी।
सीढ़ी० ना० स्त्री० नसेनी, सोपान, आरोहण, जीना।
सीत० ना० पु० शीत, ओस।
सीतरस० ना० पु० मुहपटका रोग।
सीतलचीनी० ना० स्त्री० ओषधविशेष।
सीतलपाटी० ना० स्त्री० चटाईविशेष।
सीतला० ना० स्त्री० माता, गोटी, चेचक।
सीता० ना० स्त्री० तिथि, उमा, गंगा, श्रीजानकी जी।
सीताकुण्ड० ना० पु० मुंगेर के पास तीर्थ विशेष।
सीतांग० ना० पु० सीताग, सहुना।
सीताफल० ना० पु० आता, लौका, कद्दू।
सीताश्रम० ना० पु० सीताका आश्रय।
सीदना० अ० क्रि० दुःखी होना, दुःखपाना।
सीधा० गु० सोझा, निश्चल, भोला, खरा, सूधा, ना० पु० भोजन की सामग्री।
सीधाई० ना० स्त्री० सोझ, भोलापन, खराई, सुधाई।
सीना० स० क्रि० तगना, तागना, टांकना, तुरपना।
सीप० ना० स्त्री० आव विशेष जिसकी मुक्ती-

सीपी के समान होती है, सीपी।
सीपसुत० ना० पु० मोती।
सीपी० ना० स्त्री० जलजन्तुविशेष।
सीमती० } ना० स्त्री० स्त्री, बाला।
सीमन्ती० }
सीमा० ना० स्त्री० हद, डांडा, पूरा, मर्य्याद, सिवाना, अवधि।
सिय० } ना० स्त्री० श्रीजानकी जी।
सिया० }
सीर० ना० पु० हल, खेती निजकी।
सीरपाणि० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
सीरा० गु० शीतल, ना० पु० मोहनभोग, सीरा।
सील० ना० पु० शील।
सीला० गु० गीला, शीतल, ना० पु० अन्न का बीनना।
सीव० ना० पु० सींव, मर्य्याद, सीम।
सीवली० ना० पु० जातिविशेष।
सीस० ना० पु० शीर्ष, शिर, शिला।
सीसक० } ना० पु० धातुविशेष।
सीसा० }
सीसों० ना० पु० शीशम वृक्षविशेष।
सु० अव्य० इसका प्रयोग जिस शब्द के प्रथम में हो उसके अर्थ में अधिकाई या भलाई वा उत्तमता समझी जाती है यथा सुबुद्धि सुकर्म आदि, और से यथा जासु अर्थात् जिस से, सो।
सुंधाना० स० क्रि० महकाना।
सुंधावट० ना० पु० महक, गन्धि, वास।
सुअञ्जन० ना० पु० अच्छा अंजन, सिद्धान्त।
सुअर० ना० पु० शूकर।
सुआर० ना० पु० रसोइयां, बावर्ची, रोटी करनेहारा।
सुआसिन० ना० स्त्री० मान्य, नातेदारकी स्त्री।
सुकचाना० अ० क्रि० डरना, संकोचितहोना।
सुकटा० गु० सूखा, दुबला।
सुकटी० गु० स्त्री० दुर्बल, दुबली, सूखी।
सुकड़ना० अ० क्रि० सिकुड़ना, बटुरना, समिटना।
सुकण्टक० ना० पु० पिण्डखजूर।
सुकंठ० ना० पु० सुग्रीव, गु० अच्छागला।
सुकनाशा० ना० पु० सोनावृक्ष।
सुकर० गु० सहज, करने के योग्य।
सुकुवार० गु० कोमल, निर्मल।
सुकसारण० ना० पु० रावण के दूत।
सुकाल० ना० पु० अच्छीऋतु, बहुतात, अच्छा समय हेर।
सुकांटक० ना० पु० करेला तरकारी।
सुकुचना० अ० क्रि सकुचाना।
सुकुमार० गु० सुकवार, नर्म्म, कमसिहनत, ना० पु० चम्पा, केला, गन्ना, बालक।
सुकृत० ना० पु० भलाई, पुण्य, कीर्ति, स्वभाव, गु० अच्छी रीति से किया गया, अच्छा काम।
सुकृती० गु० पुण्यवान्, भाग्यवान्, धर्मात्मा, दाता।
सुकेत० ना० पु० दसजातिका देवताविशेष।
सुकेतसुता० ना० स्त्री० ताड़का निशाचरी।
सुकेशी० ना० स्त्री० अप्सराविशेष।
सुख० ना० पु० चैन, कल, सन्तोष, आनन्द।
सुखचैन० ना० पु० विश्राम, सावकाश।
सुखतला० ना० पु० जूते में दूसरातला।
सुखद० गु० सुखदायक, अच्छा।
सुखदर्शन० ना० पु० पौधाविशेष जिसका कान में पीड़ा के समय डालते हैं।
सुखदाता० गु० सुख देनेहारा।
सुखदान० ना० पु० सुखका दान।
सुखदानी० } गु० सुखका देनेहारा।
सुखदायक० }
सुखदास० ना० पु० धानकी एक जाति।
सुखदेव० ना० पु० देवताका सुख।
सुखपाल० ना० पु० पालकी विशेष।
सुखपूर्वक० अव्य० सुख से।
सुखमा० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, चमक।

सुखलाना० स० क्रि० सुलाना, जलाना
सुखवक्ता० गु० मुखदेखी कहनेहारा।
सुखाना० स० क्रि० सुखलाना।
सुखारि० गु० आनन्द, सुख, आनन्दित।
सुखाला० गु० सहज।
सुखासन० ना० पु० सुखपाल।
सुखित० गु० आनन्दित, चैन से युक्त।
सुखिया० } गु० आनन्दित, चैनी, सुखी,
सुखी० } सतोषी।
सुखेन० ना० पु० सुख से, वैद्यविशेष जो सुश्रुत में धन्वन्तरिका पुत्र था।
सुखेनी० ना० स्त्री० काला निसोत और बड़ा करौंदा।
सुगज० ना० पु० वानर विशेष जो रामदल में था, गु० अच्छाहाथी।
सुगन्धक० ना० पु० पुष्करमूल।
सुगन्धबन्धु० ना० पु० हीम, यश।
सुगन्धि० ना० स्त्री० भली बास महक, गु० महकीला।
सुगन्धिक० ना० पु० कालाजीरा।
सुगम० गु० जाने के योग्य, चढ़न के योग्य, सहल, सहज, करने के योग्य, भला।
सुगरई० ना० स्त्री० रागिनीविशेष।
सुगाना० अ० क्रि० सन्देह करना, चित्तदाकरना, स० क्रि० लगाना।
सुग्रीव० ना० पु० वानरों का राजाविशेष, श्रीकृष्ण के रथका एकघोड़ा विशेष, गु० अच्छा कण्ठ।
सुघटित० गु० अच्छा बनायागया, पूराभया।
सुघड़० गु० सुडौल, सुचाल, सुन्दर।
सुघड़ई० ना० स्त्री० सुशीलता, सुन्दरता।
सुघाट० ना० पु० भलाघाट, अच्छाडौल, मरूर।
सुच० गु० शुच, पवित्र, निर्मल।
सुचक्क० गु० सच्ची, सुचता, चौकस।
सुचरित्रा० ना० स्त्री० पतिव्रता।
सुचिन्त० } गु० चौकस, चिन्तारहित, अधे [illegible]
सुचित्त० } सहज, थिर, निश्चिन्त।
सुचिन्तित० गु० अति विचार, अच्छा समझा।
सुचेत० गु० सुर्त्ती, चौकस, होशियार।
सुजन० गु० सज्जन, भला, आदरी, साधु।
सुजसी० गु० प्रतिष्ठित, कीर्त्तिमन्त।
सुजान० गु० प्रवीण, ज्ञानी, चतुर, बुद्धिमान्।
सुजाना० स० क्रि० फुलाना।
सुझाना० स० क्रि० दिखलाना, समझाना।
सुटकुन० ना० स्त्री० छड़, छड़ी।
सुडाम० गु० अच्छादामवाला।
सुठि० ना० स्त्री० सोंठि, अव्य० अति, निहायत, बहुत, अधिक।
सुड़की० ना० स्त्री० सुड़की की डोरी, अचानक से डीलना।
सुड़प० ना० स्त्री० उसकी, घोंट।
सुड़पना० अ० क्रि० सुसकना, चाटना, सूसना।
सुड़ुकना० स० क्रि० सुड़कना, सीटना।
सुडौल० }
सुढर० } गु० सुन्दर, सुघरा।
सुढार० }
सुण्डि० ना० स्त्री० हाथी की सूंड़, सूंड़।
सुण्डी० ना० स्त्री० पिप्पली, पिपरी।
सुत० ना० पु० लड़का, बेटा।
सुतरा० ना० पु० कड़ा जो हाथ में पहनते हैं।
सुता० ना० स्त्री० बेटी, पुत्री।
सुतान० ना० पु० सुन्दर बहुवचन।
सुतार० ना० पु० बढ़ई, समय, घात, दाव।
सुतारी० ना० स्त्री० सूआ, सूआ।
सुतीक्ष्ण० ना० पु० मुनिविशेष।
सुतुष्टि० ना० स्त्री० कला चन्द्रमाकी विशेष।
सुत्राम० ना० पु० इन्द्र।
सुथन० ना० पु० तम्बान, पायजामा।
सुथनी० ना० स्त्री० कन्दविशेष।
सुथरा० गु० अच्छा, सुन्दर, अनूप, ना० पु० नानकजी का एक शिष्य।
सुथराई० ना० स्त्री० सुन्दरता, भलाई।
सुथराशाही० ना० पु० भिक्षुकविशेष।

सुथल० } नाॱ पुॱ अच्छा स्थान, सुखमकान।
सुथान० }

सुदती० } नाॱ स्त्रीॱ वह स्त्री जिस के दांत
सुदन्ती० } अच्छे होवें, अच्छा हाथी।

सुदर्शन० नाॱ पुॱ श्री विष्णु के चक्र का नाम, वृक्षविशेष जिसको गुलाबजामुन कहते हैं, नाम एक चूर्ण का है, गुॱ दिखनौट।

सुदक्षिणा० नाॱ स्त्रीॱ राजादिलीपकी स्त्री का नाम, अच्छी अपूर्वदक्षिणा या दान।

सुदामा० नाॱ पुॱ श्रीकृष्णचन्द्र का गुरुबन्धु।

सुदी० नाॱ स्त्रीॱ उजियाला पाख।

सुदुर्लभ० गुॱ अत्यन्त दुर्लभ।

सुदृश्य० गुॱ सुन्दर, दिखनौट।

सुदृष्टि० नाॱ स्त्रीॱ अच्छीदृष्टि नाॱ पुॱ गिद्ध पक्षी, गुॱ निशानी।

सुदेश० नाॱ पुॱ अच्छादेश, गुॱ अग, सुन्दर, नेक।

सुध० नाॱ स्त्रीॱ स्मरण, चेत, सुधि, गुॱ शुद्ध।

सुधबुध० नाॱ स्त्रीॱ चेत, पहिचान, बूझ।

सुधरना० अॱ क्रिॱ बनना, सम्भलना, सजना।

सुधर्म० नाॱ पुॱ सत्यधर्म, अच्छाधर्म।

सुधर्मा० नाॱ स्त्रीॱ देवसभा, सुरसमाज।

सुधा० नाॱ स्त्रीॱ अमृत, जल।

सुधा० अव्यॱ समेत, सहित।

सुधांशु० }
सुधाकर० } नाॱ पुॱ चन्द्रमा।
सुधाधर० }

सुधाना० सॱ क्रिॱ चिताना, स्मरण देना।

सुधारना० सॱ क्रिॱ सवारना, बनाना, सजना।

सुधावास० नाॱ पुॱ चन्द्रमा, खीरफल।

सुधि० नाॱ स्त्रीॱ स्मरण, चेत, याद, खबर।

सुधी० गुॱ सुबुद्धि, पण्डित।

सुन० गुॱ शून्य।

सुनकातर० नाॱ पुॱ सर्पविशेष।

सुनबहरी० नाॱ स्त्रीॱ रोगविशेष।

सुनयना० गुॱ अच्छी आखोंवाली नाॱ स्त्रीॱ श्रीजानकीजी की माता।

सुनसर० नाॱ पुॱ भूषणविशेष।

सुनसान० गुॱ चुपचाप, उजाड़।

सुनहरा० गुॱ सुनहला, सोनैरा।

सुनाना० सॱ क्रिॱ जताना, बतलाना, कहना, समझाना।

सुनाहट० नाॱ स्त्रीॱ सुनाहट, मौन।

सुनार० नाॱ पुॱ स्वर्णकार, सोनार।

सुनारिन्० नाॱ स्त्रीॱ सुनार की स्त्री।

सुनारी० नाॱ स्त्रीॱ सोनार का काम, रूपवती, गुॱ प्रवीण, चतुर।

सुनावनि० } नाॱ स्त्रीॱ विदेश में मरे का
सुनावनी० } समाचार।

सुनिर्यास० नाॱ पुॱ जिगनावृक्ष।

सुनीति० नाॱ स्त्रीॱ भली रीति, शिष्टाचार।

सुन्दर० गुॱ सुरूप, सुडौल, अच्छा, भला।

सुन्दरता० नाॱ स्त्रीॱ सुघराई, भलाई।

सुन्दरी० नाॱ स्त्रीॱ स्त्री, सुन्दर स्त्री, अच्छी।

सुन्ना० सॱ क्रिॱ कान धरना, श्रवण करना।

सुपच० गुॱ जो अच्छी विधि से पचजावे।

सुपट० नाॱ पुॱ अच्छा वस्त्र।

सुपंथ० नाॱ पुॱ अच्छामार्ग।

सुपर्व० नाॱ पुॱ गंगादि का नहान।

सुपक्ष० नाॱ पुॱ सत्यपक्ष, शुक्लपक्ष।

सुपक्षी० गुॱ अच्छा पक्ष करनेहारा, सत्सहायक।

सुपात्र० गुॱ योग्य, भलामानस।

सुपारी० नाॱ स्त्रीॱ पूगीफल, डली।

सुपास० नाॱ पुॱ आराम, सुबीता, सुख।

सुपुत्र० } गुॱ योग्य पुत्र, भला पुत्र, पुत्र,
सुपूत० } आज्ञाकारी पुत्र।

सुप्त० नाॱ पुॱ निद्रा, गुॱ सूता, निद्रित।

सुप्तोत्थित० गुॱ नींद से भड़भड़ायकर उठा।

सुप्रभा० नाॱ स्त्रीॱ पद्माक।

सुप्रलाप० नाॱ पुॱ सुवचन, अच्छीबातचीत।

सुफल० गु० जो अच्छाफल देता है, कामका उपार्जनी, पूरा, ना० पु० अच्छाफल, सिद्धि।
सुफला० ना० स्त्री० पिण्डखजूर।
सुबट० ना० पु० सड़क, अच्छा मार्ग।
सुभग० गु० सुन्दर, अच्छा भाग्य।
सुभगा० ना० स्त्री० जिस स्त्री का पति बहुत प्रेमकरे, जो स्त्री बहुत पुत्र ज मारे, सुहागिन।
सुभट० } सुभट्ट० } ना० पु० योधा, वीर, बहादुर, बलवान्, शूर।
सुभागी० गु० भाग्यवान्, नेकनसीब।
सुभाग्य० ना० पु० अच्छाभाग, नेकबख्ती।
सुभीता० ना० पु० सुवीता, सारकारा।
सुभुज० ना० पु० सुवाहु, दैत्यविशेष।
सुमति० ना० स्त्री० भलमनसी, सत्त्वगुण, सुन्दर बुद्धि, ना० पु० बन्दीविशेष, राजा जनकका दिसौंधी।
सुमन० ना० पु० गेहूंअन, धतूरा, पुष्पविशेष गु० जिसका मन शुद्धहो, शीलवान्।
सुमनस० ना० पु० देवता, फूल, वसन्त।
सुमना० ना० स्त्री० मालती, मुदिता, स्त्री, रति, अनेकार्थ यथा (सुमना कहिये मालती सुमना मुदिता तीय)
सुमनासुत० ना० पु० फुलेल आदि उबटन।
सुमन्त० ना० पु० राजादशरथका मन्त्रीविशेष।
सुमन्त्र० ना० पु० अच्छामन्त्र, नेकसलाह, अच्छा मता।
सुमरना० स० क्रि० स्मरण करना, नामलेना।
सुमरन० ना० पु० स्मरण, चेत, सुधि, समझौनी, सुमरनी।
सुमित्र० ना० पु० सूर्य, अच्छामित्र।
सुमित्रा० ना० स्त्री० लक्ष्मणजी की माता।
सुमिल० गु० चिकनी, चिकन।
सुमृति० ना० स्त्री० स्मृति।
सुमेरु० ना० पु० देवताओं के बसने का पर्वत विशेष ज्योतिष में उत्तर ध्रुव।

सुमेल० गु० योग्यमिलानगर, अच्छामेल।
सुयश० } सुयशः० } ना० पु० सुख्याति, नेकनामी।
सुयोग० गु० अच्छा योग।
सुर० ना० पु० देवता, स्वर।
सुरआपगा० ना० स्त्री० गंगाजी, रामचन्द्रिका यथा (उपजीन उज्ज्वलशोभिनै उर देखियोसरनसवे, सुरआपगानपरिंदु में जन स्वेत श्रीदर्शयव)
सुरऋषि० ना० पु० सुरर्षि, नारदजी।
सुरकना० स० क्रि० सुड़कना।
सुरक्रुक० ना० पु० माणिक।
सुरगन्धज० ना० पु० पनग वृक्ष।
सुरगन्धनी० ना० स्त्री० स्वर्णकेतकी।
सुरगुरु० ना० पु० बृहस्पति।
सुरंग० ना० पु० सेंध, छेद, ईंगुर, अच्छारंग।
सुरचाप० ना० पु० इन्द्रधनुष जो मेघकी बूंदों पर सूर्यकी किरणें पड़ने से प्रकटता है।
सुरत० ना० स्त्री० सुधि, स्मृति, मैथुन।
सुरता० गु० सुरतीला।
सुरती० ना० स्त्री० तमाकू खाने की।
सुरतीला० गु० विचारयुक्त ध्यानी, चोकस।
सुरथ० ना० पु० राजाविशेष, अच्छारथ।
सुरद्रुम० ना० पु० देवदारु, कल्पवृक्ष।
सुरपति० ना० पु० इन्द्र।
सुरभि० ना० स्त्री० सुगन्धि, महक, वसन्तऋतु, गाय, ना० पु० जायफल, मृग, बेल, केला।
सुरभोग० ना० पु० अमृत।
सुरमणि० ना० पु० चिन्तामणि, इन्द्र।
सुरमा० ना० पु० अञ्जन, यहशब्दफ़ारसीका है।
सुरमुनि० ना० पु० नारदमुनि।
सुरमृत्तिका० ना० स्त्री० फटकरी।
सुरराज० ना० पु० इन्द्र।
सुररूख० ना० पु० मन्दारवृक्ष, कल्पवृक्ष।
सुरर्षि० ना० पु० नारदजी।
सुरवीथी० ना० स्त्री० देवमार्ग।

सुरसर० ना० पु० मानसरोवर।
सुरसरि० } ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
सुरसरिता० }
सुरश्रेष्ठ० ना० पु० ब्रह्मा, इन्द्र।
सुरस० गु० सुस्वाद।
सुरसी० ना० स्त्री० तुलसी पौधा।
सुरसुराना० अ० क्रि० सरसराना, गुदगुदाना।
सुरसुराहट० ना० स्त्री० सरसराहट, गुदगुदी।
सुरसुरी० ना० स्त्री० गुदगुदी, चींटीविशेष।
सुरसेनप० ना० पु० स्वामिकार्तिक।
सुरा० ना० स्त्री० मदिरा, दारू, शराब।
सुराई० ना० स्त्री० बहादुरी।
सुराह्न० ना० पु० देवदारु।
सुराह्वा० ना० स्त्री० क्षीरकाकोली।
सुरापान० ना० पु० मदिरा पीना।
सुरारि० ना० पु० दैत्य, राक्षस।
सुरालय० ना० पु० सुमेरु, स्वर्ग, देवालय, सुरभवन।
सुराष्ट्र० ना० पु० गुजरात के समीप देश विशेष।
सुरुकना० स० क्रि० सुड़कना।
सुरूप० गु० सुन्दर, दिदारगीर, अच्छारूप।
सुरेन्द्र० ना० पु० सूरण, जिमींकन्द, इन्द्र।
सुरेश० ना० पु० इन्द्र।
सुरैत० } ना० स्त्री० अविवाहिता, उढ़री,
सुरैतिन० } रखनी, घरबैठी, उढ़री।
सुलगना० अ० क्रि० बरना, जलना, आंच उठना, धीरे धीरे जलना।
सुलगाना० स० क्रि० बारना, सुलगाना, जलाना, परचाना।
सुलझना० अ० क्रि० खुलना, निबड़ना।
सुलझाना० स० क्रि० उघड़ना, उकेलना, खोलना।
सुलभ० गु० सहजसे जो पाया जावे, साधारण।
सुलक्षण० ना० पु० शुभ के सूचक चिह्न, सुन्दरता।

सुलाना० स० क्रि० शयन कराना, पौढ़ाना, बंध करना।
सुलोक० ना० पु० नेकनामी, सुयश, अच्छा लोक, अच्छा मनुष्य।
सुलोचना० ना० स्त्री० चकोरपक्षी, मेघनाद की स्त्री, अच्छी आंखोंवाली।
सुलोमश० ना० स्त्री० काक जंघा बूटी।
सुवक्ता० गु० भला कहनेहारा, अच्छापाठक।
सुवचन० ना० पु० शिष्टवाणी, अच्छीवार्ता।
सुवन० ना० पु० पुत्र, लड़का।
सुवर्चि० } ना० स्त्री० सज्जी खार।
सुवर्चिका० }
सुवर्ण० ना० पु० कनक, सोना, सुजाति, सुरंग।
सुवर्णद्रुमा० ना० स्त्री० किरवाली।
सुवर्त्त० ना० पु० आकाश, नाममालायां (अम्बर पुष्कर बहुतनभ अन्तरिक्ष घनवास, व्योम अनन्त विहायसी खं सुवर्त्त आकाश)
सुवल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक सखा।
सुवाना० स० क्रि० सुलाना।
सुवार० ना० पु० रसोइया, बावर्ची, रामायणे-यथा (विविध भांति बैठी ज्यवनारा, लगे परोसन चतुर सुवारा)
सुवाहु० ना० पु० दैत्यविशेष।
सुविस्तरा० ना० स्त्री० गन्धप्रसारन।
सुवेल० ना० पु० समुद्रतट पर्वतविशेष।
सुवेला० ना० स्त्री० अच्छीसाअत, अच्छाकाल।
सुवैया० ना० पु० सोनेहार।
सुशिक्षा० ना० स्त्री० भली शिक्षा, अच्छी सीख।
सुशिक्षित० गु० प्रवीण, अच्छी शिक्षापायेहुये।
सुशील० गु० जिसका शील अच्छा है, सुस्वभाव, साधु, शिष्टाचारी।
सुशीलता० ना० स्त्री० शिष्टाचार, स्वभाव में नम्रता।
सुश्री० ना० स्त्री० शोभा।
सुश्रूषा० ना० स्त्री० सेवा, आदर, खिदमत।

सुश्रेणी॰ ना॰ स्त्री॰ मार्ग, बाट, राह।
सुषुप्ति॰ ना॰ स्त्री॰ सुखनींद, अवस्थाविशेष।
सुसकारना॰ अ॰ क्रि॰ सनसनाना।
सुसताना॰ अ॰ क्रि॰ विश्राम करना, दम लेना।
सुसमय॰ ना॰ पु॰ अच्छा समय, बढ़ती का समय।
सुसम्बद्ध॰ गु॰ जिसकी अच्छे प्रकार रचनाकी गई है।
सुसर॰ } ना॰ पु॰ ससुर।
सुसरा॰ }
सुसराल॰ ना॰ स्त्री॰ ससुराल।
सुस्थ॰ गु॰ अरोगी, भला, चंगा।
सुस्थिर॰ गु॰ निश्चल, अटल।
सुस्मृति॰ ना॰ स्त्री॰ चैतन्यता, अच्छीस्मृति।
सुस्तया॰ ना॰ स्त्री॰ कलौंजी।
सुस्वाद॰ गु॰ सरस, रसीला।
सुहाग॰ ना॰ पु॰ सौभाग्य, अचलभाग्य, पतिका प्यार, स्त्री का भूषणविशेष, जो पति के जीने का चिह्न, अहिवात।
सुहागन॰ ना॰ स्त्री॰ विवाहिता स्त्री, जिस स्त्री का पति जीता हो।
सुहागा॰ ना॰ पु॰ औषधिविशेष, जिससे सुवर्ण आदि गलता है।
सुहाता॰ गु॰ सोहना, चाहता, भला।
सुहाना॰ } गु॰ भावित, अच्छा, सोहना,
सुहावना॰ } चाहता, अ॰ क्रि॰ अच्छा लगना, सजना, भाना।
सुहाल॰ ना॰ पु॰ } पक्वान्नविशेष।
सुहाली॰ ना॰ स्त्री॰ }
सुहौटी॰ ना॰ स्त्री॰ जो पटी चौखट वा दरवाजे के ऊपर लगाते हैं।
सुहृद॰ ना॰ पु॰ मित्र, प्रियतम।
सूअर॰ ना॰ पु॰ } शूकर, वराह।
सूअरी॰ ना॰ स्त्री॰ }
सूआ॰ ना॰ पु॰ तोता, सुआ।

सूई॰ ना॰ स्त्री॰ वस्त्र सीने की वस्तुविशेष।
सूंगरा॰ ना॰ पु॰ जंगली बकरा, पड़वा।
सूंगा॰ ना॰ पु॰ टूंगा, ढेंठा।
सूंघ॰ ना॰ स्त्री॰ गन्ध, बास।
सूंघन॰ ना॰ स्त्री॰ सूंघने की वस्तु।
सूंघना॰ स॰ क्रि॰ बासलेना, गन्धग्रहना।
सूंघनी॰ ना॰ स्त्री॰ नास, हुलास।
सूंट॰ ना॰ स्त्री॰ चुप्पी, मौन।
सूंड॰ ना॰ स्त्री॰ हाथी की नाक।
सूंडा॰ ना॰ पु॰ कृमिविशेष, कीड़ा।
सूंडी॰ ना॰ स्त्री॰ कलार, कलवार।
सूंतना॰ } स॰ क्रि॰ कांछना, खींचना, टहनी
सूंथना॰ } से पत्ती को निकालना वा भिन्न करना।
सूंस॰ ना॰ पु॰ सुस।
सूकटा॰ गु॰ दुबला, निर्बल, सूखा।
सूकर॰ ना॰ पु॰ शूकर।
सूकय॰ ना॰ पु॰ किनारी, शुक्र।
सूकवार॰ ना॰ पु॰ शुक्रवार।
सूका॰ ना॰ पु॰ } चौअन्नी।
सूकी॰ ना॰ स्त्री॰ }
सूक्ष्मपाक्य॰ ना॰ पु॰ जवाखार।
सूखड़ई॰ ना॰ स्त्री॰ [illegible], सूखीवशी।
सूखना॰ अ॰ क्रि॰ सूखा होना, गलना, सिकुड़ना, मुरझाना।
सूखा॰ गु॰ शुष्क, रसहीन।
सूग॰ ना॰ स्त्री॰ दुविधा, चिन्ता, शोक।
सूगा॰ ना॰ पु॰ तोता।
सूचक॰ गु॰ ज्ञापक, बोधक, शिक्षक, प्रकाशक।
सूचना॰ ना॰ स्त्री॰ जनावना।
सूचनिका॰ ना॰ स्त्री॰ तालिका, फ़ेहरिस्त।
सूचिका॰ ना॰ स्त्री॰ केतकी।
सूचित॰ गु॰ ज्ञापित, सूचना दियागया।
सूचिमुखी॰ ना॰ स्त्री॰ [illegible]।
सूची॰ ना॰ स्त्री॰ सूई, दर्जी।
सूचीपत्र॰ ना॰ पु॰ पत्र जिसमें पुस्तक के अ

ध्याय या प्रकरण लिखेजाते हैं।

सूच्याकार० ना० पु० सूई के डौल।

सूज०
सूजन० } ना० पु० फुलाव, शोथ।

सूजना० अ० क्रि० फूलना।

सूजा० ना० पु० बर्मा, बेधी, सुतारी।

सूजी० ना० पु० सीनेहारा, दर्जी, दरदराआटा, सूई।

सूझ० ना० स्त्री० दृष्टि।

सूझना० अ० क्रि० गोचरहोना, देखपड़ना।

सूत० ना० पु० धागा, तागा, रथवान्, भाट, बढ़ई, पारथिव, व्यासजी का शिष्य जो नैमिषारण्य में शौनकादिकन को पुराण सुनाता था, पारा, व्यवहार, रीति, प्रीति।

सूतक० ना० पु० अशौच, अपवित्रता जो प्रसव वा मृत्यु के दिन से दश दिनतक मानते हैं उसके दो नाम हैं वृद्धिसूतक, मृत्युसूतक।

सूतना० अ० क्रि० सोना, नींदलेना, प्रा० क्रि० तापना, उत्पन्नकरना, सुतलगाना, ताड़ना।

सूतली० ना० स्त्री० डोरी, पतली रस्सी।

सूतिका० ना० स्त्री० जच्चा, प्रसूतिका, प्रसू [illegible]।

सूती० गु० जो सूत से बना, सूतिका [illegible] सोतीहुई।

सूतू० गु० नींद्।

सूत्र० ना० पु० तागा संक्षेपमें अनेकार्थ का सूचक वा बोधक भाषा।

सूत्रधार० ना० पु० नट, बढ़ई।

सूत्रनाभि०
सूत्रा० } ना० स्त्री० मकड़ी।

सूथन० ना० पु० [illegible], पायजामा।

सूथनी० ना० स्त्री० [illegible], पायजामा, सुथनी।

सूध०
सूधा० } गु० सीधा, शुद्ध, [illegible], [illegible], निष्कपट।

सूधाई० ना० स्त्री० सिधाई, भोलापन।

सून० गु० सून्य।

सूना० गु० सूखा, उजाड़, जहां कोई न हो।

सूनु० ना० पु० पुत्र, बेटा।

सूनो० गु० शून्य।

सूप० ना० पु० शूर्प, छाज।

सूपकार० ना० पु० रोटी करने हारा, बावर्ची।

सूपारेना० ना० पु० पक्षीविशेष।

सूपार० ना० पु० सुपारा।

सूपियारी० ना० स्त्री० सुपारी।

सूम० ना० पु० शूम, कृपण, कंजूस।

सूर० ना० पु० वीर, दृगास, सूर्य, सूरदास, गु० अन्धा।

सूरज० ना० पु० सूर्य सुग्रीव, शनैश्चर, सनेश्चर, यमराज।

सूरजगहन० ना० पु० सूर्य्यग्रहण।

सूरजमुखी० ना० स्त्री० सूर्य्यमुखी।

सूरजवल्लभ० ना० पु० [illegible]।

सूरजिका० ना० स्त्री० [illegible]।

सूरण० ना० पु० [illegible]।

सूरता० ना० स्त्री० वीरता, बड़ाई।

सूरदास० ना० पु० कविविशेष, सूरसागर के [illegible]।

सूरवीर० ना० पु० वीर, मानव सामन्त।

सूरसार० ना० पु० राग[illegible]विशेष।

सूरमा० गु० वीर, सावन्त, मनचला।

सूरमापन० ना० पु० वीरता, सावन्ती, बहादुरी।

सूरसुत० ना० पु० सुग्रीव, शनैश्चर, कर्ण, यमराज।

सूरा० ना० पु० सावन्त, बलवान्, वीर।

सूरी० ना० स्त्री० सूरनी, रानी।

सूर्प० ना० पु० शर्प, सूप।

सूर्पनखा० ना० स्त्री० शूर्पणखा, रावण की बहन।

सूर्य० ना० पु० सुवर्णधातु, दिनमणि, रवि, सूरज।

सूर्यंश० ना० पु० नागवृक्ष।

सूर्य्यकान्ति० ना० स्त्री० सूर्य्यमणि।
सूर्य्यग्रहण० ना० पु० सूर्य्य का ग्रहण।
सूर्य्यमणि० ना० स्त्री० मणिविशेष।
सूर्य्यमुखी० ना० स्त्री० पुष्पविशेष।
सूर्य्यप्रिय० ना० पु० ताम्रधातु।
सूर्य्यवंशी० ना० पु० सूर्य्य वंश का क्षत्री।
सूर्य्यवल्लभ० ना० पु० भृंगराज, भंगरा पौधा।
सूर्य्यात्मज० ना० पु० सूर्य्यमणि।
सूर्य्याह्वय० ना० पु० मदारवृक्ष।
सूर्य्यास्त० ना० पु० सन्ध्या, साभ, सूर्य्य का अस्त अर्थात् छुपना।
सूर्य्येन्दुसंगमा० ना० पु० अमावस।
सूर्य्योदय० ना० पु० सूर्य्य का उदय, तड़का, सबेरा।
सूल० ना० पु० शूल, फुरफुरी, भालाकी अनि, कांटा, शस्त्रविशेष।
सूली० ना० पु० शूली, ना० स्त्री० फांसी।
सूवा० न० पु० तोता, मोटी सूई।
सूस० } ना० पु० जल जन्तुविशेष।
सूसमार० }
सूसी० ना० स्त्री० वस्त्रविशेष।
सूहा० गु० लाल, अरुण, ना० पु० रागविशेष।
सूक्ष्म० ना० पु० जो वस्तु अस्थूल अर्थात् हलकी पतली बारीक हो।
सूक्ष्मता० ना० स्त्री० हलकापन, पतलाई, बारीकी।
सूक्ष्मदर्शी० गु० चतुर, सुर्ता, प्रवीण, ज्ञानी।
सूक्ष्मपत्र० ना० पु० कौंदा।
सृजना० स० क्रि० सिरजना।
सृजित० गु० जो सिरजागया।
सृष्टि० ना० स्त्री० उत्पत्ति, जगत्, वृद्धि।
सृष्टिकर्त्ता० ना० पु० ब्रह्मा, परमात्मा।
से० अव्य० अपादान कारक वा करण का बोधक चिह्न, साथ, संग।
सेंक० ना० पु० सेंकने का काम, कनार।
सेंकड़ा० गु० सौ, शत, १००।
सेंकना० स० क्रि० तताना, गर्माना।
सेंगरी० ना० स्त्री० फली, छीमी।
सेंठा० ना० पु० } सरकण्डा जिससे मोढा
सेंठी० ना० स्त्री० } बनाते हैं, सरपत, पतली मूजका पौधा।
सेंत० अव्य० विनामोल, मुफ्त, सेंतमेंत।
सेंतना० स० क्रि० सुधारना, बनाना, स्वच्छ करना।
सेंद० ना० पु० खीराविशेष।
सेंदुर० ना० पु० ईंगुर।
सेंध० ना० पु० चोरी करने के लिये चोरलोग जो भीत में छेद करते हैं सुरंग।
सेंधना० स० क्रि० खोदना, ढाना।
सेंधा० ना० पु० लवणविशेष जिसको लाहौरी लोन कहते हैं।
सेंधिया० ना० पु० विष, जातिविशेष, चोर जो सेंध में पैठता है।
सेंधी० ना० स्त्री० खजूरका रस, ताडीविशेष।
सेंहुआं० ना० पु० दादविशेष, दिनाई।
सेगुन० ना० पु० काष्ठविशेष जो पेगू देश से आता है।
सेचन० ना० पु० छिड़काव।
सेज० ना० स्त्री० शय्या, बिस्तर, पलंग, मंजा।
सेजबंद० ना० पु० सेजपर बिछौना बांधने के लिये डोरीविशेष।
सेठ० ना० पु० बड़ा साहूकार।
सेठन्० ना० स्त्री० सेठकी स्त्री।
सेत० ना० पु० पुल, सेतु, गु० श्वेत।
सेतना० स० क्रि० जुगवना, सेंतना।
सेतु० ना० पु० पुल, बांध, मर्य्यादा।
सेतुबन्ध० ना० पु० तीर्थविशेष, पुल जो लङ्का और भरतखण्ड के मध्य समुद्र में हनुमान् आदिकनने बनाया था।
सेदना० स० क्रि० सेंकना, तताना।
सेन० ना० स्त्री० } कटक, फौज, नाम एक
सेना० ना० पु० } भक्त नाईका है।

सेनानी० } नाο पुο चमूपाल, दलपति,
सेनापति० } स्वामिकार्त्तिक।

सेव० नाο पुο फलविशेष।

सेम० नाο स्त्रीο तरकारी विशेष का पोधा वा उसकी फली।

सेमर० नाο पुο सेमल वृक्ष विशेष वा उसकी रुई।

सेर० नाο पुο ताल विशेष १६ छटांकी।

सेराना० अο क्रिο ठंढा होना, सο क्रिο ठंढा करना, बहाना, मसाना।

सेल० नाο पुο बर्छा।

सेलखड़ी० नाο स्त्रीο पर्वतकी मिट्टीविशेष।

सेला० नाο पुο वस्त्र विशेष, नाथ विशेष।

सेलिया० नाο पुο मार्जार, सेलीवाला।

सेली० नाο स्त्रीο बर्छी, रामायणे यथा (तुरत विभीषण पाछे मेली, सन्मुख राम सहा सो सेली) सूतकी बनी माला जो जोगिया पहनते हैं, जालमर्दी।

सेव० नाο पुο पकवानविशेष, सेव नाο स्त्रीο सेवा, शुश्रूषा।

सेवई० नाο स्त्रीο खानेकी वस्तु विशेष।

सेवक० नाο पुο नौकर चाकर, सेवा करनेहारा, खिदमतगार।

सेवकाई० नाο स्त्रीο नोकरी, पूजा, सेवा, टहल, खिदमतगारी।

सेवटि० नाο स्त्रीο नदीका रेत, दलदल।

सेवड़ा० नाο पुο जनमतका भिक्षु।

सेवती० नाο स्त्रीο पुष्प विशेष वा उसका पौधा।

सेवन० नाο पुο पालन, पोषण, सेवा करना।

सेवना० सο क्रिο किसी अण्डा, दाना, आदि का छोपकर बैठना।

सेवा० नाο स्त्रीο नौकरी, टहल, पूजा, खिदमतगारी।

सैन्यवीर० नाο पुο सामन्त।

सेस० नाο पुο शेष।

सेसर० नाο पुο ठगा में खेल विशेष।

सै० गुο सौο नाο स्त्रीο भागवानी, बरकत, लहर बहर।

सैंकड़ा० गुο सौ, शत।

सैंगर० नाο स्त्रीο शमीवृक्ष की फली, बबूल की फली।

सैंतालीस० गुο चालीस और सात ४७।

सैंतीस० गुο तीस और सात ३७।

सैंहिकेय० नाο पुο राहु, केतु।

सैन० नाο स्त्रीο सेना, फौज, संकेत, शयन, चिह्न, इशारह, आंख का इशारा।

सैनप० नाο पुο सेनापति, सेनाधिपति, स्वामिकार्त्तिक।

सैना० नाο स्त्रीο सेन, दल, फौज।

सैनापति० } नाο पुο सेनापति, सिपह-
सैनापत्य० } सालार।

सैनासैनी० नाο स्त्रीο परस्पर सैनकरना।

सैन्धव० नाο पुο सिन्धुदेश का घोड़ा या लोन, नोन।

सैन्या० नाο स्त्रीο सेना, दल, कटक।

सैरन्ध्र० नाο पुο सेवा।

सैकोंक० अव्यο सन् के आरम्भ में।

सैहगन० नाο स्त्रीο सफाई।

सैहरनी० गुο सहनेया।

सो० सर्वο सम्बन्धवाचक, सर्वनाम।

सोअर० नाο पुο कोठरी जिसमें प्रसूती रहती है।

सोआ० नाο पुο घासविशेष।

सोई० सर्वο वह, वार।

सों० अव्यο से।

सोंटा० नाο पुο डण्डा, मूसल, छोटीलाठी।

सोंठ० नाο स्त्रीο सूखी अदरक।

सोंदना० सο क्रिο बीने के लिये गीली मिट्टी में कपड़ा मढ़ना, सानना, गुथाना।

सोंधा० नाο पुο बालों का मसाला, नई मृत्तिका पर मिट्टी से जो गन्ध, सुगन्धित।

सोंधाहट० नाο स्त्रीο सुगन्ध, सुवास।

सोंह० नाο स्त्रीο क्रिया, शपथ।

सौंहीं० अव्य० सामने, सम्मुख।
सोखना० स० क्रि० सोखना, चूसना, पीलेना।
सोच० ना० पु० ध्यान, बूझ, शोच।
सोचना० स० क्रि० ध्यानकरना, बूझना, शोचना।
सोज० ना० पु० सूज।
सोझ० ना० स्त्री० सीधाई।
सोझा० गु० सीधा।
सोत० } ना० पु० भूर, कुण्ड, जलका निकास,
सोता० } छेद, धारा, झरना, समुद्रका स्रोत।
सोत्साह० गु० उत्साह समेत, आनन्दयुक्त।
सोथ० ना० स्त्री० सूजन।
सोदर० ना० पु० सहोदर, सगाभाई।
सोदरा० ना० स्त्री० सगीबहिन, रामचन्द्रिकाया (सुभा सोदरा यद्यपि आप, सबहीते अनिरुद्ध प्रताप)।
सोध० ना० स्त्री० साध, खोज।
सोधना० स० क्रि० शोधन करना, कम करना, मिलना, निर्मल करना, शुद्ध करना।
सोन० ना० पु० शोण, सुवर्ण पुष्पविशेष।
सोनहरा } गु० सोने का, सोने का सा
सोनहला० } रंग।
सोना० ना० पु० स्वर्ण, कनक लिंग, अ० क्रि० नींदलेना, मरना।
सोनार० ना० पु० जातिविशेष, स्वर्णकार।
सोनिया० ना० पु० राख से सोना भिन्न करनेहारा, न्यारिया, छागलिंग बालक का।
सोपान० ना० पु० सीढ़ी, जीनह।
सोफालिका० ना० स्त्री० सफालूपौधा।
सोमना० अ० क्रि० सोहना, सजना।
सोमा० ना० स्त्री शोभा।
सोम० ना० पु० चन्द्रमा।
सोमनाथ० ना० पु० महादेव जो गुजरातमें है।
सोमपादप० ना० पु० वायकल।
सोमरजन० ना० पु० लालचन्दन।
सोमराज० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष।
सोमराजी० ना० स्त्री० बाकुची।
सोमवल्लक० ना० पु० वायफल।
सोमवल्ली० ना० स्त्री० बाकुची।
सोमवार० ना० पु० चन्द्रवार, दूसरा दिन।
सोमवारी० ना० स्त्री० सोमवारकी अमावस।
सोमसीरी० ना० स्त्री० सोनराजी।
सोरठ० ना० स्त्री० रागिनीविशेष।
सोरठा० ना० स्त्री० छन्दविशेष।
सोह० ना० स्त्री० शोभा।
सोहं० ना० पु० मन्त्रविशेष।
सोहन० गु० शोभादेनेहारा, प्यारा, चाहता, ना० पु० सज्जन, रेती, ना० स्त्री० मिठाई विशेष।
सोहना० अ० क्रि० सजना, शोभादेना।
सोहागा० ना० पु० सुहागा।
सोहिल० ना० पु० रागविशेष।
सोहीं० अव्य० सौहीं, सम्मुख।
सौ० गु० शत, १००।
सौं० ना० पु० शपथ, सौंह, सौगन्द, अव्य० से।
सौंकरी० ना० स्त्री० वाराहीकन्द।
सौंचना० अ० क्रि० शरानोरुद जल से गुदा धोना।
सौंप० ना० स्त्री० धरोहर, थाती, सुपुर्दगी।
सौंपना० स० क्रि० पहुंचाना, सुपुर्द करना, धरना, रखना।
सौंफ० ना० स्त्री० औषधिविशेष।
सौंरा० ना० पु० कालस, कामल गु० सांवला।
सौंर० ना० पु० मछलीविशेष।
सौंरिं० ना० स्त्री० वृद्धिसूतक।
सौंरी० ना० स्त्री० जचा, प्रसूती।
सौंह० ना० स्त्री० किया, शपथ, सौगन्द।
सौख्य० ना० पु० सुख, आराम।
सौगन्द० ना० स्त्री० शपथ, किया, सौंह, यह शब्द फारसी का है भाषा में प्रचलित है।

सौच० ना० पु० सौच, जो किया करने से पवित्र हो।

सौचेती० ना० स्त्री० रक्षा, बचाव।

सौजन्य० ना० पु० सुजनता।

सौत०
सौतन०
सौति०
सौतिन० } ना० स्त्री० एक मनुष्य की दो स्त्रियां आपस में एक दूसरे की सौत कहलाती हैं।

सौतिया० ना० स्त्री० सौति।

सौतियादाह० ना० पु० सौति का दाह।

सौतेला० गु० जो सौति का जाया है।

सौध० ना० पु० महल, ऊंचा मकान।

सौन्दर्य० ना० पु० सुन्दरता।

सौभाग्य० ना० पु० सुभाग, भाग्यमानी, सुहाग।

सौभाग्यवती० ना० स्त्री० सुहागिन।

सौमित्र० ना० पु० सुमित्रा सुत, लक्ष्मणजी।

सौम्य० ना० पु० बुधग्रह, बुधवार, चन्द्रसुत, गु० उजला, सुन्दर।

सौम्या० ना० स्त्री० शालपर्णी।

सौर० ना० पु० शनैश्चर, सूर्य सम्बन्धी ना० स्त्री० मछली विशेष।

सौरभ० ना० पु० केसर, सुगन्ध, गन्धद्रव्य।

सौरमास० ना० पु० सूर्य का एक राशि में रहने का काल, एक सङ्क्रान्ति से दूसरी तक।

सौरवर्ष० ना० पु० बारह सङ्क्रान्तों का समय।

सौरि० ना० पु० शनैश्चर, सहिना विशेष।

सौरेय०
सौरेयक० } ना० पु० पियाबासा।

सौहार्द० ना० पु० मित्रत्व, मित्रता।

स्कन्द० ना० पु० स्वामिकार्त्तिक।

स्कन्ध० ना० पु० कन्धा, खण्ड।

स्खलन० ना० पु० पतन।

स्तन० ना० पु० कुच, उरोज, थन।

स्तब्ध० गु० रुका।

स्तम्भ० ना० पु० खम्भा, थम्भ, थम्भन।

स्तम्भन० ना० पु० रुकाव, थम्भाव, रोक, टोक।

स्तम्भित० गु० जो रोका वा थामागया।

स्तव० ना० पु० स्तुति, विनयकी पोथी।

स्तावक० ना० पु० स्तुति करनेहारा।

स्तुति० ना० स्त्री० सराह, बड़ाई, महिमा, विनय।

स्तुतिपाठक० ना० पु० सूत, बन्दीजन।

स्तेन० ना० पु० चोर।

स्तेय० ना० पु० चोरी।

स्तोत्र० ना० पु० स्तव, स्तुति।

स्त्री० ना० स्त्री० नारी, लुगाई, औरत।

स्त्रैण० ना० स्त्री० के वश या स्त्री के स्वभाववाला।

स्थ० गु० स्थिर, ठहरा, कायम।

स्थगित० गु० ढका, छिपा।

स्थल० ना० पु० स्थान, भूमि, जगह, घर, भूमि जो सूखी है जिसपर मनुष्यादि बसते हैं।

स्थाणु० ना० पु० श्रीमहादेवजी।

स्थान० ना० पु० ठौर ठिकाना, घर, धाम।

स्थानापन्न० गु० जगहपर, उसके बदले, किसी के स्थानपर प्रतिष्ठित होना।

स्थानी० गु० घरवाला, गृहस्थी।

स्थापन० ना० पु० रखना, धरना, बैठाना।

स्थापना० ना० स्त्री० प्रतिष्ठा, स्थापन करना।

स्थापित० गु० प्रतिष्ठित, रक्खागया, निश्चित, स्थिर, अचल, जो स्थापन कियागया।

स्थाली० ना० स्त्री० हांडी, देकची।

स्थावर० गु० अचल यथा वृक्षादि, जड़।

स्थित० गु० ठहराहुआ।

स्थिति० ना० स्त्री० ठिकाना, ठहराव।

स्थिर० गु० अडोल, अचल, शान्त।

स्थिरता० ना० स्त्री० शान्ति, धीमापन।

स्थूल० गु० मोटा, भारी, बड़ा, स्थाम।

स्थूलदर्शी० ना० पु० मूर्ख, हठा, गंवार।

स्थूलरूपा० ना० स्त्री० ईश्वररूप।

स्थूलैला० ना० स्त्री० बड़ी इलायची।
स्थैर्य० ना० पु० स्थिरता।
स्थौल्य० ना० पु० मोटापा, मोटाई।
स्नान० ना० पु० नहान।
स्नानीय० ना० पु० जल जो नहाने के योग्य है।
स्नुही० ना० पु० सेंहुड़।
स्नेह० ना० पु० प्रेम प्रीति, प्यार, तेल।
स्नेहवृक्ष० ना० पु० देवदारु।
स्पर्द्धा० ना० स्त्री० द्वेष, दाह, अपरे समभाव करनेकी इच्छा।
स्पर्श० ना० पु० छुआवट, छूने का काम।
स्पर्शेन्द्रिय० ना० स्त्री० त्वचा, चर्म।
स्पष्ट० ना० पु० खुला, सहज, ठीक, दुरुस्त।
स्पष्टीकरणार्थ० अव्य० स्पष्ट करने के लिये।
स्पिरा० ना० स्त्री० शालपर्णी।
स्पृश्य० गु० स्पर्श करने के योग्य।
स्पृष्ट० गु० छुआगया।
स्पृहा० ना० स्त्री० इच्छा, चाह।
स्फटक० } ना० पु० स्वच्छ पाषाणविशेष,
स्फटिक० } बिल्लौर पत्थर, चन्द्रकान्तमणि, और कपूर।
स्फटिकाख्या० ना० स्त्री० फटकरी।
स्फटिकोपल० ना० पु० चन्द्रकान्तमणि, बिल्लौर।
स्फुट० गु० खिला, खुला, व्यक्त, प्रकट।
स्फुरत्० अ० क्रि० प्रकाशित, शोभित, डोलता।
स्फूर्त्ति ना० स्त्री० टीस धड़धड़ाहट, डोल, हिलाव।
स्फोटक० ना० पु० फोड़ा।
स्मय० ना० पु० अभिमान, अहङ्कार, गरूर।
स्मर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, कामदेव।
स्मरण० ना० पु० सुधि, चेत, स्मृति, याद, ध्यान।
स्मारक० गु० जो स्मरण करावै।
स्मार्त्त० ना० पु० स्मृतिका ज्ञाता।
स्मृति० ना० स्त्री० शास्त्र विशेष, स्मरण, चेत, याद।
स्मृतीहिता० ना० स्त्री० शालाइली।
स्मृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती, अधिक, चाहना।
स्यन्दन० ना० पु० रथ, पानी, चित्तरग, वेंदूवृक्ष।
स्यान० } ना० पु० चतुराई, चालाकी।
स्यानपन० }
स्याना० गु० चतुर, चालाक।
स्यार० ना० पु० शृगाल, गीदड़।
स्योना० } ना० पु० वृक्षविशेष।
स्योनाक० }
स्निग्धच्छदा० ना० स्त्री० बेरीवृक्ष।
स्निग्धपर्णी० ना० स्त्री० मुरहरी।
स्रुच० ना० पु० स्रुवा।
स्रोत० ना० पु० सोत, सोता।
स्रोत.० ना० पु० सोता।
स्रोतस्वती० ना० स्त्री० नदी।
स्व० सर्व० अपना, निजका बोधक, ना० पु० धन, आप।
स्व.० ना० पु० स्वर्ग।
स्वकीय० ना० पु० अपना, संगा।
स्वकीया० ना० स्त्री० निजकी, अपनी।
स्वच्छ० गु० निर्मल, साफ़, पवित्र।
स्वच्छता० ना० स्त्री० निर्मलता, पवित्रता, सफाई।
स्वच्छन्द० गु० अपनी इच्छा के अनुसार, स्वैरी स्वाधीन, ना० पु० ईश्वर।
स्वच्छन्दचारी० ना० पु० स्वयाली, भगवान्।
स्वच्छफल० ना० पु० नारियल।
स्वजन० ना० पु० अपनेलोग, नैतैत।
स्वजातीय० गु० एकवर्णका, निजगामी।
स्वतः० अव्य० आपसे।
स्वतन्त्र० गु० स्वाधीन, निजवश।
स्वतन्त्रता० ना० स्त्री० स्वाधीनता।
स्वधर्म० ना० पु० अपना धर्म।
स्वप्न० ना० पु० निद्रावस्था, द्वितीयावस्था, नींद में

जो कुछ दिखाई देता है।

स्वप्नकथा॰ ना॰ स्त्री॰ स्वप्नका वृत्तांत, ससार सुख।

स्वप्नफल॰ ना॰ पु॰ शरीर स्वाव, स्वप्नकाधर्म वा फल।

स्वप्नवत्कला॰ ना॰ स्त्री॰ तेजबल।

स्वप्रकाश॰ गु॰ जो आपही प्रकाश वा प्रकाशित है।

स्वभाव॰ ना॰ पु॰ चरित्र, प्रकृति, आदत।

स्वयंसिद्ध॰ ना॰ स्त्री॰ सिद्धरूपी, जो आपही सिद्ध।

स्वयम्वर॰ ना॰ पु॰ स्त्रीका निज इच्छानुसार वर लेना, समाज विशेष जहां कन्या निजवर ढूंढती है।

स्वयम्भू॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

स्वर॰ ना॰ पु॰ शब्द, ध्वनि, स्वास और अकारादि १६ वर्ण।

स्वरवर्णिनी॰ ना॰ स्त्री॰ गोभी, पौधा।

स्वराह्वया॰ ना॰ स्त्री॰ अजमोद।

स्वरूप॰ ना॰ पु॰ अपनारूप, समानता, व्यक्ति।

स्वर्गपताली॰ ना॰ पु॰ भेंगा, डेरा।

स्वर्गीय॰ } **स्वर्ग्य॰** } गु॰ जो स्वर्ग का है।

स्वर्ण॰ ना॰ पु॰ सुवर्ण, कनक, सोना।

स्वर्णपर्णी॰ ना॰ स्त्री॰ सिरवाली।

स्वर्णमुद्रा॰ ना॰ पु॰ अशरफी, मुहर।

स्वर्णवर्ण॰ ना॰ पु॰ गेरू।

स्वर्णवर्णा॰ ना॰ स्त्री॰ दारुहल्दी।

स्वर्णखो॰ } **स्वर्णस्थल्या॰** } ना॰ स्त्री॰ सिरवाली।

स्वल्प॰ गु॰ अत्यन्त थोड़ा, थोड़ा, ना॰ पु॰ गीदड़।

स्वल्पकन्द॰ ना॰ पु॰ कसेरू।

स्वल्पाहार॰ ना॰ पु॰ थोड़ा आहार, कमखाना।

स्ववर्ग॰ ना॰ पु॰ अपनावर्ग।

स्ववर्गोक्त॰ गु॰ अपनेवर्गका कथितस्थान।

स्ववर्ण॰ ना॰ पु॰ निजगोत्र, अपनावर्ण।

स्ववर्णी॰ गु॰ निजगोती, एक जातिका।

स्ववश॰ ना॰ पु॰ स्वाधीन, स्वतंत्र, निजवश।

स्वसेवक॰ ना॰ पु॰ अपना सेवक।

स्वसेव्य॰ गु॰ आत्मपूजक।

स्वस्ति॰ अव्य॰ मंगल, कल्याण, तथास्तु।

स्वस्तिवाचन॰ ना॰ पु॰ शास्त्रोक्त धर्मकेआदि में व्यवहार विशेष।

स्वस्वामिभाव॰ गु॰ स्वामी और उसकी वस्तु का सम्बन्ध।

स्वाई॰ } **स्वाईं॰** } ना॰ पु॰ स्वामी, मालिक।

स्वांग॰ ना॰ पु॰ भांडेती, तमाशा।

स्वांगी॰ ना॰ पु॰ स्वांग बनानेहारा।

स्वागत॰ ना॰ पु॰ कुशल, क्षेम, मिज़ाजपूछना,

स्वाति॰ } **स्वाती॰** } ना॰ स्त्री॰ पन्द्रहवां नक्षत्र।

स्वाद॰ ना॰ पु॰ सवाद, रस, मज़ह, मधुकपक्षी।

स्वादकु॰ ना॰ पु॰ गोखुरू।

स्वादक॰ } **स्वादिष्ट॰** } गु॰ जिस में स्वाद हो, मीठा स्वाद।

स्वादी॰ गु॰ स्वाद करनेहारा, जिसमें स्वादहो। ना॰ पु॰ अङ्गूर।

स्वादु॰ गु॰ मीठा स्वादिष्ट, स्वादि।

स्वादुकण्टक॰ ना॰ पु॰ गोखुरू।

स्वादुपुष्पिका॰ ना॰ स्त्री॰ दुद्धी पौधा।

स्वादुमा॰ ना॰ स्त्री॰ काकोली।

स्वाधिष्ठान॰ ना॰ पु॰ यंत्र विशेष।

स्वाधीन॰ गु॰ स्वतंत्र, निजवश, खुद मुख्तार।

स्वाधीनता॰ } **स्वाधीनी॰** } ना॰ स्त्री॰ स्वतंत्रता।

स्वाभाविक॰ गु॰ जो स्वभाव से है, प्रकृती जन्मी।

स्वामिकार्त्तिक॰ ना॰ पु॰ शिवजीके पुत्रविशेष।

स्वामित्व० ना० पु० अधिकार, प्रभुता, मालिकी।
स्वामी० ना० पु० प्रभु, राजा, मालिक, गुरुदेव, पति।
स्वाराम० ना० पु० निज, उपवन, अपनोवास।
स्वार्थ० ना० पु० सांसारिक काम, संसार की इच्छा, निज अर्थ या लाभ, आत्मपालन।
स्वार्थिक० गु० जो अपने को पूराकरे, काम का कृतार्थ।
स्वार्थी० गु० आत्मपोषक, अपनामतलबी।
स्वास० } स्वासा० } ना० स्त्री० श्वास।
स्वाहा० ना० स्त्री० अग्निदेवकी स्त्री, जोहवनादि में मन्त्र पूरे होने के पीछे बोलते हैं।
स्वीकार० } स्वीरत० } ना० पु० अंगीकार, कबूल, मंजूर।
स्वेच्छक० गु० स्वाधीन, हठीला।
स्वेच्छा० ना० स्त्री० स्वाधीनता, हठ, निजेच्छा।
स्वेच्छाचारी० गु० स्वाधीनवर्ती, निजइच्छा समान चारक।
स्वेत० गु० स्वेत, सफेद।
स्वेद० ना० पु० प्रस्वेद, पसीना, ताप।
स्वेदज० ना० पु० जो पसीना से उपजे यथा जूवा, खीलादि।
स्वैरण० ना० गु० स्वाधीन, परदारिक।
स्वैरिणी० ना० स्त्री० कुलटा, छिनाल।
स्वैरी० गु० स्वाधीन, स्वैरिन, खुदमुख्तार।
स्वोपकारी० गु० निज उपकारी, स्वार्थी।

[ह]

हंकाना० स० क्रि० निकालना, हाकना, चलाना।
हकार० ना० पु० हांक, पुकार, चिल्लाहट।
हकारना० स० क्रि० हांकना, पुकारना, पाल चढ़ाना।
हंकैया० गु० हाकनेहारा।
हंस० ना० पु० पक्षी विशेष, आत्मा जीव, राजा, धर्म, घोड़ा, सूरज, परमहंस।
हंसक० ना० पु० बिछुवा, जो स्त्रियां पांव में पहनती हैं।
हंसध्वज० ना० पु० ब्रह्मा, राजा विशेष, गु० जिसकी ध्वजा में हंस बना हो।
हंसना० स० क्रि० हास्य करना, ठट्ठामारना।
हंसपद० ना० पु० हंसका चरण, चिह्न विशेष, जो लेखक लोग भूलके स्थान पर लगाते हैं।
हंसपदी० } हंसपादी० } ना० स्त्री० पौधा विशेष।
हंसमुख० गु० आनन्दी, मगन, हंसोड़।
हंसा० ना० पु० हास्य।
हंसाई० ना० स्त्री० हंसी, ठठोली।
हंसाना० स० क्रि० हास्यकराना, रिझाना।
हंसिनी० ना० स्त्री० हंसकी स्त्री।
हंसिया० ना० पु० हंसुआ।
हंसी० ना० स्त्री० हास्य, ठठोली।
हंसुआ० ना० पु० घासादिकाटने का हथियार।
हंसेश० ना० पु० ब्रह्मा।
हंसोड़० गु० ठठोल, हंसमुख।
हंसोड़पन० ना० पु० ठठोली।
हकबकाना० अ० क्रि० घबड़ाना, व्याकुल होना।
हकला० गु० जो गला से अटकके बोले, जिसकी जीभ जल्दी न चले।
हकलाना० अ० क्रि० जीभ का हकरहाना बात का अटकना।
हकलाहा० गु० लड़बड़ाहा।
हकारना० स० क्रि० बैलादि का घुमाना।
हकाबका० गु० घबड़ा, व्याकुल।
हगना० अ० क्रि० गुहकरना, जंगल फिरना झाड़े जाना।
हगनेटी० } हगनीटी० } ना० स्त्री० हगने की इन्द्रिय निरास, गुदा, गांड़।
हगभरना० अ० क्रि० गुहकरना, बिगाकर रहना।

…ानाः स० क्रि० नीटकराना, गुदकराना।
…गासः ना० स्त्री० हगने की इच्छा, मल।
…चकोलाः ना० पु० धका, झोंक।
…टः ना० स्त्री० हठ।
…टकनाः } अ० क्रि० अटकाना, रोकना, मने
…टकानाः } करना, रोराना, मनेकराना।
…टनाः अ० क्रि० अलगहोना, चलेजाना, टलना, पीछे या आगे को बढ़ना।
हटयाः ना० पु० अन्नादि मापने के लिये हाटमें बैठनेहारा।
हटयाईः ना० स्त्री० हाट्या काम।
हटानाः स० क्रि० टालदेना, रोकदेना, भगाना।
हट खः ना० स्त्री० अधिर के कारण दूकानबंद करना।
हटियाः } ना० स्त्री० हाट।
हट्टः }
हट्टाकट्टाः गु० मोटा, चर्बरा, अच्छा।
हठः ना० पु० मगराई, रारि, मचलाई, अड़।
हठनाः अ० क्रि० हठीला या मचला या टेढ़ाहोना, जिदकरना।
हठात्ः अव्य० अकस्मात्।
हठीः } गु० हठ करनेहारा, मचला,
हठीलाः } मगरा।
हडः ना० स्त्री० फलविशेष ना० पु० काठ।
हडकलः ना० पु० पौधाविशेष।
हडगीलाः ना० पु० पक्षीविशेष।
हडजोड़ाः ना० पु० पौधाविशेष।
हडफूटनः ना० पु० हड्डी में पीड़ा।
हड़बड़ानाः अ० क्रि० घबराना, व्याकुलहोना, हलबलाना।
हड़बड़ियाः गु० चिड़चिड़ा।
हड़बड़ीः ना० स्त्री० खलबली, हुलड़।
हड़हड़ानाः अ० क्रि० थर्थराना, कांपना, धड़धड़ाना, खड़खड़ाना।
हड़हड़ाहटः ना० स्त्री० कड़ाका, चटाका।
हड़हड़ीः ना० स्त्री० टंकार।
हड्डाः ना० पु० मालवान् इत्यादि इस शब्द को कहकर चिड़िया उड़ाते हैं।
हड़ानाः स० क्रि० चिड़िया उड़ाना।
हड़ाहड़ीः ना० स्त्री० हड़हड़ी।
हड्डाः ना० पु० मौंगाहड़, बिर्नी, भौंपरा।
हड्डीः ना० स्त्री० अस्थि, हाड़।
हड्डीलाः गु० अस्थिवान्।
हण्डनीः ना० स्त्री० कुचली या कुलटा स्त्री।
हण्डाः ना० पु० तांबे या पीतल या मिट्टी का बड़ाबर्तन।
हंडानाः स० क्रि० देश या नगरसे निकालदेना, मुंह कालाकरके गधेपर चढ़ाकर घुमाना।
हंडिकाः } ना० स्त्री० हांडी।
हंडीः }
हतः अव्य० दुःख, नाश।
हतनः ना० पु० मारण, बधन।
हतनाः स० क्रि० बधकरना, मारडालना।
हतादरः ना० पु० सन्मानहीन, निरादर।
हतीः अव्य० थी, रही, ना० स्त्री० मारीगई।
हत्थः ना० पु० हाथ।
हत्थाः ना० पु० दाथा।
हत्याः ना० स्त्री० बध, हिंसा, बधदोष।
हत्याराः ना० पु० हिंसक, बधिक, बधदोषी।
हत्यारिनः } ना० स्त्री० हिंसक स्त्री।
हत्यारीः }
हथः ना० पु० हाथ।
हथकड़ाः ना० पु० पकड़, हाथ से पकड़ने की वस्तु।
हथकड़ीः ना० स्त्री० हाथ में डालने की बेड़ी।
हथकंडाः } ना० पु० टेव, ढब, रीया।
हथखंडाः }
हथचपूआः ना० पु० भाड़, थर्री।
हथछुटः } ना० पु० पीटनेहारा, लड़ांका।
हथछूटः }
हथनालः ना० स्त्री० हाथी परकी तोपछोटी।

हथनी॰ ना॰ स्त्री॰ हस्तिनी।

हथफेर॰ ना॰ पु॰ रुपया परखने में ठगविद्या, उधारलेना।

हथरस॰ ना॰पु॰ } हथरसी॰ स्त्री॰ } चूमाचाटी, मठोली।

हथरी॰ ना॰ स्त्री॰ रहटेका हथकड़ा।

हथल॰ } हथवास॰ } ना॰ पु॰ पीतलका हथकड़ा।

हथा॰ ना॰ पु॰ चकोरा हथकड़ा।

हथिया॰ ना॰ स्त्री॰ हस्त नक्षत्र, वर्षाकालका अन्त, हथकड़ा।

हथियाना॰ स॰ क्रि॰ पकड़ना, ग्रहणकरना।

हथियार॰ ना॰ पु॰ तलवार, बलकाम, अस्त्र।

हथी॰ ना॰ स्त्री॰ घोड़ेके मलने की वस्तु बालों की बनी।

हथेला॰ ना॰ पु॰ चोर।

हथेली॰ ना॰ स्त्री॰ हाथके बीचका स्थान।

हथौटी॰ ना॰ स्त्री॰ चतुर, विद्या, प्रवीणता।

हथौड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा घन।

हदियाना॰ अ॰ क्रि॰ आश्चर्य्य का, व पापकरना, घबराना, स॰ क्रि॰ फुसलाना, पुसलाना, चाप दिलाना, जाचना, बरबस कराना।

हदियाहट॰ ना॰ स्त्री॰ भोलापन, मुहचोरी, घबराहट, बरबसात, अचार, चाह।

हदियाहा॰ गु॰ भोला, मुहचोर, स देही।

हनन॰ ना॰ पु॰ वध, हता।

हनना॰ स॰ क्रि॰ वधकरना, मारडालना, मारना, जकड़ना।

हना॰ गु॰ मारागया, दवागया।

हनु॰ ना॰ पु॰ ठुड्डी, हनुमान्जी।

हनुमत्॰ } हनुमन्त॰ } हनुमान्॰ } ना॰ पु॰ वायुपुत्र, रुद्रावतार, श्रीरामसेवक, महावीर।

हन्तक॰ } हन्त॰ } ना॰ पु॰ वधकारी, मारनेहारा।

हन्ती॰ ना॰ स्त्री॰ नाशक वा वधकारी स्त्री।

हप॰ ना॰ पु॰ झपटके मुह में डाल के निगलना।

हपझप॰ गु॰ फुर्तीला, चर्फरा, अव्य॰ झपट

हफहफाना॰ अ॰ क्रि॰ हाफना।

हबड़ा॰ गु॰ फूहड़, हबिला।

हबिला॰ गु॰ जिसके आगे के दांतबड़े २ हों।

हमारा॰ } हमारी॰ } सर्व॰ उत्तम पुरुष बहुवाक्यसम्बन्ध बोधक शब्द।

हमेव॰ ना॰ पु॰ अहङ्कार, अहंभाव।

हय॰ ना॰ पु॰ घोड़ा।

हयमेध॰ ना॰ पु॰ अश्वमेध।

हयशाला॰ ना॰ स्त्री॰ घुड़साल, तबेला।

हयहय॰ ना॰ पु॰ नागार्जुन।

हये॰ क्रि॰ मारो, मारे, मिटाये।

हर॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी, हल, सीर, अव्य॰ यह जिस शब्दके अन्तमें हो उसका अर्थ हरण का माना जावे यथा,पापहर, तापहर।

हरगिरि॰ ना॰ पु॰ कैलास।

हरण॰ ना॰ पु॰ बरबस वा चोरी से किसी की वस्तुका लेना, चोरी, लूट, नशावृत, हरिण।

हरता॰ ना॰ पु॰ चोर, लुटेरा नाशक।

हरद॰ ना॰ पु॰ हल्दी।

हरदत्त॰ गु॰ जो शिवजी का दियाहुआ है।

हरना॰ स॰ क्रि॰ बरबस लेलेना, चोरी करना, लूटना, उठालेना, हरिण।

हरमोट॰ ना॰ पु॰ हरिणका बच्चा।

हरफारेवड़ी॰ ना॰ पु॰ फलविशेष।

हरबराना॰ अ॰ क्रि॰ हड़बड़ाना, घबड़ाना।

हरसिंघार॰ } हरसिंगार॰ } ना॰ पु॰ वृक्ष वा उसका फूल विशेष, तैसा विशेष।

हरवीर्य॰ ना॰ पु॰ पारा।

हरहार॰ ना॰ पु॰ सर्प, शिरकी माला।

हरा॰ गु॰ वर्णविशेष, यथा घासकी रङ्गी।

हराई॰ ना॰ स्त्री॰ हरियाली।

हराना॰ स॰ क्रि॰ जीतलेना, थकाना।

हरावल० ना० पु० दलके अगाड़ी चलनेवाला।
हरि० ना० पु० ईश्वर, पानी, अग्नि, वायु मार्ग, हाथी, पर्वत, सर्प, सिंह, इन्द्र, वानर, सूर्य्य, धन, आकाश मनु, हरिण, पपीहा कोयल, प्राण, मोती, भ्रमर, अमृत, चन्द्रमा, कमल, सुवर्ण, कामदेव, खड्ग, घोडा।
हरिजन० ना० पु० साधु भक्त, सन्त।
हरित० गु० हरा, डहडहा, चोरायागया।
हरिताल० ना० पु० उपधातुविशेष।
हरितालिका० ना० स्त्री० भादों सुदी तीज का व्रत।
हरिद्रा० ना० स्त्री० हल्दी।
हरिद्वार० ना० पु० तीर्थविशेष।
हरिन्मणि० ना० पु० पन्ना।
हरिप्रिया० ना० स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी।
हरिभक्त० ना० पु० विष्णुका उपासक, वैष्णव।
हरिभजन० ना० पु० भगवान् का भजन या ध्यान करना।
हरिभद्रक० ना० पु० धूप।
हरियल० ना० पु० पक्षी विशेष कपोतविशेष।
हरियाण० ना० पु० दिल्ली के पश्चिम देश विशेष।
हरियान० ना० पु० गरुड़।
हरियाना० अ० क्रि० जमना, बढ़ना, डहडहा होना, शाख निकलना।
हरियाला० गु० हरा, सब्जी।
हरियाली० ना० स्त्री० हराई।
हरिवालुक० ना० पु० एलुवा, मुसब्बर।
हरिवास० ना० पु० पीपलवृक्ष।
हरिवासर० ना० पु० एकादशी, जन्माष्टमी।
हरिश्चन्द्र० ना० पु० राजा विशेष जो अयोध्या में महादानी हुआ है।
हरीत०, हरीतकी० } ना० स्त्री० हर्र, हड़।
हरीरा०, हरीसा० } गु० हरा, मगाड़ा ना० पु० भोजन जो जचाको प्रथम खिलते हैं।
हरीरा० ना० पु० तोताविशेष।
हरुआ० गु० हलका।
हरुये० अ० य० धीरे धीरे, हाले व्रजविलास यथा, दोहा, लै पौढ़ाय सेजपर हरुये यशुमति माय, अति निरूझानो आज हरि यह कहि कहि पछिताय।
हरुवा० गु० हलका, रामायण यथा, निजजड़ता लोगन पर डारी, होइ हरुव रघुपतिहि निहारी।
हरेरा० गु० हरा।
हरौटी० ना० स्त्री० छठा व्रत, हलचलाने का समय।
हर्ष० ना० पु० आनन्द, सुख, आह्लाद, खुशी।
हर्षण० ना० पु० योग, विशेष, कुतमार।
हर्षना० अ० क्रि० फूलना, खिलना, आनन्द होना।
हर्षित० गु० आनन्दित, प्रसन्न, मग्न।
हल० ना० पु० लांगल, खेत जोतने का यन्त्र, अक्षरोंपर का उसका चिह्न।
हलका० गु० फुलका, नीच, छिछोरा, ओछा, पोला, सस्ता, अगुरु।
हलकाई० ना० स्त्री० हलकापन, निर्मलता।
हलकाना० स० क्रि० सहायदेना, सहारा करना।
हलकोरना० स० क्रि० बटोरना, समेटना, हिलाना।
हलचल० ना० पु० हलचली, घबराहट, डौला, अधर।
हलदिया० ना० पु० विषविशेष, अम्मल रोग, गु० पीला।
हलधर० ना० पु० श्रीबलदेव, किसान।
हलन्त० गु० जिस शब्दके अंतमें हल का चिह्न है।
हलसना० अ० क्रि० लोल्पोट होना।
हलफल० ना० स्त्री० शिष्टाचार।
हलरा० ना० पु० तरंग, लहर, हिलकोर।

हलरावना० स० क्रि० बहलाना, खेलाना, हिलाना।
हलवर्ण० ना० पु० व्यंजन, स्वररहित अक्षर।
हलवाहा० ना० पु० जोतहा, किसान।
हलाहल० ना० पु० हलाहल।
हलहलादृष्ट० ना० पु० ज्वर या डरसेकपकपी।
हलहलाना० अ० क्रि० ज्वरादि से कांपना, स० क्रि० हिलाना, कपाना।
हलहलिया० ना० पु० विष।
हलाहली० ना० स्त्री० रोग, व्याधि, जुड़ी।
हला० स्त्री० ना० मदिरा, शराब।
हलाई० ना० स्त्री० जौताई।
हलायुध० ना० पु० श्रीबलरामजी।
हलानाहु० ना० स्त्री० नदीविशेष।
हलाहल० ना० पु० महाविष।
हलिया० ना० पु० बैलोंका झुण्ड।
हलियाना० अ० क्रि० जीमतलाना।
हली० ना० पु० श्रीबलदेवजी, ग्र० किसान।
हलोरना० स० क्रि० बटोरना।
हलक० ना० पु० लालकमल, यथा सोगंधि कतुकहार हलक रक्तसंधिकम् इत्यमर।
हल्ला० ना० पु० रोला, हुल्लड़, धावा, यह शब्द फारसी का है।
हवन० ना० पु० होम, अग्नि प्रतिष्ठकरना।
हवि० ना० स्त्री० यज्ञविशेष, सीरयज्ञकी।
हवि० ना० पु० होमकी सामग्री।
हविपाठी० ना० पु० चीता।
हविष्य० ना० पु० घृत, धासमिलित भात।
हवुषा० ना० स्त्री० आहुवर।
हव्य० ना० पु० देवताओं के हेतु अन्न, हवि।
हव्यवाहन० ना० पु० अग्नि।
हस्त० ना० पु० हाथ, तेरहवां नक्षत्र सूड़।
हस्तकरण० ना० पु० करण्ड दानों।
हस्ताक्षर० ना० पु० हाथका लिखा, दस्तख़त।
हस्तिघोषा० ना० स्त्री० नडीतुरई।
हस्तिदन्तक० ना० पु० मूली, मलीनरकारी।
हस्तिनापुर० ना० पु० प्राचीनदिल्ली, कौरवों की राजधानी।
हस्तिनी० ना० स्त्री० हथिनी, स्त्री, स्त्री-विशेष।
हस्तिपाल० ना० पु० हाथीवान, पीलवान।
हस्तिमागधी० ना० स्त्री० गजपीपर।
हस्ती० ना० पु० हाथी।
हंसली० ना० स्त्री० गले के पासकी एक हड्डी, गले का हंसनाविशेष।
हहरना० अ० क्रि० घबराना।
हहराना० अ० क्रि० पवन प्रचण्ड का शब्द।
हा० अव्य० दु:खका सूचकशब्द।
हाऊ० ना० पु० चोरौं बालक के डराने को प शिथममें बोलतीहैं, मजविलासमें यथा, कहत मात मनहाऊआयो।
हां० अव्य० स्वीकारसूचक शब्द।
हांक० ना० स्त्री० पुकार, निकाल, टेर।
हांकना० स० क्रि० निकालना, पुकारना, चलाना।
हांकी० ना० स्त्री० पत्र जिसपर रोमई बनाते हैं
हांगर० ना० पु० समुद्रकी मछलीविशेष।
हांडना० अ० क्रि० भटका फिरना।
हांडी० ना० स्त्री० मिट्टी का पात्रविशेष।
हांपना० } हांफना० } अ० क्रि० हफहफाना और हांफना।
हांस० ना० पु० हंस, हंसी।
हांसी० ना० स्त्री० हास्य।
हांहीं० अव्य० हांसही।
हाजालिनी० ना० स्त्री० बारोली।
हाट० ना० स्त्री० दुकान, क्रयविक्रयका स्थान चौक, कटरा, पैंठ, बाजार।
हाटक० ना० पु० सुवर्ण, कांच।
हाटू० ना० पु० जो हाट में क्रयविक्रय करे।
हाड़० ना० पु० हड्डी।
हात० } हाथ० } ना० पु० कर, हस्त, मापविशेष, करा।

हाथखेंचना० अ० क्रि० अप्रसन्नता में मुंह फेरना या छोड़देना।
हाथचाटना० स० क्रि० स्वादिष्ट भोजन को बहुत प्रसन्नतासे खाना।
हाथजोड़ना० स० क्रि० विनती करना, गिड़गिड़ाना, दोनों हाथ मिलाना।
हाथडालना० स० क्रि० किसी काम में घुसना वा पैठना, अपनाना।
हाथपसारना० स० क्रि० किसी से कुछ मांगना।
हाथफेरना० स० क्रि० प्यारकरना, कृपाकरना, फुसलाना।
हाथमलना० अ० क्रि० पश्चात्ताप करना, विलाप करना।
हाथमारना० स० क्रि० धक्का देना, लूटना, तह से घायलकरना।
हाथां० ना० पु० हाथ मुंदिया मारो का यन्त्र।
हाथी० ना० पु० गज, मतंग।
हाथीवान० ना० पु० फीलवान, महावत।
हान० } ना० स्त्री० टोटा, घटी, बिगाड़,
हानि० } अन्धेर।
हाय० } अव्य० दुःख वा शोक का सूचक
हायहाय० } शब्द, ना० स्त्री० त्रास।
हायन० ना० पु० वर्ष।
हार० ना० पु० मुक्ता आदिकी माला, गजरा, ग्वालोंका झुण्ड, चरी, चराऊ खेत, जंगल, वन।
हारक० ना० पु० जिससे हरिये, हरनेहारा।
हारजीत० ना० पु० जुआ, द्यूत।
हारना० अ० क्रि० पराजित होना, असमर्थ होना, थकना, स० क्रि० हराना, हारजाना कुछ वस्तु।
हारमानना० स० क्रि० निराश होके छोड़ना, विवाद को छोड़ना।
हारा० अव्य० यहशब्द दूसरे शब्द के अन्त में आकर कर्त्ता का वा वालाका सूचक है।
हारीत० ना० पु० ऋषिविशेष।
हारू० ना० पु० हरवैया।
हार्द० ना० पु० स्नेह, छोह, माया।
हार्य० गु० हरण करने के योग्य, ना० पु० बहेड़ा।
हाल० गु० उतावला, फुर्तीला।
हालना० अ० क्रि० हिलना।
हाला० ना० स्त्री० मदिरा, मद्य, शराब।
हालाडोला० ना० पु० हिलाव, डगमगाव, भूचाल, भूकम्प।
हालि० ना० स्त्री० पतवार।
हाव० ना० पु० स्त्री के लोगोंकी मनोविकार, भावना।
हावभाव० ना० पु० आश्चर्य, विलास, आदर भाव, बनाव, मान सन्मान, बनावट।
हास्य० ना० पु० आनन्दमय, हास्यकी एक अवस्था, हँसी, रसविशेष।
हाहा० अव्य० हायहाय, आर्त्तवाणी।
हाहाकार० ना० पु० युद्धमें जो शब्द, घबराहट, दुःखयुत, पुकार, शोर।
हाहाखाना० अ० क्रि० गिड़गिड़ाना, घिघियाना।
हि० अव्य० ही।
हिंडोला० ना० पु० पालना, झूला, गीतविशेष।
हिंसक० ना० पु० वधिक गु० जो हिंसाकरै घूना, अपकारी, दुर्जन, कठोर।
हिंसा० ना० स्त्री० हत्या, वध, बुराकरना वा विरोध, अपकार, गाली, दुर्जनता, मार।
हिंस्र० गु० हिंसक।
हिक्का० ना० स्त्री० छींक, हिचकी।
हिङ्गु० ना० स्त्री० हींग।
हिचकना० अ० क्रि० हटना, दबना, आगा पीछा करना।
हिचकाना० स० क्रि० धकादेना, झोकना, दबाना।
हिचकिचाना० अ० क्रि० सन्देह में होना, डगमगाना, हकलाना।

हिचकिचाँ० ना० स्त्री० दुबिधा, चिन्ता, शङ्का।
हिडम्ब० ना० पु० सिलहट से टँक पूर्वदेश, राक्षसविशेष।
हित० ना० पु० प्रेम, मित्रता, माया, उपकार, अव्य० निमित्त, अर्थ, कारण, लिये, गु० उचित, योग्य, मित्र, मायार त।
हितकार० ना० पु० मित्र, उपकारी, सज्जन।
हितकारी० ना० पु० मित्र, उपकारी।
हितु० } हितू० } ना० पु० मित्र, यार, सहायक।
हितैषी० ना० पु० भिग्यरता की इच्छा मिसकी होवे, हितकारी।
हितोपदेश० ना० पु० योग्य वा उचित उपदेश, नीतिका एक ग्रन्थविशेष।
हिनहिनाना० अ० क्रि० पुकारना घोड़ेका।
हिनौती० ना० स्त्री० विनती, आधीनता।
हिन्ताल० ना० पु० लज्जुरविशेष।
हिन्दी० ना० स्त्री० हिंदुस्तान की बोली वा अक्षर।
हिन्दू० ना० पु० लोग जो वेदादि शास्त्रानुसार चलते हैं, चातुर्वर्ण्यलोग।
हिन्दूस्थान० ना० पु० देश विशेष जो उत्तर । व अक्षरा से पैंतीस अक्षांशतक और पूर्व पश्चिम में ६७ अक्षांश से ९१ तक फैला है, भरतखण्ड।
हिम० ना० पु० पाला, शीत, तुषार, ऋतु विशेष।
हिमउपल० ना० पु० ओला, पत्थर, रामायणे यथा, जिमि हिम उपल कृषीदलि गरहीं, पर अ काज लगि तनु परिहरहीं।
हिमकर० ना० पु० चन्द्रमा, कपूर।
हिमरोम० } हिमांशु० } ना० पु० चन्द्रमा विधु, चाँद।
हिमाचल० } हिमाचल० } ना० पु० हिमालय पर्वत।
हिमाह्वय० ना० पु० कपूर, कर्पूर, काफूर।
हिमालय० ना० पु० पर्वत विशेष, पाल्लाराधर।
हिमोपम० ना० पु० कपूर, कर्पूर।
हिमोपल० ना० पु० ओला, पाथर।
हिय० } हिया० } ना० पु० हृदय।
हियाव० ना० पु० पुरुषार्थ, वीरता, धाढ़।
हियो० } हियो० } ना० पु० गाय भैंस बुलाने या रोकने का शब्द, हृदय।
हिरण्मय० } हिरण्यमय० } गु० जो सोने से बना, ना० पु० ब्रह्मा।
हिरण्य० ना० पु० धातु, सुवर्ण, नवलखण्डपृथ्वी में एक खण्ड का नाम।
हिरण्यवाहु० ना० पु० सोनभद्र नदी।
हिरण्याक्ष० ना० पु० प्रह्लाद का चचा।
हिरद० ना० पु० हृदय।
हिरन० ना० पु० हरिण, मृग।
हिरनौटा० ना० पु० हरिणका बच्चा।
हिराना० स० क्रि० खोना, रखकर भूलजाना, अ० क्रि० खोजाना, गुमहोना।
हिर्की० ना० स्त्री० घाई, यारली।
हिलकना० अ० क्रि० ऐंठना, मरोड़ना।
हिलकोर० ना० स्त्री० हिलाव, लहरार, हिलोर।
हिलकोरना० स० क्रि० लहराना, हिलाना, अ० क्रि० हिलना, फरकाना।
हिलकोरा० ना० पु० लहर, तरङ्ग।
हिलगना० अ० क्रि० लटकना, उलझना, चिपकना, अटकना।
हिलगाना० स० क्रि० लटकाना, उलझाना, चिपकाना, अटकाना।
हिलना० अ० क्रि० डोलना, टलना।
हिलमिल० अव्य० मिलकर।
हिलमिलजाना० अ० क्रि० मिश्रित होना, मिलाजुला रहना।
हिलमचिका० ना० पु० शाकविशेष।
हिलसा० ना० स्त्री० मछलीविशेष।

हिला० गु० पाला, पोसता।
हिलाना० स० क्रि० डोलाना, अपने वश में करना।
हिलोरना० अ० क्रि० लहराना।
हिलोरा० ना० पु० तरंग, लहर।
हिलोरामारना० अ० क्रि० लहर मारना।
हिश्त० अव्य० चुपचुप, दुत।
हिसका० ना० पु० उताराहट, अनुकार, रिस, फल।
हिसकाहिसकी० ना० स्त्री० परस्पर, हिसका करना।
हिसाव० ना० पु० गणित, लेखा, यह शब्द अरबीकी भाषा में अतिप्रचलित है।
ही० अव्य० निश्चय करनेका बोधक, ना० पु० हृदय।
हीं० अव्य० निश्चय करने का बोधक।
हींग० ना० स्त्री० औषधविशेष।
हींगहगना० अ० क्रि० इच्छारहित हगना, और दुःख भोगना।
हींसना० अ० क्रि० हिनहिनाना।
हीक० ना० स्त्री० उवकाई, मतलाई, घृणा, अदकल, दुर्गन्धि।
हीजड़ा० ना० पु० हिजड़ा।
हीन० गु० रहित, विना, छोटा, नीच।
हीनजाति० ना० स्त्री० नीचजाति।
हीनता० ना० स्त्री० न्यूनता, घटी।
हीननिमेष० ना० पु० एकटक।
हीना० गु० नीचा, छोटा, नीच।
हीर० ना० पु० रांभा, सार, गुदा, गु० चोखा।
हीरक० ना० पु० हीरा।
हीरप्रक्तिका० ना० स्त्री० काकोली।
हीरा० ना० पु० रत्नविशेष, कर्मारी।
हीरामन० ना० पु० तोताविशेष, छोटासर्पविशेष।
हीरावल० } ना० पु० कम्बल, जो योगी ओढ़ते हैं।
हीरावलि० }
हील० } ना० स्त्री० चहला, कीचड़।
हीला० }
हुंकार० } ना० पु० पुकार, डरवाने के लिये हुं शब्दका पुकारना।
हुंकारा० }
हुड़दंगा० गु० दंगैत।
हुड़दंगी० ना० स्त्री० दंगा दंगैत।
हुड़हुड़ाना० अ० क्रि० टंकोरना।
हुड़हुड़ी० ना० स्त्री० टंकोर।
हुडुक० ना० पु० बाजाविशेष।
हुंडची० ना० स्त्री० हुंडी।
हुंडामाड़ा० ना० पु० किराया।
हुंडार० ना० पु० भेड़ियाविशेष।
हुंडावन० ना० पु० हुण्डीका बट्टा।
हुंडी० ना० स्त्री० जिसपत्र में परदेश से रुपया लिखवाने उसका नाम।
हुंडीवाल० ना० पु० साहूकार, जो हुण्डीलिखे
हुत० गु० जो होम कियागया।
हुतना० स० क्रि० होमकरना, होममें जलाना।
हुतभुक्० } ना० पु० अग्नि।
हुताशन० }
हुति० अव्य० पलटे, बदले, ओरसे।
हुती० स्त्री० }
हुतो० पु० } क्रि० हुआ, अव्य० थी, था, रहे
हुते० पु० }
हुमकना० अ० क्रि० कूदना, मारने के लिये हुंकारना।
हुमे० क्रि० जलाये।
हुरगुंडा० ना० पु० तरकारीविशेष।
हुरमई० ना० स्त्री० नृत्यभेद।
हुरहुर० } ना० पु० पौधाविशेष।
हुरहुरा० }
हुरुकनी० ना० स्त्री० कंचनी, वेश्या।
हुरी० ना० पु० फूट, फटक, विरोध।
हुर्सा० ना० पु० चन्दन घिसनेका पाषाणविशेष जो पाटासा होता है।
हुलकारना० स० क्रि० उभाड़ना, हुँकाना, लड़ाना।

हुलसना० अ० क्रि० आनन्दित होना, प्रमुदित होना।
हुलसाना० स० क्रि० रिझाना, प्रसन्नकरना।
हुलास० ना० पु० सुंघनी, आनन्द, विलास।
हुलड़० ना० पु० रौला, बखेड़ा।
हुं० अव्य० हां, भी, हो।
हुंकृ० ना० स्त्री० शब्द विशेष।
हुंकारना० स० क्रि० क्रोध से वा भय से वा झाड़ फूंक से हुं शब्द बोलना।
हुंठ० ना० पु० साढ़ेतीन ३॥।
हुंठा० ना० पु० साढ़ेतीन का पहाड़ा।
हुड़दंग० ना० पु० धूमधाम, गोलमोल उत्तरदेना।
हुक० ना० स्त्री० पीड़ा, टसक, झटक।
हुचना० स० क्रि० चूकना, भूलना।
हुठना० स० क्रि० धक्का देना।
हुडु० } हुडाहुडी० } ना० स्त्री० खेंचाखेंची।
हुण० ना० पु० कठोर मनुष्य।
हुन० ना० पु० मुद्राणी, मुद्राविशेष।
हुल० ना० स्त्री० झोंक, झोंका।
हुलना० स० क्रि० झोंकना, झोंसना।
हुहा० ना० पु० चर्चा, आंधी, धूमधाम, धैमधाम।
हृदय० ना० पु० वक्ष स्थल, छाती, अन्तःकरण, मन।
हृदयनिकेतन० ना० पु० कामदेव।
हृषीक० ना० पु० इन्द्रिया।
हृषीकेश० ना० पु० इन्द्रियपतिविशेष, श्री कृष्णचन्द्रका एक नाम।
हृष्ट० गु० हर्षित, प्रसन्न।
हे० अव्य० सम्बोधनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण।
हेंगा० ना० पु० सरावा, पटेला, हैंगा।
हेठ० अव्य० नीचे स्त्री० काच जो गुदा में निकलती है।
हेठा० गु० आउसी, नीच, डरपोकना।
हेठापन० ना० पु० नपुंसकता, नीचता, निचाई।
हेत० } हेतु० } ना० पु० अर्थ, कारण, प्रयोजन, निमित्त, प्रीति, प्रेम।
हेति० अव्य० हा हानि।
हेम० ना० पु० स्वर्ण, पत्थर, सोना।
हेमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्णकी खानि।
हेमन्त० ना० पु० ऋतुविशेष, जिसमें अगहन और पौषमास गिनाजाता है।
हेमपुष्पा० } हेमपुष्पिका० } ना० स्त्री० चम्पावृक्ष।
हेमलता० ना० स्त्री० सोनजूही।
हेमवती० ना० स्त्री० हर्र, हड़।
हेममता० ना० स्त्री० वच औषध।
हेमाचल० } हेमाद्रि० } ना० पु० सुमेरु पर्वत।
हेरना० स० क्रि० निरेखना, देखना, ढूंढना, टटोलना खदेड़ना।
हेरम्ब० ना० पु० श्रीगणेशजी।
हेरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगातेहैं।
हेल० ना० स्त्री० बोझ, भार, टोकरामरगोबर।
हेलना० अ० क्रि० पैरना, तिरना, स० क्रि० धक्कादेना, हटाना।
हेला० ना० स्त्री० अवज्ञा, प्रवाह, रेला, क्रीड़ा लीला, सहज।
हेलमारना० स० क्रि० ढकेलना, टेलना।
हैक० ना० पु० हय।
हैहैराज० ना० पु० हयहय, सहस्रबाहु।
हो० अव्य० सम्बोधन का चिह्न।
होआना० अ० क्रि० होकर आना।
होकना० अ० क्रि० हांफना।
होठ० ना० पु० ओष्ठ, लब।
होंठा० ना० स्त्री० सम्राम, दहाना।
होके० अव्य० द्वारा, से।
होचुकना० अ० क्रि० सम्पूर्ण होना, निपटना।

होजाना० अ० क्रि० होना, पड़ना।
होठ० ना० पु० होंठ।
होड़० ना० स्त्री० अथ, वचन, दाव, शर्त।
होड़ल० ना० पु० अभ्रक, अबरक।
होड़ाचक्र० ना० पु० जिसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि विचारते हैं।
होत० ना० स्त्री० वश, शक्ति।
होतव० ना० पु० सदा, आरब्धी।
होतव्य० ना० पु० भवितव्य, होनहार।
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार।
होता० ना० पु० होमकरनहारा।
होते० अव्य० रहते, में।
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन।
होत्री० गु० पूजक।
होनहार० ना० गु० जो होसके, सम्भव।
होना० अ० क्रि० रहना, बनना, जो कुछहोगा।
होम० ना० पु० अग्यारी, घृतादि अग्नि में होमना।
होमना० स० क्रि० होमकरना यज्ञकरना, जलाना।
होला० ना० पु० नानविशेष, धूर, भूनीफली।
होलाष्टक० ना० पु० होली का समय।
होलिका० ना० स्त्री० होली।
होलिहार० ना० पु० होली खेलनेहार।
होली० ना० स्त्री० फाल्गुन की पूर्णमासी का उत्सव।
होआ० ना० पु० हाऊ, हौवा।
हो० नि० ह, सर्व० मैं, हम।
हौंस० ना० स्त्री० इच्छा, चाह।
हौका० ना० पु० लोभ, लालच, वायुसमेतकफी।
हौले० अव्य० धीमे धीरे।
हौलेहौले० अव्य० धीरेधीरे।
हौवा० ना० पु० मोहरा, भुआ।
ह्रद० ना० पु० गिरगोदा, बड़ाजलाशय, तालाब, झील, अगाधता।
ह्रस्व० गु० अदीर्घ, छोटा, एक मात्रिकाक्षर।
ह्रस्वमूल० ना० पु० ऊख, गन्ना, गांडा।
ह्रदिनी० ना० स्त्री० नदी।
ह्री० ना० स्त्री० लज्जा, दया।
ह्रीण०
ह्रीत० } गु० लज्जित, शरमायाहुआ।
ह्वै० क्रि० होकर।
ह्वैहै० नि० होगा।

[क्ष]

क्षई० ना० स्त्री० क्षयरोग जिसमें कफ और रक्त मुखसे गिरता है और खांसी भी आती है।
क्षण० ना० पु० तीस कलाका एकक्षण होताहै, थोड़ीदेर, तिल।
क्षणक० ना० पु० क्षण, पल।
क्षणप्रति० अव्य० बारबार।
क्षणरुचि० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा।
क्षणिक० गु० अस्थिर, नाशवान्, नाशमानी।
क्षणेक० अव्य० थोड़ेकाल में।
क्षत० ना० पु० फोड़ा, घाव।
क्षतज० ना० पु० रुधिर, लोहू, रक्त।
क्षति० ना० स्त्री० हानि, घटी।
क्षत्र० ना० पु० छत्र, ताज, छाता, छतुरी, क्षत्रियवंश।
क्षत्रक० ना० पु० कुकुरमुत्ता, जिसे कुकुरमुत्ता कहते हैं।
क्षत्रधारी० ना० पु० राजा, नृपति, महीपति।
क्षत्रबन्धु० ना० पु० जो क्षत्रियों में नीचहो।
क्षत्रिय० ना० पु० क्षत्रीयवर्ण, खिरनी।
क्षपा० ना० स्त्री० रात।
क्षपाकर०
क्षपानाथ० } ना० पु० चन्द्रमा।
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य।
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता।
क्षमना० स० क्रि० क्षमाकरना, छोड़ना।
क्षमा० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, मोचन, क्षमती, दया, धरती।

हुलसना० अ० क्रि० आनन्दित होना, मुदित होना।
हुलसाना० स० क्रि० रिझाना, प्रसन्नकरना।
हुलास० ना० पु० सुंघनी, आनन्द, विलास।
हुल्लड़० ना० पु० रौला, बखेड़ा।
हूँ० अव्य० हां, जी, हो।
हूक० ना० स्त्री० शब्द विशेष।
हूँकरना० स० क्रि० क्रोध से या भय से या झाड़ फूंक से हू शब्द बोलना।
हूँठ० ना० पु० साढ़ेतीन ३॥।
हूँठा० ना० पु० साढ़तीन का पहाड़ा।
हूँहां० ना० पु० धूमधाम, गोलमोल उत्तरदेना।
हूक० ना० स्त्री० पीड़ा, टसक, कसक।
हूचना० स० क्रि० चूकना, भूलना।
हूठना० स० क्रि० धक्का देना।
हूड़०
हूड़ाहूड़ी० } ना० स्त्री० खेंचाखेंची।
हूण० ना० पु० कठोर मनुष्य।
हून० ना० पु० मन्दरानी, मुद्राविशेष।
हूल० ना० स्त्री० भोंक, खोंचा।
हूलना० स० क्रि० भोंकना, खोलना।
हूहा० ना० पु० चर्चा, भाभी, धूमधाम, टीमटाम।
हृदय० ना० पु० वक्ष स्थल, छाती, अन्त करण, मन।
हृदयनिकेत० ना० पु० कामदेव।
हृषीक० ना० पु० इन्द्रिय।
हृषीकेश० ना० पु० इन्द्रियपतिविशेष, श्री कृष्णचन्द्रका एक नाम।
हृष्ट० गु० हर्षित, प्रसन्न।
हे० अव्य० सम्बोधनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण।
हेंगा० ना० पु० सरावा, पटेला, हेंगा।
हेठ० अव्य० नीचे स्त्री० काच जो मुद्रा में निकसती है।
हेठा० गु० भासरी, नीच, डरपोकना।
हेठापन० ना० पु० नपुंसकता, नीचता, निचाई।
हेत०
हेतु० } ना० पु० अर्थ, कारण, प्रकरण, प्रयोजन, निमित्त, प्रीति, प्रेम।
हेति० अव्य० इति।
हेम० ना० पु० स्वर्ण, पत्थर, सोना।
हेमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्णकी खानि।
हेमन्त० ना० पु० ऋतुविशेष, जिसमें अगहन और पौषमास मिनाजाता है।
हेमपुष्पा०
हेमपुष्पिका० } ना० स्त्री० चम्पावृक्ष।
हेमलट्टा० ना० स्त्री० सोनट्ठी।
हेमवती० ना० स्त्री० हर्र, हड़।
हेमवता० ना० स्त्री० वच औषध।
हेमाचल०
हेमाद्रि० } ना० पु० सुमेरु पर्वत।
हेरना० स० क्रि० निरेखना, देखना, ढूढ़ना, खोजना, खदेड़ना।
हेरम्ब० ना० पु० श्रीगणेशजी।
हेरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगातेहैं।
हेल० ना० स्त्री० बोझ, भार, टोकरामरगोवर।
हेलना० अ० क्रि० पैरना, तिरना, स० क्रि० धक्कादेना, हटाना।
हेला० ना० स्त्री० अवज्ञा, मवाह, रेला, क्रीड़ा, सैना, सहज।
हेलमारना० स० क्रि० ढकेलना, ठेलना।
हैक० ना० पु० हय।
हैहैराज० ना० पु० हयईश, सहस्रबाहु।
हो० अव्य० सम्बोधन का चिह्न।
होआना० अ० क्रि० होकर आना।
होंकना० अ० क्रि० हांफना।
होठ० ना० पु० ओष्ठ, लब।
होंठा० ना० स्त्री० लगाम, दहाना।
होवै० अव्य० द्वारा, से।
होचुकना० अ० क्रि० सम्पूर्ण होना, निपटना।

होजाना० अ० क्रि० होना, पढ़ना।
होठ० ना० पु० होंठ।
होड़० ना० स्त्री० प्रण, वचन, दांव, शर्त।
होड़ल० ना० पु० धमक, थरक।
होड़ाचक्र० ना० पु० जिसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि विचारते हैं।
होस० ना० स्त्री० परा, शक्ति।
होतव० ना० पु० बदा, भारव्धी।
होतव्य० ना० पु० भवितव्य, होनहार।
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार।
होता० ना० पु० होमकरनेहारा।
होते० अव्य० रहते, में।
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन।
होत्री० गु० पूजक।
होनहार० ना० पु० जो होसके, सम्भव।
होना० अ० क्रि० रहना, बनना, जो कुछहोगा।
होम० ना० पु० अग्यारी, घृतादि अग्नि में होमना।
होमना० स० क्रि० होमका यज्ञकरना, जलाना।
होला० ना० पु० नावविशेष, बूट, मूनीफली।
होलाष्टक० ना० पु० होली का समय।
होलिका० ना० स्त्री० होली।
होलिहा० ना० पु० होली खेलनेहारा।
होली० ना० स्त्री० फाल्गुन की पूर्णमासी का उत्सव।
होआ० ना० पु० हाऊ, हौवा।
हौं० क्रि० हूं, सर्व० मैं, हम।
हौस० ना० स्त्री० इच्छा, चाह।
हौका० ना० पु० लोभ, लालच, वायुसमेतझरी।
हौले० अव्य० धीमे धीरे।
हौलेहौले० अव्य० धीरेधीरे।
हौवा० ना० पु० भोकस, भुतना।
ह्रद० ना० पु० विनाखोदा, बड़ाजलाशय, तालाव, झील, अगाधता।

ह्रस्व० गु० अदीर्घ, छोटा, एक मात्रिकाक्षर।
ह्रस्वमूल० ना० पु० ऊख, गन्ना, गांडा।
ह्रदिनी० ना० स्त्री० नदी।
ह्री० ना० स्त्री० लज्जा, ह्या।
ह्रीण०
ह्रीत० } गु० लज्जित, शरमायाहुआ।
ह्वै० क्रि० होकर।
ह्वैहै० क्रि० होगा।

[क्ष]

क्षई० ना० स्त्री० क्षयरोग जिसमें कफ और रक्त मुखसे गिरता है और खांसी भी आती है।
क्षण० ना० पु० तीस कलाका एकक्षण होताहै, थोड़ीदेर, तिल।
क्षणक० ना० पु० क्षण, पल।
क्षणप्रति० अव्य० बारंबार।
क्षणरुचि० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा।
क्षणिक० गु० अस्थिर, क्षणनाशी।
क्षणेक० अव्य० थोड़ेकाल में।
क्षत० ना० पु० फोड़ा, घाव।
क्षतज० ना० पु० रुधिर, लोहू, रक्त।
क्षति० ना० स्त्री० हानि, घटी।
क्षत्र० ना० पु० मुकुट, ताज, छाता, छतुरी, क्षत्रियवंश।
क्षत्रक० ना० पु० भुइंफोड़ा, जिसे कुकरमुत्ता कहते हैं।
क्षत्रधारी० ना० पु० राजा, नृपति, महीपति।
क्षत्रबन्धु० ना० पु० जो क्षत्रियों में नीचहो।
क्षत्रिय० ना० पु० द्वितीयवर्ण, खित्री।
क्षपा० ना० स्त्री० रात।
क्षपाकर०
क्षपानाथ० } ना० पु० चन्द्रमा।
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य।
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता।
क्षमना० स० क्रि० क्षमाकरना, छोड़ना।
क्षमा० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, मोचन, अक्षमी, दया, धरती।

हुलसना० अ० क्रि० आनन्दित होना, प्रमुदित होना।

हुलसाना० स० क्रि० रिझाना, प्रसन्नकरना।

हुलास० ना० पु० सुंघनी, आह्लाद, विलास।

हुल्लड़० ना० पु० हौला, बखेड़ा।

हूँ० अव्य० हां, भी, हा।

हूक० ना० स्त्री० शब्द विशेष।

हूँकरना० स० क्रि० क्रोध से या भय से या झाड़ फूक से हू शब्द बोलना।

हूँठ० ना० पु० साढ़ेतीन ३॥।

हूँठा० ना० पु० साढ़तीन का पहाड़ा।

हूहाँ० ना० पु० धूमधाम, गोलमोल उत्तरदेना।

हूक० ना० स्त्री० पीड़ा, टसक, कसक।

हूचना० स० क्रि० चूकना, भूलना।

हूठना० स० क्रि० धका देना।

हुड़० / हुड़ाहुड़ी० } ना० स्त्री० खैंचाखैंची।

हूण० ना० पु० कठोर मनुष्य।

हून० ना० पु० मदरासी, मुद्राविशेष।

हूल० ना० स्त्री० भोंक, खोंचा।

हूलना० स० क्रि० भोंकना, खोंसना।

हूहा० ना० पु० चर्चा, आंधी, धूमधाम, टीमटाम।

हृदय० ना० पु० वक्षस्थल, छाती, अन्तःकरण, मन।

हृदयनिकेत० ना० पु० कामदेव।

हृषीक० ना० पु० इन्द्रिया।

हृषीकेश० ना० पु० इन्द्रियपतिविशेष, श्री कृष्णचन्द्रका एक नाम।

हृष्ट० गु० हर्षित, प्रसन्न।

हे० अव्य० सम्बोधनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण।

हेंगा० ना० पु० सरावन, पटेला, हैंगा।

हेठ० अव्य० नीचे स्त्री० काच जो गुदा में निकलती है।

हेठा० गु० आलसी, नीच, डरपोकना।

हेठापन० ना० पु० नपुंसकता, नीचता, निचाई।

हेत० / हेतु० } ना० पु० अर्थ, कारण, प्रकरण, प्रयोजन, निमित्त, प्रीति, प्रेम।

हेति० अव्य० हा इति।

हेम० ना० पु० स्वर्ण, कंचन, सोना।

हेमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्णकी खानि।

हेमन्त० ना० पु० ऋतुविशेष, जिसमें अगहन और पौषमास गिनाजाता है।

हेमपुष्पा० / हेमपुष्पिका० } ना० स्त्री० चम्पावृक्ष।

हेमलता० ना० स्त्री० सोनजुही।

हेमवती० ना० स्त्री० हर्रे, हड़।

हेमवता० ना० स्त्री० वच औषध।

हेमाचल० / हेमाद्रि० } ना० पु० सुमेरु पर्वत।

हेरना० स० क्रि० निरेखना, देखना, ढूंढना, खोदना खदेड़ना।

हेरम्ब० ना० पु० श्रीगणेशजी।

हेरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगाते हैं।

हेल० ना० स्त्री० बोझ, भार, टोकराभरगोबर।

हेलना० अ० क्रि० पैरना, तिरना, स० क्रि० धक्का देना, ढुथना।

हेला० ना० स्त्री० अवज्ञा, प्रवाह, रेला, कीड़ा, रीगा, सहज।

हेलमारना० स० क्रि० ढकेलना, ठेलना।

हैक० ना० पु० हय।

हैहैराज० ना० पु० हयहय, सहस्रबाहु।

हो० अव्य० सम्बोधन का चिह्न।

होआना० अ० क्रि० होकर आना।

हौंकना० अ० क्रि० हांफना।

होठ० ना० पु० ओष्ठ, लब।

होंठा० ना० स्त्री० खपाम, दहाना।

होपै० अव्य० द्वारा, से।

होचुकना० अ० क्रि० सम्पूर्ण होना, निपटना।

होजाना० अ० क्रि० होना, पड़ना।
होठ० ना० पु० होंठ।
होड़० ना० स्त्री० प्रण, वचन, दाव, शर्त।
होड़ल० ना० पु० अभ्रक, अबरक।
होड़ाचक्र० ना० पु० जिसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि विचारते हैं।
होत० ना० स्त्री० धरा, शक्ति।
होतव० ना० पु० बदा, प्रारब्धी।
होतव्य० ना० पु०,भवितव्य, होनहार।
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार।
होता० ना० पु० होमकरनहारा।
होते० अव्य० रहते, में।
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन।
होत्री० गु० पूजक।
होनहार० ना० गु० जो होसके, सम्भव।
होना० अ० क्रि० रहना, बनना, जो कुछहोगा।
होम० ना० पु० अग्यारी, घृतादि अग्नि में होमना।
होमना० स० क्रि० होमकर यज्ञकरना, जलाना।
होरा० ना० पु० नामविशेष, घूप, भूनीफली।
होलाष्टक० ना० पु० होली का समय।
होलिका० ना० स्त्री० होली।
होलिहा० ना० पु० होली खलनेहारे।
होली० ना० स्त्री० फाल्गुन की पूर्णमासी का उत्सव।
हौआ० ना० पु० हाऊ, हौवा।
हौं० क्रि० हूं, सर्व० मैं, हम।
हौंस० ना० स्त्री० इच्छा, चाह।
हौका० ना०पु० लोभ, लालच, वायुमर्मेनमकी।
हौले० अव्य० धीमे धीरे।
हौलेहौले० अव्य० धीरधीरे।
हौवा० ना० पु० भोकस, भुतना।
ह्रद० ना०पु० निगसोदर, बड़ाजलाशय, तालाब, झील, अगाधता।

ह्रस्व० गु० अदीर्घ, छोटा, एक मात्रिकाक्षर।
ह्रस्वमूल० ना० पु० ऊख, गन्ना, गांडा।
ह्रदिनी० ना० स्त्री० नदी।
ह्री० ना० स्त्री० लज्जा, हया।
ह्रीण०
ह्रीत० } गु० लज्जित, शरमायाहुआ।
ह्वै० क्रि० होकर।
ह्वैहै० क्रि० होगा।

[क्ष]

क्षई० ना० स्त्री० क्षयरोग जिसमें कफ और रक्त मुखसे गिरता है और खांसी भी आती है।
क्षण० ना० पु० तीस कलाका एकक्षण होताहै, पोईदिर, तिल।
क्षणक० ना० पु० क्षण, पल।
क्षणप्रति० अव्य० वारवार।
क्षणरुचि० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा।
क्षणिक० गु० अथिर, रत्लानासी।
क्षणेक० अव्य० थोड़ेकाल में।
क्षत० ना० पु० फोड़ा, घाव।
क्षतज० ना० पु० रुधिर, लोहू, रक्त।
क्षति० ना० स्त्री० हानि, घटी।
क्षत्र० ना० पु० मुकुट, ताज, छाता, छतुरी, क्षत्रियवरा।
क्षत्रक० ना० पु० भुइंफोड़, जिसे कुकुरमुत्ता कहते हैं।
क्षत्रधारी० ना० पु० राजा, नृपति, महीपति।
क्षत्रबन्धु० ना० पु० जो क्षत्रियों में नीचहो।
क्षत्रिय० ना० पु० क्षत्रियवर्ण, खित्री।
क्षपा० ना० स्त्री० रात।
क्षपाकर०
क्षपानाथ० } ना० पु० चन्द्रमा।
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य।
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता।
क्षमना० स० क्रि० क्षमाकरना, छोड़ना।
क्षमा० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, मोचन, अलसी, दया, धरती।

क्षमापन० ०ना पु० क्षमा करनेका स्वभाव।
क्षमायोग्य० गु० जो क्षमा के योग्य होवे।
क्षमिय० क्रि० क्षमाकीजिये।
क्षमित० गु० क्षमा कियागया।
क्षय० ना० पु० क्षयरोग, विनाश, प्रलय।
क्षयमास० ना० पु० जिस चान्द्रमास में सूर्यका दो राशि में सचारहो।
क्षयरोग० ना० पु० सूखा, शोष, क्षयी।
क्षर० ना० पु० भारी, स्थूल।
क्षान्त० ना० पु० सन्तोषी, धैर्य्यवान्।
क्षान्ति० ना० स्त्री० सन्तोष, धीरज।
क्षार० ना० पु० खार, राख, भस्म, धूलि।
क्षारपत्र० ना० पु० बथुआ, भाजीविशेष।
क्षारश्रेष्ठ० ना० पु० ढाकवृक्ष।
क्षारी० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
क्षिणवर्त० ना० पु० मेढासिंगी।
क्षिति० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
क्षितिज० ना० पु० भौमाकार, मंगल।
क्षितिनाथ० } ना० पु० राजा, महीपति।
क्षितिपाल० }
क्षितिमण्डन० ना० पु० ब्रह्मा।
क्षितीश० ना० पु० राजा, महीश।
क्षिप्र० गु० शीघ्र, उतावल।
क्षीण० गु० दुबला, पतला, ना० पु० प्रमेहरोग।
क्षीर० ना० पु० दूध, खीर, पानी, खारीलोन।
क्षीरगन्धा० ना० स्त्री० विदारीकन्द।
क्षीरद० ना० पु० मेघ, गाय।
क्षीरपत्रा० ना० स्त्री० जामन, फरेंद।
क्षीरवृक्ष० ना० पु० पीपरवृक्ष, गूलरवृक्ष।
क्षीराई ना० स्त्री० सरई।
क्षीरिणी० ना० स्त्री० दुद्धी, बूटी।
क्षीरी० ना० पु० वराशेवन, खिरनी, क्षीरा, खरा।
क्षीरोद० ना० पु० समुद्रविशेष।
क्षुत्पिपास० ना० स्त्री० भूख, प्यास।
क्षुद्र० गु० छोटा, नीच, कमीना, ना० पु० नक छिकनी घास।
क्षुद्रजम्बू० ना० पु० जामन, फरेंद।
क्षुद्रतन्दुला० ना० स्त्री० विडंग।
क्षुद्रता० ना० स्त्री० नीचता, नीचपन।
क्षुद्रपनस० ना० पु० बड़हल।
क्षुद्रफला० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी, जामन।
क्षुद्रवर्षा० ना० स्त्री० लालपुनर्नवा, थोड़ी बरसात।
क्षुद्रा० } ना० स्त्री० छोटी कटाई।
क्षुद्री० }
क्षुधा० ना० स्त्री० भूख।
क्षुधार्त्त० } गु० भूखा, बहुत भूखा।
क्षुधावन्त० }
क्षुधित० गु० भूखा।
क्षुर० ना० पु० छुरा, उस्तरा, मूज।
क्षुरक० ना० पु० गोखुरू, तिलकवृक्ष।
क्षुल्लक० ना० पु० कौड़ी।
क्षेत्र० ना० पु० भूमिपुण्य, खेत, तीर्थ शरीर।
क्षेत्रज० ना० पु० जो खेतमें उत्पन्नहो।
क्षेत्रज्ञ० ना० पु० आत्मा, जीव, गु० किसान मापक।
क्षेत्रफल० ना० पु० खेतका फल, अर्थात् निकहटी।
क्षेत्रजीव० ना० पु० किसान, खेतीवाला।
क्षेम० ना० स्त्री० कुशल।
क्षेमकरी० ना० स्त्री० पक्षीविशेष।
क्षेमकुशल० ना० स्त्री० आरोग्य, भलाई, कल्याण, कुशलता, खैरआफियत।
क्षोणिज० ना० पु० दितिज, महलादि।
क्षोणिप० ना० पु० राजा, महीपति
क्षोणिदेव० ना० पु० ब्राह्मण।
क्षोणी० ना० स्त्री० क्षिति, पृथ्वी, धरती।
क्षोभ० ना० पु० खेद, क्रोध, रुबाव, अधिमान।
क्षौद्र० ना० पु० मधु, शहद।
क्षौर० ना० पु० मुण्डन, नाई का कर्म।
क्षौरक० ना० पु० छुरा या नाई

क्षमा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, भूमि।

क्षमापति० ना० पु० राजा, भूपाल।

[ज्ञ]

ज्ञ०अव्य० शब्दान्तमें वर्त्ता या धारक का चिह्न, यथा, धर्मज्ञ, कृतज्ञ।

ज्ञाता० गु० जाननेहारा, शास्त्रवक्ता।

ज्ञाति० ना० स्त्री० पिता, असपिण्ड, वर्णजाति।

ज्ञान० ना० पु० समझ, बुद्धि, व्यक्त और धर्मकी वृद्धि जिसकरके आत्मा आवागमन से रहित होता है।

ज्ञानत ० ना० पु० समझ, ठीकबुद्धि।

ज्ञानवान्० } गु० बुद्धिमान्, पण्डित, समझदार।
ज्ञानी० }

ज्ञापक० गु० जाननेहारा।

ज्ञापन० ना० पु० जताना।

ज्ञेय० गु० जो जानने के योग्य।

ज्ञेया० ना० स्त्री० मदा।

दो०। श्रीपरमात्मा जगतगुरु कृपालानिविभु एक। जासुदयापूरणभयो मङ्गलकोष विवेक १॥
विविधदेशभाषामिलित भाषाअर्थनिमाहि। यथासरकृतफारसी आदिकपदअवगाहि २॥
अर्थलिखेनिजबुद्धिसम विपुलमर्थमतधारि। कोषकारश्रीमूकता तजिबुधपदेविचारि ३॥
शब्द समूह समुद्रवत नौका कोषप्रमान। पारजाहिंचदिबालबुधि बिनसदेहसुजान ४॥
वर्षोन्नतु गुरु रेवती भाद्रअसिततिथिचारि। ग्रहचषनगमहिंसहितशुभसंवतविक्रमधारि ५॥
कोष भयो पूरण तबै पैतेपुर शुचि ठाम। कोषकार सानन्दलिखे कोषसमङ्गलनाम ६॥
जोगुणग्राहक सुजनजन विद्याशील प्रवीन। ते लखि कोष सराहिहैं हँसिहैं बुद्धिमलीन ७॥

इति॥